साहित्यकार गुरुदत्त
प्रतिनिधि रचनाएँ



साहित्यकार गुरुदत्त
प्रतिनिधि रचनाएँ

सहस्रबाहु
गगन के पार
अन्तरिक्ष में

109075

साहित्यकार गुरुदत्त
प्रतिनिधि रचनाएँ



(खण्ड-2)

सहस्रबाहु
गगन के पार
अन्तरिक्ष में



सम्पादक
अशोक कौशिक

भारती साहित्य सदन, नई दिल्ली-१

संस्करण : प्रस्तुत रूप में प्रथम बार—८ दिसम्बर, १९८८

मूल्य : एक सौ पचास रुपये

Sahityakaar Gurudutt—Pratinidhi Rachnaayen Vol. II

प्रकाशक : भारती साहित्य सदन,
३०/९०, कनॉट सरकस, नई दिल्ली-११०००१

आवरण : पाल बंधु, दिल्ली

मुद्रक : अजय प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

उपन्यासकार का परिचय

उपन्यासकार श्री गुरुदत्त जी का जीवन विगत ९४ वर्षों में सतत साधनारत रहने के फलस्वरूप तपकर ऐसा कुन्दन बन गया है कि जिसकी तुलना अब किसी अन्य से नहीं अपितु उनसे ही की जा सकती है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार सागर और आकाश की तुलना किसी अन्य से नहीं अपितु सागर और आकाश से ही की जा सकती है। वर्षों पूर्व श्री गुरुदत्त जी के किसी अभिनन्दन समारोह में दिल्ली विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ० विजयेन्द्र स्नातक ने उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा था—'कोई भी उनको बैठे उनके दैदीप्यमान मुखाकृति को देखे तो यही अनुभव करेगा मानो मार्ग-निर्देश करता हुआ-सा कोई तपस्वी बैठा है।'

भर्तृहरि का कथन है—

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

अर्थात्—इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मरता और कौन नहीं जन्म लेता। किन्तु उसका ही जन्म लेना सार्थक है जिसके जन्म लेने से वंश की उन्नति होती हो।

श्री गुरुदत्त उसी श्रेणी में आते हैं। उनके जन्म से न केवल उनका वंश समुन्नत हुआ है, न केवल हिन्दी साहित्य समुन्नत हुआ है, न केवल हिन्दी भाषा समृद्ध हुई है अपितु उनके साहित्य से समस्त राष्ट्र समुन्नत हुआ है, मानवता समुन्नत हुई है।

आज से ९४ वर्ष पूर्व लाहौर (अब पाकिस्तान) के निम्न मध्यवर्गीय पंजाबी अरोड़ा परिवार में उनका जन्म हुआ था। पिता निर्वाह-भर के लिए अपनी दुकान से अर्जित कर सन्तुष्ट थे। वे स्वभाव से धर्मभीरु और ईश्वरभक्त थे। यद्यपि वे आर्यसमाज की विचारधारा से प्रभावित थे तदपि पौराणिकता से पूर्णतया पल्ला भी नहीं छुड़ा पाये थे। आर्यसमाज के उपदेशकों के मुख से मूर्ति-पूजा का खण्डन सुनते हुए भी किसी देवालय के सम्मुख से जाते हुए वे वहाँ अपना मस्तक अवश्य नवाते थे। वे मूर्ति स्वरूप परमात्मा की वन्दना करते थे। यही संस्कार गुरुदत्त जी को विरासत में प्राप्त हुए थे। जीवन द्वन्द्व के इन्हीं संस्कारों से लसित गुरुदत्त का बाल्यकाल और किशोरावस्था सर्वसामान्य की भाँति ही व्यतीत हुए।

बाल्यकाल से ही गुरुदत्त को लिखने-पढ़ने का चाव रहा। यही कारण है कि साधनहीन होने पर भी वे एम० एस-सी० की स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त कर सके। तदुपरान्त उनकी विद्यालयीन शिक्षा का भले ही अन्त हो गया हो किन्तु विद्यार्थी जीवन तो आज ९४ वर्ष की आयु में भी निरन्तर उसी प्रकार चल रहा है। वे सतत अध्ययनरत रहते हैं। विश्वविद्यालयीन शिक्षा पूर्ण कर अपने बाद के जीवन में उन्होंने भारतीय और पाश्चात्य साहित्य का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया है। उन्होंने इतिहास का मन्थन किया है, विश्व-भर के लेखकों की रचनाओं और जीवनियों को पढ़कर उनका विवेचन किया है। भारत की विभिन्न भाषाओं के कथा-साहित्य का परिचय प्राप्त किया है। साहित्य ही नहीं, वे राजनीति के भी विद्यार्थी रहे हैं। विश्व की राजनीति का अध्ययन करने के उपरान्त भारतीय राजनीति पर वे जो विश्लेषणात्मक विचार प्रस्तुत करते हैं, उनको भले ही केवल हम जैसे ही कुछ लोग आज श्रेष्ठ विचार मानते हों, किन्तु वह समय दूर नहीं जब भारत का हिन्दू एक स्वर से कहेगा कि गुरुदत्त ने जो लिखा, गुरुदत्त ने जो कहा, गुरुदत्त ने जो मार्ग-निर्देश किया उस पर हम चले होते तो देश और देशवासियों की यह दशा नहीं होती।

गुरुदत्त जी की प्रारम्भिक शिक्षा डी० ए० वी० स्कूल में हुई। उन दिनों डी० ए० वी० में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थी भारतीयता और भारतीय स्वातन्त्र्य के लिए अधिक संघर्षरत रहा है। आज के सन्दर्भ में यद्यपि डी० ए० वी० में सबकुछ इसके विपरीत हो रहा है। प्रख्यात क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह भी डी० ए० वी० का भी छात्र रहा था।

जिन दिनों गुरुदत्त कॉलेज के छात्र थे उन दिनों प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार अजीतसिंह के नेतृत्व में सन् १९०७ में लाहौर में 'भारत माता सोसाइटी' की स्थापना हुई। गुरुदत्त जी प्रायः इसकी बैठकों में भाग लेते थे। यह सोसाइटी भारतीय युवकों में राष्ट्रीय भावना भरने का कार्य कर रही थी। उधर डी० ए० वी० के अध्यापक भी अपने छात्रों में राष्ट्रीय भावना भरने का कार्य कर रहे थे। उसी युग में लायलपुर में कृषक आन्दोलन भड़का। उस आन्दोलन में लाला लाजपतराय और सरदार अजीतसिंह ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। इन सबका गुरुदत्त जी के मस्तिष्क पर गहन प्रभाव पड़ा था।

एम०एस-सी० उत्तीर्ण करने के उपरान्त वे गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर के विज्ञान विभाग में डिमांस्ट्रेटर के पद पर नियुक्त हुए। तदुपरान्त विवाह कर गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था कि तभी स्वदेशी आन्दोलन और अंग्रेज सरकार के प्रति असहयोग की भावना ने उनके जीवन को ऐसा प्रभावित किया कि उन्होंने सरकारी नौकरी को त्याग दिया। कुछ दिनों बाद लाहौर के नेशनल स्कूल के मुख्याध्यापक-पद पर कार्य करने लगे। नेशनल स्कूल में रहते हुए उन्होंने अपने

छात्रों में राष्ट्रीय वृत्ति के प्रचार-प्रसार का पुनीत कार्य किया। किन्तु ब्रिटिश राज्य में वह स्कूल भी सरकार की आँधी में ढह गया। जीविका का प्रश्न फिर सम्मुख आ गया। तभी अमेठी राज्य के राजा साहब कुंवर रणंजयसिंह (अब स्वर्गीय) के वे निजी सचिव नियुक्त हो गये। इस प्रकार उन्हें राजे-रजवाड़ों की रीति-नीति और राजनीति का अध्ययन करने का भी अवसर सुलभ हुआ।

दुर्दैव ने फिर भी पीछा नहीं छोड़ा। अमेठी रियासत कोर्ट ऑफ वार्ड्स में चली गई तो उनकी नौकरी भी उसके साथ ही गई। किसी प्रकार लखनऊ आकर जीवन चलाते हुए आयुर्वेद का अध्ययन किया और वहीं चिकित्सा भी करने लगे। किन्तु वैद्यकी इतनी नहीं चली कि अपने साथ-साथ परिवार का भी पेट पाल पाते। अतः १९३३ में पुनः लाहौर आकर वैद्यक का कार्य किया। वहाँ भी निर्वाह नहीं हो पाया तो १९३७ में दिल्ली आ गये। दिल्ली में कार्य जमने में दो वर्ष लगे। तदपि १९३९ तक वे अपने परिवार के सामान्य पालन-पोषण में समर्थ हो गये।

वैद्यक करते हुए अध्ययन का समय मिला तो उन्होंने खूब अध्ययन किया और पढ़ते-पढ़ते लिखने की रुचि हुई तो लिखना आरम्भ कर दिया। पहले कुछ कहानियाँ लिखी थीं, जो माधुरी आदि पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई थीं। फिर उपन्यास लिखना आरम्भ किया तो १९४२ में पहला उपन्यास 'स्वाधीनता के पथ पर' प्रकाशित हो गया। उस प्रथम उपन्यास ने ही उनको प्रौढ़ उपन्यासकार की श्रेणी में खड़ा कर दिया। इससे प्रोत्साहित होकर उन्होंने उपन्यास-लेखन पर विशेष ध्यान देना आरम्भ किया और समय बीतते-बीतते १९५२ से अर्थात् दस वर्ष के उपरान्त एक या दो-तीन उपन्यास प्रतिवर्ष प्रकाशित होते रहे। कालान्तर में यह क्रम वर्ष में २० तक तीव्र हो गया और ४६ वर्ष के लेखन-क्रम में २५० से अधिक कृतियाँ प्रकाश में आ गईं। जिनमें उपन्यासों के अतिरिक्त चिन्तनपरक रचनाएँ—ब्रह्मसूत्र, गीता, उपनिषद् एवं दर्शनशास्त्रों की व्याख्या एवं समीक्षाएँ भी सम्मिलित हैं। उन्होंने दो पुस्तकें अंग्रेजी में भी लिखी हैं।

उपन्यास-लेखन के साथ-साथ राजनीति का खेल भी कुछ वर्ष तक उन्होंने खेला। भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में वे प्रमुख रहे हैं। जनसंघ की स्थापना के उपरान्त उन्होंने उसके विभिन्न पदों पर रहकर भारतीय राजनीति में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। कालान्तर में जनसंघ को न केवल कांग्रेस के पद-चिह्नों पर चलते देखा अपितु उसे कांग्रेस की कार्बन कापी बनते देखा तो राजनीति से एक प्रकार से संन्यास ले लिया क्योंकि उनके विचारों के समानान्तर कोई राज-नीतिक दल था ही नहीं।

अंग्रेजों के साथ-साथ भारत में अंग्रेजियत ने जो जोर पकड़ा तो उसमें न केवल वेशभूषा और भाषा को अपमानित होना पड़ा अपितु हमारी प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद की भी अवमानना हो गई। आयुर्वैदिक चिकित्सक होने के नाते गुरुदत्त जी

आयुर्वेद के महत्त्व और उपयोगिता को भली-भाँति जानते थे। अतः आयुर्वेद के प्रचलन और उत्थान के लिए भी उन्होंने इस दिशा में कार्यरत आयुर्वेद महा-सम्मेलन जैसी अनेक संस्थाओं से स्वयं को जोड़ा और उसके लिए परिश्रम किया। गुरुदत्त जी सदृश अनेक लोगों के अनथक प्रयास का ही यह परिणाम है कि आज के विपरीत वातावरण में भी आयुर्वेद का नाम न केवल इस देश में शेष रह पाया है, अपितु उसकी महत्ता और उपयोगिता को अब देश-विदेश में समझा और सराहा जाने लगा है।

घर पर आर्यसमाजी वातावरण होने के कारण गुरुदत्त जी पर आर्यसमाज की गहन छाप है। जब वे सातवीं-आठवीं कक्षा में थे तब वे रुचिपूर्वक आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में सम्मिलित होते थे। उन दिनों उनको लाला लाजपतराय, डॉ० गोकुलचन्द नारंग, भाई परमानन्द और महातमा हंसराज आदि अनेक आर्य-समाजी विद्वानों के प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कालान्तर में वे आर्य-समाज के क्षेत्र में भी सक्रिय हो गये। किन्तु अन्यान्य संस्थाओं की भाँति ही आर्य-समाज से भी उनका व्यामोह टूट गया। वहाँ उन्होंने देखा कि ऋषि दयानन्द के अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने की अपेक्षा आर्यसमाज राजनीतिक नेताओं का अखाड़ा बना हुआ है और अपने निर्धारित पथ से सर्वथा विमुख हो गया है तो उनको उससे भी विरक्ति हो गई। तदपि समय-समय पर वे आर्यसमाज के कार्यक्रम से सम्बद्ध रहते हैं तथा जितना उसके कार्य में सहयोग किया जा सकता था वह भी करते रहते हैं।

असुविधाओं की आँच में सिद्धमान साहित्यकार भी अपने तपबल से इतिहास बन सकता है, श्री गुरुदत्त इसके साक्षात्प्रमाण और उदाहरण हैं। उन्होंने कष्टों और असुविधाओं को झेलते हुए अपनी आरम्भिक जीवनी तैयार की है। सतत साधना और अनवरत प्रयास से उन्होंने उच्चता अर्जित की है। उनका लक्ष्य है जीवन के समस्त अंगों एवं सामर्थ्य से भारत माता, भारतीयता अथवा इन सबका पर्याय मानवता की सेवा की जाय। इसके लिए उन्होंने साहित्य क्षेत्र सर्वश्रेष्ठ और परमो-पयोगी माना है। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे राजनीति के क्षेत्र में भी क्रियाशील रहे। चिकित्सा-क्षेत्र में भी उन्होंने अपने इसी उद्देश्य को सम्मुख रखा। मानव की ऐसी कोई भी समस्या नहीं जिसको उन्होंने अपनी रचनाओं में न उठाया हो और उसका समाधान न प्रस्तुत किया हो।

आज ९४ वर्ष की आयु में, रुग्णावस्था में भी वे अपने उद्देश्य और ध्येय के प्रति निष्ठा से कार्यरत हैं। वे अधिकाधिक रूपेण अपने इस जीवन में अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उत्साहवान हैं।

सम्पादकीय निवेदन

साहित्य का, विशेषतया उपन्यास साहित्य का, सबसे बड़ा समालोचक समय होता है। हम देखते हैं कि अधिकांश उपन्यासकारों का गौरव अल्पकालीन होता है। इसका कारण उनकी रचना की महत्ता का अल्पकाल में समाप्त हो जाना है। कुछ लेखक ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवनकाल में तो गौरव का अनुभव करते हैं किन्तु उनके साथ ही उनका गौरव विलुप्त हो जाता है। वास्तव में वह साहित्यकार और उपन्यासकार ही सर्वोत्कृष्ट और गौरवशाली माना जाता है जिसकी रचना साहित्य की स्थायी सम्पत्ति बन जाती है। वर्तमान में किसकी रचना में स्थायित्व है, यह कह पाना अत्यन्त कठिन होता है। इसकी यथार्थ परीक्षा तो काल ही करता है। हम देखते हैं कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माणकाल में जो रचनाएँ अभूतपूर्व मानी जाती थीं आज उनमें से अधिकांश तो विलुप्त हो गई हैं और कुछ केवल पुस्तकालयों में अथवा संग्रह ग्रन्थों में अवशिष्ट हैं। सर्वसाधारण की पठनीय सामग्री में अब उनका स्थान नहीं है।

किन्तु गुरुदत्तजी उन उपन्यासकारों में हैं, जिनकी कृतियाँ कालातीत मानी जाती हैं। क्योंकि गुरुदत्त जी किसी-न-किसी विषय को लेकर अपने उपन्यास की रचना करते हैं, इस कारण उपन्यास होने पर भी उनकी कृतियाँ सोद्देश्य होती हैं। जो लोग यह कहते हैं कि लेखक को अपनी रचनाओं में पाठकों को किसी दिशा में प्रेरित नहीं करना चाहिए, उनसे गुरुदत्त जी सहमत नहीं हैं। उनकी मान्यता है कि लेखक यदि किसी उद्देश्य विशेष को ध्यान में रखकर नहीं लिखता है तो वह लेखक श्रेष्ठ लेखक नहीं कहा जा सकता। वे यह भी मानते हैं कि लेखक जो कुछ लिख रहा है, पाठक उसको उसी रूप में ग्रहण करे। यदि पाठक उसमें कुछ और देखने लगता है तो यह लेखक की कमी है। इस कार्य में यदि लेखक को उपदेशक बनना भी पड़ जाय तो कोई हानि नहीं। उपदेशक बनना पाप नहीं है। लेखक की रसपूर्ण रचना यदि सदुपदेश भी देती है तो यह सोने पर सोहागा ही समझना चाहिए। उनका कहना है कि श्रेष्ठ साहित्य का स्वरूप बुद्धि को व्यावसायात्मिका बनाने वाला होता है और इसी को सम्पन्न करने के लिए वे यत्न करते रहते हैं। उनका यत्न कितनी मात्रा में सफल हुआ है, इसका अनुमान तो उनके पाठक ही लगा सकते हैं। वैसे भी किसी भी रचना का परिणाम तुरन्त उत्पन्न नहीं होता। साहित्य का प्रभाव तो भविष्य के गर्भ में ही होता है।

उनके उपन्यासों में कतिपय ऐसे विशेष तत्त्व हैं जो कथाकार की लोकप्रियता की चरम स्थिति तक पहुँचने में सदैव सहायक होते हैं। उपन्यासों की घटनात्मकता, स्वाभाविक चित्रण, समाज के कटु और नग्न सत्य, अनूठी वर्णन-शैली तथा घटनाओं की आकस्मिकताएँ आदि लोकप्रियता-वर्द्धक तत्त्व पाठकों के विशेष आकर्षण हैं। वर्ग-संघर्ष, लैंगिक आकर्षण, चारित्रिक पतनोत्थान, व्यर्थ का दिखावा और चकाचौंध में छिपी कटुता, नग्नता और भ्रष्टाचार का सुन्दर अंकन उनके उपन्यासों को जनमानस के निकट ले जाता है। उनकी कृतियों का इतनी अधिक मात्रा में लोकप्रिय होने का यही रहस्य है।

गुरुदत्त जी का विश्वास है कि आदिकाल से इस देश में बसने वाला आर्य-हिन्दू समाज ही देश की सुसम्पन्नता और समृद्धि के लिए समर्पित हो सकता है, क्योंकि उसका ही इस देश की धरती से मातृवत् सम्बन्ध है। परिवर्तित मतानुयायी और अहिन्दू रूप में रहने वाले सभी वर्गों के प्रति उनके मन में स्नेह का भाव तो है, परन्तु उनको हिन्दू से भिन्न करने वाली परिस्थितियों को नष्ट कर उन्हें पुनः हिन्दू वर्ग में लाकर सशक्त राष्ट्रात्मा के रूप में देखने की जयिष्णु कल्पना गुरुदत्त जी के मस्तिष्क में अभी भी हिलोरें ले रही है। उनका विचार है कि संसार में शाश्वत धर्म के रूप में यदि किसी को मान्यता मिलनी चाहिए तो वह है 'वैदिक धर्म'। शेष सब आकस्मिक प्रतिक्रियाओं और समाज सुधार के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं है।

किसी भी विषय को अपनी कथा का आधार बना लेना उपन्यासकार गुरुदत्त की अपनी विशेषता है। ऐतिहासिक, सामाजिक, कला-प्रधान, भाव-प्रधान, समस्या-प्रधान आदि-आदि कथावस्तु पर ही अधिकांशतया हिन्दी उपन्यासकारों की लेखनी का कमाल देखने को मिलता रहता है। विशुद्ध विज्ञान जैसे विषय पर अंग्रेजी में एच० जी० वैल्स सदृश कुछ लेखकों की कलम चली है और चर्चित भी रही है। किन्तु हिन्दी उपन्यास-क्षेत्र में गुरुदत्त से पूर्व किसी लेखनी का कमाल देखने को कदाचित् ही मिला हो। विज्ञान विषय पर गुरुदत्त जी ने तीन सशक्त उपन्यास लिखे हैं, उन्हें इस संग्रह में समाविष्ट किया गया है। किन्तु इसका यह अभिप्राय कदापि नहीं कि उनके अन्य उपन्यास सशक्त नहीं हैं।

वर्तमान युग को आधुनिक युग की संज्ञा दी जाती है और आधुनिक युग को भी विशेष नाम देकर वैज्ञानिक युग कहा जाने लगा है। इस वैज्ञानिक युग का मनुष्य असीम सामर्थ्य वाला हो गया है। केवल अपने दो हाथ-पैरों पर आश्रित न रहकर वैज्ञानिक उपकरणों के आधार पर वह सहस्रबाहु हो गया है। अर्थात् उसके हजार हाथ हो गए हैं। एक स्थान पर बैठा हुआ वह अपने इन वैज्ञानिक उपकरणरूपी हाथों से अनेक स्थानों पर कार्य सम्पन्न करने में समर्थ हो गया है। इसी सम्पन्नता और सामर्थ्य को उपन्यासकार गुरुदत्त ने इस संग्रह के तीन वैज्ञानिक उपन्यासों में अतीव विद्वत्ता, रोचकता और कलात्मकता से प्रतिपादित किया है।

किन्तु क्या इतना समर्थ होने पर भी किसी वैज्ञानिक में कहीं सुबुद्धि का भी संचार हुआ है ? किंचित् भी नहीं । यही इस युग की, इस वैज्ञानिकता की अथवा यों कहा जाय कि इस मानसिकता की विडम्बना है । वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ मनुष्य में अभिमान, मदांधता, सुख-सुविधा की अन्यतम आकांक्षा के साथ ही उसमें नृशंसता और क्रूरता भी निरन्तर बढ़ती जा रही है । किन्तु क्या यह सारा दोष विज्ञान अथवा वैज्ञानिक प्रगति का है ? नहीं, यह मानव की अपनी दुर्बलता है । मानव का स्वभाव है 'थोथा चना बाजे घना' । तनिक-सी वैज्ञानिक उपलब्धि पर उसमें अभिमान भर जाता है और उस अभिमान के वशीभूत वह कर्तव्याकर्तव्य भी भूल जाता है ।

यह निर्विवाद सत्य है कि ज्यों-ज्यों विज्ञान प्रगति करता जा रहा है त्यों-त्यों संसार का रहस्य गहन होता जा रहा है, विज्ञान किसी प्रकार की भी गुत्थी सुलझाने में समर्थ नहीं है । विपरीत इसके उसके कारण गुत्थियाँ उलझती जा रही हैं । वैज्ञानिक की भौतिक उन्नति उसके मनोविकारों का उपचार नहीं कर पा रही है ।

वैज्ञानिक प्रगति अपने मूल से ही अभिमान का आधार लेकर चलती आ रही है । एक समय वह था जब वैज्ञानिक केवल इतना जानता था कि 'जल, वायु और अग्नि ही मूल पदार्थ हैं । इनसे ही सारी सृष्टि का निर्माण हुआ है ।' तो उस समय भी वह यही कहता था कि उसने संसार का पूर्ण रहस्य जान लिया है । किन्तु कालान्तर में अपने ही अन्वेषण से जब वैज्ञानिक को यह विदित हुआ कि मूल पदार्थ तीन नहीं अपितु नब्बे हैं, तो उस समय उसने लगभग यह घोषणा ही कर दी थी कि वह तो अब आतमा और परमातमा तक का शवच्छेदन करने में समर्थ हो गया है । वह कहने लग गया था कि पुनर्जन्म मात्र वाक्छल है । संसार में रहते हुए ही सब कुछ सुख और आनन्द है ।

उसको इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ । उसके बाद जब उसने विद्युत् और ऊर्जा के रहस्य को कुछ जान लिया तो उसका अभिमान और बढ़ गया । उसने यह समझ लिया कि अब तो वह शीघ्र ही कृत्रिम जीवधारी शरीर बनाने में सक्षम होने वाला है । फिर ईश्वर की सत्ता के लिए स्थान कहाँ रह जाएगा ? उसके बाद वैज्ञानिक ने अणु विखण्डन पर विजय प्राप्त कर ली तो उसको अभिमान होने लगा कि अब तो वह उस शक्ति के आधार पर पूर्ण पृथ्वी और उससे भी आगे भू-मण्डल को भी मथ डालने की शक्ति प्राप्त कर चुका है और वह प्राणी में विद्यमान आत्मा के अस्तित्व को ही असत्य सिद्ध कर देगा ।

ऐसी नहीं कि सारा वैज्ञानिक समुदाय इस अहंकार में ही डूबा रहा । कहीं-कहीं इक्का-दुक्का वैज्ञानिक दूरदर्शी भी हुआ और उसने संसार की रहस्यमय गुत्थियों को सुलझाने का यत्न भी किया और वह यह मानता रहा कि उसका ज्ञान पूर्ण नहीं है । किन्तु तदपि अधिक संख्या अभिमानी वैज्ञानिकों की ही रही ।

अणु विखण्डन से वैज्ञानिकों को अपार शक्ति प्राप्त हो गई। किन्तु समस्त संसार इस शक्ति को देखकर चकाचौंध और आकम्पित-सा हो रहा है। उसकी आशंका का मुख्य विषय है इस शक्ति का उन वैज्ञानिक कहे जाने वाले अज्ञानियों के हाथों में होना जो आत्मा, परमात्मा और मनुष्य के भविष्य पर विश्वास ही नहीं करते। इससे भी अधिक आज के वैज्ञानिक उस अणुशक्ति को निरन्तर तथा अधिकाधिक विनाशकारी बनाने में संलग्न हैं। संसार के न केवल सम्पन्न देश अपितु विकासशील देश भी उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए अतुल धनराशि का अपव्यय करने को उद्यत हैं। इसके साथ ही कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इन आविष्कारों और परीक्षणों के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं और उन पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग कर रहे हैं।

इस विषम परिस्थिति में इन आविष्कारों का क्या परिणाम निकलेगा और उनका क्या प्रभाव होगा तथा इनके विरोध में किये जाने वाले आन्दोलन का भी क्या प्रभाव होगा, यह कह पाना कठिन है। क्या वैज्ञानिक अपने परीक्षण और आविष्कार बन्द कर देंगे तथा क्या अणुशक्ति पर प्रभावी देश अणु और परमाणु बम्ब का प्रयोग निषिद्ध कर देंगे? कदाचित् यह भी सम्भव है कि वे देश जिनके पास आणविक अस्त्र हैं भविष्य में इन आणविक अस्त्रों का प्रयोग अपने शत्रु देश पर कर दें, इस प्रकार वह मानवता को अपनी दासता की बेड़ियों में बाँधने का यत्न करें।

ये तथा इसी प्रकार के प्रश्न इस शृंखला के उपन्यासों में उठाए गए हैं। लेखक ने अपनी विचारशील बुद्धि के अनुसार इन सब परिस्थितियों के निराकरण का उपाय भी अपने कथानकों में सुझाया है। उपन्यासकार गुरुदत्त का मत है कि संसार में व्यक्तिगत अथवा समष्टिगत सुख-शान्ति प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपने मन के विकारों से मुक्ति पाना परमावश्यक है, इन विकारों के रहते हुए उसे सुख-शान्ति की अपेक्षा दुःख और अशान्ति ही उपलब्ध होगी।

इस शृंखला के तीनों उपन्यासों में उपन्यासकार ने वैज्ञानिक आविष्कारों की अद्वितीय छटा बिखेरी है। ऐसी-ऐसी विचित्र और सुखद कल्पनाएँ इन उपन्यासों में की गई हैं कि इनको पढ़ते हुए पाठक स्वयं को किसी विज्ञानलोक में विचरण करता हुआ अनुभव करने लगता है। इन आविष्कारों का परिचय प्राप्त करने के लिए हमें प्रथम उपन्यास 'सहस्रबाहु' में कश्मीर घाटी में केशव द्वारा निर्मित 'स्वर्गलोक' की सैर करनी होगी। 'गगन के पार' में अन्तरिक्ष निवास में निवास करना पड़ेगा। इसी प्रकार 'अन्तरिक्ष में' भी हमें भू-आकर्षण से रहित उस वैलून की सैर करने को मिलेगी जिसका संचालन बिना ईंधन के ही होता है।

इसे हम विज्ञान की महान् उपलब्धि मान सकते हैं। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि वैज्ञानिक उन्नति ने मनुष्य की शक्ति को अत्यधिक बढ़ा दिया है। उसका

एक परिणाम यह भी हो रहा है कि धीरे-धीरे मनुष्य का मन और मस्तिष्क यन्त्रवत् होते जा रहे हैं। आज भावना और कर्तव्य का मूल्य समाप्त होता जा रहा है। यहाँ तक कि प्रेम और यौन-सम्बन्ध भी मशीनी बन गए हैं। नैतिकता तो नाम को भी नहीं रही।

हमारे उपन्यासकार का यह सुविचारित मत है कि विज्ञान द्वारा मनुष्य कितनी ही भौतिक सुख-सुविधा का अर्जन कर ले परन्तु अन्ततः यह सब विनाशकारी ही सिद्ध होने वाला है। क्योंकि ज्यों-ज्यों मनुष्य की शक्ति बढ़ती जाती है उसमें उतनी ही ईर्ष्या, द्वेष तथा प्रतिशोध की अहितकर संवेदनाएँ भी जाग्रत् होने लगती हैं। इतना ही नहीं, किसी अन्य का अहित करते-करते वह चने में घुन की भाँति स्वयं भी पिस जाता है।

आज संसार की महाशक्तियाँ एक-दूसरे से ईर्ष्यावश अथवा प्रतिशोध की भावना से अनुप्रेरित नये-नये विनाशकारी उपकरणों का आविष्कार करने में लगी हैं। उन सबका लक्ष्य एक-दूसरे को ध्वंस करना ही है। इसके मूल में है मनुष्य का अहंकार आदि जिनका कि हम पूर्व में उल्लेख कर आए हैं।

गुरुदत्त के उपन्यास चाहे वे वैज्ञानिक हों, ऐतिहासिक हों अथवा कि सामाजिक आदि, उन सबमें उनका गम्भीर वैज्ञानिक अध्ययन, पुष्ट सामाजिक कथा, अनोखा देशी-विदेशी वातावरण और कथा की रोचकता तथा उसका माधुर्य, इन सबका सहज सम्मिश्रण पाया जाता है। अपना अनोखापन, अनूठापन और दूर की कौड़ी लाने की कला में उनकी निपुणता यह सब उनकी विशेषताएँ हैं। भले ही वैज्ञानिक आविष्कार का वर्णन क्यों न हो, उन आविष्कारों में भी सजीवता लाने के लिए उन्होंने उनके सहज स्वाभाविक वर्णन किए हैं, जिससे पाठक को यह अनुभव ही नहीं होने पाता कि वह विज्ञान जैसे शुष्क और गहन विषय का अध्ययन कर रहा है।

गुरुदत्त के उपन्यासों में आद्योपान्त भरपूर रोचकता और मनोरंजन होता है। विषय कितना ही गुरु-गम्भीर क्यों न हो, उसको वे उपन्यास की परिधि में ही प्रस्तुत करते हैं। यही उनकी विशेषता है। जैसा कि हमने आरम्भ में भी कहा है कि प्रस्तुत संग्रह के उपन्यास वैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर आधारित होते हुए भी ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन और रोचकता से परिपूर्ण हैं। आशा है पाठकों के लिए यह नया संग्रह अत्यन्त मनोरंजक और लाभदायक सिद्ध होगा।

इस शृंखला के तीन वैज्ञानिक उपन्यास

सहस्रबाहु

यह शृंखला वैज्ञानिक उपन्यासों की है। इसके तीन उपन्यास हैं—'सहस्रबाहु', 'गगन के पार' और 'अन्तरिक्ष में'। सहस्रबाहु इसका प्रथम उपन्यास है। इसका रचनाकाल १९५८ के लगभग है। उन दिनों जहाँ एक ओर पंचशील के सिद्धान्त की एशियाई देशों में बड़ी चर्चा चल रही थी वहीं दूसरी ओर द्वितीय विश्वयुद्ध के हिरोशिमा और नागाशाकी के नरसंहार की टीस भी ताजी ही थी। किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी तथाकथित महाशक्तियाँ अणु और परमाणु बमों के निर्माण की होड़ में व्यस्त थीं।

'सहस्रबाहु' वैज्ञानिक उपन्यास है। अतः इसमें विज्ञान की उपलब्धियों का पूर्णतया उल्लेख किया गया है। विज्ञान मानव-जीवन के लिए कितना उपयोगी हो सकता है यह भी इसमें सोदाहरण सिद्ध किया गया है। किन्तु मानव का मन जोकि नितान्त भौतिकवादी है, वह इस भौतिक विज्ञान का अथवा इस आधुनिक विज्ञान का सदुपयोग करने की अपेक्षा किस प्रकार दुरुपयोग कर बैठता है, यह भी इस उपन्यास में विस्तार से दिखाया गया है।

उपन्यास की कथा केशव और विनोद दो मित्रों की परिधि में चक्रायमान है। केशव और विनोद दोनों ही आधुनिक विज्ञान के छात्र हैं, सहपाठी भी हैं। विनोद तो एम० एस-सी० उत्तीर्ण करने के उपरान्त कालेज में प्राध्यापक बन जाता है किन्तु केशव धनवान होने के कारण विदेश चला जाता है। केशव विदेश में अनेक प्रकार के प्रयोग करने के उपरान्त स्वदेश लौट आता है और कश्मीर घाटी के सुदूर पर्वतीय क्षेत्र में प्रयोगशाला के नाम पर अपना नया संसार बसा लेता है। उस संसार का नाम भी उसने 'स्वर्गलोक' रखा है। उसके स्वर्गलोक में आधुनिक विज्ञान के अद्भुत चमत्कारों से सुसज्जित अति सुरक्षित और सब प्रकार की सम्पन्नता से समृद्ध आधुनिक भवन का निर्माण किया और उससे कुछ दूरी पर एक बस्ती भी बसाई जाती है। वहाँ आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से कृषिकार्य होने से एक-एक फसल में कई गुणा अधिक उपज होती है। भाँति-भाँति के पेड़-पौधों में भाँति-भाँति के फल-फूल की सृष्टि होती है। न केवल इतना अपितु वहाँ कृत्रिम चाँद-सितारे भी बनाए जाते हैं। वृद्धों का कायाकल्प किया जाता है। स्वचालित यन्त्र वहाँ पर सेवकों का कार्य सम्पादित करते हैं।

इतना सब-कुछ होने पर भी उस 'स्वर्गलोक' में नीति का, अनीति का कोई विचार नहीं, सात्विकता से वे कोसों दूर रहते हैं, आचरण-शुद्धि के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं, अध्यात्म को वे लोग जानते भी नहीं। यहाँ तक कि वे भाई-बहिन में परस्पर यौन-सम्बन्धों को किसी भी प्रकार बुरा नहीं समझते। किसी की पत्नी किसी के भी साथ सम्भोग के लिए स्वतन्त्र-सी है। उसका परिणाम यह होता है कि परस्पर की मित्रता शत्रुता में परिणत होती है, कोई किसी की हत्या करता है तो कोई किसी अन्य की। अन्त में वह स्वर्गलोक ही इस शत्रु का शिकार बनकर स्वाहा हो जाता है। इस सबमें वे ही आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण एक-दूसरे के सहायक होते हैं।

विज्ञान की शिक्षा किस प्रकार मनुष्य को पशु बना देती है इसका उदाहरण इस उपन्यास में केशव के व्यवहार से भलीभाँति व्यक्त हुआ है। जिस माता-पिता के आधार पर केशव इतना बड़ा 'लोक' निर्माण करने के योग्य हो सका, वही केशव अपने वृद्ध और अपाहिज पिता की सेवा-सुश्रूषा करना अपना किंचित् भी कर्तव्य नहीं समझता। विपरीत इसके भारतीय वातावरण में पला-पढ़ा, केशव का मित्र विनोद अपने मित्र के पिता की उसी भाँति सेवा करता है मानो वे उसके अपने ही पिता हों। केशव ही नहीं अपितु अन्य पात्र भी इसी प्रकार का व्यवहार करते हैं।

उपन्यासकार ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट करने का यत्न किया है कि केवल विज्ञान ही मानव को सुख तथा शान्ति प्रदान करने में सहायक नहीं होता। मनुष्य के मन में कुछ विचार हुआ करते हैं, जिनको भारतीय दार्शनिक काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि नाम देते हैं। वास्तव में ये विचार ही समस्त संसार के प्राणियों के दुःखों का मूल कारण होते हैं। संसार कितनी ही भौतिक उन्नति कर ले किन्तु जब तक मनुष्य में ये विकार विद्यमान हैं तब तक वह किसी भी प्रकार उन्नति नहीं कर सकता। वही उन्नति उसकी अवनति का कारण भी बन सकती है, जैसा कि केशव तथा उसके दल के सदस्यों के साथ हुआ है।

भौतिक उन्नति इन विकारों से मुक्ति दिलाने में किंचित् भी सहायक नहीं होती। भारतीय मनोवैज्ञानिकों का यह मत है कि इस प्रकार के मनोविकारों से यदि मनुष्य मुक्ति चाहता है तो उसको त्याग, तपस्या के साथ-साथ अपने पूर्वापर जन्म के विषय में भी सोचना होगा। सब प्रकार की सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिए मन का विकाररहित होना परमावश्यक है। भौतिक उन्नति के साथ-साथ इन विषयों पर भी इस उपन्यास में विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह उपन्यास विशुद्ध वैज्ञानिक है। इसमें विज्ञान के उपकरणों की अनेक प्रकार की गाथाएँ—काल्पनिक अथवा वास्तविक—बड़े विस्तार से वर्णन की गई हैं। किन्तु जैसा कि हमारे उपन्यासकार की प्रवृत्ति है, वे अपनी रचना को मात्र उपदेशपरक नहीं रखते। उनकी रचनाओं से मानव को

जहाँ उपन्यास के विषयान्तर्गत विशिष्ट ज्ञान की उपलब्धि होती है वहीं उसका उपन्यास के माध्यम से भरपूर मनोरंजन भी होता है। उपन्यास के माध्यम से यदि पाठक का मनोरंजन न हो तो फिर वह उपन्यास नहीं रह जाएगा। इसका विचार हमारे उपन्यासकार के मन में सदा रहता है और उनकी सभी रचनाएँ प्रेरणादायक होने के साथ-साथ रोचक भी होती हैं। सहस्रबाहु भी वैसी ही रचना है।

गगन के पार

वैज्ञानिक उपन्यासों के इस संग्रह में 'गगन के पार' दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास का रचनाकाल सन् १९७१ है। तब तक चन्द्रमा पर मानव ने अपने चरण नहीं धरे थे। न वह वहाँ की मिट्टी इस धरती पर लाकर उसका निरीक्षण-परीक्षण और अन्वेषण करने में समर्थ हुआ था। हाँ, चाँद पर जाने की थोड़ी-थोड़ी तैयारी वह अवश्य करने लगा था। समस्त विश्व में वैज्ञानिक अनुसन्धान और विश्लेषण की प्रक्रिया भी प्रगति पर अवश्य थी।

बीसवीं सदी के आठवें दशक में भविष्य की वैज्ञानिक उपलब्धियों की भूमिका बनने लगी थी। चन्द्रमा पर निवास का स्वप्न भी कदाचित् विश्व मानव की निद्रा में समाने लगा हो। कदाचित् उसी का यह परिणाम हो कि हमारे उपन्यासकार को भी 'गगन के पार' का स्वप्न दिखाई दिया। किन्तु इतना तो मानना ही होगा कि उस समय उपन्यासकार ने जो स्वप्न देखा था वह कुछ ही वर्षों बाद वास्तविक रूप में परिणत होने लगा।

हमारे उपन्यासकार ने जिस अणुशक्ति, राडार और उपग्रहों की सृष्टि इस उपन्यास में सन् १९७१ में की है वह कालान्तर में प्रत्यक्ष होती दिखाई देने लगी थी और आज उसका बहुत-कुछ अंश प्रत्यक्ष हो भी चुका है। अन्तरिक्ष निवास-गृह भले ही अभी न बन पाये हों किन्तु अनेक देशों ने अन्तरिक्ष की कक्षा में अपने उपग्रह स्थापित कर दिये हैं और उन उपग्रहों के माध्यम से वह अपने-अपने देशों में अनेक वैज्ञानिक परीक्षण करने में सफल हो रहे हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्र में भारत कितनी शक्ति संग्रह कर लेगा, वैज्ञानिक उपकरणों से कितना उपकृत हो जाएगा, ऊर्जा एवं शक्ति के स्रोत पर वह कितना अधिकार कर पाएगा, तकनीकी ज्ञान के महत्त्व को कितना समझ जाएगा और उसमें कितनी सिद्धता प्राप्त कर लेगा, संचार-साधनों पर उसका कितना अधिकार हो जाएगा, रसायन शास्त्र विज्ञान और भौतिकी में यह कितनी उन्नति कर लेगा, इसका पूर्वानुमान हमारे उपन्यासकार ने आज से डेढ़ दशक पूर्व लगा लिया था और वह यदि अक्षरशः नहीं तो अधिकांश में पूर्ण होता दिखाई दे रहा है। 'गगन के पार' में अन्तरिक्ष गृह यदि नहीं बन पाया है तो भी अन्तरिक्ष में उसने अपने उपग्रह तो स्थापित कर ही लिये हैं, जहाँ से सारी संचार-व्यवस्था को नियन्त्रित किया जा रहा है।

वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा के अतिरिक्त सामान्य शिक्षा के विषय में भी जो बात आज हमारे शासकों के मस्तिष्क को कुरेद रही है, उसके विषय में हमारे उपन्यासकार ने पहले ही बहुत-कुछ लिख दिया है। जिस 'ओपन यूनिवर्सिटी' की आज इतनी धूम है 'गगन के पार' में उसका उल्लेख अट्ठारह वर्ष पूर्व कर दिया गया था। नई शिक्षा-पद्धति भले ही आज राजीव गांधी के मस्तिष्क के विकार रूप में प्रस्तुत की गई हो, किन्तु इसका सम्यक् आधार हमारे उपन्यासकार ने अपने उपन्यास में सन् १९७१ में ही कर दिया था। यदि कोई शुद्ध बुद्धि वाला प्रधान-मन्त्री इस देश का शासक बना अथवा किसी विशुद्ध भारतीय राजनीतिक दल का यहाँ शासन हुआ तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि उस समय 'गगन के पार' उपन्यास में वर्णित शिक्षा की नीति पर अवश्य विचार होगा। और उसी समय वह 'नई शिक्षा नीति' का रूप ग्रहण करेगी। आज की नई शिक्षा नीति इटालियन और अंग्रेजी अविकसित बुद्धि का विलास-मात्र है, शिक्षा-नीति नहीं।

समाजवाद के विषय में अब शनैः-शनैः देशवासियों का भ्रम टूटता जा रहा है, राजनीतिज्ञ भी इस भ्रम से उबर रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में समाजवाद की निस्सारता अथवा असामाजिकत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है जो कि सत्य सिद्ध हो रहा है। कम्युनिस्टों की तानाशाही जग-जाहिर है। उसको एक दिन टूटना है, इसका संकेत भी इस उपन्यास में किया गया है। वर्तमान में रूस के राष्ट्रपति गोर्वाचोव ने जो किया और चीन के प्रधानमन्त्री और राष्ट्राध्यक्ष ने अपने-अपने देशों में जिस नीति का अनुपालन इस समय किया है, उसका संकेत हमारे उपन्यासकार ने बहुत पहले अपने इस उपन्यास के माध्यम से हिन्दी पाठकों को दे दिया था।

प्रस्तुत उपन्यास का कथानक एक स्थान पर ऐसा मोड़ लेता है कि उस समय पाठक स्तम्भित-सा रह जाता है। घटनाक्रम के अनुसार तत्कालीन चीन का शासक अपने दुराग्रह-वश भारत पर कुदृष्टि रखता है और उसको मिटाने के लिए भाँति-भाँति के कुचक्र करता है। उसी श्रृंखला में एक बार उसका गुप्तचर भारत के अन्तरिक्ष-गृह को अपने स्थान से विचलित करने में सफल हो जाता है। यह सब घटनावश ही होता है, उसने किसी प्रकार की तकनीक नहीं सीखी है। चीन उस निवास-गृह को अपने देश की ओर मोड़ना चाहता है, किन्तु असमर्थ रहता है, वह उसको नष्ट-भ्रष्ट करना चाहता है, उसमें भी असमर्थ रहता है। अन्त में वह गृह अन्तरिक्ष की गहन कक्षा में चला जाता है। यह संयोग की ही बात है कि वह सूर्य से न तो टकराता है और न ही उसके समीप जाता है। इस प्रसंग में उपन्यासकार ने भारतीय वैज्ञानिकों की प्रवीणता, कुशलता और बुद्धि-चातुर्य का परिचय देते हुए बताया है कि यदि किसी प्रकार की अन्य दुर्घटना न हो जाए तो वह अन्तरिक्ष स्थित निवासगृह शताब्दियों तक सुरक्षित रह सकता है और उसके निवासियों को

भी उतनी अवधि में निरन्तर भोजन आदि सबकुछ प्राप्त होता रह सकता है।

विज्ञान और योग का समन्वय इस पुस्तक का विषय है। लेखक का कथन है—'भारतीय दर्शनशास्त्र में भू-आकर्षण की एक परिभाषा दी गई है। उस परिभाषा के आधार पर भारत के वैज्ञानिक अन्तरिक्ष निवास-गृह आदि का निर्माण करते हैं। हमारे यहाँ शुद्ध विज्ञान तो शास्त्रों में वर्णित है परन्तु उस विज्ञान के प्रयोग को कार्य में कुशलता अर्थात् योग कहा गया है।'

उपन्यासकार 'योगी' को 'टैक्नीशियन' के रूप में व्याख्यायित करता है। श्यामसुन्दर चक्रवर्ती और आचार्य विश्वेश्वर, उपन्यास के ये दो पात्र यदि भारतीय मनीषा के प्रतिनिधि हैं जो जानकी देवी और प्रमिला तथा नीति आदि भारतीय वैज्ञानिकों का प्रतिनिधित्व करते हैं। उपन्यास में स्थान-स्थान पर भारतीय मनीषा तथा भारतीय ज्ञान-विज्ञान की विस्तार से व्याख्या की गई है। इसके साथ ही कम्युनिस्ट विचारधारा का पग-पग पर प्रत्याख्यान किया गया है और बुद्धि की महत्ता को स्वीकारा गया है। विचार-स्वातन्त्र्य को जीवनधारा का मूल माना गया है। तानाशाही कितनी भयावह होती है, यह उपन्यास के अन्त में चीन और रूस की तानाशाही के कुपरिणामों से सिद्ध किया गया है। इस प्रकार यह उपन्यास पूर्ण वैज्ञानिक होने पर भी अपनी औपन्यासिकता को अपने परिवेश में समेटे हुए है जिससे पाठक ज्ञान-विज्ञान की जानकारी के साथ-साथ उपन्यास के आनन्द से भी आनन्दित रहता है। यही हमारे उपन्यासकार की विशेषता है।

अन्तरिक्ष में

'अन्तरिक्ष में' इस ग्रन्थमाला का तीसरा और अन्तिम उपन्यास है। इसका प्रकाशन वर्ष १९८२ है तो इससे यही अनुमानित होता है कि इसका रचनाकाल १९८१ से पूर्व लगभग ही हो सकता है। वैज्ञानिक उपन्यासों की इस शृंखला के तीन उपन्यासों में बाद के दो उपन्यास 'भू-आकर्षण' पर आधारित हैं। जिस प्रकार इससे पूर्व के उपन्यास 'गगन के पार' का कथ्य और साध्य भू-आकर्षण था उसी प्रकार प्रस्तुत उपन्यास की विषयवस्तु भी भू-आकर्षण ही है।

उपन्यास का नायक सोमदेव अमेरिका में अनुसन्धानकर्त्ता प्राध्यापक है। अपने शोध, खोज एवं आविष्कार के विषय में वह अपने विश्वविद्यालय के कुलपति को अपनी आशंका व्यक्त करते हुए कहता है—'वैज्ञानिकों ने तरल आक्सीजन की थैली को वस्त्रों के नीचे रखकर वायु की विवशता से पार पा लिया है परन्तु भू-आकर्षण से पार पाने का अभी तक कोई सुगम उपाय उपलब्ध नहीं हो सका है। भू-आकर्षण का वायु के दबाव से विरोध किया जा रहा है, परन्तु यह उपाय इतना व्यय-साध्य है कि सामान्य मनुष्य इसके प्रयोग का स्वप्न भी नहीं ले सकता।'

सोमदेव इस भू-आकर्षण का प्रतिरोध करने में अपनी किंचित् सफलता का

वर्णन जब अपने पितामह से करता है तो वे उसको बताते हैं—'स्वामी नित्यानन्द जी जब समाधि पर बैठते थे तो वे अनायास ही भूमि से दो गज ऊपर उठ जाया करते थे।……स्वामी जी अपनी समाधि से अपने चारों ओर के स्थान को भू-आकर्षणरहित कर लिया करते थे। वही तुमने अपने 'एण्टीना' के माध्यम से करने का यत्न किया है।'

कालान्तर में वही सोमदेव जिसने अपने पितामह से भारतीय दर्शनशास्त्रों का अध्ययन किया है, अपने साथियों तथा पत्रकारों को इस विषय में बताते हुए कहता है, 'मैंने भू-आकर्षण के रहस्य को जाना है। भारतीय दर्शनशास्त्रों में इसका उल्लेख पाया जाता है। इसके निराकरण का मेरा उपाय बहुत अल्प-व्यय का होगा।'

इस प्रकार इस उपन्यास में भारतीय दर्शनशास्त्रों एवं वेद-शास्त्रों में निहित विद्या की तुलना में आधुनिक विज्ञान अणुमात्र ही सिद्ध नहीं किया गया है अपितु कहीं-कहीं पर तो उसकी अनुपादेयता को भी प्रकट कर दिया गया है। सोमदेव की पत्नी जो कि अमेरिकन नागरिक होने से उसी वातावरण में पली-पढ़ी है और जो स्वयं भी 'टेस्ट ट्यूब बेबी' जैसी किसी प्रक्रिया पर उसी विश्वविद्यालय में अनुसन्धान कर रही है, जब अपने पति के साथ भारत आती है तो उसकी सास उसके कार्य के विषय में जानने के उपरान्त उससे कहती है, 'यह सब तो बड़ा अद्‌भुत एवं एक अति लुभायमान है। जिस दिन तुम अमोनिया और गन्धक से किसी प्राणी का निर्माण करने में सफल हो जाओगी, उस दिन तुम मानवजीवन को एक अत्यन्त रसयुक्त जीवन से विलग करने में जुट जाओगी। उसके बाद तो मानवजन्य और टेस्ट ट्यूब निर्मित प्राणियों में परस्पर युद्ध होगा, इससे तो भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।' स्पष्ट है कि इस प्रकार से उत्पन्न मनुष्य को मानव किस आधार पर कहा जा सकता है और उसमें मानवता होगी भी कैसे ?

वास्तविक जीवन में हम देखते हैं कि अब तक इस संसार में २-३ टेस्ट ट्यूब बालकों का जन्म तो हो गया है, किन्तु वह गन्धक और अमोनिया के सम्मिश्रण को किसी ट्यूब में डालकर नहीं, अपितु पुरुष शुक्रकणों को नारी के भ्रूण में डाल कर, उसके रजस् से उनका संयोग करा कर, उस भ्रूण में ही उस गर्भ का पोषण करके उन शिशुओं का जन्म सम्भव हो पाया है।

'गगन के पार' की भाँति ही इस उपन्यास का वातावरण भी दो दशाब्द आगे का ही है, जिसे कि आज हम सत्य होता स्वयं देख रहे हैं। उपन्यासकार ने यह भ्रम दूर करने का भी यत्न किया है कि पाश्चात्य विश्व का महान् वैज्ञानिक न्यूटन स्वयं नास्तिक नहीं था किन्तु तत्कालीन पादरियों ने, जो समझते थे कि वह उनके द्वारा प्रचारित 'गौड' एवं उसके पुत्र ईसा के कारनामों को झुठला रहे हैं, और इससे उनकी रोजी-रोटी पर प्रभाव होने लगा है तो उन्होंने उसको नास्तिक घोषित कर दिया। वास्तव में वह ईश्वर पर विश्वास करने वाला व्यक्ति ही था। उपन्यासकार

की यह भी सम्मति है कि 'ज्ञान को धन का दास नहीं होना चाहिए। यह विद्वानों की सम्पत्ति है।'

इन वैज्ञानिक खोजों और आविष्कारों के साथ-साथ उपन्यास में 'होम-युनिवर्सिटी' की आधारशिला हमारे उपन्यासकार ने आज से दो दशाब्द पूर्व रख दी थी। वैज्ञानिक उपन्यास में राजनीति का रोचक समावेश गुरुदत्त की अनन्य विशेषता है। प्रस्तुत उपन्यास में रूस और अमेरिका की राजनीति का नग्न चित्रण ऐसी कलात्मकता से किया गया है कि वह पढ़ते और समझते ही बनता है।

पाश्चात्य देशों की भारत को उसका उचित सम्मान न देने की मनोवृत्ति के कुछ अंश एक अमेरिकन के मुख से इस प्रकार कहलाये गए हैं—

'आप अन्तर्राष्ट्रीय विषयों की बात को नहीं समझते। यहाँ न्याय-अन्याय कुछ नहीं, देशहित ही सर्वोपरि है। न तो रूस ही और न इंग्लैण्ड ही और अमेरिका भी यह नहीं चाहेगा कि इस आविष्कार का श्रेय किसी भारतीय को प्राप्त हो। विशेष रूप से तब जब आप यह कहते हैं कि 'इसका मूल वेद में है।'

'बहुत प्राचीन काल से संसार-भर में एक व्यापक संघर्ष चल रहा है, यह संघर्ष भी पूर्व-पश्चिम का ही है। यों समझो कि यह झगड़ा प्रत्यक्ष और काल्पनिक परमात्मा के मध्य है। तुम पूर्व के निवासी स्वयं को तो देवता कहते हो और हम पश्चिमवासियों को असुर। इसके विपरीत पश्चिम के देश तुम भारतवासियों को मूर्ख मानते हैं। इसलिए वह तुम जैसे मूर्खों को न बुद्धिमान होने देंगे और न विजयी ही।''''''समस्त यूरोप, अमेरिका और अफरीका के इस्लामी देश ये सभी तुम वेद का नाम लेने वालों के विरुद्ध एक हो गए हैं।'

यह वास्तविकता है और हमारे उपन्यासकार ने इन वैज्ञानिकों और विचारकों का प्रत्याख्यान करने का इस उपन्यास में यत्न किया है।

विज्ञान और वैज्ञानिकों की खोज, आविष्कार और उनकी परिणति तथा राजनीति के खिलाड़ियों के ये सब खेल इस उपन्यास में औपन्यासिक ताने-बाने के भीतर ही रचे गए हैं, किसी चिन्तन प्रधान कृति के रूप में नहीं। उपन्यासकार की यह विशेषता है कि अपने गहन-से-गहन कथ्य को वह नितान्त रोचक शैली में प्रस्तुत कर पाठकों के हृदय में उसको पैठाने में समर्थ है। फिर वह विज्ञान जैसा रूखा-सूखा विषय ही क्यों न हो। यही कारण है कि प्रस्तुत उपन्यास में पाठक को ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन का भी भरपूर आनन्द प्राप्त होता है।

—अशोक कौशिक

सहस्रबाहु

सहस्रबाहु

आधुनिक विज्ञान बताता है कि संसार के सब पदार्थ अणुओं से बने हैं और प्रत्येक अणु तीन प्रकार की शक्तियों के मेल से बना है। वे तीन शक्तियाँ हैं—इलेक्ट्रोन, प्रोटोन तथा न्यूट्रोन।

आईन्स्टीन ने कहा है—प्रकृति आदिरूप में शक्ति ही है और भारतीय विज्ञान यह सत्य सहस्रों वर्ष पूर्व जान चुका था कि अणु जो प्रकृति का छोटे से छोटा कण होता है उसमें सत्व, रजस्, तमस् तीन प्रकार के गुण विद्यमान होते हैं। तभी तो प्रकृति त्रिगुणात्मक कहलाती है। तब गुण-ही-गुण रह जाते हैं अन्य कुछ नहीं।

जब इन तीनों शक्तियों को यन्त्र द्वारा पृथक्-पृथक् कर दिया जाए और उनका उपयोग किया जाए तब क्या होता है?

हिन्दी का प्रथम शुद्ध वैज्ञानिक उपन्यास 'सहस्रबाहु'—जिसकी कल्पना सत्य सिद्धान्तों पर आधारित है परन्तु आधुनिक विज्ञान ने उसे अभी सत्य सिद्ध करना है।

प्रथम परिच्छेद

पिछले दो वर्षों से काम इतना अधिक हो रहा था कि शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक शक्ति का ह्रास भी होने लगा था। रात को सोते समय मैंने अपना पढ़ने का चश्मा पलंग के समीप रखी ड्रेसिंग टेबल के दराज में रख दिया और प्रातः उठते समय उसे बिल्कुल भूल गया। परिणाम यह हुआ कि सारा घर ढूँढ़ मारा किन्तु ड्रेसिंग टेबल की दराज देखने का ध्यान तक न आया। क्योंकि चश्मा उसमें कभी रखा नहीं जाता था और न ही रखना चाहिए था, इस कारण चश्मा नहीं मिला।

वास्तव में मैं भूल गया था कि रात सोने से पूर्व मैंने पलंग पर लेटे-लेटे केशव का पत्र पढ़ा था और पत्र तथा चश्मा, दोनों ही ड्रेसिंग टेबल के दराज में रख दिये थे। सवेरे न पत्र का ही ध्यान आया और न ही चश्मे को दराज में रखने का। निराश बिना चश्मे के ही कॉलिज जाना पड़ा। यद्यपि उस दिन केवल एक क्लास लेनी थी किन्तु उसको भी छुट्टी देनी पड़ी। मैंने क्लास में जाकर कह दिया, "मुझको खेद है कि मैं अपनी ऐनक कहीं रख बैठा हूँ। मैं आज पढ़ा नहीं सकूँगा।"

क्लास को छुट्टी दे मैं सीधा अपने 'ऑप्टीशियन' की दूकान पर जा पहुँचा। उसके रजिस्टर में अपने चश्मे का नम्बर निकलवाया और सायंकाल तक एक और चश्मे को तैयार कर देने का 'अर्जेण्ट ऑर्डर' दे दिया।

मैं कॉलिज से छुट्टी पा प्रायः लाइब्रेरी जाया करता था। वहाँ अपनी नवीन पुस्तक के लिए सामग्री एकत्रित किया करता था। आज वहाँ नहीं जा सका। पढ़ने-पढ़ाने वाले व्यक्ति के लिए चश्मा लँगड़े की लाठी के समान है। मैं कुछ काम करने में असमर्थ होने से घर जा पहुँचा। वहाँ मेरी स्त्री ने मेरी पुस्तकों की अलमारी से पुस्तकें उठा, एक ओर कर ढूँढ़ने की कोशिश की थी। कमरे की दरियाँ उठा ली गई थीं और मेज, अलमारी इत्यादि को खिसकाकर उनके पीछे तथा नीचे देख लिया था।

मैंने उसको चश्मे के लिए इतना प्रयत्न करते देख कहा, "जाने भी दो। अब तो मैं नया चश्मा बनने के लिए दे आया हूँ। एक घण्टे-भर में मिल जावेगा।"

"इतनी जल्दी?"

" 'ऐक्सप्रेस डिलीवरी' का ऑर्डर दिया है। देखें, क्या लेता है।"

इसके पश्चात् सब सामान ठीक किया जाने लगा। नौकर भी प्रातःकाल से

सामान उठाते-उठाते थक गया था परन्तु मेरी और मेरी स्त्री की परेशानी को देख वह चुप था। अब सामान यथास्थान रखने में वह आनाकानी करने लगा। मेरी स्त्री को अस्त-व्यस्त पड़ा हुआ सामान बहुत बुरा लग रहा था। इस कारण उसने कह दिया, "लछमन ! मैं भी तो तुम्हारे साथ लगी हुई हूँ। तुम मुझसे भी अधिक थक गए हो क्या ?"

मैंने नौकर के मुख पर विद्रोह की भावना देख कह दिया, "अच्छा, एक बात करो। जाओ चाय बना लो। स्वयं पी लेना और बीबीजी को भी पिलाओ। थकावट दूर हो जावेगी।"

लछमन प्रसन्न हो गया, उसका मुख खिल उठा। जब वह बिजली का स्टोव जला चाय के लिए पानी गरम करने लगा तो मेरी स्त्री ने बताया कि उसने अभी तक दोपहर का खाना नहीं बनाया। इससे मैं लछमन की कठिनाई को समझ गया। मैंने पूछा, "तो लछमन ने भी कुछ नहीं खाया ?"

परिस्थिति को इस प्रकार समझ वह एक कुर्सी पर बैठ गई। कुछ विचार कर बोली, "मुझे तो इस बात का ध्यान ही नहीं रहा। ऐनक ढूँढ़ने में इतनी लीन हुई थी कि न अपने खाने की सुध रही और न नौकर की।"

"तभी तो उसके माथे पर बल पड़ रहे थे। जाओ, स्वयं भी भोजन करो और उसको भी खिलाओ।"

भोजन के पश्चात् मालकिन और नौकर दोनों थकावट अनुभव करने लगे और दोनों विश्राम करने लगे। मैं चश्मे के बिना न तो पढ़ सकता था और न ही कुछ लिखने का काम कर सकता था। अतएव आराम-कुर्सी पर बेकार टेक लगाकर मन में हवाई किले बनाने लगा।

कुर्सी के सामने पलंग अपने स्थान से खिसकाकर रखा हुआ था और श्रीमती जी उस पर लेटकर थकावट दूर कर रही थीं। उसको यह चिन्ता लग रही थी कि व्यर्थ ही में बीस-पच्चीस रुपये व्यय हो जावेंगे।

एकाएक उसने मुख मेरी ओर कर कहा, "कैसी विचित्र बात है ! आप इस प्रकार भूलने लगे तो कॉलिज में कैसे काम कर सकेंगे ?"

"बात यह है कि पिछले दो वर्षों से काम इतना अधिक करना पड़ रहा है कि मैं शरीर और मन से थक गया हूँ।"

"तो आप विश्राम करिए न ! परीक्षा के पर्चे देखने के पश्चात् कहीं पहाड़ पर चलने का प्रोग्राम बना लीजिए। रुपये की कमी तो है नहीं।"

मैंने बताया, "चार सौ से ऊपर की तो पुस्तकें मँगवाने का विचार कर रखा है। वे सब छुट्टियों में पढ़नी हैं।"

"नहीं जी ! इस वर्ष तो पढ़ाई बन्द कर किसी पहाड़ पर जाकर विश्राम करिए। मैं पुस्तकें नहीं मँगवाने दूँगी। चलिए कश्मीर चलेंगे।"

"कश्मीर ?" मुझको अपने मित्र केशव के पत्र का स्मरण हो आया। उसने किश्तवार में गर्मियों की छुट्टियाँ व्यतीत करने का निमन्त्रण दिया था। पत्र के स्मरण आते ही मुझको रात पलंग पर लेटे-लेटे उसे पढ़ने का ध्यान हो आया और यह भी स्मरण हो आया कि रात को पत्र के साथ ऐनक भी टेबल की दराज में रखी थी।

मैं कुर्सी से उठ ड्रेसिंग टेबल की ओर लपका और दराज खोल सामने ऐनक पड़ी देख खिलखिलाकर हँस पड़ा। मुझे हँसता देख मेरी स्त्री भी उठकर पलंग पर बैठ गई। मैंने ऐनक हाथ में पकड़ उसे दिखाते हुए कहा,"देखो न, सारा घर उथल-पुथल कर डाला है, परन्तु यह दराज किसी ने देखा तक नहीं।"

"मुझको क्या मालूम था कि आप इसमें बैठकर भी पढ़ते हैं ! आप जाइए और ऐनक का ऑर्डर 'कैंसिल' कर आइए।"

"यह कठिन है। वह तो उसी वक्त बनाने लग गया था। अब तक तो उसको···।"

इसी समय बाहर से किसी ने घण्टी का बटन दबाया। घण्टी बजी तो मैं बाहर जाकर देखने लगा। 'ऑप्टीशियन' का नौकर हाथ में नया चश्मा लिये खड़ा था। "लो, चश्मा तो आ भी गया।" मैंने अपनी स्त्री की ओर घूमकर कहा।

यह सुन श्रीमती जी का मुख उतर गया। मैं बाहर जा, ऐनक और उसकी बनवाई का बीस रुपये का बिल दे आया। मेरी स्त्री हताश हो पलंग पर लेट गई।

मैं कमरे में पहुँचा तो उसने मेरी ओर देखकर कहा, "कितने का बिल है ?"

"बीस रुपये का।"

"देखिए न ! ये रुपये व्यर्थ गए।"

"अब मैं ही क्या कर सकता हूँ ?"

"अपने दिमाग को ठीक करिए। अभी से भूलने लगे हैं तो बाद में क्या होगा ?"

इस समय मुझको केशव के पत्र की याद हो आई। मैंने कहा, "ठीक तो है। केशव का निमन्त्रण आया है कि इस वर्ष गर्मियों का अवकाश किश्तवार में व्यतीत किया जाय।"

"केशव जी के 'स्वर्गलोक' में ?"

"हाँ ! टूनी का भाई नास्तिक होने पर भी बहुत मिलनसार है। उसकी अमेरिकन बीवी भी उसके साथ वहीं रहती है। सुनाऊँ उसका पत्र ?"

मेरी स्त्री मेरे नये चश्मे का बिल देख रही थी। उस पर लिखा था, 'एक्सप्रेस डिलीवरी पाँच रुपये।' चश्मे का वास्तविक बिल पन्द्रह रुपये का था।

मैं जब पत्र सुनाने लगा तो वह कहने लगी, "व्यर्थ में बीस रुपये गए। अभी पिछले महीने ही तो चश्मा लिया था।"

"अब छोड़ो भी इस बात को। न जाने तुम्हारे मन में कहाँ की कंजूसी समा रही है ? सुनो केशव ने क्या लिखा है —

'मित्र विनोद ! पिछले वर्ष दिसम्बर के महीने में जब तुमसे मिला था तो यह जान अचम्भा हुआ कि अभी भी तुम्हारे वही विचार हैं, जो कॉलेज की पढ़ाई के दिनों में थे। मैं तो यह समझ पाया हूँ कि भारतवर्ष एक छोटा-सा तालाब है, जिसमें जल अटका पड़ा है। वर्ष पर वर्ष व्यतीत होते जा रहे हैं और यहाँ के एक पढ़े-लिखे विद्वान् को भगवान् और कर्म की रट लगाते सुन मुझको तालाब के बदबू कर रहे जल का भास हो आया था।

'मुझको भय है कि सड़े हुए जल की भाँति तुम भी सड़ रहे होगे और अब तुम में वह सहनशक्ति नहीं रही होगी, जो विद्यार्थी-जीवन में थी। भगवान् के भक्त प्रायः असहिष्णु और असहनशील होते हैं।

'पर मैं विचार करता हूँ कि मैं शिक्षा देने वाला कौन हूँ ? एक काम करो। इन गर्मियों की छुट्टियों में यहाँ चले आओ। मिसेज थापर को देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे। देखना मेरे जैसे नास्तिक को तुम्हारे भगवान् ने कैसा पुरस्कार दिया है। यदि मुझको यह विश्वास हो जाय कि 'रोमिली' का निर्माण करने वाला वास्तव में तुम्हारा भगवान् है, तो मैं सत्य हृदय से कहता हूँ कि उसकी मूर्ति अपने स्वर्गधाम में स्थापित कर उसकी पूजा आरम्भ कर दूँ। कठिनाई यह है कि रोमिली के माता-पिता हाड़-चाम के बने हुए मानव थे और अब वे इस संसार में नहीं हैं।

'कुछ भी हो इस बार आओ। प्रकृति का भव्य दृश्य तो देखने को मिलेगा ही, साथ ही मानव-निर्माण-शक्ति का प्रदर्शन भी देखोगे। मैंने अपने निवास-स्थान का नाम 'स्वर्गलोक' रखा है और हिन्दुओं के पुराणों में लिखे वर्णन के अनुसार उसको सुसज्जित कर रहा हूँ।

'एक मजा और भी रहेगा। मिसेज थापर को भारतीय पढ़े-लिखे आस्तिक से बातचीत करने का अवसर मिलेगा। मुझको अपना पुराना मित्र मिलेगा और उससे कॉलेज के दिनों की स्मृतियाँ हरी-भरी हो जाएँगी।

'मेरा आग्रह है कि अवश्य आओ। लिखो कि मैं तुम्हारे स्वागत के लिए कहाँ तक चलकर आऊँ। जंगलवार तक आऊँ अथवा रामवन तक ?'

पत्र पढ़कर मैंने अपनी स्त्री से पूछा, "बताओ चलना कैसा रहेगा ?"

वह कहने लगी, "आपके मित्र ने आपको बुलाया है। इसमें मैं क्या सम्मति दे सकती हूँ ?"

"मुझे निमन्त्रण देने का अर्थ है तुम्हें भी साथ बुलाया है।"

"न। अपनी बीवी की बात उसने लिख दी है। क्या आपके विवाह की बात उसे विदित नहीं ?"

"है क्यों नहीं ? वह तो मेरी बारात में सम्मिलित हुआ था।"

"तो ठीक है। आप अपने पहुँचने का प्रोग्राम बना लीजिए। मैं दो मास के लिए माँ के घर चली जाऊँगी।"

"नहीं, नहीं। यह नहीं हो सकता। मैं उसको लिख देता हूँ कि मैं उसका निमन्त्रण तब ही स्वीकार करूँगा, जब तुम भी उसमें सम्मिलित की जाओ। अन्यथा हम किसी अन्य स्थान पर जाने का कार्यक्रम बना लेंगे।"

"पर उसकी अमेरिकन बीवी को देखने के सौभाग्य से वंचित रह जाइयेगा। वह संसार का आठवाँ आश्चर्य प्रतीत होती है।"

"सबको अपनी पत्नी चमत्कार ही दिखाई देती है। कुछ लोग डुग्गी पीटने लगते हैं और कुछ उस चमत्कार को, मेरी तरह, अपने लिए ही सुरक्षित रखना चाहते हैं।"

"अब जाने दीजिए इस बेकार की प्रशंसा को। जब आप पत्र में उसकी बीवी के विषय में पढ़ रहे थे तो आपका मुख खिल उठा था।"

मैं समझ गया कि नारी-स्वभाव में व्यापक ईर्ष्या बोल रही है। इस कारण मैंने कह दिया "रानी! चाहे कुछ हो, इस भ्रमण पर तो साथ ही चलना होगा। वहाँ से निमन्त्रण नहीं आया तो हम किसी अन्य स्थान पर जाएँगे।"

"आपको कष्ट होगा।"

"देखेंगे।"

मैंने केशव को लिखा तो उसका उत्तर वापसी डाक द्वारा मिला। लिखा था, 'विनोद भैया! आप तो पत्नी को पुरुष की अर्द्धांगिनी समझते हैं तो आपने यह कैसे समझ लिया कि मेरा निमन्त्रण आधे विनोद को है? बाबा! विनोद बिना विनोदिनी के नीरस रह जाएगा। 'रोमिली' भी मेरे बचपन के मित्र की पत्नी को मिलने के लिए और जानने के लिए अत्यन्त उत्सुक है।'

इससे जाने का निश्चय हो गया। छब्बीस जून को किश्तवार की यात्रा की तैयारी ने केशव के विषय की बचपन की सारी बातों को ताजा कर दिया।

मैं स्कूल की चौथी श्रेणी में पढ़ता था, जब केशव से मेरा पहले-पहल परिचय हुआ। केशव धनी बाप का बेटा था। वह श्रेणी में सबसे बढ़िया तथा साफ-सुथरे कपड़े पहनकर आया करता था। श्रेणी के प्रायः सभी विद्यार्थी मध्यम श्रेणी के बालक थे। मैं भी उनमें से ही था। हम सब केशव को अपने से ऊँचा मानते थे। इस कारण अर्ध विश्राम के समय अथवा जब श्रेणी में बैठे न हों, हम उससे दूर ही रहा करते थे और उसकी ओर भय-मिश्रित आदर से देखा करते थे।

केशव को स्कूल में छोड़ने और स्कूल से ले जाने के लिए घोड़ागाड़ी आया करती थी। यह हम लोगों के लिए बहुत बड़ी बात थी। केशय स्कूल में दाखिल हुआ तो कुछ दिन तक न हममें से कोई उससे बोला और न ही उसने हमसे बात-

चीत करने का यत्न किया ।

यह एक घटना-मात्र थी कि पहले ही दिन मास्टर ने उसको मेरे समीप बैठने के लिए कहा । वह बैठ गया परन्तु अपने कपड़ों को इस प्रकार समेटकर बैठा, मानो मुझसे उसे छूत लग जाने का भय हो । वह नित्य मेरे साथ आकर बैठता था, परन्तु मेरे साथ बातचीत नहीं होती थी । उसको पैन्सिल-कॉपी इत्यादि की मुझसे माँगने की आवश्यकता कभी नहीं पड़ी । उसके साथ सब वस्तुएँ सदैव रहती थीं और मुझको, कभी आवश्यकता पड़ती, तो मैं माँगता नहीं था । मुझको इतने बड़े बाप के बेटे से माँगने में संकोच होता था ।

एक दिन मैं अपनी पैन्सिल घर पर भूल आया । मास्टर ने गणित का एक प्रश्न श्रेणी में ही करने के लिए दिया । उसने प्रश्न बोर्ड पर लिख दिया । मैंने अपने बस्ते में से कॉपी निकाली और पैन्सिल वहाँ न देख घबराया । कुछ काल तक विचारकर मैं उठ मास्टर से बोला, "मास्टर जी ! मेरी पैन्सिल घर रह गई है । क्या मैं दुकान से मोल ले आऊँ ?"

"नहीं ! खड़े रहो । तुमको पैन्सिल न लेकर आने का दण्ड दिया जाता है ।"

मैं भयभीत खड़ा रहा । मैंने देखा कि केशव के थैले में तीन पैन्सिलें हैं । मुझको विश्वास था कि यदि मैं उससे माँगता तो वह अवश्य दे देता; परन्तु मेरे मन में यह आया कि यह हमारी सृष्टि का जीव नहीं है । इससे माँगना ठीक नहीं है । मैंने नहीं माँगी और मास्टर की आज्ञानुसार खड़ा हो गया ।

कुछ काल के पश्चात् केशव ने अपने थैले से पैन्सिल निकालकर मेरे सामने रखते हुए कहा, "बैठकर काम करो ।"

मैंने विस्मय में उसके मुख पर देखा । वह अपनी कॉपी पर सवाल निकालने में लगा हुआ था । मैंने चुपचाप पैन्सिल उठाई और बैठकर अपनी कापी पर प्रश्न लिखने लगा ।

मास्टर ने मुझे बैठते हुए देख पूछा, "विनोद ! तुमको तो खड़े होने को कहा था ?"

"मुझको पैन्सिल मिल गई है ।"

"कहाँ है ?"

"यह है···इनसे ।" मैंने केशव की ओर संकेत कर दिया ।

इस पर मास्टर ने आज्ञा सुना दी, "पैन्सिल लौटा दो और अब बैंच पर खड़े हो जाओ । दूसरे से पैन्सिल माँग लेने से तुम्हारा उसे भूल आने का अपराध कम नहीं हो गया ।"

मैंने पैन्सिल लौटा दी और बैंच पर खड़ा हो गया । इस पर केशव ने खड़े होकर मास्टर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए हाथ खड़ा कर दिया ।

मास्टर ने उसे देखकर पूछा, "क्या है ?"

"मेरा निवेदन है कि इसको श्रेणी में काम करने की स्वीकृति दी जाए। इसकी भूल का दण्ड इसे सवाल निकालने के पश्चात् दे दीजिएगा।"

मैं केशव की युक्ति को समझ गया। बात स्पष्ट थी। मेरी पढ़ाई में बाधा न डालकर मुझको दण्ड दिया जाय, उसका यही अभिप्राय था।

मास्टर ने यह अभिप्राय समझा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। यदि समझा था तो अपनी हेठी न होने पाये, इस कारण उसने डाँटकर कहा, "बैठ जाओ केशव! तुम मास्टर नहीं हो।"

केशव ने पुनः निर्भीकता से कहा, "मैं तो यह निवेदन कर रहा हूँ कि विनोद को प्रश्न निकालने का अवसर दीजिए। दण्ड पीछे दे दीजिएगा।"

"बैठ जाओ!" मास्टर ने क्रोध में उबलते हुए कहा। केशव बैठ गया परन्तु उसने अपनी पैन्सिल भी सामने रख दी और लिखना बन्द कर दिया। सब लड़कों ने प्रश्न निकाला। किसी का ठीक था, किसी का गलत, परन्तु न मैंने किया था और न ही केशव ने। मैंने तो इस कारण नहीं किया कि मेरे पास पैन्सिल नहीं थी और केशव से पैन्सिल लेकर मुझको काम करने नहीं दिया गया। केशव ने इसलिए नहीं किया कि उसको माब्टर का व्यवहार अयुक्ति-संगत प्रतीत हुआ था।

मास्टर ने जब केशव की कॉपी देखी तो पूछा, "तुमने प्रश्न आधा क्यों छोड़ दिया है?"

केशव ने उत्तर दिया, "मैंने जान-बूझकर नहीं किया।"

"तुम कमरे से बाहर निकल जाओ!"

केशव मुस्कराया और अपना बस्ता समेट कमरे से निकल गया। मैं हैरान था कि उसने क्यों मेरे लिए मास्टर से झगड़ा किया है। इसमें भी मुझे उसका बड़े बाप का बेटा होना कारण लगा। मैं चुप रहा।

कुछ समय के पश्चात् घण्टा बजा और मास्टर दूसरी श्रेणी में पढ़ाने चला गया। इस समय केशव मुस्कराता हुआ क्लास में आकर मेरे समीप बैठ गया। मैं भी अब बैंच पर बैठा हुआ था। मैंने उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए कहा, "आपने मेरे लिए झगड़ा किया है। मैं बहुत कृतज्ञ हूँ।"

केशव हँस पड़ा। उसने कहा, "छोड़ो इस बात को। कल पैन्सिल लेकर आना। और यदि कभी न हो तो मुझसे पहले ही माँग लेना।"

"तुम मुझको दोगे?"

"हाँ! मेरे पास होगी तो अवश्य दूँगा।"

"मास्टर तुम पर नाराज था।"

"मुझको उससे डर नहीं लगता। मैं किसी से नहीं डरता!"

"अपने माता-पिता से भी नहीं?"

"उनसे क्यों डर लगेगा ? मैं कोई बुरी बात करता ही नहीं। वे तो अपने ही हैं।"

उस दिन तो मैं इसके अर्थ नहीं समझ सका था। बाद में जब हम कॉलेज में थे, तो मुझको यह पता लगा कि माता-पिता से न डरने के क्या अर्थ हैं। वह अपने मन की बात निःशंक अपने माता-पिता से कहता था। उसकी इस स्पष्टवादिता पर उसका पिता उससे कभी नाराज नहीं होता था।

इस पैन्सिल की घटना से मुझको पता चला कि केशव के अन्दर हृदय है और वह हमको, कम-से-कम मुझको, अपने से छोटा नहीं समझता। यह हमारी मित्रता की प्रथम कड़ी थी।

एक दिन मैं स्कूल की छुट्टी के पश्चात् अपने घर जा रहा था कि केशव अपनी गाड़ी में से निकला। उस दिन उसकी गाड़ी देर से आई थी और मैं स्कूल से कुछ दूर तक चला गया था। केशव ने गाड़ी खड़ी कर मुझे आवाज दी, "विनोद ! विनोद ! !"

मैंने उसकी ओर देखा तो उसने कहा, "गाड़ी में आ जाओ।"

"नहीं भाई ! तुम जाओ।"

"अरे, आओ भी।"

मैं गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी चली तो उसने पूछा, "तुम्हारा घर किधर है ?"

मैंने बताया, "अनारकली में नीले गुम्बद के पास।"

"तब तो हमारे रास्ते में ही पड़ेगा। तुम रोज मेरे साथ चला करो।"

"तुमको तकलीफ होगी।"

"मुझको तकलीफ क्यों होगी ? और घोड़ा भी तुम्हारे बोझ से दबेगा नहीं।"

मैं नित्य स्कूल से उसके साथ गाड़ी में बैठकर घर आने लगा। यह हमारी मित्रता की दूसरी कड़ी थी।

एक दिन स्कूल आधे वक्त बन्द हुआ। वह मुझे अपनी गाड़ी में अपने साथ अपनी कोठी में ले गया। उसकी कोठी निस्बत रोड पर थी। कोठी के सामने घास का बहुत बड़ा 'लॉन' था और कोठी में बड़े-बड़े कई कमरे थे। वह मुझे अपने कमरे में ले गया।

यह एक छोटा-सा कमरा था। उस समय वह बहुत ही साफ था। एक कोने में एक छोटी-सी डैस्क पड़ी थी और उसके पास एक कुर्सी थी। दो कुर्सियाँ और रखी थीं। एक मुझको बैठने के लिए मिल गई। कुछ देर तक वह मुझे अपनी ड्राइंग की कॉपी दिखाता रहा। वह एक दूसरे मास्टर से घर पर ही चित्र बनाना सीखता था। इस समय उसकी छोटी बहन आ गई। वह स्कूल की पहली श्रेणी में पढ़ती थी। मुझे वहाँ देख वह कमरे के दरवाजे में ही खड़ी रह गई और विस्मय में देखने

लगी। केशव ने कहा, "टूनी ! आ जाओ।" वह अन्दर आई और अपना बस्ता, उसी कमरे के एक दूसरे कोने में पड़े डैस्क पर रख, कमरे से बाहर निकल गई।

केशव कैरमबोर्ड उठा लाया और मुझको खेलने का ढंग सिखाने लगा। अभी मैं सीख ही रहा था कि एक पुरुष, नोकदार कड़ी दाढ़ी और छोटी-छोटी मूँछ वाला वहाँ आ गया। केशव ने उठकर उस पुरुष के के समीप जाकर कहा, "पिताजी ! यह मेरा मित्र विनोद है।"

"अच्छा !" उस पुरुष ने मेरे समीप आकर मेरे सिर पर प्यार देकर पूछा, "कहाँ रहते हो विनोद बेटा ?"

"जी, अनारकली बाजार में। नीला गुम्बद के पास बाँस मंडी में।"

"तुम्हारे पिताजी क्या काम करते हैं ?"

"अनारकली बाजार में क्रॉकरी की दूकान है।"

"देखो, आपस में लड़ना नहीं। कोई बात एक-दूसरे की अच्छी न लगे तो समझ-समझा लेना। लड़ना तो इन्सान का काम नहीं।"

मैं इस सिद्धान्त को नहीं मानता था। मैं लड़ने वालों को बहादुर समझता था। परन्तु मैंने केशव के पिता की बात का खण्डन नहीं किया। आँखें नीची किये खड़ा रहा।

"चलो चाय का समय हो गया है। विनोद को भी साथ लेते आओ।" इतना कह केशव के पिता कमरे से बाहर निकल गए। केशव ने कैरमबोर्ड उठा दिया और मेरी बाँह-में-बाँह डाल मुझे कोठी के आँगन की ओर बरामदे में ले गया। पहले ही दिन मेरा परिचय केशव के पूर्ण परिवार से हो गया।

टूनी केशव की छोटी बहन को तो मैं पहले ही देख चुका था। वह लपककर एक स्टूल पर बैठ गई और मुझको उसके पास वाली कुर्सी मिली। मेरे साथ केशव था। सामने केशव के माता-पिता तथा एक अन्य युवा स्त्री थी। वह घूर-घूरकर मेरी ओर देख रही थी। केशव की माता ने प्रश्नभरी दृष्टि से मेरी ओर देखा। उसके मन के भावों को समझ केशव के पिता बोले, "यह है विनोद। केशव का मित्र और सहपाठी।"

केशव की माँ के समीप बैठी युवा स्त्री ने नाक चढ़ाकर मुख दूसरी ओर कर लिया। टूनी ने उसे मुख मोड़ते हुए देख कहा, "पापा ! बुआ को दर्द हो रहा है।"

मिस्टर थापर (केशव के पिता) ने मुस्कराकर टूनी की ओर देखा और पूछा, "तुमने कैसे जाना ?"

"हमारी स्कूल की बहनजी हमको एक नाटक सिखा रही हैं। उन्होंने बताया था कि ऐसे मुँह करके गर्दन मोड़ने का अभिप्राय है पेट में दर्द होना।" इतना कह उसने माथे पर त्योरी चढ़ा, मुख मोड़कर दिखा दिया। उस युवा स्त्री ने मेरा परिचय सुन लगभग वैसा ही किया था। टूनी को यह नाटक करते देख सब हँस

पड़े। मैं भी उसकी भावभंगी देख हँसा। इससे उस युवा स्त्री, जिसको टूनी ने बुआ कहा था, का मुख काला पड़ गया, परन्तु दिखाने के लिए उसने भी दाँत निकाल दिये।

चाय के पश्चात् हम लॉन में चले गए। वहाँ उसने बैडमिण्टन खेलना आरम्भ कर दिया। सायं होने से पहले ही मैं अपना बस्ता ले अपने घर चला आया। यह मेरी केशव से मित्रता की तीसरी कड़ी थी।

मैं सप्ताह में एक-दो बार केशव के घर जाने लगा। केशव की बुआ को छोड़कर घर के अन्य सब लोग मुझसे स्नेह करने लगे। उसकी बुआ मुझको देख मुख मोड़कर एक ओर चली जाती थी। टूनी तो मुझसे बहुत हिलमिल गई थी। एक दिन मैंने उसे एक कहानी सुनाई—

एक थी लड़की। वह अपने माता-पिता को बहुत प्यारी लगती थी। परन्तु लड़की बहुत ही जिद्दी थी। वह अपनी बात को पूरा किये बिना छोड़ती नहीं थी। उसके माता-पिता उसको बहुत समझाते थे परन्तु जब उसके मन में कोई बात करने के लिए आ जाती तो वह उसे किये बिना नहीं रहती थी···

एक दिन वह कहीं से एक कुत्ते का पिल्ला पकड़ लाई। उस पिल्ले को उसने अपने पास बिठाकर दूध पिलाया और उससे प्यार करने लगी।

लड़की के पिता ने बताया कि पिल्ला गंदा होता है क्योंकि वह गन्दी चीजें खाता है। उसको अपने समीप बैठाकर कुछ खिलाना-पिलाना ठीक नहीं। परन्तु लड़की ने पिता की बात न मानी। वह पिल्ले को अपने पास बिठाकर खिलाती रही···

उसके इस गन्दे व्यवहार को देखकर सब उससे पृथक् रहने लगे। अब पिल्ला ही उसका मित्र था। वह उसीसे खेलती और उसको अच्छी तरह खिलाती-पिलाती। पिल्ला बड़ा हुआ तो कुत्ता हो गया। लड़की से लाड़ करता तो अपने मैले पैर उसके कपड़ों पर रख देता···

इस प्रकार लड़की के कपड़े, उसके बिस्तर और उसका कमरा गन्दा रहने लगा। लड़की के माता-पिता, भाई-बहन लड़की को गन्दा समझ उसको अपने समीप न बैठने देते और न ही उसके समीप जाते।

लड़की को जब इस बात का ज्ञान हुआ तो उसने कुत्ते को अपने से पृथक् कर दिया और जब भी वह उसके पास अथवा उसके बिस्तर पर आने का यत्न करता तो उसको खूब डाँटती। धीरे-धीरे कुत्ता उससे दूर रहने लगा और लड़की साफ-सुथरी रहने लगी। अब उसके माता-पिता और भाई-बहन उसको अपने पास बैठाने लगे और उसको फिर से प्यार करने लगे···

"छोटों की संगत से मनुष्य छोटा हो जाता है। यही इसका अभिप्राय है।"

टूनी को यह कहानी बहुत पसन्द आई। उसको और कहानियाँ सुनने की रुचि

होने लगी और जब मैं उसके घर जाता तो वह मुझको पकड़कर बैठ जाती और कहानी सुनाने का आग्रह करती।

मैं और केशव उत्तरोत्तर अधिक और अधिक घनिष्ठ मित्र बनते गये। स्कूल में हम दोनों संगी के नाम से विख्यात हो रहे थे। हम दोनों इकट्ठे खेलते और श्रेणी में इकट्ठे बैठते थे।

ज्यूँ-ज्यूँ मुझमें विचारशक्ति विकसित होती गई, केशव की अपने साथ मित्रता पर मेरा विस्मय बढ़ने लगा। वह एक धनी पढ़े-लिखे पिता का पुत्र था। मैं एक दूकानदार का पुत्र। हमारा घर बाँस मंडी में ऊपर की मंजिल में तीन कमरों का था और केशव के पिता की एक विशाल कोठी थी, जिसमें बड़े-बड़े दस-बारह कमरे थे।

मेरा एक छोटा भाई और एक बहन थे। वे दोनों मकान में दिन-भर गंदगी फैलाते फिरते थे। एक बार केशव हमारे घर भी आया था। माँ ने चाय पिलाई थी। इस पर भी हमारे यहाँ और उनके यहाँ का अन्तर स्पष्ट था। वीणा, मेरी छोटी बहन, ने तो उसके कपड़ों पर मैले हाथ लगा-लगाकर उसको गंदा कर दिया था। उसके दूध समान सफेद कोट पर वीणा की गंदी उँगलियों के चिह्न बन गए थे। इससे मुझको बहुत ही लज्जा अनुभव हुई थी।

इसके पश्चात् मैंने केशव को अपने घर ले जाने का साहस नहीं किया। न ही केशव ने इसके लिए कभी उत्सुकता प्रकट की। मैं ही प्रायः उसके घर जाया करता था।

हमारी मित्रता में एक सुदृढ़ कड़ी उस दिन बनी, जब हम दोनों अपनी श्रेणी के दस लड़कों के विरुद्ध लड़े। तब हम आठवीं श्रेणी में पढ़ते थे। हमारे साथ एक बंगाली लड़का लालमोहन भी पढ़ता था। उसमें एक गुण था। वह आधी से अधिक श्रेणी का नेता बना हुआ था। उसके दल का यह काम था, अपने से छोटी श्रेणी के लड़कों को तंग करना, अपने से बड़ों को भी इक्का-दुक्का देख मरम्मत करते रहना और मास्टरों की नाक में दम करते रहना। मास्टर ऋषिराम तो उनके दुर्व्यवहार से कई बार रो तक चुका था।

लालमोहन ने भरसक यत्न किया था कि केशव को अपने दल में सम्मिलित कर ले, परन्तु इसमें वह सफल नहीं हो सका था।

एक दिन लालमोहन ने मास्टर ऋषिराम के लिए एक कुर्सी, जिसकी सीट बिल्कुल टूटी हुई थी, लाकर रखी और उसपर एक खाकी कागज बिछा दिया।

मैं श्रेणी में आया तो लालमोहन कागज को ठीक कर रहा था। मैंने समझा कि कागज इसलिए बिछा दिया है, जिससे कुर्सी की मिट्टी मास्टरजी के पायजामे को न लगे। मेरे आने के साथ ही केशव और फिर मास्टरजी आ गये। मास्टरजी का ध्यान कागज की ओर नहीं गया। वे कुर्सी पर बैठे तो उसी में धँस गये। मास्टर

जी पैंसठ वर्ष के वृद्ध और कुछ भारी शरीर के थे। इस कारण जब सीट में धँसे तो फिर स्वयं निकल नहीं सके। वे छटपटाते रहे और हाथ-पाँव मारते रहे। लालमोहन के साथी हँसते रहे।

केशव ने देखा तो भागकर गया और उसने मास्टरजी को आश्रय देकर निकाला। वे जब खड़े हुए तो उन्होंने कुर्सी को देखा और पूछा, "यह कुर्सी और इस पर यह कागज किसने रखा था?"

मैं जानता था कि कागज किसने रखा था, परन्तु मैंने बताना उचित नहीं समझा। सब चुप रहे। इस पर मास्टरजी ने डाँटकर कहा, "मैं सारी क्लास को दण्ड दूँगा। अभी भी बता दो कि यह शरारत किसने की है?"

मैं अब भी चुप था। सब लड़के मेरी ओर देख रहे थे और मैं निधड़क खड़ा सामने की ओर देख रहा था। इस समय मास्टरजी को क्रोध चढ़ आया और उन्होंने डैस्क में से बैंत निकाल लिया और कहा, "सबको पाँच-पाँच बैंत लगाऊँगा। एक अवसर और देता हूँ। बताओ, यह किसने किया?"

अब लालमोहन उठकर खड़ा हो गया और कहने लगा, "मास्टरजी! यह केशव ने किया है। उसने हमको कहा था कि यदि किसी ने बताया तो उसको अपने नौकर से पिटवाएगा।"

इस पर मैं बोल उठा, "जी नहीं, लालमोहन झूठ बोलता है। यह कागज तो लालमोहन ने स्वयं रखा था। कुर्सी यहाँ कौन लाया था, मैं नहीं जानता।"

मेरे कहने पर तो लालमोहन का मुख विवर्ण हो गया और उसने कहा, "मास्टरजी! विनोद झूठ कहता है। आप श्रेणी के अन्य लड़कों से पूछ लीजिए। यह शरारत केशव की है।"

मास्टरजी को अन्य लड़कों से पूछने की बात पसन्द आई और उन्होंने कई लड़कों से पूछा। सभी लड़कों ने लालमोहन के कथन का समर्थन किया। प्रायः लड़के उससे डरते थे।

केवल एक मैं ही था जो लालमोहन को दोषी बताता था। मैंने यह भी बताया कि वह गुंडा है, इस कारण सब लड़के उससे डरते हैं।

इस पर अन्य लड़कों ने मुझको झूठा कहा। मास्टर ने पूछा, "विनोद! क्या सब लड़के झूठ बोलते हैं?"

उनकी बात पर विश्वास कर मास्टरजी ने आज्ञा दे दी, "मैं समझता हूँ कि विनोद और केशव दोनों दोषी हैं और मैं उनको पाँच-पाँच बैंत लगाने का दण्ड देता हूँ।"

इस पर केशव ने कहा, "मैं आपकी गलत आज्ञा के विरुद्ध हैडमास्टर साहब के पास अपील करना चाहता हूँ।"

"पहले दण्ड-भोग करो, पीछे अपील करना। इसमें हैडमास्टर क्या करेंगे?

शरारत मेरे साथ हुई है, मैं दण्ड देता हूँ ।"

"आप नहीं समझते । मैं हैडमास्टरजी के पास जा रहा हूँ ।" इतना कह वह हैडमास्टरजी के पास जाने के लिए कमरे से बाहर निकल गया । मास्टर उसको पकड़ने को लपका, परन्तु वह भाग गया ।

इस पर मास्टरजी का क्रोध मुझ पर निकलने लगा । उसने बैंत को हवा में घुमाते हुए कहा, "सच बताओ । अब भी क्षमा कर दूँगा ।"

"मैं सौगन्धपूर्वक कहता हूँ कि यह शरारत लालमोहन की है ।"

"तुम झूठ बोलते हो ।"

"जब हैडमास्टर साहब जाँच करेंगे तो पता चल जाएगा । आपने जाँच ठीक नहीं की ।"

"तो क्या सब लड़के झूठ बोलते हैं ?"

"झूठ-सत्य का निर्णय क्या वोट लेकर होगा ?"

"लालमोहन !" मास्टर ने उसकी ओर देखकर पूछा, "सत्य बताओ क्या बात है ?"

लालमोहन ने धड़ल्ले से कहा, "मास्टरजी ! यह विनोद झूठ बोलता है । जब मैं आया था तो केशव कुर्सी पर कागज रख रहा था ।"

"तुमने विनोद को कुछ करते देखा है ?"

"यह केशव का मित्र है । इसने अवश्य उसका साथ दिया होगा ।"

इस समय हैडमास्टर साहब केशव के साथ चले आए । जब वे आए तो सब लड़के खड़े हो गए । मास्टर ऋषिराम तो पहले ही खड़े थे । हैडमास्टर ने लड़कों को सम्बोधन कर पूछा, "तुम्हारी श्रेणी में मास्टरजी के साथ उपहास किया गया है । मैं अब तुम सबको अवसर देता हूँ कि वह लड़का, जिसने अपराध किया है, अपने-आप अपना अपराध स्वीकार कर ले । यदि उसने स्वयं अपराध स्वीकार न किया और बाद में पकड़ा गया तो मैं उसको स्कूल से निकाल दूँगा ।"

हैडमास्टर साहब ने अपराधी को स्वयं अपना अपराध स्वीकार करने को कहा था, इस कारण मैं चुप था; परन्तु लालमोहन से चुप नहीं रहा गया । उसने कह दिया, "मैंने केशव को इस टूटी कुर्सी पर कागज बिछाते देखा है ।"

"देखो लालमोहन ! मैंने अभी साक्षी नहीं माँगी । मैंने तो शरारत करने वाले को स्वयं अपना अपराध स्वीकार करने को कहा है ।"

इस पर लालमोहन चुप रहा । उसका मुख विवर्ण हो रहा था और मैं उसके हाथों को काँपते हुए देख रहा था । उसने अपने काँपते हाथों को छुपाने के लिए उनको जेबों में डाल दिया । हैडमास्टर साहब दो मिनट तक अपराधी से अपना अपराध स्वयं स्वीकार करने की प्रतीक्षा करते रहे । जब कोई स्वीकार करने के लिए आगे नहीं बढ़ा, तब हैडमास्टर ने कहा, "अच्छी बात है । मैं जाँच आरम्भ

करता हूँ। अब किसी के साथ रियायत नहीं की जाएगी। लालमोहन, केशव और विनोद मेरे कमरे में चले आवें।"

हम तीनों हैडमास्टर साहब के साथ उनके कमरे में जा पहुँचे। मैंने अपना वक्तव्य दुहरा दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि हैडमास्टर साहब ने लालमोहन की घबराहट देख ली थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि मैं अपने साक्षियों के नाम लिखाऊँ। मैंने कहा कि वे श्रेणी के लड़कों को पृथक्-पृथक् लालमोहन की अनुपस्थिति में बुलाकर पूछें। मैंने कहा, "मुझको विश्वास है कि वे इससे डरकर सत्य नहीं बताते।"

मेरा सुझाव हैडमास्टर साहब की समझ में आ गया। हम सबको पृथक्-पृथक् कमरों में बन्द कर एक-एक लड़के को पृथक्-पृथक् बुलाकर जाँच आरम्भ कर दी।

एक घण्टे के बाद हमको बाहर निकाला गया। हमने देखा कि पूर्ण स्कूल के लड़के मैदान में एकत्रित हो चुके थे। जब हम वहाँ पहुँचे तो हैडमास्टर ने इस शरारत की पूर्ण कथा लड़कों को बताई और पश्चात् दण्ड सुना दिया। उसने कहा, "लालमोहन और उसके साथ दो लड़कों को, जिनमें से एक अच्छी कुर्सी को गोदाम में ले गया था और दूसरा वहाँ से टूटी कुर्सी उठाकर लाया था, छः-छः बैंत लगाने का दण्ड देता हूँ।"

लालमोहन बैंत खाकर आया तो मुझको सुनाकर कहने लगा, "स्कूल के बाहर आज इन बैंतों का मजा दूँगा।"

मैंने केशव को बताया तो वह पूछने लगा, "अब क्या करना चाहिए?"

मैंने उत्तर दिया, "इसे पीटना चाहिए।"

स्कूल की छुट्टी के समय स्कूल के अहाते के बाहर निकलते ही लालमोहन अपने आठ-नौ साथियों के साथ हम पर टूट पड़ा। हम दोनों दीवार के साथ पीठ लगाकर लड़ने लगे। जो भी हमारे समीप आता था, हम मुक्कों से उसका स्वागत करते। चोर के पाँव नहीं होते और दो-चार बार आक्रमण करने के पश्चात् लड़के भागने लगे। सबसे पहले लालमोहन भागा और उसके पीछे उसके साथी भी भाग गए।

हमें भी बहुत चोटें लगी थीं। केशव की गाड़ी में हम दोनों घर चले गए। मेरी दाईं आँख के ऊपर की कनपटी सूजी हुई थी और होंठ में से रक्त बह रहा था। शरीर पर भी कई स्थानों पर चोटें आई थीं। केशव की कोठी में मेरे घावों की मरहम-पट्टी की गई।

स्कूल के बाहर की लड़ाई की सूचना हैडमास्टर को मिली। इस सूचना का परिणाम यह हुआ कि लालमोहन स्कूल से निकाल दिया गया और मेरी तथा केशव की मित्रता और भी दृढ़ हो गई।

मैट्रिक परीक्षा के पूर्व तो मैं प्रायः नित्य केशव के घर जाया करता था। इस कारण ऐलजबरा और ज्यौमैट्री का अभ्यास हम साथ-साथ करते थे।

इन दिनों टूनी (मालती) सातवीं श्रेणी में हो गई थी। वह अभी भी मुझसे

कहानी सुनाने का आग्रह किया करती थी। कभी-कभी मैं सुना भी दिया करता था। वह भी गणित में कमजोर थी और मुझसे सहायता लिया करती थी। इस प्रकार कालान्तर में मेरा केशव के परिवार से सम्बन्ध घनिष्ठ होता गया।

केशव की बुआ, अपने पति के घर, जो अफ्रीका नैरोबी में रहता था, चली गई थी; कई वर्षों से वह भारत में आई नहीं थी। इस पर भी उसके पति का, जो वहाँ ठेकेदारी करता था, समाचार आता रहता था। वे उत्तरोत्तर अधिक और अधिक धनी होते जाते थे।

मैं मैट्रिक की परीक्षा की तैयारी में लगा था कि केशव की बुआ, रुक्मिणी, हिन्दुस्तान में आई। वह अपने भाई मिस्टर थापर के घर पर ही ठहरी। मैं अब किशोरावस्था का हो गया था और अच्छे कद का होने से बुरा प्रतीत नहीं होता था। परन्तु केशव की बुआ को मैं बिलकुल नहीं भाता था। मुझे देख उसके माथे पर त्यौरी चढ़ जाती थी। उसे देख मुझे टूनी का उस पर कसा पहले दिन का व्यंग्य स्मरण हो आता था।

बुआ के आने का एक परिणाम यह हुआ कि टूनी को मेरे से मिलने की बिलकुल मनाही कर दी गई। टूनी ने मुझसे गणित पढ़ना छोड़ दिया। मेरा अनुमान था कि उसे अब मेरी सहायता की आवश्यकता नहीं रही, इस कारण वह मुझसे गणित सीखने नहीं आती। परन्तु यथार्थ बात केशव ने बताई। एक दिन उसने बताया, "टूनी को सवाल समझा रहा था, इस कारण आज कुछ भी काम न कर सका।"

"तो वह मुझसे आकर पूछ जाती।" मैंने सहज भाव में कहा।

"वह अब नहीं आवेगी, क्योंकि एक दिन इस पर झगड़ा हुआ था।"

"क्या झगड़ा हुआ था ?"

"बुआ आ गई हैं न ! वे टूनी का तुम्हारे साथ मिलना पसन्द नहीं करतीं। उन्होंने मना किया तो टूनी ने इसका कारण पूछा। बुआ ने बताया कि वह अब बड़ी आयु की हो गई है। उसको गैर लड़कों से नहीं मिलना चाहिए। टूनी ने कहा भी कि विनोद भैया गैर नहीं। इस पर बुआ ने तुम्हारे विषय में कुछ कहा तो टूनी ने बुआ को उत्तर दिया कि वह कुछ नहीं जानती। पश्चात् बुआ ने उसे कुछ कहा और फिर दोनों झगड़ पड़ीं और रोने लग गईं। तब से पिताजी ने टूनी को मुझसे पढ़ने की आज्ञा दी।"

मैंने कुछ स्वाभिमान के भाव में कहा, "केशव भैया ! मैं समझता हूँ कि मुझको अब यहाँ नहीं आना चाहिए।"

"क्यों ?"

"जिस घर में अपमान हो, वहाँ आना ठीक नहीं। हम अब गणित का अभ्यास गोल बाग में अथवा स्कूल के किसी कमरे में बैठकर, कर लिया करेंगे।"

"अरे नहीं दोस्त ! मैं तुमको यहाँ लाता हूँ और मैं कहता हूँ कि तुम्हारा

अपमान मेरे सामने नहीं किया जा सकता।"

"केशव ! नहीं।"

मैं इसके पश्चात् केशव के घर नहीं गया, परन्तु केशव ने इस पर बुरा नहीं माना। एक दिन उसने यहाँ तक कह दिया, "विनोद ! मैं प्रसन्न हूँ कि तुम हमारे घर नहीं आते। मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हूँ और उसकी सराहना करता हूँ।"

मेरे मन में बात समा गई कि मेरे विषय में अभी भी उसकी कोठी में चर्चा होती रहती है और उसमें मेरे प्रति कटु वचन कहने वाला कोई है।

मैट्रिक पास किया और हम दोनों गवर्नमेंट कॉलेज में दाखिल हो गए। हम दोनों ने साइंस ली थी।

एक दिन मैं अपनी दूकान पर खड़ा था कि केशव की माता, कुछ क्रॉकरी खरीदने वहाँ आईं। टूनी उनके साथ थी। केशव की माँ ने मुझको पहचाना अथवा नहीं, कह नहीं सकता। उसने मेरी तरफ ध्यान भी नहीं दिया और मुख मोड़कर 'टी-सैट' आदि देखने लग गईं। मैंने टूनी को देखा और उसने भी मुझे देखा। वह मुझको देखकर मुस्कराई। मैं गम्भीर बना रहा। नौकर टूनी की माता को सामान दिखाता रहा। मैंने वहाँ से खिसक जाना ही उचित समझा। मैं पिताजी को कह कर कि मैं घूमने जा रहा हूँ, दूकान से निकल जाने लगा। टूनी ने मुझको जाते देखा तो मेरे सामने खड़ी हो गई और बोली, "विनोद भैया ! अब तुम आते नहीं ?"

मैं इस प्रश्न पर विस्मय से उसका मुख देखता रह गया। वह मेरे उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। जब मुझे कुछ उत्तर न सूझा तो उसने कहा, "गणित सिखाने के लिए एक अध्यापिका रखी है, परन्तु वह मुझे समझा नहीं पाती।"

मैं दूकान में लगे शो-केस से टेकना लगाकर खड़ा हो उसकी बात सुनने लगा था। वह कहती गई, "इस बार परीक्षा में मेरे गणित में बहुत कम अंक आए हैं।"

मैंने पूछा, "आखिर, पास तो हो गई हो न ?"

"हाँ। पर आप आते क्यों नहीं ?"

"अच्छा अब चलूँ ?"

"नहीं ! कल मेरा जन्मदिन है। हम उसके लिए कुछ क्रॉकरी खरीदने आये हैं।"

"कितने वर्ष की हो गई हो तुम ?"

"तेरह वर्ष की।"

"मुबारिक हो नया वर्ष तुमको !"

"इस तरह नहीं। कल आइएगा।"

"अच्छी बात। बधाई तो जरूर पहुँचेगी।"

"अच्छा ठहरो।" इतना कह वह माताजी से कुछ कहने लगी। मैं समझ गया

कि वह निमन्त्रण देने के लिए उनसे कुछ कहने लगी है। इस कारण मौका पाते ही मैं वहाँ से खिसक गया।

घर जाकर मैंने विचार किया कि टूनी को कुछ भेंट देनी चाहिए। इस पर सोचने लगा कि क्या भेंट करूँ? कीमती वस्तु देनी न आवश्यक थी और न ही सम्भव। इस कारण कोई पुस्तक देने के विचार से 'पुस्तक-भवन' में जा पहुँचा। बहुत विचारोपरान्त 'पथ के दावेदार' शरत्चन्द्र के उपन्यास 'पथेर दावे' का अनुवाद मोल ले आया और उस पर 'टूनी' (मालती) के लिए उसके चौदहवें जन्म-दिवस पर, 'सस्नेह भेंट' लिख, नीचे अपना नाम लिख दिया और डाकखाने में रजिस्ट्री करवा दी।

अगले दिन कॉलेज में केशव आया तो मुझको कहने लगा, "विनोद! आज टूनी का जन्म-दिन है।"

"पता है।"

"तो घर चलना आज।"

"केशव भैया! तुम्हारा घर होता तो चलता। घर तुम्हारे पिताजी का है।"

"टूनी ने मुझसे कहा था कि तुम्हें अवश्य साथ लेता आऊँ।"

केशव के सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से मैं उसको मना नहीं करना चाहता था परन्तु मेरा मन कहता था कि वह मन से मेरे चलने को पसन्द नहीं करेगा। इस कारण मैंने कहा, "केशव! तुम इस परिस्थिति में क्या करते?"

केशव ने मेरी आँखों में देखते हुए कहा, "मैं नहीं जाता। कल हमारे घर में फिर भारी विवाद हुआ है। कल टूनी तुमसे तुम्हारे पिताजी की दूकान पर मिली थी। वह माताजी से कहने गई थी कि तुमको निमन्त्रण दें। माताजी तैयार नहीं थीं। इस पर भी उन्होंने कहा कि यदि वह चाहे तो स्वयं निमन्त्रण दे सकती है। परन्तु तुम वहाँ से चले आए थे। घर जाकर उसने पिताजी को तुम्हें लिखित निमन्त्रण देने के लिए कहा। पिताजी तो तैयार थे, परन्तु बुआ अभी तक यहीं हैं। उन्होंने मना कर दिया। वे बोलीं, 'लड़कियाँ केवल लड़कियों को ही निमन्त्रण देती हैं।'

इस पर टूनी ने कहा, 'इसी कारण तो पिताजी से कह रही हूँ।'

'परन्तु कह तो लड़के के विषय में रही हो?'

'वे केशव भैया के मित्र हैं।'

'होते रहें।'

"इस पर टूनी रोई और बुआजी भी रोईं। पिताजी ने कह दिया, 'टूनी! तुम्हारा जन्म-दिवस है। तुम जिसको चाहो बुला सकती हो। हम मना नहीं करते।'

"टूनी ने मुझको कहा कि मैं तुमको साथ अवश्य लेता आऊँ।"

"देखो केशव ! टूनी अभी बचपने की बातें कर रही है। मुझको विश्वास है कि बिना बुलाए जाने से अपमान हो जाने का भय है।"

"ठीक है। जो तुम्हारा निर्णय है, मेरी सम्मति भी यही है।"

इस पर भी वहाँ बात समाप्त नहीं हुई। दो दिन पश्चात् दूकान के पते पर मेरी भेंट की प्राप्ति का पत्र मिला। पत्र में टूनी ने लिखा था—

आदरणीय विनोद भैया !

आपकी भेंट मिली। इसके लिए अत्यन्त धन्यवाद।

केशव भैया ने बताया है कि आप किस कारण से नहीं आए। मैं समझ गई हूँ। अब मैं आपको तब तक निमन्त्रण नहीं भेजूँगी जब तक इस घर में आपकी मान-मर्यादा की रक्षा करने की शक्ति मुझमें नहीं आ जाती। मैंने केशव भैया से पूछा था कि मुझमें यह शक्ति कैसे आएगी। उन्होंने बताया था कि जब तक मेरा विवाह नहीं हो जाता अथवा मैं बालिग होकर स्वयं कमाने नहीं लग जाती।

आप बहुत अच्छे हैं जो वर्तमान परिस्थिति में भी मुझको भेंट भेज रहे हैं।

स्नेहाकांक्षिणी—टूनी'

केशव ने मुझको कुछ नहीं बताया कि चाय-पार्टी कैसी हुई और उसने टूनी को क्या बताकर सन्तोष दिलाया था। इस कारण मैंने भी उससे टूनी के पत्र का उल्लेख नहीं किया।

एक वर्ष व्यतीत हुआ तो मैंने फिर टूनी को उसके पन्द्रहवें जन्म-दिन पर भेंट भेजी। इस बार रामायण थी। इस बार भी धन्यवाद का पत्र आया।

पत्र में लिखा था, 'आदरणीय भैया ! आपने अपनी टूनी को भुलाया नहीं, मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ। मैं भेंट के लिए किस प्रकार धन्यवाद दूँ। धन्यवाद तो केवल-मात्र एक दिखावे की वस्तु है। वास्तव में जो कुछ मैं अपने मन में आपके प्रति भाव रखती हूँ, उसे लिखने की मुझमें योग्यता नहीं। मेरी भाषा इतनी दुर्बल है कि मैं लिख नहीं सकती। क्षमा करना। इतने मात्र से ही समझ लेना। स्नेह-पात्री—टूनी।'

मुझको केशव से पता चला कि टूनी मैट्रिक में फेल हो गई है। उस समय हम थर्ड-ईयर में थे। हम दोनों बी० एस-सी० में पढ़ते थे। फिजिक्स-कैमिस्ट्री हमारे विषय थे। मुझको टूनी के फेल हो जाने का बहुत ही दुःख था। केशव ने कहा, "वह पढ़ती-लिखती तो कुछ थी नहीं। पास क्या होती ? तुम्हारी भेजी रामायण का पाठ ही किया करती थी।"

इस वर्ष मैंने एक सुन्दर सजिल्द गीता अनुवाद-सहित उसके पास भेजी। उसका धन्यवाद का पत्र आया तो मैंने उसे उसके फेल हो जाने के लिए संवेदना-पत्र भेजा। लिखा, 'टूनी बहन ! केशव से यह जानकर कि तुम रामायण पढ़ने में आवश्यकता

से अधिक समय देती रही हो और इसी कारण फेल हो गई हो, बहुत ही दुःख हुआ है।

'भविष्य में तुम्हें कोई साड़ी-जम्पर इत्यादि ऐसी चीजें भेजा करूँगा जिससे तुम मेरी भेजी चीजों को बदनाम न कर सको।

'अभी तो तुम्हारा पढ़ाई का समय है। रामायण-गीता आदि तो जीवन-भर पढ़ी जा सकती हैं।

'पूर्ण आशा करता हूँ कि इस वर्ष तुम मन लगाकर पढ़ोगी और फर्स्ट-डिवीजन में पास होवोगी। सुखी रहो और पढ़-लिखकर योग्य बनो।

तुम्हारा भाई—विनोद।'

मैं इस पत्र के उत्तर की आशा नहीं रखता था। इस पर भी उसका उत्तर आया। उसने लिखा, "आपकी संवेदना के लिए धन्यवाद। परन्तु मैं आपको अपने मन की बात कहती हूँ मैं फेल होने से बिल्कुल दुखी नहीं हूँ। प्रत्युत् मुझे प्रसन्नता है। मेरा पढ़ाई में बिल्कुल मन नहीं लगता। मैं ऐलजेबरा, ज्योमैट्री, ज्योग्राफी आदि विषय बिल्कुल समझ नहीं पाती। आप जब समझाते थे तो कुछ-कुछ समझ में आता था। अब न तो कोई समझाता है और न ही समझ में आता है।

'रहे अन्य विषय। वे तो मैं स्वयं पढ़ सकती हूँ। परीक्षा पास न होगी तो न सही। योग्यता तो होगी। सो जीवन चल जाएगा।'

इसके उत्तर में मैंने कॉलेज की पढ़ाई का बहुत ही सुन्दर दृश्य खींचा और उसको बताया कि बिना मैट्रिक पास किये वह कॉलेज में प्रवेश नहीं पा सकेगी। इससे कॉलेज के योग्य प्रोफेसरों के प्रवचन सुनने से वंचित रह जाएगी।

इस प्रकार उच्च शिक्षा की अच्छाइयाँ वर्णन कर उसको उत्साहित किया कि वह पढ़े और अच्छे अंक लेकर मैट्रिक पास करे।

मेरे पत्र लिखने का परिणाम यह हुआ कि मेरा टूनी से पत्र-व्यवहार लगातार चलने लगा। उसकी बुआ नैरोबी चली गई थी और उसने लिखा था कि वह शान्ति से अपना मन किसी कार्य में लगा सकती है। मेरी सम्मति उसने स्वीकार कर ली थी और दिल लगाकर पढ़ाई आरम्भ कर दी थी।

कई पत्रों का आदान-प्रदान हो चुका था। उन सबमें मैंने उसको 'टूनी बहन' ही संबोधन किया था और वह मुझको विनोद भैया करके सम्बोधित करती थी। मैं बी०एस-सी० की परीक्षा की तैयारी कर रहा था। उसकी मैट्रिक की परीक्षा समाप्त हो चुकी थी। मेरा उससे सम्पर्क केवल पत्रों द्वारा ही हो रहा था। एक ही नगर में रहते हुए और उसके भाई से घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हुए भी मैं उससे कभी भी नहीं मिलता था। केशव ने मुझको कभी अपनी कोठी पर चलने का निमन्त्रण नहीं दिया था और न ही मैंने कभी वहाँ जाने की इच्छा प्रकट की थी।

मैं जानता था कि केशव अति स्वाभिमानी युवक है। वह जब तक विश्वास

नहीं कर लेगा कि मेरे साथ अच्छा व्यवहार होगा, तब तक मुझे वहाँ नहीं ले जाएगा और न ही जाने की सम्मति देगा। मैं भी विचार करता था कि टूनी से स्नेह हो गया है। क्या अपनी बहन से जो वर्षों के लिए और कभी-कभी तो जीवन-भर के लिए ससुराल चली जाती है, स्नेह नहीं होता ? मैंने अपने मन में समझ रखा था कि टूनी किसी दूसरे नगर में रहती है।

कभी-कभी मेरे मन में इच्छा होती थी कि अब देखूँ कि वह कैसी लगती है। बचपन में तो उसकी बातें, उसकी रूपरेखा और उसका चुलबुलापन अति आकर्षक होता था। अब वह सोलह वर्ष की युवती थी। उसको अद्वितीय सुन्दरी होना चाहिए। उसके चुलबुलेपन के स्थान पर उसके अंग-अंग में स्फूर्ति होनी चाहिए। उसकी बुद्धि की चंचलता के स्थान पर उसमें गम्भीरता होनी चाहिए। मन में उत्सुकता थी कि उसको देखूँ परन्तु शिष्टाचार के नाते ऐसा नहीं कर सका।

मैं एक दिन लैबॉरेटरी से निकल रहा था कि केशव ने बताया, "देखो वह कॉलेज के दरवाजे पर कौन खड़ा है ?" मैंने देखा कि एक युवा लड़की सज-धज के साथ वहाँ किसी की प्रतीक्षा कर रही है। मैंने ध्यान से देखा तो माथा तथा नाक केशव से मिलते-जुलते प्रतीत हुए। मैं समझ गया और मेरे मुख से निकल गया, "यह तो टूनी मालूम होती है।"

"हाँ, मेरे साथ सिनेमा देखने जा रही है। 'लाइट ऑफ एशिया' फिल्म का विज्ञापन पढ़ वह इसे देखने को पागल हो रही है। हम छः बजे के शो में जा रहे हैं।"

मैं टूनी को कॉलेज के गेट के समीप खड़े देख वहीं ठहर गया था। जब केशव ने सिनेमा जाने का प्रोग्राम बताया तो मैंने कहा, "अच्छा, तुम जाओ। मैं अभी होस्टल में मेलाराम से मिलने जा रहा हूँ।"

"पर वह तो कहती है कि तुमको भी साथ ले चलेंगे।"

"और मैं कहता हूँ कि मैं उसके समीप तब तक नहीं फटकूँगा जब तक उसके माता-पिता की इसके लिए स्वीकृति नहीं होती।"

"लो, वह तो स्वयं ही यहाँ आ रही है। कदाचित् तुम्हारे यहाँ रुक जाने से उसने तुम्हारे मन की बात का अनुमान लगा लिया है।"

मैं विचार करने लगा कि यहाँ से भाग जाऊँ अथवा खड़ा रहूँ। भाग जाना असभ्यतापूर्ण तथा अनावश्यक समझ, वहाँ खड़ा रहा। टूनी आई तो हाथ जोड़कर उसको नमस्कार की और बोला, "मालती ! आज इधर कैसे ?"

वह मुस्कराई और बोली, "मालती नहीं, टूनी। भूल गए हैं आप ?"

"टूनी तो एक छोटी-सी लड़की थी, इतनी-सी।" मैंने भूमि से तीन फीट ऊँचा हाथ कर बता दिया—"अब तुम्हें देख, टूनी कहकर पुकारने में लज्जा अनुभव होती है।"

वह हँस पड़ी। केशव और मैं भी हँसने लगे। बात उसने आरम्भ की, "केशव भैया आज मुझको 'लाइट ऑफ एशिया' दिखाने ले जा रहे हैं। यह विचार था कि आप भी साथ चलते।"

"देखो मालती ! तुम्हारे माता-पिता मेरा तुमसे मेल-जोल पसन्द नहीं करते। इस कारण मैं तुम लोगों के साथ नहीं जाऊँगा।"

"न पसन्द करने वाली बुआ थीं। वे चली गई हैं और उनके साथ आप पर लगा प्रतिबन्ध उठ गया मान लिया जाना चाहिए।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। बुआ के काल में यह प्रतिबन्ध हुआ था अवश्य, परन्तु प्रतिबन्ध लगाने वाले तुम्हारे पिता थे। उठा भी वे ही सकते हैं। उन्होंने उठाया नहीं। इस वर्ष भी तुम्हारे जन्म-दिवस पर मुझे निमन्त्रण नहीं मिला।

मालती इसके आगे कुछ न कह सकी। अतः अति दयनीय मुद्रा बनाकर कहने लगी, "विनोद भैया ! चलिए आप। उनको पता नहीं लगेगा।"

"नहीं बहन ! क्षमा करो। मैं तुम्हारे विचार को ठीक नहीं मानता।"

उसका मुख उतर गया। मैंने नमस्ते की और कॉलेज-होस्टल की ओर चल दिया।

अगले दिन केशव ने बताया कि वे पिक्चर देखने नहीं गए।

मैं टूनी के मन की अवस्था का अनुमान लगाकर दुःख अनुभव करता था; परन्तु कुछ कर नहीं सकता था। मैंने विचार किया कि उसको पत्र लिखूँ और समझाऊँ। परन्तु बहुत यत्न करने पर भी कुछ लिख नहीं सका। मैं अनुभव करता था कि एक स्वाभाविक स्नेह के प्रवाह को रोकने का यत्न किया जा रहा है। यह अन्याय है।

मैं अपनी परीक्षा की तैयारी में इतना लीन हो गया कि मालती को उस समय के लिए प्रायः भूल ही गया। उसने भी मुझे कोई पत्र नहीं लिखा।

परीक्षा समाप्त हुई तो मैं भ्रमणार्थ डलहौजी चला गया। केशव अपने माता-पिता तथा बहन के साथ कश्मीर चला गया था। एक पत्र उसका पहलगाम से आया जो लाहौर होकर मुझे डलहौजी में मिला। उसमें साधारण रूप में ही मालती का उल्लेख था। उसने लिखा था कि मालती आर्य कन्या महाविद्यालय में प्रवेश लेगी और प्रवेश-तिथि से पूर्व ही वे लाहौर पहुँच जाएँगे। मैंने उनके पत्र का उत्तर दिया तथा उसमें 'सबको नमस्ते मिले' ऐसा लिख दिया।

मेरी छोटी बहन वीणा ने इसी वर्ष मैट्रिक किया था और वह भी कन्या महाविद्यालय में प्रवेश लेना चाहती थी। इस संयोग से मुझे अचम्भा हुआ। मैंने टूनी के विषय में घर पर किसी को भी कुछ बताया नहीं था, इस कारण किसी प्रकार की उलझन की आशंका नहीं थी।

जब मैं डलहौजी से लौटा तो मेरे लिए दो पत्र—एक श्रीनगर से तथा दूसरा

लाहौर निस्बत रोड से आए हुए रखे थे। श्रीनगर से केशव का पत्र था। उसमें उसने अपने पूर्ण परिवार का चित्र, जो पहलगाम में लिया गया था, भेजा था और लाहौर पहुँचने की तिथि लिखी थी।

पिताजी ने बताया कि केशव दो-तीन बार मुझसे मिलने आ चुका है। उसको मेरे यहाँ आने की तारीख बता दी गई थी।

दूसरा पत्र मालती का था। पत्र काफी लम्बा था। साथ में उसकी एक फोटो थी, जो श्रीनगर के स्टुडियो में खिंचवाई गई थी। पत्र में कश्मीर-भ्रमण का रोचक वर्णन लिखा था। चित्र के विषय में लिखा था, "आप तो मिलते नहीं। इस कारण यह चित्र अपने प्रतिनिधि के रूप में भेज रही हूँ, जिससे आपका स्नेह बना रहे।"

मैंने चित्र के लिए धन्यवाद लिखा और कश्मीर भ्रमण के आनन्द के लिए बधाई दी।

चित्र के नीचे टूनी बहन लिखकर, एक सुन्दर फ्रेम में जड़वाकर अपने कमरे की दीवार के साथ टाँग दिया। साथ ही केशव के पूर्ण परिवार का चित्र भी टँगवा दिया। माताजी ने पूछा भी, "यह कौन नयी बहन बना ली है?" मैंने बता दिया, "केशव की बहन है। कश्मीर गए थे और वहाँ से उसने यह चित्र भेजा है।"

हम दोनों का एम० एस-सी० में प्रवेश लेने का विचार था। केशव की रुचि 'फिजिक्स' लेने की थी और मैं कैमिस्ट्री पसन्द करता था। इस प्रकार चौथी श्रेणी से इकट्ठे पढ़ते-पढ़ते हम अब पृथक् हो गए।

कश्मीर से आने के पश्चात् एक अन्य बात में भी अन्तर पड़ गया। केशव कश्मीर में बहुत कुछ अध्ययन करता रहा प्रतीत होता था। उसके विचारों में नास्तिकता की बू आने लग गई थी। अभी हम एम० एस-सी० में प्रवेश लेने का विचार कर ही रहे थे कि एक दिन जब हम माल रोड पर टहल रहे थे, हम दोनों में कैमिस्ट्री तथा फिजिक्स पर तुलनात्मक विवाद होने लगा।

केशव ने छूटते ही पूछा, "क्या करोगे कैमिस्ट्री में एम० एस-सी० पास करके? हमारे देश में दस्तकारी बहुत ही हीन अवस्था में है। कैमिस्ट्री के ग्रेजुएटों के लिए करने को कोई काम नहीं।"

"देखो, ईश्वर की कृपा से मैं प्रोफेसर बन जाऊँगा।"

वह ठहाका मारकर हँस पड़ा। उसने कहा, "ईश्वर तुमको प्रोफेसर बनाने आएगा। कहाँ है वह?"

मैंने उसके मुख की ओर देखा तो वह कहने लगा, "विनोद! अब एम० एस-सी० में पढ़ने जा रहे हो। ऐसी बात कोई नहीं करनी चाहिए जिसको हम 'सायंटिफिकली' (वैज्ञानिक ढंग से) सिद्ध न कर सकें।"

मैंने गम्भीर हो कहा, "ठीक है केशव! परन्तु ईश्वर इतना बड़ा है कि उस पर टैस्ट करने के लिए उतनी बड़ी टैस्ट-ट्यूब अभी नहीं बनी।"

"उसकी एक 'स्लाइस' (टुकड़ा) काटकर तो टैस्ट किया ही जा सकता है ?"

"वह अभेद्य है । काटा नहीं जा सकता ।"

"यह वाकाडम्बर है । यदि हमें साइन्स का विद्वान् बनना है तो हमको अप्रत्यक्ष को प्रत्यक्ष कर दिखाना होगा । जो ऐसा ढीठ है कि लाखों वर्षों से छुपा बैठा है, उसको मान्यता देने से क्या मिलेगा ?"

"प्रत्यक्ष तो वह है । एक ग्यारहवीं इन्द्रिय है । उसको मन कहते हैं । परमात्मा का साक्षात्कार उसके द्वारा हो सकता है ।"

"तो होता क्यों नहीं ?"

"उसी प्रकार, जैसे गंधक के तेजाब को 'टैस्ट ट्यूब' में डालकर हाइड्रोजन की आशा करें तो वह मिल नहीं सकती । उसके लिए हमको गंधक के तेजाब में जस्त के टुकड़े डालने पड़ते हैं । इस प्रकार मित्र ! संसार-रूपी तेजाब में से भगवान् के दर्शन करने के लिए बुद्धि-रूपी जस्त का प्रयोग करना पड़ेगा ।"

"तो तुमने देखा है उसको ?"

"वैज्ञानिक कहते हैं कि मंगल तारे में जीव बसते हैं । उन्होंने वहाँ जाकर उन्हें देखा है क्या ?"

"युक्ति से वैज्ञानिकों ने जाना है ।"

"तो इसमें भी युक्ति की आवश्यकता है । भगवान् का अस्तित्व युक्ति से सिद्ध होता है ।"

"मैं जब आस्तिकों को झूठ बोलते, ठगी करते, व्यभिचार अथवा अन्याय करते देखता हूँ, तो मेरी युक्ति कहती है कि परमात्मा ढोंग है ।"

"यह विचित्र युक्ति है । यदि भारत में एक सुव्यवस्थित राज्य के होते हुए कहीं चोर-डाकू हैं, तो क्या राज्य के होने में सन्देह करना चाहिए ?"

"मैं तो जब तक किसी बात को मान नहीं सकता, जब तक मेरे हाथ पर लाकर वह चीज रख न दी जाए ।"

मैंने समझा कि इस युक्ति का उत्तर मैं दे चुका हूँ और बार-बार वही बात करने से केशव की हठधर्मी सिद्ध होती है । इससे चुप रहा । उसने समझा कि मैं परास्त हो गया हूँ ।

एक दिन वीणा ने मुझको टूनी का एक पत्र दिया । लिफाफे पर लिखाई पहचान मैंने उससे पूछा, "यह तुमको कहाँ मिला ?"

"टूनी बहन से ।" और वह हँस पड़ी । मैं गम्भीर भाव बनाए हुए उसकी ओर देखता रहा । इस कारण वह बताने लगी—"टूनी मेरी श्रेणी में पढ़ती है । मैंने पहचान लिया और एक दिन उससे पूछ ही लिया, 'तुम टूनी हो क्या ?' "

"हाँ, तुम कैसे जानती हो ?"

"तुम्हारा चित्र मेरे भाई के कमरे में लगा हुआ है । मैंने पहचान लिया । उसके

नीचे 'टूनी बहन' लिखा है।'

"तुम विनोद जी की बहन हो?"

"हाँ! और तुम केशव भैया की?"

"हाँ! तो हम दोनों बहनें हुईं?"

"हम गले मिलीं, और तबसे वह मेरी सखी बन गई है। आज उसने मुझसे पूछा, 'यह पत्र अपने भाई साहब को दे दोगी?'

"मैंने स्वीकार किया तो उसने यह पत्र दे दिया।"

मैंने पत्र खोलकर पढ़ा। उसमें लिखा था, 'विनोद जी! जिस दिन आप गवर्नमेंट कॉलेज में मिले थे उसी दिन से मेरी इच्छा थी कि आपका चित्र मुझे मिले। यह विचारकर कि आपको मैं अपना चित्र भेजूँगी तो आप भी अपना भेज देंगे, मैंने अपना चित्र भेज दिया। परन्तु आपने नहीं भेजा। क्या मैं आशा कर सकती हूँ कि आप अपना एक अच्छा-सा चित्र भेजने की कृपा करेंगे?

'मैं स्वतन्त्र होने की प्रतीक्षा कर रही हूँ। तब ही आपसे मिलने की आशा की जा सकती है। कल पिताजी ने मुझे स्पष्ट कह दिया है कि आपका इस कोठी में आना आवश्यक नहीं। बात केशव भैया ने चलाई थी। केशव भैया के बी० एस-सी० की डिग्री ले लेने के उपलक्ष्य में शीघ्र ही पिताजी एक दावत देने वाले हैं। केशव भैया ने अपने मित्रों की सूची में आपका नाम भी लिख दिया। पिताजी ने आपका नाम काट दिया। इस पर केशव जी ने पूछा, 'क्यों?'

'कोई आवश्यकता नहीं।' पिताजी ने कहा।

'मैं अभी अगले जन्म-दिवस पर सत्रह वर्ष की हूँगी और मुझको स्वतन्त्र होने में ४ वर्ष और हैं। तब तक के लिए यदि आप अपना चित्र भेज दें तो मैं अत्यन्त आभारी रहूँगी।'

मैंने वीणा के हाथ चित्र भेज दिया। उसके नीचे लिख दिया था, 'टूनी बहन के लिए' इसपर भी मुझको इस विषय में चिन्ता लगने लगी थी। मैं अकारण ही केशव के परिवार में वैमनस्य का बीज बन गया था। मैं केशव से बात करना चाहता था, परन्तु उसका कार्य एक दूसरी लैबॉरेटरी में होता था। जब वह लैबॉरेटरी में होता, मुझे लैक्चर 'अटैंड' करना होता था और जब मुझको अवकाश मिलता, वह कहीं काम पर गया होता था। इसी कारण हमारा मिलना आजकल काफी कम हो गया था।

एक दिन वीणा टूनी का पत्र लाई। उसने लिखा था, "आपके चित्र के लिए धन्यवाद। मैं आपका चित्र अपने कमरे में लटकाने का साहस नहीं कर सकती। मुझको भय है कि कहीं पिताजी क्रोध में आकर फाड़ न डालें। वह मैंने अपने कपड़ों के सन्दूक में, जिसको ताला लगा रहता है और जिसकी ताली सदैव मेरे पास रहती है, रख दिया है। मैं जब कपड़े पहनती हूँ तब आपके दर्शन कर लेती हूँ।"

मेरे मन में इस पत्र के पढ़ने से एक अन्य भय समा गया। मुझको कुछ सन्देह होने लग गया था कि वह मुझसे प्रेम करने लग गई है। इसपर भी मैं यह बात सन्देह के रूप में भी मुख से नहीं निकाल सकता था। मैं मन-ही-मन इस परिस्थिति पर मनन करने लगा था।

अगले दिन, लगभग दो महीने के पश्चात्, केशव मुझको लैबॉरेटरी में ढूँढ़ने आया। मैं उत्सुकता से मिला। मेरे मन में बहुत बातें थीं, जो मैं उससे जानना चाहता था, परन्तु उनको मैं अपनी ओर से शुरू करना नहीं चाहता था। इस कारण बोला, "कई बार मैं तुम्हारी लैबॉरेटरी में तुमसे मिलने के लिए जा चुका हूँ, परन्तु तुम दिखाई ही नहीं देते।"

"मैं दो मास से 'डार्क-रूम' में काम कर रहा हूँ प्रायः अँधेरी कोठरी में ही रहता हूँ। हाँ, तो क्या बात थी? कुछ विशेष काम था क्या?"

"नहीं···ऐसे ही। तुमसे मिले बहुत दिन हो गए थे। विचार आया कि तुम्हारा पता लेना चाहिए।"

"आज सायंकाल कुछ काम है क्या?"

"कुछ विशेष नहीं।"

"तो साढ़े चार बजे मैं आऊँगा। स्टैंडर्ड में चाय पीने चलेंगे। पश्चात् सिनेमा देखेंगे।"

"अच्छी बात। मैं आऊँ अथवा यहीं प्रतीक्षा करूँ?"

"लैबॉरेटरी में अपनी सीट पर ही प्रतीक्षा करना। मैं समय पर आ जाऊँगा।"

जब मैं उसके साथ 'स्टैंडर्ड' में चाय पी रहा था, तभी मुझको उस दिन की चाय में विशेषता का भास हो गया। उसने इसका प्रबन्ध पहले से ही कर रखा था। मुझको सन्देह हुआ कि कदाचित् आज ही वह दिन हो, जिस दिन उसके पिता ने उसकी डिग्री-प्राप्ति की खुशी में पार्टी देनी हो और केशव मेरे कारण ही रूठकर वहाँ से चला आया हो। इसकी सम्भावना उठते ही मैं चिन्तित हो गया। मैं नहीं चाहता था कि उसको मेरे ज्ञान का पता चले। इस कारण यह बात मैं उसी के मुख से कहलाना चाहता था। मैंने मुस्कराकर पूछा, "केशव! ऐसा प्रतीत होता है कि आज तुमने चाय के लिए पहले से ही विशेष प्रबन्ध कर रखा है?"

"हाँ।"

"क्यों? क्या बात है? कोई शुभ बात हो, तो मैं तुमको बधाई देना चाहता हूँ।"

"वह चाय के पश्चात् बताऊँगा।"

"नहीं, पहले बताओ। अन्यथा मैं चाय नहीं पीऊँगा।"

"तो मैं बताऊँगा नहीं।"

"देखो मित्र ! यदि पहले बता दोगे, तो उस शुभ घटना के मन में स्पष्ट होने से भूख दुगुनी लगेगी और खाने का आनन्द बढ़ जाएगा । क्या तुम्हारी शादी हो रही है ?"

केशव हँस पड़ा । मैं उत्सुकता से उसके मुख पर देखता रहा । बैरा सामान मेज पर लगा रहा था । इस कारण मैं चुप रहा । वह मेरी ओर मुस्कराते हुए देखता रहा । बैरा सामान लगाकर जब चला गया तो वह बोला, "आज मैं एक 'बालिग' की भाँति कार्य कर रहा हूँ ।"

मैं समझा नहीं । मैं जानता था कि वह उन्नीस वर्ष का है । वह बालिग नहीं है । मेरी प्रश्नभरी दृष्टि को अपने पर गड़ी देख उसने कहा, "मैंने आज अपने पिता से विद्रोह कर दिया है ।"

"क्या मतलब ?"

"आज पिताजी मेरी डिग्री प्राप्त करने के उपलक्ष्य में घर पर एक पार्टी दे रहे हैं और मैं यहाँ तुम्हारे साथ चाय पीने में लगा हूँ ।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि क्यों ?"

"वहाँ पर मैं तुम्हें आमन्त्रित करना चाहता था परन्तु उन्होंने साफ इन्कार कर दिया है ।"

"तो फिर क्या हुआ ? यह कोई नयी बात तो है नहीं । उन्होंने मेरा वहाँ जाना पहले से ही मना कर रखा है । यद्यपि मैं इसमें कोई कारण नहीं जानता, इसपर भी उनको, अपने घर में, किसको आने दें और किसको न आने दें, इसका पूर्ण अधिकार है ।"

"और मैं समझता हूँ," केशव ने कुर्सी की पीठ पर टेक लगाकर कहा, "मुझको अधिकार है कि मैं जिसके साथ चाहूँ, चाय पिऊँ अथवा न पिऊँ ।"

"तर्कहीन बात मत करो, केशव ! देखो मैं समझता हूँ, तुमको अधिकार है कि तुम मेरे साथ चाय पीओ अथवा न पीओ; परन्तु तुमको अपने पिता के साथ चाय न पीने का हठ करने का अधिकार नहीं । तुम्हारा जन्म अपने पिता के घर होना तुम्हारे अधिकार की बात नहीं थी । भगवान् ने तुम्हें वहाँ जन्म दिया है और…"

"बस, रहने दो भगवान् की बकवास । मेरे जन्म में भगवान् का हाथ नहीं ।"

"तो किसका हाथ है ?"

"यह आकस्मिक घटना मात्र ही समझनी चाहिए कि मैं मिस्टर थापर का पुत्र हूँ । इसमें और कुछ भी कारण नहीं ।"

मैंने मुस्कराते हुए कहा, "केशव ! क्रोध करने से तो कुछ सिद्ध होता नहीं । एक प्याला चाय पी लो । चित्त स्थिर हो जाएगा ।"

मैंने चाय बनाई और वह पीने लगा । मैंने कहा, "भगवान् कहो अथवा घटना-मात्र, मेरा तो कहना यह है कि उनके यहाँ जन्म लेना तुम्हारे वश में नहीं था ।

अब तुम अपने जन्म को 'नलिफाई' (विघटित) नहीं कर सकते। इस जन्म से जो उत्तरदायित्व उत्पन्न हुए हैं, तुम उनकी अवहेलना नहीं कर सकते।...

"पिताजी ने तुम्हारा पालन-पोषण और तुम्हारी शिक्षा का प्रबन्ध किया है। यह उस उत्तरदायित्व के नाते ही तो किया है! इस कारण यदि उनकी इच्छा है कि तुम आज उनके साथ बैठकर चाय पीओ तो यह एक इतनी साधारण-सी बात है कि अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए तुम इन्कार नहीं कर सकते।"

केशव की समझ में मेरी बात आने लगी तो उसने कहा, "तुम्हारा यह अभिप्राय है कि यहाँ चाय पीने के पश्चात् अपनी कोठी में चला जाऊँ और उस चाय में भी सम्मिलित होऊँ?"

"हाँ। यही उचित है। तुम्हारे पिताजी को मुझे चाय पर आमंत्रित करना उचित प्रतीत नहीं हुआ। तुम इसको ठीक समझते हो तो तुम मेरे साथ पीओ, परन्तु अपने पिताजी को कैसे विवश कर सकते हो कि वे मुझको बुलाकर अपने पास बैठाएँ।"

"पर एक बात और भी है। आज वहाँ पर कुछ लोग ऐसे बुलाए जाएँगे, जिनके घर टूनी का सम्बन्ध करने का विचार है।"

"तो फिर क्या हुआ?"

"तुम्हारे मुकाबले में उनको लाने से, वे टूनी को जँचते नहीं।"

"तो न सही। मेरी तुलना उनसे करने की आवश्यकता ही क्या है?"

"टूनी को है।"

"तो भाई साहब! वह कर लेगी। मैं उसके पिता की इच्छाओं का विरोध नहीं करूँगा।"

"मैं करना चाहता हूँ।"

"अभी तुम्हारी आयु इस कार्य के योग्य नहीं। तुम अभी बालिग नहीं हो।"

"मेरे बालिग होने तक तो टूनी का विवाह हो जाएगा।"

"टूनी चाहेगी तो हो जाए।"

"और यदि वह न चाहे तो?"

"तो विवाह को रोका जा सकता है।"

"कैसे?"

"यह तो अवसर आने पर विचार कर लिया जाएगा। जब वह समय आएगा, तब कोई मार्ग निकाल लिया जाएगा। मैं समझता हूँ कि उस समय से पूर्व तुमको अपने परिवार से झगड़ा नहीं करना चाहिए।"

केशव गम्भीर विचार में पड़ गया और चाय के पश्चात् सिनेमा जाने की अपेक्षा अपनी कोठी को लौट गया।

दो दिन पश्चात् टूनी के पत्र से पता चला कि पार्टी में क्या हुआ। केशव आधा

घण्टा देरी से पहुँचा था। पिताजी ने उससे देर से आने का कारण पूछा तो उसने बता दिया कि वह एक परीक्षण (experiment) कर रहा था, जिसको बीच में छोड़कर वह आ नहीं सका। इस प्रकार पहली कठिनाई तो टल गई।

विशेष आमंत्रित लोग वहाँ आए हुए थे। वह लड़का, जिसके साथ टूनी के सम्बन्ध का विचार किया जा रहा था, टूनी के पास बैठा था। टूनी को इस बात का पता नहीं था, परन्तु उसके बार-बार कृत्रिम भाव से बातचीत करने से और टूनी की प्रशंसा से, टूनी को उस पर सन्देह हो गया। इस कारण उसने कहा, 'आप बार-बार मुझको 'श्रीमती, श्रीमती' कहकर क्यों पुकारते हैं ?'

'मैं आपको श्रीमती की पदवी पर आसीन करना चाहता हूँ।'

'यह बिना आपके प्रयत्न के भी हो जाएगा।'

'पर जिस आसन पर मैं बिठाना चाहता हूँ, उस पर केवल मैं ही बिठा सकता हूँ।'

'पर जिस आसन पर मैं बैठना चाहती हूँ, वहाँ आपकी सहायता की आवश्यकता नहीं।'

'तो आपने अपना आसन विचार कर रखा है ?'

'विचार तो सब लोग करते हैं, पर मेरा निश्चय अभी नहीं हुआ।'

'तो उस निश्चय के करने में एक मैं भी उम्मीदवार हूँ।'

टूनी ने हँसकर कहा, 'आपके प्रस्ताव पर विचार किया जाएगा।'

'सहानुभूतिपूर्ण विचार के लिए प्रार्थी हूँ।'

'विचार तो सहानुभूतिपूर्ण होता ही है। परिणाम कैसा रहेगा, कहा नहीं जा सकता।'

'मैं अपने दावे पर बहस करना चाहता हूँ।'

'किस पर दावा है आपका ?'

'आप पर। उन सबके विरुद्ध, जो आपको श्रीमती के आसन पर आसीन करने के इच्छुक हैं।'

'तो आप अपना दावा दायर कर दीजिए। यदि पहली ही पेशी में दावा खारिज न हुआ तो बहस कर लेना।'

"ये उम्मीदवार", टूनी ने अपने पत्र में लिखा, "रायबहादुर बख्शी रामचन्द्र के सुपुत्र, कृष्णकुमार हैं। बी० ए०, एल-एल० बी० पास कर आजकल वकालत करते हैं। पिता भी वकील हैं और पुत्र की भी अच्छी प्रेक्टिस है। मैंने अपने मन में कृष्णकुमार का दावा खारिज कर दिया है।

"रात को जब पिताजी ने कृष्णकुमार के विषय में मेरी सम्मति पूछी तो मैंने पूछा, 'किस विषय में पिताजी ?'

'बेटा ! वह तुमसे विवाह करने का इच्छुक है। वह, उसका पिता, उसकी बहन

और माँ पार्टी में उपस्थित थे और सबने तुम्हें पसन्द किया है।'

"इस पर मैंने अपना कृष्णकुमार से हुआ वार्तालाप सुना दिया और अन्त में कहा कि मैंने उसका दावा खारिज कर दिया है। इस पर पिताजी गम्भीर विचार में पड़ गए; परन्तु केशव भैया ने पूछ ही लिया, "टूनी ! क्यों !"

"मैंने कहा, 'मैं अभी फर्स्ट-ईयर में पढ़ती हूँ और एम० ए० पास कर ही विवाह करूँगी। वह इतनी देर तक मेरी प्रतीक्षा नहीं कर सकता।'

'इतना पढ़कर क्या करोगी ? और मैट्रिक दो वर्ष में किया है तो एम० ए० में दस वर्ष लग जाएँगे। तब तक बूढ़ी हो जाओगी।' पिताजी ने कहा।

'मैं विवाह नहीं करूँगी।'

"केशव भैया मेरी सहायता के लिए बोले,'पिताजी ! अभी जल्दी क्या है ? टूनी तो अभी सोलह वर्ष की ही है।'

"बात यहीं समाप्त हो गई प्रतीत होती है।

"मैं आपको एक बात और बताना चाहती हूँ। पिताजी को सन्देह है कि आप मुझसे विवाह के लिए उत्सुक हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यही कारण है कि आपको मेरे समीप फटकने नहीं देते।

"कल पिताजी माताजी से मेरे विषय में बात कर रहे थे। मैं वहीं पर्दे के पीछे खड़ी उनकी बातें सुन रही थी। पिताजी का कहना था, 'वह विनोद होता तो मुझ को विश्वास है कि वह मान जाती और केशव भी इसका विरोध नहीं करता।' "

"तो फिर उससे ही बात क्यों न पक्की कर ली जाय ?"

"नहीं। विनोद एक दूकानदार का लड़का है। आर्थिक अवस्था भी उसकी अच्छी नहीं। अभी एम० एस-सी० पास करेगा। पश्चात् कहीं कामकाज करेगा। क्या जाने कैसा काम मिले उसे ?"

"माताजी का कहना था, 'तब तक प्रतीक्षा कर लें क्या हानि है ? टूनी भी बी० ए० कर लेगी।' "

"मुझको तो कृष्णकुमार उपयुक्त प्रतीत होता है। तुम उसको समझाओ, अच्छे लड़के बार-बार नहीं मिलते।"

"मेरे लिए यह बात आश्चर्यजनक थी। कैसे पिताजी ने यह अनुमान लगाया कि आपको कृष्णकुमार पर उपमा दूँगी ? वीणा का हमारी श्रेणी में होना मेरे पत्र भेजने में भारी सुविधाजनक हो गया है। मुझको सन्देह हो रहा है कि कृष्णकुमार को अस्वीकार करने के पश्चात् मेरे आने-जाने वाले पत्रों की भी देखभाल होने लगेगी।"

मैंने इस पत्र का उत्तर भेजा और उसमें परिस्थिति स्पष्ट करने का यत्न किया। मुझको कुछ काल से यह सन्देह होने लगा था कि बहन की पदवी छोड़ वह कुछ और बनने का विचार रखती है। पिछले कई पत्रों में उसने मुझे भाई लिखना बन्द कर

दिया था। इस पत्र में उसने पिताजी के अनुमान को आश्चर्यजनक लिखकर भी उनके अनुमान को गलत नहीं बताया। अतएव मैंने लिखा :

"बहन टूनी ! तुम्हारे पिताजी का अनुमान सर्वथा गलत है। मैं तुम्हें अपनी छोटी बहन के समान मानता हूँ। मेरा विचार है कि तुमको कृष्णकुमार के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेना चाहिए। पिताजी की सम्मति, उनकी आयु, अनुभव और अपनी एकमात्र लड़की से स्नेह का विचार कर, माननीय ही होनी चाहिए।

"केशव तो मेरे निमन्त्रित न किये जाने के कारण उस पार्टी में जाना नहीं चाहता था। मैंने उसको समझा-बुझाकर भेजा था। इस प्रकार मैं समझता हूँ कि तुम मेरे कहने का अभिप्राय समझकर, अपने कर्तव्य का निश्चय करोगी।"

मेरे पत्र का उत्तर तीसरे दिन मुझे मिला। उसके भेजे लिफाफे में एक कोरा कागज था, जिसमें केवल एक शब्द लिखा था, 'नहीं।' नीचे उसने अपना नाम 'टूनी' लिखा था।

मुझे उसका इस प्रकार का उत्तर पसन्द नहीं आया। इस कारण मैंने इस पत्र का उत्तर भेजना उचित नहीं समझा।

एम० एस-सी० की परीक्षा में बहुत परिश्रम करना पड़ा। साथ ही मैं जानता था कि जब तक मैं फर्स्ट-डिवीजन में अच्छे नम्बर लेकर पास नहीं होता, मुझको नौकरी मिलनी कठिन होगी। इस कारण मैं अपनी ओर से प्रान्त में प्रथम रहने का भरसक प्रयत्न कर रहा था।

केशव से कभी-कभी ही भेंट होती थी। वह भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त था। टूनी को नियमानुसार इस वर्ष भी उसके जन्म-दिवस पर एक भेंट भेजी। इस बार एक सुन्दर पर्स थी। साथ कोई पत्र नहीं भेजा। उसने भी भेंट स्वीकार करने के लिए एक पत्र भेजा जिसमें केवल 'धन्यवाद, टूनी' लिखा था।

मैं समझ गया कि वह नाराज है परन्तु मेरे पास उसकी बातों के विचार करने के लिए तथा उसको समझाने के लिए समय नहीं था।

केशव से जब भी भेंट होती, घूम-फिरकर परमात्मा-आत्मा पर बात आ जाती। वह आत्मा-परमात्मा को जली-कटी सुनाता। मैं उसको सुनकर हँस देता। इस पर वह और भी चिढ़ जाता और विज्ञान के चमत्कारों का उल्लेख करने लगता।

एक दिन अनारकली बाजार में 'स्टैंडर्ड' में बैठे हम चाय पी रहे थे कि वह बताने लगा, "मनुष्य की प्रारम्भिक अवस्था में इसके केवल दो हाथ थे। यह इन हाथों से ही अपना काम कर सकता था। भूमि खोदता था, पेड़ गिराता और लकड़ियों से मकान बनाता, पानी पीता और फल खाता। भावार्थ यह कि अपनी प्रत्येक आवश्यकता इन दो हाथों से ही पूर्ण करता था।'''

"पश्चात् विज्ञान में उन्नति होने लगी। धीरे-धीरे मनुष्यों के हाथों की संख्या में वृद्धि होने लगी। उसने कुल्हाड़ी बनाई, उसके तीन हाथ हो गए। उसने आरी बनाई, उसके चार हाथ हो गए। उसने गाड़ी बनाई, उसमें घोड़े जोत लिये। उसके आठ हाथ हो गए। इस प्रकार उसने उन्नति करते-करते कपड़ा बुनने की मशीन बनाई, रेलगाड़ी और हवाई जहाज बनाए, तोपें, बन्दूकें और बम्ब बनाए। इससे उसके सैकड़ों हाथ हो गए। पश्चात् उसने सुख-सुविधा के साधन बना लिये। टेली-फोन, टेलीग्राफ, रेडियो, टेलीविजन तैयार किये। इससे उसके सहस्रों हाथ हो गए। अब वह दो हाथों वाला प्राणी नहीं रहा। वह अब सहस्रबाहु बन गया है। प्रकृति इसके सामने नतमस्तक हो, इसकी चेरी बन गई है।...

"जब मनुष्य के दो हाथ थे, उसको भगवान् की सहायता की आवश्यकता रही होगी। अब एक वैज्ञानिक सहस्रबाहु है। उसको भगवान् की आवश्यकता नहीं।"

मैं उसका व्याख्यान सुन मुस्कराने लगा। इस पर उसने कहा, "तुम एक सफल वैज्ञानिक नहीं हो सकते। तुम अवश्य फेल होगे।"

मैं खिलखिलाकर हँस पड़ा।

इस प्रकार की हमारी परस्पर भेंट प्रायः हुआ ही करती थी। इनमें न तो कभी वह टूनी के विषय में बात करता, न ही मैं उसके विषय में कुछ पूछता।

एम० एस-सी० के दो वर्ष पलक की झपक में निकल गए। परीक्षा हुई और मैं अपने विषय में प्रथम तथा फर्स्ट डिवीजन में पास हो गया। केशव भी फर्स्ट डिवीजन में पास हुआ था। अपने विषय में अकेला विद्यार्थी होने से वह प्रथम भी था।

केशव ने परीक्षाफल देखते ही जर्मनी में जाकर डी० एस-सी० के लिए काम करने की प्रार्थना भेज दी। मैं पास होने के दूसरे दिन ही मेरठ के एक कॉलेज में प्रोफेसर नियुक्त हो गया।

मेरे नौकरी पा जाने पर उसे विस्मय हुआ। उसने कहा, "दोस्त! बहुत-बहुत बधाई हो। परन्तु यह किसकी सिफारिश लगी है?"

"मैंने परीक्षा देते ही नौकरी के लिए प्रार्थना-पत्र भेजे थे। उस समय इस नौकरी के विज्ञापन छपे थे। मैंने लिखा था कि मैं पंजाब में अपने विषय में प्रथम रहने की आशा करता हूँ। इस पर मुझको कालेज के प्रिन्सिपल का पत्र मिला कि मैं उनको तार द्वारा अपनी परीक्षा के परिणाम से सूचित करूँ। कल परीक्षा-फल निकलते ही मैंने तार भेज दी थी और आज मुझे नियुक्ति की सूचना तार द्वारा मिल गई है।"

"ऐसा मालूम पड़ता है कि तुम्हारी कोई बहुत बड़ी सिफारिश है, जिसके कारण तुम्हारी सहायता हुई है।"

"हाँ, यह तो है ही ।"

"कौन है वह ?"

"तुम मानोगे नहीं ।"

"क्या ?"

"केशव भैया ! भगवान् के सिवा मेरा कोई सहायक नहीं है ।"

"तुम प्रथम जो रहे हो ।"

"यह भी तो उसकी ही कृपा से है !"

वह ठहाका मारकर हँस पड़ा ।

मैं एक सप्ताह पश्चात् मेरठ जा पहुँचा, परन्तु वहाँ अधिक दिनों के लिए रहना नहीं पड़ा । वहाँ से शीघ्र ही लाहौर वापस आकर गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफेसर बन गया ।

केशव को जर्मन की बर्लिन यूनीवर्सिटी में स्थान नहीं मिला । उसने पैरिस यूनिवर्सिटी के लिए प्रयत्न किया । वहाँ भी स्थान नहीं मिला । विवश उसको कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में प्रवेश करने के लिए प्रार्थना करनी पड़ी ।

परीक्षा पास किये वर्ष से ऊपर हो चुका था, जब उसे इंग्लैंड में आगे पढ़ाई के लिए स्थान मिला और वह बम्बई से जहाज द्वारा इंग्लैंड पहुँच गया ।

एक वर्ष वह नास्तिकतावाद की पुस्तकें पढ़ता रहा और विज्ञान के नये-से-नये आविष्कारों का अध्ययन करता रहा ।

टूनी को मैं प्रतिवर्ष भेंट भेजता था । उसका पत्र भी मुझे इसके उत्तर में मिलता था । परन्तु सिवाय 'धन्यवाद' के वह और कुछ नहीं लिखती थी । इसके अतिरिक्त कोई पत्र-व्यवहार नहीं होता था । केशव से कभी पूछता तो वह कह देता, "ठीक है ।"

जब केशव विलायत जाने के लिए बम्बई जाने लगा तो उसे विदा करने के लिए मैं स्टेशन पर पहुँचा । उसके माता-पिता और टूनी भी उनको विदा करने वहाँ पहुँचे हुए थे । मैंने सबको नमस्ते कही । जब केशव के माता-पिता केशव से बातें कर रहे थे, टूनी मेरे समीप आ पूछने लगी, "वीणा कैसी है ?" उसने विवाह के कारण पढ़ाई छोड़ दी थी ।

"ठीक है । दो सप्ताह पश्चात् विवाह होगा ।"

"मुझको निमन्त्रण आएगा क्या ?"

"निस्सन्देह ! तुम आ सको अथवा न आ सको, निमन्त्रण तो पहुँचेगा ही ।"

"मैं यत्न करूँगी ।"

"माता-पिता से झगड़ा करना उचित नहीं ।"

"हाँ, अभी दो वर्ष तक मैं स्वतन्त्र नहीं ।"

"तब, तुम अपने माता-पिता से अधिक योग्य हो जाओगी क्या?"

"नहीं, तब मैं उनके पक्षपातपूर्ण व्यवहार का विरोध करने की क्षमता रख सकूँगी।"

"उनका व्यवहार पक्षपातपूर्ण है, इसका निर्णय कौन करेगा?"

"मैं, आप और अन्य जिनके सम्मुख मैं अपनी बात बताऊँगी।"

इस समय गाड़ी ने सीटी बजा दी। केशव ने टूनी के सिर पर हाथ फेरकर प्यार दिया, माता-पिता को हाथ जोड़ नमस्कार किया और गाड़ी में जा बैठा।

जब गाड़ी प्लेटफॉर्म से निकल गई तो सब स्टेशन से बाहर निकलने के लिए चल पड़े। केशव के पिता ने मुझसे पूछा, "विनोद! आजकल क्या करते हो?"

"गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफेसर हूँ।"

इससे उनके मुख पर विस्मय की झलक देख, मेरे मन में गुदगुदी होने लगी।

"क्या वेतन मिलता है?"

"अढ़ाई सौ रुपया। इस वर्ष मेरी 'कॉन्फर्मेशन' (नौकरी पक्की) होगी। फिर अगले वर्ष से उन्नति की आशा है।"

केशव की माता रुचिपूर्वक मेरी बातें सुन रही थी। वे अपनी घोड़ागाड़ी में आए थे, अतएव स्टेशन से बाहर निकल वे उसमें चढ़कर चले गए। मैं ताँगे में बैठ अपने घर की ओर चल पड़ा।

घर पर वीणा के विवाह की तैयारी की धूमधाम थी। दर्जी दिन-रात बैठे कपड़े तैयार कर रहे थे। इसके अतिरिक्त निमन्त्रण-पत्र छपवाकर बाँटने थे। बरातियों के भोजन का प्रबन्ध करना था और सुनार से भूषण बनवाने थे।

मैंने कॉलेज से छुट्टी नहीं ली। इस कारण प्राय: कार्य रात को ही होता था। घर पहुँचकर मैं आमन्त्रितों की सूची बनाने लगा। टूनी का नाम पहले सूची में नहीं था। उसका नाम मैंने सूची में लिख लिया, परन्तु केशव के माता-पिता का नाम मैं नहीं लिख सका।

वीणा ने पचास कार्ड अपनी सहेलियों के लिए माँग लिये थे और उनमें एक टूनी के लिए भी था।

इस प्रकार टूनी को भी निमंत्रण मिले। विवाह के दिन टूनी अपनी माता के साथ आई और एक सूट तथा भूषण का सेट केशव की ओर से लाई। टूनी ने स्वयं अपनी ओर से एक पार्कर पेन दिया।

मुझे टूनी के आने पर अचम्भा तो हुआ परन्तु उससे अधिक विस्मय उसकी माँ के आने पर हुआ। केशव की माँ मेरी माँ के पास बैठ बातें करने लगी और टूनी उठकर मेरे पास आकर कहने लगी, "जानते हैं मेरी माताजी आपकी माताजी से क्या बातें कर रही हैं?"

"नहीं! क्या कर रही हैं?"

"जाकर पता करिये न, और देखिये उत्तर बहुत विचारकर दीजिएगा।"

मेरे मन में उस दिन से ही, जिस दिन केशव के पिता ने स्टेशन पर मुझसे बातें की थीं, यह बात खटक रही थी कि वे मेरे और टूनी के सम्बन्ध के विषय में सोचने लगे हैं। आज टूनी के इस प्रकार कहने पर मुझे विश्वास हो गया कि मुझे कमाता देख केशव के पिता के विचारों में अन्तर आ गया है। टूनी की माँ मेरी माँ से इसी विषय पर बातें कर रही थी।

मैंने टूनी को कहा, "क्या मैंने पहले कभी अविचारपूर्ण बातें कही थीं?"

"हाँ! इसमें सन्देह ही क्या है? मैंने आपको सचेत कर दिया है।"

इतना कह वह वीणा के पास चली गई। मैं विवाह के कार्य में अधिक व्यस्त रहने के कारण इस विषय पर अधिक ध्यान न दे सका। यह विषय वीणा के विवाह के कई दिन पश्चात् मेरी माँ ने मेरे और पिताजी के सम्मुख रखा। तब मुझको टूनी का यह कहना कि उत्तर बहुत सोच-विचारकर देना, स्मरण हो आया। मेरे सामने प्रश्न यह था कि क्या मैं टूनी से विवाह की स्वीकृति दूँ? बचपन से उस समय तक मेरे मन में उसके लिए बहन की भावना रही थी और जब मैं उसके लिए अपनी पत्नी की भावना पर विचार करने लगता था, तो मेरे मन में भारी ग्लानि और बेचैनी अनुभव होने लगती थी। जब माँ ने कहा, "विनोद! केशव की माता तुम्हारे साथ मालती के विवाह के विषय में कह रही थीं।"

"पर माताजी! मैं तो उसको अपनी बहन ही समझता हूँ।"

"तुम्हारी माँ-जाई तो है नहीं। फिर लड़की बी० ए० की परीक्षा दे चुकी है, सुन्दर है, सुशील है, धनी माँ-बाप की बेटी है।"

"माँ! तुम ठीक कहती हो। परन्तु मैं इस विषय पर विचार करके ही उत्तर दूँगा।"

उस दिन बात समाप्त हो गई। एक सप्ताह के पश्चात् मिस्टर थापर मेरे पिताजी से मिलने आए और मेरे विवाह की चर्चा करने लगे। पिताजी ने स्पष्ट कह दिया कि मेरी माताजी ने इस विषय में मेरे से बातचीत की थी और मैंने अन्तिम निर्णय के लिए समय माँगा हुआ है।

केशव के पिता ने कहा, "तो निर्णय करने से पूर्व उसे आप बता दें कि मालती के पास चालीस हजार रुपया अपना है, जो उसकी बुआ ने उसको दिया है। इसके अतिरिक्त मैं अपनी आधी सम्पत्ति देने का विचार रखता हूँ। साथ ही मेरा सरकारी अफसरों से बहुत मेल-जोल है। मेरे इस मेल-जोल से उसका काफी हित हो सकता है।"

यह सब बात पिताजी ने रात के समय मुझे और माताजी को बताई। माँ तो एकदम तैयार हो गई थीं। मैं चुपचाप सुनता रहा।

मैं अब समझा कि थापर-परिवार क्यों बुआ का कहना मानता था। क्यों मिस्टर

थापर अपनी बहन के कहने पर मेरे पर प्रतिबन्ध लगाने लगा था ? मुझको आश्चर्य हो रहा था कि अब क्यों मुझपर इतना अनुग्रह हो रहा है।

मैंने पिताजी की बात सुनकर कहा, "आपका मुझको इस विषय में कोई आदेश है ?"

"देखो विनोद ! विवाह के विषय में मैं तुमको कोई आदेश देना नहीं चाहता। यह धन भारी प्रलोभन है और मैं तुमको धनी बनने से मना करने का अधिकार नहीं रखता। इस पर भी मेरी सम्मति यह है कि इस धन का विचार छोड़कर यदि मालती तुमको पसन्द है, तो स्वीकृति दे दो।"

मेरे मन का बोझ हल्का हुआ। मैंने कह दिया, "मालती को चौदह वर्षों से मैं बहन के रूप में देखता आ रहा हूँ। उससे विवाह करना मुझे रुचिकर नहीं है।"

"तब तो बेटा !" पिताजी ने कहा, "इस विषय पर विचार करने का प्रश्न ही नहीं उठता। हम हिन्दू हैं और जब किसी को बहन कह देते हैं तो फिर वह जन्म-भर के लिए बहन ही बनी रहती है। परन्तु थापर साहब को क्या उत्तर दूँ ?"

"माँ !" मैंने बात बदल दी, "कोई अच्छी-सी लड़की देख मेरा विवाह रचा दो। थापर साहब को उत्तर भी मिल जाएगा और मेरा विवाह भी हो जाएगा।"

मैं मन में विचार करता था कि गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफेसर बन जाने से कौन-सी खूबी आ गई है कि थापर साहब और उनकी बहन जो मेरा मुख तक देखना पसन्द नहीं करते थे, अब मुझ पर लट्टू हो अपनी लड़की देने को तैयार हैं। इस बात का रहस्य मुझको केशव के पत्र से विदित हुआ था।

केशव का पत्र आया, "प्रिय विनोद ! मेरी बुआ का मस्तिष्क सर्वथा विचित्र है। वह विस्मयजनक बातें करता रहा है। मैं जानता था कि टूनी तुमसे प्रेम करती है। वह प्रेम भाई-बहन के रूप में विकसित हो रहा था। एकाएक बुआ को सन्देह हुआ कि यह प्रेम अनुचित रूप धारण न कर ले। वह तुमसे घृणा करती थी और मालती को देख उसके मन में उसे किसी बहुत ही धनी लड़के से विवाह करने का विचार रखती थी। इस कारण घर में तुम्हारी निन्दा करनी आरम्भ कर दी और तुम्हारा घर में आना-जाना बन्द करा दिया। टूनी को यह विदित हो गया कि उसके माता-पिता को भय है कि कहीं वह तुमसे विवाह का आग्रह ही न कर बैठे। इस सन्देह की प्रतिक्रिया होनी आरम्भ हो गई। टूनी के मन में तुमको भावी पति के रूप में देखने और विचार करने की लालसा उत्पन्न हो गई। ऐसा प्रतीत होता है कि इसके पश्चात् वह तुम्हारे पति होने की योग्यता पर मनन करती है। माता-पिता और बुआ के निन्दा करने पर भी उसके मन में तुम एक उत्कृष्ट पति बनने के योग्य सिद्ध हुए हो।

"यदि तुम दोनों के मेल-मिलाप को स्वतन्त्र रूप से चलने दिया जाता तो मुझको विश्वास है कि तुम दोनों का प्रेम भाई-बहन-सा ही रहता। परन्तु बाधाओं

ने उसे एक विकट प्रेम के रूप में बदल दिया है और टूनी अब हठ कर रही है कि वह विवाह करेगी तो तुमसे ही करेगी, अन्यथा जीवन-भर कुंवारी रहेगी।

"टूनी ने मुझको लिखा है कि मैं तुमसे उसकी सिफारिश करूँ। उसके माता-पिता और उसकी बुआ अब उसके हठ से मान गए हैं। बुआ ने उसे गोद लिया था और उसके नाम बैंक में चालीस हजार रुपया जमा करा रखा है, जो उसको विवाह होने के समय अथवा उसके बालिग होने के समय मिलेगा। पिताजी भी बहुत कुछ देने वाले हैं।

"इन सब बातों पर विचार कर मैं टूनी की सिफारिश करने में संकोच नहीं करता। यदि तुम टूनी से विवाह कर लो तो मुझको भारी प्रसन्नता होगी।"

इस पत्र ने मुझे भारी असमंजस में डाल दिया। मैं केशव का आदर करता था। यह आदर की भावना उस दिन बनी थी, जिस दिन मास्टर से उसने पैन्सिल के विषय में झगड़ा किया था।

मुझको विश्वास-सा हो गया था कि वह मुझको कभी कोई ऐसा कार्य करने को नहीं कहेगा, जिसको वह स्वयं अनुचित मानता हो। इस पर भी परमात्मा की अस्तित्व की भाँति यह भी एक ऐसा विषय आ गया था, जिस पर उसकी युक्तियों की उपस्थिति में भी, मैं उससे सहमत नहीं हो सका था। उसकी सबसे प्रबल युक्ति थी, टूनी का हठ और उसकी सम्पत्ति। मेरी युक्ति कुछ भी नहीं थी। केवल मन की भावना थी। परन्तु उसकी सब युक्तियाँ मेरे मन की भावना को तोड़ नहीं सकीं।

मैंने उसको बहुत संक्षेप में उत्तर लिखा, "मैं तुम्हारी भाँति टूनी को अपनी बहन मानता हूँ। चौदह वर्षों से उसके प्रति मेरे मन में यही भावना रही है। इतने काल के मन के संस्कारों के पश्चात् मैं अपने मन को उसे पत्नी के रूप में ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं कर सका।

"क्या भाई बहन से विवाह कर सकता है? यदि नहीं तो क्यों? क्या इसमें भावना ही कारण नहीं है? तो वैसी ही भावना यहाँ नहीं है क्या?"

इस पत्र का उत्तर एक वाक्य में आया "विनोद! तुम ठीक कहते हो।"

इस काल मेरे माता-पिता ने मेरे लिए लड़की ढूँढ़ने में आकाश-पाताल एक कर रखा था। नित्य रात के समय वे बिरादरी के अन्दर और बाहर की लड़कियों के विषय में विवेचना करते थे। कइयों के फोटो लाए गए। मैंने कई बार माताजी को पिताजी से यह कहने सुना था, "हमको मालती से अधिक सुन्दर लड़की ढूँढ़नी होगी। नहीं तो हेठी हो जाएगी और विनोद हँसी का पात्र बन जाएगा।"

अन्त में दो लड़कियाँ ऐसी ढूँढ़ी गईं, जिनको वे अपने विचार से मालती से अधिक सुन्दर, पढ़ी-लिखी और भले परिवार की समझते थे। मुझको उनके फोट दिखाए गए। मैंने माताजी से कहा कि उनसे मिलकर वे स्वयं निर्णय कर लें और

अन्त में निर्वाचन हो गया।

मैंने अपनी होने वाली पत्नी को नहीं देखा। इस कारण श्रीमतीजी के पिता ने पूछा कि क्या मैं लड़की से सगाई के पूर्व मिलना चाहता हूँ ? मेरा उत्तर था कि लड़की से अधिक मैं उसके माँ-बाप, भाई आदि से मिलना चाहूँगा। फल पेड़ से पहचाना जाता है। हाँ, यदि लड़की मुझे देखना चाहे तो वे बताएँ कि मैं उसकी कहाँ प्रतीक्षा करूँ।

इसका परिणाम यह हुआ कि बिना एक-दूसरे को देखे सगाई हो गई। सगाई के अवसर पर मैंने माताजी की ओर से टूनी को निमन्त्रण पत्र भिजवा दिया। वह सगाई के अवसर पर तो नहीं आई परन्तु उसके दूसरे दिन मुझे कॉलेज के बाहर ऐसे मिली जैसे किसी योजनानुसार नहीं अपितु अनायास ही भेंट हो गई हो। मैं क्लास समाप्त कर घर जा रहा था कि वह गोलबाग की ओर पैदल आती दिखाई दी। नमस्कार होने के पश्चात् उसने कहा, "विनोद जी ! मैं कल बधाई देने नहीं आ सकी। अब आप यहाँ ही मिल गए हैं तो बधाई स्वीकार कर लीजिए न।"

"निमन्त्रण तो माताजी ने भेजा था। बधाई भी उनको ही देनी चाहिए। चलो न घर। वे कल से तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही हैं।"

"यहाँ से आपके द्वारा बधाई नहीं भेजी जा सकती क्या ?"

"ऊँ-हूँ। स्वयं चलकर देनी हो तो दे आओ। साथ ही उनको तुमसे एक काम भी है। लड़की के पिता ने वीणा को और तुमको एक-एक जोड़ी कपड़े दिये हैं।"

"क्यों ?"

"हमने माँगे नहीं थे। परन्तु जब उन्होंने दिये तो न करने से उनका अपमान हो जाता। उन्होंने माताजी से पूछा था कि मेरी कितनी बहनें हैं। माताजी ने कह दिया कि दो हैं। इस कारण उन्होंने दो जोड़े और प्रति जोड़े के साथ एक सौ रुपया दिया है।"

इस वक्तव्य से तो टूनी का मुख मलिन हो गया और वह गम्भीर विचार में पड़ गई। जब हम नीला गुम्बद के चौक के समीप पहुँचे तो वह ठहर गई। मैंने कहा, "टूनी ! आओ न।"

वह बोली, "आपकी बहन बनकर आपके ससुराल वालों की भेंट स्वीकार करने का अभिप्राय तो आप समझते हैं। मैं अपने मन को इस अवस्था के लिए तैयार नहीं कर सकी।"

"टूनी बहन ! भाई-बहन का सम्बन्ध अधिक मधुर और उतरदायित्वपूर्ण है। इनको निभाने के लिए साहस बाँधकर चलो। परमात्मा हमारी सहायता करेगा।"

टूनी अभी भी चौक के एक कोने में खड़ी विचार कर रही थी। मैंने उसके मुख पर देखा। उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा आई थीं। मैं उसको बाँह से पकड़, उसे खींच अपने घर की ओर ले गया। वह इस समय शक्तिहीन-सी प्रतीत होती

थी। मेरे साथ एक यन्त्र की भाँति चली आ रही थी।

उसके आँसू गालों पर लुढ़क आए थे। उसने अपना रूमाल निकाल आँसू पोंछ लिये। मैं देख रहा था कि वह क्या कर रही है परन्तु मैं अपने को ऐसा प्रकट कर रहा था मानो मैंने उसके आँसू देखे ही नहीं। मैं सामने को देखने का बहाना करता हुआ चल रहा था।

मकान पर पहुँचे तो माँ ने उसे देखकर छाती से लगा लिया। इससे तो टूनी खुलकर रोने लगी। माँ ने उसे अपने समीप ही सोफे पर बिठा लिया। उसके सिर पर हाथ फेर प्यार देने लगी। उसका माथा चूमा और कहा, "मालती बेटी! मेरे लिए तो तुम प्रत्येक रूप में लड़की ही हो। पतोहू क्या और बेटी क्या! मुझको कोई भेद प्रतीत नहीं हो रहा। हाँ यह तुम्हारे और विनोद के परस्पर निर्णय करने की बात थी। जो कुछ तुम दोनों ने निर्णय किया है, उसमें मेरे और तुम्हारे बीच के सम्बन्ध में अन्तर नहीं पड़ता।"

जब माँ उसे समीप बैठाकर प्यार देने लगी और वह फूट-फूटकर रोती जा रही थी तो मैं वहाँ से टल गया। मैं अपने कमरे में जाकर टूनी से भावी व्यवहार के सम्बन्ध के विषय में विचार करने लगा। वीणा, जो सगाई के कारण ससुराल से वहाँ आई हुई थी, मेरे लिए चाय ले आई। मैंने उसे मालती को भी चाय पिलाने के लिए कहा। वहाँ भी वह चाय और मिठाई ले गई।

एक घण्टा पश्चात् माताजी, टूनी और साथ में वीणा, तीनों आईं। आकर मेरे कमरे में बैठ गईं। इधर-उधर की बातें होनी लगीं। पश्चात् माताजी के संकेत पर वीणा गई और उसके लिए कपड़ों का जोड़ा और एक सौ एक रुपया ले आई। इस पर माताजी ने अढ़ाई सौ रुपया अपने पास से डालकर मालती की झोली में रख दिया। मालती ने ना नहीं की। प्रत्युत सब कुछ वीणा से एक कपड़ा माँग उसमें बाँध लिया। कुछ देर तक वह और बैठी रही और पश्चात् मैं उसको छोड़ने जाने के लिए चल पड़ा।

मार्ग में मैंने उससे कहा, "टूनी! मैं तुम्हारा बहुत ही कृतज्ञ हूँ कि तुमने यह सब स्वीकार कर लिया है।" उसने उत्तर नहीं दिया और चलती गई।

अगले दिन मैंने अपनी सगाई का समाचार केशव को लिख भेजा।

इसके पश्चात् टूनी का आना-जाना हमारे घर आरम्भ हो गया और वह घर में लड़की के आसन पर आसीन हो गई। वह मेरे विवाह की तैयारी में हाथ बँटाने लगी। एक दिन वह लड़की के कपड़े का नाप लेने के लिए माताजी के साथ मेरे ससुराल गई। उस दिन जब मैं घर लौटा तो वह बहुत प्रसन्नवदन मुझसे बोली, "विनोद जी! आपकी विनोदनी को देख आई हूँ।"

"सच?"

"हाँ! बहुत सुन्दर है।"

"हँसी तो नहीं करती ?"

"तो आपने देखी नहीं ?"

"नहीं ! आखिर एक दिन तो देखूँगा ही ।"

"झूठ ! तुम इतने पढ़े-लिखे होने पर भी बिना देखे सगाई के लिए कैसे राजी हो गए ?"

"माताजी ने कहा था कि वह सुन्दर है, सुशील है, और भले घर की है । मैं मान गया । देखने की क्या आवश्यकता थी ?"

"तो बिना देखे ही विवाह हो रहा है ?"

"माताजी ने देख लिया है । मैं समझता हूँ कि इतना पर्याप्त है ।"

"माताजी बड़ी अवश्य हैं । पर आप अधिक पढ़े-लिखे हैं । इस कारण आपकी पसन्द और उनकी पसन्द में अन्तर हो सकता है ।"

"तो तुमको वह पसन्द नहीं आई ?"

"मैं तो माताजी से भी छोटी हूँ और कम समझ हूँ ।"

"पर तुम पढ़ी-लिखी तो लगभग मेरे जितना ही हो ?"

"खाक पढ़ी हूँ । मैं अब बी० ए० की परीक्षा देने जा रही हूँ ।"

"बहुत ठीक है । पर यदि तुम वकालत पढ़ लेतीं तो ठीक था । तुम बहस बहुत अच्छा कर लेती हो ।"

"पर बहस में जीत तो नहीं सकती । करना जानती तो···।"

वह कहती-कहती रुक गई । इस पर मैंने कह दिया, "तब तुम हाईकोर्ट का जज बन गई होतीं ।"

अभी विवाह में पन्द्रह दिन रहते थे कि केशव भारत वापस आ धमका । उसको विलायत गए अभी लगभग एक वर्ष ही हुआ था । केशव के माता-पिता और अन्य सब मित्र-वर्ग, उसके इस प्रकार आ जाने से अचम्भा कर रहे थे ।

टूनी एम० ए० में दाखिल हो गई थी । इस कारण वह कभी-कभी कॉलेज से लौटते हुए माताजी से मिलने आ जाया करती थी । एक दिन उसने हमारे घर से जाते समय मुझको अपने कमरे में देख दरवाजे के पास आकर कहा, "भैया आपसे मिले हैं ?"

"कौन भैया ?"

"केशव भैया ।"

मैं चौंका और विस्मय में उसका मुख देखने लगा ।

"वे कल से यहाँ आए हुए हैं । लैबोरेटरी में दो मास का अवकाश था । वे इस काल में यहीं भारत में रहेंगे ।"

"मुझको विदित नहीं था । न ही वह मुझसे अभी तक मिला है ।"

"वे आपसे मिलेंगे । शायद लम्बी यात्रा की थकावट दूर कर रहे हैं ।"

"अच्छा उनसे कह देना कि कल मैं लैबोरेटरी में ग्यारह से तीन बजे तक रहूँगा। और पश्चात् घर पर मिलूँगा।"

टूनी गई तो मैं केशव के इस प्रकार लम्बी यात्रा पर आ जाने पर आश्चर्य करता रहा। अगले दिन वह मिलने आया। मैं उसको अपने कमरे में पृथक् ले जाकर पूछने लगा, "केवल छुट्टियाँ व्यतीत करने के लिए बारह हजार मील की यात्रा आश्चर्य-कारक ही तो कही जा सकती है।"

"यात्रा मुख्य लक्ष्य था। पी० एण्ड को० की 'लगजरी बोट' चलने लगी है। उसमें यात्रा आनन्दोत्सव के समान है। इसके अतिरिक्त यात्रा का लक्ष्य टूनी भी है। पिताजी ने लिखा था कि मैं आकर टूनी के विवाह का प्रबन्ध कर दूँ। तुम टूनी से विवाह नहीं मानते थे और टूनी किसी और से नहीं मानती। यहाँ आकर विदित हुआ कि तुम्हारी सगाई भी हो चुकी है और अब तो विवाह भी होने वाला है।"

"मैंने तो तुमको लिख दिया था कि टूनी के लिए मेरे मन में जो भावना बन चुकी है, वह इस जन्म में शायद नहीं मिट सकेगी।"

"टूनी के लिए एक लड़का और देखा गया है। वह आई० सी० एस० है। जिला जेहलम में डिप्टी-कमिश्नर लगा हुआ है। अभी युवा ही है। उसकी फोटो आई थी। टूनी ने उसको भी अस्वीकार कर दिया है।"

"मेरे विचार में, मेरे विषय में उसके मन को सन्तोष किए, अभी बहुत कम काल व्यतीत हुआ है। कुछ समय और व्यतीत हो जाने पर वह मान जाएगी।"

"पर अच्छे वर बार-बार नहीं मिलते।"

"वैसे बढ़िया न सही पर मुझसे अच्छा तो मिल जाएगा।"

"तुम उसकी दृष्टि में संसार में सबसे बढ़िया युवक हो।"

"यह विस्मय करने की बात तो है ही। मैं संसार के बिल्कुल साधारण व्यक्तियों में अपने को मानता हूँ।"

इस पर केशव ने मेरे मुख पर देखते हुए कहा, "इस पर भी कुछ तो बात है,जा मुझको तुमसे बाँध सकी है और जो मैंने स्कूल में जाते ही तुम में देखी थी।"

"व्यर्थ की बात मत करो केशव ! ऐसी बातें तुम लोगों ने कह-कहकर न जाने टूनी के मन में क्या प्रभाव पैदा कर दिया है कि वह सन्तुलित व्यवहार खो बैठी है।"

"मेरे आने का कारण एक और भी है।"

"वह क्या ?"

"मैं भी विवाह करने का विचार कर रहा हूँ। मुझको डी० एस-सी० की उपाधि मिलते ही मैं विवाह करना चाहूँगा।"

"क्या विलायत में ही कहीं मन का काँटा अटका आए हो ?"

"हाँ। वह कॉलेज लैबोरेटरी में ही काम करती है। वह तो अपना थीसिज तैयार कर भेज चुकी है।"

"तो यह बात है! उसको भी साथ लाए हो?"

"नहीं, वह आने के लिए तैयार नहीं हुई। मैं उसकी फोटो माताजी को दिखाने के लिए लाया हूँ।"

"माताजी ने पसन्द की है?"

"तसवीर तो पसन्द कर ली है, परन्तु कहती हैं कि बिना देखे राय नहीं दे सकतीं।"

'तो माताजी को साथ ले जाओ।"

"वे पिताजी के साथ बाद में आएँगी।"

"मैं समझता हूँ कि टूनी को भी साथ ले जाओ तो ठीक रहेगा। उसका मानसिक विकास होगा तो शेष सब बातें स्वाभाविक रूप में होने लगेंगी।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो। पिताजी से कहूँगा। इस पर भी मेरा विचार है कि आज सायंकाल तुम मेरे साथ मिलकर इस आई० सी० एस० के साथ विवाह के लिए उसे तैयार करने का प्रयत्न करो।"

"अच्छी बात है, कहाँ मिलेंगे उससे?"

"मैं उसको लेकर 'ऐलफिन्स्टन' में चाय के लिए पहुँच जाऊँगा। तुम भी वहाँ आ जाना। पश्चात् वहाँ से किसी एकान्त स्थान पर बैठकर बातचीत करेंगे।"

मैं निश्चित समय पर वहाँ पहुँच गया। केशव और टूनी बाद में पहुँचे। वे मेरे पास आकर बैठ गए। होटल में तो केशव विलायत की बातें बताता रहा। हम दोनों उसकी बातें सुन मन में उससे ईर्ष्या करते रहे। उसने कहा, "विनोद! अब की गर्मियों की छुट्टियों में तुम भाभी को लेकर विलायत चले जाओ।"

"खूब! पहले तो विवाह पर दिवाला पिट जाएगा और फिर विलायत में हनीमून पर पाँच-छः हजार तो साधारण-सी बात है।"

"पिताजी ने बहुत कमाया प्रतीत होता है। तुम्हारी सगाई पर टूनी को अढ़ाई सौ मिला है।"

हमको सब मिलाकर तीन हजार रुपया मिला था। उसमें टूनी का इतना ही भाग बना था।"

"अब विवाह पर कितना दोगे?" केशव ने मुस्कराते हुए पूछा।

"जितना वीणा और टूनी के भाग्य में लिखा होगा। मैं तथा अन्य देने वाले कौन हैं। लेना तो अपने-अपने भाग्य से होता है।"

"दोस्त तुम भी बुद्धू के बुद्धू ही रहे। भाग्य क्या होता है! क्या यह अपने किये का फल नहीं?"

"होता तो कर्मों का फल ही है। पूर्वजन्मों के कर्मों का फल ही हमारा भाग्य

और इस जन्म के कर्मों के फल को पुरुषार्थ का परिणाम माना जाता है।"

"पूर्वजन्म किसी ने देखा है क्या ?"

"कार्य से कारण जाना जाता है। पुरुषार्थ करने पर भी जब कोई फल नहीं मिलता तो वह अज्ञात कर्मों के कारण ही माना जाता है। ये अज्ञात कर्म पूर्वजन्म के ही तो कर्म हैं।"

"नहीं भाई! प्रत्येक कर्म रिऐक्शन (प्रतिक्रिया) उत्पन्न करता है। यह प्रतिक्रिया वातावरण और काल के अधीन रहती है। जब ये अनुकूल होते हैं तो पुरुषार्थ का फल प्रचुर मात्रा में मिलता है और जब वातावरण इत्यादि प्रतिकूल होते हैं तो पुरुषार्थ का फल हीन अथवा नकारात्मक हो जाता है।"

मैंने मुस्कराते हुए कहा, "यही तो मैं कह रहा हूँ कि वातावरण परिस्थिति और काल भाग्य से अनुकूल और प्रतिकूल होते हैं।"

"वाह! खूब समझे! वातावरण इत्यादि तो निर्माण किए जाते हैं। जो निर्माण करने की योग्यता और बुद्धि रखता है, उसका पुरुषार्थ फल-युक्त होता है।"

"परन्तु मैं पूछता हूँ कि योग्यता और बुद्धि जो वातावरणादि को निर्माण करती है, उसी में भेद क्यों होता है ?"

"जन्म के समय माता-पिता की शारीरिक, मानसिक तथा आर्थिक परिस्थिति पर बुद्धि और योग्यता का निर्माण होता है।"

"और माता-पिता की इन अवस्थाओं में अन्तर क्यों पड़ जाता है ?"

"क्यों, क्यों, क्यों का तो कोई उत्तर नहीं।" उसने खीजते हुए कहा।

"अर्थात् तुम्हारी युक्ति से निकाले गये परिणाम सिद्ध नहीं किए जा सकते। वास्तव में अनेकानेक भिन्न-भिन्न प्रकार के परिणाम आत्मा के भिन्न-भिन्न प्रकार के कर्मों के फल ही हैं। ज्ञात कर्मों को पुरुषार्थ कहते हैं और अज्ञात कर्मों को, जिनको हम इस जन्म के कर्मों के साथ जोड़ नहीं सकते, भाग्य कहते हैं। ये पूर्व जन्म के किए कर्म ही तो होंगे।"

"मैं इनको ऐसा नहीं मानता। मैं मनुष्य के मन को इस योग्य समझता हूँ कि वह प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति को, अपने अनुकूल ढालने में समर्थ है। भाग्य आदि कुछ नहीं। यह अपनी भूलों को न स्वीकार कर किसी अज्ञात कारण पर दोष ढालने के समान है।"

"विनोद जी!" टूनी ने बीच में बोलते हुए कहा, "आप केशव भैया को उनकी भूल स्वीकार नहीं करा सकते। ये अपने पिता के पुत्र हैं। जैसे वे अपने हठ पर दृढ़ बने हुए हैं, वैसे ही उनके सुपुत्र हैं।"

केशव को स्मरण हो आया कि हम तो टूनी को समझाने आए थे और आपस में ही विवाद छेड़ बैठे हैं। मैंने तो इस विवाद में टूनी को केशव का पक्ष लेने के लिए प्रोत्साहन देने का प्रयत्न किया था, परन्तु वह उलटा पक्ष ले बैठी। उसने

कहा, "देखिए मैं और भैया दोनों एक ही माता-पिता के पुत्र हैं परन्तु हम दोनों के स्वभाव भिन्न-भिन्न हैं। हम दोनों एक ही घर में रहते हैं, परन्तु विचार एक समान नहीं बने। मैं तो इसको अपने पूर्वजन्म के कारण ही समझती हूँ। पाप मैंने किए थे और दोष देने लगूँ अपने माता-पिता को कि उनके मन का सन्तुलन मेरे जन्म के समय ठीक नहीं था। यह कहाँ की युक्ति है ?"

"तो तुम भी पूर्वजन्मों के कर्मों पर विश्वास करने लगी हो ?" केशव ने पूछा।

"हाँ ! आप-बीती को मनन कर मैं इसी परिणाम पर पहुँची हूँ। यही कारण है कि जब बुआ ने अपने व्यवहार से मेरा जीवन बरबाद कर दिया तो मैं उसको गालियाँ देने के स्थान अपने आपको, अपने भाग्य को दोषी बताकर सन्तोष कर लेती हूँ।"

"यही तो मैं कहता हूँ। यदि तुम भाग्य को दोष न दे अपने पुरुषार्थ में दोष मानतीं तो इसको बदलने का प्रयत्न करतीं। भाग्य को दोष देकर सन्तोष कर बैठ जाने से ही तो जीवन बरबाद हो रहा है।"

"क्या पुरुषार्थ करती, जो मैंने नहीं किया ?"

इसको अनुकूल अवसर जान केशव ने धीरे से कहा, "यदि विनोद नहीं माना तो क्या संसार लड़कों से शून्य हो गया है ? ढूँढ़ने का यत्न करो और विश्वास जानो कि विनोद से भी श्रेष्ठ लड़का मिल जाएगा।"

टूनी हँस पड़ी। उसने चाय की चुस्की लगाते हुए कहा, "धनवान निर्धनों को ऐसी ही सीखें दिया करते हैं।"

"पर तुम तो मुझसे अधिक धन की स्वामिनी हो। बुआ ने अपनी सम्पत्ति का विशेष भाग और पिताजी ने अपनी आधी सम्पत्ति देने की कही है। अब तो तुम विनोद के पिता की दूसरी पुत्री हो। उनसे भी कुछ-न-कुछ मिलेगा ही।"

"हाँ ! रुपये-पैसे मेरे पास तुमसे अधिक हैं। परन्तु भाग्य से तुम अधिक सम्पन्न हो। विनोद जी ! आपने सुना नहीं कि भैया अति सुन्दरी से मन-वांछित विवाह कर रहे हैं।"

"सुना है। मैं तो यह मानता हूँ कि विवाह पुरुषार्थ से नहीं परन्तु भाग्य से होते हैं।"

"तो तुम यह समझते हो कि मेरा विवाह नहीं होगा ?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैंने तो केवल यह कहा है कि विवाह अज्ञात कर्मों का परिणाम है। देखो, तुम हो भारत के रहने वाले। वह इंग्लैंड की। कैसा संयोग हुआ ! यह क्या किसी मनुष्य के करने से हो सकता है ?"

"दोस्त ! बहुत कोर्टशिप करनी पड़ी है।"

"किसी अन्य से कर देखो। कोर्टशिप भी जहाँ सफल होनी होती है वहीं होती है।"

"मेरी तो सफल हो गई है। मैं इसको अपने पुरुषार्थ का फल ही मानता हूँ।"

"इसी से तो मैं आपको अपने से अधिक भाग्य का स्वामी समझती हूँ।" टूनी ने फिर वार्तालाप में भाग लेते हुए कहा, "पुरुषार्थ मैंने कम नहीं किया। हार कर अब मैं भगवान् से प्रार्थना करने लगी हूँ कि मेरे पुरुषार्थ इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में फलीभूत करे।"

"प्रार्थना के स्थान यत्न करो। सफलता मिलेगी। अच्छा बताओ एन० सी० मेहता, जेहलम के डी० सी० में क्या दोष है?"

"इस विषय पर तो भली-भाँति बहस हो चुकी है। अब इसे फिर मथने की आवश्यकता नहीं।"

हमारा विचार था कि टूनी से बातचीत लॉरेन्स गार्डन में किसी एकान्त स्थान पर बैठकर करेंगे। परन्तु बात तो होटल में ही आरम्भ हो गई। केशव ने कहा, "टूनी! मैं इस विषय पर तुमसे बात करना चाहता हूँ। यहाँ होटल में नहीं। चाय समाप्त कर लें और फिर किसी एकान्त स्थान पर बैठकर आज अन्तिम निर्णय पर पहुँच जाएँगे।"

"मैं बात करने के लिए सदैव तैयार हूँ। क्या आप विनोद जी को भी साथ ले चलना चाहते हैं?"

"यदि तुमको आपत्ति न हो तो मैं समझता हूँ कि उनके साथ रहने से कोई हानि नहीं।"

"मुझको भला क्या आपत्ति हो सकती है! मैंने उनसे अपने मन की कोई बात छुपाकर नहीं रखी है।"

हम चाय समाप्त कर होटल का बिल देकर लॉरेन्स गार्डन के एक वीरान कोने में जा पहुँचे। आज पूर्णिमा थी। इस कारण उस वीरान कोने में बैठने पर भी एक-दूसरे के मुख पर बदलते भावों को देख सकते थे।

पहले तो टूनी और केशव में वाग्युद्ध चलता रहा। युक्तियाँ और वितंडावाद होता रहा। दोनों एक बात से आरम्भ करते थे और संसार की सब बातों का उल्लेख कर एक घंटा बाद पुनः उसी बात पर आ जाते और फिर एक-दूसरे का मुख देखने लगते। रात के दस बज गए थे। अन्त में केशव ने मेरी ओर देखकर कहा, "विनोद! तुम भी कुछ कहो न।"

"तुमने मुझसे कुछ पूछा नहीं। मैं कैसे और क्या कहूँ?"

"आप यह बताइये।" टूनी ने कहा, "आप मुझसे विवाह न करके एक अपरिचित लड़की से विवाह क्यों स्वीकार कर रहे हैं?"

मैं हँस पड़ा। मैंने कहा, "तो तुमको अभी तक यह पता नहीं लगा?"

"मुझको तो ज्ञान है। आपने कई बार मुझको बताया है। मैं चाहती हूँ कि

आप भैया को भी बता दें। तब बात स्पष्ट हो जाएगी ?"

"क्यों केशव ! मैंने तुमको बताया नहीं है !"

"जो कुछ बताया है, वह युक्तिहीन, शुद्ध भावुकता ही है। तुम कहते हो कि टूनी को तुमने बहन कहकर पुकारा है। बस, अब उससे विवाह नहीं कर सकते। यह कोरी भावुकता है। इसके कुछ अर्थ नहीं।"

"मैं पूछता हूँ कि एक भाई बहन से विवाह क्यों नहीं करता ?"

"यह समाज की कृत्रिम भावना है।"

"कृत्रिम हो अथवा स्वाभाविक। यह है भावुकता। बहन-भाई बचपन से साथ-साथ रहते हैं और समाज की इस भावना के कारण वे मन में सदैव यह समझते हैं कि उनका विवाह नहीं होना चाहिए। बार-बार इसको ऐसा समझने से सुषुप्त मन पर यह अंकित हो जाता है कि यह नहीं होना चाहिए और फिर यदि ऐसा हो तो मन में ग्लानि उत्पन्न होना स्वाभाविक है।"

"यह अस्वाभाविक भावना है। इसका नाश कर देना चाहिए।"

"पर यह मेरे और तुम्हारे करने की बात नहीं। केशव ! सामाजिक व्यवधान समाज-शास्त्र के विद्वान् ही बनाते-बिगाड़ते हैं। जो कुछ भी समाज स्वीकार कर लेगा, मेरे जैसा साधारण व्यक्ति उसे स्वीकार करेगा।"

"क्यों न हम इस प्रथा को तोड़ डालें ?"

"हाँ, यदि तोड़ने में तुमको कुछ लाभ प्रतीत होता हो तो तुम इसे तोड़ बहन से विवाह कर लो और फिर समाज से झगड़ाकर अपनी बात को प्रतिष्ठित करवा सकते हो। मुझको तो इसमें लाभ प्रतीत नहीं होता।"

मेरे इस प्रकार कहने से केशव गम्भीर विचार में लीन हो गया। उसको चुनौती दी गई थी और वह इस पर विचार करने लग गया था। वह इसको असम्भव समझता था। परन्तु इसमें कुछ अन्य कारण मान, उसने कहा, "विनोद ! न तो मैं टूनी से विवाह करना चाहता हूँ और न ही टूनी मेरे से। हम दोनों के न तो स्वभाव मिलते हैं न विचार। तुमसे उसके विचार मिलते हैं और वह तुमसे प्रेम करती है। तुम भी प्रेम करते हो परन्तु इस कृत्रिम भावना के अधीन हो, जहाँ तुम अपने मन को मार रहे हो, वहाँ टूनी का जीवन बरबाद कर रहे हो।"

"देखो केशव ! मैंने इस विषय पर महीनों विचार किया है और अन्त में इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि न तो मैं टूनी से प्रेम करता हूँ और न ही उससे विवाह का इच्छुक हूँ। मैं उससे विवाह न करके अपने मन पर अत्याचार नहीं कर रहा। इसको मैं अपने संस्कारों का स्वाभाविक परिणाम समझता हूँ। रही टूनी से विचार-समता। यह तो है ही। तभी तो वह मुझको गाली नहीं देती ! न ही मुझ पर दोष लगाती है। हम इस विषय पर शान्ति और स्थिरचित्त से बातचीत कर एक निर्णय पर पहुँच गए हैं।"

"किस निर्णय पर पहुँच गए हो ?"

उत्तर टूनी ने दिया, "यही कि मैं इनसे प्रेम कर सकती हूँ। प्रेम 'यूनिलेटरल' (एकपक्षीय) हो सकता है और यह मेरा अधिकार है। विवाह दोनों पक्षों की रुचि पर निर्भर है। यह 'बाई-लेटरल' (द्विपक्षीय) कृत्य है। जब इनकी रुचि नहीं तो विवाह किस प्रकार हो सकता है ?"

"तो प्रेम विवाह से भिन्न वस्तु है न ?"

"ऐसी ही धारणा है।"

"बहुत भयावह धारणा है।"

"मुझको इससे भय नहीं लगता। सम्भव है कि मेरा व्यवहार कुछ कष्टप्रद हो। अभी तो कुछ ऐसा प्रतीत नहीं होता।"

"क्यों विनोद ! क्या यह किसी दूसरे से विवाह कर तुमसे प्रेम नहीं कर सकती ?"

"यह सम्भव नहीं है।" मैंने कहा, "प्रेम तथा विवाह भिन्न-भिन्न बातें हैं। विवाहित जीवन के अपने उत्तरदायित्व हैं और प्रेम के अपने। यदि कोई समझदार पति मिल जाए तो मैं इसको ठीक ही समझता हूँ।"

टूनी ने कहा, "इस विषय पर विचार कर चुकी हूँ। अभी तो मुझको विवाह की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। जब प्रतीत होगी और उस समय विनोद जी के कथनानुसार कोई योग्य साथी मिल गया, तो विवाह भी कर सकती हूँ।

"प्रेम के नाते मैं विनोद जी की सेवा तथा इनको सहयोग, जितना और जिस प्रकार लेना चाहें, दूँगी और विवाह के कारण, जब यह होगा, तो जो पत्नी के कर्तव्य हैं, मैं उनके पालन में भी तत्पर रहूँगी।"

केशव खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने अपने मन की बात कही, "मैं समझता हूँ कि विनोद अपनी आदर्शवादिता के कारण मिथ्या मार्ग का अवलम्बन कर रहा और अपनी टूनी पर सम्मोहिनी प्रभाव के कारण उसको भी मिथ्या मार्ग का अवलम्बन करा रहा है। दोनों इस भूल को कदाचित् तब समझेंगे, जब अपने जीवन को बरबाद कर चुके होंगे।"

"मैं ऐसा नहीं समझती।"

इस पर मैंने कहा, "केशव ! एक बात करो। टूनी को मुझसे दूर ले जाओ, जिससे ये मेरे सम्मोहिनी प्रभाव से बाहर रहकर स्वतन्त्रता से अपना मार्ग ढूँढ़ सके। इसको अपने साथ इंग्लैंड ले जाओ और सम्भव है कि इसको रुचि-अनुकूल कोई पति मिल जाए।"

टूनी, जब केशव से विलायत और पेरिस की बातें सुन रही थी तो मन में यही इच्छा कर रही थी, जिसका सुझाव मैंने दिया था। इससे केशव की सम्मति, इस सुझाव पर, सुनने के लिए चुप हो उसका मुख देखने लगी। केशव ने कुछ

विचार कर कहा, "मैं तो दिसम्बर की पहली तारीख को लाहौर से चला जाऊँगा। चार तारीख को जहाज छूटने वाला है। इसका पास-पोर्ट इतनी जल्दी बन सकेगा, कहना कठिन है।"

"पिताजी का इतना परिचय है तो क्यों नहीं बनेगा?" टूनी से कहा, "यदि नहीं हो सकता, तब भी इतना तो हो ही सकता है कि मैं एक मास बाद वहाँ पहुँच जाऊँ।"

"वहाँ जाकर करोगी क्या?"

"देखो, यदि कहीं स्थान मिल गया तो पढ़ूँगी। मैं तो अपने मन से विनोद जी का सम्मोहिनी प्रभाव मिटाने जा रही हूँ न। शायद वहाँ कोई ऐसा करने में सहायक मिल जाए।"

हमारा विचार-विनिमय समाप्त हुआ और हम लॉरेन्स गार्डन से घर को लौट आए।

अगले दिन टूनी आई तो उसने आते ही कहा, "विनोदजी! मैं आपका बहुत धन्यवाद करती हूँ। आपने एक ओर तो मुझे उस आई० सी० एस० के चंगुल से बचा दिया और दूसरे मुझे योरोप घूमने का अवसर दिला दिया है।"

"तो पिताजी मान गए हैं?"

"हाँ। आज मैं पास-पोर्ट के लिए फार्म भरकर दे आई हूँ और पिताजी ने सब सम्बन्धित अधिकारियों को टेलीफोन से पास-पोर्ट को समय पर तैयार करवा देने के लिए कह दिया है। उनको विश्वास है कि एक सप्ताह में सब कुछ हो जाएगा। कल मैं डॉक्टरी परीक्षा के लिए जा रही हूँ।"

"टूनी! मैं इस समाचार से बहुत प्रसन्न हूँ।"

इसके पश्चात् जीवन स्वाभाविक रूप में चलने लगा। टूनी विलायत जाने की तैयारी में लग गई और मैं अपने विवाह की। बीच-बीच में केशव मिलता रहा। वह सदैव अपनी होने वाली पत्नी की प्रशंसा किया करता था। उसका नाम मर्फी था। उसका चित्र भी केशव ने दिखाया। अच्छी-खासी सुन्दर प्रतीत होती थी। हाँ, उसकी आँखों से कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि वे शरारत से भरी हुई हैं। मैं उस पर किसी प्रकार की टिप्पणी नहीं करना चाहता था। मुझको भय था कि केशव के स्वप्न भंग न हो जाएँ।

मैंने तस्वीर देखते हुए पूछा, "विवाह कब होगा?"

"मेरा थीसिज जून-जुलाई में समाप्त हो जाएगा और सितम्बर में यूनिवर्सिटी को 'सबमिट' कर दूँगा। अक्तूबर अथवा नवम्बर में परीक्षक बुलाएँगे और मौखिक परीक्षा लेंगे। मुझको पूर्ण आशा है कि वे मुझको डी० एस-सी० की उपाधि दे देंगे। उसके तुरन्त पीछे हमारा विवाह होगा। इस प्रकार एक वर्ष तक लग सकता है।"

मेरा विवाह हुआ। बरात में केशव और टूनी और उसके पिता भी सम्मिलित हुए। टूनी का कहना ठीक था कि मेरी बीवी राधा उतनी सुन्दर नहीं थी, जितनी चित्र में प्रतीत होती थी। कम-से-कम टूनी के साथ तो उसकी कोई तुलना नहीं थी। स्वभाव की बात तो भविष्य में जानने की ही हो सकती थी।

राधा मैट्रिक तक पढ़ी थी। यह जानकर कि मैं एम० एस-सी० हूँ, वह प्रारम्भ से ही मुझसे डरी तथा सहमी हुई प्रतीत होती थी। यह मुझे उसके पहले दिन के व्यवहार से ही समझ में आ गया था। मैं उसका वह भय उसके मन से निकाल देना चाहता था। उसको पहले निर्भीक बनाकर, उसके गुण तथा दोषों का ज्ञान प्राप्त करना चाहता था। उसके जानने के पश्चात् मैं उसको अपनी रुचि के अनुसार ढालना चाहता था।

राधा के साथ जब पहली भेंट हुई, तो मैंने पूछा, "राधा! तुमने मुझको देखा है?"

उसने धीरे से कहा, "देखने का यत्न कर रही हूँ। आपकी ओर देखने से मुझे डर लगता है।"

"डर?" मैंने विस्मय प्रकट कर पूछा, "क्या मैं कोई हिंसक जन्तु दिखाई पड़ता हूँ? शेर हूँ, बाघ हूँ अथवा रीछ हूँ?"

"नहीं जी!" उसने अपने कथन को संशोधित करते हुए कहा, "मैं आपकी रूप-रेखा के विषय में नहीं कह रही। मैं आपको अधिक पढ़े-लिखे तथा योग्य होने के कारण ऐसा कहती हूँ। इसी कारण तो मुझे डर लगता है।"

"राधा! इसको डर नहीं कहते। इसको आदर कहते हैं। देखो, मैं तुम्हारा आदर करता हूँ। इस पर भी मन्त्र-मुग्ध की भाँति तुम्हारे मुख पर देख रहा हूँ।"

"मैं इसमें आपकी महानता समझती हूँ। आप मेरे प्रभु हैं। मुझको जैसा चाहें आप देख सकते हैं। मैं आपकी दासी हूँ। मैं आपके मुख पर नहीं, आपके चरणों को ही देख सकती हूँ।"

"तुमको दासी किसने बनाया है? मैंने तो नहीं बनाया। मैं तुमको सहधर्मिणी, सहचारिणी और संगिनी समझता हूँ। इस कारण तुमको निर्भीक होकर स्वयं को मेरे बराबर समझकर मेरी ओर देखना चाहिए।"

"मुझको लज्जा लगती है।"

"यह ठीक है। इसको भय नहीं कह सकते। हम आज पहली बार ही तो मिले हैं। इस कारण एकान्त में मेरे पास बैठने में लज्जा लग सकती है, परन्तु यह एक-दो दिन में मिट जावेगी।"

उसने धीरे से मेरी ओर आँख उठाकर देखा। इससे मुझको उसकी बड़ी-बड़ी आँखें देखने को मिलीं। आँखों का सौन्दर्य काफी अधिक और भला प्रतीत होता था। परन्तु जब उसने मुझे अपनी ओर निहारते देखा तो पुनः आँखें झुका दीं। इस

पर मैंने कहा, "अब तो देख लिया है। कैसा लगा हूँ मैं ?"

"आप मेरे प्रीतम हैं।"

"यह शब्द तो मेरे प्रति तुम्हारे मन की भावना को प्रकट करता है मैं जानना चाहता हूँ कि तुम्हारी आँखों ने क्या देखा है ? इसे तुम कैसा समझी हो ?"

वह मेरे साथ लग गई और कहने लगी, "आप शब्दों के जाल में फँसाकर मुझको अन्यमनस्क कर रहे हैं। मुझको आपके साथ निस्संकोच भाव में रहना सीखने दीजिए। इसमें कुछ समय तो लगेगा ही। तब ही मैं ठीक-ठीक जान तथा बता सकूँगी। इस समय कुछ और बात करिये।"

मैं हँस पड़ा। मैंने समझा कि सौन्दर्य में भले ही वह टूनी से कम हो पर बुद्धि में वह छोटी नहीं है। मैंने बात बदलकर पूछा, "तुमने टूनी को देखा है ?"

वह विस्मय में मेरा मुख देखने लगी।

मैं फिर हँसा और बोला, "शुक्र है। तुमने आँखें तो उठाईं।"

इस पर वह फिर नीचे देखने लगी और बोली, "मैं किसी टूनी को नहीं जानती।"

"मेरा मतलब मालती से है।"

"आपकी बहन ?"

"हाँ, कैसी लगी है वह ?"

"बहुत ही प्रेममयी है, बहुत सुन्दर है और बहुत ही सभ्य है। सुना है वह बहुत धनवान है। इस पर भी अभिमान नहीं करती। मुझको तो बहुत प्यारी लगी है।"

"मैं चाहता हूँ कि तुम भी वैसी ही बनो।"

"उतनी सुन्दर कैसे बन सकती हूँ ? शरीर तो बदल नहीं सकता। हाँ, मन को सुधारने का यत्न करूँगी।"

"शरीर से तो तुम पहले ही सुन्दर हो।"

"आप हँसी करते हैं। मालती की रूप-रेखा बहुत अच्छी है। वह तो किसी राजा की रानी बनने योग्य है।"

"क्या राजाओं की रानियाँ सुन्दर ही होनी चाहिएँ ?"

"यह मैंने नहीं कहा। मेरा मतलब है कि उसको रानी के समान सुख-सुविधा मिलनी चाहिए।"

इस वार्तालाप से मुझको सन्तोष हुआ। राधा मूर्ख नहीं थी। वह शीघ्र ही मुझको प्रत्येक प्रकार का सहयोग देने के योग्य होनी वाली प्रतीत होती थी।

अगले दिन टूनी विदा माँगने आई तो मैं उसको राधा के पास ले गया। वे दोनों गले मिलीं। राधा ने उसे अपने पास ही सोफे पर बिठाया। मैं उनके सम्मुख अभी खड़ा था। टूनी मेरे मुख पर देख रही थी और राधा मेरे पाँवों की ओर।

मैंने पूछा," टूनी ! मेरे मुख पर क्या देख रही हो ?"

"आप इनको पाकर प्रसन्न हैं अथवा नहीं।"

"तो क्या पता चला है?"

राधा ने टूनी के मुख पर देखा और उत्सुकता से उसके उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी। टूनी ने बहुत ही ध्यान से मेरे मुख पर देखकर कहा, "आप बहुत ही प्रसन्न प्रतीत होते हैं।"

राधा टूनी के साथ सिमट गई। वह अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रही थी। टूनी का अनुमान ठीक था। मुझको स्वयं भी अपनी प्रसन्नता मुख से फूटती प्रतीत हो रही थी। राधा को यह सुन कि यह प्रसन्नता उसके कारण है, उसे बहुत सन्तोष हुआ था।

मैं उनको वहीं छोड़ कमरे से बाहर चला गया।

पहली दिसम्बर को मैं टूनी और केशव को स्टेशन पर छोड़ने गया। उनके माता-पिता भी आए हुए थे। राधा को भी ले जाता, परन्तु वह अपनी मायके गई हुई थी। विवाह के पश्चात् स्त्रियों के लिए करने को बहुत कुछ होता है।

केशव की माँ ने पूछा, "बहू कैसी है विनोद?"

सब मेरे मुख पर देखने लगे। मैंने कहा, "मुझे तो बहुत अच्छी लगी है।"

"दहेज में क्या लाई है?"

"दो हाथ और दो पैर।"

"क्या नकद कुछ नहीं मिला?"

"नहीं।"

"मिला है माताजी!" टूनी ने कहा, "उसमें से ही तो पाँच सौ मुझे मिला है।"

"पर वह जो कुछ भी मिला है, माताजी ने दोनों बहनों में बाँट दिया है।"

"तो एक हजार मिला है?"

"मुझको तो कुछ नहीं मिला। वह इनके लिए ही था।"

"कुछ तो देना चाहिए था।"

"क्यों? मेरे पास अपने हिसाब में बैंक में आठ-नौ हजार रुपया है, जो अब बढ़ता ही जाएगा। अब मेरी 'सायंस' की पुस्तक मैट्रिक में लग गई है।"

"फिर भी उनको भी तो कुछ देना चाहिए था।"

"कुछ तो दिया ही है। नकद नहीं। हाड़-चाम के रूप में अपनी उन्नीस वर्ष की हृष्ट-पुष्ट और पढ़ी-लिखी लड़की दी है। देखो मौसी! जहाँ प्रेम हो जाने पर विवाह होते हैं, वहाँ तो लड़की देने का प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। लड़का लड़की को मिलता है और लड़की लड़के को। इस विषय में दोनों बराबर रहते हैं। जहाँ विवाह ठेका हो, लड़के की आर्थिक श्रेष्ठता के विनिमय में दहेज देना आवश्यक हो जाता है। परन्तु हमारा विवाह तो प्रेम-विवाह नहीं। ठेका भी नहीं। इस कारण राधा

फोकट में मिल गई है। अब यह मेरा भाग्य है कि वह सुन्दर और सुशील है।"

"एक ही रात में सब कुछ जान गए हो?"

"हाँ मौसी! एक ही टैस्ट में। मैं सायंसदां हूँ न?"

केशव की माँ सब कुछ व्यंग्य भाव में कह रही थी। वह यह दर्शाना चाहती थी कि मालती के साथ विवाह न करके मुझे कितनी हानि हुई है।

टूनी को मैंने कहा, "मैं आशा करता हूँ कि तुम अपनी सैर और नये-नये अनुभवों का सविस्तार वर्णन लिखा करोगी।"

"आप भाभी को लेकर वहाँ घूमने आइये न?"

"हाँ, यदि तुमने घर वहीं बना लिया तो अवश्य आऊँगा।"

इससे वह गम्भीर हो गई। उसने मेरी ओर देखा। मुझको कुछ ऐसा भास हुआ कि उसकी आँखें तरल हो गई हैं। उसने भर्राई आवाज में कहा, "यह असम्भव है।"

इसके छः महीने पश्चात् की बात है। एक पार्टी में केशव के पिता मिस्टर थापर से भेंट हुई तो मैंने पूछा, "पिताजी! केशव का पत्र आता है क्या?"

"हाँ! उसने थीसिज सबमिट कर दिया है। अगले मास उसका 'इण्टरव्यू' होने वाला है।"

"टूनी तो भलीभाँति है?"

"वह इतिहास विषय लेकर ऑक्सफोर्ड में एम० ए० कर रही है।"

"बहुत खूब। केशव के विवाह का क्या हुआ?"

मिस्टर थापर हँसकर बोले, "मर्फी ने केशव के वहाँ पहुँचने से पूर्व ही लार्ड पैम्ब्रोक के शाहजादे से विवाह कर लिया था।"

"केशव को दुःख तो बहुत हुआ होगा?"

"अब सामने तो वह है नहीं। हाँ, उसके पत्रों से प्रतीत होता है कि यदि किसी प्रकार का दुःख था तो वह उस पर काबू पा चुका है।"

मैं यह समाचार सुनकर दुखी हुआ। घर पहुँच कर मैंने केशव को पत्र लिखा, "केशव! विवाह के लिए कोई-न-कोई साथी मिल ही जाएगा। प्रेम तो विवाह से पृथक् वस्तु है। विवाह एक पारिवारिक सुविधा की बात होती है, प्रेम मन की भावना की। दोनों इकट्ठी हो जाएँ तो बहुत ही उत्तम है। परन्तु एक के बिगड़ जाने से दूसरी भी बिगड़नी ही चाहिए, यह आवश्यक नहीं।"

केशव का उत्तर आया। उसने लिखा था, "प्रतीत होता है कि यह समाचार तुमको पिताजी से मिला है। मैंने इसके विषय में अन्य किसी को लिखा नहीं। जब उन्होंने तुमको इतना बताया है तो यह भी बताया होगा कि मुझको इससे रंचमात्र भी शोक नहीं। टूनी ने भी मुझको सान्त्वना देने का यत्न किया था। परन्तु तुम

और वह एक ही विचार रखते हो न। मैं तो तुम दोनों के और विशेष रूप में टूनी के व्यवहार को अस्वाभाविक मानता हूँ। परन्तु वह समझती ही नहीं। इस पर भी मैंने उसको ऑक्सफोर्ड के एक कॉलेज और लड़कियों के होस्टल में दाखिल करा दिया है। मैं तो यह आशा लगाए हुए हूँ कि वह शीघ्र ही किसी योग्य लड़के से विवाह-सम्बन्ध में बँध जाएगी। देखें क्या होता है।

"मेरे विषय में तुमको चिन्ता करने की कोई बात नहीं। मैं दिसम्बर में अमेरिका होता हुआ भारत पहुँचने का विचार रखता हूँ। दो दिन में मेरा इण्टरव्यू होने वाला है। पश्चात् मैं छुट्टी पा योरोप भ्रमण के लिए जाऊँगा। वहाँ से अमेरिका, जापान होता हुआ कलकत्ता पहुँचूंगा।"

इसके पश्चात् टूनी का पहला पत्र आया। उसमें उसने लिखा था, "मैंने भैया से वचन दिया था कि छः मास तक आपको कोई पत्र नहीं लिखूँगी। उनका विचार था कि इस प्रकार मैं आपको भूल सकूँगी। कल मैं लन्दन गई थी। वहाँ भैया से भेंट हुई। वे अपने इण्टरव्यू की तैयारी कर रहे हैं। उन्होंने एक शब्द में कहा कि आपका पत्र आया था और मैं आपको लिख सकती हूँ। अतएव आज होस्टल में पहुँचते ही आपको पत्र लिखने बैठ गई हूँ।

"मैंने बहुत यत्न किया है कि आपको भूल जाऊँ। यहाँ कई लड़के हैं, जो मुझसे प्रेम करने लगे हैं परन्तु उनमें से एक भी नहीं, जो आपका स्थान ले सके। मैं उनको दूर रखने के लिए कह देती हूँ कि मेरी सगाई हो चुकी है।

"ऑक्सफोर्ड एक छोटा-सा शहर ही है। सुन्दर भी है, परन्तु लन्दन बहुत ही विशाल और अत्यन्त सुन्दर है। जब यहाँ से दिल ऊब जाता है तो एक-आध दिन के लिए वहाँ चली जाती हूँ। वहाँ होटल में ठहरने का एक पौंड एक दिन का देना पड़ता है। इसमें दो समय रोटी, दो समय चाय, सोने का स्थान बिस्तर सहित मिलता है। तीन-तीन, चार-चार मेहमानों के लिए एक-एक वेट्रेस का प्रबन्ध रहता है। वह कपड़े लोहा कर देती है और बाल सँवार देती है।

"एक बात और। मैंने सिर के बाल कटवा लिये हैं। यहाँ लम्बी चोटी का फैशन नहीं। वह भद्दी दिखाई देने लगी थी। इस पर भी मेरे भँवरों जैसे काले बाल कन्धों तक आते हैं। मैं अपना एक चित्र इस पत्र के साथ भेज रही हूँ। आशा करती हूँ कि आप पसन्द करेंगे।"

मैंने केशव को पत्र लिखने की आवश्यकता नहीं समझी। हाँ, टूनी को पत्र लिखा—

"तुम्हारा पत्र तथा चित्र मिले। कटे हुए बाल बुरे प्रतीत नहीं होते। परन्तु मेरी पसन्द का सम्बन्ध शरीर के अच्छे और बुरे लगने से नहीं प्रत्युत तुम्हारी आत्मा से है। आत्मा के बाल नहीं होते।

"मैंने तो कई बार लिखा है कि यदि तुम विवाह भी कर लो तो भी तुम

मुझको पसन्द रहोगी। कारण यह है कि विवाह सम्बन्ध शरीर का है और पसन्द मन तथा आत्मा की।

"टूनी! तुम एम० ए० कर लो और मेरी सम्मति मानो तो विवाह कर लो। ईश्वर तुम्हारा भला करेगा! और तुम जीवन में रस तथा आनन्द पा सकोगी।

"तुम्हारी भाभी आजकल बहुत प्रसन्न हैं। उसको बच्चा होने वाला है और वह दिन-रात उसके निर्माण में संलग्न है।"

इस पत्र का उत्तर एक मास पश्चात् आया। खाली कागज पर केवल बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—"नो—टूनी"।

ऐसे पत्र उसके पहले भी आया करते थे। ये उसके मन की कछुए की-सी अवस्था को प्रकट करते थे। जैसे कछुआ अपने हाथ-पाँव को शरीर के भीतर घुसेड़-कर, उनको बाहरी आघातों से बचा लेता है, उसी प्रकार वह अपने पूर्ण भावों को एक शब्द के अन्दर समेटकर मेरी युक्तियों से बचने का यत्न करती थी।

मैंने उसको फिर एक पत्र लिखा, "तुम नाराज हो गई प्रतीत होती हो। इसमें नाराजगी की क्या बात है, समझ में नहीं आता। देखो, केशव से 'मर्फी' नाम की एक लड़की ने प्रेम प्रकट किया और विवाह का वचन भी हो गया परन्तु केशव के भारत आने पर उसने किसी अन्य से विवाह कर लिया। केशव ने लिखा है कि वह उससे मिली थी और उसने कह दिया कि वह अपने मन के भावों को ठीक नहीं समझ सकी थी।

"अब किसी लार्ड के लड़के से विवाह कर वह दावतों में नाचती-फिरती है। मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि विवाह एक शारीरिक सुविधा की बात है। जहाँ जिसका मन करता है, यह कर लिया जाता है।

"परन्तु प्रेम एक जन्म-जन्मान्तर की बात है। यदि तुम्हारा मेरे साथ वास्त-विक प्रेम है तो इसको परिपक्व होने दो। यह कहीं भी विवाह कर लेने से पुष्टता को ही प्राप्त होगा।"

इस पत्र का उत्तर भी वैसे ही संक्षिप्त आया। लिखा था, "मैं आपकी कही जीवन-मीमांसा में विश्वास नहीं रखती। टूनी।"

द्वितीय परिच्छेद

राधा को बच्चा जनने के समय भारी कष्ट हुआ। एक स्वस्थ तथा सुन्दर लड़के को जन्म देकर उसने जीवन-भर के लिए छुट्टी प्राप्त कर ली, वह सख्त बीमार हो गई। उसे ज्वर रहने लगा। यह पता चला कि उसके गर्भाशय में कुछ विकार उत्पन्न हो गया है। उसे बाहर निकालना पड़ा। दो वर्ष तक वह बिस्तर पर पड़ी रही। पश्चात् एक वर्ष में वह चलने-फिरने योग्य हो सकी तथा घर का काम सँभालने योग्य हुई।

इन तीन वर्षों में मैंने कॉलेज में उन्नति पाई और सीनियर प्रोफेसर के ग्रेड में पहुँच गया। वेतन भी पाँच सौ हो गया, परन्तु प्रायः सबकुछ राधा की बीमारी पर व्यय होता गया।

राधा स्वस्थ होने लगी तो बच्चे का नामकरण संस्कार कर दिया गया। उसका नाम अभी तक टीमू था। अब सुरेन्द्र रखा गया।

हमारा बाँस मंडी वाला मकान छोटा था। अतएव मैंने अपने लिए कचहरी रोड पर नीला गुम्मद के पास एक मकान ले लिया। यह मकान यूनिवर्सिटी लायब्रेरी के सामने था। इस कारण मुझको वहाँ अध्ययन के लिए जाने में सुभीता होने लगा। मैंने इण्टरमीडिएट के लिए रसायन शास्त्र विषय पर पुस्तक लिखनी आरम्भ कर दी।

जब टूनी के एक-दो शब्दों के पत्र आने लगे तो मैंने उत्तर देना बन्द कर दिया। उसके कुछ काल तक, गलत, ठीक, नहीं आदि केवल दो-चार शब्दों के पत्र आते रहे और इनका मैंने उत्तर नहीं दिया। इस कारण अथवा किसी अन्य कारण से उसने भी लिखना बन्द कर दिया।

केशव का एक पत्र उसके लंदन से डी० एस-सी० डिग्री प्राप्त करने पर मिला था। उसमें उसने लिखा था कि वह अमेरिका जा रहा है और वहाँ से लिखेगा। परन्तु उसके पश्चात् उसका कोई पत्र मुझे नहीं मिला।

राधा स्वस्थ हो चुकी थी और अब अपना स्वाभाविक जीवन व्यतीत कर रही थी। टीमू तीन वर्ष का हो चुका था। इस समय स्विट्जरलैंड से टूनी का पत्र आया। लिफाफे पर पता उसके हाथ से लिखा होने से मैं जान गया कि टूनी का है परन्तु स्विट्जरलैंड की मुहर पढ़ मुझे अचम्भा हुआ। मैंने पत्र खोला और पढ़ा। लिखा था, "विनोद जी ! मैं तीन वर्ष पश्चात् लिख रही हूँ, मैं समझ सकती हूँ कि

आपने पत्र लिखना क्यों बन्द कर दिया था। बात यह है कि मैं अपने पत्र इतने संक्षिप्त लिखने लगी थी कि उसका कुछ उत्तर हो ही नहीं सकता था।

''इधर मैंने पत्र लिखने इस कारण बन्द कर दिए थे कि मैं एक मूर्खता कर बैठी थी।

''मेरी एक सहपाठिन फ्लोरैन्टाइन थी। वह रहने वाली फ्रांस की थी परन्तु पढ़ती ऑक्सफोर्ड में थी। उसने एम० ए० की परीक्षा दी और मुझको पेरिस ले गई।

''पेरिस का जीवन अत्यन्त ही वासनामय है। फ्लोरैन्टाइन की कई युवकों के साथ मित्रता थी। वे सब-के-सब मेरे भी मित्र बन गए। उनमें से एक मुझसे 'कोर्ट-शिप' करने लगा। वह हमारे पीछे-पीछे ऑक्सफोर्ड तक आया। वह धनी बाप का बेटा था और उसने मुझपर बहुत धन व्यय किया। किसी मानसिक दुर्बलता के क्षण में मैं उसकी सहवासिनी बन गई और उसने मेरे साथ शेष जीवन व्यतीत करने का वचन दिया। मेरी आत्मा शरीर के सम्मुख परास्त हो गई और मैं उसके साथ 'बर्न' में रहने चली आई।

''दो वर्ष तक हम यहाँ बहुत ही मजे में रहे। मैंने अपने माता-पिता को लिख दिया कि मैंने मिस्टर फिशर से विवाह कर लिया है और हमने 'बर्न' में रहने का निर्णय कर लिया है। मेरे माता-पिता मुझसे बहुत प्रसन्न थे और मेरे नाम के रुपयों की आय, जो वहाँ मिलों के शेयरों में लगा हुआ था, प्रति वर्ष भेजने लगे।

''पिछले वर्ष मेरे एक लड़का हुआ है। मिस्टर फिशर तब से लापता है। अब मुझको विदित हुआ कि मिस्टर फिशर ने पेरिस में मिस फ्लोरैन्टाइन से विवाह कर लिया है।

''परिणाम यह है कि मैं बिना बाप के बेटे की माँ हूँ। एक धनी स्त्री की तरह 'बर्न' में रहती हूँ। सब प्रकार का सुख और सुविधा मुझको प्राप्त है। इसपर भी मैं अपने व्यवहार पर ग्लानि अनुभव करती हूँ। मुझे अपने मन को दृढ़ बनाकर रहना चाहिए था और वैसा मैं न कर सकी। मुझे अपनी इस पराजय को किसी पर प्रकट करते भी लज्जा लगती है।

''मैंने अपने पिता को एक झूठी कहानी लिख दी है, जो मैं अपने लड़के को भी बताना चाहती हूँ। मैंने लिखा है कि मिस्टर फिशर का देहान्त हो गया और अब मैं अकेली यहाँ रहती हूँ।

''मन में तो यह आया था कि आपको भी यही परिचय दूँ, परन्तु ऐसा कर नहीं सकी। कई महीनों के संघर्ष के पश्चात् आपके सामने अपनी लज्जा की बात प्रकट कर रही हूँ आप चाहें तो मेरे घर वालों को इस रहस्य की बात बता दें और चाहें तो मेरे लिए अपने मन तक ही रहने दें।

''मैं मास्टर फिशर से भी कोई लगाव नहीं रखती, परन्तु वह अभी दस

मास का शिशु है। मैं उसको छोड़ भी नहीं सकती। केवल मनुष्यता के नाते उसको अपने पास रखे हुए हूँ और चाहती हूँ कि वह एक विधवा का पुत्र विख्यात हो अपना जीवन मान से व्यतीत कर सके।

"केशव भैया का पत्र आपको आता ही होगा। उसने मुझको लिखा है कि वह अपनी बीवी के साथ भारत जावेगा और किसी पहाड़ी स्थान पर लैबोरेटरी बनाकर अपने अन्वेषण कार्य को चालू रखेगा। उसकी पत्नी भी फिलाडेल्फिया यूनिवर्सिटी की ग्रेजुएट है।"

यह पत्र मेरे लिए अति विस्मयकारक था। मैंने इस पत्र पर बहुत मनन के पश्चात् इसका उत्तर लिखा, "टूनी बहन ! मुझको यह सुनकर बहुत ही दुःख हुआ है कि तुम्हारा साथी स्थिर-चित्त नहीं निकला। वास्तव में पेरिस के युवकों से विवाह-सम्बन्धी विषयों में चित्त की स्थिरता की आशा भी तो नहीं की जा सकती।

"यह भूल तुमसे इस कारण हुई है कि तुमने यह कभी माना ही नहीं कि शारीरिक आवश्यकताएँ कभी इतनी प्रबल भी हो सकती हैं कि वे आत्मा रूपी नौका को डाँवाडोल कर सकती हैं।

"जब तुम्हारी माता ने तुम्हारा मेरे साथ विवाह का प्रस्ताव रखा और मैं तुमसे विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ तो माँ ने मुझसे पूछा, 'फिर क्या होगा ?'

"मैंने उत्तर दिया था, 'माँ ! मेरा शीघ्र ही किसी उचित लड़की से विवाह कर दो।'

"मेरा अनुमान था कि शरीर की माँग को न्यायोचित उपायों से पूर्ण करने में किसी दुर्बलता के क्षण में पथच्युत नहीं हो सकूँगा।

"यही बात तुमको करनी चाहिए थी। परन्तु तुम नहीं कर सकीं और वासना जब अति उग्र हुई तो उसके वेग को सहन न कर सकने से गलत पुरुष से सम्बन्ध बना बैठीं।

"मेरी सम्मति मानो। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। भारत में आकर विधवा के रूप में पुनर्विवाह करलो।"

मैंने उसे केशव के विषय में कुछ नहीं लिखा। केशव ने मुझको अढ़ाई वर्ष से कोई पत्र नहीं लिखा था। गिला करना मेरे स्वभाव में नहीं था और केशव की प्रशंसा मैं कर नहीं सका।

मेरे पत्र भेजने के दो मास पश्चात् टूनी का पत्र आया। उसने लिखा "मैं शीघ्र ही भारत आ रही हूँ। पिताजी का पत्र आया है कि उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। साथ ही मेरे पति के देहान्त होने के समाचार से उनके दिल को बहुत धक्का पहुँचा है। इस कारण मैं भारत आना उचित समझती हूँ।"

पत्र आने के पन्द्रह दिन पश्चात् वह लाहौर पहुँची और पहुँचने के पहले दिन ही वह मुझको मिलने आई।

आते ही जब उसने राधा को देखा तो विस्मय में देखती रह गई। राधा दो वर्ष की बीमारी के पश्चात् ओजविहीन हो गई थी। यद्यपि अब वह स्वस्थ थी और घर का काम सँभालती थी, इस पर भी जो कुछ वह विवाहित जीवन के पहले कुछ महीनों में थी, अब उसका चौथाई रूप-लावण्य भी उसमें शेष नहीं रहा था। इस पर भी राधा प्रसन्न तथा अपने भाग्य से सन्तुष्ट प्रतीत होती थी।

टूनी, पति भाग जाने की घटना पर भी, सब प्रकार से स्वस्थ और सुन्दर थी। उसका शरीर पहले से कुछ भर गया था। इससे उसके सौंदर्य में वृद्धि ही हुई थी। इसके अतिरिक्त वह प्रसन्न और अपने जीवन में रुचि ले रही प्रतीत होती थी।

राधा को देख उसने कहा, "भाभी ! तुम तो पहचानी ही नहीं जातीं। क्या हुआ है ?"

"एक लड़के के निर्माण में ही शरीर की सारी-की-सारी शक्ति का व्यय हो गया प्रतीत होता है। मन अभी और जीने को कर रहा है। इस कारण इस शरीर को मौत के मुख से वापस ले आई हूँ।"

"बहुत सुन्दर बनाया है लड़का ?"

"हाँ ! देखोगी ?"

राधा ने टीमू को आवाज दी।

टीमू साथ के कमरे में बैठा खेल रहा था। वह हाथ में कागज तथा लाल पेन्सिल लिये हुए चला आया। एक अपरिचित स्त्री को कमरे में बैठा देख वहाँ 'माँ-माँ' कहता-कहता रुक गया।

राधा ने कहा, "यह कागज पर क्या कर रहे हो ?"

"मीना बना रहा हूँ।"

राधा ने हाथ लम्बा कर कहा, "दिखाओ तो।"

लड़का टूनी की ओर देखता हुआ कमरे में आया और कागज माँ को दिखाकर भाग जाने के लिए लौटा। परन्तु राधा ने पकड़ लिया। "ठहरो टीमू ! तुम्हारी मीनू को देख लूँ।"

लड़के ने फिर चोर आँखों से टूनी की ओर देखा और माँ के पीछे छुपकर खड़ा हो गया। राधा ने कागज खोलकर देखा। उस पर एक गोलाकार मुख, उसमें आँखों के स्थान पर लाल स्याही के दो निशान और मुख के स्थान पर एक रेखा बनी थी। दो रेखाएँ नीचे टाँगों के लिए और दो रेखाएँ दोनों ओर दो बाजुओं के लिए बना रखी थीं। राधा ने टूनी को बताया, "मीनू पड़ोसियों की दो वर्ष की लड़की है। वह इससे खेलने आया करती है।"

"क्या नाम है इसका ?"

"सुरेन्द्र ! पर हम इसको टीमू कहते हैं।"

"टीमू !" टूनी ने उसकी बाँह पकड़कर उसको बुलाया और अपनी ओर

घसीट लिया। लड़का मुस्कराता हुआ सामने आया और उसने उसकी आँखों में देखकर कहा, "यह अपने पिता के समान ओजपूर्ण है।" इतना कह उसने बच्चे को गले लगा उसका मुख चूम लिया।

मैं समीप बैठा टूनी को देख रहा था। अब मैंने कहा, "टीमू ! ये तुम्हारी दूसरी बुआ हैं।"

"बुआ ! ये पहले नहीं आईं ?" लड़के ने टूनी की ओर देखते हुए पूछा।

"ये बहुत दूर से आई हैं।"

"बहुत दूर से ! आकाश से भी दूर से !"

"हाँ, स्विट्जरलैंड से।"

राधा की दुर्बलता और निस्तेज अवस्था देख टूनी के मन में कदाचित् यह विचार आया कि वह अब मुझको विवाह के लिए तैयार कर लेगी। इस कारण वह मुझको नित्य प्रति मिलने आने लगी। उसने एक नियम सा बना लिया था कि मेरे कॉलेज से छूटते समय वह अपने पिता की मोटरकार लेकर कॉलेज पहुँच जाती और हम दोनों कहीं चाय पीने चले जाते। पश्चात् लॉरेन्स गार्डन अथवा शाहदरा घूमने चले जाते। इन दिनों उसने अपने फिशर के साथ प्रेम की सारी कथा सुना दी। इसमें उसने बताया, "जब मेरे गर्भ ठहर गया तो मिस्टर फिशर तटस्थ रहने लगे। बच्चा हुआ तो कभी-कभी घर से अनुपस्थित हो जाते। एक दिन मेरे पूछने पर कहने लगे, बच्चे का रोना मुझे बिल्कुल नहीं भाता। एक बार जब उसका रोना देख लेता हूँ तो मुझे रात-भर नींद नहीं आती।

"एक दिन मैं अपने एक पड़ोसी के घर गई हुई थी। मेरी अनुपस्थिति में श्रीमान् आए और अपने कपड़े एक सूटकेस में लेकर भाग गए। एक-दो दिनों तक तो मैं प्रतीक्षा करती रही। पीछे मुझको कुछ सन्देह हो गया। मैंने फ्लोरैन्टाइन को लिखा। वह उन दिनों पेरिस में एक सीनेटर की बीवी थी। उनका उत्तर आया कि फिशर को उसने पेरिस में देखा है। साथ ही उसने लिख दिया कि उसने स्वयं भी कचहरी में अपने पति से तलाक की प्रार्थना दी हुई है। इस कारण उसको पत्र उसके पते पर न भेजा करूँ।

एक दिन 'बर्न रैली' में सीनेटर वैंडी विलेयर की बीवी के तलाक की प्रार्थना स्वीकार की सूचना छपी। इस पर मैंने उसको बधाई का पत्र लिखा। इसके उत्तर में उसने एक निमन्त्रण-पत्र भेजा। उसमें लिखा था, 'श्रीमान् और श्रीमती लु० फिशर अपने शुभ विवाह के अनन्तर होने वाले भोज पर मिस मालती को आमन्त्रित करते हैं।'

"निमन्त्रण-पत्र के एक कोने में लिखा था, 'शुक्रवार, बीस जून १९२९, सायं आठ बजे, कार्लटन डी० होटे पेरिस।'

इस छपे निमन्त्रण के साथ फ्लोरैन्टाइन का अपना पत्र भी था।

"मैं इससे यह नहीं समझ सकी मिसेज लू० फिशर तथा फ्लोरेन्टाइन एक ही हैं। यह तो मैं समझ गई कि मेरे पति महोदय दूसरा विवाह कर रहे हैं। मेरा उससे विवाह किसी विधि-विधान के अनुकूल नहीं हुआ था। इस कारण मैं किसी प्रकार का भी झगड़ा खड़ा नहीं कर सकती थी।

"एक बात मुझको खटकी कि फ्लोरैन्टाइन पहले मुझको मिसेज फिशर के नाम से सम्बोधित करती थी परन्तु इस पत्र में मुझको मिस मालती कर सम्बोधन किया गया था। मुझको यह घाव पर नमक छिड़कने के समान लगा।

"मेरे विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब एक दिन मिस्टर फिशर के हाथ में हाथ डाले फ्लोरैन्टाइन ने मेरी कोठी में प्रवेश किया। मैंने उनको खिड़की में से देख लिया था। मैं एकदम समझ गई कि दोनों का ही विवाह हुआ है।

"वे जब दरवाजे पर घंटी बजा रहे थे, मैं विचार कर रही थी कि उनको दरवाजा खोलूँ अथवा नहीं। मैंने मन में सोचा कि उनसे झगड़ा कर लेने से मुझे कुछ लाभ तो होगा नहीं। साथ ही मेरा मन उस समय मुझे कोस रहा था कि मैंने मिस्टर फिशर को जीवनसाथी बना अपनी आत्मा का हनन किया है और मुझे अपने पाप-कर्म की यह यन्त्रणा मिल रही थी। मैंने इस मुसीबत का निर्भीक आँखों से सामना करने का निश्चय किया और दरवाजा खोल उनको कोठी के अन्दर ले आई। उनको बिठाकर वधाई दी और उनके लिए चाय का प्रबन्ध करने के लिए बटलर को आज्ञा दी।

"बटलर भी मिस्टर फिशर को अपनी नयी बीवी के साथ मेरा मेहमान देख भौंचक्का हो, उनकी अवहेलना-सी कर रहा था। मैंने मिस्टर फिशर को लज्जित करने के लिए कहा, 'देखिए, आपके इस काम को मेरा बैरा भी ठीक नहीं समझता।'

'वह गरीब आदमी हम पैसे वालों के मनोरंजन की बातों को समझ नहीं सकता।'

"उसने फ्रांसीसी भाषा की एक कहावत कह दी जिसका अर्थ है, 'बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।'

'यह तो ठीक है,' मैंने कहा, 'पर क्या विवाह केवल आनन्द-भोग के लिए ही है?'

'इसके अतिरिक्त और कोई कारण इसमें दिखाई नहीं देता।'

'तो किसी दिन फ्लोरैन्टाइन को भी छोड़ दोगे?'

'मैं भविष्य की बात अभी कैसे कह सकता हूँ?'

इस पर फ्लोरैन्टाइन ने कहा, 'मुझको इस बात की चिन्ता नहीं। जब हम

दोनों एक-दूसरे से ऊब जाएँगे तो कोर्ट में तलाक हो जाएगा। मैं उसके लिए तैयार हूँ।'

'तो विवाह किसलिए किया है'?

'इसलिए कि कहीं भूल से कोई बच्चा हो जाए तो उसकी 'क्रायश्चनिंग हो सके।'

'तुम्हारे पहले पति से कोई बच्चा हुआ है क्या?'

'नहीं, ईश्वर का धन्यवाद है।'

मैंने फिशर से पूछा, 'अपने बच्चे का क्या नाम रखूँ?'

'जो मन में आए, रख लो।'

"चाय पीने के पश्चात् वे चले गए। मैंने यह विख्यात करना आरम्भ कर दिया कि फिशर का देहान्त हो गया है। बच्चे का अभी नामकरण नहीं किया। वह एक वर्ष का होने जा रहा था।"

इस प्रकार टूनी ने अपने इस विवाह की पूर्ण कथा सुना दी।

मैं नित्य सायंकाल के समय टूनी के साथ व्यतीत करने लगा तो मेरी पत्नी को हमारे परस्पर सम्बन्ध के विषय में सन्देह होने लगा। उसने एक दिन रात के भोजन के पश्चात् कमरे का दरवाजा बन्द कर कहा, "मैं आपसे एक आवश्यक बात करना चाहती हूँ।"

"हाँ, बताओ।"

"आप नित्य सायंकाल टूनी से मिलने जाते हैं?"

"नहीं, वह मुझसे मिलने आती है। वह ठीक चार बजकर पाँच मिनट पर कॉलेज के बाहर मोटर लेकर आ जाती है। चार बजकर दस मिनट पर मेरा कॉलेज समाप्त होता है। मैं बाहर आता हूँ तो हम दोनों किसी होटल में चाय पीने चले जाते हैं। पश्चात् किसी बाग-बगीचे में घूमने निकल जाते हैं अथवा कभी सिनेमा देखने।"

"आप तो उसको अपनी बहन बताते थे न?"

"हाँ! तो क्या हुआ?"

"वह आप पर डोरे डाल रही प्रतीत होती है।"

"मुझको तो कुछ ऐसा अनुभव नहीं हुआ।"

"वह अब वह टूनी नहीं, जो विलायत जाने से पहले थी।"

"कोई भी तो वह नहीं रहा, जो आज से चार वर्ष पहले था।"

मेरे इस कथन पर वह अवाक् मेरा मुख देखती रही। उसकी आँखें डबडबा आईं। उसकी ऐसी अवस्था देख मुझको अपने कथन की कटुता का ज्ञान हो गया। मैंने तो एक साधारण ढंग से संसार के गतिशील होने की बात कही थी। उसको अपने रूप-लावण्य के बदल जाने पर यह कटाक्ष जान पड़ा। वह मुझको कुछ कहना

चाहती थी परन्तु कदाचित् आँसुओं के निकल बहने से डर रही थी।

मैंने पूछा, "राधा, क्या हुआ है ?"

"मैं अभागी हूँ। मेरा सौन्दर्य विलीन हो गया है। मैं सन्तानोत्पति के योग्य नहीं रही। यही तो आपका मतलब है न ? मैं···!" वह कहते-कहते रुक गई और विह्वल होकर रोने लगी।

मैंने उसे अपने समीप बिठाकर प्यार करते हुए कहा, "क्या हुआ है ? आखिर कुछ कहोगी भी। कौन कहता है कि तुम्हारा सौन्दर्य विलीन हो गया है ?"

उसने बिखल-बिखलकर रोते हुए कहा, "आपने ही तो कहा है। और कौन कह सकता है ?"

"नहीं, मैंने नहीं कहा, रानी ! तुम्हारे मन से कुछ है। इसी से मेरे कथन का विकृत अर्थ समझने लग गई हो।"

"आपने कहा नहीं कि कोई भी तो वह नहीं रहा, जो आज से चार वर्ष पूर्व था ?"

"ठीक। परन्तु इसका अर्थ यह कैसे निकल सकता है कि तुम सुन्दर नहीं रहीं। भली औरत ! मेरा अभिप्राय यह भी तो हो सकता है कि तुम पहले से भी अधिक सुन्दर होती जा रही हो।"

"बस करिए। अब आप जले पर नमक छिड़कने लगे।"

"क्यों ? क्या यह झूठ है ?"

"मैं यह सब-कुछ नहीं सुनना चाहती। सुनिए। मेरा कहना यह है कि विवाह करना है तो टूनी से कर लीजिए पर बिना विवाह इस प्रकार घूमने-फिरने से भारी बदनामी होगी और कॉलेज की प्रोफेसरी भी जा सकती है।"

"यह सब तुमको कौन कह गया है कि मेरा टूनी से किसी प्रकार का अनुचित सम्बन्ध है ?"

"नहीं है, तो हो जाएगा। क्या टूनी ने नहीं बताया कि इच्छा के न रहते हुए भी वह दो वर्ष तक किसी की पत्नी बनी रही थी। इसी प्रकार आपके साथ भी हो सकता है। आप पत्थर के तो बने नहीं।"

"नहीं, ऐसा नहीं होगा रानी ! मैं कल से ही इस प्रकार की संभावना पर रोक लगा दूँगा।"

"कैसे लगा देंगे ? मैं देखती हूँ कि जब वह आपके साथ होती है, तो आपके मुख पर प्रसन्नता दिखाई देती है।"

"अब ऐसा नहीं होगा।"

"आप ऐसा क्यों नहीं करते कि उससे विवाह कर लें। व्यर्थ की यन्त्रणा सहने से क्या लाभ ?"

"नहीं राधा ! यह नहीं होगा।"

"आप उससे प्रेम तो करते हैं ?"

"नहीं। वह मुझसे प्रेम करती है। परन्तु उसके अपने व्यवहार ने यह सिद्ध कर दिया है कि प्रेम और वासना-तृप्ति भिन्न-भिन्न बातें हैं।"

"फिर प्रोफेसरों की-सी अव्यावहारिक बातें करने लगे हैं ?"

"राधा, इस विषय को बन्द करो। मुझको प्रलोभनों में मत धकेलो, मैं यह नहीं कर सकता।"

इससे राधा को कितना संतोष हुआ, कह नहीं सकता। मुझे यह भी पता नहीं चला कि वह सत्य हृदय से कह रही थी कि मैं टूनी से विवाह कर लूँ अथवा मुझमें इसके लिए ग्लानि उत्पन्न करने के लिए।

कुछ भी हो, उस दिन की बात के पश्चात् मैं सचेत हो गया। मन से तो मैं इस बात पर दृढ़ था कि मुझे टूनी से विवाह नहीं करना। परन्तु राधा का कहना था कि वासना के वेग में मैं कुछ भी कर सकता हूँ, सत्य हो सकता था मैं इससे बचना अपना कर्तव्य समझता था।

अगले दिन जब टूनी आई तो मैंने उससे कहा, "टूनी ! आज राधा भी साथ चलेगी।"

"क्यों ?"

"देखो न। वह बहुत बीमार रही है। उसका खुली हवा में घूमने-फिरने के लिए जाना आवश्यक है।"

उसका मुख उतर गया। मैंने कहा, "तुम मोटर अपने घर छोड़कर आ सकती हो। हम ताँगे में नदी तट तक चलेंगे और वहाँ एक घण्टा टहल, ताँगे में लौट आवेंगे।"

"और इस मोटर में क्यों नहीं ?"

"यह मैं तो नहीं कह सकता, टूनी ! तुम्हारी मोटर है। तुम चलाती हो। मुझको तुम घुमाने ले जाती हो। यही बड़ी बात है। अब मैं कैसे कह सकता हूँ कि तुम मेरी पत्नी और बच्चे को भी साथ ले चलो।"

"चलिए।" टूनी ने मोटर में बैठने को कहा। मैं बैठ गया। उसका मुख पीला पड़ गया था। कॉलेज से दो मिनट में घर आ गया। मैं लपककर ऊपर चढ़ गया। टूनी मेरे पीछे थी।

राधा टीमू को एक चित्रयुक्त बच्चों की पुस्तक में से अक्षर-ज्ञान करा रही थी। टूनी ने उसे बैठा देख कहा, "भाभी अभी तक तैयार नहीं हुईं।"

"अभी हो जाती हैं।"

"कहाँ चलना है ?" राधा ने पूछा।

"घूमने।"

"मैं नहीं जा रही।"

"राधा ! चलो । मैं तो टूनी को समझा-बुझाकर लाया हूँ और अब तुम हठ कर रही हो ।"

"पर आप मुझको कह जाते तो मैं तैयार हो जाती ।"

"कितनी देर लगेगी तैयार होने में ?"

"टूनी जितनी तैयारी में दो घण्टे से कम क्या लगेगा ।"

मैं हँस पड़ा । "तुम विवाह-वेदी पर बैठने तो जा नहीं रहीं ।" मैंने कहा ।

"तो टूनी क्या विवाह कराने जा रही है ?" राधा ने पूछा ।

"वह यूरोप में रहकर आई है । वहाँ तो साधारण रूप में लड़कियाँ ऐसे ही बन-ठनकर निकलती हैं । तुम तो यूरोप में रहकर आई नहीं ।"

"इस पर भी कुछ समय तो लगेगा ही ।"

"जल्दी तैयार हो जाओ और टीमू को भी तैयार कर लो ।"

राधा दूसरे कमरे में गई तो मैंने नौकर को चाय तैयार करने को कह दिया । जब तक राधा कपड़े पहन तैयार हुई, नौकर ने चाय परस दी ।

चाय आदि पीने के पश्चात् जब हम घर से निकले तो साढ़े पाँच बज चुके थे । हम रावी के किनारे जा पहुँचे और वहाँ एक घण्टा-भर टहलकर लौट आए । आज इस पूर्ण काल में टूनी चुप रही । बातें मैं और राधा ही करते रहे । कभी-कभी टूनी अपने विचारों में ऐसी खो जाती कि यदि हम उसमें कुछ पूछते, तो वह प्रश्न को न सुनने के कारण पूछ बैठती, "हाँ । आपने क्या कहा ?"

राधा कहती, "क्या हो रहा है टूनी ! तुम्हें ? तुम घूम हमारे साथ रही हो और ध्यान तुम्हारा न जाने कहाँ है ?"

उसने कह दिया, "मुझको स्विट्जरलैण्ड की याद आ गई थी । जैसे आज हम यहाँ घूम रहे हैं, वहाँ 'बर्न' के समीप एक झील के किनारे मैं मिस्टर फिशर के साथ घूमने जाती थी । वह स्थान इससे सहस्रों गुणा अधिक सुन्दर तथा सुहावना है ।"

इस प्रकार वह बात टाल गई । इस पर भी मैं यह अनुभव कर रहा था कि वह उस दिन के कार्यक्रम से असन्तुष्ट थी । वह इसको बदलना चाहती थी ।

उसी रात राधा ने अपना विचार बताया, "मैं समझती हूँ कि यदि आपने आज का-सा व्यवहार जारी रखा तो टूनी आपसे लड़कर चली जाएगी ।"

"मैं यही तो चाहता हूँ ।"

"आप उसे समझाते क्यों नहीं ? उसको आपसे बहन का-सा स्नेह ही रखना चाहिए ।"

"बात यह है कि उसकी ऐसी भावना बनने में कुछ तो उसकी बुआ का दोष है और यूरोप में जो कुछ उससे हुआ है, उसमें कुछ मेरा भी अपराध है । मैंने ही उसे विलायत जाने की सम्मति दी थी ।"

"परन्तु उसने वहाँ विवाह करना स्वीकार क्यों नहीं किया ? बिना विवाह के

वह क्यों किसी की पत्नी बनी ?"

"वह लुई फिशर के सम्मोहन में आ गई थी।"

"मेरी सम्मति मानिए। उससे विवाह कर लीजिए। मुझको आपत्ति नहीं होगी। इस प्रकार तो जीवन चल नहीं सकता। इस प्रोग्राम को बन्द करना पड़ेगा।"

"मैं इसको बन्द करने का उपाय ही तो कर रहा हूँ। वह अब तुम्हारी अनुपस्थिति में मुझसे मिल नहीं सकेगी।"

अगले दिन टूनी कॉलेज के बाहर पुन: मोटर लेकर आई। मैंने जब कहा, "चलो राधा को साथ ले लें।" तो उसने कहा, "मैं पाँच मिनट के लिए आपसे पृथक् बातें करना चाहती हूँ।"

"यहीं, सड़क पर तो बातें हो नहीं सकतीं। विशेष रूप में यहाँ कॉलेज के बाहर खड़ा रहना मेरे अपमान का कारण बन सकता है।"

"तो कहाँ चलें ?"

"मेरे घर चलो। वहाँ पृथक् में स्थान मिल जाएगा।"

"वहाँ मैं हो आई हूँ।"

"क्या मतलब ?"

"मैं भाभी से कह आई हूँ कि मैं आपसे प्रेम करती हूँ। यद्यपि मैं विवाह नहीं कर सकती तो भी आपके समीप रहना चाहती हूँ।"

"टूनी !" मैंने कहा, "आवेश में आने से कुछ नहीं बनेगा। ये बातें इतनी गम्भीर हैं कि इस प्रकार सड़क के किनारे खड़े होकर करने की नहीं हैं। मेरा कहा मानो। चलो घर पर चलें। वहाँ तुमको अपने मन की बात कहने का पूर्ण अवसर मिलेगा।"

वह चुपचाप मोटर में बैठ गई। मैं भी उसके समीप बैठ गया।

जब हम घर पहुँचे तो राधा टूनी को देख मुस्कराई और बोली, "टूनी बहन ! आओ ! मैं आशा कर रही थी कि तुम आओगी।"

"क्यों क्या हुआ है ?" मैंने पूछा।

"यह, इसी से पूछो।"

"इधर आओ। दोनों आओ।" मैं उनको लेकर बैठक में चला गया।

नौकर को चाय लाने के लिए कह दिया गया। जब हम तीनों बैठ गए तो मैंने राधा से पूछा, "पहले यह बताओ कि आज क्या हुआ है ?"

"आप अपनी बहन से पूछिए न। मुझको विश्वास है कि वह झूठ नहीं कहेगी।"

"हाँ टूनी ! तुम बताओ। ननद-भाभी की लड़ाई हुई लगती है ?"

"बात यह है कि मेरी बुआ धार्मिक विचारों वाली हैं। उन्होंने मेरे मार्ग में

बाधा खड़ी कर मुझमें और आपमें स्वाभाविक व्यवहार नहीं बनने दिया। अब राधा भाभी भी वैसी धार्मिक विचारों वाली स्त्री हैं और यह भी चाहती हैं कि एक मनुष्य और एक स्त्री में जो स्वाभाविक सहिष्णुता है, वह न बन सके।

"जैसे मुझको अपनी बुआ पर रोष है, वैसे ही भाभी पर है। मैं आज दोपहर को यहाँ आई थी। मेरे मन में था कि इनकी चोटी पकड़कर इनका जूड़ा मरोड़ दूँ। परन्तु कठिनाई यह है कि ये मुझको देख ऐसे ढंग से मुस्कराईं और गले मिलीं कि मेरा क्रोध आँसू बनकर निकल गया। यह मुझको घण्टाभर प्यार कर सान्त्वना देती रहीं और मैं बिलकुल टीमू की भाँति इनकी गोदी में पड़ी रोती रही।

"पश्चात् मैं यह कहकर कि अब इस घर में नहीं आऊँगी, चली गई। ये कहती रहीं कि मैं ऐसा न करूँ। अब मैं आपसे पृथक् बात करने के लिए गई तो आप फिर मुझे पकड़कर यहाँ ले आए।"

"तो बात अब राधा के सम्मुख होगी या पृथक् ?"

"चाहती तो पृथक् में थी परन्तु मैं जानती हूँ कि भाभी को सब पता तो लग ही जाएगा। इस कारण छुपाने से कुछ लाभ भी नहीं।"

"अच्छा तो बताओ क्या चाहती हो ?"

"मैं तो यह याचना करना चाहती हूँ कि मुझको आप अपने घर में रख लीजिए। मेरे लिए पृथक् कमरा हो सकता है।"

"इससे लाभ क्या होगा ?"

"मेरे मन को शान्ति मिलेगी।"

"परन्तु मेरे मन में अशान्ति और चंचलता उत्पन्न हो जाएगी।"

राधा ने कहा, "मैं आपको यह कहना चाहती हूँ कि टूनी बहन को भी शान्ति नहीं मिलेगी। यह इसका भ्रम है कि आपके समीप रहने मात्र से इसको सन्तोष हो जाएगा। यह अतृप्त वासना की अग्नि में जलेगी और दूसरों को जलाएगी।"

मैंने कहा, "देखो टूनी ! तुम नित्य मुझसे मिलने चली आया करो। मैं राधा की उपस्थिति में ही तुमसे मिलूँगा। यहाँ रहना तो किसी भी प्रकार उचित नहीं।"

राधा ने आगे कहा, "या तो टूनी से विवाह का निश्चय कर लीजिए, अन्यथा अधिक मेल-जोल उचित नहीं।"

"तो आप लोगों का यह अन्तिम निर्णय है ?" टूनी ने प्रश्न किया।

"हाँ !" मैंने कहा।

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, "संसार में कोई बात अन्तिम भी हो सकती है क्या ? टूनी ! निराश होने का कोई कारण नहीं।"

"भाभी ! तुम जानती हो क्या कह रही हो ?"

"हाँ जानती हूँ। मैं यह जानती हूँ कि इस समय ये तुमको पत्नी नहीं बनाएँगे।

इनका मन नहीं मानता। परन्तु क्या जाने कल क्या हो और इनके विचार बदल जावें।''

''तो मैं इस अनन्त आशा में जीवन-भर संतप्त बैठी रहूँ ?''

''मैंने यह नहीं कहा। तुमको जो मार्ग सुविधाजनक प्रतीत हो, स्वीकार कर लो। मेरी बात तो उस समय के लिए है, जब तुमको और कोई मार्ग न मिले।''

''ऐसी अवस्था में मैं यहाँ से दूर चली जाऊँगी। स्वीडन में, अलास्का अथवा साइबेरिया के किसी उत्तरी नगर में जहाँ जाकर मैं अपनी अग्नि को शान्त कर सकूँ।''

राधा ने ही उत्तर दिया, ''क्या मन की तपस बाहरी बर्फ से बुझ सकती है ? इसके बुझाने का उपाय मन की लगन का मुख मोड़ना है। भगवान् की ओर चित्त लगाओ टूनी ! तुमको सफलता मिलेगी।''

इस समय चाय आ गई परन्तु टूनी उठ पड़ी और यह कह, ''अब मैं जाना चाहती हूँ।'' चली गई। हम दोनों मुख देखते रहे।

मेरे मुख से निकल गया, ''यह कामान्ध प्रतीत होती है। मुझको इस पर दया आती है।''

राधा ने सिर हिलाते हुए कहा, ''श्रीमान्‌जी ! यह प्रेम दीवानी है। राधा और मीरा को आप कामान्ध नहीं कह सकते।''

''इसी कारण कि उन्होंने अपने प्रेम-भाजन को वासना-तृप्ति का साधन नहीं बनाना चाहा था।''

''यह उसका उठकर चला जाना तो यही सिद्ध करता है। देखिए, मैं नहीं चाहती कि किसी स्त्री की दुर्बलता पर कटाक्ष किए जाएँ।''

''ओह ! मैं भूल गया था कि स्त्री जाति की वकालत करने वाला यहाँ कोई बैठा है।''

इस पर हम दोनों हँस पड़े।

मैं मन में विचार करता था कि टूनी का कहीं विवाह हो सके, तो यह समस्या सुलझ सकती है। दुर्भाग्य यह था कि उसका मिस्टर फिशर से विवाह नहीं हुआ था, वह तो वासना के वेग के बह जाने का एक मार्ग मात्र था।

इसके पश्चात् वह मोटर लेकर कॉलेज नहीं आई। जब एक सप्ताह तक वह नहीं आई, तो मैंने उसके घर जाकर उसका समाचार लेना आवश्यक समझा। एक दिन राधा को लेकर उसके पिता की कोठी में जा पहुँचा। मिस्टर थापर रुग्ण थे और कोठी के बाहर लॉन में एक पेड़ की छाया में आरामकुर्सी पर बैठे थे। हमें देख उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की और आदर सहित बिठाया। मैंने उनके स्वास्थ्य के विषय में पूछा। इस पर उन्होंने कहा, ''मुझको कोई भी शारीरिक कष्ट नहीं है। इस पर भी दिन-प्रतिदिन दुर्बलता आती जाती है। जहाँ तक मेरा अनुमान है यह केशव के

व्यवहार के कारण है।"

मेरे लिए यह एक नवीन समाचार था कि केशव का पिता केशव के व्यवहार से दुखी था। यद्यपि यह उचित नहीं था तो भी मैंने पूछ लिया, "क्या हुआ है उसको पिताजी ?"

"तुमको तो लिखता रहता होगा ?"

"मुझको उसका पत्र आये लगभग तीन वर्ष चुके हैं।"

"तो तुम्हें यह पता नहीं कि वह एक अमेरिकन लड़की से विवाह कर चुका है ?"

"मालती से मालूम हुआ था। उसने स्वयं कभी नहीं लिखा।"

"लंदन से वह फ्रांस गया। वहाँ से अमेरिका। पेरिस से उसका पत्र आया था कि वह जापान होता हुआ हिन्दुस्तान पहुँचेगा। परन्तु उसने अमेरिका पहुँचते ही पत्र लिखना बन्द कर दिया। डेढ़ वर्ष के पश्चात् उसका एक पत्र आया, जिसमें उसने लिखा था कि उसने एक लड़की से, जिसका नाम रोमिली है, विवाह कर लिया है। उस लड़की से विवाह की एक शर्त यह थी कि जब तक उस लड़की का पिता जीवित है, वे दोनों अमेरिका में ही रहेंगे। मैंने उसको लिखा था कि वह चाहे जहाँ रहे, परन्तु वर्ष में एक-आध बार यहाँ का चक्कर लगा जाया करे।

"चार-पाँच महीने पूर्व उसका उत्तर आया था। उसमें लिखा था कि रोमिली का पिता सख्त बीमार है और वे तब तक नहीं आ सकते, जब तक उसका देहान्त नहीं हो जाता।

"केशव की इस बेपरवाही के कारण उसकी माँ का हार्ट-फेल हो गया है और वह स्वर्ग सिधार गई है। अब मैं अकेला यहाँ अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा हूँ।

"मैंने अब टूनी को फिलाडेल्फिया भेजा है। वह केशव को भारत आने की प्रेरणा देने गई है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे मरने से पूर्व वह नहीं आएगा।"

"टूनी फिलाडेल्फिया गई है ?"

"हाँ। यहाँ वह उदास भी थी। उसका विवाह भी एक ट्रेजिडी-सा रहा। पहले तो वह विवाह नहीं करती थी। जब किया तो वैधव्य सम्मुख आ उपस्थित हुआ।"

मुझको यह जान कि मिस्टर थापर के बच्चे पिता से अपना जीवन छुपा रहे हैं, विस्मय हुआ। मैंने निश्चय किया कि मैं केशव को लिखूँगा। मैंने केशव का पता पूछ, अपनी पॉकेट-बुक में लिख लिया। पश्चात् इधर-उधर की बातें होती रहीं। एक घण्टा वहाँ ठहर हम चले आए।

इसके पश्चात् मैं लगभग नित्य मिस्टर थापर से मिलने जाने लगा। इससे

उनको सान्त्वना मिलने लगी। धीरे-धीरे वह मेरे साथ अपने घर की अन्तरंग बातों को खोलने लगे। एक दिन टूनी के विषय में बात चल पड़ी। वे वृद्ध महाशय इस पर रो पड़े और कहने लगे, "टूनी को मैं बहुत प्रेम करता था। इसी कारण मैंने उसके नाम आधी सम्पत्ति लिख रखी है। पहले दिन जब मैंने तुमको देखा था, मेरे मन में यह विचार आया था कि तुम उसके लिए उपयुक्त पति होगे, परन्तु सब काम मेरी बहन ने बिगाड़ दिया।

"अफ्रीका की भूमि कुछ ऐसी है कि वहाँ रहता हुआ मनुष्य अपनी बुद्धि खो बैठता है। कदाचित् उस देश में धनप्राप्ति की सुविधा के साथ मतिभ्रष्ट होने की सुविधा भी बनी हुई है। रुक्मिणी का विवाह बहुत ही छोटी अवस्था में हो गया था और उसका पति छोटी अवस्था में ही उसे लेकर नैरोबी चला गया था। वहाँ की भूमि धन उगलती है। दस वर्ष में रुक्मिणी के पति ने दस लाख रुपया कमा लिया। रुक्मिणी के कोई सन्तान नहीं हुई। उसने बहुत ही ओषधियाँ कीं, जादू-टोने किए परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला। वह भारत आई तो टूनी एक वर्ष की थी। वह उस पर मुग्ध हो गई और उसने उसको गोद ले लिया। उसी समय उसने उसके नाम चालीस हजार बैंक में जमा करा दिया।

"उसी काल में जब रुक्मिणी यहाँ थी, तुम हमारे यहाँ आने लगे। किसी कारण से तुम उसकी दृष्टि में नहीं भाए। दो वर्ष यहाँ रहकर रुक्मिणी नैरोबी चली गई और पाँच वर्ष पश्चात् वह लौटी। इस समय उसके पति ने अपने भाई के लड़के को गोद ले लिया था। वह लड़का टूनी से दो वर्ष बड़ा था। अब रुक्मिणी के मन में यह भूत सवार हुआ कि टूनी का विवाह उस लड़के के साथ हो जाए। इधर उसने तुममें और टूनी में घनिष्टता बढ़ते देखी तो उसने रोकना चाहा। तुम और टूनी पर प्रतिबन्ध लगाने शुरू कर दिए।

"मैंने रुक्मिणी के देवर के लड़के को देखा था। मुझे उसमें कोई आपत्ति नहीं थी। परन्तु प्रश्न टूनी का था। ज्यूँ-ज्यूँ उस पर प्रतिबन्ध लगते गए, वह तुम्हारी ओर अधिक और अधिक आर्कषित होती गई।

"धीरे-धीरे टूनी के मन में तुम्हारे लिए अपार प्रेम बन गया। अब तुम उसका परिणाम जानते हो। उसका विवाह मिस्टर फिशर के उसके मन की 'डिफीटिज्म' (मन की परास्त अवस्था) के कारण था। उसके भाग्य में वह भी नहीं रहा।

"जाने से पूर्व उसने बताया था कि उसने पुनः तुमसे सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की थी परन्तु तुमने स्वीकार नहीं किया।

"इस पर भी तुम्हारे लिए उसके मन में किसी प्रकार का रोष नहीं था। उसने रोते हुए मुझसे कहा था कि तुम्हारे दृढ़ संकल्प से वह अपने मन में तुम्हारे प्रति और भी अधिक श्रद्धा तथा भक्ति लिये जा रही है।"

मेरे मन में मिस्टर थापर के लिए बहुत दया आई। एक दिन मैं हठ करके उन्हें

एक चिकित्सक के पास ले गया। उनके रक्त, कफ, टट्टी, पेशाब की परीक्षा की गई। रक्त-स्वल्पता के अतिरिक्त और कुछ पता नहीं चला। मिस्टर थापर को कोई रोग नहीं था। रक्त अधिक करने के लिए भाँति-भाँति की ओषधियाँ दी जाने लगीं। परन्तु कुछ प्रभाव नहीं हो रहा था।

मेरे साथ कभी-कभी राधा भी जाती थी। यथाशक्ति हमारा यह प्रयत्न रहता था कि उनकी देखभाल हो। कोठी के नौकरों पर तथा उनके सामान पर दृष्टि रखनी पड़ती थी। ओषधि से अधिक हमारा प्रयत्न रहता कि उनका मन बहलता रहे।

मन बहलने का प्रभाव यह हो रहा था कि धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बनने लगा।

मैंने केशव को पत्र लिखा और उसका उत्तर आया, "विनोद ! चिरकाल से तुम्हें पत्र नहीं लिख सका। इसमें कारण है। अब टूनी यहाँ पहुँच गई है और उसने पिताजी के विषय में पूर्ण समाचार दिए हैं। मैं यहाँ से एक मास में अवकाश पा आ जाऊँगा। रोमिली के पिता का देहान्त हो गया है और उनकी सम्पत्ति, जिसकी वह स्वामिनी है, किसी उचित स्थान पर एकत्रित की जा रही है। मैं समझता हूँ कि इस कार्य में लगभग एक मास लगेगा। प्रबन्ध पूर्ण होते ही मैं लाहौर चला आऊँगा।"

मैंने वह पत्र मिस्टर थापर को दिखाया। इससे उनको भारी प्रसन्नता हुई और उनका स्वास्थ्य द्रुत गति से सुधरने लगा।

इस समय एक घटना घटी। मिस्टर थापर स्नानागार में पाँव फिसलने से गिर पड़े और उनके पक्षाघात हो गया। मैं कॉलेज में था, जब यह समाचार मुझे मिला और मैं तुरन्त ही कोठी पर जा पहुँचा।

वहाँ जाकर पता चला कि साहब तीन घण्टे तक गुसलखाने से नहीं निकले तो नौकरों को सन्देह हुआ। उन्होंने दरवाजा तोड़कर देखा। थापर साहब अचेत पड़े थे।

उसी समय डॉक्टर को बुला लिया गया था और चिकित्सा होने लगी।

जब मैं पहुँचा तो डॉक्टर वहीं था। मैंने उनसे पूछा, "क्यों डॉक्टर साहब ! क्या होगा ?"

"ये बच जाएँगे, ऐसी आशा करता हूँ, परन्तु शायद जीवन-भर के लिए अपाहिज के रूप में।"

मैंने कहा, "किसी अन्य अधिक योग्य डॉक्टर से राय करने की आवश्यकता हो तो अवश्य करिये। खर्च की चिन्ता न करें।"

ऐसा ही किया गया। दो घण्टे में डॉक्टरों की कौन्सिल बैठ गई। बहुत विचारोपरान्त चिकित्सा आरम्भ हुई। मैंने राधा को बुलवा लिया और दूसरी ओर

फिलाडेल्फिया 'केबल' भेज दिया । मिस्टर थापर के एक सम्बन्धी, जो दूर के रिश्ते में भाई लगते थे और जो जालन्धर के पास एक गाँव में रहते थे, को चिट्ठी लिख दी । इसके अतिरिक्त मैं किसी अन्य को जानता नहीं था ।

राधा ने दिन-रात वहीं रहना आरम्भ कर दिया और मिस्टर थापर की सेवा-सुश्रूषा करने लगी । तीन नर्सें रख ली गईं और नौकरों से काम लिया जाता रहा ।

टीमू इस समय चार वर्ष का हो गया था और अपनी दादी के पास रहता था । मैं भी थापर साहब की कोठी में रहने चला आया । समय पर कॉलेज जाता था और कोठी में लेक्चर की तैयारी में जो समय लगता था, उससे अतिरिक्त थापर साहब के पास ही समय गुजरता था ।

पाँच दिन के पश्चात् मिस्टर थापर ने आँखें खोलीं और दस दिन पश्चात् उनकी ज़ुबान खुली । इस तरह लगभग एक मास पश्चात् उनका मस्तिष्क काम करने योग्य हो गया । वह अपनी परिस्थिति को समझ बातें करने लग गए ।

एक दिन मैं और राधा, दोनों उनके पलंग के समीप कुर्सियों पर बैठे थे । नर्स उनको खाना दे रही थी । एकाएक मिस्टर थापर ने कहा, "विनोद जी ! मैं आपसे प्राइवेट में एक बात करना चाहता हूँ ।"

मैंने नर्स की ओर देखा तो वह चुपचाप बाहर चली गई । उसके चले जाने के पश्चात् उन्होंने मुझसे कहा, "कितने दिन हो गए हैं मुझे बीमार पड़े ?"

मैंने कैलेंडर की ओर देखकर कहा, "छत्तीस दिन ।"

"और तब से तुम और राधा यहीं मेरी सेवा में हो ?"

"जी ।"

"क्यों ?"

"यह मैं नहीं बता सकता । यह मन की भावना है । युक्ति का विषय नहीं । मेरे मन ने कहा कि आपकी देखभाल करनी चाहिए । शायद, मेरे सुषुप्त मन में यह विचार हो, कि अपने मित्र के पिता के जीवन की रक्षा करना मेरा कर्तव्य है । आपकी सज्जनता, जो आपने मेरे यहाँ आने के पहले दिन दिखाई थी, मुझको आज भी स्मरण है । कदाचित् यह कृतज्ञता ही कारण हो ।"

"केशव को सूचना भेजी है क्या ?"

"जी । 'केबल' दिया था । अभी तक उसका कोई समाचार नहीं मिला ।"

"टूनी कहाँ है ?"

"उसका भी कुछ समाचार नहीं ।"

"मेरे एक सम्बन्धी जालन्धर के पास रहते थे ?"

"उनको पत्र भेजा गया था । एक वृद्ध सज्जन, जो अपने को आपका भाई कहते थे, आए थे । वह पन्द्रह दिन यहाँ रहे और जब आप कुछ-कुछ अच्छे होने लगे तो चले गए । उनका पत्र आपके विषय में आता रहता है ।"

"रुक्मिणी ?"

"उनका पता मुझे विदित नहीं था।"

इस समाचार को जान वह गम्भीर हो गए। हम उनके आगे कहने की प्रतीक्षा करते रहे। पन्द्रह-बीस मिनट तक वे कुछ विचार करते रहे, पश्चात् उन्होंने कहा, "विनोद ! मैं अपनी वसीयत करना चाहता हूँ।"

"अब तो आप ठीक हो रहे हैं। इसके लिए अभी बहुत समय है।"

"देखो मिस्टर मनचन्दा मजंग रोड पर दस नम्बर के बंगले में रहते हैं। उनको आज ही बुलाओ। टेलीफोन कर दो। वे आ जाएँगे।

"एक बात और है, शहर में पण्डित कालीचरण वैद्य हैं। उनको बुलाओ। मैं समझता हूँ कि शेष चिकित्सा डॉक्टरों के वश की नहीं।

"पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर को भी टेलीफोन कर दो। मैं उनसे मिलना चाहता हूँ।"

मुझको कुछ ऐसा लगा कि मिस्टर थापर का मस्तिष्क बहुत तेजी से काम कर रहा है। मैंने उनके कथनानुसार सब लोगों को बुलाने से पहले डॉक्टर को बुलाया। मुझको भय था कि उनके इस कार्य से कहीं रक्त-चाप न बढ़ जाए।

जब डॉक्टर आया और उनका निरीक्षण कर सन्तोष प्रकट करके चला गया, तो मैंने वैद्य को बुला लिया।

बैंक मैनेजर तथा वकील अगले दिन आए। उस समय मैं कॉलेज गया हुआ था। राधा कोठी पर थी। मिस्टर थापर ने राधा को भी कमरे से बाहर कर दिया था। दो घण्टा भर वार्तालाप के पश्चात् वे लोग चले गए और राधा ने पुनः वैद्य को बुला लिया। अब उनके परिवार के चिकित्सक डॉक्टर की देख-रेख में वैद्य जी द्वारा चिकित्सा होने लगी।

उस दिन मैं कोठी पर आया तो पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर का पत्र मुझे मेरे नाम मिला। उसमें लिखा था कि मिस्टर थापर के कहने के अनुसार पचास हजार रुपया मेरे अधिकार में रख दिया गया है। मैं उस रुपये को निकालने के लिए अपने हस्ताक्षरों की तीन प्रतिलिपियाँ बैंक में आकर दे आऊँ।

मैं मिस्टर थापर के ऐसे व्यवहार पर चकित रह गया। यह ठीक था कि जब से वे बीमार पड़े थे, मैं लगभग दो सहस्र रुपया अपने पास से व्यय कर चुका था; परन्तु दो और पचास में बहुत अन्तर था।

अतएव मैं मिस्टर थापर के पास पहुँचा। बैंक के मैनेजर का पत्र मेरे हाथ में था। राधा वहाँ बैठी उनको एक पुस्तक पढ़कर सुना रही थी। मुझे पत्र हाथ में लिये अन्दर आते देख उन्होंने राधा को कहा, "ठहरो।" और मुझसे कहने लगे, "तो मैनेजर का पत्र मिल गया है ?

"जी हाँ। परन्तु इतने धन की आवश्यकता न पड़ेगी। कठिन समय निकल

गया है। अब वैद्य जी की चिकित्सा तो इतनी महँगी नहीं। वैद्यजी का अनुमान है कि आप एक महीने तक अपने हाथ से काम कर सकने के योग्य हो जावेंगे। तब आप स्वयं हस्ताक्षर कर रुपया निकलवा लेंगे।

"कोई हर्ज नहीं। जितना व्यय कर चुके हो ले लो और देखो मैंने अपनी वसीयत वकील को लिखवा दी है। वह कल इसको टाइप कर ले आवेगा। उसमें मैंने तुम्हें केशव का स्थानापन्न बना दिया है।"

"क्यों?" मैंने आश्चर्य से पूछा, "आप यह क्या कर रहे हैं?"

"बस, बस! मैं कुछ सुनना नहीं चाहता। अब तुम जाओ। कपड़े बदलकर चाय का प्रबन्ध कराओ। हाँ राधा बेटी! आगे पढ़ो।"

मैं अपने कमरे में आ गया। मेरे मन में यह विश्वास हो गया कि मिस्टर थापर का मस्तिष्क अभी ठीक नहीं हुआ। इस कारण मैंने मन में निश्चय किया कि उनके धन से एक पाई भी नहीं लूँगा। केशव के आने पर एक-एक पाई का हिसाब दे दूँगा।

इस कारण कपड़े उतारने से पहले मैंने पिछले दिनों में जो कुछ थापर साहब की बीमारी अथवा उनकी कोठी के नौकर-चाकरों पर व्यय किया था, उसका हिसाब लिख डाला। इस सबको करते हुए शाम के सात बज गए। मैं अभी जमा-खर्च कर ही रहा था कि राधा आई और मुझको कपड़े पहने मेज के सामने हिसाब-किताब करते देख पूछने लगी, "तो आपने चाय नहीं पी अभी?"

"नहीं! पहले हिसाब लिखना आवश्यक हो गया है। मैंने तो हिसाब रखा नहीं था। मुझको इनके बच जाने की आशा नहीं थी और खर्च किए धन के प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं थी। अब वे रुपया दे रहे हैं, तो हिसाब-किताब रखना ही चाहिए।"

"मुझको भी नहीं मालूम था कि इनकी इतनी सम्पत्ति है। चालीस लाख से ऊपर लिखाई है। मैं वकील साहब के लिए चाय लेकर गई थी तो वह सम्पत्ति का जोड़ कर रहा था। मैंने देखा था। ऐसा प्रतीत होता है कि इन्होंने सबकी वसीयत कर दी है। इस वसीयत से लाभ उठाने वाले कौन-कौन हैं, यह तो पता नहीं चला।"

"देखो राधा! केशव मेरा मित्र है। मैं उसके भाग का एक पैसा नहीं लूँगा। मैंने यह हिसाब लिखा है। दो हजार एक सौ चौबीस रुपये उनके हिसाब में व्यय हुए हैं। अपने भी जन का व्यय इसमें सम्मिलित नहीं किया। इतना रुपया तो ले लूँगा। आगे भी जो कुछ इसी प्रकार व्यय होता रहेगा, लूँगा परन्तु इसके अतिरिक्त एक पाई भी लेने का विचार नहीं है।"

"ठीक है। हम इतना रुपया लेकर क्या करेंगे।"

वसीयत लिखकर रजिस्ट्री करा दी गई और वकील साहब के पास तथा बैंक के लॉकर में एक-एक नकल रखा दी गई। यूँ तो रजिस्ट्री किये कागज की नकल कचहरी से मिल सकती थी, परन्तु मैंने इस पूर्ण कार्य में कोई रुचि नहीं ली। बैंक के पचास हजार का चार्ज मैंने ले लिया। मैं कोठी और मिस्टर थापर का खर्च चला रहा था।

जिस दिन मिस्टर थापर उठकर खाट पर बैठे, उस दिन मैंने केशव को पूर्ण विवरण लिखकर एक 'केबल' भेजा और टूनी का पता पूछा।

इस 'केबल' के उत्तर में केशव का पत्र आया, "मैं यहाँ रोमिली के पिता की सम्पत्ति का प्रबन्ध करते-करते एक मुकद्दमे में फँस गया हूँ। शीघ्रातिशीघ्र भारत लौट आने का प्रबन्ध कर रहा हूँ। टूनी स्विट्जरलैंड चली गई है। उसका पता नीचे लिखा है।"

मैंने यह पत्र मिस्टर थापर को दिखाया तो उन्होंने कहा, "सब व्यर्थ है। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि केशव की बीवी जादूगरनी है। उसने मेरे पुत्र को पागल बना रखा है।

"कठिनाई यह है कि टूनी ने भी कोई पत्र नहीं लिखा।"

"ऐसा प्रतीत होता है कि उसको आपके बीमार होने का पता नहीं चला। अब उसे 'केबल' कर देता हूँ।"

"मत करो। मैंने राधा को अपनी लड़की बना लिया है और टूनी के भाग की सम्पत्ति राधा के नाम लिख दी है।"

"हमने निर्णय कर लिया है कि केशव तथा टूनी के हक की हम एक पाई भी नहीं लेंगे।"

"उनका हक किसने बनाया है?"

"उनका हक आपके घर जन्म लेने से स्वाभाविक ही बन गया है।"

"देखो विनोद ! मेरी सम्पत्ति के दो भाग हैं। एक वह जो मुझे अपने पिता से मिली थी। उसकी कीमत आज दस लाख है। मेरे पिता काश्मीर राज्य के दीवान रहे हैं। उनके धन को मैंने बम्बई, कलकत्ता और दिल्ली में कई इमारतों में लगाया है। मेरी अपनी पैदा की हुई सम्पत्ति तीस लाख से ऊपर है। उस भाग को किसी को भी दे देने का मुझे अधिकार है। उसी को मैं तुम दोनों को दे रहा हूँ। केशव के बाबा की सम्पत्ति उसे और टूनी को आधी-आधी मिलेगी।"

"कानून से आपका कथन ठीक है परन्तु मैं केशव का मित्र हूँ और इसके नाते ही उसका धन उसको दे देना चाहता हूँ।"

इस समय तक मिस्टर थापर बरागन बगल में लेकर लॉन में घूमने लग गए थे। मैं उनके साथ कोठी के बाहर टहल रहा था। मिस्टर थापर लॉन में चलते-चलते ठहर गए। वह मेरी आँखों में घूरकर देखते हुए कहने लगे, "तुम कुछ मूर्ख

हो विनोद ! तुमने टूनी से विवाह अस्वीकार कर बुद्धिमत्ता नहीं की थी ! अब भी तुम यही कर रहे हो । पर मैं तुम्हारी भाँति भावुक नहीं । मैंने तुम्हारे और राधा के इस मूर्खतापूर्ण व्यवहार का अनुमान लगा लिया था । इसी कारण वसीयत में एक बात और लिख दी है । यदि किसी कारण तुम दोनों इस धन को स्वीकार न करो तो यह तुम्हारे लड़के सुरेन्द्र को मिले ।''

मिस्टर थापर की इस दूरदर्शिता की बात सुन मैं चुप हो गया । मेरे कहने को कुछ रहा ही नहीं था ।

वास्तविक झगड़ा उस दिन हुआ, जिस दिन केशव अपनी पत्नी लेकर लाहौर आ पहुँचा । मिस्टर थापर अब बिना बरागनों के चल-फिर सकते थे । इस पर भी उनमें पहले जैसी स्फूर्ति तथा चपलता नहीं आ पाई थी ।

हम अपने घर चले जाना चाहते थे परन्तु मिस्टर थापर हमें रोके हुए थे । वे जानते थे कि अपने खाने-पहिनने का व्यय हम अपने पास से कर रहे हैं । इस कारण जब हम जाने को कहते तो वे कहते, ''भाई ! मेरा तो कुछ खाते-पीते नहीं । फिर किस बात का संकोच है ? राधा यदि पुस्तकें पढ़कर सुनाती-सुनाती थक गई है, तो बात दूसरी है ।''

इस प्रकार हमारा जाना फिर रुक जाता ।

एक दिन मैं कॉलेज जाने को तैयार खड़ा था कि केशव अपनी बीवी सहित आ पहुँचा । मैं जल्दी में था, इस कारण उस समय तो सरसरी बात ही हो पाई ।

शाम को जब मैं कॉलेज से लौटा तो राधा को अपना सामान बाँध जाने को तैयार पाया । मैंने समझा कि उसने चार्ज सारा केशव तथा उसकी पत्नी के सुपुर्द कर दिया है । मैंने पूछा, ''तो अब छुट्टी मिल गई क्या ?''

''छुट्टी का प्रश्न ही नहीं रहा । मैं अब यहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकती ।''

''क्यों ?''

''आपके मित्र की बीवी समझती हैं कि हम उनके श्वसुर के नौकर हैं । आते ही मुझको कहने लगी, 'मेरे लिए यह कमरा साफ कर दो और उनके लिए वह । यह ड्रेसिंग टेबल इधर रखो ।' यहाँ तक तो गनीमत थी, वह तो कहने लगी, 'मेरी बैंडिंग खोलकर धूप में डलवा दी ।' मैंने कहा, 'वैरी वैल मैडम !' यह कह मैंने सुन्दर को सब बातें समझा दीं और अपना सामान तैयार करवाना शुरू कर दिया । वे दोनों पिता के कमरे में चले गए थे और अब अपने कमरों में जाकर सो रहे हैं ।

मैंने कहा, ''ठीक ही है । मैं ताँगा मँगवाता हूँ तब तक तुम मिस्टर थापर से नमस्ते कर आओ ।''

''वे सो रहे हैं । आप ताँगा मँगवाइये । मैं उस औरत के उठने से पहले ही चली जाना चाहती हूँ ।''

पिछले कदम मैं लौट गया । भारत बिल्डिंग के समीप ताँगा मिल गया । उसे

लेकर आया तो सुन्दर को मिस्टर थापर के लिए चाय ले जाते देख पूछा, "तो वे जाग पड़े हैं क्या ?"

"जी।"

मैंने सोचा पहले सामान रख दूँ पीछे उनके सम्मुख जाऊँगा।

ताँगे में सामान रखवाया। पश्चात् हम मिस्टर थापर के कमरे में पहुँचे। उन्होंने मुझको देखकर कहा, "आओ विनोद ! चाय यहीं मँगवा लो।"

मैंने थोड़ा-सा असत्य भाषण कर दिया, "पिताजी ! हमारी चाय आज एक अन्य स्थान पर है। मैं समझता हूँ कि अब केशव आ गया है। इस कारण हमको जाने की छुट्टी मिल जानी चाहिए। हम नित्य आकर आपसे मिलते रहेंगे।"

मिस्टर थापर ने राधा की ओर देखा। राधा भूमि की ओर देख रही थी। उन्हें कुछ सन्देह हो गया। उन्होंने पूछा, "राधा ! उस छोकरी ने कुछ कहा है क्या ?"

"नहीं पिताजी, हम समझते हैं कि उनको इस कोठी में निर्बाध विचरने का अवसर मिलना चाहिए। मुझको भय है कि हमारे यहाँ रहने से उनकी स्वतन्त्रता में बाधा न खड़ी हो जाए और यहाँ से शीघ्र ही भाग जाएँ।"

"मैं पूछता हूँ कि तुम्हारे साथ क्या बात हुई है ?"

"बातें तो हुई हैं। पर इस कारण हम नहीं जा रहे।"

"तो तुम जा रहे हो ?"

"हम तो एक मास से जाने का विचार कर रहे थे। अब केशव के आ जाने से हमें जाने में संकोच नहीं रहा। पहले आपको अकेला छोड़ने में भय लगता था।"

"फिर कब आओगे ?"

"हम नित्य आने का प्रयत्न करेंगे।"

"अच्छी बात है। तुम केशव की परीक्षा लेना चाहते हो। कदाचित् तुमको उसके ठीक मस्तिष्क रखने में अभी भी विश्वास है। तुमको शीघ्र ही विदित हो जाएगा कि तुम्हारा विश्वास निराधार है।"

"आपको जब भी हमारी आवश्यकता हो, आप निस्संकोच सुन्दर को भेज बुला लीजिएगा। वह हमारा घर जानता है। मैं कल आऊँगा और पचास हजार का शेष केशव को दे जाऊँगा।"

"अच्छी बात है।"

अगले दिन मैं मिस्टर थापर को हिसाब बताने गया। केशव और उसकी पत्नी मोटर में बैठ कहीं गए हुए थे। मिस्टर थापर बाहर लॉन में बैठे चाय पी रहे थे। मैं गया तो उन्होंने सुन्दर को आवाज दी और मेरे लिए भी वहीं चाय लाने को कह दिया।

जब सुन्दर चाय लाने के लिए चला गया तो मैंने पूछा, "केशव कहाँ गया है ?"

"वह अपनी लाड़ली को लाहौर की सैर कराने के लिए ले गया है। उसकी लाड़ली कहती है कि यहाँ बहुत गर्मी है और उनको किसी पहाड़ी स्थान पर चले जाना चाहिए। जब जनवरी में गर्मी प्रतीत होती है तो जून-जुलाई में तो वह भुन कर मुर्दा हो जाएगी।"

"मैं आपको हिसाब देना चाहता हूँ। पिछले छः मास में आपकी बीमारी पर और कोठी के नौकरों आदि के प्रबन्ध पर सब दस हजार साठ रुपये व्यय हुए हैं। इनका ब्योरा इस कापी में लिखा है।"

"कापी यहाँ रख दो।"

"और शेष मेरे पास बैंक में उन्नीस हजार नौ सौ चालीस रुपये हैं। उनका यह चैक भी इसी कापी में रखे जा रहा हूँ।"

"यह चैक मुझको दिखाओ।" मिस्टर थापर ने हाथ बढ़ाकर कहा।

मैंने कापी में से चैक निकालकर मिस्टर थापर के हाथ पर रख दिया। मिस्टर थापर ने उस चैक को फाड़कर टुकड़े-टुकड़े कर दिया। उन टुकड़ों को भूमि पर फेंकते हुए कहा, "रुपया मिल गया है।"

"यह आप उचित नहीं कर रहे।"

"क्यों?"

"इस रुपये को मैंने यहाँ का खर्चा चलाने के लिए लिया था। अब खर्च चलाने वाले दूसरे लोग आ गए हैं। इस कारण रुपया उनको मिल जाना चाहिए।"

"देखो! राधा मेरी लड़की है। वह छः मास तक अपने पिता के पास रहकर गई है। यह चैक का रुपया मैंने उसको विदाई में दिया है।"

"यह तो कुछ न हुआ। हम तो प्रेम के नाते यहाँ आए थे।"

"और मैं भी प्रेमवश अपनी लड़की राधा को यह दे रहा हूँ।"

मैं नहीं समझ सका कि क्या उत्तर दूँ। इस कारण चुप रहा। सुन्दर चाय ले आया था। मैं पीने लगा। मिस्टर थापर कहने लगे, "रात केशव से मैंने अपनी बीमारी की पूर्ण कथा सुनाई और तुम लोगों के यहाँ आकर मेरी सेवा करने की बात भी बताई। पश्चात् मैंने उसको वसीयत बदलने की बात भी कही। केशव तो इसमें रुचि नहीं रखता था, परन्तु उसकी बीवी के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने पूछा भी कि क्या किस प्रकार लिखा है। मैंने कह दिया, 'नकल मिस्टर मनचन्दा के पास रखी है, जाकर देख सकते हो।'

"मैंने यह कह दिया कि मैंने तुमको और राधा को भी उत्तराधिकारियों में सम्मिलित कर लिया है।"

"यह आपने ठीक नहीं किया। केशव के मन में मेरे लिए मैल आ जाएगी और यह मैं नहीं चाहता।"

"उसको पूरी वसीयत पढ़ लेने दो और फिर देखेंगे कि उसके मन में क्या प्रति-

क्रिया उठती है।"

हम अभी बातें कर ही रहे थे कि केशव अपनी पत्नी के साथ लौट आया। मुझको देख वह तपाक से मिला और थापर परिवार में सम्मिलित होने पर बधाई देने लगा।

"मैं तुम्हारी बधाई का धन्यवाद करता हूँ। साथ इतना और बता देना चाहता हूँ कि न तो मैं और न राधा इसमें से एक पाई भी लेने का विचार रखते हैं।"

"क्यों?"

"यह तुम्हारा धन है। तुम लो। हमें इससे बहुत प्रसन्नता होगी।"

"दैन दि मनी शेल गो टू डोग्स। आई वोंट हैव ए पाई आउट ऑफ युवर शेयर।"

"मैं इसको अपना भाग नहीं समझता।"

इस पर मिस्टर थापर ने हम दोनों की बहस बन्द कराने के लिए कह दिया, "अच्छा-अच्छा, मेरे मरने के पीछे लड़ना। अभी तो वसीयत कार्य में आ नहीं सकती और मरने के पूर्व इसको बदला भी जा सकता है।"

कुछ देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। पश्चात् मैं उठकर चलने लगा तो मैंने कहा, "केशव, अपनी पत्नी का परिचय नहीं कराओगे?"

"कल वह तुम्हारे घर पर आएगी और तुम्हारी पत्नी से क्षमा माँगेगी। तब ही परिचय कराऊँगा।"

"क्यों, क्षमा किस बात के लिए माँगनी है?"

"इसने समझा था भाभी नौकरानी है। इस कारण उसको सफाई आदि करने की आज्ञा देती रही। पीछे जब वह चली गई तो इसने सुन्दर से पूछा, 'वह नौकरानी कहाँ चली गई है?' तब सुन्दर ने बताया कि वह कौन थीं।

"रात इसने बताया कि क्या कर दिया है। वह बात गलती में कही गई थी। मैंने उसे कहा कि चलकर क्षमा माँगनी चाहिए। आज तो वह जा नहीं सकती। वह कल आएगी।"

मैं चला आया परन्तु रास्ते में विचार करता रहा कि केशव ने अपनी बीवी से मेरा परिचय क्यों नहीं कराया। यदि उसने मेरी बीवी को भूल से कुछ अनुचित कह दिया था तो मेरे से परिचय कराने में बाधा क्यों हो गई। उसकी बात मेरी समझ में नहीं आई। मैंने समझा कि केशव की पत्नी के मस्तिष्क में अवश्य कुछ खराबी है। उसने ही मुझसे परिचय पाने में अनिच्छा प्रकट की होगी।

रोमिली के आने के विषय में मैंने राधा से नहीं कहा। न ही उसने पूछा। मैंने रुपये और चैक की बात बताई तो वह चुप रही। मैं भी विचार करता था कि केशव के पिता के द्वारा इस प्रकार दिये धन को ग्रहण करने में कोई हानि नहीं।

इस पर भी हमने उस रुपये को छुआ नहीं। एक तो हमारा गुजारा भली-भाँति चल रहा था। दूसरे हमारी अन्तरात्मा में उस रुपये को अपना समझने में संकोच होता था।

अगले दिन मैंने कॉलेज से आते ही पूछा, "केशव आया था क्या ?"

"नहीं तो। उसको आना था क्या ?"

"मैं समझता था कि वह आएगा।"

चाय आदि पीकर हम घूमने चले गए। दिया जलने के पश्चात् हम लौटे। नौकर से पूछने पर पता चला कि कोई नहीं आया था।

इस पर भी एक दिन रोमिली अकेली आई और राधा से क्षमा माँग गई। राधा ने उस सायंकाल, जब मैं कॉलेज से लौटा तो बताया, "केशव की बीवी आई थी और उस दिन की बात की क्षमा माँगती थी।"

"तुमने क्षमा कर दिया है क्या ?"

"कुछ बात उसकी आँखों में है, जो उसकी बात मानने को विवश कर देती है। उसने कहा 'आई एम वैरी सौरी दैट आई मिसबिहेव्ड विद यू औन दैट डे। आई वाज ए फूल टू टेक यू फार ए सरवैंट।"(उस दिन मैं आपसे असभ्यता का व्यवहार कर बैठी थी, उसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ। मैं आपको नौकरानी समझने की मूर्खता कर बैठी थी।)

"और इतना कह जब उसने मेरी ओर ऐसे देखा कि मैं कुछ कह न सकी। उसने बहुत बातें कीं और अन्त में बहुत ही खुले दिल से हाथ मिलाया।"

"तो तुम्हारी दोस्ती हो गई ?"

पीछे हमको पता चला कि केशव तथा उसकी बीवी उस दिन शाम को ही कोहमरी चले गए थे। हम दोनों मिस्टर थापर से मिलने गए तो पता चला कि केशव और रोमिली बर्फ का दृश्य देखने चले गए हैं।

मिस्टर थापर ने बताया कि टूनी का पत्र आया है। उसने कहा है कि वह कुछ ही दिनों में भारत आ रही है। यद्यपि अब मुझको किसी की भी सहायता की आवश्यकता नहीं तो भी, मैं किसी के आने को मना नहीं करता।

"यदि आपको अकेले यहाँ कष्ट है, तो हम पुनः आपके पास आ सकते हैं।"

"जरा टूनी को आने दो। देखें वह क्या करती है।"

वास्तव में मैं केशव को इतना शुष्क नहीं समझता था। बचपन में वह बहुत सहृदय था। मुझे उसकी अनेक बातें स्मरण थीं, जब वह कष्ट सहकर भी मेरी सहायता करता रहा था। अब वह अपने रुग्ण पिता को छोड़कर अपनी पत्नी की प्रसन्नता के लिए पहाड़ पर चला गया था।

मैं तो इस सब में एक ही कारण समझता था। वह था जीवन से मोह। केवल इस जीवन के ही सुख को उद्देश्य मानने वालों से इससे अधिक आशा भी नहीं की

जा सकती थी। यदि पिता के समीप रहना उसको सुखप्रद प्रतीत होता तो वह अवश्य रहता। ऐसा प्रतीत होता है कि उसको पिता की सेवा करने से पत्नी को प्रसन्न करना अधिक सुखकारी प्रतीत हुआ है।

संसार में स्वार्थ और स्वसुख के आधार पर परस्पर प्रेम तथा सेवा कहाँ तक हो सकती है, केशव ने भली-भाँति प्रकट कर दिया था।

टूनी आई तो एक समस्या और साथ ले आई। उसने एक और विवाह कर लिया था। उसका पति अमेरिका का रहने वाला एक नीग्रो था, जिसका नाम राबर्ट था। यह सम्भव है कि नीग्रो-युवकों में वह सुन्दर तथा बलिष्ठ रहा हो, इस पर भी काले आबनूस की भाँति उसका रंग, सूअर की भाँति सख्त और घुँघराले बाल, चपटी नाक, मोटे-मोटे ओष्ठ और पीछे को बैठा हुआ उसका माथा था।

टूनी को इस नीग्रो से गर्भ रह गया था और वह पाँचवे-छठे महीने में थी।

टूनी लाहौर पहुँचते ही हमसे मिलने आई। मैं कॉलेज से आकर अभी बैठा ही था कि वे दोनों आ पहुँचे। उसने पहुँचते ही अपने पति का परिचय कराया, "विनोदजी ! ये मेरे पति मिस्टर राबर्ट निकोलाई हैं।"

मैं कौतूहल को यत्न-पूर्वक दबाता हुआ उठा और टूनी के पति से हाथ मिलाकर उसे अपने समीप लाकर बैठाया। राधा ने टूनी को अपने समीप बैठाकर पूछा, "तो क्या अब तुम अपनी थाह पा गई हो ?"

"मैं देख रही थी कि मैं इतनी बदकिस्मत तथा बदसूरत हूँ कि दुनिया का कोई साधारण-से-साधारण व्यक्ति भी मुझसे विवाह के लिए तैयार नहीं होता। इस कारण मैंने अपना साथी ऐसा ढूँढ़ा है कि उसको मेरे से विवाह कर कभी भी पश्चात्ताप नहीं हो सकता। ये महाशय मुझसे प्रेम करते हैं और मेरा आदर करते हैं।"

मुझको टूनी के मस्तिष्क की दशा भी बिगड़ी हुई प्रतीत हुई। इस पर भी मैंने और राधा ने किसी भी भाव से अपनी अस्वीकृति प्रकट नहीं की। मिस्टर राबर्ट पढ़ा-लिखा युवक प्रतीत होता था। उसका चाय पीने का तरीका, और बातें करने का ढंग एक सभ्य जाति के व्यक्ति के समान था। इस पर भी वह हमारे ड्राइंग रूम की सफेद पृष्ठभूमि पर एक काली स्याही के धब्बे के समान ही लगता था। राबर्ट का सब कुछ सभ्य होते हुए भी, उसके अन्दर जातीय विशेषताएँ थीं।

नीग्रो अमेरिका में एक हीन जाति समझी जाती है। इस प्रजातन्त्रवादी देश में भी जातीय पक्षपात और विद्वेष बहुत सीमा तक प्रचलित हैं। इसका प्रभाव नीग्रो जाति के स्त्री-पुरुषों के मनों पर होना स्वाभाविक है। इस कारण राबर्ट सब प्रकार से योग्य और कुशल होने पर भी अपने व्यवहार को ठीक रखने में सीमा से अधिक सचेत प्रतीत होता था। यह सतर्कता बेहूदगी की सीमा तक पहुँच गई थी।

जब हम चाय पी रहे थे, राधा और टूनी एक ओर बातें करने लगी थीं, मैंने

राबर्ट से बातें करना आरम्भ कर दीं। मेरे पूछने पर कि आप दोनों की प्रथम भेंट कब और कहाँ हुई, तो उसने बताया, "मैं फिलाडेल्फिया यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट हूँ। रोमिली थापर की पत्नी का सहपाठी था। वास्तव में कॉलेज के दिनों में वह मेरी प्रेमिका रह चुकी है। मैं उसके अन्य प्रेमियों में से एक प्रिय प्रेमी था।

"रोमिली एक अति आकर्षक युवती है। उसका पिता बहुत ही धनी आदमी था। वह सहस्रों एकड़ भूमि का मालिक था। उसकी पत्नी अर्थात् रोमिली की माँ, जो इटेलियन जाति की थी, की मित्रता फार्म के एक रेड इंडियन मैजर से थी और कदाचित् रोमिली का बाप भी वही है। रोमिली में इटेलियन माँ का सौन्दर्य और रेड इण्डियन पिता का सम्मोहिनी प्रभाव है। कॉलेज में वह सब विद्यार्थियों की प्रिया थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इसे चाहने में उसके पिता का धन भी सहायक था। वह अपने पिता की सम्पूर्ण सम्पत्ति की उत्तराधिकारिणी थी।

"मैं उससे विवाह की कभी आशा नहीं रखता था और वास्तव में मेरा प्रेम बिना किसी प्रलोभन के था। इस पर भी मेरे काले रंग के कारण वह कभी-कभी मुझको पाँवों से ठोकर भी मार देती थी। इस दुर्व्यवहार के पश्चात् जब मैं उससे तटस्थ रहने लगता था, तो वह मुझसे ऐसे ढंग से बात करती थी और अपनी आँखों से इस प्रकार सम्मोहित करती थी कि मैं उसके दुर्व्यवहार को भूल पुनः उसके पास चला जाता था।"

"वह पास हुई तो अपने पिता के पास चली गई। वहाँ जाकर उसने मुझे अपने पिता के फार्म पर नौकर करवा दिया। मैं वहाँ इस आशा पर गया था कि हमारा विद्यार्थी जीवन का प्रेम वहाँ भी चलता रहेगा, परन्तु मेरे वहाँ पहुँचने से पूर्व मिस्टर थापर वहाँ आ टपके। उनसे रोमिली के विवाह की तिथि भी निश्चित हो चुकी थी। रोमिली ने बताया कि इस हिन्दुस्तानी युवक से उसकी शर्तें तय हो चुकी हैं। वे यह कि जब तक उसके पिता का देहान्त नहीं हो जाता वह अमेरिका में रहेगा। और रोमिली अपने पूर्व सम्बन्ध त्याग कर उसकी 'फेदफुल' (निष्ठावान) बीवी बनकर रहेगी। रोमिली की सम्पत्ति का वह प्रबन्ध करेगा और जो कुछ उसको अपने पिता से मिलेगा उसी सम्पत्ति में मिला देगा।

"यह सब कुछ सुन रोमिली से मैंने पूछा, 'तो मुझको किसलिए बुलाया है ?' उसने बताया कि अपने विद्यार्थी जीवन के प्रियतम व्यक्ति को कुछ उपहार देने के लिए।

"मैं वहाँ पर मैनेजर के रूप में काम करने लगा। रोमिली की सहायता से और अपनी योग्यता से मैं उनके फार्म में जनरल मैनेजर बन गया। मैंने अपनी योजनाओं से लाखों डालर वार्षिक उनकी आय में वृद्धि की है। पिछले वर्ष मिस्टर थापर की बहन मिस मालती वहाँ पहुँची और हम परस्पर प्रेम करने लगे। हमारा विवाह हुआ तो मैं रोमिली की नौकरी छोड़कर मालती के साथ स्विट्ज़रलैंड चला गया।

कुछ दिन हुए आपका एक 'केबल' मालती को मिला था कि उसका पिता सख्त बीमार है। तब से ही हम आने का प्रबन्ध कर रहे थे। मेरा 'विसा' बनने में देरी लग गई थी।"

मैंने पूछा, "आप मालती से प्रसन्न हैं?"

"मैं इनकी पूजा करता हूँ।"

"रोमिली और मालती में किसको अधिक चाहते हैं?"

"रोमिली से मैं कभी भी विवाह की आशा नहीं करता था। अमेरिका में गोरी स्त्री नीग्रो से विवाह नहीं कर सकती। कानूनी प्रतिबन्ध तो नहीं है। इस पर भी सामाजिक पक्षपात इतना प्रबल है कि गोरी स्त्री का नीग्रो पति जीवित नहीं रह सकता। यही कारण था कि मालती से विवाह के पश्चात् हमको स्विट्जरलैंड जाना पड़ा। मालती अमेरिकन लड़की न होते हुए भी गौर वर्ण की है।"

राबर्ट का इतिहास सुन मुझको सन्तोष हुआ। सबसे बड़ी बात यह थी कि टूनी को जीवन आधार मिल गया था। मैंने टूनी से पूछा, "पहला लड़का कहाँ है?"

"वह इस समय बर्न के एक स्कूल में पढ़ रहा है।"

जब वे जाने लगे तो मैंने मालती को, उसके राबर्ट से विवाह के लिए बधाई दी। वह मेरी ओर मुस्कराकर बोली, "इस पर भी मैं आपकी प्रतीक्षा में हूँ। यह तो 'स्टौप-गैप' (अस्थाई प्रबन्ध) ही है।"

टूनी और राबर्ट के चले जाने के पश्चात् राधा खिलखिलाकर हँस पड़ी। मैं उसके मन की बात का अनुमान लगाकर मुस्कराता रहा। हँसने के पश्चात् उसने पूछा, "क्यों जी! यह क्या है?"

"विवाह है और क्या है? ऐसा प्रतीत होता है कि अब टूनी जीवन-भर के लिए बँध गई।"

"मुझको उस पर दया आती है।"

"क्यों, क्या हुआ है उसको? देखो राधा! मैंने उसके पति के साथ एक घण्टा-भर बात की है। वह बहुत ही योग्य प्रतीत होता है। वह पढ़ा-लिखा है और कला की प्रवृत्ति भी उसमें बहुत है। टूनी का चुनाव ठीक ही प्रतीत होता है।"

"पर देखिए न उसका काला रंग, दूध समान श्वेत आँखें, मोटे-मोटे लाल ओष्ठ और चपटी नाक देखकर पेट में कुछ उबलने लगता है।"

"यह सब पक्षपात की बातें हैं। केवल संस्कारों के कारण ही तुम ऐसा समझती हो। कई देव कन्याएँ दानवों से विवाह कर आनन्द भोगती थीं और ये नीग्रो दानवों की ही सन्तान हैं।"

"मुझको तो उसका विचार करते ही कै आने लगती है।"

मैं हँसा तो वह भी हँस पड़ी। अगले दिन हम टूनी से मिलने के लिए मिस्टर थापर की कोठी पर गए। टूनी और राबर्ट बाजार में कुछ खरीदने गए हुए थे।

मिस्टर थापर सदा की भाँति लॉन में पेड़ की छाया में बैठे हुए चाय की प्रतीक्षा कर रहे थे। हमें देख वे खिलखिलाकर हँस पड़े। जब हम उनके समीप बैठ गए तो वे कहने लगे, "टूनी और राबर्ट को 'रिटर्नविजिट' करने आए हो?"

"जी हाँ!" राधा ने कहा।

"कैसा लगा है उसका यह चुनाव?"

"ये कहते हैं," राधा ने मेरी ओर संकेत करते हुए कहा, "कि मिस्टर राबर्ट बहुत ही सज्जन और योग्य पुरुष हैं।"

"मैंने सज्जन नहीं कहा, पिताजी!" मैंने राधा के वक्तव्य का संशोधन करते हुए कहा, "सज्जनता तो एक-आध घण्टा बातें करने से पता नहीं चलती। हाँ बात-चीत से मैं यह समझ पाया हूँ कि राबर्ट पढ़ा-लिखा और योग्य व्यक्ति है। मालती का उस पर मोहित हो जाना स्वाभाविक ही है।"

"मैं क्या समझा हूँ सुनो। राबर्ट फर्स्ट क्लास का 'रोग' (शैतान) और नाटक-कार है। वह अपने हाव-भाव समयानुसार ऐसे बनाता है कि देखने वाले को वह सर्वथा भोला महात्मा प्रतीत होता है।"

हम दोनों यह सुन गम्भीर हो गए। मिस्टर थापर ने अपना कहना जारी रखा। "यह युवक अमेरिकन लड़कियों की वासना-तृप्ति कर उनसे उनका पुरस्कार प्राप्त कर अपनी शिक्षा चलाता था। इसी अर्थ रोमिली ने उसको अपने पास रखा हुआ था। रोमिली के पिता के देहान्त के पश्चात् रोमिली का भारत आना आवश्यक जान, उसने टूनी से विवाह कर लिया है और अब उसके पीछे वहाँ से यहाँ तक चला आया है।

"टूनी तो केवल पर्दा है, जिसके पीछे छुपकर वह अपने इस घृणित धन्धे को चलाएगा।

"देखो विनोद! अफ्रीका में किसी समय बहुत ही उच्च कोटि की सभ्यताएँ प्रचलित थीं। कई कारणों से वहाँ दानव जाति का आधिपत्य हो गया। दानव संस्कृति भौतिक उन्नति को अपना उद्देश्य मान चलती थी। भौतिक उन्नति में सांसारिक सुख, जिसमें वासना-तृप्ति मुख्य है, ही सब कुछ माना जाता है। इस कारण अफ्रीका की जातियों ने वासना-तृप्ति को एक कला बना लिया है। परिणाम यह हो रहा है कि वह सब स्त्रियाँ, जो विषय-लोलुप हैं, इस जाति के किसी पुरुष के पंजे में आ जाती हैं, तो फिर निकल नहीं सकतीं। यही अवस्था रोमिली की है। अब यही टूनी की हो रही है। मुझको इन दोनों पर दया आती है।"

"राबर्ट ने मुझे जो कथा कल बताई थी, उससे मेरा अनुमान इसके विपरीत बना है।"

"ठीक है, प्रोफेसर महोदय! तुम कैमिस्ट्री की समस्याओं को तो समझ सकते हो, परन्तु यह सोशल साइंस है। मैंने इसका अध्ययन किया है और मैं बताता

हूँ कि केशव और टूनी महा नरक की ओर जा रहे हैं।

"कल ही टूनी ने मुझे कह दिया था कि मैं अब ठीक हूँ और वे भारत में किसी उचित स्थान पर रहने का प्रबन्ध करना चाहते हैं।

"मैंने टूनी से कहा, 'टूनी ! तुम्हारा भाई केशव तो कोहमरी गया है। तुम अल्मोड़ा चली जाओ।'

"उसके मुख से निकल गया, 'वह इस समय श्रीनगर में है।'

"मैं तुरन्त समझ गया कि केशव और टूनी में या यूँ कहो रोमिली और राबर्ट में निरन्तर पत्र-व्यवहार चल रहा है। राबर्ट केशव का कार्यक्रम मुझसे अधिक जानता है।"

इस सूचना पर मैं विस्मय में मिस्टर थापर का मुख देखता रह गया। मिस्टर थापर ने यह भी कहा, "केवल इतना ही नहीं, प्रत्युत राबर्ट ने और भी कहा, 'मिस्टर केशव मार्च के अन्त तक श्रीनगर में रहेंगे, पश्चात् वे किश्तवार जाने वाले हैं और उससे पूर्व हमको मिलना है।'

"क्यों विनोद ! मेरा अनुमान ठीक है अथवा नहीं ?"

मैं अभी भी चुप था। इस समय सुन्दर चाय ले आया था और हम सुन्दर के सामने बात करना नहीं चाहते थे। मिस्टर थापर ने कहा, "मेरे लिए मक्खन और टोस्ट ले आओ और इनके लिए मिठाई।"

इस समय टूनी और राबर्ट आ गए। सुन्दर को मोटर पर से सामान उठाकर अन्दर ले जाने को कह हमारी ओर लॉन में चले आए। उनके लिए कुर्सियाँ मँगवाई गईं और वे बैठ गए। उनके लिए भी चाय लगा दी गई।

मैंने पूछा, "टूनी ! अब तो तुम लाहौर स्थाई रूप में ठहरोगी न ?"

"यह मिस्टर राबर्ट की रुचि पर निर्भर है। आज हम माल पर कुछ सामान खरीदने गए थे। राबर्ट को न तो यह जगह पसन्द आई है और न ही यहाँ की दूकानें।"

"इसका अर्थ यह हुआ कि तुम्हारे पिताजी इस वृद्ध-अवस्था में अकेले रहेंगे ?"

"आप जो हैं। मैंने सुना है कि पिताजी ने राधा भाभी को अपनी लड़की बना लिया है और अपनी आधी सम्पत्ति इनके नाम कर दी है।"

"परन्तु क्या तुमको यह पता नहीं कि राधा इसमें से एक पाई भी लेने का विचार नहीं रखती। यह सब कुछ अब भी तुमको मिल सकेगा।"

"विनोद जी ! आप नहीं समझे। मेरा सम्पत्ति लेने का न तो विचार है और न ही इस मतलब से मैं कुछ कह रही हूँ। मेरा कहना यह है कि पिताजी की सेवा और देखभाल भाभी ने की है और कर सकती हैं। पिताजी उनकी देखभाल से सन्तुष्ट हैं। अतएव हमें छुट्टी मिलनी चाहिए। मुझको जो कुछ बाबा की सम्पत्ति से मिला है, वह मेरे लिए पर्याप्त है।"

मैं चुप रह गया, परन्तु मिस्टर थापर ने पूछा, "यह तुमको किसने कहा है कि मैंने वसीयत में इनको उत्तराधिकारी बनाया है?"

"केशव ने श्रीनगर से लिखा है।"

"केशव ने अथवा रोमिली ने?"

"एक ही बात है।"

"तुमको लिखा था अथवा राबर्ट को?"

"इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ता।"

मिस्टर थापर चाय की चुस्कियाँ लगाकर पीने लगे। इस पर राबर्ट ने कहा, "डीयर सर! हम अभी युवक हैं। हमें संसार का सुख भोगना है। आप हमारे साथ घूम नहीं सकते। अतएव हमें आपको घूमने-फिरने की स्वीकृति दे देनी चाहिए। फिर हम बीच-बीच में यहाँ आते रहेंगे।

"प्रोफेसर साहब यहाँ पर हैं ही। उनके पास हमारा पता रहेगा। कभी आवश्यकता पड़े तो आप लिख भेजिएगा। हम चले आएँगे।"

मैं समझ गया कि राबर्ट टूनी से अधिक चतुर व्यक्ति है। भारतवर्ष की रियासतों में सेवक राजाओं-महाराजाओं से अधिक सभ्य होते हैं। इसका कारण यह है कि उनका जीवन ही खुशामद और दूसरों को प्रसन्न रखने में व्यतीत होता है। वे अपनी कार्य-सिद्धि के लिए सब कुछ करने को तैयार रहते हैं। मुझको कुछ ऐसा भास हुआ कि राबर्ट उसी श्रेणी का व्यक्ति है।

राबर्ट का उत्तर सुन मैंने पूछा, "तो आप लोग कब जा रहे हैं?"

"कल।"

"क्या श्रीनगर का मार्ग खुल गया है?"

"हाँ। हमने जान लिया है। मार्ग साफ है।"

इस उत्तर से शेष पूछने को कुछ भी नहीं था। मैं मन में विचार कर रहा था कि मिस्टर थापर के बच्चों की ऐसी विकृत मनोवृत्ति क्यों बनी। केशव और टूनी में एक ही भावना देख मैं समझा कि दोनों की शिक्षा में खराबी है। केशव की स्कूल शिक्षा तो मेरे जैसी हुई थी। देखने में उस समय उनके घर का वातावरण भी ठीक प्रतीत होता था। अब भी मैं उस समय की बातें स्मरण कर पुलकित मन से झूम जाया करता हूँ।

मेरे मन में उठ रही समस्या की कुंजी मिस्टर थापर ने हमारे सामने स्पष्ट कर दी। उन्होंने टूनी के पति से पूछा, "मिस्टर राबर्ट! तुम ईसाई धर्म की दीक्षा लिये हुए हो?"

"हाँ! मेरी क्राइश्चनिंग हो चुकी है। मेरे पिता विलियम, रोमन कैथोलिक हैं। स्वाभाविक रूप में मैं भी उसी चर्च का सदस्य हूँ।"

"तुम्हारा विवाह धार्मिक रीति से हुआ है?"

"जी। हमने कोर्ट ऑफ लॉ में बयान देकर विवाह किया था।"

"रोमन कैथोलिक ढंग से क्यों नहीं ?"

"मुझको परमात्मा और उसके रसूल यीसू-मसीह पर किंचित् मात्र भी विश्वास नहीं। इसके अतिरिक्त गिरजाघर में जाकर किया हुआ विवाह टूट नहीं सकता। अब अमेरिका में धार्मिक विवाह का फैशन नहीं है।"

"तो तुम समझते हो कि मालती के साथ तुम्हारे विवाह के टूटने की भी आशा है ?"

"अभी तक हमारा जीवन बहुत मजे में चल रहा है। परन्तु कौन कह सकता है कि कभी किसी के मस्तिष्क में विकार उत्पन्न होगा ही नहीं ?"

"विनोद ! क्या तुम भी विवाह को इसी प्रकार समझते हो ?"

"पिताजी ! विवाह को इस ढंग से समझना अथवा न समझना एक और विचार के अधीन है। मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या सांसारिक सुख भोग ही है अन्यथा कुछ और भी है। इस धुरी पर जीवन यात्रा काँटा बदलता है।"

"तो क्या आप वैज्ञानिक भी जीवन का उद्देश्य प्रत्यक्ष के अतिरिक्त किसी परोक्ष को मानते हैं ?"

"विज्ञान की बात आप छोड़िए। इसे तो अभी जल और वायु के विषय में भी बहुत कम पता है। प्रत्यक्ष, अर्थात् वह, जो हम इन्द्रियों द्वारा जान सकते हैं, बहुत ही कम है। एक सीमा के उपरान्त हमको युक्ति का आश्रय लेना पड़ता है। अब देखिए। हम यह मानते हैं कि लोहे के छोटे-से-छोटे कण का भार हाइड्रोजन के ऐसे कण से छप्पन गुणा अधिक है। यह हम प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं जान सकते। इसके जानने में युक्ति का प्रयोग करना पड़ता है। इसी प्रकार इस जीवन के सम्बन्ध में कुछ बातें हैं, जिनको हम प्रत्यक्ष नहीं कर सकते, परन्तु युक्ति से सिद्ध करते हैं।"

"वे क्या बातें हैं ?"

"शरीर के अतिरिक्त प्राणी में आत्मा का अस्तित्व है। यह युक्ति से सिद्ध होता है।"

"इसके माने बिना भी तो काम चल सकता है।"

"हाँ। जैसे टूनी और केशव का चल रहा है। परन्तु इसको काम चलना कहते हैं क्या ?"

"तो काम चलना किसे कहते हैं ?"

"टूनी से अच्छा तो राधा का चल रहा है। टीमू के जन्म के पश्चात् एक समय ऐसा आया था कि वह सूखकर काँटा हो गई थी। दिन में आठ-दस दस्त आते थे और ज्वर एक सौ एक बना रहा था। उस समय पेट में असह्य वेदना उठती रहती थी।

"मुझको राधा के बचने की कोई आशा नहीं थी। इस पर भी राधा चुपचाप

वेदना सहन कर रही थी। एक दिन मैंने पूछा, 'राधा ! कैसा अनुभव करती हो ?'

"उसने उत्तर दिया, 'कष्ट तो तो बहुत हो रहा है, परन्तु अभी मृत्यु समीप प्रतीत नहीं होती। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा है कि मेरे कर्मफल अभी शेष हैं। फिर अभी टीमू भी बहुत छोटा है। उसे छोड़कर जाना भी भला प्रतीत नहीं होता।'

"मैंने उसको सान्त्वना देने के लिए कहा, 'मरने की बात नहीं पूछ रहा। मैं तो शरीर के कष्ट की बात पूछ रहा हूँ।'

" 'कष्ट तो है और पहले से अधिक ही है। परन्तु जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसका भार भी तो चुकाना है। मैं अभी मरूँगी नहीं।'

" 'यह मरने की बात बार-बार क्यों कह रही हो ?'

" 'देखिए मेरे शरीर और आत्मा में संघर्ष चल रहा है। मैं मरना नहीं चाहती और मुझे विश्वास है कि मैं मरूँगी नहीं।'

"बार-बार मरने की बात आने पर मैंने बात बदल दी। परन्तु उसने जैसा कहा था वैसा ही हुआ। उसकी आत्मा की विजय हुई और अब वह सब प्रकार से ठीक है। मैं समझता हूँ कि यह आत्मा की शरीर पर विजय है।"

"नहीं विनोद !" मिस्टर थापर ने कहा, "यह आत्मा नहीं। यह मन था। राधा बहुत ही सुदृढ़ मन की स्त्री है। इससे उसका मानसिक बल शरीर की दुर्बलता के कारण झुका नहीं। सीधा खड़ा रहा है।"

"तो मन शरीर से भिन्न वस्तु है क्या ?"

"दोनों का स्रोत प्रकृति ही है परन्तु दोनों की बनावट भिन्न-भिन्न है। इसी कारण उनमें भेद है।"

"यदि दोनों एक ही स्रोत से निकलते हैं, तो भिन्नता कैसे आ सकती है ? मन में अवश्य कोई और वस्तु सम्मिलित है, जो शरीर में नहीं। इसी कारण शरीर और मन के गुणों में अन्तर है। प्रकृतिवाद के मानने वाले बता नहीं सकते कि वह क्या वस्तु है। जो कुछ भी हो, उसको आत्मा कहने में क्या हानि है।"

"यह विलक्षण वस्तु, जो मन को शरीर से भिन्न बनाती है, शक्ति है और शक्ति तथा प्रकृति एक ही है।"

"जब एक ही है तो भिन्नता क्यों है ? एक में 'पावर ऑफ डिस्क्रीशन' (भेदभाव करने की सामर्थ्य) नहीं है और दूसरे में है। 'पावर ऑफ डिस्क्रीशन' जिससे भी आती है, वह आत्मा है।"

थापर साहब युक्ति से कुछ कह नहीं सके। उन्होंने व्यंग्य के भाव में कह दिया, "इग्नोरैंस ! दाई नेम इज ब्लिस। (अज्ञानता में ही आनन्द है)।"

इस पर मैंने चुप रहना ही उचित समझा। इस वार्तालाप से मैं यही समझ पाया कि केशव और टूनी के विचार उनके पिता के विचारों से बने हैं। प्रकृति ही सबकुछ है। मरने पर मनुष्य उस महान सागर में, जिसका नाम प्रकृति है, लीन हो

जाता है। इस विचार का स्वाभाविक परिणाम ही है कि इस छोटे से जीवन को अधिक-से-अधिक सुखमय करना मनुष्य का परम लक्ष्य हो जाता है। यही केशव और टूनी कह रहे हैं। मिस्टर थापर ने अपने जीवन में सुख भोग किया है। अब केशव और टूनी का समय था। वे क्यों न सुख भोग करें ? उनको पिता की संगति में सुख प्रतीत नहीं हुआ।

केशव और टूनी, जहाँ अपने पिता के जीवन से बाहर हुए, वहाँ मेरे जीवन से भी पृथक् हो गए। इतना ज्ञान मुझको था कि वे कहीं कश्मीर में रहते हैं।

मुझको बहन-भाई, दोनों का व्यवहार पसन्द नहीं था। इस कारण मैंने दोनों को मन से निकाल दिया।

मैं और राधा केशव के पिता से मिलते रहते थे। वे केशव और टूनी से पत्र की आशा करते थे, परन्तु वह पूरी नहीं हुई। टूनी को गए दो वर्ष से ऊपर हो चुके थे।

एक दिन मैं कॉलेज पहुँचा ही था कि मिस्टर थापर का नौकर, सुन्दर, मेरे कमरे के बाहर खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसने कहा, "मैं आपके घर गया था, परन्तु आप मिले नहीं। बीबीजी ने कहा कि मैं आपकी यहाँ प्रतीक्षा करूँ। आप यहाँ ग्यारह बजे मिल जावेंगे।"

"बात क्या है ?"

"साहब ने बुलाया है। बीबीजी तो चली गई हैं। आप भी चलिए।"

मैं प्रिन्सिपल से छुट्टी माँगकर थापर साहब की कोठी में जा पहुँचा। वहाँ तीन-चार मोटरें खड़ी थीं। मेरा माथा ठनका। उनमें एक मोटर थापर साहब के पारिवारिक चिकित्सक, डॉक्टर खन्ना की थी। मैं भीतर गया तो थापर साहब को अचेत पाया और डॉक्टर किसी ओषधि का इंजैक्शन दे रहा था।

इंजैक्शन देने के पश्चात् उन्होंने पुनः स्टैथस्कोप से हृदय की गति देखी। पश्चात् सिर हिलाकर अपना सामान बटोरना आरम्भ कर दिया।

मिस्टर मनचन्दा भी वहाँ पर उपस्थित थे। उन्होंने मुझे देख कहा, "मुझको थापर साहब ने प्रातः छः बजे टेलीफोन पर बुलाया और कहा कि मैं तुरन्त यहाँ पहुँच जाऊँ। मेरे पहुँचने पर उन्होंने कहा कि उनका मरने से पूर्व का बयान लिख लूँ। मैंने डॉक्टर को बुलाने के लिए कहा तो वे बोले, 'उनको टेलीफोन कर चुका हूँ। वे रात को आए थे और एक इंजैक्शन दे गए थे। उस इंजैक्शन का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ। इस पर मैंने रात ही समझ लिया था कि अब मैं जीवित नहीं रहूँगा। इस कारण मैंने अपने सब कागज ठीक कर दिए हैं। वे सब हस्ताक्षर कर यहाँ रखे हैं। आप मेरी एक बात नोट कर मेरे हस्ताक्षर करवा लीजिए।' उन्होंने यह एक लम्बा नोट लिखवाया है। मेरे लिखते-लिखते डॉ० खन्ना आ गए और उन्होंने साक्षी कर दी है। यह बेहोशी तो लगभग आधा घण्टा हुए हुई है।"

डॉक्टर खन्ना कहने लगे, "थापर साहब राधा के आने तक प्रसन्न तथा सचेत

थे और इनके सिर पर हाथ फेर आशीर्वाद देते हुए उनका प्राणान्त हो गया। मैंने यह इंजैक्शन तो अन्तिम प्रयत्न करने के लिए दिया था, परन्तु मैं समझता हूँ कि इससे पूर्व ही प्राणान्त हो चुका था।"

हम तीन-चार दिन से थापर साहब से मिलने आ नहीं सके थे। इस कारण हमको इस प्रकार अन्त समय में उनकी सेवा-सुश्रूषा का सौभाग्य नहीं मिला।

मिस्टर मनचन्दा ने बताया, "कल इनके लड़के केशव का पत्र आया था, जो इस फाइल में लगा है, जो मिस्टर थापर ने मुझे दी है।"

मैंने वह पत्र पढ़ने के लिए माँगा। उन्होंने दिखा दिया। उसमें लिखा था, "माई डियर मिस्टर थापर!"

मैं एक पुत्र को अपने पिता के लिए इस प्रकार का सम्बोधन करते देख चकित रह गया। पत्र तो इससे भी विचित्र था। उसने लिखा था, "कई वर्षों की निरन्तर खोज और पठन तथा मनन के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि मैं मानवों से बहुत ऊँचाई पर पहुँच गया हूँ। इस ऊँचाई पर से मनुष्य मात्र मुझको मैल के कीड़े के समान गन्दगी में लथपथ विचरते प्रतीत हो रहे हैं। इस ऊँचाई पर से तो आस्तिकों के भगवान् भी नीचे रह गए हैं।

"श्रीनगर में एक पुस्तक है, जो महाराजा के पुस्तकालय से मिली है। उसमें एक विचित्र कथा मिलती है। वह मैंने पढ़ी। पुस्तक तो फारसी में है और उसका अनुवाद अंग्रेजी में मिला। उसमें जो सबसे मजेदार बात थी वह यह है---

"दानव मिस्र तथा अफ्रीका के रहने वाले थे। वे न तो परमात्मा को मानते थे और न ही आत्मा को, जो जन्म-जन्मान्तर तक भटकता रहे। भगवती प्रकृति को ही सब माया चराचर सृष्टि का कारण मानते थे। वे उसी के उपासक थे।

"यही कारण था कि उन्होंने माँ भगवती की कृपा से बहुत उन्नति की थी। भगवती ने दानवों को सहस्रबाहु बना दिया। वे अपनी सहस्रबाँहों से संसार पर राज्य करते थे और प्रकृति के अनेकानेक रूपों का भोग करते थे।

"उनकी संस्कृति में विवाह प्रथा प्रचलित नहीं थी। पुरुष-स्त्री का सम्बन्ध प्रकृति के नियमों के अधीन ही होता था। यौन-सम्बन्ध के लिए भुक्त और भोक्ता की स्वीकृति ही मुख्य थी।

"इस प्रकार के अबाध यौन-सम्बन्ध का एक स्वाभाविक परिणाम यह था कि सृष्टि उत्पत्ति कम होती थी। भोग आनन्द अपार था। उसमें यह कहना कि अमुक किसी की भगिनी है और अमुक पत्नी, कठिन हो जाता था। स्त्री-पुरुषों को यौन-सम्बन्ध के लिए दूर-दूर भटकना नहीं पड़ता था।

"दानव मिस्र, फिलस्तीन, इराक, ईरान से बढ़ते-बढ़ते देवलोक पहुँचे। देवता लोग यज्ञ, कर्म-धर्म के बन्धनों से बँधे हुए और सामाजिक शृंखलाओं में जकड़े हुए इस स्वतन्त्र जाति का विरोध नहीं कर सके। उन्हें अपने स्वर्गलोक को, जो क्षीर

सागर (केस्पियन सी) के किनारों पर था, छोड़कर हिमाचल की बादियों में भागकर सिर छुपाना पड़ा।

"इस समय, जहाँ मैं रहता हूँ, वह देवभूमि है। दानवों से भयभीत इन पहाड़ों की ऊँचाइयों पर आकर छुपे हुए निर्धनता, धर्म, कर्म आदि के बन्धनों में बँधे हुए देवताओं की सन्तान यहाँ रहती है।

"मैं अपने को एक सहस्रबाहु दानव के रूप में यहाँ पाता हूँ। मेरे विज्ञान ने मेरे लक्ष-लक्ष बाहु बना दिए हैं और उन लक्ष-लक्ष भुजाओं से मैं इन पर राज्य करता हूँ।

"जब मैं यहाँ आया था, तब इन जैसा ही था। परन्तु अब मैंने राबर्ट की सहायता से यहाँ इन्द्र के प्रासाद जैसा महल बना लिया है और उसमें अपनी विज्ञान की शक्ति से स्वर्गलोक का निर्माण कर लिया है। कभी-कभी कोई देवता, मेरा अभिप्राय है, यहाँ का रहने वाला, इस स्वर्ग की सैर को आता है, तो फिर अपने भगवान् को भूल जाता है और इस स्वर्गलोक में ही रह जाना चाहता है। वहाँ सोम-रस मिलता है, अप्सराएँ मिलती हैं, मुर्गे के मांस से लेकर कछुओं और मेढ़कों का मांस तक मिलता है। वैज्ञानिक वस्त्र और सबसे अधिक प्रकृति की अपार शक्ति का अवलम्बन मिलता है।

"पूर्ण स्थान मंगलमय बन गया है। मैं इस लोक में दानव-संस्कृति का प्रचार करने के लिए इस स्थान पर उसका परीक्षण कर रहा हूँ। एक गाँव का गाँव मेरे मत का अनुयायी बन गया है और पूर्ण गाँव में सुख-शान्ति विराजमान है।

"इस गाँव में मेरा गृह, इन्द्र के प्रासाद की भाँति है। देवता लोग मेरा चरण रज पाने को लालायित रहते हैं।

"मेरा आग्रह है कि आप यहाँ आ जाइये। आपका स्वास्थ्य सुधर जाएगा और आप भी प्रकृति का भोग करने के योग्य हो जाइयेगा। इस लोक में आने के लिए एक शर्त है। वह यह कि अपने पूर्ण वहम और सामाजिक बन्धन छोड़कर आना पड़ता है।

"यदि आपकी इच्छा हो तो लिखिए। मैं आपको आकर ले जाऊँगा।"

केशव के पत्र को पढ़कर मैं चकित रह गया। मुझको तो यह एक अधूरे ज्ञान की उपज ही प्रतीत हुई। केशव यह भूल गया था कि प्रकृति के उपासकों अर्थात् दानवों की संस्कृति आज भूतल से मिट चुकी है।

उसका अनुमान ठीक ही प्रतीत होता था कि दानव प्रकृति के रहस्यों को देवताओं से अधिक जानते थे। वे प्रकृति के बल से सहस्रबाहु थे परन्तु उनका खुर-खोज नहीं रहा। केशव आज विज्ञान की सहायता से सहस्रबाहु बनने जा रहा है, परन्तु सहस्रबाहु जैसे अन्त के लिए भी तो उसको तैयार रहना चाहिए।

इस पत्र का प्रभाव केशव के पिता पर भिन्न ही हुआ। वह प्रभाव उन्होंने

मनचन्दा साहब को लिखाये वक्तव्य में वर्णन किया था। उन्होंने वक्तव्य में लिखाया था, "मेरे अन्य कागजों के साथ मुझको मेरे पुत्र केशव का अन्तिम पत्र संलग्न है। उसे पढ़कर मेरा उसके प्रति पूर्ण रोष मिट गया है। मेरी शिक्षा रंग लाई है। यद्यपि उसने मेरी शिक्षा का प्रयोग कहीं-कहीं सीमा से अधिक किया प्रतीत होता है, इस पर भी उसने ठीक ही समझा है।

"इस अपार प्रसन्नता से मेरा दिल बैठता प्रतीत हो रहा है। ऐसा प्रतीत होता है कि मैं प्रसन्नता के वेग को सहन नहीं कर सका। दो दिन तक मैं दिल को उभारने का यत्न करता रहा हूँ परन्तु सफल नहीं हो सका। मैं अब मर रहा हूँ।

"इस समय मैं अपनी वसीयत की तसदीक (समर्थन) करता हूँ। हाँ, यदि केशव और टूनी अपने बाबा की सम्पत्ति न लें तो मैं उसको ट्रस्ट के अधीन देना चाहता हूँ। यह ट्रस्ट इस धन को विज्ञान पढ़ने वाले निर्धन और योग्य विद्यार्थियों की सहायता के लिए प्रयोग में लाए।

"मेरे पास समय नहीं कि मैं इस ट्रस्ट के ट्रस्टी नियुक्त कर सकूँ। इस कारण मैं इसका भार प्रोफेसर विनोद पर छोड़ता हूँ।"

इस वक्तव्य के नीचे थापर साहब के हस्ताक्षर थे। साथ ही डॉक्टर और मनचन्दा के साक्षी के रूप में हस्ताक्षर थे।

मिस्टर थापर नगर के विख्यात व्यक्ति थे। इस कारण उनकी अर्थी के साथ नगर के सैकड़ों प्रतिष्ठित लोगों की भीड़ थी। संस्कार के पश्चात् मैंने केशव को लिख भेजा। उसने अपने पिता को अन्तिम पत्र में अपना पता लिखा था।

उत्तर में केशव का एक पत्र आया। इसमें उसने पुनः मेरे एक अपार धन के स्वामी बन जाने के लिए बधाई दी। साथ ही लिखा, "मुझको शोक है कि मैं उनके अन्तिम समय उनके समीप नहीं था। इस पर भी उनकी जीवन घटना समाप्त हुई, अच्छा ही हुआ है। वास्तव में उनका कार्य संसार में समाप्त हो चुका था। जब एक प्राणी बच्चे पैदा करने के अयोग्य हो जाता है, तो प्रकृति के घर में उसका कुछ भी उपयोग नहीं रह जाता। मनुष्य ने व्यर्थ में अपने लिए कार्य बना रखे हैं जिनमें वह लिप्त रहता है। प्रकृति का बच्चे उत्पन्न करने तक ही प्राणी के जीवन को रखना अभिप्रेत है।

"मैं एक दिन लाहौर आऊँगा और तुमसे मिलूँगा।"

मैं यह समझा कि पिता-पुत्र दोनों के मस्तिष्क में अस्वाभाविकता की मात्रा अत्यधिक थी। उनमें वैमनस्य का और पीछे सामंजस्य का कारण भी वही बन गई थी। मुझको कुछ ऐसा भास हो रहा था कि बहन-भाई में भी पट नहीं सकेगी। वे भी एक दिन झगड़ा करेंगे।

मैंने केशव को लिखा कि वह अपना धन लेगा अथवा उसके पिता के कथनानुसार उसका ट्रस्ट बना दिया जाए। इस विषय में उसका कोई उत्तर नहीं आया।

इस कारण ट्रस्ट नहीं बन सका। मैं केशव के उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा।

मैं और राधा ऐसा विचार रखते थे कि हम अपने धन को एक ट्रस्ट के अधीन कर दें; परन्तु मिस्टर मनचन्दा ने बताया कि हम ऐसा नहीं कर सकते। यदि हम धन न लें तो हमारा लड़का इसका स्वामी है और वह नाबालिग होने से धन को न तो किसी को दे सकता है और न ही किसी प्रकार से व्यय कर सकता है।

मिस्टर मनचन्दा की सम्मति थी कि मैं उस धन का चार्ज ले लूँ। नहीं तो सब सम्पत्ति व्यर्थ खो जाने का डर है। उसकी देखभाल की भारी आवश्यकता है। विवश मुझे उस धन को टीमू का स्थानापन्न बन अपने अधिकार में लेना पड़ा।

समय व्यतीत होता गया। मैंने विज्ञान पर कोई अधिकारयुक्त पुस्तक लिखने की सोची। मैं नित्य लाइब्रेरी जाने लगा और 'मानव जीवन में ऐन्जाईम्स का कार्य' इस विषय पर पुस्तक के लिए सामग्री एकत्रित करने लगा। मैंने इसे एक साधारण कार्य समझा था, परन्तु ज्यूँ-ज्यूँ मैं इसका अध्ययन करता गया, मुझको विषय अधिक और अधिक जटिल प्रतीत होता गया।

इस काम पर लगे हुए मुझको लगभग दो वर्ष व्यतीत हो गए थे। कॉलेज के पश्चात् मैं चाय पीता और लाइब्रेरी में जा पहुँचता। इस प्रकार मैं प्राय: पाँच बजे से लेकर रात के आठ बजे तक अध्ययन करता। कभी बकरे, सूअर और चूहों के भिन्न-भिन्न अंगों से रक्त इत्यादि निकालकर टैस्ट-ट्यूबों अथवा क्षुद्रवीण के नीचे अध्ययन करता। जहाँ विषय जटिल होता जाता था, वहाँ यह रोचक भी होता जाता था। जन्तुओं के शरीर से ऐन्जाइम्स निकालकर उनके प्रभाव का अध्ययन करता और फिर अध्ययन के लिए लायब्रेरी जा पहुँचता।

इस प्रकार कार्य चल रहा था। मिस्टर थापर का देहान्त हुए पाँच वर्ष हो चुके थे। एक दिन मैं कॉलेज से निकल लायब्रेरी की ओर जा रहा था कि एक मोटर सड़क पर मेरे पास आकर खड़ी हो गई। मैंने देखा तो उसमें केशव को बैठा हुआ पाया।

केशव ने आवाज दी, "विनोद! आओ।"

मैं उसके साथ मोटर में बैठ गया और उसने मोटर चला दी। मैंने पूछा, "कब आए हो?"

"आज ही आया हूँ। 'नीडोज' में ठहरा हूँ। कुछ खरीद करनी थी। इस कारण दिन-भर उस कार्य में लगा रहा। वह कार्य अभी समाप्त नहीं हुआ। विचार आया कि तुमको मिल लूँ। कॉलेज की ओर जा रहा था कि तुम सामने से आते दिखाई दिए।"

"तो चलो, घर चलें।"

"नहीं, मुझको बहुत जल्दी है। अभी 'ऐलफिन्स्टन' में चाय पीयेंगे और फिर मैं अपने काम में लग जाऊँगा। आशा तो है कि काम शाम के सात बजे तक पूर्ण हो

जाएगा और मैं तुरन्त मोटर में जम्मू के लिए रवाना हो सकूँगा।"

"जब आए हो तो एक-आध दिन रुक जाओ न। मैं आजकल तुम्हारी कोठी में ही रहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिए पृथक् कमरा मिल जाएगा।"

केशव हँस पड़ा। मैंने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा; परन्तु उसने बात बदल दी, "सुनाओ भाभी कैसी हैं?"

"बहुत मजे में है।"

इस समय मोटर ऐलफिन्स्टन के बाहर जा खड़ी हुई। हम उतरकर अन्दर चले गए और केशव ने चाय का आर्डर दे दिया। ऐसा प्रतीत होता था कि उसने कई दिनों से भोजन ही नहीं किया हुआ था। उसने पाँच आदमी के बराबर खाने के सामान का आर्डर दिया था।

मैंने पूछा, "कोई और भी खाने के लिए आने वाला है?"

"नहीं। देखते जाओ विनोद! वहाँ पर हम खूब खाते हैं और सब खाया-पिया हजम हो जाता है।"

वह वहाँ की बातें बताने लगा, "हमने वहाँ के खेतों की उपज दस गुणा कर दी है। परिणाम यह हुआ है कि लोग हमारे भक्त हो गए हैं। जिस पेड़ पर हम विशेष प्रकार की विद्युत्-किरणें छोड़ते हैं, उसके फल कई गुणा अधिक संख्या और आकार में होने लगते हैं। वृद्ध पुरुष अथवा स्त्री को हम विशेष इलैक्ट्रिक बाथ देते हैं और वे पुनः युवा हो जाते हैं।"

"इससे लाभ क्या होगा?"

"मानवों को अधिक सुख और सुविधा मिलती है।"

"तब?"

"तब क्या! वे अपने परमात्मा को भूल मेरी पूजा करने लगते हैं।"

"क्या इस प्रकार अधिक सुख प्राप्त कर उनको सन्तोष हो जाता है?"

"सन्तोष किससे?"

"अपने जीवन से।"

"हाँ। होना ही चाहिए।"

"तुमने इस विषय में जाँच की है?"

"आवश्यकता नहीं समझी। जिसको एक के स्थान पर दस मिल जाते हैं, वह प्रसन्न और सन्तुष्ट नहीं होगा तो और कौन होगा?"

"केशव!" मैंने कहा, "सन्तोष मन का विषय है। इसका प्रभाव आत्मा पर होता है। यह शरीर के भागों से प्राप्त होता भी है और नहीं भी।"

केशव फिर हँसा। इस समय बैरा चाय का सामान ले आया। मैं चाय बनाने लगा, तो उसने बताया, "तुम्हारे मन पर अभी भी आत्मा, परमात्मा का भूत सवार है क्या? क्या इतना धन प्राप्त कर भी तुम सन्तुष्ट नहीं हो?"

"मुझको इस धन से रंच मात्र भी सन्तोष नहीं हुआ।"

"क्या अनर्गल बातें करते हो?"

"मैं यह सब कहीं दान देने का विचार रखता हूँ।"

"तो मुझको दे दो।"

"तुमसे तो मैंने लिया नहीं। जिस समय चाहो, सबका सब, एक-एक पाई तक ले सकते हो।"

केशव मेरे मुख की ओर देखने लगा। उसको मेरे कहने का विश्वास नहीं हुआ था। इस कारण मैंने कहा, "केशव! निर्वाह चलाने से अधिक पदार्थ मेरे लिए कुछ भी अर्थ नहीं रखते।"

"विनोद! तुम मूर्ख हो। तुम जो परमात्मा को मानते हो, क्यों यह नहीं समझते कि परमात्मा ने ही तुमको यह सबकुछ दिलाया है।"

"यदि उसने दिलाया है तो मेरे नाली में फेंक देने पर भी मुझको मिला रहेगा।"

केशव ने मेरी आँखों की ओर देखकर कहा, "दिल तो चाहता है कि तुम्हें और तुम्हारे भगवान् को अंगूठा दिखा दूँ, परन्तु तुमने मेरे पिता की सेवा-सुश्रूषा की है, और चाहे कुछ हो, मैं उनसे बहुत प्रेम करता था। उनके कथन को मिथ्या नहीं होने दूँगा। यह धन तुम्हारा है। चाहे तुम अपने पास रखो चाहे नाली में फेंक दो।"

"तुम अपने रुपयों के विषय में क्या करना चाहते हो?"

"वह तुम दान नहीं कर देना। उसकी मुझको आवश्यकता पड़ सकती है। हाँ, उसकी देखभाल के लिए एक मुंशी रख दो। उचित वेतन दे दिया करना।"

"एक वार तुम चार्ज ले लो। मनचन्दा साहब को हस्ताक्षर कर रसीद लिख दो। तब यथाशक्ति मैं प्रवन्ध करवा दूँगा।"

"ठीक है, मैं उनको लिख दूँगा।"

केशव ने मनचन्दा को लिखकर उचित कागज मँगवा लिये और उन पर हस्ताक्षर करके मेरे पास भेज दिए। मैंने उसकी सम्पति का प्रबन्ध भी अपने मुंशी के हाथ में दे दिया और मिस्टर थापर की सम्पत्ति के दोनों भागों की देखभाल मुंशी द्वारा स्वयं करने लगा।

समय व्यतीत होता गया। टीमू स्कूल में अब छटी श्रेणी में हो गया था। इस समय मेरी ऐनक गुम हो जाने की घटना घटी। इस सब समय मैं अपनी ऐन्जाईम्स पर पुस्तक लिखता रहा था। पुस्तक अन्तिम अध्यायों में आ पहुँची थी। जब एकाएक मेरा विचार किश्तवार, जहाँ केशव का स्वर्गलोक था, जाने का हो गया।

राधा तो इस कारण साथ जाना चाहती थी कि वह मेरी देखभाल रखेगी। मैं इस कारण जाना चाहता था कि मैं केशव के स्वर्गलोक की सैर करना चाहता था।

जब केशव का पत्र आया कि राधा को भी निमन्त्रण है तो हम जाने की तैयारी करने लगे। टीमू का भी साथ जाने का विचार था, परन्तु राधा के पिता ने उसे अपने साथ नैनीताल ले जाने का विचार कर लिया। हम इस पर राजी हो गए। किश्तवार के मार्ग में भारी कष्ट हो सकता था।

लाहौर से कश्मीर के लिए चलने से पूर्व एक और घटना घट गई। मैं राधा को साथ लेकर 'प्लाजा' में पिक्चर देखने गया हुआ था। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि राबर्ट और टूनी मुझसे दो पंक्तियाँ आगे बैठे हुए हैं। जब हम हाल में दाखिल हुए तो मुझे किसी आदमी की आबनूस की भाँति काली गर्दन और घुंघराले काले बालों वाला सिर दिखाई दिया। उसके समीप बैठी स्त्री टूनी ही प्रतीत होती थी। राधा को अपने नम्बर की कुर्सी पर बैठने को कह, मैं आगे बढ़कर अपने सन्देह का निवारण करने लगा। परन्तु इसी समय हॉल में अँधेरा हो गया। इस कारण विश्राम काल में जाँच करने के विचार से मैं वापस अपनी जगह पर आ बैठा। मेरे इस प्रकार लौटने पर राधा ने पूछा, "क्या देखने गए थे?"

"मुझको आगे राबर्ट तथा टूनी बैठे दिखाई दिए थे। अब आधे वक्त रोशनी हो जाने पर देखूँगा।"

"कोई और होगा?"

"हो सकता है। लाहौर में किसी अन्य नीग्रोज को आने की मनाही नहीं है।"

इस समय न्यूज रील आरम्भ हो गई थी और हम देखने लग गए थे।

आधे समय में प्रकाश होने पर मैंने उस पंक्ति की ओर देखा। दोनों सीटें खाली थीं। मैंने समझा कि वे लोग, जो कोई भी हों, बाहर रैस्टोरेण्ट गए होंगे। इस कारण मैं उठकर हाल के बाहर निकल गया और रैस्टोरेण्ट में जाकर उन्हें देखने लगा। मगर वहाँ उस प्रकार का काला आदमी कोई दिखाई नहीं दिया।

जब मैंने राधा को बताया तो उसने चिन्ता प्रकट करते हुए कहा, "सामर्थ्य से अधिक काम करने से आपके मस्तिष्क ने ठीक काम करना छोड़ दिया है।"

इससे बात टल गई। हम पिक्चर देखने लगे।

अगले दिन मैं कॉलेज जाने के लिए तैयार था कि मिस्टर मनचन्दा का टेलीफोन आया। उसने मुझको बताया, "मालती देवी और उसके पति यहाँ आये हुए हैं। मालती अपने भाग का रुपया माँगने आई है।"

"कहाँ है वह?" मैंने चौंककर पूछा।

"यहाँ मेरे ऑफिस में बैठे हैं।"

"तो आपने क्या कहा है इनको?"

"मैंने बताया है कि आप इस समय पूर्ण सम्पत्ति का प्रबन्ध कर रहे हैं। उनको आपसे मिलना चाहिए।

"इस पर मालती ने इच्छा प्रगट की कि मैं आपको टेलीफोन कर दूँ।"

"अब आपकी क्या आज्ञा है ?"

"मैं इस समय तक सम्पत्ति का चार्ज आपको दे चुका हूँ। इस कारण इसमें मैं कुछ कहना नहीं चाहता। मैं उनको आपके पास भेज रहा हूँ।"

"मिस्टर मनचन्दा !" मैंने कहा, "मालती को टेलीफोन पर मुझसे बात करने को कहिए।"

मिस्टर मनचन्दा ने कुछ देर चुप रहने के पश्चात् कहा, "हाँ लीजिए।"

"हैलो !" टूनी की आवाज पहचानी जाती थी।

"टूनी ! कब आई हो ?"

"हम कल आए थे।"

"यहाँ कोठी पर क्यों नहीं आए ?"

"मिस्टर राबर्ट की यही इच्छा थी।"

"देखो, इस समय मैं कॉलेज जा रहा हूँ। मैं मुंशी को तुम्हारा सारा हिसाब बनाने के लिए कह रहा हूँ। शाम को यहाँ आकर ले जाना। पाँच बजे चाय यहाँ कोठी पर आकर पीना। उसी समय चार्ज भी मिल जाएगा।"

टूनी ने तुरन्त उत्तर नहीं दिया। कदाचित् वह राबर्ट से राय कर रही थी। कुछ देर बाद उसने कहा, "अच्छी बात है। मैं पाँच बजे आऊँगी।"

इसका मतलब था कि राबर्ट नहीं आएगा। मैंने उसके लिए आग्रह भी नहीं किया। मैंने मुंशी से जाकर टूनी का हिसाब बना रखने के लिए कह दिया और कॉलेज चला गया।

सायंकाल साढ़े चार बजे आया तो टूनी वहाँ पहले ही बैठी थी। मैंने आते ही पूछा, "मिस्टर राबर्ट नहीं आए ?"

"नहीं ! उनको कुछ काम था।"

मैं जानता था कि टूनी ने यह झूठ बोला है। इस कारण मैंने उसकी आँखों में देखते हुए कहा, "टूनी ! झूठ कब से बोलने लगी हो ?"

"इससे आपको कुछ हानि हुई है क्या ?"

"हाँ हुई है। मेरी बहन टूनी साधारण-सी बात के लिए झूठ बोलने लगी है। वह पतन की ओर जा रही है।"

"तो क्या करूँ ? आपने मुझको ऐसी परिस्थिति में डाल दिया है कि मैं सब प्रकार से बँध गई हूँ।"

"टूनी ! बन्धन मन के होते हैं। शरीर के बन्धनों को बंधन नहीं समझना चाहिए। मन स्वतन्त्र होने से शरीर के बंधन छूट जाते हैं।"

"शरीर की आवश्यकताएँ ही तो बंधन बन जाती हैं और जब उनकी पूर्ति सब स्थानों पर न हो सके तो बंधन अटूट हो जाते हैं।"

"ऐसी अवस्था में तो शरीर का त्याग भी एक उपाय है।"

"शरीर त्याग करने पर क्या रह जाता है ?"

"आत्मा और मन।"

"यह बात गलत है। हमने वहाँ स्वर्गलोक में इस पर परीक्षण किए हैं और हमको शरीर के अतिरिक्त और कुछ नहीं मिला।

"हमने चूहे, बिल्लियाँ और अन्य जानवर लिये और उनको चारों ओर से पूर्ण रूप में बन्द बक्सों में रखकर विद्युत् से जला दिया। वे जलकर भस्म हो गए। शेष कुछ नहीं बचा। सन्दूक खोलने पर कुछ निकलता भी दिखाई नहीं दिया।"

"जीते जानवरों को जला डाला ?"

"एक जंगली मनुष्य पर भी परीक्षण किया गया था।"

मैं तो यह समाचार सुन सन्न रह गया और टूनी का मुख देखता रहा। मुझे चुप देख टूनी ने कहा, "यही बात राबर्ट तथा केशव भैया में मतभेद उत्पन्न करने वाली हो गई और धीरे-धीरे दोनों में लड़ाई हो गई। विवश हमें उनका स्वर्गलोक छोड़ना पड़ा।

"राबर्ट चाहता था कि मनुष्य की आत्मा अथवा जो कुछ भी चेतनावस्था की विशेषता है, वह पकड़नी चाहिए। जब तक तो चूहे, बिल्लियाँ परीक्षण आदि के लिए आती रहीं, केशव भैया इसमें रुचि लेते रहे, परन्तु जब एक दिन राबर्ट ने एक जंगली मनुष्य को बन्द कर उस पर परीक्षण किया तो मतभेद उत्पन्न हो गया। एक दिन राबर्ट दिन-भर लापता रहा और सायंकाल अपने साथ क्लोरोफार्म से अचेत दो मनुष्यों को पकड़कर लाया। केशव भैया ने पूछा कि किसलिए उनको लाया है। राबर्ट ने बताया कि वह आत्मा के विषय में परीक्षण करना चाहता है। केशव भैया इस बात को पसन्द नहीं करते थे। परिणामस्वरूप दोनों में झगड़ा हो गया। इस झगड़े का निर्णय यह हुआ है कि हम स्वर्गलोक से चले आए हैं।"

"तो राबर्ट हठ कर कहा था कि वह मनुष्यों पर परीक्षण करेगा।"

"न केवल यह, प्रत्युत वह मनुष्य का मांस भी खाता था। एक दिन उसने हमें भी खिला दिया। राबर्ट का कहना था कि मनुष्य, पशु, वनस्पति अथवा मिट्टी के ढेले में वह कुछ भी अन्तर नहीं समझता।

"केशव भैया का कहना था कि मिट्टी का खिलौना ही सही, इस पर भी मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट विभूति है। उसका इस प्रकार नाश कर देना उचित नहीं।

"राबर्ट का कहना था कि सर्वोत्कृष्ट भी जब अधिक मात्रा में हो जाए तो व्यर्थ हो जाती है। अमेरिका में गेहूँ जब खाने से अधिक पैदा हो जाता है, तो जलाना पड़ता है। मनुष्य-संख्या पृथ्वी पर बढ़ रही है जो उचित नहीं हैं, जो दुर्बल हैं और जो सभ्य नहीं, उनको मार डालने से पृथ्वी का भार ही हल्का होगा। जब मार डाला तो उसका मांस खाना उसका सबसे अच्छा उपयोग है।

"भैया ने कहा, 'देश के कानून की अवहेलना करने से तो फाँसी लग जाने का डर है।'

" 'मैं ऐसे देश में रहना नहीं चाहता।'

" 'तो कहाँ जाओगे ?'

" 'मैं अफ्रीका के जंगलों में एक कालोनी बनाऊँगा।'

" 'तो ठीक है, यहाँ से जा सकते हो।'

"इस प्रकार बात तय हो गई। राबर्ट वहाँ से चलने की तैयारी करने लगा तो रोमिली ने उसमें और केशव भैया में सुलह कराने का यत्न किया। मैं स्वयं निर्णय नहीं कर सकी थी कि उसके साथ जाऊँ अथवा नहीं। मैंने भी दोनों पक्षों में सुलह कराने में रोमिली का साथ दिया। परिणाम यह हुआ कि नौ महीने तक यह विवाद चलता रहा। केशव भैया इस बात के लिए तैयार हो गए कि यदि राबर्ट नरमांस खाने और उन पर परीक्षण करने छोड़ दे तो वह देवलोक में रह सकता है।

"राबर्ट तो वहाँ से चला जाने के लिए तुला रहा। एक समय तो रोमिली भी केशव भैया को छोड़ राबर्ट के साथ जाने को तैयार हो गई थी। केशव भैया उसके लिए तैयार भी हो गए। फिर न जाने रोमिली के मन में क्या आया कि वह वहीं रह गई।

"मैंने प्रेम से राबर्ट को समझाने का निश्चय किया है।"

"तो तुम भी नरमांस खा चुकी हो ?" राधा अकस्मात् पूछ बैठी।

"खाने के समय तो पता नहीं चला। पीछे पता चला कि वह नरमांस ही था।"

"और इस पर भी तुम इस नरमांस-भक्षक के साथ जा रही हो ?"

"तो और कहाँ जाऊँ ?"

इस समय हमारे सम्मुख चाय लगा दी गई थी। मैंने पीने के लिए प्याली उठाई थी, परन्तु इसी समय मन में विचार आया कि टूनी मनुष्य मांस भक्षण कर चुकी है। मेरा मन ग्लानि से भर उठा और मैं चाय पी नहीं सका। मुझको कै आने को जी करता था। राधा तो कुर्सी की पीठ से टेक लगाए टूनी का मुख बितर-बितर देख रही थी। टूनी ने चाय का एक घूँट पिया और राधा से पूछा, "आप चाय पीते क्यों नहीं ?"

राधा ने आवेश में कहा, "टूनी ! तुम अपना रुपया लो और यहाँ से चली जाओ। तुम्हारा हम लोगों से मिलने आना व्यर्थ है।"

टूनी ने चाय की प्याली मेज पर रख दी और अन्यमनस्क हो राधा की ओर देखने लगी। राधा ने उसे फिर कहा, "सहनशक्ति की भी कोई सीमा होती है, टूनी ! इससे अधिक सहन नहीं हो सकता।"

"क्या हुआ है भाभी ? भल से एक-दो टुकड़े खा लेने में दूषित हो गई हूँ क्या ?"

"नहीं ! तुम नहीं समझीं । तुम्हारा मांस खाना भूल से हो गया । पर अब भी तुम उस हब्शी के साथ दानव बस्ती बनाने के लिए जा रही हो ?"

"वास्तव में मैंने ऐसा करने का अभी अन्तिम निर्णय नहीं किया ।"

"तो पहले निर्णय कर लो । फिर तुम्हारे साथ चाय पीयेंगे ।" इतना कह राधा उठकर दूसरे कमरे में चली गई ।

मैंने कहा, "टूनी ! तुमने मुंशी से हिसाब देख लिया है या नहीं ?"

"देखा है । इस समय मूल सम्पत्ति को छोड़कर आय में से सवा लाख रुपये मेरे आपके पास जमा हैं ।"

"मेरे पास तुम्हारा कुछ भी जमा नहीं । सब-कुछ बैंक में है ।"

मैंने घण्टी बजाई । मुंशी चला आया । मैंने उससे कहा, "सेन्ट्रल बैंक की चैकबुक ले आओ ।"

"तो आप सारा रुपया मुझको देना चाहते हैं ?"

"जितना रुपया तुम्हारा है, उसका तो चैक देता हूँ । शेष के लिए चिट्ठियाँ दे देता हूँ कि उस सम्पत्ति की आप मालिक हैं और जिन-जिनके पास हैं, वे आपसे लेन-देन करें ।"

"मैं यह नहीं चाहती । मैंने देखा कि आपके मुंशी ने प्रबन्ध के सब खर्चे काट लिये हैं । वे ठीक हैं । आप इसी प्रकार प्रबन्ध चलने दीजिए । मुझको अभी एक लाख रुपयों की आवश्यकता है । उसका आप चैक काट दीजिए । कल 'लायड बैंक' से उसका ड्राफ्ट बनवा लूँगी ।"

मुंशी चैक-बुक लाया तो मैंने उसको एक लाख रुपये का चैक मालती देवी के नाम लिखने को कहा । उसने लिखकर मेरे सामने रखा और मैंने हस्ताक्षर कर दिए ।

चैक टूनी के हाथ में दे मैं खड़ा हो गया । टूनी अभी भी अपने स्थान पर बैठी थी । मुझको खड़ा देख उसने कहा, "तो आपकी भी इच्छा है कि मैं चली जाऊँ ?"

"कुछ और काम है तुमको ?"

"मैं राबर्ट के साथ जाने के विषय में आपसे राय करना चाहती हूँ ।"

"वह यहाँ क्यों नहीं आया ?"

"वह जानता था कि आप उनसे मिलना पसन्द नहीं करेंगे ।"

"नहीं । वह डरता था कि मैं उसको पुलिस के हवाले न कर दूँ ।"

"तो आप ऐसा करते ?"

"निस्सन्देह । इस प्रकार तुम उससे छुट्टी पा जातीं ।"

"मैं तो वैसे ही छुट्टी पाने के लिए यत्न कर रही हूँ ।"

"यत्न की क्या आवश्यकता है । अब तुम यहाँ से उसके पास मत जाओ । मैं उससे निपट लूँगा ।"

"क्या निपट लेंगे ? नरहत्या का आरोप उस पर तब तक नहीं लग सकता जब तक केशव, मैं और रोमिली भी साथ में अपराधी के रूप में सम्मिलित न किए जाएँ। जिस मनुष्य पर उसने परीक्षण किया था, वह वहाँ के गाँव का ही था, जो केशव के स्वर्गलोक के अधीन है। जाँच के समय हम सबके फँस जाने का भय है।"

"तो तुम क्या यत्न कर रही हो ?"

"मैं उसे धन देकर बम्बई से विदा करने जा रही हूँ।"

"वह मान गया है क्या ?"

"नहीं। वह नहीं माना। वह मुझको साथ ले जाना चाहता है। पहले चाहता था कि वह स्वयं ही जाकर पुलिस में रिपोर्ट कर देगा, इस प्रकार सब फँस जाएँगे। पीछे जब रोमिली ने उसको यह विश्वास दिलाया कि वह अफ्रीका में कालोनी बनाकर लिखे, तो वह वहाँ उसके पास चली जाएगी। मुझको तो वह हर हालत में अपने साथ ही ले जाना चाहता है।"

"तुम यह निर्णय करो कि तुम उसके साथ जाना चाहती हो या नहीं।"

टूनी गम्भीर विचार में पड़ गई। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ है कि वह अभी भी द्विविधा में पड़ी है। इस पर मैंने उससे कहा, "टूनी ! तुमने उसमें देखा क्या है ?"

"वह बहुत ही योग्य व्यक्ति है। उसने वहाँ एक नयी सृष्टि की रचना कर डाली है, जो बहुत सुन्दर है। साथ ही वह बहुत ही प्यार करने वाला पति है उससे प्राप्त सुख को मैं भूल नहीं सकती।"

"बहुत ही तुच्छ विचार हो गये हैं तुम्हारे टूनी ! मुझको खेद है कि तुम कुछ भी समझती नहीं। यह शारीरिक सुख क्षण-भंगुर है। वास्तविक सुख इससे भिन्न है। वह इन बातों से नहीं प्रत्युत अन्य ढंग से प्राप्त होता है।"

"तो मैं क्या करूँ ?"

"तुम उसके पास अब मत जाओ। मैं अब भी कहता हूँ कि मैं उससे निपट लूँगा। उसको यहाँ आने दो।"

"मैं यह नरमांस की बात प्रकट नहीं होने देना चाहती।"

"मेरी ओर से नहीं होगी। तुम हिन्दुस्तान के कानून से अपने पति के साथ जाने से इन्कार कर सकती हो।"

"यह मैं जानती हूँ। परन्तु दो बातें हैं। एक तो यह नरमांस की बात सर्व-साधारण के सम्मुख नहीं आनी चाहिए और दूसरे मेरा विवाह आपसे हो सकेगा क्या ?"

"एक बात का तुम विश्वास रखो। वह नरमांस की बात कोर्ट में नहीं करेगा। दूसरी बात विचारणीय है। मैं अपनी बहन से विवाह किस नियम से कर सकता हूँ, यह विचार करने की बात है।"

"आप मेरे माँ-जाये भाई नहीं हैं।"

"मैं तुम्हारा मुँह कहा भाई हूँ।"

"तो बात नहीं बनती ?"

"तुम्हारी मलिन बुद्धि में तो मेरी बात आती ही नहीं और न कभी आएगी। मेरा विचार है कि तुम पहले प्रायश्चित कर मन की शुद्धि करो। तब ही तुम कुछ समझ सकोगी।"

टूनी ने चैक उठाया और जाने को तैयार हो गई। मैंने उसको अन्तिम बार कहा, "टूनी बहन ! मेरा कहा मानो, मत जाओ।"

"विचार करूँगी।" पश्चात् वह कमरे से बाहर निकल गई।

मेरा विचार था कि टूनी लौटकर नहीं आवेगी। इस कारण भारी मन से अवश्यम्भावी को स्वीकार करते हुए चुप बैठा रहा। अगले दिन मैंने बैंक के मैनेजर से मिलकर चैक स्वीकार कर लेने को कह दिया। सायंकाल मैनेजर ने मुझे बताया कि चैक का धन दे दिया गया है। इससे मुझे विश्वास हो गया कि टूनी अब सदैव के लिए हमारे जीवन से निकल गई है।

मेरे और राधा के मन में अब केशव के स्वर्गलोक जाने के औचित्य पर विचार होने लगा। राधा ने कहा, "वहाँ नहीं जाना चाहिए।"

मैं उसकी सम्मति से सहमत था। केवल यह बात थी कि केशव को अपने वहाँ पहुँचने की तिथि लिख चुका था। अब मैं विचार कर रहा था कि उसको किस प्रकार अपने वहाँ न पहुँचने के विषय में लिखूँ। राधा का मत था कि सब बात, जो टूनी ने बताई है, लिखकर अपने मन के भाव उस पर प्रकट कर दूँ। मेरा राधा से मतभेद था। नर-हत्या की बात लिखित में नहीं आनी चाहिए और कोई अन्य बहाना ढूँढ़ना चाहिए। इस मतभेद के कारण मुझको किश्तवार न पहुँच सकने की सूचना भेजने में देरी होती गई।

हमारे लाहौर से चलने की तिथि में केवल दो सप्ताह रह गए थे और मुझको तुरन्त अपने वहाँ न पहुँचने के विषय में लिखना आवश्यक हो गया था। मैं एक रात बैठा और उसको एक पत्र लिख डाला। परन्तु वह पत्र राधा को पसन्द नहीं आया। इस कारण उसको फाड़कर दूसरा पत्र लिखने बैठा। इस समय रात के दस बज चुके थे। मैं लिख रहा था, "टूनी ने आपके स्वर्गलोक का चित्र इतना उज्ज्वल खींचा है कि मैं अपनी आँखों उसे देख सकने में सन्देह करने लगा हूँ।"

इसी समय कमरे के दरवाजे में चौकीदार ने आकर आवाज दी, "बाबूजी ! टूनी बहन आई हैं।"

हम दोनों चौंककर खड़े हो गए। मैं घूमा तो टूनी को दरवाजे पर खड़े पाया। उसके मुख, माथे तथा हाथों पर पट्टियाँ बँधी थीं।

"टूनी !" मैंने उसे पुकारा और उसकी ओर बढ़ा। वह लड़खड़ाते कदमों से मेरी ओर आई। मैंने उसे अपनी भुजाओं में ले लिया। वह विह्वल होकर रोने लगी। मैंने उसे सोफे पर बिठाया और उसके सिर पर हाथ फेरकर सान्त्वना देने लगा। राधा उसके दूसरी ओर बैठ गई और उसकी कमर में हाथ डाल उसे अपने अंग से लगा पूछने लगी कि उसे क्या हुआ है।

बहुत रो चुकने के पश्चात् जब उसका मन कुछ हल्का हुआ तो उसने बताया, "मैं उसको रुपया देकर विदा करने बम्बई तक गई थी। जाने से पूर्व एक दिन वह मुझे एक टैक्सी में चढ़ाकर घुमाने ले गया। टैक्सी ड्राइवर भी उसका सजातीय था। बिना किसी प्रकार का संकेत मुझसे अथवा राबर्ट से पाए हमारे बैठते ही उसने टैक्सी चलानी आरम्भ कर दी। मुझको इस पर सन्देह हो गया। मैंने ड्राइवर से पूछा, 'किधर जा रहे हो ?' उसने उत्तर दिया, 'इधर थोड़ी दूर।' मैंने उसको रुक जाने को कहा। उसने टैक्सी और तेज कर दी। मुझको विश्वास हो गया कि राबर्ट और ड्राइवर में पहले ही कुछ बातचीत हो चुकी है। मैंने राबर्ट की ओर देखा तो वह मुस्कराकर मेरी ओर देखने लगा। मैंने अपने मन में निर्णय कर लिया कि मैं मोटर से कूद पड़ूँगी। मुझको यह विश्वास हो गया था कि मुझे किसी एकान्त स्थान पर ले जाकर, मार डालने वाले हैं। मैं कूदने का अवसर देखने लगी।

"मुझको चुप देख ड्राइवर ने टैक्सी पुनः हल्की कर दी। टैक्सी पहाड़ी की एक सड़क पर चढ़ रही थी। एक स्थान पर मोड़ था। टैक्सी वाले ने मोड़ने के लिए टैक्सी हल्की की और मैं दरवाजा खोल कूद पड़ी।

"राबर्ट इतने साहस की मुझसे आशा नहीं करता था। इस कारण वह चकित हो ड्राइवर को 'रोको-रोको' पुकारने लगा।

"मैं सड़क पर कूदी तो एक खड्ड में जा गिरी। मेरे भाग्य से नीचे घनी झाड़ियाँ थीं और मैं उन पर जा गिरी। चोटें तो खूब लगीं, पर मरने से बच गई। गिरने पर मैं बेहोश हो गई थी और ऐसा प्रतीत होता है कि मुझको मर गई समझ वे टैक्सी वापस भगाकर ले गए।

"मुझको बहुत देर पश्चात् चेतना हुई और मैंने देखा कि देहाती स्त्रियाँ मुझे होश में लाने का यत्न कर रही थीं।

"वे मुझको उठाकर थोड़ी दूर पर बने एक झोंपड़े में ले गईं और वहाँ उन्होंने मुझे पट्टियाँ बाँध दीं। रात-भर मैं उनके यहाँ रही और अगले दिन एक स्त्री समीप के एक गाँव से बैलगाड़ी ले आई और उसने मुझे उसमें बैठाकर बम्बई पहुँचा दिया।

"मेरे बम्बई पहुँचने से पूर्व ही राबर्ट रुपया ले जहाज पर रवाना हो चुका था।

"मैंने होटल से लाहौर के बैंक से तार द्वारा रुपया मँगवाया और वहाँ अपनी

चिकित्सा कराने लगी।

"चार दिन और लगे और अब मैं यहाँ हूँ।"

राधा ने टूनी को एक कमरे में ठहरा दिया और अगले दिन डाक्टर को बुला, उसकी नियमित चिकित्सा होने लगी। इस पर भी वह दो ही दिन में केशव के स्वर्गलोक जाने को तैयार हो गई।

"कहाँ की तैयारी हो रही है टूनी ?" मैंने उसको सामान बाँधते देख पूछा।

"केशव भैया के पास जाना चाहती हूँ। वहाँ रोमिली को पूर्ण घटना की जानकारी देनी आवश्यक है।"

"क्यों ?"

"मैं नहीं चाहती कि जैसे मेरा जीवन बरबाद हो गया है, वैसा ही केशव का हो जाए।"

"मैं तो समझता हूँ कि तुम्हारा जीवन बच गया है।"

"हाँ, मरने से बच गई हूँ, परन्तु इसको जीवन बच गया नहीं कह सकते।"

"कहीं तुम राबर्ट के साथ सूडान और वहाँ के नरभक्षकों के किसी वर्ग में जा पहुँची होतीं तो तुम अपनी आत्म-हत्या कर बैठतीं। भगवान् का धन्यवाद है कि ऐसा नहीं हुआ। इस प्रकार तुमको अपने जीवन को बनाने का पुनः अवसर मिला है।"

टूनी हँस पड़ी। हँसकर बोली, "यह ठीक है कि पिछली बार जब एक लाख का चैक लेकर जाने लगी थी, तो आपने इतनी नम्रता से मुझको रुक जाने के लिए कहा था कि मैं अपने राबर्ट के साथ जाने पर गम्भीरतापूर्वक मनन करने लग गई थी।

"होटल पहुँचने पर राबर्ट ने रुपये के विषय में पूछा तो मैंने चैक दिखा दिया। उसने कहा, 'इतना बड़ा चैक बिना परिचय के 'कैश' नहीं होगा।'

"मैंने समझाया कि कल इस रकम का ड्राफ्ट बनवा लेंगे।

"उसने कहा कि ड्राफ्ट उसके नाम का होना चाहिए।

"मैंने इस बात को स्वीकार किया तो वह चुप कर गया। मैंने उसकी आँखों में स्पष्ट खून देखा था, जो ड्राफ्ट की बात सुनकर उतर आया था। वह प्रसन्न दिखाई देने लगा था।

"जब से हम किश्तवार से चले थे वह कई बार मुझसे नाराज हो चुका था। उस दिन भी झगड़ा बढ़ता-बढ़ता रुका था। अगले दिन चैक का ड्राफ्ट बनाकर मैंने उसको दे दिया। वह इतने रुपयों से सन्तुष्ट नहीं था। परन्तु मेरे कहने पर कि मैंने और धन का प्रबन्ध कर दिया है और वह हमको नियत स्थान पर पहुँचते ही नियमित रूप से मिलने लग जाएगा, वह शान्त होता गया। इसके पश्चात् हम दो दिन लाहौर में रहे और उसका व्यवहार मेरे साथ अति प्रेमपूर्ण रहा। उसके

इस व्यवहार से मेरे मन में, उसको छोड़ देने के निश्चय विलीन होने लग गए थे।

"बम्बई में पहुँचकर वह अपने समाज के व्यक्तियों से मिलने लगा और मुझसे तटस्थ रहने लगा। बम्बई में उसने ड्राफ्ट को पुनः बदलवाया और हमनें सूडान को जाने वाले जहाज में अपनी सीटें बुक करवा लीं।

"जहाज में जाने के एक दिन पूर्व वह प्रातः का अल्पाहार कर मुझसे कहने लगा कि वह बम्बई के आस-पास की पहाड़ियों पर भ्रमण के लिए जाना चाहता है और मैं उसके साथ चलूँ।

"मेरी इच्छा नहीं थी, तो भी मैं उसको व्यर्थ में नाराज करना नहीं चाहती थी। इस कारण मैं चलने को तैयार हो गई। यदि मोटर ड्राईवर पर मुझको सन्देह न होता तो अवश्य वे दोनों मुझको मार डालते।"

"मेरा विचार है कि अब तुम लाहौर में ही रहो। केशव के पास जाने की आवश्यकता नहीं।"

"आप भी तो वहाँ जा रहे हैं। मैं विचार कर रही थी कि आपके साथ ही चलूँ और आपके साथ ही लौट आऊँगी।"

"हम तो जाने का विचार छोड़ चुके हैं।"

"नहीं विनोद जी ! आप अवश्य चलिए। कम-से-कम मेरा साथ देने के लिए ही चलिए। अकेली यदि गई तो फिर साथ लौटने के लिए बहाना नहीं मिलेगा।"

मैं उसका प्रस्ताव सुन गम्भीर हो गया। राधा से मैंने टूनी का प्रस्ताव रखा तो उसने बिना विचार किए अस्वीकार कर दिया। इस पर टूनी राधा की मिन्नत करने लगी और उसको जाने के लिए राजी कर ही उसने साँस लिया।

राधा एक शर्त पर तैयार हुई कि टूनी हमारे साथ ही लौट आएगी।

इस प्रकार हमने केशव के निमन्त्रण को स्वीकार करने का पुनः निर्णय कर लिया। मैंने केशव को तार द्वारा समाचार भेज दिया कि हम टूनी को साथ लेकर उसके स्वर्गलोक में भ्रमण करने आ रहे हैं।

तृतीय परिच्छेद

जब मैं, राधा और टूनी टट्टुओं पर से, रामवन के डाकबंगले के बाहर उतरे तो डाकबंगले में से केशव और उसकी पत्नी रोमिली निकल आए। वे एक दिन पहले वहाँ आकर ही हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे।

केशव पहले से कुछ भारी शरीर का हो गया था। उसकी दुहरी ठुड्डी दिखाई देने लगी थी। उसने हमारे टट्टुओं का शब्द सुना तो बाहर निकल आया और मुझे देख लपककर आगे बढ़, गले मिला। रोमिली टूनी से मिली और फिर दोनों डाक-बंगले से आगे को नीचे की ओर बढ़ गईं। मैं समझ गया कि दोनों राबर्ट के विषय में बातचीत करने गई हैं। उनकी इस उत्सुकता को देख मुझको मिस्टर थापर का कहना याद हो आया। उन्होंने कहा था कि सैमेटिक जातियों ने यौन-सम्बन्ध को एक कला बना लिया है। यही कारण है कि जब किसी स्त्री का इस जाति के किसी पुरुष से सम्बन्ध हो जाता है तो वह उसके जाल से अपने को मुक्त नहीं कर सकती।

राधा टट्टुओं से सामान उतारकर डाकबंगले में ले जाने लगी थी और केशव मुझसे बातचीत करने लगा। उसने पूछा, "राबर्ट को क्या हुआ है ? टूनी लौट क्यों आई है ?"

"राबर्ट ने टूनी से एक लाख रुपया ले लिया और पश्चात् शायद और माँगा। टूनी का और रुपया देने का विचार नहीं था। इस कारण राबर्ट टूनी को एक जंगल में ले जाकर मार देना चाहता था। एक दिन वह एक नीग्रो ड्राइवर वाली टैक्सी में उसको बैठाकर ले जा रहा था कि टूनी को सन्देह हो गया। वह चलती कार से कूद पड़ी। कूदकर वह सड़क से लुढ़कती हुई एक खड्ड में जा गिरी। राबर्ट ने समझा कि वह मर गई है, अतएव बम्बई लौट जहाज पर सवार हो सूडान के लिए रवाना हो गया।

"टूनी को चोटें काफी आई थीं परन्तु वह बच गई। किसी-न-किसी प्रकार वह बम्बई पहुँची। वहाँ से लाहौर और पश्चात् हमारे साथ यहाँ आ गई है।"

केशव यह कथा सुन खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "राबर्ट मूर्ख निकला। वह सोने का अण्डा देने वाली मुर्गी का पेट चीर बैठा है।"

"मेरा अनुमान दूसरा है। राबर्ट के पूर्वजों की नरमांस खाने की प्रवृत्ति उसमें प्रकट हुई तो उसने नरमांस चखा। लोग कहते हैं कि जब शेर के मुँह को नर-

मांस लग जाता है तो फिर वह पशुओं का मांस नहीं खाता। मीलों का चक्कर काटकर भी वह नरमांस की खोज करता है। यही बात राबर्ट की हो गई प्रतीत होती है। जब वह यह समझ गया कि टूनी अब किसी काम की नहीं रही और जब रोमिली ने उसके पास जाने का वचन दे दिया तो उसने टूनी का मांस खाने का निर्णय कर लिया।''

''इसी कारण तो उसको मूर्ख कहता हूँ।''

''पर यह तो तुम्हारा सिद्धान्त है न कि सुख ही परम साध्य है। वह भी रसना के स्वाद के लिए यह करने को उद्यत हो गया प्रतीत होता है। यदि खड्ड में वह पहुँच सकता तो वह और उसका सजातीय टैक्सी ड्राइवर वहाँ पहुँच, उसको भून-कर खा जाते।''

''उसकी विकृत मनोवृत्ति ही इसमें कारण हुई। इसी कारण तो मैं उसको मूर्ख कहता हूँ।''

मैंने यह अनुभव किया कि केशव का जीवन को समझने का ढंग मुझसे भिन्न हो गया है। इस पर भी मैंने इस चर्चा को आगे नहीं चलाया। हम बातें करते-करते टूनी और रोमिली के समीप पहुँच गए थे। हमें वहाँ पहुँचा देख रोमिली हमको टूनी के पास छोड़ राधा, जो एक कमरे में सामान खुलवा रही थी, के पास चली गई।

उस रात हम रामवन के बंगले में ही रहे। केशव का कहना था कि सामान टट्टुओं पर पीछे-पीछे आने के लिए छोड़, वे तेज घोड़ों पर एक दिन में चौंसठ मील की यात्रा कर किश्तवार पहुँच जाएँ।

''पर राधा घोड़े पर इतनी लम्बी यात्रा नहीं कर सकेगी।''

''तब तो बहुत कठिनाई होगी?''

''क्या कठिनाई होगी?''

''रोमिली इतने दिन यात्रा में व्यय नहीं कर सकती।''

''तो तुम लोग आगे निकल जाओ। हम तो पड़ाव पर ठहरते हुए ही आ सकते हैं।''

केशव चुप रहा। मैंने समझा कि केशव और रोमिली अगले दिन घोड़ों पर सवार हो चले जावेंगे, परन्तु ऐसा नहीं हुआ। जब तक मैं और राधा तैयार होते रहे वे हमारी प्रतीक्षा करते रहे। टूनी ने ही उनको रोक रखा था।

रात मैंने राधा से पूछा, ''रोमिली ने तुमसे कुछ कहा है क्या?''

''हाँ, वह मुझसे बहुत ही प्रेम से मिली और ऐसे ढंग से बातें करने लगी कि मैं उस पर मोहित हो गई हूँ। यदि वह अथवा मैं पुरुष होती तो हम आपस में विवाह कर लेतीं।''

''ओह!'' मैं हँस पड़ा। ''पर मुझसे तो उसने एक बार केवल अभिवादन

मात्र ही किया है।"

"इस पर भी वह मुझसे कह रही थी, 'राधा! तुम बहुत ही भाग्यशालिनी हो जो विनोदजी से विवाह कर सकी हो।'

"मैंने पूछा, 'क्या बात है उनमें?'

"इस पर वह आपके रूप-रंग की प्रशंसा करने लगी। जिस ढंग से उसने आपका वर्णन किया वह अद्वितीय था। मैं भी जो, आपके साथ इतने वर्षों से रह रही हूँ, आपके विषय में यह बातें नहीं जानती थी, जो उसने वर्णन कीं।

"मैं चकित हूँ कि मैं, जिसको एक साधारण-सी बात समझती थी, उसका उसने चमत्कारिक ढंग से वर्णन किया।"

"रोमिली बहुत ही चतुर स्त्री है। वह जानती है कि दूसरों को अपने वश में कैसे किया जा सकता है। तुमको उससे सतर्क रहना चाहिए।"

"यह तो मैं आपको कहना चाहती थी। उसकी बातों से मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होने लगा है कि वह आपसे प्रेम करने लगी है।"

मैं हँस पड़ा। मैंने कहा, "प्रेम करने का यह विचित्र ढंग है कि कल दिन-भर हम यहाँ रहे हैं और उसने एक शब्द भी मुझसे नहीं कहा।"

"मैं समझती हूँ कि इसको, उसके मन में आपके प्रति उग्र प्रेम का सूचक भी कहा जा सकता है।"

अगले दिन डाकबंगले के बरामदे में वहाँ के बैरे ने चाय लगा दी थी। हम चलने के लिए तैयार हो वहाँ पहुँच गए और चाय के लिए बैठ गए। टूनी और रोमिली भी वहाँ आ बैठीं। केशव कुलियों को सामान लेकर आगे चलने के लिए कह रहा था।

ऐसा प्रतीत होता था कि केशव को वहाँ के सब लोग जानते थे और उसकी आज्ञानुसार काम करते थे। चाय पीकर हम घोड़ों पर सवार होकर आगे बढ़ गये।

रोमिली और टूनी आगे-आगे जा रही थीं। मैं, केशव और राधा पीछे-पीछे थे। मार्ग प्रशस्त नहीं था। दो घोड़े आसानी से साथ-साथ जा नहीं सकते थे। राधा मेरे और केशव के आगे-आगे थी।

कैसे बातें आरम्भ हुईं, मुझे ध्यान नहीं, परन्तु राबर्ट केशव के मस्तिष्क में खलबली मचा रहा था और वह धीरे-धीरे आगे निकलना आरम्भ हो गया। कदाचित् मैंने टूनी की बात की थी और उसने राबर्ट के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया।

"जाते समय वह तुमसे मिला था क्या?"

"मैंने राबर्ट और टूनी को 'प्लाजा' में बैठे देखा था। मैं इनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा तो हाल में अँधेरा हो गया और पिक्चर आरम्भ हो गई। विश्राम काल में वे दोनों चले गए थे। अगले दिन उनका मनचन्दा के यहाँ से टेलीफोन आया तो

मैंने टूनी से मिलने आने को कहा। वह शाम को आई परन्तु राबर्ट नहीं आया।"

"मैं समझता हूँ कि वह तुमसे क्यों नहीं मिला। उसको कुछ ऐसा विश्वास हो गया था कि तुम और पिताजी उसके जादू के असर में नहीं आए। टूनी जब उसके साथ भारत में आई थी और दोनों पिता के साथ कोठी में ठहरे थे, तब पिताजी ने उसके साथ बातचीत के पश्चात् कह दिया था कि वह कुटिल व्यक्ति है और उसको अपनी कुटिलता छोड़ देनी चाहिए।"

"मैं तो उसके प्रभाव में आ गया था, परन्तु न जाने कैसे राधा उसके मन की अवस्था को भाँप गई थी। वह उससे सन्तुष्ट नहीं थी। ऐसा प्रतीत होता है कि राधा के विचार टूनी ने उसे बता दिए हों।"

"वह नीग्रो जाति के एक अच्छे परिवार का लड़का है। जब उसका विवाह एक सुन्दर लड़की से हो गया तो सुख और आराम का जीवन व्यतीत करने से उसके मन में अपने पूर्वजों के संस्कार जाग पड़े प्रतीत होने लगे। वह मुझसे नरमांस भक्षण की बातें करने लगा। मैंने उसको कई बार मना भी किया परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि यह इच्छा उसके रक्त में विद्यमान थी। एक दिन वह भुना हुआ मांस लाया और हमसे खाने को कहने लगा। मैंने पूछा तो वह बोला एक हिरन का मांस है। हमने खाया और हमारे खा चुकने के पश्चात् उसने बताया कि जंगल में एक गद्दी स्त्री ने उसके ऊपर आक्रमण कर दिया था। उसने सुरक्षा में उसे मार डाला। पश्चात् उसका खुर-खोज मिटाने के लिए उसने इस स्त्री को भून डाला और पेट-भर खाया। बचा हुआ मांस हमारे खाने को भी ले आया।

"मैंने उसको बहुत डाँटा। इस पर भी मैं उसको निकालना नहीं चाहता था। वह बहुत ही काम का व्यक्ति था। हमारे स्वर्गलोक के निर्माण में उसका तीन-चौथाई भाग अवश्य है। जब टूनी उसके साथ जाने लगी तो मैंने समझा था कि वह उसको समझा-बुझाकर ले आएगी। मैं उससे यह आशा नहीं करता था कि वह टूनी को ही मारकर खा जाने के लिए तैयार हो जाएगा।"

"बात स्पष्ट है केशव! तुम लोगों की जीवन-मीमांसा ही ऐसी है कि नरबलि उसका अन्तिम परिणाम है।"

"मैं ऐसा नहीं समझता। उसके पूर्वजों के संस्कार ही उसके रक्त में उभर उठे प्रतीत होते हैं। हमारी जीवन-मीमांसा तो जीवन को पुष्ट करने वाली है। उसमें नर-हत्या का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं हो सकता। मैंने इस विषय पर रोमिली से विचार-विनिमय किया है और हम इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि हम मनुष्य के विनाश के लिए नहीं प्रत्युत उसके जीवन को सुलभ और सुखद बनाने के लिए यत्न-शील हैं। तुम देखोगे तो निश्चय ही समझ जाओगे कि वैज्ञानिक जीवन-मीमांसा जीवन को लम्बा करने वाली है। जीवन को समाप्त करने वाली नहीं।"

"देखना तो यह है कि जीवन लम्बा करने के साथ बुद्धि को विकास मिलता

है अथवा नहीं। जहाँ बुद्धि मलिन हो जाए, वहाँ उन्नति के साथ मन विकृत होने लगता है और अन्त में सर्वनाश ही इसका परिणाम है।"

इस प्रकार वार्तालाप चलता रहा और हम अन्तिम निर्णय पर, सदा की भाँति, नहीं पहुँच सके।

रामवन से एक दिन में कष्टिगढ़ और फिर एक दिन में बरुत पहुँच गए। बरुत से केवल पन्द्रह मील किशवन था। प्रातः के चले हुए मध्याह्न के समय वहाँ पहुँचे। वहाँ खाना खाया और शेष पाँच मील पार करने के लिए हम चल पड़े। इस समय हम किश्तवार की वादी में पहुँच चुके थे। वह छोटा-सा मैदान है और इनमें कई गाँव हैं। मैदान के बीचोंबीच चन्द्रभागा गुजरती है। वादी इतनी सुहावनी फल-फूलों से भरपूर है कि यह पाँच मील का मार्ग पार करने में वहाँ कई घण्टे लगे। स्थान-स्थान पर नवीन दृश्य आँखों के सम्मुख आते और हम उनसे अपनी आँखें तृप्त करने वहाँ खड़े हो जाते। कहीं चीड़ के पेड़ों की घनी छाया, कहीं केशर की क्यारियाँ और गुलाब और सूर्यमुखी के फूलों के उद्यान आ जाते तो हम उनको देखने लग जाते।

जब हम चन्द्रभागा पार करने लगे तो अँधेरा हो चला था। राधा ने पूछा, "केशव जी! कितनी दूर और चलना होगा?"

"वह देखो।" केशव ने कुछ दूर पर एक उगते हुए चाँद की ओर उँगली कर दी।

राधा ने देखा और विस्मय में पूछने लगी, "चाँद?"

"नहीं, आज तो कृष्ण-अष्टमी है। चाँद तो रात के बारह बजे निकलेगा। यह चाँद नहीं है। यह हमारे स्वर्गलोक में प्रकाश करने के लिए एक लैम्प है।"

"लैम्प?" अब मैंने आश्चर्य में पूछा।

रोमिली हँस पड़ी। मैंने उसको पहली बार हँसते हुए देखा था। जब वह लाहौर में मिस्टर थापर की कोठी में दिखाई दी थी तब वह चुप और गम्भीर ही दिखाई दी थी। अब भी चार दिनों से वह हमारे साथ थी और उसने एक शब्द भी मुझको सम्बोधन करके नहीं कहा था। हँसना तो दूर की बात थी। आज उसको हँसते देख मैंने कहा, "एक बात तो हुई। भाभी हँसती भी हैं, यह आज पता चला।"

उसने मेरी ओर देखकर कहा, "आपकी अज्ञानता देखकर।"

"कुछ भी हो भाभी! तुम्हारे मोतियों के समान श्वेत सुन्दर दाँत देखने को मिले सो मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ।"

"ओह! तो आप रसिक भी हैं। मुझको मालूम न था।"

"मालूम होता तो आप क्या करतीं?"

"आपसे प्रेम की बातें करती। मुझको तो कुछ ऐसा प्रतीत हुआ था कि आप

प्रोफेसर मार्टिन की भाँति सूखी लकड़ी हैं।''

''ये महाशय कौन हैं ?''

केशव ने उत्तर दिया, ''फिलोडैल्फिया यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर थे। कभी किसी से बात नहीं करते थे। प्रायः लायब्रेरी में अपनी कुर्सी पर बैठ गर्दन झुकाए किसी पुस्तक को पढ़ते हुए मिलते थे।''

''तो भाभी ! बहुत भूल की तुमने। मुझको तुम्हारे विचारों का पता होता तो मैं स्वयं ही बुला लेता। परन्तु मैंने तो यह समझा था कि नानी नूरी की भाँति तुम अभिमान की पुतली हो, जो मुझसे परिचय भी नहीं चाहतीं।''

''नहीं चाहती थी, इसी कारण कि मैं आपको प्रोफेसर मार्टिन समझ बैठी थी।''

''पर हूँ तो विनोद।''

''क्या अभिप्राय है इस नाम का।''

अब केशव ने समझाया, ''विनोद के शाब्दिक अर्थ हैं, क्रीड़ा, आनन्द।''

रोमिली ने व्यंग्यभाव में कहा, ''तभी टूनी के साथ आपने विनोद किया है ?''

''टूनी तो मेरी बहन है।''

हम चन्द्रभागा पार कर किनारे पर खड़े थे। वहाँ से चढ़ाई आरम्भ होती थी। केशव का निवास-स्थान कुछ ऊँचाई पर था। केशव ने कहा, ''स्वर्गलोक की सीमा यहाँ से आरम्भ होती है।''

मैंने कुछ विशेषता देखने की लालसा से चारों ओर दृष्टि दौड़ाई। चन्द्रभागा वहाँ एक छोटी-सी नदी थी जिसको पार करने के लिए उस पर लकड़ी का पुल बना था। हमने अपने घोड़े नदी के उस पार ही छोड़ दिये थे और पैदल ही पुल पार कर आए थे।

केशव ने कहा, ''देखो विनोद ! यह,'' उसने एक चुनार के पेड़ की ओर उँगली कर कहा, ''हमारे स्वर्गलोक का प्रहरी है। हमारी इच्छा के बिना कोई यहाँ से आगे नहीं बढ़ सकता।''

''यह पेड़ कैसे रोक लेगा ?'' हम सब पुल पार कर अभी तक किनारे पर ही खड़े थे।

''तुम बिना नाम-धाम बताये आगे जाकर देख लो।''

मैंने कहा, ''ठीक है।'' और मैं आगे बढ़ा। अभी पेड़ की सीध में गया ही था कि पेड़ के पत्तों में से आवाज आई, ''कौन जाता है ?''

मैंने समझा कि कोई पुरुष पेड़ के पत्तों में छुपकर बैठा है। इस पर भी मैंने परीक्षा करने के लिए आवाज का उत्तर नहीं दिया और चलता गया।

केवल दो पग ही बढ़ा था कि मुझको ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी ने मेरे पाँव पकड़ लिये हैं। वे भूमि से चिपक गए प्रतीत होते थे। इस पर पुनः आवाज आई, ''नाम-धाम और काम बताओ।''

मैंने विवश हो कहा, "भाई ! तुम हो कौन ? कहाँ छुपे हो और इस भूमि पर गोंद क्यों लगा रखी है ?"

इसपर आवाज हँसी और फिर बोली, "अपना नाम, धाम और काम बताओ।"

मैंने कहा, "नाम है विनोद । रहने वाला हूँ लाहौर का और अपने मित्र केशव से मिलने आया हूँ।"

"ठहरो !" उत्तर मिला।

आधे मिनट के पश्चात् आवाज आई, "जा सकते हो।"

मैं चलने के योग्य हो गया और पगडंडी पर पेड़ से आगे निकल गया। आगे जाकर मैंने पेड़ की ओर देखा। मुझको अभी भी विश्वास था कि पेड़ पर कोई छिपा बैठा है।

मेरे मन के भावों को जान केशव तथा अन्य साथी हँस पड़े। उन्होंने पुल के समीप से ही आवाज दी, "केशव, रोमिली, राधा और मालती हैं।"

पुनः आवाज आई, "ठहरो।"

और आधा मिनट पश्चात् उनको जाने की स्वीकृति मिल गई। वे वहाँ से आगे आकर मेरे पास खड़े हो गए। मैं अभी भी उस पेड़ की ओर देख रहा था। केशव ने मेरे देखने का अभिप्राय समझ पूछा, "क्या देख रहे हो विनोद ?"

"देख रहा हूँ कि वहाँ पर कोई छिपकर तो नहीं बैठा।"

रोमिली और केशव हँस पड़े। टूनी ने कहा, "आप पुनः लौट जाइये और फिर आने का यत्न करिये और उत्तर अंट-संट दीजिए। फिर देखिए क्या होता है ?"

मैं परीक्षा करने के लिए पुनः पुल के पास चला गया। पश्चात् चलकर आने लगा तो वही आवाज आई, "कौन जाता है ?"

मैंने उत्तर में कहा, "जबतक बाहर निकलकर बात नहीं करते, नहीं बताऊँगा।"

मेरे कहने का कुछ भी उत्तर नहीं मिला। इस पर भी मेरे पाँव जकड़ गए और भूमि के साथ चिपट गए।

दो-तीन मिनट तक पाँव उठाने का यत्न करता रहा परन्तु कुछ परिणाम नहीं निकला। आखिर मैंने कहा, "भाई ! मैंने अपना परिचय अभी तुमको दिया था, भूल गए हो क्या ?"

उत्तर मिला, "अपना नाम-धाम, काम बताओ।"

"मैंने बताया, विनोद, लाहौर का निवासी और केशव से मिलने आया हूँ।"

आवाज आई, "ठहरो।" और कुछ काल के पश्चात् स्वीकृति मिल गई, "जा सकते हो।"

मेरे पाँव छूट गए। मैंने केशव से कहा, "कल प्रकाश में आकर देखूँगा।"

"देखो मैं बताता हूँ। इस पेड़ में हमने एक इलेक्ट्रोनिक ब्रेन लगा रखा है। उसमें मुख, कान और आँखें हैं। आखें देखती हैं और मुख बोलता है। कान सुनते

हैं और फिर वह मस्तिष्क स्वर्गलोक के गार्ड रूम को बेतार के टेलीफोन द्वारा सन्देश भेजता है। वहाँ पर आने वाले मेहमानों की सूची रहती है। यदि नाम उस सूची में हुआ तो स्वीकृति मिल जाती है। यदि ऐसा कोई व्यक्ति आ जाए, जिसका नाम सूची में न हो, तो फिर मुझसे पूछा जाता है। मैं जब कहता हूँ तब ही उस व्यक्ति को भीतर आने की स्वीकृति मिलती है।"

"गार्ड-रूम में कोई मनुष्य रहता होगा ?"

"नहीं। वहाँ पर भी एक वैसा ही इलैक्ट्रोनिक ब्रेन लगा रहता है, जो नाम-धाम सुनकर सामने लगी सूची देखता है। यदि सूची में नाम होता है तो स्वीकृति-संदेश सीमा पर पहुँच जाता है, नहीं तो वही मस्तिष्क मुझसे पूछता है।"

इस समय राधा ने कहा, "केशव भैया ! भूख लग आई है। यह चमत्कारिक यन्त्र कल देखेंगे।"

"यहाँ से वह स्थान, जहाँ हमारा चाँद दिखाई देता है, पाँच मील है परन्तु हमको यह सब अन्तर चलना नहीं पड़ेगा। हमारे लिए यहीं सवारी आ जाएगी।"

वहाँ से हम पचास पग गए होंगे कि एक पत्थर और सीमेंट की बनी कोठरी मिली। उसका द्वार बन्द था। केशव ने द्वार के सम्मुख खड़े होकर कहा, "हमें केशव भवन जाना है।"

"कौन हो ?" आवाज आई।

"केशव और चार साथी।"

दरवाजा खुल गया। कोठरी में प्रकाश हो रहा था। भीतर कोई नहीं था। एक गंडोला वहाँ रखा था। दरवाजा खुलते ही केशव पीछे हट गया और वह गंडोला स्वयं खिसककर बाहर आ गया। हम उसमें चढ़ गए।

यह गंडोला एक कटोरे की भाँति बड़ा-सा बर्तन था। इसकी लम्बाई-चौड़ाई आठ-नौ फीट के लगभग थी। हम पाँचों उसमें खड़े हो गए। हमारे पाँव के नीचे गरड़-गरड़ का-सा शब्द होने लगा और गंडोला भूमि पर से ऊपर उठने लगा।

सूर्य अस्त हो चुका था, परन्तु भवन की छत पर एक बहुत बड़ी थाली-सी वस्तु चमक रही थी और कई मीलों तक अपना प्रकाश फेंक रही थी। अँधेरे में भी हम एक-दूसरे को उसके प्रकाश के कारण भलीभाँति देख रहे थे।

गंडोले के विषय में मैंने पूछा, "यह हैलिकॉप्टर यहाँ कैसे आ गया ?"

"यह हैलिकॉप्टर नहीं है। इसका सिद्धान्त उसका सा नहीं है। इसका नाम हमने पुष्पक-विमान रखा है। यह बाहर से देखने में एक कमल के फूल के समान लगता है।"

इस समय वह गंडोला भूमि से लगभग सौ फीट ऊपर उठ चुका था। अब वह वेग से उस चाँद की ओर चल पड़ा।

जब गंडोला उड़ता हुआ जा रहा था, केशव ने इसके कार्य करने के विषय में

बताया, "यह जो गरड़-गरड़ का-सा शब्द हो रहा है, वह हमारे नीचे बहुत-से छिद्रों में से वेग से निकल रही वायु का शब्द है। हमारे पाँव के तले एक सिलिंडर में दबाव से जमी हुई वायु भरी हुई है। जब हम इस गंडोले में चढ़ते हैं तो हमारे पाँव के बोझ से सिलिंडर का वाल्व (ढकना) खुल जाता है। जितना बोझ गंडोले पर पड़ता है, उसी मात्रा में वाल्व खुलता है। सिलिंडर का ढकना खुलने से गंडोले के पेंदे में कई छिद्रों में से वायु बहुत ही वेग से निकलने लग जाती है। कई छिद्रों के द्वार नीचे की ओर खुलते हैं। वायु नीचे को जाती है और उसके बैक-प्रैशर (Back Pressure) से गंडोला ऊपर उठता है।

"गंडोला पर्याप्त ऊँचाई तक पहुँच जाता है तो यह बटन दबाने से इसके कुछ छिद्र पीछे की ओर से खुल जाते हैं और वायु पीछे की ओर निकलनी आरम्भ हो जाती है। इस तरह पीछे की ओर वायु निकलने से, उसके बैक-प्रेशर (Back Pressure) से गंडोला आगे को बढ़ना आरम्भ हो जाता है।"

"तो यह जेट-विमान के समान है।"

"हाँ।"

पाँच मिनट में ही हम एक विशाल भवन की छत पर पहुँच गए। गंडोला वहाँ पहुँच छत पर उतरकर खड़ा हो गया और हम उससे बाहर निकल आए।

छत से लगभग पचास फीट की ऊँचाई पर वह चाँद प्रकाश दे रहा था। वह निराधार लटका हुआ प्रतीत होता था। छत उसके प्रकाश से जगमग-जगमग कर रही थी। मैंने पूछा, "यह लैम्प किसके सहारे लटक रहा है?"

"यह इलैक्ट्रोमैगनैटिक तरंगों के आधार पर खड़ा है। इसके लिए किसी आधार की आवश्यकता नहीं। जैसे भूमि अथवा अन्य तारागण हैं वैसे ही यह है।"

केशव हमें छत के एक कोने में बने जंगल में ले गया। हमारे वहाँ पहुँचते ही वह भाग नीचे की ओर धँसने लगा। यह यहाँ की लिफ्ट थी। जब हम चार मंजिल नीचे पहुँच गए तो वह छत का टुकड़ा अर्थात् लिफ्ट रुक गई और हम उसमें से बाहर निकल आए।

टूनी राधा को लेकर एक कमरे में चली गई। रोमिली एक अन्य कमरे में चली गई और केशव मुझे एक तीसरे कमरे में ले गया। उस भवन में इस प्रकार के कई कमरे थे।

वास्तव में ये स्नानागार थे। केशव ने मुझे उस स्नानागार में ले जाकर कहा, "देखो, समझ लो। इस बटन के दबाने से स्नानागार बन्द हो जाता है।" इतना कह केशव ने वह बटन दबाया। द्वार बन्द हो गया। केशव ने पश्चात् एक दूसरा बटन, जिस पर नम्बर दो लिखा था दबाया। सामने की दीवार में से एक द्वार खुल गया। एक स्त्री, जिसने केवल जाँघिया और स्तनों को समेटने के लिए अंगिया पहन रखी थी, आकर सामने खड़ी हो गई। मैं घबरा गया। केशव हँस पड़ा और

बोला "डरो नहीं। यह सांयटिफिक-स्त्री है। यह प्लास्टिक की बनी है। इसमें इलैक्ट्रोनिक मस्तिष्क लगा है। इससे स्नान के विषय में जो चाहो काम करवा सकते हो। अच्छा देखो, एक बात और समझ लो। यदि तुम्हें इसकी आवश्यकता न हो, तो यह तीसरा बटन दबा देना। बटन नं० चार से बाहर का दरवाजा खुल जाता है। कपड़े यही पुतली ला देगी।" इतना कह केशव कमरे से बाहर निकल गया।

मैंने सामने खड़ी पुतली को देखा। यदि वह निश्चल न खड़ी होती तो सत्य की स्त्री प्रतीत होती। उसके चमड़े की चमक, उसकी आँखों की ज्योति और बालों की बारीकी तथा कोमलता सब एक जीवित सुन्दर स्त्री के समान थी।

मैंने उसकी परीक्षा लेने के लिए कहा, "मेरे कपड़े उतार दो।" वह पुतली चंचल हो उठी। उसकी आँखों की चमक बढ़ गई। उसके मुख पर मुस्कराहट प्रतीत होने लगी। उसने मेरा कोट पकड़ा और मैंने बाँह पीछे की ओर की तो उसने उसे उतार लिया। इसी प्रकार अन्य कपड़े उतारे; पश्चात् उसने सब कपड़े एक 'सिंक' में डाल दिये और वे वहाँ से किसी अज्ञात स्थान को चले गए।

मैंने कहा, "गरम जल तैयार है क्या ?"

पुतली ने सिर हिलाकर हाँ कहा और सामने रखे टब में टैप खोल दिया। जब कुछ गरम जल टब में पड़ गया तो उसने उसे बन्द कर ठंडे जल का टैप खोल दिया। एक हाथ जल में डाल वह देखने लगी कि ठीक तापमान पर हुआ है अथवा नहीं। जब ठीक हो गया तो उसने ठंडे पानी का टैप भी बन्द कर दिया। अब उसने हाथ के संकेत से मुझे कहा कि मैं स्नान करूँ।

जब मैं टब में घुस गया तो उसने साबुन लेकर मेरे शरीर को मलना आरम्भ कर दिया। मेरे विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब मुझको उसके हाथों का स्पर्श जीवित प्राणी के समान अनुभव हुआ। उस पुतली ने मुझे खूब मल-मल कर स्नान कराया। यह एक आश्चर्यजनक आविष्कार था।

मैं आधा घण्टा स्नानागार में रहा और वहाँ उस प्लास्टिक की पुतली ने हाड़-चाम की बनी जीवित स्त्री को भी मात कर दिया था। उस दिन के स्नान से मेरे दिल में यह अनुभव हुआ कि मेरे जन्मान्तर की थकावट दूर हो गई है। स्नान समाप्त होने से पहले उस पुतली ने साबुन का पानी टब से निकाल ताजा गरम और ठंडा जल टब में भरकर मुझको पुनः स्नान कराया। पश्चात् उसने स्नानागार में लगी एक अलमारी में से रात के पहिनने के कपड़े निकालकर मुझे पहिनाए और जिस द्वार से आई थी, उधर चली गई। उसके जाने पर मैं उसे देखता रह गया।

जब मैं गुसलखाने से निकला, तो राधा मुझको उस कमरे में ले गई जो हमको सोने के लिए मिला था। हमारा सामान वहाँ पहुँच चुका था और उसे खोलकर कपड़े वार्डरोब में तथा बिस्तर पलंगों पर लगा दिये गए थे। मैंने राधा से पूछा, "यह तुमने किया है ?"

"नहीं। यहाँ विचित्र प्रकार के नौकर हैं। वे हैं तो प्लास्टिक के पुतले पर कार्य करते हैं मनुष्यों के समान। यहाँ हमारे ट्रंक और बिस्तर मेरे आने से पहले ही पहुँच चुके थे। रोमिली मेरे साथ थी। उसने उस पलंग के समीप लगा बटन दबाया तो एक स्त्री की शक्ल का पुतला उस दीवार से निकला और हमारे सामने खड़ा हो गया। रोमिली ने आज्ञा दी, यह सामान लगा दो और खाने पर जाने के कपड़े निकाल दो।

"उस पुतले ने हमारे बिस्तर खोले और लगा दिये। शेष सामान उस वार्डरोब में नीचे के डॉज में रख दिया। पश्चात् उसने ट्रंक खोला और मेरे तथा आपके कपड़े पृथक्-पृथक् कर वार्डरोब में रख दिए। मैं उसको कहती जाती थी कि ये कपड़े मेरे हैं तो वह उन्हें एक ओर रखती जाती थी। जब मैं कहती कि ये कपड़े आपके हैं तो उन्हें दूसरी ओर लगाती जाती थी। जब सब कपड़े पृथक्-पृथक् छँट गए तो मैंने कहा, 'रख दो।' उसने दोनों ढेरियाँ पृथक्-पृथक् अलमारी में रख दीं। पश्चात् उसने कपड़ों पर उँगली रखी और मेरे संकेत पर जो कपड़े मैंने पहिनने थे उसने निकाल दिए। मैंने पहिन लिये। आपके लिए कपड़े रखे हैं।"

मैं कपड़े पहन रहा था कि वार्डरोब के समीप एक बल्व जल गया। मैं इसका अर्थ अभी समझने की चेष्टा कर ही रहा था कि दीवार में से एक बक्सा बाहर निकल आया। उसको खोलकर देखा तो उसमें मेरे और राधा के कपड़े जो स्नानागार के 'सिंक' में डाल दिए थे, धुलकर, सुखाकर और लोहा किए हुए पड़े दिखाई दिए।

मैं उनको उठाने लगा तो आवाज आई, "साहब, नौकरानी से कहिए।"

"मैंने पलंग के समीप बटन दबाया तो बगल की दीवार में से एक द्वार खुला और एक पुतली पूर्ण रूप से वस्त्र पहिने आई और कपड़ों की ओर देखकर, सिर हिलाकर आज्ञापालन करने की रुचि प्रकट कर, कपड़े उठा वार्डरोब में रखने लगी।

हम दोनों ड्रैसिंग टेबल के सामने खड़े थे कि इतने में बाहर से घण्टी बजी। हम समझ गए कि खाने के लिए आमन्त्रित किया जा रहा है। इस पर भी हम नहीं जानते थे कि खाने का कमरा किधर है और कैसे वहाँ जाना चाहिए।

मैंने पुनः बटन दबाया तो वही स्त्री-पुतली अपने स्थान से बाहर आई। मैंने कहा, "भोजन के लिए कहाँ जाना है?"

इस पर उस पुतली ने कमरे का द्वार खोला और एक अन्य पुतले की ओर संकेत कर दिया। यह पुतला पुरुष के आकार का था। वह हमें पथ-प्रदर्शन कराता हुआ भोजनागार में ले गया।

वहाँ केशव और रोमिली तथा टूनी पहले से उपस्थित थीं। मैंने भोजन की मेज पर बैठे हुए केशव को कहा, "दोस्त! मानता हूँ तुमको। तुमने विज्ञान को

अपना दास बनाकर रखा हुआ है।''

''राधा भाभी !'' केशव ने कहा, ''यात्रा की थकावट दूर हुई या नहीं ?''

''आपकी उस छोकरी ने मलमल कर मेरी खाल उधेड़ दी मालूम होती है। न खाल रही है और न थकावट। मैं कुछ दुबली हो गई मालूम होती हूँ।''

रोमिली हँस पड़ी। मैंने कहा, ''पुतली को प्लास्टिक का बना जानते हुए भी उसको जीवित प्राणियों की भाँति काम करते हुए देख, मुझको उसके सामने अपने कपड़े उतारते हुए लज्जा लगने लगी थी। किसी बहुत ही अच्छे कारीगर की बनी प्रतीत होती है।''

''हाँ, इनमें मशीनरी तो मेरी और रोमिली की बनाई हुई है, परन्तु बाहरी रूप रावर्ट का बना है। वह वास्तव में एक अच्छा कलाकार है। मुझको उसके चले जाने का भारी दुःख है।

''मैं जानती हूँ,'' रोमिली ने कहा, ''वह शीघ्र ही लौट आवेगा। एक लाख रुपया उसके हाथों में अधिक दिन ठहर नहीं सकता।''

''कहाँ व्यय करेगा वह इतना रुपया ?''

''जो सुख वह यहाँ भोगता था, वह तो उसे एक करोड़ रुपयों में भी उपलब्ध नहीं हो सकता। यह सब-कुछ एक लाख रुपयों में करना चाहेगा और परिणामस्वरूप सब कुछ व्यय कर डालेगा।''

मैंने पूछा, ''क्या आप लोग उसको पुनः उसी रूप में रख लेंगे, जिस रूप में वह रहता था ?''

''नर-हत्या यहाँ वर्जित है। इस बात का उसे पता है।''

''पर क्या पर-स्त्री-गमन वर्जित नहीं ?''

''जब दोनों पक्ष बालिग हों और परस्पर की अनुमति हो, तो नहीं।''

''पर ऐसा व्यवहार यहाँ क्षम्य है क्या ?''

''देखो विनोद !'' केशव ने कहा, ''यह स्वर्गलोक है। यहाँ अप्सराएँ रहती हैं और देवताओं की पत्नियाँ भी। कौन स्त्री किस रूप में रहना चाहती है, उसकी इच्छा पर निर्भर है। कोई किसी दूसरे पर अपने विचार थोप नहीं सकता। न ही किसी को कुछ करने के लिए बाध्य किया जाता है।''

मैं इससे सन्तुष्ट नहीं था परन्तु इस समय बहुत से प्लास्टिक के पुतले हाथों में एक-एक ट्रे लिये हुए, जिनमें भाँति-भाँति के व्यंजन रखे थे, एक पंक्ति में भोजनागार में प्रविष्ट हुए। वे एक-एक कर सबके सामने अपनी ट्रे लेकर घूम गए। हमने जो कुछ जितना-जितना लेना था, ले लिया और वे जिधर से आए थे, उधर ही चले गए।

भोजन करते हुए मैंने पूछा, ''इनके चलने-फिरने के लिए शक्ति का स्रोत क्या है ? क्या इनमें 'ड्राई बैट्री' लगी है ?''

"नहीं प्रोफेसर महोदय ! नहीं। इनमें 'एटोमिक एनर्जी' (अणु शक्ति) कार्य करती है। एक बार पारे का क्रियाशील आईसोटोप (Active Isotope of Mercury) भर दिया जाता है। आधे ग्राम आइसोटोप में इतनी शक्ति होती है कि ये पुतले दस-बारह वर्ष तक कार्य कर सकते हैं।

"इनमें इलैक्ट्रोनिक मस्तिष्क का डिजाइन मैंने किया है, उसको मेरे डिजाइन के अनुसार बनाया है 'कार्मिस रेडियो कम्पनी' ने। उस मस्तिष्क को इन पुतलों में फिट किया है राबर्ट ने। मनुष्य की समय-समय पर क्या-क्या आवश्यकताएँ रहती हैं, यह गणना कराई है रोमिली ने।

"टूनी और राबर्ट तो इन सुविधाओं को भोगने वाले ही हैं।"

भोजन अति स्वादिष्ट बना था। लम्बी यात्रा के पश्चात् स्नान और मालिश के कारण भूख से व्याकुल हम उस भोजन पर बाघ की भाँति टूट पड़े।

मैंने पूछा, "केशव, क्या भोजन बनाने वाले भी ये ही पुतले हैं?"

"नहीं। यह अभी हम नहीं बना सके। हमने एक पाचक रखा हुआ है। वह एक इटैलियन है। वह ल्योनार्डी नाम का व्यक्ति है और अति स्वादिष्ट भोजन बनाता है।"

"वह यहाँ सपत्नीक रहता है क्या?"

"इटली से तो वह अकेला आया था। परन्तु यहाँ एक पहाड़ी लड़की से उसने विवाह कर लिया है।"

भोजन हो चुकने के पश्चात् एक प्लास्टिक का बैरा हमारे लिए प्यालों में बनी हुई कॉफी ले आया। जब हम कॉफी पी चुके तो केशव हम सबको ड्राइंगरूम में ले गया। यह एक बहुत बड़ा कमरा था। हमारे लिए कुर्सियाँ दीवार के साथ-साथ लगी थीं और बीच में हॉल सारा खाली था। फर्श चिकनी लकड़ी का बना था।

हमारे बैठते ही उस स्थान के पहाड़ी पुरुष और पहाड़ी स्त्रियाँ रंगारंग के कपड़े पहिने आ गए और केशव को नमस्कार कर नाच करने लगे। कभी पृथक्-पृथक् और कभी जोड़े के रूप में वे नाच करते रहे। कुछ उनमें ऐसे भी थे, जो बाँसुरी तथा तबले से उनका साथ दे रहे थे। नाच के साथ उनका गाना भी चल रहा था, जो पहाड़ी भाषा में था।

यद्यपि हम गीत के वाक्यों को समझने की योग्यता नहीं रखते थे तो भी इतना तो हम समझ ही रहे थे कि उनके गीत का विषय प्रेम है, प्रेमी-प्रेमिका का वियोग और फिर दोनों का विरह में व्याकुल होकर परस्पर उल्हाना देना और आह्वान करना उनके गीतों का विषय था। आह्वान के पश्चात् मिलन होता और दोनों पंक्तियों के लोग मिल-मिलकर नाचते-गाते थे।

बहुत रात तक यह कार्यक्रम चलता रहा। जब वे चले गए तो हम अपने कमरे में सोने के लिए चले गए। राधा सोने से पहले कहने लगी, "केशव ने अद्‌भुत

स्थान बना लिया है।"

"हाँ। परन्तु यह ऐसे ही है जैसे किसी स्त्री के शृंगार करने का कोई अर्थ नहीं जब तक उसका प्रयोग मनुष्य के सुन्दर बनाने में न हो।"

अगले दिन प्रातःकाल मैं और राधा उठे और केशव के प्रासाद के पीछे बने उद्यान में टहलने लगे। रात हम इस ओर आए हीं नहीं थे। उद्यान में घास लगी थी, जो बार-बार मशीन से काट और रौलर से दबा-दबाकर मखमल की भाँति मुलायम कर दी गई थी। बीच-बीच में पुष्पों की क्यारियाँ थीं। ये मखमली दरी पर बिछे हुए रंगीन कालीन की भाँति प्रतीत होती थीं। उद्यान में लताकुंज भी थे। मैं और राधा इन लताकुंजों में देखने गए तो वे भीतर से भाँति-भाँति के फूलों में रँगे हुए प्रतीत होते थे।

राधा का कहना था, "केशव ने सत्य ही जंगल में मंगल कर रखा है। अवश्य ही उसने लाखों रुपये इस काम में व्यय किए होंगे।"

उद्यान काफी लम्बा-चौड़ा था। हमको उसे देखने में एक घण्टे से ऊपर लग गया। इस समय तक सूर्य दूर पहाड़ियों की चोटियों पर से ऊपर उठ आया था। प्रभाकर की प्रथम रश्मियों से केशव के प्रासाद के चुम्बन का दृश्य अति लुभायमान था। मैं और राधा इस भव्य दृश्य को देख रोमांचित हो उठे।

इस समय केशव और रोमिली भी भवन से निकले। दोनों ने 'नाइटगौन' पहने थे तथा नंगे पाँव थे। ठण्डी-ठण्डी घास पर चलते हुए वे हमारे पास आ गए।

"बहुत जल्दी जाग पड़े हो विनोद?"

"हाँ! पलंग की कोमलता ने हमको चिरकाल तक सोने नहीं दिया।"

"रात पुतलियों की मालिश से थकावट ऐसी दूर हो गई थी कि लम्बी नींद की आवश्यकता ही नहीं रही थी।" राधा ने कहा, "मैं रात के बारह बजे सोकर सवेरे चार बजे ही उठ बैठी थी। बाहर काफी ठण्ड थी, इस कारण बिस्तर पर बैठे-बैठे ही जाप करती रही।"

"जाप?" रोमिली खिलखिलाकर हँस पड़ी। मैं उसके घंटियों के समान हँसने की झंकार सुन उसके मुँह पर देखने लगा। प्रभात की शीतल समीर लगने से उसकी गालें सेब की भाँति लाल हो रही थीं और उनमें अनार के दानों की भाँति श्वेत दाँत अति मनोहर दिखाई दे रहे थे। रोमिली ने राधा की बाँह में बाँह डालकर कहा, "इस स्वर्गलोक को देखकर तो हमारी पूजा और केशव जी का जाप करना चाहिए।"

"जिसने यह सब-कुछ बनाया है, उसी का नाम स्मरण करती हूँ।" राधा ने, मेरी ओर प्रोत्साहन पाने की आशा में देखते हुए कहा।

मैं कुछ कहना चाहता था परन्तु रोमिली और राधा दोनों बाँह में बाँह डाले

हुए गुलाब की झाड़ियों की ओर चली गईं। गुलाब के सफेद, लाल फूल बड़े-बड़े थे। उनके पास जाकर रोमिली ने एक श्वेत-गुलाब उखाड़कर राधा की वेणी में खोंस दिया। रोमिली के बाल कटे हुए थे। इस कारण उसके सिर में फूल खोंसने का प्रश्न ही नहीं उठता था। रोमिली ने एक अन्य फूल तोड़कर अपनी गाल के साथ लगा उसकी कोमलता तथा शीतलता का स्वाद लेना आरम्भ कर दिया।

दोनों फूल से लदे पौधों के समीप खड़ी स्वयं पुष्पवत् प्रतीत होती थीं। केशव ने पूछा, "दोनों में कौन अधिक सुन्दर प्रतीत होती है ?"

"निश्चय ही राधा।" मैंने कहा। मैं देख रहा था कि शरीर में रोमिली का सौन्दर्य निर्विवाद रूप में श्रेष्ठ था। परन्तु मैं राधा और रोमिली के मुखों पर अंकित भावों को देख रहा था।

राधा सात्विक भावों को अपनी आँखों से प्रसारित कर रही प्रतीत होती थी और रोमिली साक्षात् मेनका प्रतीत होती थी। उसकी अलसाई आँखें और चंचल भाव-भंगिमा मन को चंचल करने में लीन प्रतीत होती थी।

केशव ने मेरी ओर देखकर कहा, "तुम्हारी आँखें कह रही हैं कि राधा नहीं, रोमिली अधिक सुन्दर है।"

"मेरी आँखें देख रही हैं कि तुम्हारी पत्नी वासनामय है।"

"इसी को तो सौन्दर्य कहते हैं।"

"मेरा मत इससे भिन्न है। सौन्दर्य हृदय में शान्ति और आत्मा में आनन्द उत्पन्न करने वाली वस्तु है। यही कला है। इसी कारण सौन्दर्य को कला और कला को सुन्दर कहा गया है।"

"यह सब वाग्जाल है। सुन्दर वह है, जो देखने में अच्छा प्रतीत हो और जो हमारी इन्द्रियों को आसक्त कर ले। उदाहरण के रूप में मधुर संगीत वह है, जो कानों को प्रिय हो। सुन्दर रूप वह है, जो आँखों को प्रिय हो। अब तुम इन्द्रियों को आत्मा कहो अथवा परमात्मा कहो, तुम्हारी इच्छा है।

"देखो विनोद ! जब आज से सात वर्ष पूर्व मैं कश्मीर में पहुँचा था तो अपने निवास के लिए एक स्थान बनाने की मेरी इच्छा बन चुकी थी। मैं उसके लिए उपयुक्त स्थान ढूँढता-ढूँढता यहाँ आ पहुँचा। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य तो तुमने देखा ही है। साथ ही यहाँ की सुन्दर स्त्रियों को भी देखोगे तो इस स्थान में स्वर्ग-लोक बनने के पूर्ण लक्षणों का ज्ञान पा जाओगे। मैंने देखा और यहाँ पर वह पहाड़ी और मैदान मोल ले लिया। इस पहाड़ी पर एक झरना है। मैंने वहाँ अपना विद्युत् उत्पादक यन्त्र लगा दिया और उससे इतनी विद्युत् निकलने लगी कि इस पहाड़ के उस पार्श्व में एक गाँव जगमग-जगमग कर दिया गया है। फिर पेड़ों को पयोंदे लगाकर तथा अणुशक्ति से सींचकर खेतों तथा पेड़ों की उपज को दस गुणा अधिक कर दिया है।

"इसके पश्चात् मैंने यह निवास-गृह बनवाया और इसे यन्त्रादि से सम्पन्न किया। जनता को कपड़े बुनने, मकान बनाने और फलों के खाने का स्वभाव डाला। इससे उस गाँव की स्त्रियाँ दुगुनी सुन्दर हो गई हैं। उनको देख कोई भी पुरुष उनसे प्रेम-प्रलाप करने की इच्छा करने लगता है।

"अब मैंने उनमें ऐसी स्त्रियाँ बनानी आरम्भ कर दी हैं, जो वास्तव में स्वर्ग-लोक की अप्सराओं का-सा कार्य करती हैं। जब किसी मनुष्य को वश में करना होता है तो मैं उनमें से अपने कार्य में दक्ष एक स्त्री को उसके पास भेज देता हूँ और वह पुरुष मेरे पाँव चूमने लग जाता है।"

मैं केशव की मनोवृत्ति देख चकित रह गया। केशव ने मेरे भावों को समझ कहना चालू रखा, "यहाँ खाने-पहिनने और स्त्रियों की कमी नहीं है। यहाँ लोग स्वतन्त्र विचारों वाले हैं। वे स्वेच्छा से विचारते हैं। मुझको किसी बात की कमी प्रतीत नहीं होती। एक बात, जो संसार को लोग भगवान् के अधीन मानते हैं, मैंने उसे भी अपने अधीन करने का यत्न आरम्भ कर दिया है। वह मृत्यु है। वृद्धजनों को युवा कर उनकी आयु में वृद्धि करने के उपाय ढूँढ रहा हूँ। एक उपाय तो मैंने प्रतीत किया है। एक विशेष प्रकार की विद्युत् तरंगें उत्पन्न कर वृद्धों को उनमें स्नान कराता हूँ और फिर उनको युवा स्त्रियों में छोड़ देता हूँ। परिणाम उन युवा स्त्रियों से जानकर अपने अन्वेषण को आगे चलाता हूँ।"

"इन परिणामों के लिए स्त्रियाँ और पुरुष तुमको मिल रहे हैं क्या?"

"इतने लोग आते हैं कि मुझे बहुतों को अस्वीकार कर वापस भेजना पड़ता है। अब मैं इसी अर्थ नये परीक्षण कर रहा हूँ। उसको मैं कायाकल्प कहता हूँ।"

इस समय निवास-गृह की छत पर से घण्टा बजा। केशव ने बताया, "स्नान का समय हो गया है। चलो।"

स्नान के पश्चात् अल्पाहार किया। पश्चात् मैं केशव के साथ उसकी प्रयोग-शाला में जा पहुँचा। केशव मुझे भवन के भूगर्भ-आगारों में ले गया। उसने मुझे भाँति-भाँति के यन्त्र दिखाए, जो उसको तथा अन्य वहाँ रहने वालों को प्रत्येक प्रकार की सुख-सामग्री प्राप्त कराते थे। इन यन्त्रों को दिखाते और समझाते हुए केशव ने कहा, "विज्ञान की सर्वोत्कृष्ट खोज का परिणाम मैं तुम्हें दिखाना चाहता हूँ।" इतना कह वह मुझे प्रासाद की ऊपर की मंजिल पर ले गया। वहाँ ले जाकर उसने कहा, "मैं आज कुछ स्त्रियों का कायाकल्प कर रहा हूँ। देखोगे?"

"अवश्य। मैं विज्ञान के चमत्कारिक कार्यों से अवश्य परिचित होना चाहता हूँ। केवल इनके अर्थ लगाने में मेरा तुम्हारे से मतभेद है।"

केशव की प्रयोगशाला में इसी अर्थ तीन वृद्धा स्त्रियाँ उपस्थित थीं। एक की आयु अस्सी वर्ष के लगभग थी। दूसरी पिचहत्तर वर्ष की और तीसरी साठ वर्ष की।

केशव ने उन्हें एक-एक कर कार्यालय में बुलाया। मुझको केशव ने अपने समीप

एक कुर्सी पर बैठा लिया। पहले आने वाली स्त्री साठ वर्ष की थी। जब वह आई तो केशव ने पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा ?"

"रामी।"

"आयु ?"

"साठ वर्ष।"

"तुमने करीम को देखा है ? उसका मैंने कायाकल्प किया था।"

"मैं उसको जानती हूँ। इसीलिए तो यहाँ आई हूँ।"

"देखो रामी ! इस प्रयोग में मृत्यु भी हो सकती है।"

"मृत्यु क्यों होगी ? करीम तो पिचहत्तर वर्ष का था। वह तो मरा नहीं।"

"ठीक है। पर सम्भावना तो है ही।"

इस पर वह गम्भीर हो गई। उसके मुख पर झिझक देख केशव ने कहा, "तुम अभी बाहर बैठकर विचार कर लो, फिर बताना।"

जब वह चली गई तो मैंने कहा, "यह स्त्री अपने वर्तमान जीवन से अभी निराश नहीं हुई। इसी कारण विचार कर रही है कि अपने इस थोड़े जीवन को खतरे में डाले या नहीं।"

इसके बाद दूसरी स्त्री, जो पिचहत्तर वर्ष की थी, आई। केशव ने उससे भी यही प्रश्न किए। उस स्त्री ने बताया कि उसका नाम मीनार है और वह मरने से नहीं डरती।

"तुम युवा क्यों होना चाहती हो ?" केशव ने पूछा।

"मैं जीवन का आनन्द अभी और लेना चाहती हूँ।"

केशव मुस्कराया और बोला, "अच्छा अभी बाहर ठहरो।"

तीसरी स्त्री आई और उसने अपना परिचय दिया, "मेरा नाम मुरली है। मैं अभी जीना चाहती हूँ। मेरा पति पिचासी वर्ष का है। वह भी करीम की भाँति युवा होना चाहता है। आपने उसको वचन दिया है कि उस पर भी यह जादू करेंगे। परन्तु उससे पहले मैं युवा होना चाहती हूँ, जिससे मेरे रहते वह करीम की भाँति लोगों के घरों की दीवारें न फाँदता फिरे।"

केशव मुस्कराया और पूछने लगा, "यदि तुम मर गईं तो ?"

"इसकी मुझे चिन्ता नहीं। मैं तो जुआ खेलना चाहती हूँ। युवा हो गई तो आनन्दभोग करूँगी और यदि मर गई तो वैसे भी यह होने ही वाला है।"

केशव को इस स्त्री की युक्ति पसन्द आई। उसने निश्चय किया कि वह तीनों पर प्रयोग करेगा। अब पुनः रामी को बुलाया गया और उससे पूछा गया, "क्यों, क्या निश्चय किया है तुमने ?"

"मैं मरने को तैयार हूँ।"

"तो लगाओ अँगूठा यहाँ।" केशव ने मेज में से एक कागज निकालकर उसके

सामने रख दिया। रामी ने बाएँ हाथ का अँगूठा आगे कर दिया। केशव ने उस पर स्याही लगाई और कागज पर उसका निशान बना दिया। उसके पश्चात् केशव ने मुझसे साक्षी भरने को कहा। मैंने रामी से कहा, "जाओ अपने पड़ोस में से किसी को अपना गवाह बनाकर ले आओ।"

"बाबू! मुझको शर्म आती है।"

"अरे! शर्म किस बात की?"

"मैं युवा बनना चाहती हूँ। सब मेरी हँसी करेंगे। मैं गाँव में यह बात नहीं कह सकती।"

इस पर केशव ने अपने बेतार के टेलीफोन से किसी से गाँव में बातचीत की और एक व्यक्ति को रामी का साक्षी बनने के लिए बुलवा लिया।

जब तक वह साक्षी गाँव से आए, केशव ने अन्य दो स्त्रियों से भी कागज पर अँगूठे लगवा लिये। इसके पश्चात् मुझको साथ लेकर प्रयोगशाला में चला गया। केशव ने स्वयं सीसा धातु के पतरे के कपड़े पहिन लिये। मुझको भी उसने वैसे ही कपड़े पहिनने को दिए। मुखों पर नकाबें चढ़ा लीं। जब हम तैयार हो गए तो केशव ने कमरे में प्रकाश कर दिया। वह कमरा चारों ओर से तथा छत की ओर से पूर्ण रूप से बन्द था। भीतर की वायु में एक प्रकार की गन्ध-सी आ रही प्रतीत होती थी।

केशव ने बिजली का स्विच खोला तो सामने रखी मशीन दृष्टिगोचर होने लगी। केशव ने मुझको समझाया, "विद्युत् तरंगें इसमें से निकलती हैं। उस प्राणी का, जिसका कायाकल्प करना होता है, इन तरंगों में स्नान होगा। इस काल में उसको पसीना आता है, पेशाब तथा टट्टी आती है। कै होती है और नाक तथा गले में से श्लेष्मा निकलती है। इस प्रकार पूर्ण शरीर की शुद्धि हो जाने के पश्चात् हम उसको एक अन्य कमरे में ले जाते हैं। वहाँ एक दूसरी प्रकार की किरणें उस पर छोड़ी जाएँगी। वे पौष्टिक हैं। उनसे शरीर के कोषाणुओं को पुष्टि मिलती है। तदनन्तर उसको रुग्णालय में ले जाकर एक सप्ताह तक पौष्टिक भोजन तथा ओषधियाँ दी जाती हैं।

"इस प्रकार हमने तीन व्यक्तियों के लिए एक सप्ताह के परीक्षण का प्रबन्ध कर रखा है।"

मुझको समझाकर केशव बाहर चला गया। वहाँ साक्षी करने वाला व्यक्ति आ गया था।

जब पहली प्रकार की किरणों का, जिनको केशव शोधन-किरण के नाम से पुकारता था, स्त्री के सर्वथा नग्न शरीर पर प्रयोग किया गया, तो वह स्त्री टट्टी, पेशाब तथा कै आदि से अधमरी के समान हो गई। इस सब समय गाँव का एक वैद्य तथा एक परिचारिका वहाँ उपस्थित रहे—वैध समय-समय पर नाड़ी देखकर बताता रहा कि स्त्री जीवित है और परिचारिका मल-मूत्र साफ करती रही। ये भी

सीसे के से पतरे के वस्त्र पहिने थे।

बीस मिनट में उस स्त्री का शरीर आधे से भी कम रह गया। अब केशव ने अपनी विद्युत् किरणों को बन्द किया और उस स्त्री को तौलिए से धो-पोंछ तथा उठवाकर दूसरे कमरे में ले गया।

कमरा उष्ण था, सुगन्धित पुष्पों की गन्ध से सुवासित तथा सुन्दर चित्रों से सुशोभित था। यहाँ उस स्त्री को एक पलंग पर लिटा दिया गया। वह अर्ध-चेतना-वस्था में थी और कुछ कहती अथवा हिलती-डोलती नहीं थी। अब छत पर लगे विद्युत् के एक प्रकार के यन्त्र को खोल दिया गया। एक मध्यम रक्त वर्ण का प्रकाश उसमें से निकलकर उस स्त्री पर पड़ने लगा। वह चेतनावस्था में आई और भूख-भूख पुकारने लगी। केशव ने हॉलिक्स के दो प्याले बनवा रखे थे। वे उस स्त्री को पीने के लिए दिए गए। कुछ मिनटों के पश्चात् उसने और खाने को माँगा। अब सेब का रस उसे दिया गया। इसके पश्चात् उसे दूध दिया गया। इस प्रकार आधे घण्टे के इस प्रयोग में उस स्त्री ने लगभग दो सेर दूध और सेर भर के लगभग सेब का रस लिया।

इस प्रयोग के पश्चात् वह स्त्री सबल, सचेत और सतर्क हो गई प्रतीत होने लगी। चैतन्य होते ही उसने केशव की ओर देखा और पूछा, "कपड़े पहिन लूँ?"

केशव मुस्कराया और बोला, "नहीं। अभी ठहरो।"

उसको उसी अवस्था में एक तीसरे कमरे में ले जाया गया। वहाँ तीन पलंग रखे थे। एक पर उसको लिटा दिया गया और छत पर लगे एक यन्त्र में से धीमा नीले रंग का प्रकाश उस पर पड़ने लगा।

वहाँ प्लास्टिक की एक पुतली नर्स का काम कर रही थी। वह इस स्त्री के सिर और शरीर पर एक प्रकार के तेल की मालिश करने लगी।

उसको वहीं छोड़ हम पुनः प्रथम कमरे में पहुँचे। वहाँ दूसरी स्त्री, जिसकी आयु पिचहत्तर वर्ष की थी, पहले ही वहाँ तैयार खड़ी थी। उसे इस प्रकार तैयार देख मैं यह समझा कि पहली स्त्री से यह यौवन प्राप्त करने की अधिक इच्छुक है।

इसके साथ प्रयोग करने में यह विशेषता रही कि यह पूर्णतया अचेत हो गई थी। इसके अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का अन्तर प्रतीत नहीं हुआ।

तीसरी स्त्री के विषय में केशव स्वयं शंकित था कि वह प्रथम प्रयोग सहन भी कर सकेगी अथवा नहीं। केशव ने उसे पुनः समझाया, "तुम्हारे जीते रहने की आशा कम है। फिर विचार कर लो।"

वह स्त्री डटकर वहाँ खड़ी रही। किरणों का प्रभाव तो उस पर पहले के भाँति ही हुआ, परन्तु वह मरणासन्न अवस्था में ही दूसरे कमरों में ले जाई गई। वहाँ उसमें शक्ति का संचार किया जाने लगा, परन्तु सफलता नहीं मिली। वह अचेत ही रही। पश्चात् उसी अचेतनावस्था में ही उसको उठाकर रुग्णालय में ले जाया

गया। उसने दूध अथवा फलों का रस नहीं लिया। अब पौष्टिक ओषधियों के इंजेक्शन लगाए जाने लगे। इस पर भी कोई परिणाम नहीं निकला। परन्तु वह जीवित थी और जब तक श्वास तब तक आस के सिद्धान्तानुसार उस पर प्रयोग किए जाते रहे।

उस अचेत स्त्री को उठाकर एक पृथक् कमरे में रख दिया गया।

इन परीक्षणों में चार घण्टे लग गए। पश्चात् हम मध्याह्न के भोजन के लिए भोजनागार में चले गए।

रोमिली मेरे साथ की कुर्सी पर बैठी थी और केशव मेज की दूसरी ओर टूनी के साथ बैठा था। राधा मेरे दूसरी ओर थी। इस समय मुख्य बातचीत रोमिली ही कर रही थी।

सब भोजन कर रहे थे और रोमिली कह रही थी, "जब मैंने विनोद जी को पहले दिन देखा था, तो मैं इनकी सुन्दर और चमकीली आँखें देखकर इन पर मोहित हो गई थी। मैं समझ गई कि टूनी क्यों इन पर आसक्त है। साथ ही यह जानते हुए कि उन्होंने टूनी के साथ कैसा बुरा व्यवहार किया है, मैं इनसे घृणा करती थी।

"मुझसे केशव जी ने कहा भी कि परिचय हो जाना चाहिए। ये उनके परम मित्र हैं। परन्तु मैं नहीं मानी और परिचय करने के लिए तैयार नहीं हुई। राधा बहन से अपने गलत व्यवहार की क्षमा माँगने भी जान-बूझकर उनकी अनुपस्थिति में ही गई।

"इसके पश्चात् उस दिन, रामवन में मैंने इनको देखा तो इनकी आँखों की विचित्र चमक देख, अपना हृदय खो बैठी। परन्तु यह विचार कर कि वे हमारे प्रोफेसर मार्टिन की भाँति शुष्क विचारों के होंगे, चुप रही।

"कल मार्ग में इनके व्यंग्य को सुनते ही पता चला कि आप सौंदर्य की परख भी रखते हैं।"

रोमिली के इस कथन पर मैं मुस्कराया परन्तु चुप रहा। वह मुझसे कुछ कहे जाने की आशा में मेरी ओर देखती रही। बात केशव ने की, "मनुष्य स्वभाव से सौन्दर्य का उपासक है। बालक भी स्वभाव से रंग-रंग की वस्तुओं को पसन्द करता है।"

"यह तो ठीक है।" मैंने कहा, "परन्तु सौन्दर्य क्या है और सौन्दर्य का उपभोग क्या है, यह शिक्षा और संस्कारों के अधीन, मनुष्य पृथक्-पृथक् ढंग से समझता है। रोमिली भाभी का शरीर सुन्दर है। यह तो ठीक है, परन्तु इस सौन्दर्य का उपयोग क्या है, यह कदाचित् भाभी को पता नहीं। इसी कारण जब यह किसी को अपने सौन्दर्य की प्रशंसा करते पाती हैं, तो उस पर कामबाण छोड़ने लगती हैं!"

"वाह! यह आप कैसे कहते हैं, मेरे देवर महोदय!"

"कल जब मैंने कहा था कि आपके दाँत सुन्दर हैं, तो जिस प्रकार आपने आँखें

मटकाई थीं, वैसी आँखें नाटक-मण्डली की नटियाँ आसक्ति का भाव प्रकट करने के लिए बनाती हैं।"

"मैंने जो कुछ कल किया था, वह तो मुझको स्मरण नहीं, परन्तु इतना मैं कह सकती हूँ कि किसी स्त्री को सुन्दर कहने का जो प्रभाव उस पर होता है, वही मुझ पर हुआ होगा।"

मैं हँस पड़ा और कहने लगा, "मुझको इस विषय में बहुत कम अनुभव है, भाभी! मैंने अपने जीवन में बहुत कम स्त्रियों को सुन्दर माना तथा कहा है। इस कारण उनके मन पर ऐसा कहने का क्या प्रभाव होता है, ठीक प्रकार बता नहीं सकता।"

"अच्छा विनोद!" केशव बोला, "तुमने किस-किसको सुन्दर कहा है?"

"एक राधा को, दूसरे टूनी को, और अब रोमिली को। शायद एक-आध किसी अन्य लड़की को भी वार्तालाप में साधारण रूप से सुन्दर कह दिया हो तो स्मरण नहीं।"

इस पर रोमिली कहने लगी, "तो सुन्दर स्त्री का क्या उपयोग है, जो आप समझते हैं?"

"सुन्दर स्त्री का उपयोग वही है, जो एक सुन्दर फूल का है। उद्यान में रहने से उद्यान की शोभा बढ़ती है और घर में गुलदस्ता बनाकर ले जाएँ तो ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ती है।"

"अर्थात् राधा ड्राइंगरूम की शोभामात्र है?"

"राधा सुन्दर होने के अतिरिक्त कुछ और भी है। इस कारण यह घर की शोभा के साथ-साथ पत्नी का कार्य भी करती है। इसी प्रकार टूनी भी सुन्दर होने के साथ मेरी बहन का स्थान लिये हुए है और मेरे स्नेह की पात्री है। भाभी! तुम भी सुन्दर होने के साथ-साथ मेरे स्नेह की पात्री बन रही हो।"

"आपका अभिप्राय 'अफैक्शन' से है न?"

"हाँ 'अफैक्शन' (स्नेह) 'लव' (प्रेम) दो भिन्न-भिन्न अर्थसूचक शब्द हैं। इसके अतिरिक्त 'लव' (प्रेम) और 'लस्ट' (वासना) भी एक अर्थ नहीं रखते। सौन्दर्य लस्ट (वासना) सूचक नहीं। यह लव (प्रेम) तथा अफैक्शन (स्नेह) सूचक ही होता है।"

"एक बात तो मैं समझती हूँ कि आपमें विश्लेषणात्मक बुद्धि केशव जी से अधिक है।"

"रसायन शास्त्र (कैमिस्ट्री) तो विषय ही विश्लेषणात्मक है। इस कारण अपने विचारों के प्रत्येक क्षेत्र में भी मेरी विश्लेषणात्मक बुद्धि कार्य करती है।"

केशव ने कहा, "यह जो कुछ तुम यहाँ देखते हो, क्या यह विश्लेषणात्मक प्रतिभा का परिणाम नहीं है?"

"केशव ! मैंने अपने और तुम्हारे में तुलना नहीं की। यह तो रोमिली के विचार हैं। परन्तु मैं तो जो कुछ यहाँ देख रहा हूँ, वह विश्लेषणात्मक की उपेक्षा समन्वयात्मक बुद्धि का अधिक प्रदर्शन है।"

बुद्धिशील समाज की यह पहली झलक मुझको केशव के स्थान में मिली। राधा इस पूर्ण वार्तालाप में चुपचाप हमारा मुख देखती रही। वार्तालाप का पूर्ण भार मेरे ऊपर ही रहा। रोमिली निस्सन्देह एक अति मनमोहक और बुद्धिजीवी युवती थी। इस समय वह अपने पूर्ण यौवन में थी और एक सुन्दर पुष्प की भाँति जिधर भी जाती थी, अपनी छटा बिखेरती जाती थी।

भोजनोपरान्त हम कुछ काल के लिए विश्राम करने अपने-अपने कमरे में चले गए। जाने से पूर्व रोमिली ने कहा, "केशव जी आज किश्तवार में तहसीलदार से मिलने जा रहे हैं और आप मेरे साथ गाँव में चलिएगा। वास्तव में हमारे कार्य का मुख्य परिणाम वहीं उत्पन्न हो रहा है।"

विश्राम करने के समय राधा ने बताया कि टूनी के साथ पहाड़ी पर, विद्युत्-केन्द्र देखने जा रही है। मुझको एक बात का अनुभव हुआ था।। प्रातःकाल से राधा कुछ अधिक चंचल और सबल दिखाई देने लगी थी। मैं उसके स्वास्थ्य में यह परिवर्तन देख प्रसन्न था। वहाँ की जलवायु स्फूर्तिदायक और केशव के भवन की सेवा शक्तिकारक लगी। मुझको भी विश्वास हो गया था कि घर जाकर मैं अपने लेखन-कार्य में दुगुनी शक्ति से लग सकूँगा।

मध्याह्नोत्तर तीन बजे के लगभग मैं कपड़े पहिन लम्बी सैर के लिए तैयार होकर निकला। राधा और टूनी 'राईडिंग-सूट' पहिने घोड़ों पर सवार होकर जाने के लिए तैयार खड़ी थीं। रोमिली सिविलियन पोशाक में अर्थात् साड़ी-जम्पर पहिने साथ चलने को निकल आई।

जब राधा और टूनी चली गईं, तो रोमिली ने उनको जाते देख कहा, "राधा का स्वास्थ्य यहाँ बन जाएगा।"

"हाँ, यदि वह नित्य इस प्रकार घूमने जाती रही तो।"

"आप मना नहीं करेंगे तो वह जाएगी ही। जहाँ वे जा रही हैं, वहाँ अस्त होते सूर्य का बहुत ही सुन्दर दृश्य दिखाई देता है। केशव जी कभी वहाँ चले जाएँ, तो घण्टों खड़े देखते रह जाते हैं।"

"तब तो हमको भी वहीं जाना चाहिए था।"

"एक दिन चलेंगे। आज तो गाँव का कार्यक्रम है।"

"वहाँ क्या है?"

"गाँव वालों की पंचायत बैठी है। पंचों ने मुझे भी बुलाया है, जिससे मैं उनको न्याय करने में सहायता दूँ।"

"तो तुम पंचों की अध्यक्षा बनकर जा रही हो ?"

"आइए। इससे आपको यहाँ के सर्वसाधारण के विचारों का ज्ञान होगा। ये वहुत ही मजेदार लोग हैं।"

हम दोनों पैदल ही चल पड़े। रोमिली बहुत तेज चलने वाली स्त्री थी। मुझको उसके साथ-साथ रहने के लिए लगभग भागना ही पड़ रहा था। वह चलती भी जाती थी और बातें भी करती जाती थी। मैं तो कठिनाई से ही उसके साथ रह पाता था। इस कारण उसकी बातों को सुनता था और चुपचाप चला जाता था। जब उसने देखा कि मैं बिल्कुल बोल ही नहीं रहा तो वह खड़ी हो गई और बोली, "आप कुछ कह नहीं रहे ?"

"मैं भागना और युक्तियुक्त बात करना साथ-साथ नहीं कर सकता।"

रोमिली मुस्कराई और पूछने लगी, "तो क्या आप कुर्सी पर बैठकर ही विचार कर सकते हैं ?"

"विचार करने के लिए सर्वोत्तम आसन तो पद्मासन ही है। भागते हुए विचार करने वाले प्रायः गढ़े में गिरते हैं।"

"अच्छा, मैं धीरे-धीरे चलती हूँ। बात यह है कि आज भोजन के समय आपने 'अफैक्शन' (स्नेह) तथा 'लव' (प्रेम) में जो भेद बताया था, उसके विषय में मैं जानकारी प्राप्त करना चाहती हूँ। अंग्रेजी भाषा में 'मदरली लव' शब्द का प्रयोग अशुद्ध है क्या ?"

"अंग्रेजी भाषा में क्या शुद्ध है अथवा क्या अशुद्ध, मैं बताने का अधिकार नहीं रखता। हाँ, हिन्दी में प्रेम, वात्सल्य और स्नेह पृथक्-पृथक् शब्द हैं और ये पृथक्-पृथक् भावनाओं को प्रकट करते हैं। प्रेम शब्द पति-पत्नी के परस्पर लगाव को अथवा जहाँ पति-पत्नी जैसे लगाव की याचना हो, वहाँ ही प्रयोग होता है। स्नेह उन सम्बन्धियों तथा मित्रों में लगाव का नाम है, जहाँ यौन-सम्बन्ध न हो सके अथवा न होना हो। वात्सल्य उस लगाव को कहते हैं, जो किसी बड़ी आयु के व्यक्ति का छोटी आयु के व्यक्ति में हो।"

"तो मेरा सौन्दर्य आपके लिए लव का सूचक है अथवा 'अफैक्शन' का ?"

"मैं तो इसको 'अफैक्शन' का सूचक ही मानता हूँ। तुम मेरे मित्र की पत्नी हो। मैं तुमको अपनी भाभी अर्थात् बहन ही मान सकता हूँ। आपकी भाषा में भी तो 'सिस्टर-इन-ला' (भाभी) का शब्द ही तुम्हारे लिए प्रयुक्त कर सकता हूँ।"

"यहाँ इस स्थान के समाज में यौन-सम्बन्ध अबाध माना गया है। टूनी के, यदि वह चाहे तो, केशव से सम्बन्ध में भी बाधा नहीं।"

"बाधा किसकी ?"

"बाधा सामाजिक कानून की है। यह समाज प्रशस्त और विशाल हृदय है।"

"ठीक है। परन्तु मैं बाधा तो अपने मन की कह रहा हूँ। समाज भले ही

बहन-भाई के विवाह को स्वीकृति दे दे, परन्तु जब विवाह करने वालों का मन नहीं मानेगा, तब तक विवाह किस प्रकार हो सकेगा ?''

''ठीक है। तो फिर कोई बाहरी प्रतिबन्ध नहीं है न ?''

''बाहरी प्रतिबन्ध भी है, परन्तु हम उसकी अवहेलना कर सकते हैं। हमारी ओर समाज इस अपराध के लिए हमारा बहिष्कार कर सकता है। परन्तु मन के बन्धनों को तोड़ने से मन की अवहेलना असम्भव हो जाती है। उस अवस्था में आत्मघात के अतिरिक्त और कोई उपाय ही नहीं रह जाता।''

''मन को हम शिक्षा और प्रचार से अनुकूल कर सकते हैं।''

''देखो भाभी ! यदि प्रतिबन्ध मनुष्य, प्रकृति और प्रकृति के नियमानुकूल हुआ, तब तो इसका विरोध अस्थाई रूप में ही हो सके तो हो। भ्रम दूर होने पर मनुष्य-प्रकृति अपना अस्तित्व प्रकट कर ही देगी।''

''जब करेगी, तब देखा जाएगा। इस समय तो लाभ, जो बन्धन तोड़ने से हो सकता है, हो ही जाएगा।''

इस समय हम गाँव में पहुँच गए थे। एक विशेष बात उस गाँव में यह थी कि गाँव की सड़कें पक्की बनी थीं। नालियाँ थीं, मकान पक्के बने थे और खिड़कियाँ चौड़ी-चौड़ी बनी थीं। प्रत्येक घर की खिड़की में फूलों के गमले रखे दिखाई दे रहे थे। मुझको इन बातों की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए देख, रोमिली ने कहा, ''हमने इस गाँव को एक अमेरिकन गाँव की भाँति साफ-सुथरा बनाने का यत्न किया है।''

गाँव में बच्चे तो खेल रहे थे, परन्तु कोई बड़ी आयु का पुरुष अथवा स्त्री नहीं थी। मेरे पूछने पर रोमिली ने कहा, ''सब लोग पंचायत में गए होंगे।''

हम गाँव के मध्य में पहुँचे तो वहाँ एक बहुत ही सुन्दर उद्यान दिखाई दिया। उस उद्यान में एक घास का मैदान था, जिसमें सारे गाँव के स्त्री-पुरुष बैठे हुए थे। हमें वहाँ पहुँचते देख सब चुप कर गए। हमारे लिए और पंचों के लिए एक मंच बना था। जब हम बैठ गए तो पाँच पंच हमारे दोनों ओर बैठ गए और पंचायत आरम्भ हुई। पंचराज एक मुसलमान नूरुद्दीन था। उसने खड़े होकर कहा, ''गाँव के रहने वाले भाइयो और बहनो ! मेरे पास एक शिकायत आई है। शिकायत करने वाला करामत है। मैं करामत से कहता हूँ कि वह पंचों के सम्मुख उपस्थित होकर अपनी शिकायत रखे।''

भूमि पर बैठे हुओं में से एक व्यक्ति, खड़ा होकर कहने लगा, ''पंचों की सेवा में मेरी प्रार्थना है कि इस वर्ष मेरे खेत में गाजर बहुत मोटी-मोटी हुई थीं। अन्य किसी के भी खेत में ऐसी गाजरें नहीं हुईं। कल पीरू के घर वैसी ही मोटी गाजरें, जो मेरे खेत में पैदा हुई थीं, ढेर लगा हुआ था। मेरी शिकायत है कि पीरू ने मेरी गाजरें चुराकर अपने घर में रखी हुई हैं। मैंने पीरू के पड़ोसियों को वे गाजरें दिखा दी थीं। वे मेरे कहने की साक्षी देंगे।''

नूरुद्दीन ने कहा, "उन पड़ोसियों के नाम बताओ।"

"एक बुद्धू चमार है। दूसरा कमलनाम भिक्षुक है और तीसरा नन्दू पांडे है।"

इस पर एक-एक कर तीनों को पूछा गया और उन्होंने करामत की बात का समर्थन किया। उन्होंने बताया कि सिवाय करामत के खेतों के इतनी बड़ी गाजरें और किसी के खेत में नहीं देखीं। वैसी गाजरों का ढेर पीरू के घर के आँगन में लगा हुआ था।

अब पीरू से इस विषय में पूछा गया। उसने कहा, "मैंने गाजरें चोरी नहीं कीं। मुझको किसी ने दी हैं और बताना नहीं चाहता कि किसने दी हैं। यदि करामत कहे और पंच-गण आज्ञा दें, तब ही बताऊँगा।"

पंचराज ने पूछा, "वे गाजरें करामत के खेतों की हैं क्या ?"

"हाँ। उसके खेत की हैं, परन्तु मैं चोरी करके नहीं लाया।"

"तो तुम्हारे घर कैसे आ गई ?"

"घर पर तो मैं उठाकर लाया था, परन्तु किसी ने मुझको दी थीं और मैं ले आया।"

"यदि किसी ने चोरी कर तुम्हें दीं, तो चोरी का माल लेने वाला भी चोर माना जाता है।"

"हाँ। परन्तु उसने चोरी नहीं की थीं। उसको वहाँ से उखाड़ने का अधिकार था।"

"वह कौन है ?"

"करामत कहे तो बता दूँगा।"

"क्यों भाई करामत !" नूरुद्दीन ने पूछा, "क्या उसका नाम पूछा जाए, जिसने पीरू को गाजरें दी थीं ?"

"जरूर पूछा जाए। मुझको पता लगना चाहिए कि मेरे खेतों में से गाजरें उठाकर ले जाने का किसको अधिकार हो गया है।"

"नन्दू पांडे की बीवी गौरी ने खेत में से उखाड़ी थीं और मुझको दी थीं।"

इस पर नूरुद्दीन ने पूछा, "तुम कैसे कहते हो कि गौरी को करामत के खेतों से गाजरें उखाड़ने का अधिकार है ?"

"यह मैं जानता हूँ। यदि गौरी से पूछा जाए तो वह स्वयं बता सकेगी।"

अब गौरी को सामने आने के लिए कहा गया। "क्यों गौरी ! तुमने वे गाजरें करामत के खेत से उखाड़ी थीं ?"

"हाँ।"

"क्यों ?"

"करामत ने मुझको कहा था कि जितनी मुझे जरूरत हो, मैं वहाँ से उखाड़ लिया करूँ।"

"क्यों कहा था ?"

"यह तो करामत से पूछिए कि क्यों कहा था ?" गौरी ने मुस्कराकर कहा।

करामत ने कहा, "मैंने गौरी को कहा था कि जितनी उसकी आवश्यकता हो न कि जितने उसके दोस्तों की आवश्यकता हो।"

सब उपस्थित लोग उसकी इस बात से हँसने लगे। सरपंच ने करामत से फिर पूछा, "तुमने यह कहा था कि जितनी आवश्यकता हो, वह उखाड़ ले ?"

"हाँ, कहा था।"

"तुमने कहा था क्या, कि केवल अपनी आवश्यकता के लिए ?"

"मेरे कहने का मतलब यही था।"

"तुमने सीमा बाँधी थी कि इतनी ले और इससे अधिक न ले ?"

"नहीं। जितनी इसकी आवश्यकता हो ले ले, ऐसा कहा था।"

"तो फिर यह झगड़ा क्यों करते हो ? वह तुम्हारा सारा खेत उखाड़कर जहाँ-जहाँ से उसकी कोई आवश्यकता पूरी हो, उसका प्रयोग कर सकती है। पीरू से उसका कोई काम गाजर देने से पूरा हुआ होगा, तभी तो उसने गाजरें दी होंगी। ऐसी अवस्था में उसने अपनी आवश्यकता के अनुसार ही तो ली हैं।"

मैं पंचायत की कार्यवाही सुनकर चकित रह गया। एक तो प्रायः लोग सत्य भाषण कर रहे थे। दूसरे सब अपने मन की बात स्वतन्त्रतापूर्वक कहते थे। मेरे मन पर गाँव वालों का यह चरित्र उनके प्रति अच्छा प्रभाव डाल रहा था। परन्तु पंचायत की अगली कार्यवाही ने मेरे विचारों को भारी धक्का पहुँचाया।

इस समय नन्दू पांडे, जो करामत के कथन की साक्षी कर रहा था, उठकर कहने लगा, "मेरी भी प्रार्थना है। स्वीकृति हो तो पंचों के सम्मुख उपस्थित करूँ।"

नूरुद्दीन ने कहा, "हाँ, बताओ क्या बात है ?"

"मेरा यह आरोप है कि करामत ने मेरी बीवी गौरी को गाजरें उखाड़ने का अधिकार देकर अनधिकार चेष्टा की है। वह बताए कि उसने ऐसा क्यों किया है ?"

"बताओ करामत ?"

"गौरी मेरी प्रेमिका है।"

नन्दू पांडे ने कहा, "यहाँ के नियमानुसार मुझको गौरी से सम्बन्ध-विच्छेद करने का अधिकार है।"

"गौरी, क्या कहती हो तुम ?" सरपंच ने पूछा।

"मैं करामत की प्रेमिका अवश्य हूँ, परन्तु मेरा उससे किसी भी प्रकार का शारीरिक सम्बन्ध नहीं है।"

"शारीरिक सम्बन्ध तो परिणाम है प्रेम का। जब कारण का प्रमाण मिल गया तो कार्य हुआ ही है। यह न्याय का नियम है।"

मुझे इस प्रकार इन देहातियों को युक्तियाँ करते देख विस्मय हुआ। वार्तालाप आगे चलता गया। नन्दू पांडे ने कहा, "मुझको आज से गौरी के पालन-पोषण के भार से मुक्त किया जाए।"

गौरी ने कहा, "जब तक पांडे यह सिद्ध न करे कि शारीरिक सम्बन्ध हुआ है, तब तक वह मुझे छोड़ नहीं सकता।"

"तो तुम शारीरिक सम्बन्ध से इन्कार करती हो?"

"हाँ।"

"तो ये गाजरें करामत ने क्यों दी थीं?"

"शारीरिक सम्बन्ध बन जाने की आशा में।"

"तुमने आशा दिलाई थी क्या?"

"हाँ, परन्तु केवल मौखिक रूप में।"

"क्यों पांडे! अब क्या कहते हो?"

"यदि गौरी का कहना ठीक भी मान लिया जाए, तब भी मन की स्वीकृति मुख्य बात है। शारीरिक कार्य तो उसका परिणाम है। जब गाजरों का उपहार दिया जा चुका है तो कार्य होगा ही। मुझको सम्बन्ध-विच्छेद की स्वीकृति दी जाए।"

"करामत! तुम क्या कहते हो?"

करामत चुप रहा। वह कुछ कह न सका। इस पर सरपंच ने प्रश्न पूछा, "तुमने यह गाजरों का उपहार गौरी को शारीरिक सम्बन्ध के प्रतिरूप में दिया था अथवा उसकी आशा में?"

करामत बोला, "मैं इसका उत्तर स्वयं न दूँगा। जो कुछ गौरी ने कहा है, उसे ठीक मान लिया जाए।"

इस अनिश्चित उत्तर को सुन सब हँसने लगे। इस पर पंच रोमिली से पूछने लगे कि क्या किया जाए। जहाँ तक करामत का आरोप था, पीरू पर चोरी सिद्ध नहीं हो सकी। जहाँ नन्दू की प्रार्थना के विषय में बात थी, मतभेद था। दो पंच कहते थे, "जब तक शारीरिक सम्बन्ध का प्रमाण न मिल जाए जब तक सम्बन्ध-विच्छेद की स्वीकृति नहीं दी जा सकती।" अन्य दो पंचों का मत था, "यदि शारीरिक सम्बन्ध नहीं बना हुआ भी मान लिया जाए तब भी उसकी स्वीकृति दी गई है। जब स्वीकृति दे दी गई तो गौरी को करामत के पास चला जाना चाहिए। अन्यथा हम ऐसे व्यवहार को प्रोत्साहन देंगे, जिसमें स्त्रियाँ शारीरिक सम्बन्ध की आशा दिलाकर पुरुषों को लूटा करेंगी।"

सरपंच ने रोमिली से पूछा; "ऐसी अवस्था में क्या होना चाहिए?"

"सम्बन्ध-विच्छेद स्वीकार होना चाहिए।"

"तब गौरी कहाँ जाएगी?"

"जहाँ उसकी इच्छा हो।"

"यदि करामत, जो अब गाजरें पीरू को देने से उस पर से विश्वास खो चुका है, अपने घर न रखे, तो?"

"तो वह अप्सरा बन जाएगी।"

मैं अप्सरा का अर्थ समझा वेश्या। इस कारण मैं रोमिली के कथन पर चकित रह गया। इस पर भी मैं इस मामले में अपनी सम्मति देना नहीं चाहता था। रोमिली की सम्मति मान ली गई।

पंचायत के पश्चात् रोमिली मुझको करामत के खेत में ले गई। करामत ने एक गाजर निकालकर दिखाई। वह पाँच सेर के लगभग होगी। मैं देखकर चकित रह गया। रोमिली ने कहा, "हम एक रहस्य को जान गए हैं। एक प्रकार की विद्युत् तरंगों का रहस्य हम पा गए हैं। ये तरंगें वनस्पतियों में नवीन जीवन का संचार कर देती हैं जिससे वे अथवा उन पर उगने वाले फल-फूल बहुत बड़े-बड़े होने लगते हैं।"

"खेत की पैदावार कितने गुना बढ़ गई है?" मैंने पूछा।

उत्तर करामत ने दिया, "पिछले वर्ष इसी खेत में दस मन गाजर निकली थीं। इस वर्ष चोरी हो जाने पर भी सौ मन गाजरें तो बाजार में बेच चुका हूँ और अभी न जाने कितनी और हैं।"

चोरी की बात चलने पर मुझे गौरी की अवस्था का स्मरण हो आया। मैंने करामत से पूछा, "अब गौरी का क्या होगा?"

"वह वेश्या बनेगी। मैं उसको घर पर रखूँगा नहीं। उसने मुझको धोखा दिया है। मुझसे प्रेम प्रकट कर, मुझसे गाजरें लेकर अपने एक अन्य प्रेमी को दी हैं।"

"तुमने जब गाजरों की चोरी का आरोप लगाया था, तो पहले गौरी से पूछ तो लेते।"

"मैं समझता हूँ कि नहीं पूछा तो अच्छा किया है। गौरी की धोखेबाजी पता चल गई है।"

"पर उसका जीवन बरबाद हो जाएगा।"

"नहीं हुजूर! उसको खाने-पहनने को पंचायत देगी और अब वह सबके काम की वस्तु बन जाएगी। हमारे मालिक उसके स्वास्थ्य और सौन्दर्य को उन्नत करने का उपाय करेंगे और वह बहुत काम की स्त्री हो जाएगी।"

"पंचायत वेश्याओं के पालन-पोषण का प्रबन्ध करती है?"

"हाँ सरकार! हम सब अपनी आय का दसवाँ भाग पंचायत को देते हैं। उसमें से अप्सरा मन्दिर का खर्चा भी चलता है। सड़कें और गाँव सुन्दर बनाने का काम भी उसी धन से होता है।"

मेरी समझ में यही आया कि केशव यहाँ नयी संस्कृति को जन्म दे रहा है। अपने

विचार से वह संसार की अन्य संस्कृतियों पर उन्नति कर रहा मानता होगा। परन्तु वास्तव में क्या यह उन्नति है ?

जब हम करामत के खेतों से चल पड़े तो रोमिली ने पूछा, "अब किधर चलिएगा ?"

"मैं क्या जानूँ ? मैं तो इस स्थान से, यहाँ के रहने वालों से और यहाँ के रहन-सहन से बिल्कुल अपरिचित हूँ।"

"तो चलिए नदी के किनारे चलकर बैठेंगे।" हम नदी की ओर चल पड़े। मार्ग में रोमिली ने एक खेत दिखाया जिस पर विद्युत् तरंगों का प्रयोग हो रहा था। खेत के चारों ओर विद्युत् तरंगों के फेंकने वाले यन्त्र लगे थे और वे चल रहे थे। रोमिली ने बताया, "ये यन्त्र चौबीस घण्टे तक चलेंगे। इनसे खेत में डाले बीजों और उनसे उत्पन्न हो रहे अंकुरों में पर्याप्त शक्ति का संचार हो जाएगा। उनके कोषाणुओं के न्यष्टियों में नये कोषाणु बनाने की अपार शक्ति आ जाएगी और वे खेत की उपज दस गुना अधिक बढ़ा देंगे।"

हम कुछ समय तक उस परीक्षण को देखते रहे। खेत में बीज तीन दिन पूर्व डाला गया था। इन किरणों के प्रभाव से बीजों से अंकुर निकलते हुए दिखाई देने लगे थे। निकले हुए अंकुर वृद्धि पाते दृष्टिगोचर होने लगे थे। पूर्ण खेत में ऐसे कुलबुल-कुलबुल हो रही थी, मानो उसमें कृमि रींग रहे हों। इस चमत्कारिक प्रयोग को देख मैं चकित रह गया। मैंने रोमिली से कहा, "यदि केशव अपना परीक्षण लिखकर किसी इंग्लैण्ड अथवा अमेरिका के 'सायंटिफिक जर्नल' में छपवा दे तो निस्सन्देह उसको 'नोबुल-पुरस्कार' मिल जाएगा।"

"हमें किसी पुरस्कार की आवश्यकता नहीं। हमको ख्याति की लालसा नहीं। हमको सुख भोगना है। जीवन छोटा है और संसार के सुख अगणित हैं। सब-के-सब भोग नहीं सकेंगे।"

इतना कहते-कहते उसने मेरी बाँह में बाँह डाली और हम नदी की ओर चल पड़े। मैंने उसका ध्यान वैज्ञानिक विषयों की ओर रखने के लिए पूछा, "इन यन्त्रों की देखभाल कौन करता है ?"

"हमने इस गाँव में पंचायत बना दी है। गाँव के वासियों ने उसको कर लेने का अधिकार दे दिया है। उस धन से यहाँ कई प्रकार के कार्य चलते हैं। एक अप्सरा मन्दिर है, एक अस्पताल है, एक स्कूल है। सड़कें और टूटे हुए मकानों का निर्माण होता है। यह खेतों में जल अथवा विद्युत् किरणों से सिंचाई भी पंचायत के हाथ में है। ये सब प्रबन्ध पंचायत करती है। विद्युत् हम इनको निःशुल्क देते हैं। भूमि का कर भी पंचायत को मिलता है। राजा का लगान हम देते हैं।"

हम चन्द्रभागा के किनारे पर पहुँचे। एक बड़े-से पत्थर पर दोनों बैठ गए। नदी का बड़े-बड़े पत्थरों पर से गड़गड़ाते हुए बहना अति लुभायमान दिखाई देता

था। नदी के पार किनारे पर चुनार के पेड़ थे और दूर पहाड़ पर चीड़ के पेड़। पहाड़ों के ऊपर अस्ताचल की ओर जाता हुआ सूर्य अपनी मनोहर छटा प्रसारित कर रहा था।

सूर्य की किरणें नदी के उछलते-कूदते जल पर पड़ती हुई अनेकानेक रंग उत्पन्न कर रही थीं।

रोमिली ने मेरी बाँह को, जो अभी तक उसकी बाँह में पड़ी थी, कुछ दबाते हुए कहा, "कितना मादक दृश्य है यह ! इसे देखकर ही तो केशव ने यहाँ अपना स्वर्गलोक बनाने का निश्चय किया था।"

"सत्य है। इस दृश्य में मन को सम्मोहित करने की शक्ति है। चित्त करता है कि इसके सौन्दर्य को आँखों से पीता ही जाऊँ। कठिनाई यह कि इन्द्रियों को सुख देने से वे तृप्त नहीं होतीं। प्रत्युत उनकी तृष्णा बढ़ती जाती है।"

"आपका सिद्धान्त तो यह है न कि वास्तविक सौन्दर्य आत्मा को शान्ति पहुँचाता है। शान्ति पहुँचाने वाली वस्तु तो तृप्तिकारक होनी चाहिए। यह अब आपने अपनी बात का ही खंडन कर दिया।"

"नहीं। यह खंडन नहीं है। देखो भाभी ! भोजन का स्वाद एक वस्तु है और उसका पुष्टिकारक गुण दूसरी बात। स्वाद तो जिह्वा लेती है परन्तु पुष्टिकरण पेट में जाकर होता है। यदि कोई मिठाई का स्वाद मुख में ले-लेकर फेंकता चला जाए तो तृप्ति नहीं होती। तृप्ति तब ही होती है जब भोजन आमाशय में जाता है और इसमें पुष्टिकारक गुण विद्यमान होता है।

"इसी प्रकार सौन्दर्य यद्यपि आँखों तक ही रहे तो तृप्ति नहीं होती। तृप्ति तब होती है, जब सौन्दर्य मन द्वारा आत्मा तक उतर जाए।

"स्वाभाविक परिस्थिति में तो सौन्दर्य आँखों द्वारा देखा जाकर आत्मा तक पहुँचता ही है। यह बिल्कुल खाए हुए भोजन की भाँति ही है, जो जिह्वा को स्वाद देने के पश्चात् आमाशय में उतरता ही है। कठिनाई वहाँ उपस्थित होती है, जब आमाशय रुग्ण हो और खाए-पीए को कै कर दे। जब मन अथवा आत्मा स्वस्थ न हो तो आँखों द्वारा ग्रहण किया सौन्दर्य आत्मा तक उतरता ही नहीं। यह कै हो जाता है और तृप्ति नहीं देता।"

"अच्छा विनोद जी ! यह बताइए कि मेरा सौन्दर्य आपकी आत्मा तक उतर रहा है अथवा आँखों तक ही रह रहा है?"

मैंने उसकी आँखों में देखकर कहा, "मुझे तुम्हें देखकर तृप्ति हो रही है। इससे मेरा अनुमान है कि आत्मा तक पहुँच रहा है।"

"जब कोई मनुष्य भोजन कर तृप्ति अनुभव करता है तो क्या करता है?"

"खाना छोड़ देता है।

"इसी प्रकार जब मैं मन-भर कर तुम्हें देख लेता हूँ और तृप्त हो जाता हूँ तो

तुम्हें देखने को जी नहीं करता। एक बार का देखा हुआ चिरकाल तक तृप्ति देता है।''

''यह तो आप अरुचि की बात कर रहे हैं। जैसे अस्वादिष्ट पदार्थ को खाने से अरुचि होती है, वैसे ही आप मेरे से अरुचि अनुभव करते प्रतीत होते हैं।''

''नहीं रोमिली ! अरुचि एक सर्वथा पृथक् बात है। अस्वादिष्ट पदार्थ के स्वाद का स्मरण कर उसको पुनः खाने की इच्छा नहीं होती। यह अरुचि है। उसका स्वाद स्मरण कर आनन्द के स्थान पर घृणा ही अनुभव होती है। परन्तु स्वादिष्ट पदार्थ का स्वाद और उसके तृप्तिकारक प्रभाव को स्मरण कर तो आनन्द अनुभव होता है और पश्चात् पुनः उसके लेने की इच्छा होती है।''

''तो आप मुझको पुनः देखने की भी इच्छा करते हैं ?''

''हाँ।''

''तो आप मुझको अपना क्यों नहीं लेते ? मुझको अपना बना लीजिए। मैं आपके पास सदा रहूँगी।''

''तुम तो अपनी ही हो। मेरे परम मित्र की स्त्री हो। मेरी भाभी हो।''

''मेरा अभिप्राय है कि मुझको अपनी पत्नी बना लो।''

''मैं सम्बन्ध-विच्छेद में विश्वास नहीं रखता और शारीरिक सम्बन्ध होने से कोई अपना अधिक हो जाता है, ऐसा नहीं मानता। यदि ऐसा होता तो वेश्याओं को लोग अपने समीप अधिक समझते।

''देखो रोमिली ! तुम बहुत अच्छी हो, पढ़ी-लिखी और बुद्धिशील हो। तुमने यहाँ पर जो कुछ किया है, अद्वितीय है। इससे मैं तुम्हारे प्रशंसकों में से हूँ। इस पर भी तुम मेरी पत्नी नहीं हो सकतीं। पत्नी के कर्तव्य और अधिकार भिन्न हैं। तुम अति श्रेष्ठ होते हुए भी न तो पत्नी के कर्तव्य पालन कर सकती हो और न ही उसका अधिकार पा सकती हो।''

इस पर रोमिली के माथे पर त्योरी चढ़ गई। उसने पूछा, ''मैं पत्नी के कर्तव्य क्यों नहीं पालन कर सकती ?''

''इस कारण कि तुम दूसरे की पत्नी हो। तुमने उसको वचन दिया है कि तुम उसकी निष्ठावान स्त्री बनकर रहोगी।''

''मैं आपके लिए केशव को छोड़ सकती हूँ।''

''मैं यह नहीं चाहता। कारण यह है कि मैंने राधा को वचन दिया है मैं उसका निष्ठावान पति रहूँगा। मैं अपना वचन भंग नहीं करना चाहता।''

''क्या मैं उससे अधिक सुन्दर नहीं हूँ ?''

मैंने मुस्कराकर उसकी ओर देखकर कहा, ''जो सौन्दर्य एक पति अपनी पत्नी में देखना चाहता है, वह तुममें राधा से कम है।''

''वह सौन्दर्य क्या है ?''

"इस सौन्दर्य का सम्बन्ध मन से है। राधा निष्ठावान है। वह मेरे अतिरिक्त किसी अन्य को पति के रूप में ध्यान में भी नहीं ला सकती। तुममें वह मन की दृढ़ता नहीं। भगवान् जाने तुमने मेरी इन आँखों में क्या देखा है कि तुम मुझसे सम्बन्ध के लिए व्याकुल हो रही हो। मैं इन दोनों बातों में कोई सम्बन्ध नहीं देखता।"

"विवाह तो एक प्रकार का 'कॉन्ट्रैक्ट' है न ? यह दोनों की अनुमति से टूट भी सकता है।"

"हम हिन्दू इसको ठेकेदारी नहीं मानते। इसको हम धर्म का सम्बन्ध समझते हैं। यह एक बार बन जाने से टूट नहीं सकता।"

"इस पर भी पुरुष तो दो-तीन विवाह कर लेते हैं।"

"हाँ, परन्तु विवाह टूट नहीं सकता।"

"तो पत्नी को दो अथवा तीन विवाह की स्वीकृति क्यों नहीं ?"

"इस कारण कि स्त्री सन्तान को अपने गर्भ में रखती है। सन्तान के मन में यह सन्देह उत्पन्न न होने देने के लिए कि उसका पिता कौन है, स्त्री को एक ही पति की पत्नी बनकर रहने का विधान है।"

"यह तो अन्याय है।"

"स्त्री के साथ हो सकता है, परन्तु भावी सन्तान के विचारों को शुद्ध-पवित्र रखने के लिए यह अन्याय भी सह्य है।"

"इस बात में संदेह उत्पन्न होने से कि किसका पिता कौन है, उस सन्तान के मन में क्या खराबी उत्पन्न हो सकती है ?"

"हिन्दुओं की समाज में किसी को अपने पिता का ज्ञान न होना अशोभनीय माना जाता है। इस कारण स्त्री को एक ही पति रखना आवश्यक माना गया है।"

"इसमें कोई युक्ति नहीं है।"

"मन की भावनाएँ युक्ति के तराजू पर नहीं तोली जातीं। इस पर भी रोमिली ! मैं यह कहना चाहता हूँ कि इस प्रकार की बातों से कोई लाभ नहीं। एक अन्तिम बात तुझको समझ लेनी चाहिए कि जैसे टूनी मेरी बहन है, वैसे ही तुम मेरी भाभी हो और राधा मेरी पत्नी है। यह मेरा अविचल निश्चय और विश्वास है।"

"आप इस निश्चय से डिग नहीं सकते क्या ?"

"तुम जैसी स्त्रियों के सम्मोहन में आकर अस्थाई रूप में पथ-भ्रष्ट हो सकता हूँ; इस पर भी उससे बचने के लिए मैं कोई उपाय छोड़ूँगा नहीं। पथ-भ्रष्ट होने पर भी मैं उस पतन से उठने के लिए प्रायश्चित करूँगा।"

रोमिली का मुख उतर गया। उसने पत्थर से उठते हुए कहा, "मैं अभी निराश नहीं हुई। मैं फिर यत्न करूँगी।"

हम दोनों बाँह-में-बाँह डाले हुए ही केशव भवन की ओर लौट पड़े। मैंने लौटते हुए कहा, "जब-जब तुम वासना में ग्रस्त होती हो, तुम्हारा सौन्दर्य फीका पड़ जाता है।"

मैं मन में विचार करता था कि केशव रोमिली के मेरे प्रति विचारों को जानता है अथवा नहीं। मुझको विश्वास था कि वह जानता है, परन्तु वह इस बात की परवाह नहीं करता। इस बात का विश्वास होने से मुझको केशव पर दया आने लगी। मैंने निश्चय कर लिया था कि एक बार उससे इस विषय में बात करूँगा। मैं जानता था और अपने मन में अनुभव करता था कि मैंने आज अपने को रोमिली के सम्मोहन से बचा लिया है। इस पर भी मैं अपनी बार-बार परीक्षा करना नहीं चाहता था। मैंने निश्चय कर लिया कि आगे से राधा सदा मेरे साथ रहा करेगी।

भवन पर पहुँचे तो केशव लॉन में खड़ा अस्सी वर्ष की बुढ़िया के शव को गाँव में संस्कार के लिए भेज रहा था। मैं उसके पास पहुँचा तो उसने बताया, "वह स्त्री शुद्धिकरण सह नहीं सकी।"

"दूसरी दो कैसी हैं?"

"वे ठीक हैं। अभी भी नील-वर्ण किरणों में स्नान कर रही हैं। चलो दिखाऊँ।"

मृत शव के चले जाने पर हम भवन में चले गए। रोमिली अभी भी मेरी बाँह-में-बाँह डाले हमारे साथ थी। हम उस कमरे में पहुँचे, जिसमें दोनों स्त्रियाँ लेटी हुई थीं। कमरे में ऊष्मा पर्याप्त थी और दोनों स्त्रियाँ अभी भी सर्वथा अवस्त्र नील-वर्ण प्रकाश में लेटी हुई थीं। केशव ने मुझको कहा, "इसके सिर पर देखो। नये काले बाल निकल रहे हैं।" उसने एक स्त्री के स्तनों को, जो प्रातःकाल खाली थैलियों की भाँति लटके हुए थे और अब शुद्धि-प्रक्रिया के कारण सिकुड़कर छाती के साथ लग गए थे, उँगली से दबाते हुए कहा, "देखो, ये एक कुमारी के स्तनों की भाँति पनपने लगे हैं।"

उनकी चमड़ी में भी नया तेज आता दिखाई देने लगा था। साथ ही आँखों की ज्योति बढ़ने लग गई थी। केशव ने बताया, "करीम को स्वास्थ्य-लाभ करने में दस दिन लगे थे। वह पिचहत्तर वर्ष का बूढ़ा अब पच्चीस वर्ष का युवा प्रतीत होता है। इन स्त्रियों में तो शक्ति का संचार अधिक वेग से हो रहा प्रतीत होता है। पाँच-छः दिनों में ये विवाहने योग्य हो जावेंगी।"

उस स्थान से हम बाहर चले आए। सूर्यास्त हो चुका था और अँधेरा होने जा रहा था। मैं राधा को घोड़े पर सवार आते देखने के लिए भवन से बाहर निकल आया। रोमिली अभी भी मेरे साथ चिपटी हुई थी। वह मेरे आशय को समझ गई थी। पूछने लगी, "राधा को देखने जा रहे हैं क्या?"

"हाँ, अब तक उनको वापस आ जाना चाहिए था। अँधेरा हो रहा है।"

"यहाँ अँधेरा होता ही नहीं। व्योम में प्रकाश कर दिया जाएगा।"

"इस पर भी सर्दी हो रही है। उनको आ जाना चाहिए।"

हमको भवन से बाहर आए अभी पाँच मिनट मुश्किल से हुए होंगे कि पहाड़ी पर से दो घुड़सवार आते दिखाई देने लगे। रोमिली ने कहा, "वे आ रही हैं।"

रोमिली मेरी बाँह-में-बाँह डाले खड़ी रही और मैं राधा और टूनी की प्रतीक्षा करता रहा। राधा घोड़े पर खुली हवा में सैर करने से लाल हो रही थी और घोड़े को एड़ लगाकर टूनी से आगे निकल आई थी। उसने घोड़ा खड़ा किया तो मैंने आगे बढ़, उसको घोड़े से उतरने में सहायता दी। इस समय मैंने अपनी बाँह में से रोमिली की बाँह निकाल दी थी।

राधा अति प्रसन्न और सबल दिखाई देने लग गई। वह राइडिंग ड्रेस में बहुत ही अच्छी लग रही थी। टूनी आई तो मैं उसके साथ अपने कमरे में चला गया। राधा ने कहा, "हमने खूब घुड़दौड़ की है और मैं समझती हूँ कि एक ही दिन में मेरा बल दुगुना हो गया है।"

"बहुत खूब।"

"वहाँ पहाड़ी पर जहाँ पावर प्लांट लगा है, किश्तवार की पूर्ण वादी का दृश्य देखने को मिलता है। बहुत ही मनोहर है।"

टूनी और रोमिली भवन के दूसरे कक्ष में चली गई थीं। मैं समझ गया कि रोमिली टूनी को अपनी असफलता का विवरण बताने ले गई है।

जब राधा कपड़े बदल चुकी और प्लास्टिक की सेविका चली गई तो वह मेरे पास आकर पूछने लगी, "क्या देखा आपने?"

"गाँव की पंचायत देखी। एक साफ-सुथरा गाँव देखा। खेतों को धन उगलते देखा और फिर चन्द्रभागा को वादी में बहते देख मन बहलाते रहे हैं।"

"आपने कुछ खाया है अथवा नहीं?"

"नहीं। चाय के लिए तो बहुत देरी हो गई है। अब तो भोजन ही करेंगे।"

"हम तो चाय ऊपर से ही पी आए थे।"

"अच्छा किया है।" हम दोनों आराम कुर्सियों पर बैठकर बातें कर रहे थे कि केशव ने कमरे के बाहर से पुकारा, "विनोद!"

"हाँ केशव! भीतर आ जाओ।"

केशव आया तो उसके साथ एक स्त्री भी आई। वह स्त्री एक सुन्दर युवती थी। वस्त्र तो यद्यपि साधारण से ही पहिने थे, इस पर भी नखशिख तथा रूप-लावण्य पर्याप्त अच्छा था।

"देखो विनोद!" केशव ने कहा, "तुम लोग आज पंचायत कर आए हो और क्या कर दिया है वहाँ?"

"क्या कर दिया है? मैं इस स्त्री को नहीं जानता।"

"नन्दू पांडे की बीवी को नन्दू ने छोड़ दिया है और करामत ने उसको रखा नहीं। अब वह इसके पति पीरू को लेकर भाग गई है।"

"तो यह पीरू की बीवी है ? यह तो गौरी से अधिक सुन्दर है।"

"हाँ, पर यह दो बच्चों की माँ है। गौरी के बच्चा हुआ नहीं और न होने की आशा है। इस कारण यह और बच्चे पीरू को बोझा प्रतीत हुए हैं। गौरी तो सर्वथा मुक्त ही है।"

"तो हमने इसमें क्या कर दिया है ?"

"पांडे को सम्बन्ध-विच्छेद की स्वीकृति नहीं देनी चाहिए थी।"

"न्याय किया है पंचों ने। सम्मति दी थी रोमिली ने। अब मेरी सम्मति मानें तो पांडे इससे विवाह कर ले। दो बच्चे फोकट में मिल जाएँगे। साथ ही तुम यह कृपा कर दो कि पीरू के खेत पांडे को दिलवा दो !"

विनोद इस प्रस्ताव से फड़क उठा, परन्तु एक ही क्षण में उसको पांडे की प्रवृत्ति समझ में आ गई। वह गम्भीर हो गया और बोला, "विनोद ! यह पांडे कैमिस्ट्री का एम० एस-सी० नहीं है। ब्राह्मण होते हुए एक मुसलमान से विवाह नहीं करेगा।"

"उसकी स्त्री जो एक मुसलमान ले गया है।"

"ये युक्तियाँ उसकी समझ में नहीं आ सकतीं। वह अपने को परमात्मा का श्रेष्ठ पुत्र मानता है और किसी निकृष्ट जीव से वह सम्पर्क नहीं चाहेगा।"

"उसको बुलाओ तो।"

पीरू की बीवी को रोमिली के पास भेज केशव ने गाँव में सन्देश भेज दिया कि नन्दू पांडे को भेज दिया जाए।

इस सन्देश को भेज वह वहाँ ही बैठ गया और बताने लगा कि किश्तवार में तहसीलदार आया हुआ है। उसने मुझको बुलवाया था। उसका कहना है कि राबर्ट का पत्र महाराज के नाम पर आया है, जिसमें उसने लिखा है कि हम नर-मांस खाने वाले हैं। उसने यह भी लिखा है कि हम नर-मांस खाकर अस्थियों का चूरा कर चन्द्रभागा में बहा देते हैं। इसी कारण उसने अपनी बीवी मालती को छोड़ दिया है।

"महाराज ने वह पत्र जाँच के लिए तहसीलदार के पास भेजा है। उस भद्र पुरुष ने मुझको बताकर जाँच करने की इच्छा प्रकट की है। मैंने उसको बुलाया है और वह कल हमारे गाँव में जाँच करने के लिए आ रहा है।

"मैंने उसको राबर्ट के विषय में केवल यह बताया है कि वह मालती से रुपया ऐंठना चाहता था। मालती ने उसको एक लाख रुपया दिया भी है। अब वह और अधिक की आशा करने लगा है। इस प्रकार के झूठे लाँछन लगाकर वह और अधिक ऐंठने का यत्न कर रहा है।

"मैं चाहता हूँ कि नर-हत्या की बात उसे न बताई जाय। कारण कि यदि हम राबर्ट पर आरोप लगाएँगे तो जाँच होगी। हम प्रमाण देंगे तो हमको अपनी सफाई देनी पड़ेगी। व्यर्थ के झंझट से बचने के लिए हमको नर-हत्या से अनभिज्ञता ही प्रकट करनी चाहिए।"

अब मैंने अपने मन की बात कह देनी उचित समझी। राधा भी सामने थी और मैंने उसके सम्मुख ही कहना ठीक समझा। मैंने कहा, "केशव! मैं तुमसे एक अत्यावश्यक बात करना चाहता हूँ। यदि नाराज न हो तो कहूँ।"

"हाँ-हाँ, कहो।"

"उस समय से, जब मैंने रोमिली के सुन्दर दाँतों की प्रशंसा की थी, वह मेरे पीछे पड़ी है। आज उसने स्पष्ट शब्दों में मेरे सम्मुख प्रस्ताव रखा है कि वह तुमसे सम्बन्ध-विच्छेद कर मुझसे विवाह करने को तैयार है। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझसे तो वह यह बात स्वीकार न करा सकी परन्तु किसी अन्य को वह यह कह बैठी और वह मान गया तो एक भयंकर परिस्थिति उत्पन्न हो जाएगी।"

"तुमने उसको स्वीकार क्यों नहीं किया?"

"इस कारण कि मेरा विवाह एक ऐसी स्त्री से हो चुका है जो मुझको अतिप्रिय है और साथ ही इस कारण कि रोमिली मेरे मित्र की बीवी है।"

"देखो विनोद! मैं रोमिली के स्वभाव से परिचित हूँ। मैं इस बात को जानता हूँ कि कॉलेज के दिनों में उसका राबर्ट तथा अपने अन्य सहपाठियों के साथ सम्बन्ध रहा है। मुझको यह भी विदित है कि उसका राबर्ट से, जब वह यहाँ था, सम्बन्ध था। यदि राबर्ट के विरुद्ध नर-हत्या की बात न होती तो कदाचित् उसके साथ ही चली गई होती। नर-हत्या ने उसके मन में उसके प्रति ग्लानि उत्पन्न कर दी प्रतीत होती है। यदि तुम उसको स्वीकार कर लेते तो मुझको प्रसन्नता ही होती। कारण यह कि तुम मेरे मित्र हो। मेरी वस्तु मेरे मित्र के पास ही रहेगी।"

"ऐसी स्त्री को तुम अपनी वस्तु समझते हो?"

"वह मेरे साथ दस वर्षों से रही है और मेरे इस अद्‌भुत आयोजन में मेरी सहयोगिनी है।"

"कुछ भी हो। यदि उसकी दृष्टि किसी दुष्ट प्रकृति के पुरुष पर टिक गई तो वह उसके आदेश पर प्रत्येक कार्य करने के लिए तैयार हो जाएगी। मित्र! मैं यहाँ तुम्हारा जीवन भययुक्त समझता हूँ।"

"हा हा हा।" केशव खिलखिलाकर हँस पड़ा। "देखो विनोद!" उसने कहा, "मैं मौत से नहीं डरता, यद्यपि मैं मरना भी नहीं चाहता। अतएव मैंने रक्षा का पूर्ण प्रबन्ध किया हुआ है। यह मैं तुम्हारे सामने एक दिन रखूँगा।"

केशव के कहने पर मुझे शान्ति नहीं हुई। मैं अपने मन में एक योजना बनाने लगा था, परन्तु उसके सफल होने में मुझको पूर्ण विश्वास नहीं था। इस पर भी

मैंने वह केशव से कह दी, "मैं समझता हूँ कि इसके लिए कोई ऐसा कार्य ढूँढ़ निकालो कि यह इधर-उधर भटक न सके।"

"रोमिली एक कामान्ध स्त्री है। उसको संसार की कोई भी अन्य वस्तु बाँधकर नहीं रख सकती। उसकी काम-तृप्ति होती ही रहनी चाहिए। इसी कारण मैं राबर्ट को यहाँ बुलाने पर मान गया था। मेरे लिए यदि उसका सम्बन्ध तुमसे हो जाता तो कम-से-कम आपत्तिजनक न होता। परन्तु मैं तुम्हें इस बात के लिए बाध्य नहीं कर सकता। भाभी के अधिकारों पर मैं छापा नहीं डालना चाहता।"

राधा मुस्कराई और चुप रही। मैंने कह दिया, "नहीं मित्र! यह नहीं हो सकता। रोमिली से तो मालती कहीं अधिक योग्य और अभीष्ट थी। जब अपने सिद्धान्त के अधीन उसको मैं बहन से कुछ अधिक अधिकार न दे सका तो रोमिली के लिए तो प्रश्न ही नहीं उठता।"

हम भोजन करने जा रहे थे कि नन्दू पांडे आ पहुँचा। वहाँ की प्रथानुसार मेज पर उसके और पीरू की बीवी के लिए भी स्थान बना दिया गया था। नन्दू पांडे के लिए पेड़े, खोआ, दूध की मिठाई और पूरी का प्रबन्ध हो गया। शेष सबके लिए एक जैसा प्रबन्ध था।

नन्दू को कुछ संकोच हुआ कि वह उसी मेज पर खा रहा है, जिस पर पीरू की बीवी खा रही है, परन्तु अपने लिए विशेष प्रबन्ध देख वह संतुष्ट हो गया।

भोजन करते हुए बात रोमिली ने आरम्भ की, "पांडे जी! गौरी तो गई और आपकी इच्छा से गई है। अब आप नया विवाह करेंगे क्या?"

"मालकिन! मैं भी यह गाँव छोड़कर जा रहा हूँ।"

"क्यों?"

"यहाँ मेरे योग्य कोई भी लड़की नहीं है और यदि मैं कोई बाहर की लड़की विवाह कर यहाँ लाऊँ तो वह भी यहाँ रहती बिगड़ ही जाएगी।"

"कैसे बिगड़ जाएगी?"

"गौरी पर मेरा बहुत विश्वास था। वह कुछ बड़ी सुन्दरी भी नहीं थी, परन्तु पीरू के साथ भाग गई। उस बेचारी का भी कोई दोष नहीं। यहाँ का वातावरण ही ऐसा है। यदि यहाँ सरदी अधिक न हो तो यहाँ की स्त्रियाँ और भी अधिक दुराचारिणी हो जातीं।"

"तो क्या करोगे?"

"मैं श्रीनगर चला जाऊँगा। वहाँ किसी भली लड़की से विवाह कर लूँगा।"

"यदि यहाँ तुमको कोई सुन्दर बीवी मिल जाए और तुम्हारे साथ प्रेमपूर्वक रहे तो कैसा हो?"

"सरकार! यह पीरू की बीवी के विषय में कहते हैं न? यह है तो भली औरत, परन्तु यह मुसलमान है और फिर पूर्व-विवाहिता है। एक ब्राह्मण यह अधर्म

कैसे स्वीकार कर सकता है ?''

''इसमें अधर्म क्या है ? यहाँ की समाज तो इसको बुरा मानेगी नहीं। साथ ही तुम्हारी गौरी से यह अधिक सुन्दर है। इसके दो बच्चे भी साथ हैं। यदि तुम मान जाओ तो पीरू के खेत भी साथ मिल जाएँगे।''

ये प्रलोभन नन्दू के लिए बहुत प्रबल सिद्ध हो रहे थे। वह चुप कर गया। उसको चुप देख केशव ने कहा, ''तो ठीक है न पांडेजी ?''

''एक बात तो समझ में आ रही है। पीरू से मेरा बदला निकल जाएगा, परन्तु जैसे पीरू ने मेरी बीवी से विवाह नहीं किया, वैसे ही मैं पीरू की बीवी को विवाह के बिना ही रखूँगा।''

''यह हो सकता है। उस अवस्था में पीरू के खेत पीरू की बीवी के नाम रहेंगे। तुम्हारे उसके साथ न रहने पर ये खेत उसके ही पास रहेंगे।''

''खेतों की मुझे चिन्ता नहीं। पर मैं धर्म की वेदी पर बैठकर एक मुसलमान स्त्री को अपनी पत्नी नहीं बना सकता।''

मैं समझ रहा था कि नन्दू पीरू की बीवी को एक रखैल बनाकर रख रहा है। यह पीरू की बीवी के सौन्दर्य का प्रतिचार नहीं था और न ही किसी प्रकार की आसक्ति का सूचक था। यह तो बदले की भावना से हो रहा प्रतीत होता था। मैं इस भावना को देख इस सुख-सम्पन्न गाँव में पूर्ण प्रयत्न को आधाररहित ही मानता था। मैं चाहता था कि नन्दू को कहूँ कि विवाह के मामलों में ईमानदारी से काम लो क्योंकि पीरू की बीवी ने उसका कुछ बिगाड़ा नहीं था। उसको उसके पति के बदले में दंडित करना उसके प्रति अन्याय होगा। परन्तु मुझको कुछ कहने का अवसर ही नहीं मिला। केशव ने कह दिया, ''हमारे लिए विवाह कर रखो अथवा बिना विवाह के। बात एक ही है। यह तुम्हारे घर पर रहेगी। इसके बच्चों के पालन का भार तुम पर है। इस काल के लिए पीरू के खेतों की पैदावार तुम्हारी होगी।''

''मुझको स्वीकार है।''

''तो भोजन के पश्चात् घर चले आओ। कल पंचायत में तुम्हारे इस प्रबन्ध की घोषणा कर दी जावेगी।''

भोजन के पश्चात् जब वे चले गए तो मैंने केशव से कहा, ''यह भी ठीक नहीं हुआ।''

''क्यों ?''

''इसीलिए कि बिना विवाह के इस प्रकार रहने की प्रेरणा करना आप लोगों को शोभा नहीं देता। आप यहाँ पढ़े-लिखे बुद्धिमान व्यक्ति हैं। यदि सब इसी प्रकार विवाह करने लगें तो पारिवारिक जीवन सर्वथा निर्मूल हो जाएगा। इससे समाज नष्ट-भ्रष्ट हो रसातल को पहुँचेगा।''

"कुछ नहीं होगा। नियम-उपनियमों के बन्धनों से मुक्त हो प्राणी सुख-सुविधा का भागी बनेगा। सुखी और स्वतन्त्र प्राणी अबाध उन्नति के मार्ग पर चलता हुआ जीवन व्यतीत करेगा।"

रात राधा ने मुझसे वह सब कुछ सुनाने का आग्रह किया, जो मेरे और रोमिली के बीच में हुआ था। उसने कहा, "जब टूनी ने मुझको कहा कि मैं उसके साथ पावर प्लांट देखने चलूँ और उसने बताया कि आप रोमिली के साथ पंचायत देखने जा रहे हैं तो मैं उस समय समझ गई कि रोमिली आप पर अपना मोह-जाल बिछाने का यत्न कर रही है। एक बार तो मेरे मन में आया कि आपको सचेत कर दूँ। परन्तु शीघ्र ही मुझे अपने ऊपर ग्लानि उत्पन्न हुई। मैंने आपकी दृढ़ता पर संशय किया था। जब मैं और टूनी लौटे तो आपकी बाँह-में-बाँह डाले हुए देख मुझे दुःख हुआ कि मैंने आपको सचेत क्यों नहीं किया। परन्तु समीप पहुँचकर रोमिली के मुख पर देखने से मेरा पूर्ण संशय निवारण हो गया। मैं समझ गई कि आप पर सन्देह करना मेरी भूल थी।

"अब आप क्या करना चाहते हैं ?"

"कुछ नहीं। मुझको विश्वास है कि तुम्हारे रहते हुए मुझे कोई पथभ्रष्ट नहीं कर सकता।"

"मैं एक बात कहती हूँ कि यदि आपके सम्पर्क से रोमिली स्थिरचित्त हो सके और केशव जी के मन को शान्ति मिल सके तो यह पाप नहीं होगा।"

"नहीं राधा! यह नहीं होगा। इसके अतिरिक्त मैं रोमिली को सीधे मार्ग पर लाने का यत्न करूँगा।"

यद्यपि राधा मुझको कह रही थी कि मैं रोमिली के प्रेम की प्रतिक्रिया दूँ तो भी मैं समझता था कि अन्तरात्मा में वह मेरे व्यवहार को ठीक नहीं मानती थी।

अगले दिन मैंने केशव के वैज्ञानिक परीक्षणों में अधिक रुचि लेनी आरम्भ कर दी। मैं उन स्त्रियों को देखने गया, जिनका कायाकल्प किया जा रहा था। उनका शरीर, जो शुद्धिकरण के समय बिल्कुल सूख गया था, अब भर आया था। सब पके हुए बाल झड़ चुके थे और उनके स्थान पर काले बाल उग रहे थे, आँखें मोटी और चमकदार हो गई थीं। गालें भर आई थीं और मुख अंडाकार दिखाई देने लगा था। शरीर का मांस चमकदार और मुलायम हो गया था। गर्दन पर, मुख पर की झुर्रियाँ बिल्कुल नहीं रही थीं। स्तन भर आए थे और उनकी चूचियों का रंग, जो वृद्धावस्था के कारण काला पड़ गया था, अब युवा कुमारियों की तरह गुलाबी हो गया था। दोनों अभी तक निर्वस्त्र बिस्तरों पर पड़ी थीं और अभी भी उन पर नीलवर्ण किरणों का प्रकाश पड़ रहा था। जो विशेष बात उनमें दिखाई दी थी, वह उनको मेरे वहाँ पहुँचने से लज्जा का अनुभव होना था। परीक्षण से पूर्व उनको वस्त्र उतारने के लिए कहा था, उन्होंने निस्संकोच कपड़े उतार दिए थे, मानो वे

काठ की पुतलियाँ ही हैं। परन्तु अब केवल बाईस घंटों के अन्तर पर मुझे कमरे में देख बिस्तर की चादर लपेटने का यत्न करने लगी थीं। वहाँ समीप कोई वस्त्र न देख उनका मुख लाल हो गया था।

मैंने समझा इनके शरीर के पुनरुद्धार के साथ-साथ इनके मन में भी यौवन आ गया है। मैंने उनके संकोच मिटाने के लिए पूछा, "रात नींद कैसी आई?"

"अच्छी प्रकार से आई?"

"अब कैसा अनुभव करती हो?"

"हम अब अपने घर जाना चाहती हैं।"

"डॉक्टर अभी आकर बताएँगे।"

मैं उस कमरे में चला गया जहाँ उनकी शुद्धि की गई थी। केशव वहाँ था और अपने यन्त्रों को ठीक कर रहा था। मुझको देख उसने पूछा, "देखा है उन बूढ़ी स्त्रियों को?"

"हाँ! अब वे उन्नीस-बीस वर्ष की युवतियाँ प्रतीत होने लगी हैं।"

"चलो तो देख लूँ।"

केशव ने भी उनकी परीक्षा की और पश्चात् उनको कहा, "अब तुम दोनों उठो और अपने वस्त्र पहिन लो। अब तुम जा सकती हो, परन्तु एक सप्ताह तक नित्य एक घण्टे के लिए तुमको यहाँ आना पड़ेगा। एक सप्ताह में तुम्हारे बाल खूब लम्बे, घने और चमकीले हो जाएँगे।"

वे उठकर कमरे से बाहर की ओर भागने लगीं कि केशव ने उनको कहा, "ठहरो, कहाँ जाओगी? बिना कपड़े पहिने बाहर निकलोगी तो सर्दी में मर जाओगी।"

वे वहीं ठहर गईं। केशव ने एक बटन दबाया। एक प्लास्टिक की पुतली भीतर आ गई और केशव ने उसको आदेश दिया, "इनको कपड़े पहिना तथा चाय पिलाकर विदा करो।"

पुतली ने झुककर संकेत किया, मानो वह सब कुछ समझ गई हो।

हम वहाँ से बाहर आए। केशव मुझे अपने पावर रूम में ले गया। वह उस सबके रहस्य को समझाने लगा, "मैंने जहाँ कल टूनी और राधा गई थीं, वहाँ एक विद्युत् उत्पादक यन्त्र लगा रखा है। वहाँ एक झरना है। उस झरने के जल को नियन्त्रण में करना पड़ा और पश्चात् उसमें यन्त्र लग सका। इस सब पर हमारा दो लाख रुपया खर्च हुआ था। उसके समीप ही मैंने आईसोटोप्स छाँटने का यन्त्र लगाया है। वहाँ मैंने पारे के आईसोटोप्स पृथक् किये हैं। एक आइसोटोप्स, जिसका भार २०२ है, एकत्रित कर लिया जाता है। वह ही शक्ति का स्रोत है, जिसका प्रयोग मैं भिन्न-भिन्न प्रकार से करता हूँ। इन प्लास्टिक के पुतलों के इलैक्ट्रोनिक मस्तिष्क में, रात को प्रकाशित होने वाले चाँद में तथा जीवनदान

करने वाले यन्त्रों में वही प्रयोग हो रहा है।

"इस आइसोटोप्स को मैं विघटित होते समय इलैक्ट्रोमैगनेटिक तरंगों से आन्दोलित करता हूँ, जिससे उसमें से निकल रही किरणें, मार्ग बदल लेती हैं। इस प्रकार की किरणें शरीर का शोधन करती हैं, दूसरी पोषण।

"दो मिस्त्री पावर हाउस में और एक समझदार संरक्षक आईसोटोप्स पृथक् करने वाले यन्त्र की देखभाल के लिए है। वहाँ से विद्युत् तारों द्वारा यहाँ भवन में और गाँव में वितरण के लिए आती है। इन तारों को लाने में हमारा एक लाख रुपया खर्च हुआ था। गाँव में एक व्यक्ति विद्युत्-वितरण केन्द्र में कार्य करता है और एक व्यक्ति यहाँ भवन में।

"गाँव की पंचायत खेतों में पोषण यन्त्रों द्वारा शक्ति वितरण करती है और सब गाँव वालों से उनकी उपज का दशांश लेती है।

"हमने इन यन्त्रों को पूर्ण कराने में पाँच लाख रुपये से ऊपर व्यय किया है। और ऐसा करने में चार वर्ष का समय लग गया है। अब दो वर्षों से उपज बढ़ रही है। गाँव वाले धनी होते जा रहे हैं। धन के साथ-साथ उनके विचारों में भी परिवर्तन होता जा रहा है। पंचायत ने इस वर्ष बच्चों के लिए एक विद्यालय खोल दिया है, परन्तु मेरा प्रौढ़ शिक्षा कार्य तो छः वर्षों से चल रहा है। जो कुछ तुमने कल पंचायत में देखा है, वह उस शिक्षा का ही परिणाम है।

"मुसलमान स्त्रियों ने परदा छोड़ दिया है। मुसलमान पुरुषों ने सफाई के विचार से दाढ़ी मुँडवानी आरम्भ कर दी है। खान-पान में लोग विशाल विचार रखने लग गए हैं। नन्दू पांडे की बात तुमने देखी है। वह मुसलमान स्त्री को पत्नी बनाने के लिए तैयार हो गया है।"

"यह सब कुछ ठीक है केशव! परन्तु मैं जो कुछ कल से देख रहा हूँ, वह मनुष्य के वास्तविक दोषों में सुधार नहीं। निर्बलता, अशुचिता, अशिक्षा और अज्ञानता ये सब बुरी बातें हैं और उनको दूर करना आवश्यक है। परन्तु मनुष्य के वास्तविक दोष हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार। इनमें कितनी कमी तुम करा सके हो? मैंने कल पंचायत में इनका प्रदर्शन देखा है।"

"देखो विनोद! काम-क्रोधादि अवगुण न कभी दूर हुए हैं और न होंगे। इन पर माथा-पच्ची करनी व्यर्थ है। ये अवगुण जब बढ़ जाते हैं तो फिर समाज में संघर्ष उत्पन्न हो जाता है और उसके पश्चात् अवगुण स्वयमेव सीमा में आ जाते हैं।"

"परन्तु सीमा में आने से पूर्व महा-प्रलय भी उत्पन्न कर सकते हैं। मान लो क्रोध-वश ये गाँव वाले तुम पर पिल पड़े तो तुम मियाँ-बीवी इन गाँव वालों के सम्मुख क्या कर सकोगे?

"अभी तक तो इनको पता नहीं कि राबर्ट, टूनी का पति, नर-मांस खाता था और तुम जीवित मानवों की हत्या कर उन पर परीक्षण कर रहे हो। मुझको भय

है कि कहीं ये बातें उनको पता चल गईं तो वे लोग क्या कर बैठेंगे, कहा नहीं जा सकता।''

केशव हँस पड़ा। वह बोला, ''विनोद, तुम समझे नहीं। हम मूर्ख नहीं हैं। इस प्रदेश में इतना वैभव और धन-दौलत लेकर अकेले बैठे हैं तो अपनी शक्ति के भरोसे ही। मैंने एक ऐसा यन्त्र बनाया है, जो हम यहाँ से पाँच मील के अन्तर पर खड़े व्यक्ति पर घुमा दें तो यह बिना किसी प्रत्यक्ष सम्बन्ध के उस व्यक्ति को समाप्त कर सकता है। यदि पाँच सहस्र व्यक्ति भी इस भवन पर आक्रमण करें तो मैं अकेला उस यन्त्र द्वारा उनको मृत्यु की नींद सुला सकता हूँ।

''एक बार नासिर बागी हो गया। उसने हम सबके विरुद्ध गाँव वालों को उभारने का प्रयत्न करना चाहा था। मुझे इसका पता चल गया। मैं भवन की छत पर गया और उसको कुछ गाँव वालों से राय करते देख सब कुछ समझ गया। मैंने उस यन्त्र से उन सब खड़े हुओं पर अल्ट्रा-सोनिक-वेव्ज (तीव्र शब्द तरंगें) छोड़ दीं और वे सब-के-सब एकदम मर गए। उनको पता भी नहीं चला कि यह कैसे हुआ। इसके पश्चात् आज तक किसी का साहस नहीं हुआ कि हमारे विरुद्ध किसी को कुछ भी कह सके। आओ मेरे साथ। मैं तुम्हें वह यन्त्र दिखाता हूँ।''

केशव मुझे छत पर ले गया। भवन की सबसे ऊपरी गुमटी में एक बड़ा-सा यन्त्र लगा हुआ था। केशव मुझे गुमटी में ले गया। उसने वहाँ पर रखे दो बटन के आकार के प्लग अपने कानों में ठूँस लिये और दो मुझे कानों में लगाने के लिए दे दिए। पश्चात् उसने यन्त्र में लगे एक बटन को दबा दिया और मुझसे बोला, ''अब इस यन्त्र में से ध्वनि तरंगें, जिनकी निरन्तरता (फ्रीक्वेंसी) एक क्षण में कई लाख है, निकल रही हैं। यन्त्र का मुख इस समय आकाश की ओर है और ये तरंगें एक ध्वनिदण्ड में जा रही हैं। यदि कोई प्राणी एक ध्वनिदंड में आ जाए तो एक क्षण में ही उसकी मृत्यु निश्चित है।

''वह देखो एक कौआ उड़ता हुआ इसके मार्ग में आ रहा है। इसकी अब खैर नहीं।''

देखते-देखते वह कौआ ज्यूँ ही ध्वनिदंड में आया कि लोट-पोट होकर भूमि पर गिर गया।

केशव ने बताया, ''यह ध्वनिदंड यहाँ से पाँच मील तक अपना विनाशकारी प्रभाव रखता है। इस यन्त्र की सहायता में मैं पूर्ण सेना को, जो भवन पर आक्रमण कर रही हो, नष्ट कर सकता हूँ।''

केशव की इस शक्ति का अनुमान लगा मैं काँप उठा। मैं मन में विचार करता था कि यह वैज्ञानिक, जो मनुष्य को मिट्टी का ढेला मात्र ही समझता है, इस शक्ति के प्रयोग से कितना अनर्थ कर सकता है।

मैं अभी उस भयंकर स्थिति का अनुमान लगा ही रहा था कि केशव ने यन्त्र

को बन्द कर दिया और गर्व से सिर ऊँचा उठाकर कहा, "विनोद ! मैं अपने को सहस्रबाहु हो गया समझता हूँ। विज्ञान ने मेरी बाँहों की संख्या को हजार गुणा कर दिया है। मैं इन सहस्रों सबल भुजाओं के बल से यहाँ बैठा स्वयं को भगवान् से अधिक बलशाली अनुभव करता हूँ।

"विज्ञान का अभी अन्त नहीं पहुँचा। यह सम्भव है कि अपने जीवनकाल में ही मैं सहस्रबाहु से लक्ष-लक्ष भुजाओं का स्वामी बन जाऊँ।"

मध्याह्न के भोजनोपरान्त विश्राम के समय रोमिली, केशव और टूनी आए और यह निश्चय हुआ कि घोड़ों पर सवार होकर चन्द्रभागा के किनारे-किनारे नदी के ऊपर को जाया जाए। वहाँ से लगभग दस मील के अन्तर पर एक जल-प्रपात है और वहाँ चीड़ के पेड़ों का जंगल है। सायंकाल की चाय वहाँ पर जाकर ली जाए।

मुझको यह कार्यक्रम बहुत अच्छा प्रतीत हुआ। हम सब साथ-साथ जा रहे थे, इससे मैं आशा करता था कि रोमिली अपने प्रस्ताव को कम-से-कम आज के लिए स्थगित रखेगी।

केशव का उद्देश्य तो केवल यह प्रतीत होता था कि मुझको और राधा को उस क्षेत्र की अच्छी सैर कराई जाए। परन्तु रोमिली इस प्रकार के भ्रमण से मेरे और अधिक समीप आना चाहती थी।

इस विषय में उसका प्रयत्न मार्ग में ही आरम्भ हो गया। राधा और टूनी घोड़ों पर सवार हो आगे निकल गईं। उनके साथ चाय का सामान था। मैं, रोमिली और केशव पीछे थे। केशव ने रोमिली के विषय में बात आरम्भ कर दी। मैं समझ गया कि उसका आशय था कि रोमिली अपनी मुझपर आसक्ति की बात न चला दे। उसने कहा, "मेरा रोमिली से परिचय पेरिस में हुआ था। वहाँ होटे'डि-पेरिस में चाय पी रहा था कि मेरे समीप से यह ऐसे गुजरी, जैसे कोई केतु गुजर गया हो। इसकी चमक-दमक से मेरी आँखें चुँधिया गईं। मैंने इसका पीछा किया। चाय के पश्चात् जब यह होटल से निकली तो मैं टैक्सी में इसके पीछे-पीछे निकल पड़ा। यह वहाँ एक सिनेटर के घर ठहरी हुई थी। जब यह मकान के भीतर चली गई तो मैंने दरबान से इसका परिचय प्राप्त किया और फिर इसका पीछा करता हुआ फिलाडोल्फिया जा पहुँचा। वहाँ यह सदा युवकों से घिरी रहती थी। मैंने इससे परिचय प्राप्त किया और इसको अपने मन की बात बताई। विस्मय की बात यह हुई कि यह तुरन्त मान गई। इसके इतनी जल्दी मान जाने पर मुझको इसकी सद्भावना पर सन्देह हो गया, परन्तु इसने मुझको ऐसा फाँसा कि मैं इसे छोड़ नहीं सका। अब भी मैं अनुभव करता हूँ कि यह चाहे किसी से भी अपना सम्बन्ध बनाए, मैं इसको छोड़ नहीं सकता।

"विवाह के पश्चात् इसने राबर्ट को फार्म पर बुला लिया और मैं जान गया कि यह अनिष्ठावान पत्नी है। परन्तु जब भी यह मेरी ओर मुस्कराकर देखती है,

मैं इसका बेदाम का गुलाम बन जाता हूँ। इसने कहा कि इसके पिता के जीते-जी यह भारत नहीं जाएगी। मैं मान गया और और वहीं ठहर गया। इसने कहा कि वह राबर्ट को छोड़ नहीं सकती। मैंने इसको मना नहीं किया। इसने कहा कि इसके पिता का धन अमेरिका में ही लगा रहेगा। मुझको आपत्ति नहीं हुई। विनोद! मैं तो इसके जादू के प्रभाव में हूँ और मुझको इसका दुःख नहीं है। हमारे विवाह को आज दस वर्ष हो चुके हैं और मुझको, जहाँ तक इसके मेरे साथ सम्बन्ध का प्रश्न है, कभी आपत्ति नहीं हुई। जब भी मैं चाहूँ यह मुझसे प्रेम तथा प्यार करने को तैयार रहती है।''

''केशव! आश्चर्य तो इस बात का है कि तुम्हारे अभी तक सन्तान क्यों नहीं हुई?''

''हमने इस ओर अभी तक ध्यान ही नहीं दिया।''

''तुम्हारा चित्त नहीं करता कि तुम्हारे कोई बच्चा हो? प्लास्टिक के खिलौनों से कब तक खेलते रहोगे?''

केशव चुप रहा। मैंने उसके मुख की ओर देखा। वह गम्भीर था। मैंने रोमिली की ओर देखा। वह ऐसे घोड़ा दौड़ाती जा रही थी, मानो वह हमारी बातें सुन न रही हो। मैंने रोमिली को सम्बोधित कर पूछा,''भाभी! तुमको बच्चे नहीं चाहिए क्या?''

''चाहिए क्यों नहीं? परन्तु न हों तो क्या करूँ?''

''तुम लाहौर चली आओ और परीक्षा करवाओ।''

''परीक्षा करवाई थी। मेरी डिम्ब-ग्रन्थियों में दोष है।''

इतना कहते-कहते उसकी आवाज में कुछ भारीपन आ गया। मैं समझ गया कि यह एक दुःखद विषय है। साथ ही मुझको यह ज्ञात हुआ कि रोमिली जैसी अपने को स्वतन्त्र कहने वाली स्त्री भी मानवी भावनाओं से ऊपर नहीं है। मैंने कहा, ''हमारी हिन्दू समाज में तो इसका एक ही उपाय है कि स्त्री अपने पति को दूसरा विवाह करने की स्वीकृति दे दे।''

''यह मैं कह चुकी हूँ।'' रोमिली ने डबडबाई आँखों से कहा, ''परन्तु ये मानते नहीं। कहते हैं कि इनको सन्तान की आवश्यकता नहीं।''

''तो किसी की सन्तान को गोद ले लो।''

''मैंने टूनी के पहले बच्चे के विषय में कहा था, परन्तु वह इतना बदसूरत है कि मन नहीं माना। कभी मन में विचार आता है कि यहाँ के किसी बच्चे को गोद ले लूँ परन्तु भय लगता है कि यहाँ के गँवारों का पुत्र उच्च विचार भी सीख सकेगा या नहीं।''

''देखो भाभी! तुम जाड़ों में लाहौर चली आओ। वहाँ तुम्हारी यह कठिनाई भी दूर हो सकेगी।''

"केशव जी भी चलें तो।"

"ये तो पिछले जाड़ों में वहाँ जा चुके हैं।"

"हाँ, परन्तु केवल एक दिन के लिए। हमको शक्तिशाली ट्रांसफोर्मर चाहिए था। ये प्रातःकाल पहुँचे, उसका आर्डर दिया और रात की गाड़ी से वापस चले आए। एक दिन के लिए मैंने जाना उचित नहीं समझा।"

"अब मैं तुमको निमन्त्रण देता हूँ। बताओ आओगी न ?"

"पहले तो आपके यहाँ जाते संकोच होता था। अब संकोच नहीं होगा।"

"हाँ, और यदि तुम आओगी तो तुम्हारे पीछे-पीछे केशव भी दौड़ा आएगा।"

"आप इसमें क्या कहते हैं ?" रोमिली ने केशव से पूछा।

"इस विषय में विचार तथा चिन्ता करनी व्यर्थ है। तुम अपना प्रोग्राम बनाओ। मैं अपनी सुविधा उस समय देख लूँगा।"

"भाभी ! तुम आओगी तो केशव भैया अवश्य आएँगे।"

"विनोद ! तुम भाभी को निमन्त्रण दे रहे हो, परन्तु इसकी इच्छाओं की पूर्ति कर सकोगे क्या ?"

"उसके लिए तुम जो हो। तुम उसमें मेरी सहायता कर दोगे। साथ ही यहाँ एकान्त में रहते-रहते, जहाँ करने को कुछ काम नहीं, सिवाय वासना में चित्त दौड़ाने के और कुछ नहीं हो सकता, वहाँ करने को बीसियों और काम होंगे। एक बार भाभी का ध्यान उधर गया तो वह सब-कुछ भूल जाएगी।"

"करने को तो यहाँ काम कम नहीं। इस पर भी यह वासनामय बनी रहती है।"

हम नियत स्थान पर पहुँच गए थे। कल-कल करती हुई चन्द्रभागा एक ऊँचे स्थान से नीचे गिर रही थी और फिर पत्थरों से टकराती हुई मुख से फेन छोड़ती हुई पश्चिम की ओर बहती चली जा रही थी।

किनारे पर बड़े-बड़े पत्थर बिखरे पड़े थे। राधा और टूनी एक बड़े से सपाट पत्थर पर बैठी हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। उन्होंने अपने घोड़े चीड़ के एक पेड़ से बाँध दिए थे।

हमने भी अपने घोड़े अन्य पेड़ों से बाँधे और चन्द्रभागा के किनारे-किनारे चीड़ के जंगल में टहलने लगे। स्वभावानुकूल रोमिली ने मेरी बाँह-में-बाँह डाली और मेरे साथ टहलने लगी। केशव राधा और टूनी के पास जा बैठा।

मैंने रोमिली से कहना शुरू किया, "कल की पंचायत का दृश्य देखकर मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि ये गाँव के लोग अपनी योग्यता से अधिक सम्पन्न हो गए हैं और इसका परिणाम ठीक नहीं रहेगा।

"जब कोई व्यक्ति वह वस्तु पा लेता है, जिसका वह अधिकारी नहीं, तब वह स्वयमेव नाश को प्राप्त होता है।"

"यह क्यों?"

"अनधिकारी को अधिकार मिलने पर वह उसका दुरुपयोग करता है। जब किसी बात का दुरुपयोग हो तो उससे हानि ही होगी। जितना बड़ा दुरुपयोग होगा उतनी ही बड़ी हानि होगी।

"यहाँ अधिकार असीम है। अतएव उसका दुरुपयोग भी बहुत बड़ा हो सकता है। इसके परिणाम भी उतने ही भयंकर होंगे।"

"क्या असीम अधिकार मिल रहे हैं इनको?"

"प्रकृति की वह गूढ़ शक्ति, जिनका अंशमात्र भी अभी अमेरिका तथा अन्य उन्नत देशों को प्राप्त नहीं, इन गँवार देहातियों को निःशुल्क उपलब्ध है। इससे इनको भारी अवकाश मिल रहा है, जिसमें वे बैठे काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार के झंझटों में फँसते जाते हैं।

"कल पंचायत में जो कुछ हुआ है, उसकी ओर तुमने ध्यान नहीं दिया। गौरी से करामत वासना-तृप्ति कर चुका था अथवा करना चाहता था परन्तु गौरी पीरू से वासना तृप्ति कर रही थी। पीरू की बीवी गौरी से अधिक सुन्दर थी परन्तु पीरू उससे सन्तुष्ट नहीं था और कदाचित् उससे चोरी गौरी को रखैल बनाए हुए था।

"इसके अतिरिक्त नन्दू ने बिना विचार किए क्रोध में गौरी का बहिष्कार कर दिया और गौरी ने इस गाँव की वेश्या बनने के स्थान एक पुरुष के साथ भागना उचित समझा। यह सब सुख-सुविधा के साथ मन के विकार बढ़ गए हैं।"

"अमरीका में भी यह सब होता है और वहाँ तो इसका परिणाम भयंकर नहीं हुआ। मैं आपको बताती हूँ कि वहाँ सौ में से कदाचित् एक-दो ही विवाह करने वाले जोड़े ऐसे होते होंगे जिनको आप वास्तविक रूप से अविवाहित कह सकें।"

मैंने वहाँ की समाज के चलते रहने का कारण बताया, "वहाँ की समाज कई बातों में यहाँ से श्रेष्ठ है। जनता का एक विशेष अंग धार्मिक विचारों को रखता है। यही कारण है कि यौन-सम्बन्धी दुर्व्यवस्था होने पर भी वहाँ ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि अवगुण विशेष मात्रा में दिखाई नहीं देते।"

"आप अमरीका कभी गए नहीं, तभी ऐसी बातें कहते हैं। वहाँ चोर, डाकू, रिश्वत लेने वाले, झूठ बोलने वाले और सब प्रकार के अवगुणों को रखने वाले प्रचुर मात्रा में विद्यमान हैं। हाँ, एक बात है। वहाँ सब जानते हैं कि 'ऐवरी बौडी इज ए स्कौन्ड्रल टिल ही प्रूव्ज हिमसैल्फ टु बी ए जैन्टलमैन (जब तक कोई अपने को भला सिद्ध न करे हम सबको बदमाश समझते हैं)। इससे ही हम समाज के बुरे अंग से अपने को सुरक्षित रख सकते हैं।"

"यही तो भयंकर स्थिति है, जिसकी ओर अभी मैंने संकेत किया है। करोड़ों व्यक्ति दिन-रात एक-दूसरे से भयभीत रहते हैं। यह कितनी विषादजनक स्थिति है! सड़क पर चलते प्रत्येक व्यक्ति पर सन्देह बना रहता है कि वह मुझपर डाका

डालने आ रहा है। कितनी दुःखप्रद अवस्था है !''

रोमिली मुस्कराकर बोली, ''हमारा स्वभाव बन गया है। जैसे दिन-रात भय-युक्त कार्य में संलग्न रहने वाले व्यक्ति को अपने कार्य से भय नहीं प्रतीत होता, वैसी ही परिस्थिति हमारी है। हम यह जानते हुए भी कि किसी का भी विश्वास नहीं करना चाहिए, निर्भीकता से घूमते-फिरते हैं। सतर्क रहना हमारा स्वभाव हो गया है।''

''इसका अर्थ तो यह निकला कि प्रत्येक अमेरिकन नागरिक स्वभाव से चोर, डाकू और धोखेबाज बनता जा रहा है। सरलचित्त कोई है ही नहीं।''

''यह बात तो स्वीकार करने योग्य नहीं। न्यूनाधिक कुछ-न-कुछ अंश तो समाज का ऐसा है ही, जो हृदय से सरल होंगे और उनकी रक्षा करनी राज्य के लिए आवश्यक हो जाती है।

''राज्य को समाज के महान अंग में से कुछ सरल चित्त लोगों की रक्षा जहाँ भारी चिन्ता का कारण होगी, वहाँ प्रायः असम्भव भी रहती होगी।''

''तो आप यहाँ और क्या करना चाहते हैं, जो यहाँ पहले नहीं हो रहा ?''

''मैं चाहता हूँ कि भौतिक उन्नति और विकास के साथ-साथ मानसिक विकास को भी अवसर मिले। मन के विकारों से मनुष्य को बचना चाहिए। इनमें से प्रत्येक व्यवहार उचित स्थान और मात्रा में ही सहन हो सकता है, परन्तु प्रत्येक व्यवहार प्रत्येक स्थान पर और सीमा से बाहर करने योग्य नहीं होता।

''देखिए, अपनी वस्तु की कामना करना तो अवगुण है, परन्तु किसी पराये की वस्तु की कामना तो सहन नहीं हो सकती। करामत ने नन्दू की बीवी की कामना की। समाज ने गाजर-मूली की चोरी की ओर तो ध्यान दिया, परन्तु नन्दू की बीवी के मन को चुराने की ओर ध्यान नहीं दिया।

''नन्दू पांडे ने बदले की भावना से पीरू की बीवी को अपने घर ले जाने की इच्छा बना ली, परन्तु अपनी बीवी को वापस लाने की कामना नहीं की।

''इसी प्रकार अन्य बातें हैं। मैं समझता हूँ कि भौतिक उन्नति के होने पर भी यहाँ का समाज पतन की ओर जा रहा है।''

रोमिली ने कहा, ''यहाँ एक और भी है, जो ऐसी बातें करता है। हमारे पावर स्टेशन से पाँच मील दूर उत्तर की ओर एक कन्दरा में एक बौद्ध-भिक्षुक रहता है, जो ऐसी ही बातें कहता रहता है। उसकी इस दिशा में मान्यता होने पर भी लोग करते वही हैं, जो हम कहते हैं।

''प्रत्येक पूर्णिमा के दिन गाँव के प्रायः नर-नारी उसके दर्शनों के लिए जाते हैं। उसका उपदेश सुनते हैं और जब वहाँ से लौटते हैं तो पुनः अपने कामों में पूर्ववत् संलग्न हो जाते हैं।

''पहले तो उस महात्मा के कहने पर लोग चिन्ता अनुभव करने लगते थे।

धीरे-धीरे वह चिन्ता दूर होने लगी और अब लोग उसकी हँसी करने लग गए हैं। मेरे विचार में वह समय दूर नहीं, जब लोग उसकी अवहेलना तक करने लग जाएँगे।''

मुझको इससे और भी चिन्ता लग गई। यह तो भगवान् और शैतान में सतत चलने वाले संघर्ष का नमूना ही प्रतीत हुआ। मेरा मन भयभीत हो गया।

हम टहलते हुए वापस वहाँ आ गए, जहाँ राधा, टूनी और केशव बैठे थे। केशव, राधा और टूनी जल में पत्थर फेंकने का मुकाबिला कर रहे थे। राधा दोनों को इसमें पछाड़ रही थी।

जब हम वहाँ पहुँचे तो एक व्यक्ति एक प्रकार के चूल्हे पर कुछ गर्म कर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि उस आदमी को उन्होंने पैदल यहाँ पर पहले ही भेज दिया था।

हम पानी में पत्थर फेंकने वालों के समीप जा खड़े हुए। मैंने पूछा, ''क्या हो रहा है केशव ?''

''राधा भाभी बहुत अच्छा निशाना लगाती हैं। देखो, वह नदी में एक शिव-लिंग के आकार का पत्थर है। हमने यह शर्त लगाई है कि प्रत्येक को बीस बार निशाना लगाने का अवसर मिलेगा और जो अपनी बीस बारी में सबसे अधिक बार निशाना लगा सकेगा वह जीतेगा।

''राधा भाभी बीस बारी में पन्द्रह बारी लगा चुकी हैं। टूनी बारह बार और मैं दस बार फेंक चुका हूँ और एक बार भी सफल नहीं हुआ।''

मैं और रोमिली भी इस खेल में सम्मिलित हो गए। केशव तो केवल सात बार ही निशाना लगाने में सफल हुआ। मैंने यत्न किया तो बारह बार सफल हुआ। रोमिली चौदह बार सफल हुई।

यूँ तो राधा जीत गई थी परन्तु रोमिली ने कहा कि उसमें और राधा में फिर मुकाबिला हो जाए। राधा मान गई। इस बार दस बार पत्थर फेंकने का निश्चय हुआ। केशव उनमें मध्यस्थ बन गया। पहले रोमिली को अवसर मिला। एक समान बीस पत्थर बटोर लिये गए और रोमिली फेंकने लगी। दस बार में वह केवल पाँच बार ही सफल हुई। प्रत्येक बार जब कंकड़ लक्ष्य पत्थर पर गिरता था, तब वह प्रतिस्पन्दित होकर दूर जल में जा पड़ता था। राधा ने अब यत्न किया। उसने छः बार लगाया। वह जीत गई।

मैं राधा में इतना ठोक निशाने लगाने की योग्यता देख चकित रह गया। एक बात मैं यह भी समझा कि इस भ्रमण का वह मुझसे अधिक लाभ उठा रही है। खुली शीत हवा और सूर्य की किरणों से उसके गालों पर लाली दौड़ रही थी।

केशव ने निर्णय दे दिया, ''राधा भाभी जीत गईं।''

रोमिली और टूनी ने ताली बजाकर इस विजय का अभिवादन किया। मैंने

पूछा, "जीतने पर क्या होगा राधा का ?"

"आज की वह रानी होगी।"

"न। मैं रानी नहीं बन सकती। इस देश की रानी तो रोमिली है।"

"पर वह तो हार गई है।" केशव ने कहा।

"पत्थर फेंकने से क्या राज्य छीना जा सकता है ? न बाबा ! मैं रानी नहीं बनती।"

"राधा भाभी युद्ध से डरती हैं।" टूनी ने कहा।

"हाँ, मेरी विजय युद्ध से नहीं प्रेम से होगी।"

हम सब हँसते हुए वहाँ जा पहुँचे, जहाँ हमारे लिए चाय का प्रबन्ध किया जा रहा था।

हमने चाय पी और फिर टहलने लगे। अब हम इकट्ठे थे। राधा मेरे एक ओर थी और टूनी दूसरी ओर। राधा के साथ रोमिली और फिर केशव था। रोमिली राधा से बातें कर रही थी। टूनी ने मुझे बताया, "आज प्रातःकाल तहसीलदार राबर्ट की शिकायत की जाँच करने आया था। उसने गाँव में बहुत लोगों से पूछ-ताछ भी की और अब वह तापसी बाबा की कन्दरा में जाँच के लिए गया है।"

"तुम उससे चिन्तित क्यों हो ?"

"वह बहुत ही दुष्ट व्यक्ति निकला है। पहले तो एक गद्दी स्त्री को मारकर खा गया और अब उस अपराध का दोष हम पर लगाना चाहता है। तापसी बाबा गद्दियों के गुरु हैं। यदि उसको उस स्त्री के लापता होने का ज्ञान हुआ तो वह कुछ-न-कुछ अड़ंगा अवश्य लगाएगा।"

"केशव तो कहता था कि उसने तहसीलदार को समझा दिया है।"

"हाँ; परन्तु उस बाबा की इस इलाके में बहुत महिमा है। यदि उसने कुछ भी कहा तो तहसीलदार उसके कहने को मानेगा ही।"

"तो कल मैं और तुम वहाँ पर चलें। देखें, उसकी तहसीलदार से बातचीत का कुछ पता चलता है अथवा नहीं।"

"वह मुझको जानता है। मेरा विचार है कि आप अकेले ही जाएँ।"

मेरी इच्छा उस तापसी बाबा को देखने की हो गई। मेरे मन में आया कि उसको समझाऊँ कि वह आस-पास के गाँव के रहने वालों को ऐसी शिक्षा दे, जिससे लोग भौतिक उन्नति को आत्मिक उन्नति का स्थानापन्न न मान लें। इस पर भी मुझको सन्देह था कि मैं उसको समझा सकूँगा अथवा नहीं।

हम घूमते-घूमते एक-दूसरे से दूर हो गए थे। घने चीड़ के पेड़ों की भीनी-भीनी सुगन्धि में एक प्रकार की मादकता थी। मैं इस सुवासित वायु से बहुत ही आनन्द अनुभव कर रहा था। फेफड़ों में जब यह वायु भरती थी, तो ऐसा प्रतीत होता था कि उनमें की प्रत्येक प्रकार की गंदगी दूर हो रही है।

एकाएक टूनी ने मेरी बाँह में बाँह डालकर पूछा, "आपका रोमिली से कुछ निश्चय हुआ है अथवा नहीं?"

"हो गया है।"

"क्या हो गया है?"

"दिसम्बर के महीने में वे दो मास के लिए लाहौर आवेंगी और वहाँ के समाज में मेल-जोल पैदा करने का यत्न करेंगी।"

"मैं यह नहीं पूछ रही। वह आपसे प्रेम करती है और आपसे प्रेम की याचना करने वाली थी।"

"हाँ। यह बात भी हो गई है। मैं तो उसको भाई का स्नेह ही दे सकता हूँ।"

इतना कह मैंने टूनी के मुख पर देखा। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ उसके मुख पर, मेरे इस कहने से संतोष व्याप गया। इस पर भी मैंने पूछा, "तुम क्या कहती थीं मुझसे?"

"कल रोमिली ने मुझको कहा था कि मैं राधा को लेकर पावर स्टेशन देखने चली जाऊँ और वह स्वयं आपको पंचायत में ले जाना चाहती थीं। मुझे कुछ संदेह हुआ। मैंने पूछा, 'भाभी! विनोद जी का तुम क्या करना चाहती हो?'

"उसने कहा, 'मैं उन्हें अपने वश में करूँगी।'

"क्या होगा इससे?

" 'मैं उनसे प्रेम का प्रसाद पाऊँगी।'

"मैंने राधा भाभी से स्पष्ट कह दिया था और यह भी कहा था कि मेरे साथ जाने के स्थान वह आपके साथ जाएँ, परन्तु वह बोलीं, 'मैं उनकी मालकिन नहीं। यदि वे स्वेच्छा से मेरे से प्रेम करते हैं, तो मैं उनके प्रेम की भाजन बनना चाहती हूँ। विवश कर अथवा परिस्थिति में बाधा बनकर प्रेम पाया तो क्या पाया?'

"यद्यपि मैं उनके इस विचार को उचित नहीं समझती थी, परन्तु इसका कोई उत्तर नहीं दे सकी। अतः हम दोनों पावर स्टेशन चले गए।"

"मुझको अचम्भा तो इस बात का है कि केशव उसको इस प्रकार इधर-उधर भटकने क्यों देता है? कल उसने मुझको कहा था कि यदि वह मेरे साथ सम्बन्ध बनाती है, तो उसको किसी प्रकार की आपत्ति नहीं हो सकती।"

"एक बात शायद आप नहीं जानते कि भैया इस स्त्री के सम्मोहन में जकड़ा हुआ है। वह इनके जादू को तोड़कर निकल नहीं सकता। रोमिली की बात को वह टाल नहीं सकता।"

"बहुत ही शोचनीय अवस्था है।"

"परन्तु एक बात है। इस 'इनफैचुएशन' (सभ्रान्त) की अवस्था में मनुष्य की अपने साथी में निष्ठा टूटती नहीं। मैं अपनी अवस्था का अवलोकन करती हूँ, तो यह पाती हूँ कि जब तक मैं आपके सम्मोहन में बँधी रही, मैं सुखी रही। जब भी

आपके सम्मोहन से निकल विवाह करने की सोची तब से ही दुःख पाना पड़ा है। इस बार तो जीवन से ही मुक्ति मिलने वाली थी।"

"टूनी ! मुझको खेद इस बात का है कि तुम और केशव कभी भी बात को ठीक ढंग से समझने का यत्न नहीं करते। तुम्हारे दुःख का कारण मेरे सम्मोहन से बाहर निकलना नहीं था, प्रत्युत तुम्हारा अपने लिए स्वयं पति ढूँढने का प्रयास था जिसके तुम योग्य नहीं हो। दोनों बार तुम्हारा चुनाव गलत रहा। यदि तुमने अपने पिता से निर्वाचित लड़के से विवाह किया होता तो यह सब दुःख और क्लेश न होता। मिस्टर थापर तुम्हारा विवाह एक नीग्रो से तो न करते।"

"पर एक बात है। वह प्रेम करना भी बहुत अच्छा जानता है।"

"फिर वही अयुक्ति-संगत बात कर रही हो। जिसको तुम प्रेम कहती हो वह 'लस्ट' (वासना) मात्र है। प्रेम शरीर का विषय नहीं। उसका मन अति कुटिल था और आत्मा अज्ञानता के अन्धकार में फँसी हुई थी।"

"विनोद जी ! हम आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते और मन को प्रकृति का एक रूप ही मानते हैं। इन्द्रियों के विषय ही सब-कुछ हैं। यदि मीठे का स्वाद जिह्वा को मिलता है, तो वह ही मन को भी मिलता है। जिह्वा से मन को स्वाद नहीं मिल सकता।"

"बात यह है कि इन्द्रियों के स्वाद क्षण-भंगुर होते हैं। एक सीमा पार कर वे फीके पड़ जाते हैं। इसके विपरीत कुछ काम होते हैं, जो बिना इन्द्रियों की सहायता के भी सुख देते हैं। मान लो कि हम किसी भले व्यक्ति को धन अथवा सहयोग से सहायता देते हैं तो इससे भी एक प्रकार का सुख मिलता है। इस सुख को हम आनन्द कहते हैं। यह सुख इन्द्रियों का विषय नहीं। यह मन द्वारा सीधा आत्मा को तुष्टि प्रदान करता है।"

"इस प्रकार के कर्मों से जो कोई प्रसन्न होता है, वह ही आत्मा है।"

"जो सुख राबर्ट के सहवास से तुम्हें प्राप्त हुआ है, वह इन्द्रियों द्वारा प्राप्त होने से न तो आनन्द है न प्रेम का सूचक है।"

"मैं इन फिलौसोफी की बातों को नहीं जानती। मैं तो यह कहती हूँ कि वह अति सुखकारक पति था। यदि वह मुझको मार डालने का प्रयास न करता, तो मैं उसे शायद कभी न छोड़ती।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ कि यदि तुम यह जान सकतीं कि यह भद्र पुरुष नर-मांस भी खा सकता है, तो तुम उससे विवाह न करतीं। यही जानने की तुममें योग्यता नहीं थी। इससे पूर्व तुम मिस्टर फिशर के विषय में यह नहीं जानती थीं कि वह तुमको और अपने बच्चों को छोड़कर भाग जाएगा। यदि यह जानती होतीं तो तुम उससे विवाह न करतीं। तुममें यह सब जानने की योग्यता नहीं थी।"

"तो यह जानने की योग्यता किसमें थी ? भविष्य में होने वाली बात को कौन जानता है ?"

"देखो टूनी ! संसार में बहुत सी बातें अनुभव से जानी जाती हैं। एक अनुभव-शील व्यक्ति भविष्य की बातों का अनुमान लगा लेता है। कुछ अनुभव-जन्य सिद्धान्त होते हैं, जो अनुभवहीन व्यक्तियों को मार्ग दिखाते हैं। तुम न तो अनुभव-शील थीं और न ही तुमने अनुभव-जन्य सिद्धान्तों का पालन किया। परिणाम अच्छा नहीं हुआ।"

"इस विषय में अनुभव-जन्य सिद्धान्त कौन-से हैं ?"

"अपनी बिरादरी में, अपनी जाति में, अपने धर्मानुयायियों में वर ढूँढना। तुम्हारे दोनों वर इस सिद्धान्त के विरुद्ध थे। इन सिद्धान्तों की अवहेलना तो वह ही कर सकता है, जो विस्तृत अनुभव रखता हो।"

"यह अति कठिन बात है। वे लोग, जो इस विशाल संसार में जाति तथा बिरादरी की सीमाओं को पार कर चुके हैं, वे इन सीमाओं में ही अपनी दृष्टि सीमित कैसे रख सकते हैं ?"

"सागर में डुबकी लगाने वाले को तैरना आना ही चाहिए। जो तैरना नहीं जानते और समुद्र में घुस जाते हैं, वे तो डूबेंगे ही। अयोग्य आदमियों को बिरादरी के बन्धन मानकर ही चलना चाहिए।"

अगले दिन मैंने तापसी बाबा से मिलने जाने की घोषणा कर दी। केशव ने आश्चर्य में पूछा, "अकेले कैसे जाओगे ?"

"गाँव में से किसी को साथ ले लूँगा।"

रोमिली ने कहा, "हम तो तहसीलदार को आज यहाँ आमन्त्रित कर रहे हैं।"

"मेरा उसको मिलने के लिए यहाँ रहना आवश्यक है क्या ?"

"नहीं।" केशव ने कुछ विचार कर कहा, "तुम जा सकते हो। मैं गाईड का प्रबन्ध कर दूँगा। राधा यहाँ रहेगी। ठीक है न भाभी ?"

"हाँ। आज यहाँ गाँव की स्त्रियाँ और लड़कियाँ मुझसे मिलने आ रही हैं। टूनी ने इस समारोह का प्रबन्ध किया है।"

केशव ने भवन से गाँव में टेलीफोन कर एक व्यक्ति को, जो मार्ग जानता था, बुला लिया।

प्रातः का अल्पाहार और मध्याह्न का भोजन तथा तापसी बाबा के लिए फल लेकर हम चल पड़े।

हम घोड़ों पर थे, जो पावर स्टेशन पर छोड़ देने थे। उसके आगे पैदल जाना था। गाईड एक मुसलमान था। उसका नाम यूसुफ था। लगभग पैंतीस वर्ष की आयु का प्रतीत होता था। देखने में अच्छा जवान और सुन्दर लगता था। फलों का और

भोजन का थैला यूसुफ ने अपने घोड़े की काठी में लटका लिया था और मैं हाथ में एक छोटी-सी छड़ी लिये घोड़े पर बैठा था।

पाँच मील चढ़ाई का मार्ग था। इस कारण हम धीमी-धीमी चाल से चल रहे थे। मैंने मार्ग काटने के लिए यूसुफ से बातचीत आरम्भ कर दी। परन्तु उसने समझा कि शायद मैं कोई रहस्य की बात जानना चाहता हूँ। इस कारण हजूर, मालिक, सरकार इत्यादि शब्दों से मेरे प्रश्नों का उत्तर देता था। मुझको सन्देह हो गया कि वह मुझसे कुछ छिपाना चाहता है। इस पर मैं विचार करने लगा कि इसको अपने मन की बात कहने के लिए उत्साहित करना चाहिए। मैं कायाकल्प करा रही स्त्रियों का किस्सा छेड़ बैठा। "यूसुफ भाई!" मैंने पूछा, "उन स्त्रियों को जानते हो, जिनको तुम्हारे मालिक जवान कर रहे हैं?"

यह प्रश्न पूछ मैंने यूसुफ के मुख पर देखा। उसका मुख लज्जा से अथवा किसी अन्य कारण से लाल हो गया और उसने प्रश्न का उत्तर न देकर कहा, "सरकार! देखिए। यहाँ से किश्तवार वादी का कितना सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।" मैंने घोड़े को खड़ा कर लिया और अपने बाईं ओर, जिधर वह वादी थी, देखा। सत्य ही वादी अति सुन्दर थी। वादी के बीचों-बीच चन्द्रभागा एक श्वेत मोटे रस्से की भाँति बल खाती हुई जाती दिखाई देती थी। मैंने वादी की ओर देखकर कहा, "ईश्वर ने सत्य ही इस जगह को बहिश्त का नमूना बनाया है। जहाँ यह जगह सुन्दर है, वहाँ इस वादी के लोग भी अति सुन्दर हैं। हाँ, तो तुम उस मीनार को जानते हो? परसों जब वह जवान होने के लिए आई थी, कितनी बदसूरत दिखाई देती थी। उसके गालों में गड्ढे थे। दाँत टूटे हुए थे। सिर पर टटनी बन चुकी थी। बाल पककर गिर चुके थे। आँखों पर की बरौनियाँ चाँदी के तारों की भाँति सफेद और कड़ी हो गई थीं। ठुड्डी के नीचे श्वेत दाढ़ी उगने लगी थी। जब उसने कपड़े उतारे, तो वह स्वयं भी अनुभव करती थी कि वह मिट्टी का ढेर मात्र है, उसको नंगा होने में न तो लज्जा होती थी न ही किसी से भय। छाती पर स्तन खाली थैलों की भाँति लटक रहे थे।

"मैंने अगले दिन उसको देखा तो खुदा का नूर उसमें जलवानुमा दिखाई दिया। बुढ़ापे के सब लक्षण लोप हो चुके थे। उसका शरीर एक चौदह-पन्द्रह वर्ष की कुमारी की भाँति चमकने लगा था। और सबसे बड़ी बात यह थी वह स्वयं अनुभव करने लगी थी कि वह नंगी है और खूबसूरत है।"

ज्यूँ-ज्यूँ मैं मीनार की बात बताता जाता था, वह गम्भीर होता जाता था। जब मैंने कहा कि वह महसूस करने लगी थी कि वह नंगी है और खूबसूरत है तो वह बोल उठा। उसके मुख से आवाज ऐसे निकली, जैसे बीयर की बोतल में से कार्क उड़ जाता है। उसने कहा, "साहब! वह मेरी माँ है।"

मैं समझ गया कि वह क्यों इतना गम्भीर होता जाता था। इस कारण मैं चुप

कर विचार करने लगा कि वह किस कारण क्रोध में है। मैंने अपना मार्ग विचार लिया और कहा, "ठीक है। तुम्हारी सूरत उससे मिलती है। यूसुफ ! क्या तुमको दुःख है कि वह जवान क्यों हो गई है ?"

"सरकार !" वह पिघल पड़ा, "मैं अभी उसके पास से ही तो आ रहा हूँ। वह पन्द्रह-सोलह साल की जवान लड़की बन गई है। उसकी सूरत चाँद के माफिक सुन्दर मालूम होती है। मैं उसका लड़का हूँ और मेरी दो लड़कियाँ है। बड़ी सोलह साल की है। मेरी माँ उससें कई गुना ज्यादा खूबसूरत दिखाई देने लगी है। मेरे सामने दो सवाल बन गए हैं। मैं अपनी माँ की शादी करूँ या अपनी लड़कियों की ? मेरी माँ की मौजूदगी में मेरी लड़की से कोई शादी नहीं करना चाहेगा। एक दूसरी बात भी है। जिस किसी से मेरी माँ शादी करेगी, वह मेरा बाप बन जाएगा। मेरे बच्चों का बाबा बन जाएगा। मेरी बीबी का श्वसुर होगा। मुझको यह पसन्द नहीं।"

"पर यूसुफ ! तुम्हारी माँ संसार के सब सुख भोग चुकी है। अब वह विवाह क्यों करेगी ? उसको अब यह नया जीवन खुदा की अबादत में गुजारना चाहिए।"

"उसके सिर के बाल अभी एक बालिश्त भर ही लम्बे हुए हैं। इस पर भी वह इतनी खूबसूरत दिखाई देने लगी है कि मैं उसका पुत्र होता हुआ भी उस पर मोहित हो गया अनुभव करता हूँ। ऐसी हालत में बाहर के लोगों का क्या हाल होगा। वे उसे छोड़ेंगे थोड़े ही। साथ ही मेरी माँ तो आज ही कह रही थी कि वह यहाँ के महाराजा के साथ शादी करेगी। उस जैसी खूबसूरत औरत अपनी जवानी किसी गँवार देहाती पर बरबाद नहीं कर सकती।

"अभी पाँच दिन तक उसका इलाज और चलेगा। तब तक वह क्या बन जाएगी, कहा नहीं जा सकता।"

"अगर वह गाँव से बाहर जाकर किसी से शादी कर लेती है तो फिर तुमको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। वह तुम्हारी आँखों के सामने नहीं आएगी।"

"ठीक है। मगर एक बात आप नहीं जानते। जितने मर्द और औरतें जवान बनाई जा रही हैं, ये पंचायत की जायदाद मानी जाती हैं। बिना पंचायत की इजाजत के वे गाँव छोड़कर नहीं जा सकते।"

"यह क्यों ?"

"गाँव की पंचायत समझती है कि उसके माँ-बाप का दिया शरीर खत्म हो चुका है। यह नया शरीर बाबूजी के जादू की वजह से है। बाबूजी की सब चीजें पंचायत की जायदाद हैं। इसलिए ये जवान मर्द और औरतें भी पंचायत की जायदाद होंगी।"

"पंचायत उनका क्या करेगी ?"

"पंचायत ने एक अप्सरा भवन खोल रखा है। ऐसी औरतें वहाँ रखी जाती हैं। वहाँ उनको गाना-बजाना सिखाया जाता है और वे गाँव के सांझे इस्तेमाल की

चीज बन जाती हैं।''

''तुम्हारी माँ क्या ऐसी जिन्दगी बसर करना चाहती है ?''

''मैंने अभी पूछा नहीं। एक बात उसने खुद बताई है कि वह शादी किसी जवान और अमीर मर्द से करेगी।''

''मैं इसके मुतल्लिक केशव बाबू से बात करूँगा।''

''केशव बाबू इसमें दखल नहीं देते। मालकिन हैं, जो सब-कुछ करती हैं। अगर उनसे कहें तो शायद बात बन जाए।''

''तुम क्या चाहते हो ? माँ अब जवान तो हो गई है। वह अब तुम्हारे बच्चों की टहल-सेवा करेगी नहीं। उसकी शादी भी होनी चाहिए, नहीं तो वह अप्सरा-भवन में बैठ वेश्यापन करेगी। अगर कहीं भागकर किसी मैदानी नगर में चली जावे तो वहाँ भी उसकी जिन्दगी फाश औरतों की तरह चलेगी।''

''इसलिए मैं चाहता हूँ कि वह घर पर ही रहे। मैं उससे निकाह पढ़ा लूँगा।''

''निकाह की क्या जरूरत है ?''

''उससे बच्चे हुए तो बिना बाप के होंगे।''

''तुम्हारी बीवी बनना मान जाएगी ?''

''मैं उसको मना लूँगा।''

हम पावर स्टेशन पर पहुँच गए थे। हमने घोड़ों को खड़ा कर दिया। उनकी जीन खोल दी और लम्बी रस्सी से उनको पेड़ों से बाँध दिया।

यूसुफ ने फलों का और भोजन का थैला उठाया और हम पैदल पहाड़ पर और ऊँचे चढ़ने लगे।

तापसी बाबा एक बौद्ध श्रावक था। गुफा, जिसमें वह रहता था, काफी गहरी और पहाड़ के भीतर गई हुई थी। भीतर पर्याप्त गर्मी थी और वह लंगोटा बाँधे पद्मासन जमाए वहाँ पर बैठा था। यूसुफ ने कन्दरा के द्वार पर सिर भूमि पर रख दण्डवत प्रणाम किया। मैं उसके पीछे-पीछे था। मैंने केवल झुककर हाथ जोड़ नमस्ते की। यूसुफ तो सलाम कर पीछे हट कन्दरा की दीवार के साथ खड़ा हो गया। मैं सामने खड़ा रहा। तापसी बाबा के बाल सर्वथा श्वेत हो चुके थे। मुख पर झुर्रियाँ पड़ चुकी थीं। छाती का माँस लटकने लगा था। पेट बड़ा हो चुका था और गर्दन कंधों में धँस सी गई थी।

मुझको चुपचाप सामने देख उसने हाथ के संकेत से बैठने के लिए कहा। मैं उसके सामने भूमि पर बैठ गया। मैं अभी तक बिल्कुल बोला न था। लगभग पाँच मिनट तक मेरे चुपचाप बैठे रहने के पश्चात् उसने कहा, ''किसलिए आए हो ?''

''मैं किश्तवार की सुन्दर घाटी की सैर करने आया था। यहाँ आकर आपकी ख्याति सुनी तो आपके दर्शन करने चला आया हूँ।''

"तो दर्शन कर लिये हैं ?"

"भगवन् नहीं। अभी तो केवल शरीर के दर्शन किए हैं। यह तो कुछ दर्शनीय नहीं। मैं तो आपके आभ्यान्तरिक दर्शन करना चाहता हूँ।"

"वह कैसे करोगे ?"

"आप यदि कराना चाहें तो कर सकूँगा। अन्यथा बिना दर्शन किए लौट जाऊँगा।"

"मैं कैसे अपने आभ्यान्तरिक दर्शन करा सकता हूँ।"

"मैं आपसे कुछ पूछना चाहता हूँ। आप अपने अनुभव, ज्ञान के आधार पर उस विषय पर प्रकाश डालेंगे तो मैं अपनी अभिलाषा पूर्ण कर सकूँगा।"

"हाँ तो पूछो।"

"आपकी आयु कितनी है ?"

"मुझको तो स्मरण नहीं। अस्सी वर्ष से इस कन्दरा में रह रहा हूँ। उसके पूर्व मैं लद्दाख अन्तर्गत स्कर्दू में रहता था। मुझको ज्ञात नहीं कि मैं कितनी आयु का था, जब यहाँ आया था। माता-पिता का देहान्त बचपन में ही हो चुका था। इस कारण किसी ने बताया नहीं। न ही मैंने पूछा कि मेरा जन्म-वर्ष कौन-सा है।"

"आपका इस गुफान्तर्गत होने का उद्देश्य क्या है ?"

"निर्वाण-प्राप्ति।"

"आप क्या अपने को निर्वाण-प्राप्ति के समीप अनुभव करते हैं, अथवा अभी दूर हैं ?"

"मैं समझता हूँ कि मैंने बहुत-सा मार्ग पार कर लिया है। मुझको यह पता नहीं कि कितना मार्ग और है, इस कारण बता नहीं सकता कि लक्ष्य से कितनी दूर हूँ।"

"यदि आपको कहा जाए कि आपको नयी काया मिल सकती है, तो आप लेनी पसन्द करेंगे क्या ?"

"तुम्हारा मतलब है केशव बाबू के उपाय से ?"

"जी हाँ। अभी दो दिन हुए एक वृद्धा को युवती बनते देखा है। वह तो वासनामय जीवन व्यतीत करने के लिए यौवन की लालसा करती थी, परन्तु आप तो निर्वाण-प्राप्ति के लिए करेंगे। इससे आप पर किया प्रयत्न अवश्य सफल होगा। मेरे विचार में उस स्त्री पर प्रयत्न अर्थहीन हुआ है।"

"मुझको अब युवावस्था नहीं चाहिए। क्या जाने मैं निर्वाण-प्राप्ति लक्ष्य के बिल्कुल समीप ही पहुँच चुका होऊँ और मृत्यु होते ही मुझको परम-पद मिलने वाला हो।"

"यह तो आप ही जान सकते हैं। मेरी जीवन-मीमांसा यह है कि मनुष्य जीवन प्राणी-मात्र की सेवा अथवा सहायता के लिए है। इस कारण इसको जितना भी

लम्बा किया जा सके, उतना ठीक है। भगवद्-भजन और लोक-सेवा में स्वास्थ्य की आवश्यकता है। आपके लिए यह अद्वितीय अवसर है कि इस बुढ़ापे को पार कर नया जीवन प्राप्त कर लीजिए।''

''मैंने सुना है कि एक स्त्री उस दिन मर भी गई थी।''

मुझको एकान्त वासी बाबा के केशव के विषय में इतना ज्ञान होने से अचम्भा हुआ। मैं विचार करने लगा कि कौन है जो ये सब बातें इसको बताता रहता है। इसके साथ ही महात्मा के मर जाने की संभावना की ओर संकेत करने से मैं समझ गया कि यह मरने से डरता है।

मैंने कहा, ''जी हाँ। वास्तव में वह बहुत दुर्बल हो चुकी थी। वह शरीर-शुद्धि की क्रिया को सहन नहीं कर सकी। आपके लिए ऐसी संभावना नहीं है।''

''इस पर भी अब जीने को चित्त नहीं करता।''

''क्यों? क्या आप अपने मन की इस भावना पर प्रकाश डालेंगे?''

''मुझको अब इस संसार में सबकुछ व्यर्थ ही प्रतीत हो रहा है। यहाँ तक कि यह साँस लेने में भी कुछ अर्थ प्रतीत नहीं होता।''

''महाराज! क्या मैं एक प्रश्न और पूछ सकता हूँ? क्या यह संसार में निस्सा-रता इस कारण नहीं कि आपने जीवन में कोई करने योग्य कार्य नहीं किया? अब आप शिथिलेन्द्रिय हो कुछ भी करने के अयोग्य हैं। इससे आपको अपने जीवन में सार प्रतीत नहीं होता।''

''करने योग्य कार्य क्या है, मुझको अभी तक इसका पता नहीं चला। गुरुदेव ने बताया था कि निर्वाण-प्राप्ति जीवन का एकमात्र उद्देश्य है। निर्वाण चिन्तन से मिलता है। चिन्तन किसका? भगवान् है नहीं। आत्मा का अस्तित्व नहीं। प्रकृति असीम है। इसका चिन्तन मैंने किया है और तुम्हारे केशव ने भी किया है। वह मुझसे उसको अधिक समझ गया प्रतीत होता है। मैं प्रकृति की इस जीवनरूपी गाँठ को खोलने में संलग्न रहा हूँ और वह प्रकृति की इस गाँठ को दृढ़ता से बाँधने में। वह ठीक कर रहा है अथवा मैं कर रहा हूँ, कहना कठिन है। निर्वाण का मार्ग गाँठ खोलना अवश्य है, परन्तु खोलने के पश्चात् तो फिर अस्तित्व ही नहीं रहेगा। मैं प्रकृति के महान् सागर में उस बूंद के तुल्य हो जाऊँगा, जो उसमें विलीन हो गई। इसमें लाभ क्या होगा?

''गुरुजनों ने बताया था कि यह जीवन दुःखों का भंडार है। संसार दुःखरूप है इससे इसी जीवन-रूपी गाँठ को खोल प्रकृति की शान्तावस्था में लीन हो जाना चाहिए।

''इस पर मैं यह विचार करता हूँ कि केशव को सुख अधिक मिल रहा है अथवा मुझको? मेरी कुण्डली खुल रही है परन्तु उत्तरोत्तर जीवन अधिक और अधिक दुःखमय बन रहा है। केशव की कुण्डली भिच रही है और वह उत्तरोत्तर

अधिक और अधिक सुखमय जीवन व्यतीत कर रहा है।"

तापसी बाबा की संशयात्मक बुद्धि को मैं समझ गया। नास्तिक सदैव अपने जीवन से असन्तुष्ट रहते हैं। अन्तर उसमें और केशव में केवल यह था कि केशव अपने जीवन से असन्तोष लाभ कर जीवन को अधिक और अधिक सुखमय बनाने का यत्न कर रहा था, जिससे उसका असन्तोष मिट सके और यह महात्मा इस असन्तोष के कारण जीवन को नाशप्राय कर चुका है। दोनों में से कौन मार्ग इस असन्तोष के निवारण में योग्य है, कहना कठिन है। सम्भव तो यह प्रतीत होता है कि दोनों में से कोई भी मार्ग संतोष लाने में सफल नहीं होगा।

आस्तिकों का मार्ग इससे बिल्कुल अलग है। इस पर भी इस सौ वर्ष के वृद्ध को कोई ऐसा मार्ग बताना, जो उसके अस्सी वर्ष के विचारों का विरोध कर सके, सम्भव न मान, मैंने इस वृद्ध महात्मा की धारणाओं को स्वीकार करते हुए कहा, "महाराज ! मैं तो इस सबको इस प्रकार मानता हूँ। आपकी यह जीवन-गाँठ खुल गई है, कहना कठिन है। कदाचित् नहीं खुली। यदि खुल गई होती तो यह संशयात्मक बुद्धि न रहती। परिणाम यह प्रतीत हो रहा है कि आपका जीर्ण शरीर आपकी इस जीवन कुण्डली को छोड़ जाएगा। आपको जीवन कुण्डली को खोलने के लिए एक और जन्म लेना पड़ेगा। इसके लिए आपको कहीं किसी माँ के गर्भ में पड़ वहाँ की यंत्रणा भोगनी पड़ेगी। फिर बालकपन का भ्रममय जीवन और युवावस्था का कामोत्पादक जीवन आपको पुनः निर्वाण-पथ से कहीं दूर भी ले जा सकते हैं। इस कारण क्या यह ठीक नहीं होगा कि इसी जीवन को लम्बा कर दिया जाए, जिससे आप इतने वर्ष के अनुभव और पवित्रता के आधार पर पुनः नया जीवन आरम्भ कर सकें।"

वह महात्मा इस युक्ति को सुन स्तब्ध रह गया। आँखें मूँदे वह चिन्तन करने लगा। मैं इससे अपने आगे की बात पर विचार करने लगा। एकाएक उसने आँखें खोलीं और मुझसे पूछा, "यह कहने तुम केशव की आज्ञा से आए हो ?"

"नहीं महाराज ! मैं तो अपने मन से ही यह निवेदन कर रहा हूँ। मेरे और केशव के विचारों में मतभेद है। वह नेकी उस बात को समझता है, जिससे उसका भला हो। मैं इस जीवन के बन्धनों से मुक्ति परोपकार से ही सम्भव समझता हूँ। जहाँ मैं उसकी पूर्ण भौतिक उन्नति को आवश्यक मानकर भी इस उन्नति का उद्देश्य लोक-सेवा ही मानता हूँ, वहाँ वह इसका उद्देश्य स्वार्थ-हित ही समझता है।

"यदि आप, जिनकी यहाँ इस स्थान पर बहुत ख्याति और मान्यता है, नवीन जन्म पा लें और केशव की भौतिक उन्नति का मुख स्वार्थ की ओर से मोड़कर लोक-सेवा और प्राणीमात्र के सुख की ओर बदल सकें तो मैं समझता हूँ, मनुष्य समाज का और यहाँ रहने वालों का भारी कल्याण होगा। बस इनके अतिरिक्त मेरा और कोई प्रयोजन नहीं।"

"केशव मेरा विरोधी है। वह मेरा काया-कल्प करेगा क्या?"

"मैं उसको इस बात पर राजी करने का यत्न करूँगा।"

"मैं समझता हूँ कि वह मुझपर परीक्षण नहीं करेगा और यदि करेगा तो सम्भव है, मुझपर सीमा से अधिक उपचार कर मुझे मार डाले।"

"मैं केशव को इतना नीच नहीं समझता। भूल से अथवा अज्ञान से कुछ खराबी हो जाए तो दूसरी बात है। वह जान-बूझकर ऐसा नहीं करेगा। और मान लीजिए कुछ खराबी भी हो गई और आपका देहान्त हो गया, तब भी जो कुछ स्वाभाविक रूप में होने वाला है, उससे खराब कुछ नहीं होगा।"

"मैं तो केशव को इतना अच्छा व्यक्ति नहीं मानता। कल ही तहसीलदार यहाँ आया था और मुझको बताया था कि केशव का एक साथी केशव को नर-मांसाहारी बताता है। वह दानव को मित्र बनाकर रखे हुए था और यदि ये नर-मांस खाते हों तो अचम्भा करने की बात नहीं।"

मैंने सतर्क हो पूछा, "तो महाराज ! आपको कोई ऐसी बात विदित है?"

अब उस तापसी बाबा ने पुनः आँखें खोलीं और मेरी ओर देखकर कहा, "मैं बहुत कुछ जानता हूँ परन्तु सांसारिक जीवों की त्रुटियों को कुरेदकर उनको दण्ड दिलाना मेरा कर्तव्य नहीं है।"

"पर मैं तो दण्ड देने वालों में नहीं हूँ। तहसीलदार को आप बताते अथवा न बताते, यह आपके निर्णय करने की बात थी। मैं तो केशव का मित्र हूँ और उसको ठीक मार्ग पर लाने में रुचि रखता हूँ।"

"परन्तु मेरी इस ओर रुचि नहीं है। इसी कारण मैं पापियों को दण्ड भी दिलवाने के पक्ष में नहीं, जिससे वे ठीक मार्ग पर विवश कर न चलाए जाएँ। स्वतः स्वीकार किया हुआ उन्नति का मार्ग ही कल्याणकारी हो सकता है।"

"आपका कहना सत्य है। परन्तु मैं तो किसी को विवश करने की भी क्षमता नहीं रखता। मैं उसको ज्ञान कराना चाहता हूँ कि वह भूल कर रहा है। इतने मात्र से वह समझकर ठीक मार्ग का अवलम्बन कर सकता है।"

"देखो वह हब्शी यहाँ जंगली स्त्रियों के साथ व्यभिचार करता था और जब कोई स्त्री उसके कार्य का विरोध करती तो वह उसको मारकर भूनकर खा जाता है। केशव स्वयं भी विषय-लोलुप है। अन्तर केवल इतना है कि जब उसकी इच्छा की अवहेलना होती है, तो वह हत्या नहीं करता परन्तु नीति से ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर देता है कि उसके विरोधी के लिए भाग जाने के अतिरिक्त कोई मार्ग ही नहीं रह जाता।"

"आप उसको उपदेश देकर इस व्यवहार से मुक्त क्यों नहीं करते?"

"मैं क्यों करूँ? और फिर मैं इतना बूढ़ा हो गया हूँ कि मेरे पास इस प्रकार की व्यर्थ बातों के लिए समय ही कहाँ है?"

"इसी से तो कहता हूँ कि आप कायाकल्प करवा लीजिए। जो शक्ति आपमें उत्पन्न होगी, वह आप भले कार्यों में लगा सकेंगे।"

"केशव मानेगा नहीं।"

"देखें। मैं चाहता हूँ कि यदि वह मान जाए तो आप पर यह प्रयोग मेरे सम्मुख हो।"

पश्चात् वहाँ के रहने वालों के विषय में बातचीत होने लगी। गद्दी लोग जो वहाँ पहाड़ों की कन्दरा में रहते हैं, राजस्थान के राजपूत हैं। किसी समय मुसलमानों के उत्पीड़न से भागकर यहाँ आ बसे थे। तापसी बाबा भी उन्हीं में से हैं। जब यह अभी बालक मात्र ही था तो एक बौद्ध विहार में रख दिया गया। पहले सेवक के रूप में, पश्चात् श्रावक बन गया था। यहाँ इस कन्दरा में प्रवेश पाए उसको लगभग अस्सी वर्ष हो चुके थे। तब से लेकर आज-पर्यन्त वह केवल मध्याह्न के समय ही कन्दरा से बाहर शौचादि के लिए निकलता था। पश्चात् फल, कन्दमूल खाकर पुनः कन्दरा में प्रवेश कर जाता था।

जब मैं लौट रहा था तो यूसूफ मुझसे पूछने लगा, "ये महाराज क्या कहते थे? मुझको तो कुछ समझ नहीं आया।"

"मैंने महात्मा जी से कहा था कि वे भी केशव बाबू की चिकित्सा से युवा हो जावें। पहले तो वे माने नहीं, परन्तु कुछ समझाने पर वे मान गए हैं। परन्तु पहले केशव बाबू को भी तैयार करना है।"

"तो वे जवान होने के लिए तैयार हो गए हैं?"

"हाँ।"

"जवान होकर क्या करेंगे?"

"खुदा की अबादत करेंगे।"

"जवानी में अबादत बहुत मुश्किल है।"

"इनका शरीर तो जवान होगा। इनका तजुरबा और अक्ल तो बूढ़ों जैसी होगी।"

"कहीं 'मानो' की भाँति वे मर न जाएँ।"

"मरना-जीना तो खुदा के हाथ में है।"

यूसुफ ने धीरे से कहा, "बाबू साहब! आपने बाबाजी को यह बताकर अच्छा नहीं किया।"

"क्यों?"

यूसुफ ने धीरे से कहा, "गाँव में एक करीम है। उसने भी यह इलाज करवाया था। पहले वह बहुत ही शरीफ आदमी था। लोग कहते हैं कि अपनी पहली जवानी की हालत में भी वह ठण्डी तबीयत का आदमी था। मगर अब नयी जवानी में तो

वह पागल हो औरतें के पीछे भागता-फिरता है। अप्सरा भवन में वह रोज जाता है और इस पर भी सब्र न कर वह गाँव की औरतों को खराब करता फिरता है।"

"मैं समझता हूँ कि वह अनपढ़ आदमी है। ये महात्मा जी इतनी मूर्खता नहीं करेंगे।"

हम भवन में पहुँचे तो भवन का जशन समाप्त हो चुका था। तहसीलदार किश्तवार जा चुका था। गाँव के अप्सरा भवन की नर्तकियाँ भी चली गई थीं और केशव और टूनी भवन की ड्योढ़ी में खड़े बातें कर रहे थे। मुझको आया देख टूनी मेरे पास आई और पूछने लगी, "बातचीत हुई ?"

"भीतर चलकर बताता हूँ।"

इतने में केशव आ गया। मैंने पाँच रुपये यूसुफ को इनाम दिए। रुपये लेकर वह सलाम कर चला गया। केशव के मुख पर चिन्ता की रेखाएँ देख मैं समझ गया कि कुछ गड़बड़ हो गई है। हम तीनों ड्राइंगरूम में जाकर बैठ गए। मैंने पूछा, "क्या हुआ है ?"

केशव ने कहा, "तहसीलदार कहता है कि तापसी बाबा ने हमारे ऊपर बहुत से आरोप लगाए हैं।"

"क्या लगाए हैं ?"

"हमारे यहाँ देहातियों पर ऐसे परीक्षण किए जाते हैं, जिनसे उनके मर जाने का भय रहता है। 'मानो' की मृत्यु की बात भी बताई है। राबर्ट के विषय में भी बहुत-सी बातें बताई हैं।"

"तो फिर तहसीलदार क्या कहता था ?"

"अभी तो कहता है कि इनसे कुछ सिद्ध नहीं हो सकता। इस पर भी उसको रिपोर्ट तो भेजनी ही पड़ेगी।"

"यही तो मैं पूछता हूँ कि क्या रिपोर्ट करेगा ?"

"इसके लिए उसने कल बुलाया है।"

"मुझको साथ ले चलना। तापसी के साथ तहसीलदार के विषय में बातचीत हुई है। उसने कहा है कि वह सबकुछ जानता है, परन्तु सांसारिक जीवों की त्रुटियों को कुरेदकर उनको दण्ड दिलवाना उसका काम नहीं।

"इससे तो यह पता चलता है कि उसने कुछ विशेष बात नहीं बताई।"

केशव गम्भीर मुद्रा में बैठा रहा। टूनी ने कहा, "सारी बात बताइये तो कुछ पता चले।"

"मैं लगभग तीन घण्टे वहाँ उसके पास रहा। सब बातें तो इसके साथ सम्बन्ध भी नहीं रखतीं। इतना मैं कह सकता हूँ कि तुम्हारे यहाँ की सब बातें उस तक पहुँचती रहती हैं। मेरे और राधा के यहाँ आने का उसको ज्ञान है। तुम्हारे यहाँ हो रहे कायाकल्प और 'मानो' के मरने का भी ज्ञान है। रोमिली के राबर्ट से

सम्बन्ध को भी वह जानता है। तुम्हारे विषय में वह और बताता, परन्तु यह जान कि मैं तुम्हारा मित्र हूँ वह स्पष्ट रूप से कुछ कह नहीं सका। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ का कोई आदमी उसके पास जाकर सब प्रकार के समाचार देता रहता है। मैंने उसके सम्मुख एक प्रस्ताव रखा है। वह यह कि वह अपना भी कायाकल्प करा ले। पहले तो वह तैयार नहीं होता था, परन्तु काफी कहने-सुनने के पश्चात् वह मान गया है।"

इस पर केशव ने सतर्क हो कहा, "मैं उसका कायाकल्प नहीं करूँगा।"

"क्यों?"

"वह हमारा घोर विरोधी हो जाएगा।"

"यह भी हो सकता है कि वह नव-जीवन का आनन्द पा तुम्हारा परम मित्र बन जाए।"

केशव इस सुझाव पर गम्भीर हो गया। कुछ विचारकर कहने लगा, "बहुत मजा रहे यदि वह युवा हो, वासना में लिप्त हो जाए। एक बात का भय है कि वह कहीं प्राथमिक चिकित्सा में ही न मर जाए।"

"केशव! इसमें तुम्हें सावधानी से काम लेना पड़ेगा।"

"क्या सावधानी प्रयोग करूँ?"

"काया-शुद्धि का उपक्रम एक ही घण्टे में समाप्त न कर कई दिनों में समाप्त करो।

"प्रथम उपचार पन्द्रह मिनट का हो। साथ ही कुछ शक्ति का संचार करो। फिर दूसरे दिन बीस मिनट और फिर इसी प्रकार पूर्ण चिकित्सा चौबीस घण्टे में समाप्त करने के स्थान पर पन्द्रह दिनों में समाप्त करो। उस अवस्था में रोगी के मरने का भय नहीं रहेगा।"

"अच्छी बात है। मैं करूँगा। उसको कहो कि वह घोषित कर दे कि अपनी इच्छा से मेरी चिकित्सा में आ रहा है।"

अगले दिन मैंने सरपंच नूरुद्दीन को बुलाकर तापसी बाबा को कहला भेजा कि वह चिकित्सा के लिए आ सकता है। आने से पूर्व वह अपने भक्तों में घोषित कर दे कि वह चिकित्सा करवा रहा है।

उस दिन मध्याह्न पश्चात् मैं केशव के साथ तहसीलदार से मिलने गया। वह डाकबंगले में ठहरा हुआ था। हमको आया देख तहसीलदार ने बाहर आकर हमारा स्वागत किया। केशव ने मेरा परिचय कराया। बताया, "कल राधादेवी से आपका परिचय कराया था। आप उनके पति हैं। लाहौर गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफेसर हैं।"

मैंने कहा, "मुझको आपके आने की सूचना देरी से मिली थी और मैंने तापसी बाबा से भेंट के लिए कहला भेजा था। अतएव आपके दर्शन करने से रह गया था।

आज केशव जी यहाँ आ रहे थे। इस कारण मैंने भी दर्शनार्थ यहाँ आना उचित समझा।''

तहसीलदार ने बहुत ही प्रेम से हाथ मिलाया और कहा, ''मैं भी गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर का विद्यार्थी हूँ। उस नाते आपका शिष्य हूँ। आपसे मिलकर भारी प्रसन्नता हुई है।

''मैं महाराज की आज्ञा से यहाँ एक घटना की जाँच करने आया था। एक गद्दी स्त्री दो मास हुए गायब हो गई थी। उसकी हड्डियाँ तक नहीं मिलीं। एक मिस्टर राबर्ट ने बम्बई से एक पत्र महाराज के नाम भेजा है कि यहाँ पर नर-मांस खाया जाता है। मैंने इस विषय में जाँच की है। यह तो ठीक है कि उस औरत का पता नहीं चला, परन्तु किसी ने यहाँ नर-मांस खाया जाता देखा नहीं। तापसी बाबा झूठ बोलने वाला आदमी नहीं और यहाँ के इलाके की उनको प्रत्येक सूचना रहती है। उनका कहना था कि केशव जी वाम-मार्गी हैं। इस पर भी वे नर मांसा-हारी प्रतीत नहीं होते। इस कारण मैंने रिपोर्ट लिख दी है। आप जैसे पढ़े-लिखे प्रतिष्ठित व्यक्ति, जब यहाँ पर मेहमान बनकर आए हैं, तो मेरे लिए सन्देह को कोई स्थान नहीं रहा।''

''मिस्टर राबर्ट ने अपना पता लिखा है क्या ?''

''हाँ, ताजमहल होटल लिखा है।''

''अगर हम माँगें तो उस पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि मिल सकती है ?''

''यह पत्र जाँच के लिए आया है। आपको मैं अप्रमाणित कापी दे सकता हूँ। उसको प्रमाणित नहीं कर सकता।''

मैंने वैसी ही अप्रमाणित प्रतिलिपि माँगी। उसने अपने क्लर्क को एक कापी तैयार करने के लिए कह दिया। इस पर मैंने टूनी और राबर्ट का सम्बन्ध बताया, ''टूनी से एक लाख रुपया ऐंठने की बात बताई और फिर बताया कि उसको मारने के लिए बम्बई से बीस मील दूर एक पहाड़ी पर ले गया था। और वहाँ से एक घाटी पर से उसको धकेल दिया। यह तो भाग्य की बात थी कि वह बच गई। मैं उसको पकड़वाना चाहता हूँ।''

''यदि आप लाहौर के किसी कोर्ट द्वारा इस पत्र की कापी माँगें तो मिल सकेगी।''

इस पर केशव ने कहा, ''तापसी बाबा कायाकल्प कराना चाहता है और मैं अपनी चिकित्सा की परीक्षा उस पर करने के लिए तैयार हूँ। यदि आप दो-चार दिन और ठहरकर यह तमाशा देख सकें, तो अच्छा रहेगा।''

''नहीं, मैं तो चला जाना चाहता हूँ। हाँ एक बार उनसे मिलने अवश्य जाऊँगा। भगवान् जाने कहीं वे चिकित्सा में चल ही न बसें।''

''चलिए, कल मैं भी चलने का विचार रखता हूँ।''

तहसीलदार का गवर्नमेंट कॉलेज का विद्यार्थी होना हमारे लिए बहुत ही सुविधाजनक हो गया। उसने जाँच पर अपनी रिपोर्ट लिख दी थी। उस रिपोर्ट को उसने हमें दिखा दिखाया। रिपोर्ट काफी सन्तोषजनक थी। सायंकाल, मैं और केशव प्रसन्नवदन वहाँ से लौटे।

भवन में पहुँचने पर नूरुद्दीन ने, जो तापसी बाबा से मिलकर लौट आया था, बताया कि तापसी बाबा कायाकल्प के लिए तैयार हैं और उसने अपने मिलने वालों से कहना आरम्भ कर दिया है कि वह बाबू साहब के पास इलाज के लिए आ रहा है।

वह उस दिन का दूसरा समाचार था, जो मेरे सन्तोष का कारण था। उस दिन राधा और टूनी गाँव में स्कूल देखने गई थीं।

राधा, जब से यहाँ आई थी एक प्रकार से उल्लसित और प्रफुल्लित अनुभव करती थी। उसके लिए यहाँ की जलवायु अत्यन्त स्फूर्तिदायक सिद्ध हुई थी। उसका रंग और रूपरेखा निखर रही थी।

मेरी दिनचर्या लगभग ऐसी हो गई थी कि प्रातः पाँच बजे उठकर शौचादि से निवृत्त होकर स्नान करता। राधा भी इसी बीच नहा-धोकर तैयार हो जाती। इसके उपरान्त हम सन्ध्योपासना में लग जाते। इससे निवृत्त होने तक अल्पाहार हमारे कमरे में आ जाता था। अल्पाहार लाने वाली प्लास्टिक की पुतली होती थी। पूजा से छुट्टी पा हम बटन दबाते और पुतली आ जाती। उससे चाय लाने को कहते।

पाँच मिनट में चाय आ जाती। चाय के साथ दूध, मक्खन, टोस्ट, उबले हुए अंडे ले आती। कभी कोई विशेष चीज मुरब्बा आदि मँगवाना होता, तो उसे कहने पर भी ले आती।

राधा के लिए पुतली का ठीक वस्तु लाकर देना आश्चर्यकारक होता था। एक दिन उसने यह रहस्य समझने के लिए आग्रह किया। पहले तो मैंने कहा कि केशव से पूछना। पश्चात् कुछ विचार कर स्वयं ही समझाने लगा। मैंने बताया, "इस पुतली में इलैक्ट्रोनिक-संचालित मस्तिष्क कार्य करता है। इस मस्तिष्क में सन्देश कान और आँखों द्वारा पहुँचते हैं। आँखों द्वारा बाहर की वस्तुओं की छाया मस्तिष्क के एक भाग पर पड़ती है। छाया पड़ने पर उसमें से विद्युत् की लहर मस्तिष्क के उस भाग पर दौड़ जाती है, जहाँ उसका उत्तर देने की क्षमता रहती है। वह भाग उसी विशेष कार्य को करने की योग्यता रखता है। वहाँ विद्युत् का प्रभाव पहुँचने से वह विशेष कार्य, जो वह भाग करने के लिए निर्माण किया गया है, करता है।

"एक पुतली के मस्तिष्क में दस-बारह प्रकार के कार्य समझने और करने के यंत्र बने हैं। और प्रत्येक कार्य एक-एक भाग करता है। आँखों से गई परछाईं अथवा

कान से सुना शब्द मस्तिष्क के उन भागों को विद्युत् से उत्तेजित करता है, जो भाग ऐसा कार्य करने के लिए निर्माण हुआ है, और उस आदेश के अनुरूप है।

"उदाहरण के रूप में हमको चाय की आवश्यकता है। हम आदेश देते हैं, चाय लाओ। हमारा यह शब्द कान द्वारा मस्तिष्क के उस भाग को उत्तेजित कर देता है, जो चाय लाने के लिए निर्माण किया गया है। उस भाग के उत्तेजित होते ही पुतली जाती है और पाचक को कहती है, चाय दो। वह ट्रे में चाय रख देता है और वह ले आती है।

"इसी प्रकार अन्य कार्य भी होते हैं। हर एक पुतली में कुछ एक काम करने के लिए प्रबन्ध किया है। प्रत्येक में दस-बारह प्रकार से अधिक कार्य नहीं हो सकते और साथ ही विशेष प्रकार के आदेश ही कानों द्वारा जाकर मस्तिष्क के उन भागों को उत्तेजित कर सकते हैं। यदि आदेश बदल दिए जाएँ तो इन पुतलियों का मस्तिष्क कार्य नहीं कर सकता।"

राधा ने इस बात की परीक्षा करने के लिए पुनः बटन दबाया। जब पुतली आई तो उसने कहा, "यह मेरी पुस्तक अलमारी में रख दो।" पुतली चुपचाप खड़ी रही। इस पर राधा ने डाँटकर कहा, "जाओ रखो।" पुतली वापस जाने लगी। इस पर राधा ने पुनः डाँटकर कहा, "इधर आओ।" पुतली वहीं ठहर गई, परन्तु लौटी नहीं।

यह देख राधा और मैं हँसने लगे। इस हँसी की आवाज से पुतली लौटकर देखने लगी। राधा ने कहा, "दो टोस्ट लाओ।"

पुतली सिर हिलाकर चली गई। राधा उसको देखने के लिए उसके पीछे-पीछे गई। पुतली साथ के कमरे में, जिसमें उसके लिए दीवार के साथ लगकर खड़े रहने का स्थान बना हुआ था, चली गई। दरवाजे से एक ओर हटकर, उसने पाचक को आवाज दी, "पाचक! दो टोस्ट-मक्खन लाओ।" पाचक आया और एक ट्रे में मक्खन और टोस्ट रख गया और वह लेकर हमारे कमरे में आ गई।

राधा, विज्ञान की शिक्षा से अनभिज्ञ थी, यह सब कुछ अद्भुत और दैवी समझती थी। जहाँ पहले उसके मन में केशव और रोमिली के लिए कुछ विशेष आदर का भाव नहीं था, वहाँ अब वह उनको अति योग्य, कुशल बुद्धि वाला मानने लगी थी। यहाँ आने से पूर्व तो वह यह समझती थी कि पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव में शारीरिक सुख-प्राप्ति के लोभ में वे परमात्मा को भूल गए हैं परन्तु अब वह परमात्मा के स्थानापन्न कार्य के प्रयत्न को विस्मययुक्त प्रशंसा से देखने लगी थी।

प्रातः के अल्पाहार के पश्चात् और मध्याह्न के भोजन के पूर्व तक मैं केशव के वैज्ञानिक उपकरणों का परिचय प्राप्त करता रहता था अथवा उसके परीक्षणों को देखता रहता था। राधा, टूनी और रोमिली के साथ उनके पुस्तकालय में अध्ययन करती अथवा गाँव की स्त्रियों से मिलकर, उनकी अवस्था का ज्ञान प्राप्त करती

रहती थी। इससे उसके मस्तिष्क पर यह प्रभाव पड़ने लग गया था कि केशव और रोमिली परमात्मा तथा आत्मा के अस्तित्व को माने बिना भी इन गाँव वालों के कल्याण-कार्य में संलग्न हैं।

मध्याह्न के भोजन के पश्चात् हम सब एकत्रित हो जाते। भोजन के समय प्रायः हँसी-मजाक चलता रहता था। जिस दिन तहसीलदार और केशव ने तापसी बाबा को मिलने जाना था, उसके मनोभावों पर अनुमान लगाए जाते रहे। मेरे कहने पर कि वह चिन्तन और संसार के मोह से छूटने के प्रयत्न को जीवन लम्बा होने से अधिक कर सकेगा, तो रोमिली ने कहा, "चिन्तन और भजन तो हो नहीं सकेगा। हाँ, इन्द्रियाँ जो नवीन जीवन प्राप्त कर लेंगी, बाबाजी के मन को, अपने वेगों के साथ बहाकर ले जाएँगी।"

"एक मनुष्य, जिसे नव्वे वर्ष का अनुभव है और जिसने अपने तथा संसार के विषय में इतना कुछ मनन किया है, वह सुगमता से इन्द्रियों के पीछे नहीं बहेगा।"

"यह भी परीक्षा का विषय होगा।" केशव ने कहा।

"आप उसके मार्ग में प्रलोभन न खड़े करिएगा, तो वह अपने निर्वाण के पथ पर चलता जाएगा।"

"निर्वाण पथ कोई हो भी तो। भ्रम के पीछे भागे हुए मनुष्य को जब इन्द्रियों के सुख की अनुभूति करायेंगे, तब वह उस शून्य के मार्ग को भूल जाएगा।"

"यह इन्द्रियाँ इतनी प्रबल क्यों हो जाएँगी? पहले भी तो वह युवा अवस्था तपस्या तथा संयम के साथ पार कर चुका है।" राधा का प्रश्न था।

"बात यह है" रोमिली ने समझाया, "कि जीवनशक्ति का केन्द्र शरीर के असंख्य कोषाणुओं में न्यष्टि-कण अर्थात् न्यूक्लियाई होते हैं। उनमें जीवन-उत्पादक शक्ति अथवा जीवन की अन्य विशेषताओं को उत्पन्न करन की शक्ति रहती है। हमारे यन्त्रों से निकलने वाली विद्युत् तरंगें इन न्यष्टियों में नवीन शक्ति का संचार करती हैं।

"प्रकृति ने भी इनमें नवीन शक्ति संचार करने का एक ढंग बनाया है। वह उस समय होता है जब पुरुष बीज स्त्री-बीज के साथ जा मिलता है। बीज विशेष प्रकार के कोषाणु ही होते हैं। उन कोषाणुओं के न्यष्टि ही, दोनों वास्तव में, नवीन शक्ति प्राप्त करते हैं। प्रकृति का यह उपाय दोषपूर्ण है। पुरुष-बीज, जो शक्ति स्त्री-बीज में डालता है, वह उस पुरुष की शक्ति के अनुसार ही होती है, जिसमें वह उत्पन्न होता है। यहाँ हम जिस शक्ति का इनमें संचार करते हैं वह किसी पुरुष की शक्ति अथवा दुर्बलता से बढ़ती-घटती नहीं। इस शक्ति का स्रोत अति प्रबल और एकसार रहने वाला है।

"एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाएगी। गाय के दूध में गुण गाय के अपने स्वास्थ्य और बल पर निर्भर रहते हैं। परन्तु जो कृत्रिम दूध है, वह तो अच्छा

अथवा बुरा सदैव एक समान ही रहेगा। यही बात डिम्ब अर्थात् स्त्री-पुरुष के बीज कोषाणुओं से बने कोषाणु समूह की है। डिम्ब एक अथवा अनेक कोषाणुओं का समूह होता है जो पुरुष-बीज और स्त्री-बीज कोषाणुओं के संयोग से बनते हैं। डिम्ब के प्रथम कोषाणु की न्यष्टि के समान न्यष्टि, हमारे प्रयोग में उस यंत्र की शक्ति से बनती है जो विद्युत् तरंगों को बनाते हैं। हमारा यंत्र पुरुष से अधिक शक्तिशाली और एक समान शक्ति उत्पन्न करने का स्रोत है। इस कारण जो शक्ति हम न्यष्टियों में भर सकते हैं, वह अद्वितीय उग्र और भारी मात्रा में होने से नवीन यौवन प्राप्त व्यक्ति की इन्द्रियों को अति वेगवान बना देती है। उनके वेग को साधारण मन रोक नहीं सकता। करीम की दशा मैं देख रही हूँ। उससे पूर्व सरस्वती को नवयौवन प्रदान किया तो विवश हो उसको अप्सरा भवन में प्रवेश देना पड़ा। वहाँ उसकी शक्ति का भारी अंश नाच-गाने में व्यय होने लगा। शेष वह गाँव में अनेक युवकों के प्रमोद की वस्तु बनी रहती है।''

यह सब इतना चमत्कारपूर्ण था कि राधा के मन में केशव भगवान् की एक विशेष शक्तिधारी शक्ति प्रतीत होने लगा। वह विज्ञान को आत्मा और परमात्मा का विश्लेषणात्मक ज्ञान मानने लगी थी। उसके सम्मुख यह एक नवीन संसार खुलने लगा था और वह एक बालक की भाँति, जो मदारी के थैले में से नये-नये खेल-तमाशे निकालता देख चकित हो जाता है, केशव के भवन को देख रही थी।

केशव जब भी अपने किसी आविष्कार की व्याख्या करता तो कहता, ''पुराणों में वर्णित स्वर्गलोक पर मेरा विश्वास दृढ़ होता जाता है। जिन बातों को मैं पहले गप्पें समझता था, अब मुझको प्रयोग की परिधि के भीतर प्रतीत होने लगी हैं। मैं कभी ऐसा समझता हूँ कि मैं ब्रह्मा हूँ और यहाँ इस इलाके में स्वर्गलोक का निर्माण कर रहा हूँ। मैं कभी यह विचार करता हूँ कि मैं इस स्वर्गलोक का राजा इन्द्र हूँ और इसका संचालनकर्ता और भोगकर्ता हूँ।''

राधा मुग्ध हो यह सब सुनती और मन में केशव की प्रशंसा से भर जाती।

हम मध्याह्न के भोजनोपरान्त आधा घंटा विश्राम करते थे और पश्चात् भ्रमण करने के लिए निकल पड़ते। प्रायः राधा और टूनी साथ-साथ होतीं। मैं कभी केशव के साथ और कभी रोमिली के साथ जाता। रोमिली पहले कुछ दिन तो मेरे मन पर यह अंकित करने का यत्न करती रही कि वह मुझसे प्रेम करती है और मेरी संगत प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ करने को तैयार है। कुछ दिनों के प्रयत्न के पश्चात् जब वह समझ गई कि यह प्रेमप्रलाप मुझपर कुछ भी प्रभाव नहीं उत्पन्न कर सका, तो वह मेरे में वासना उत्पन्न करने का यत्न करती रही। मेरे साथ सटकर बैठना और मेरी बाँह-में-बाँह डालकर चलना, अपने वासनामय विद्यार्थी जीवन की बातें बताना अथवा अप्सरा भवन में सरस्वती और करीम के कारनामों का वर्णन करना उसके काम-बाण थे, जिनसे वह मुझको अपने मोह में फँसाने का

यत्न करती रहती थी।

एक दिन हम पावर स्टेशन की ऊपर की पहाड़ी पर घूमने गए। वहाँ सूर्य के मधुर ताप के कारण मुझको कुछ नींद आ गई। मैं एक पत्थर का आश्रय लेकर बैठा तो मेरी झपकी लग गई। मेरी नींद तब खुली जब मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि मेरे ओष्ठों पर कोमल तथा ऊष्ण-स्पर्श हो रहा है। रोमिली मेरा मुख चूम रही थी। मेरी नींद खुली तो वह मुझसे चिपट गई और भर्राई आवाज में प्रेम का उपहार माँगने लगी। मैं बहुत ही कठिन समस्या में फँस गया अनुभव करने लगा। मेरे विचारों में निष्ठाओं और संकल्पों का होम होने ही वाला था कि मेरी आत्मा में ग्लानि इतनी प्रबल हो उठी कि मैं उसको झटका देकर उठ बैठा।

रोमिली हाँफती हुई और अपनी ही वासना में जलती हुई मेरे सामने लेटी थी। उसने कहा, "विनोद ! कितने निर्दयी हो तुम। एक निष्ठुर कंजूस धनी की भाँति अपनी सम्पत्ति लिये ऐसे बैठे हो जैसे साँप बैठता है।"

मैं अपने आवेगों पर काबू पाने का यत्न कर रहा था। इस कारण उसकी बातों को सुनता हुआ भी समझ नहीं रहा था। वह घायल नागिन की भाँति मेरे पाँव के पास लेटी छटपटा रही थी। एक समय तो मुझको ऐसा भास हुआ कि वह मुझको डसेगी और मैं, स्वाभाविक भाव में एक पग पीछे हट गया।

अब वह भी उठी और बिना मुझसे एक भी शब्द कहे भवन की ओर चल पड़ी। मैं भी उसके साथ-साथ चल पड़ा। अभी हमने आधा मार्ग ही तय किया था कि वह एकाएक खड़ी हो गई और पूछने लगी, "अब मेरा आपसे क्या सम्बन्ध होगा ?"

"देवर-भाभी का। और तो कोई हो नहीं सकता।"

"तुम मुझको बहुत ही पतित और नीच समझते होगे ?"

"नहीं भाभी ! मैं तुमको कुशिक्षित छोटी बहन समझता हूँ।"

"आज की घटना बताकर सबके सम्मुख अपनी शेखी बघारोगे ?"

"क्या हो गया है तुमको भाभी ? मैं यह किसी को क्यों कहूँगा ? तुमको स्वयं केशव को सब-कुछ बता देना चाहिए। अपनी त्रुटियाँ स्वयं स्वीकार कर लेने से भ्रम उत्पन्न नहीं होता।"

वह गम्भीर हो चलती गई। हम ढलवान पर नीचे की ओर जा रहे थे। इस कारण मार्ग शीघ्र निपटता जाता था। भवन के समीप पहुँच, उसने खड़े होकर कहा, "मैं समझती हूँ कि मैं भूल कर रही थी। आप मेरे व्यवहार को भूल जाइए और मैं प्रयत्न करूँगी कि ऐसी घटना फिर न हो।"

"ठीक है। अब हम इसको भूल सकते हैं।"

"तो मेरे साथ गाँव को चलिए। वहाँ नूरुद्दीन से कुछ काम है।"

"चलो चलें।"

अब वह पुनः हँस-हँसकर बातें करने लगी।

भ्रमण के पश्चात् प्रायः पाँच बजे तक हम सब भवन में एकत्रित हो जाते। वहाँ चाय और साथ कुछ अल्पाहार लेकर कभी ताश, कभी शतरंज अथवा कोई अन्य खेल खेला करते थे। मैं केशव के पुस्तकालय से कोई पुस्तक लेकर पढ़ा करता।

रात के भोजन के पश्चात् या तो हम रेडियो सुनते थे अथवा गाँव के कुछ लोग आकर नाच-गाना सुनाते थे।

इस प्रकार दिन व्यतीत हो रहे थे।

चतुर्थ परिच्छेद

तापसी बाबा कायाकल्प कराने के लिए बहुत ही उत्सुक प्रतीत होता था। जिस दिन केशव और तहसीलदार उससे मिलने गए थे, उस दिन तहसीलदार ने तापसी बाबा से कहा भी, ''महाराज ! आपकी आयु बहुत अधिक हो चुकी है और आप बहुत दुर्बल हैं। कहीं इस चिकित्सा में ही आपके प्राणान्त न हो जाएँ ?''

केशव ने ही यह बात तहसीलदार से कहलवाई थी। उसको भी संदेह था कि कदाचित् ऐसा हो न जावे।

तापसी बाबा का नाम भद्रायण था। उसके मन में यह बात बैठ गई थी कि जब मरना ही है तो चिकित्सा में मरे तो क्या और स्वाभाविक ढंग से मरे तो क्या ? मृत्यु तो मृत्यु ही है। इस पर भी वह समझता था कि उसका सात्विक जीवन होने से 'मानो' की भाँति वह दुर्बल नहीं हुआ। इस कारण उसने तहसीलदार से कह दिया, ''कुछ भी हो। मैं अपनी काया, गर्भ में जाने का कष्ट सहन किए बिना, बदलना चाहता हूँ। सफल हो गया तो मेरा अस्सी वर्ष का अनुभव और मेरी यौवनावस्था मुझे निर्वाण-मार्ग पर बहुत आगे ले जाएगी।''

इस प्रकार बात तय हो गई। सायंकाल जब केशव भद्रायण के यहाँ से लौटा तो मुझको बताने लगा, ''मैंने तहसीलदार के सम्मुख उसके मुख से कहलवा दिया है कि वह मर जाने से नहीं डरता।''

''इस पर भी मेरी सम्मति है कि जिस दिन वह चिकित्सा के लिए आए, आस-पास के सब गाँव वालों को एकत्रित कर उनके सामने कहलवा देना चाहिए कि उसके मर जाने का भय है। इस पर भी वह स्वेच्छा से इस चिकित्सा के लिए आया है।''

यह बात केशव के मन लगी। मैंने आगे कहा, ''मैं चाहता हूँ कि हमको पूर्ण प्रयत्न करना चाहिए कि तुम्हारा प्रयोग सफल हो। इसमें हमारा और विज्ञान का कल्याण है।''

मेरे कहने पर केशव ने चिकित्सा का कार्यक्रम बना लिया। पहले दिन इलैक्ट्रोनिक तरंगों के नीचे, जिनसे शरीर की शुद्धि होती है, उसको केवल पन्द्रह मिनटों के लिए रखने का निर्णय किया गया। पश्चात् एक घंटे तक न्यूट्रोन की शक्ति संचार करने वाली तरंगों से स्नान करवा कर विश्राम कराया जाए। इसी प्रकार अगले दिन उपचार बीस मिनट, तीसरे दिन तीस मिनट और चौथे दिन

चालीस मिनट और पाँचवे दिन पचास मिनट और अन्तिम दिन पूर्ण एक घंटा किया जाए।

इस प्रकार जो उपचार रामी और मीनार पर चौबीस घंटे में किया गया था, उसका एक सप्ताह में करने का कार्यक्रम बना लिया गया।

अगले मास की पूर्णिमा के दिन तापसी बाबा, आसपास के पचास गाँव के रहने वाले और कन्दराओं में रहने वाले गद्दी जाति के लोगों के साथ एक भारी सवारी में, अपनी कन्दरा से केशव के भवन में लाया गया। लगभग एक लाख की भीड़-भाड़ में तापसी बाबा भवन के सम्मुख पहुँचा और जनता को उपदेश देने लगा। उस उपदेश में उसने कहा, कि कदाचित् उसकी मृत्यु हो जाए तो उसके शरीर की राख चन्द्रभागा में प्रवाहित कर दी जाए।

यह सब-कुछ मेरे आग्रह पर किया गया। जो लोग इस प्रकार एकत्रित हुए थे, दिन-भर भवन के सम्मुख नाचते-गाते, खाते-पीते रहे। वास्तव में वहाँ पर एक बहुत ही बड़ा मेला-सा लग गया था।

जब भद्रायण को भवन में ले जाकर एक कमरे में लिटा दिया गया तो मैं और राधा मेले से दूर गाँव को पार कर चन्द्रभागा के किनारे पर भ्रमण करने चले गए। हम खाली गाँव में से जा रहे थे, जबकि एक अति सुन्दर लड़की हमको सामने से आती मिली। मैंने इतनी सुन्दर लड़की इस इलाके में अभी तक नहीं देखी थी। हम एक-दूसरे के समीप होकर जा रहे थे कि वह लड़की मेरा मार्ग रोककर खड़ी हो गई और बोली, ''सलाम बाबूजी !''

मैंने ध्यान में उसको देखा तो पहचान गया। वह मीनार थी। ''ओह !'' मैंने विस्मय प्रकट करते हुए कहा, ''यह तुमको क्या हो गया है ?''

''मैं खुद नहीं जानती क्या हो गया है। मैं पिचहत्तर वर्ष की बूढ़ी थी। अब मुझमें नये-नये शौक पैदा होने लग गए है। लोग मुझको घूर-घूरकर देखते हैं और ऐसी फूहड़ बातें करते हैं कि बरबस मेरी हँसी निकल पड़ती है।''

''अच्छा मीनार ! तुम अपने इस नये जीवन से खुश हो?''

''हाँ बहुत। सिर्फ एक बात है कि अब मैं आसमान में उड़ना चाहती हूँ परन्तु मेरे पंख नहीं।''

मैंने उसकी आँखों में देखकर कहा,''तुम्हारे लिए पंख मोल मिलने अब मुश्किल नहीं। तुम किसी बड़े शहर में चली जाओ। कोई धनी आदमी मिल जाएगा, जो तुमको हवाई जहाज में बैठाकर तुम्हें आसमान में उड़ायेगा।''

''यही तो मुश्किल है। मैं अकेली किसी शहर में जा कैसे सकती हूँ ? वहाँ के लोग मुझे कौओं और गीधों की भाँति नोच लेंगे। यह मुझको पसन्द नहीं। मैं शरीर से जवान हो गई हूँ परन्तु अक्ल से अभी पिचहत्तर वर्ष की हूँ।''

''तुम यूसुफ को साथ लेकर जा सकती हो। वह तुमको बम्बई ले जाएगा।

संभव है तुमको किसी थिएटर अथवा सिनेमा में नौकरी मिल जाए। नहीं तो कोई मालदार सेठ मिल जाएगा, जो तुमसे विवाह कर तुमको हवा में उड़ाकर विलायत अथवा अमेरिका ले जाएगा।"

"मैं तो केशवजी से विवाह करने का विचार रखती हूँ।"

"केशव से?" मैंने विस्मय में पूछा, "उसने कुछ कहा है इसकी बावत?"

"नहीं, उन्होंने कुछ नहीं कहा। मेरी ही इच्छा हो रही है।"

"यूसुफ कहता था कि वह तुमसे विवाह करना चाहता है।"

"वह बेवकूफ है। मैंने उसको दूध पिलाया है। मैं उससे कैसे विवाह कर सकती हूँ।"

"अब किधर जा रही हो? मेला देखने नहीं गईं?"

"मेले में जाती तो लोग मुझ पर टूट पड़ते। मैं आजकल अपने को छुपाकर रखती हूँ। दिन-भर बैठी-बैठी थक गई थी। विचार आया कि नदी के किनारे ही टहल आऊँ।"

"हम भी उधर जा रहे हैं।"

"तो आपके साथ चलूँ?"

"और कहीं मैं तुमसे प्रेम करने लगा तो?" मैंने मुस्कराकर पूछा।

"तो आपसे विवाह कर लूँगी।"

"पर मैं तो बहुत गरीब आदमी हूँ। मैं तो तुमको आसमान पर उड़ा नहीं सकता।"

"इस पर भी आप बहुत अच्छे हैं। केशवजी से भी अधिक अच्छे हैं।"

"यह तुमको किसने कहा है? मैं तो केशवजी को अपने से अच्छा समझता हूँ।"

"मुझको मालकिन ने बताया है कि आप उनके घर वाले से अच्छे हैं। वे भी आपसे मुहब्बत करती हैं। मगर आप अपनी बीवी को छोड़ उनसे मुहब्बत नहीं कर सके।"

"तो तुमसे कैसे मुहब्बत कर सकूँगा?"

"आपने ही तो पूछा था कि मुझसे मुहब्बत करने लगे तो मैं क्या करूँगी। मैंने बता दिया कि क्या करूँगी। आप विश्वास योग्य हैं, खूबसूरत हैं और पैसे वाले भी हैं।"

"पैसे वाले? यह भी क्या तुम्हारी मालकिन ने बताया है?"

"हाँ, मैंने पूछा कि आपका केशवबाबू जी से क्या रिश्ता है? तो उन्होंने बताया कि उनकी सारी जायदाद उनके वालिद साहब ने आपको दे दी है।"

"सारी तो नहीं। हाँ, एक हिस्सा तो जरूर दिया है। पर मैं उसको भी वापस करने वाला हूँ।"

"तो फिर गुजर कैसे होगा ?"

"मैं एक सरकारी स्कूल में पढ़ाता हूँ और मुझको सात सौ रुपया वेतन मिलता है।"

"सात सौ ?" उसने आँख फाड़कर देखते हुए कहा।

"हाँ क्यों ?"

"सात सौ तो बहुत हैं। आप एक और विवाह आसानी से कर सकते हैं।"

"यूँ तो मेरी आमदनी और भी है। परन्तु इससे मैं तुम्हें आसमान की सैर नहीं करा सकता।"

इस पर उसने मुस्कराते हुए कहा, "कुछ हरज नहीं। अगर आप मुझसे विवाह कर लें तो मैं आसमान की सैर नहीं करूँगी।"

"पर मुझको क्या लगा है ? और ऐसे बहुत से लोग हैं, जो मुझसे ज्यादा अमीर और समझदार हैं।"

"नहीं विनोद बाबू ! आप मान जाइये। मैं इनको मना लूँगी।" यह कहते हुए उसने राधा की ओर संकेत कर कहा।

"कैसे मना लोगी ?" राधा ने मुस्कराते हुए पूछा।

"पाँवों पड़ूँगी, मिन्नत करूँगी और टहल-सेवा करूँगी।"

"पर जानती हो, मालकिन जैसी सुन्दर और धनी औरत को इन्होंने ठुकरा दिया है ? तुमको कैसे स्वीकार करेंगे ?" राधा ने मुस्कराते हुए कहा।

"मैं उनसे ज्यादा सुन्दर हूँ और साथ ही उनको अपने धन का गरूर है। मैं तो गरीब औरत हूँ। मुझको टहल-सेवा करने में शर्म नहीं आती।"

"लो जी ! इसको ही ले लो।" राधा ने हँसते हुए मुझसे कहा।

"मालकिन !" मीनार ने कहा, "मुझको अपने साथ अपने शहर ले चलिए। मैं अपनी खिदमत से उनको खुश कर लूँगी।"

राधा ने कनखियों से मेरी ओर देखते हुए कहा, "रोमिली से है तो अधिक खूबसूरत और मैं समझती हूँ कि ज्यादा समझदार भी है।"

"बात तो तुम ठीक कहती हो। पर मैं भी अपना कायाकल्प करा लूँ। तब ही तो इससे विवाह कर सकता हूँ। नहीं तो दो युवा बीवियों के बीच मेरा कचूमर निकल जाएगा।"

"नहीं-नहीं हुजूर ! आप घबराइये नहीं। मैं अगरचे देखने में पन्द्रह-सोलह साल की लड़की लगती हूँ पर मेरा मन पिचहत्तर साल का बूढ़ा है।"

"फिर भी मैं केशव से कहूँगा कि मेरा भी कायाकल्प कर दे जिससे मैं तुमको यहाँ से ले चलूँ।" इस पर मीनार तथा राधा दोनों हँसने लगीं।

अगले दिन तापसी बाबा की चिकित्सा आरम्भ हो गई। पहले ही दिन उसको

बीस के लगभग दस्त आए। शोधन-क्रिया बन्द कर उसको रसायन-क्रिया दी गई। तापसी बाबा इससे ही बहुत दुर्बलता अनुभव करने लगा था परन्तु रसायन-क्रिया के प्रयोग से पुनः उसमें शक्ति का संचार होने लग गया। अगले दिन शोधन-क्रिया बीस मिनट तक की गई। इससे फिर कै, दस्त और पसीना आया, परन्तु उतनी दुर्बलता नहीं हुई, जितनी पहले दिन हुई थी और रसायन-क्रिया से बाबा की शक्ति पहले से अधिक होने लगी।

इसी प्रकार चिकित्सा पहले से अधिक और अधिक उग्र होती गई।

तापसी बाबा की चिकित्सा लगभग समाप्त हो चुकी थी परन्तु उसको भवन से जाने की स्वीकृति नहीं दी गई थी। कन्दरा में उसका रहना उचित नहीं समझा गया। वह अब बीस वर्ष का युवक-सा प्रतीत होने लग गया था। गौर-वर्ण, लम्बा-सा चेहरा, चौड़ा मस्तक और दृढ़ चुबुक थी। उसके नये दाँत आने शुरू हो गए थे। काले मुलायम और गुफ्फेदार बाल उगने शुरू हो गए थे। बाँहें और जंघाएँ पुष्ट हो गई थीं।

अभी भद्रायण भवन में ही ठहरा हुआ था। उसमें अभी भी शक्ति-संचार किया जाता था। एक दिन मध्याह्न के भोजन के समय केशव ने घोषणा की, "भाभी!" वह राधा, को सम्बोधन कर कह रहा था, "विनोद जी भी कायाकल्प कराएँगे।"

राधा को मीनार की बात स्मरण नहीं रही थी। इससे उसने पूछा, "और केशवजी आप भी करा रहे हैं क्या?"

"मीनार मुझसे विवाह थोड़े ही कर रही है?"

इस पर मेरी हँसी निकल गई। राधा भी मीनार का नाम सुन हँस पड़ी और पूछने लगी, "तो वह आपके पास आई थी क्या?"

"हाँ। अभी सप्ताह में एक बार आती है। आज उसने कहा कि यदि मैं विनोदजी का कायाकल्प कर दूँ तो वह उनसे विवाह कर लेगी।"

मैंने व्यंग्य के भाव से कहा, "वह है तो बहुत सुन्दर।"

"मैं उसको अपने लिए रखना चाहता था, पर यदि विनोद का मन उस पर रीझ गया है तो मैं इसमें कुछ नहीं कहूँगा और विनोद का कायाकल्प भी कर दूँगा।"

"केशव!" मैंने गम्भीर होकर कहा, "वह तुम्हारे लिए ही रहेगी। तुम इतना विचार करो कि जो पुरुष रोमिली को अस्वीकार कर चुका है, वह मीनार को कैसे स्वीकार कर सकता है?"

"मनुष्य-प्रकृति के विषय में भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।"

"मैं अपने मन की बात बताता हूँ। मैं उसने विवाह नहीं करूँगा।"

"क्यों?"

"मेरा विवाह राधा से हो चुका है और मैं एक पत्नीव्रत में विश्वास रखता हूँ।"

"पर विनोदजी !" रोमिली ने कहा, "वह मुझसे कहीं अधिक सुन्दर निकली है।"

"सौन्दर्य अपने-अपने मन की भावना पर दिखाई देता है। मुझको राधा सबसे अधिक सुन्दर दिखाई देती है।"

सब हँसने लगे। राधा ने गम्भीर हो कहा, "केशवजी ! आप इनका कायाकल्प कर दीजिए। मैं मीनार को नौकर बनाकर साथ ले जा रही हूँ। क्या जाने लाहौर जाकर वह इन्हें फुसलाने में सफल हो जाए।"

"पर मैंने तो अभी तक किसी युवा का कायाकल्प किया नहीं। मैं इसका परीक्षण अपने मित्र पर नहीं करूँगा।"

"तब तो बहुत कठिन बात होगी। मीनार कितने वर्ष तक युवा रह सकेगी ?"

"मैं क्या जानूँ ? ये परीक्षण अभी नये हैं। आज से तीस-चालीस वर्ष पश्चात् आज के परीक्षणों का परिणाम निकलेगा।"

उसी मध्याह्नोत्तर केशव, मैं, रोमिली आदि घूमने किश्तवार गाँव की ओर गए। मार्ग में रोमिली ने मीनार की बात आरम्भ कर दी, "भाभी ! मीनार को सत्य ही साथ ले जा रही हो ?"

"नहीं। वह तो केवल हँसी हो रही थी।"

"ले जाओ न।"

"क्यों ?"

"उसके यहाँ रहने से भारी झगड़ा हो सकता है। वहाँ जाने पर उसको कौन उड़ा ले जाता है और कौन नहीं, इसका प्रभाव हम पर नहीं पड़ेगा; परन्तु यहाँ यदि किसी प्रकार से झगड़ा हुआ तो हमारी स्थिति डाँवाडोल हो जाएगी।"

"आपकी स्थिति का उस स्त्री से क्या सम्बन्ध है ?"

"इस समय यहाँ आस-पास के गाँव में कोई ऐसा युवा पुरुष नहीं जो मीनार से विवाह न करना चाहता हो। यह यदि अब तक बची हुई है, तो इस कारण कि केशवजी ने यह कहा हुआ है कि अभी उसकी चिकित्सा समाप्त नहीं हुई और उससे सहवास करने वाले को हानि पहुँचने की सम्भावना है।

"उसके विवाह के लिए तैयार होते ही यहाँ दंगल होने लगेगा। मैं इसकी परवाह नहीं करती यदि इस दंगल में भाग लेने वालों में एक आपके मित्र न होते।"

"केशव मीनार को पाने के लिए देहातियों से मुकाबिला करेगा क्या ?"

उत्तर केशव ने दिया, "मैं भी हाड़-मांस का बना हूँ और मुझमें इच्छाएँ अभी मरी नहीं। तुम मित्र हो। तुम्हारे लिए तो मैं उसको दे देने को तैयार हूँ, परन्तु अन्य किसी के लिए नहीं।"

"मुझको मीनार ने कहा है कि वह तुझसे विवाह करना पसन्द करेगी।"

"पर यदि दूसरे उसको ऐसा करने देंगे, तभी न।"

"मैं समझता हूँ तुम्हारे मुकाबिले में कोई नहीं आएगा। यह तब तक ही है, जब तक लोग तुमको चाहने वालों में नहीं जानते।"

"पर एक है जो मेरे और उसके बीच आने के लिए तैयार है। रोमिली का कहना है कि मैं उससे विवाह न करूँ। वह मेरे इस विवाह को पसन्द नहीं करती।"

"तो क्या वह किसी अन्य से आपका विवाह पसन्द कर लेगी?"

"हाँ, यदि तुम रोमिली से विवाह कर लो तो वह मुझे मीनार से विवाह करने के लिए आपत्ति नहीं करेगी, अन्यथा किसी से नहीं।"

"मेरा विचार है कि न रोमिली दूसरा विवाह करे और न तुम करो। इस प्रकार की इच्छा करना ही पाप है।"

इस पर केशव हँस पड़ा। उसने पूछा, "पाप किसे कहते हैं?"

"वह कर्म पाप होता है जिससे अपने को अथवा सर्वसाधारण को हानि पहुँचे।"

"हानि पहुँचाने वाले काम को कोई करेगा ही क्यों?"

"इस कारण कि मनुष्य काम-क्रोधादि के वश में यह समझ ही नहीं सकता कि अमुक कार्य उसके लिए हानिकर है अथवा नहीं।"

मुझको कुछ ऐसा अनुभव होने लगा था कि रोमिली और केशव की अब बननी बन्द हो गई है। इस कारण मैंने उसका ध्यान मीनार से हटाकर दूसरी ओर खींचना चाहा था। मैंने कहा, "केशव! यह मीनार से तुम्हारा विवाह रोमिली से विग्रह का कारण बन जाएगा।"

"जब मैंने रोमिली को सब प्रकार की स्वतन्त्रता दे रखी है तो फिर वह मुझको यह अधिकार क्यों नहीं देती?"

"तुमने स्वतन्त्रता देकर अच्छा नहीं किया और तुम अब विवाह के पश्चात् ऐसी स्वतन्त्रता माँगकर अच्छा नहीं कर रहे।

"एक बार तुम लोगों ने परस्पर वचन दिया था कि एक-दूसरे के अतिरिक्त किसी अन्य के प्रति पति अथवा पत्नी की भावना नहीं रखेंगे। अब उस वचन को भंग करने में कोई कारण नहीं है।"

"यह वचन भंग पहले रोमिली ने ही किया है। इसने राबर्ट से सम्बन्ध स्थापित किया तो मैंने भी यह अपना अधिकार समझा है कि जिससे चाहूँ मैं अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकता हूँ।"

इन दो अपार धन तथा विज्ञान के स्वामियों को निपट गँवारों की भाँति लड़ते देख मुझे विस्मय हुआ। मैंने केशव से कहा, "आज तुम्हारी इस प्रवृत्ति को देख

मुझे विस्मय हो रहा है। तुम इतने विद्वान् और समझदार होकर व्यर्थ का विग्रह कर बैठे हो।"

सायंकाल भोजन में वह स्वाद नहीं था, जो पिछले इतने दिनों से आ रहा था। उस दिन भोजन के पश्चात् मैंने राधा से कहा, "हमको यहाँ से शीघ्र ही लौटने का प्रबन्ध करना चाहिए।"

"क्यों ?"

"यह गृहकलह का केन्द्र बनने जा रहा है। यहाँ रहता हुआ मैं इससे निर्लेप नहीं रह सकूँगा।"

"आप यहाँ से इस समय जावेंगे तो रोमिली और केशव दोनों को नाराज कर देंगे। दूसरी ओर जो कुछ आप इस झगड़े को शान्त करने के लिए कर सकते हैं, वह भी नहीं कर सकेंगे।"

अगले दिन मध्याह्नोत्तर मैं केशव को अपने साथ टहलने ले गया। रोमिली गाँव में, किसी कार्यवश, गई हुई थी। टूनी कुछ सुस्त रहती थी। मुझको सन्देह हो रहा था कि वह तीसरी बार माँ बनने जा रही है।

नदी के किनारे पहुँच टहलते हुए मैंने कहा, "केशव ! यह रोमिली से झगड़ा किस प्रकार निपटेगा ? और चाहे कुछ भी हो उससे लड़ने में कल्याण नहीं।"

"देखो विनोद ! यह आजकल गाँव में लोगों को मेरे विरुद्ध भड़का रही है। यही कारण है कि लोग मेरी अवहेलना करने लगे हैं।"

"पर क्यों ? वह ऐसा क्यों करती है ?"

"तुमसे प्रेम में असफल होकर वह मेरे विरुद्ध हो गई है।"

"ऐसी अयुक्तिसंगत परिस्थिति में तुम शान्ति से नहीं रह सकोगे। मेरा विचार है कि तुम कुछ समय के लिए रोमिली को यहीं अकेला छोड़ मेरे साथ लाहौर चले चलो।"

"मैं भी कुछ ऐसा विचार कर रहा हूँ। कुछ काल के लिए छोड़ने से तो कुछ लाभ नहीं। मैं तो सदैव के लिए सम्बन्ध-विच्छेद करने की सोच रहा हूँ।"

मैं केशव के इस विचार को सुन चकित रह गया। मैं भी उलझन को सुलझाने का यही उपाय ठीक समझता था इस पर भी मैंने कहा, "क्या और कोई मार्ग नहीं है ?"

"मैं सदैव नवीन मार्ग की खोज में रहता हूँ। कोई तुम्हें सूझ रहा हो तो बताओ।"

"मैं समझता हूँ कि रोमिली को कुछ काल के लिए अमेरिका चला जाना चाहिए। तुम बच्चों की भाँति खिलौनों से खेलने वाले अपने-अपने खिलौनों से उकता गए हो। तुमको अपने खिलौने बदल लेने चाहिए।"

केशव ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, "विनोद ! तुम प्रत्येक बात में मेरी

रोमिली की बच्चों की भाँति अवहेलना करते रहते हो। तुम्हारा यह व्यवहार कुछ अच्छा नहीं है। हम मानव हैं। मानवों की भाँति ही रहना चाहते हैं। तुम अपने को मनुष्य से ऊपर बनाकर रखे हुए हो और तुम्हारा यह व्यवहार ही हमको इस विपरीत मार्ग पर धकेल रहा है।"

"केशव ! तुम वही कर रहे हो, जिसका मुझे भय था। काम से क्रोध उत्पन्न होता है। वही अवस्था तुम्हारी हो गई है।"

"नहीं मित्र ! काम से क्रोध नहीं प्रत्युत अतृप्त कामना से क्रोध उत्पन्न होता है। यह अतृप्त कामना तुम्हारे कारण है।"

"काम सदैव अयुक्तिसंगत होता है और अयुक्तिसंगत कामना सदैव अतृप्त रहती है।"

"और युक्ति-संगत कामना को क्या कहते हैं ?"

"प्रेम।"

"दोनों में अन्तर क्या है ?"

"काम वासना का सूचक है। यह शरीर का विषय है। प्रेम मन और आत्मा का विषय है। इसमें वासना की गन्ध भी नहीं होती।"

"तुम एक महान भ्रम में फँसे हुए विद्वान् हो। एक अनपढ़ को भ्रम से निकाला भी जा सकता है; परन्तु तुम्हारे जैसे पढ़े-लिखे को भ्रम से निकालना प्रायः असम्भव है। इस पर तुम्हारी योजना प्रयोग में लाने योग्य तो है ही। हम दोनों लाहौर चले चलें और वहाँ साधारण व्यक्तियों की भाँति जाकर रहें। यदि रोमिली की इच्छा हो तो अमेरिका चली जाए। मुझको यह स्वीकार है। रोमिली से बात कर तुम पता करो कि वह क्या चाहती है।"

मैंने उसी दिन रात के भोजन के पश्चात् रोमिली से पृथक् में बातचीत की। मैं उसके निजी कमरे में चला गया और उससे मैंने कहा, "भाभी ! आज केशव से मेरी बातें हुई हैं। मैंने उसको कहा कि मुझको उसमें और तुममें बढ़ रहे वैमनस्य का भास हो रहा है और मैं नहीं चाहता कि आप दोनों छोटे-छोटे बच्चों की भाँति झगड़ा करें।"

रोमिली हँस पड़ी और कहने लगी, "तो बूढ़े लोग किस प्रकार झगड़ा करते हैं ?"

"बूढ़े लोग झगड़ा करते हैं तो एक-दूसरे को समझने के लिए और फिर कोई समझौता कर जीवन-निर्वाह करने के लिए। बच्चे झगड़ते हैं केवल अपनी बात मनाने के लिए।"

"तो आप हमको बच्चों की भाँति झगड़ा करते समझते हैं ?"

"यह मैंने समझा है। मेरी समझ गलत भी हो सकती है। अब तुम दोनों का

काम है कि मुझको गलत सिद्ध करो। क्या तुम झगड़ा कोई शान्तिपूर्वक रहने का मार्ग ढूँढने के लिए कर रहे हो ?"

"हम झगड़ रहे हैं सुख-साधना के लिए।"

"जहाँ दो अथवा अधिक प्राणी रहते हैं, वहाँ यह अत्यावश्यक है कि ऐसा मार्ग ढूँढा जाय, जिसमें दोनों को सुख मिले। ऐसा करने के लिए प्रायः समझौता ही करना पड़ता है। समझौते के समय सब इकट्ठा रहने वालों को कुछ-न-कुछ त्याग करना पड़ता है।"

"देखिए, विनोद जी !" रोमिली ने अकड़कर बैठते हुए कहा, "इस समय तक लगभग एक मिलियन डालर मैं खर्च कर चुकी हूँ और उसका फल भोगना चाहती हूँ।"

"जो कुछ तुमने खर्च किया है, वह स्वेच्छा से किया है अथवा केशव के तुम्हें विवश करने पर ? यदि तो स्वेच्छा से किया है, तो उसका इस झगड़े से कोई सम्बन्ध नहीं।

"झगड़ा रुपये के कारण नहीं हो रहा। झगड़ा हो रहा है आप दोनों के एक-दूसरे के व्यवहार को नापसन्द करने पर। केशव मीनार से विवाह करना चाहता है। तुम इसको पसन्द नहीं करतीं। क्यों ? यह पूछने की आवश्यकता नहीं। मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुम दोनों एक-दूसरे के विरुद्ध रहो, यह उचित नहीं। कोई मध्यम मार्ग ढूँढा जा सकता है।"

"अब यह असम्भव है।"

"क्यों ? क्या हो गया है अब ?"

"केशव ने बताया था कि वह लखपती है। परन्तु अभी तक एक पैसा उसके पिता का उसे नहीं मिला।"

"फिर वही पैसे की बात आ गई। तुमने कभी उसको कहा है कि वह अपने पास से अपना खर्च करे ?"

"अब कहती हूँ।"

"तो हो जाएगा। इसमें तुमको सन्देह क्यों हुआ कि वह व्यय नहीं कर सकता, अथवा नहीं करेगा ?"

रोमिली इस प्रश्न पर कुछ सोच में पड़ गई। शायद इसका उत्तर उसके पास नहीं था। एकाएक वह बोली, "मैं अब इस लम्पट के साथ नहीं रह सकती।"

"भाभी ! तुम हमारे एक मीमांसक के कथन को सत्य सिद्ध कर रही हो। उसने कहा है कि काम से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध से लोभ, लोभ से मोह और अन्त में अहंकार। इस सबका परिणाम होता है विनाश। तुम सब अवस्थाएँ पार कर अब विनाश की ओर बढ़ रही हो।"

"तुम्हारे मीमांसक क्या कहते हैं, मैं नहीं जानती। मैं एक बात जानती हूँ कि

केशव का विवाह मीनार से नहीं होगा। यह केवल तब ही हो सकता है अब आप मुझसे विवाह के लिए तैयार हो जावें।''

रोमिली के इस असंगत व्यवहार से मेरी हँसी निकल पड़ी। मैंने कहा, ''इन दोनों बातों में क्या संगति हो सकती है ? मैं तुमसे विवाह करना नहीं चाहता। मेरे लिए तुम केशव और मीनार को कुछ ऐसा करने के लिए विवश कर रही हो, जिसका मेरे साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं। यह कैसे हो सकता है ?''

''इस प्रकार होगा। आप मुझसे विवाह करना नहीं चाहते। केशव आपको मेरे लिए राजी कर सकता था। इसी प्रकार मैंने मीनार को मना लिया है कि केशव से विवाह न करे।''

''मीनार मान गई है क्या ?''

''उसको मानना ही होगा। नहीं तो मैं पूर्ण गाँव भर को यहाँ बैठी एक बटन दबाकर समाप्त कर दूँगी।''

मैं इस वासना से लिप्त स्त्री को इस अपार शक्ति की स्वामिनी देखकर काँप उठा। शक्ति के आने के साथ ज्ञान-वृद्धि भी आवश्यक है अथवा शक्ति एक भयंकर वस्तु बन जाती है। इस पर भी मैं अपने को शान्त रख कहने लगा, ''रोमिली ! तुम मीनार को मना लो। तब बात सहज में समाप्त हो जावेगी। जब वह केशव से सम्बन्ध रखना नहीं चाहेगी तो मैं केशव को मना लूँगा कि वह उससे विवाह न करे।''

''मैं आज गाँव गई थी और उससे मिली थी। उसने कहा है कि वह आपसे विवाह की इच्छा करती है और यदि आप नहीं मानेंगे तो केशव से विवाह में उसको आपत्ति नहीं होगी। मैंने उसको कहा है जहाँ तक आपका सम्बन्ध है, वह आपको मना ले। मुझको कुछ नहीं कहना; परन्तु केशव से विवाह की बात वह अपने मन से निकाल दे। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। इस पर भी वह समझ जावेगी। उसका पिचहत्तर वर्ष का अनुभव उसको मेरे मार्ग से हट जाने की राय देगा।''

''तब तो तुम्हारे और केशव में झगड़े की जड़ ही लोप हो जाएगी।''

''अभी तक तो केशव, जब कभी किसी स्त्री से सम्बन्ध बनाता है, तो यह जान कि मैं उससे अधिक सुन्दर हूँ, मेरे पास लौट आता है परन्तु इस स्त्री से सम्बन्ध हो जाने पर वह मुझको छोड़ देगा। वह अद्वितीय सुन्दरी है।''

''ठीक है। मैं समझ गया। इस सब विज्ञान में कौशल प्राप्त करके भी तुममें स्त्री-सुलभ ईर्ष्या कम नहीं हुई। रोमिली ! यह सांसारिक पदार्थ सुख के कारण नहीं हुए। क्या यह सत्य नहीं कि मन के विचार ही सुख-साधना में सहायक होते हैं ?''

अगले दिन मैंने केशव से रोमिली के साथ हुई सारी बात बताकर कहा,

"केशव ! यदि तुम शान्तिमय उपायों से मीनार को विवाह पर राजी नहीं कर सकते तो तुम उसके अधिकारी नहीं हो।"

"पर विनोद ! दूसरे पक्ष को भी शान्तिमय उपाय प्रयोग में लाने चाहिएँ।"

"वह उसको डरा-धमका रही प्रतीत होती है। तुम भी ऐसा कर सकते हो परन्तु एक बात स्मरण रखना कि तुम पुरुष हो। तुमको कोई ऐसी घटिया बात नहीं करनी चाहिए जो साधारण स्त्रियाँ करती हैं। गम्भीर उच्च विचार पुरुष को शोभा देते हैं।"

"मैं एक बात आज से ही करना चाहता हूँ कि अपना व्यय अपने धन से करूँ।"

"केवल यही नहीं, प्रत्युत रोमिली का व्यय तथा भवन को चलाने का व्यय भी तुम अपने पास से करो। आवश्यकता हो तो धन पैदा करने का यत्न करो।"

"वह अपने धन का क्या करेगी ?"

"यह जानना तुम्हारा काम नहीं। पुरुष होने के नाते तुमको अपना और अपने परिवार का व्यय स्वयं करना चाहिए।"

मैं समझता था कि यह झगड़ा ठण्डा पड़ गया है और धीरे-धीरे समाप्त हो जाएगा। परन्तु यह मेरी भूल थी। भद्रायण नब्बे-पिचानवे वर्ष का अनुभव रखता था और अब बीस वर्ष का युवक दिखाई देने लगा था। उसको देख कोई यह नहीं कह सकता था कि यह वही पहाड़ की कन्दरा में रहने वाला तापसी बाबा है। ऐसा प्रतीत होता था कि वह किसी पहाड़ी राजा-रईस का युवा लड़का है। वह स्वयं भी जब अपना मुख दर्पण में देखता था, तो अपने साधु होने पर सन्देह करने लगता था। उसको शक्ति-तरंगों में स्नान करते हुए पन्द्रह दिन से ऊपर हो चुके थे, एक दिन मैं उसको मिलने उससे कमरे में गया। रोमिली उसके पास बैठी उसे अंग्रेजी पढ़ा रही थी। मुझे आया देख रोमिली ने कहा, "विनोद जी ! देखिए, यह है आधुनिक विज्ञान का चमत्कार। क्या यह आश्चर्यकारक नहीं ?"

"निश्चय ही आश्चर्यजनक है। महाराज !" मैंने तापसी बाबा की ओर देखकर कहा, "अब तो आप शीघ्र ही यहाँ से जाने योग्य हो जाएँगे। क्या मैं जान सकता हूँ कि आपकी अब जीवन-चर्या क्या होने वाली है ?"

वह विस्मय में मेरा मुख देखने लगा। कदाचित् उसने इस विषय पर विचार ही नहीं किया था। कुछ समय तक विचार कर उसने कहा, "मैं एक बात विचार कर रहा हूँ। क्या मैंने अपना अस्सी वर्ष का जीवन व्यर्थ तो नहीं गँवाया। अभी किसी निर्णय पर नहीं पहुँचा। आशा है जाने से पूर्व अपने विचार आपको बताऊँगा। यदि तो यह नवीन जीवन जैसा कि समझता हूँ, एक अनमोल रत्न है तो मुझको इसके लिए आपका आभारी होना ही चाहिए। आपने ही इसका सुझाव दिया था

और इसका प्रबन्ध करवाया था। मैं इसका प्रतिकार आपको क्या दूँ यह सोच रहा हूँ।"

यह बात यहीं समाप्त हो गई। इस पर भी मैं भद्रायण के विचारों में परिवर्तन होता देख चकित रह गया। पश्चात् इधर-उधर की बातें होती रहीं।

एक दिन राधा ने मुझे बताया कि केशव का भवन एक तहखाने के ऊपर बना है, जिसमें अनेकानेक यंत्र लगे हैं। पावर स्टेशन से विद्युत् इस भवन के नीचे तहखाने तक आती है और फिर यहाँ से इस भवन के भिन्न-भिन्न स्थानों को जाती है। यह चन्द्रभागा के किनारे पर लकड़ी काटने के लिए, गाँव में आटा पीसने के लिए, गाँव तथा घरों में प्रकाश के लिए दी जाती है। इसके साथ ही तहखाने में एक ग्रैफाईट के सन्दूक में पारे और कोबाल्ट के आईसोटोप्स जमाकर रखे हैं। यहाँ से एक मार्ग भूमि के नीचे-नीचे गाँव तक जाने को भी बना है। सर्दी की ऋतु में जब चारों ओर बर्फ पड़ी रहती है, वह मार्ग गाँव से सम्पर्क के लिए बनाया हुआ है। राधा ने एक बात और बताई कि गाँव के नीचे भी एक तहखाना है। उसमें कई आईसोटोप्स ऐसे रखे हैं, जिनके फट जाने की सम्भावना है। इस कारण उनको यहाँ न रख वहाँ रखा है।

मैंने राधा से पूछा, "तुम्हें यह कैसे पता चला है?"

"टूनी ने बताया है। वह कहती थी कि रोमिली केशव से रुष्ट है। वे दोनों इन आईसोटोप्स को अपने अधिकार में रखे हुए हैं। अब यदि वे चाहें तो इस भवन को तथा गाँव को एक क्षण में स्वाहा कर सकते हैं।"

"रोमिली और केशव एक-दूसरे की शक्ति को भली-भाँति जानते हैं और वे यह जानते हुए कि दूसरे को नष्ट करने का अभिप्राय स्वयं को नष्ट करना है, इसका प्रयोग नहीं करेंगे।"

"क्रोध में मनुष्य सब-कुछ कर सकता है। कुछ कहा नहीं जा सकता।"

मैं अब वहाँ से लाहौर जाने के विषय में विचार करने लगा। इस कारण मैंने राधा से पूछा, "यहाँ से कब विदा होना चाहिए?"

"आपको कब कॉलेज में उपस्थित होना है?"

"उसमें तो अभी एक मास है।"

"यह स्थान बहुत सुन्दर है और यहाँ का जलवायु अति स्वास्थ्यकर है। देखो न, मैं लाहौर में कभी पैदल चलती थी तो कोठी से लॉरेंस गार्डन तक जाने पर थक जाया करती थी। अब तो मैं दिन भर यहाँ घूमती हूँ और थकावट नहीं होती।"

"तुम्हारा विचार है कि अभी एक मास और यहाँ रहें?"

"यदि कोई विशेष कार्य हो तो चल भी सकते हैं।"

"कुछ विशेष कार्य तो नहीं है।"

टूनी के गर्भ का निश्चय हो गया था। उसके दोनों पहले बच्चे स्विट्जरलैण्ड

में पढ़ रहे थे। तीसरे के विषय में भी वह यही विचार कर रही थी। राबर्ट से उसका लड़का सर्वथा काला और चपटी नाक का था। यह गर्भ भी राबर्ट से ही था और वह वैसे ही किसी बच्चे के पैदा होने की आशा कर रही थी। उसने राधा से कहा भी था कि इस बार वह बच्चा पैदा होने के समय लाहौर के किसी अस्पताल में प्रवेश कर लेगी। इस कारण उसने भी हमारे साथ ही लाहौर जाना था।

एक दिन मीनार तापसी बाबा के कमरे में से घबराई हुई निकली। उसको भयभीत देखकर मैं उसके पास पहुँच, उससे पूछने लगा, "क्या बात है मीनार?"

"आपका कमरा किधर है?"

"क्यों?"

"मैं आपसे मिलने आई थी। ड्योढ़ी में बाबा मिल गए और अपने कमरे में ले गए। कहते थे आप भी वहीं हैं।"

"मैं उस कमरे में ठहरा हुआ हूँ।"

"चलिए। वहाँ चलकर बात कहूँगी।"

"राधा तो टूनी के साथ किश्तवार तक गई है।"

"तब तो ठीक है, चलिए।"

"बात क्या है?"

इतने में रोमिली तापसी बाबा के कमरे से निकल आई और हम दोनों को बातें करते देख खिलखिलाकर हँस पड़ी। मैंने उसकी ओर देख पूछा, "भाभी! क्या बात है? यह बहुत डरी हुई है?"

"इसको कमरे में ले जाओ। आपको बता देगी। जाओ मीनार।"

वह रोमिली के इस कथन से काँपने लगी। मैं विस्मय में दोनों का मुख देखने लगा। जब दोनों कुछ नहीं बोले तो मैंने मीनार से कहा, "अब तुम जाओ, फिर किसी दिन आना।"

मीनार भयभीत वहाँ से चली गई। मैंने रोमिली से कहा, "अब बताओ, क्या बात है? यह किस काम से आई थी?"

रोमिली मुझको अपने कमरे में ले गई। वहाँ बैठ उसने एक प्याला कॉफी मँगवाई। मैं कॉफी नहीं पीता था।

कॉफी पीते हुए रोमिली ने कहा, "मीनार आपसे मिलने आई थी। क्यों? मैं नहीं जानती। उसने बताया नहीं। जब वह ड्योढ़ी पर पहुँची तो भद्रायण, जो बाहर लॉन में धूप सेक रहा था, वहाँ चला आया। मीनार वहाँ खड़ी थी कि कोई उसको मिले तो वह पूछे कि आपका कमरा किधर है। भद्रायण उसे देख वहाँ आया था या ऐसे ही, कह नहीं सकती। जब वह ड्योढ़ी में पहुँचा तो मीनार ने आपके विषय में पूछा। उसने कहा कि आप उसके कमरे में हैं और उसको वहाँ ले गया। वहाँ जाकर उसने मीनार से प्यार करना शुरू कर दिया। मैं लाइब्रेरी में बैठी थी

कि मुझको मीनार भद्रायण के कमरे में जाती दिखाई दी । मैंने उस ओर ध्यान नहीं दिया; परन्तु जब उसको गए आधा घण्टा से ऊपर हो गया तो मैं देखने के लिए कि भीतर क्या हो रहा है, भद्रायण के कमरे में चली गई । भीतर जाकर मैंने देखा कि वह और केशव मल्लयुद्ध कर रहे हैं । मीनार भयभीत एक दीवार के साथ खड़ी थी ।

"मेरे वहाँ पहुँचने पर उनका युद्ध रुक गया । वे मेरी ओर देखने लगे । मेरे पूछने पर केशव ने कहा, 'मीनार स्वयंवर कर रही है । उसने कहा है कि जो दूसरे की पीठ लगा देगा, वह उससे विवाह कर लेगी । इस कारण हम इस पुरस्कार को पाने के लिए कुश्ती कर रहे थे ।'

"मैंने देखा कि केशव हाँफ रहे थे और भद्रायण अभी भी उसी प्रकार तरोताजा दिखाई दे रहा था । यदि मैं उस मल्ल-युद्ध को जारी रहने देती तो निस्सन्देह केशव हार जाते और भद्रायण मीनार को पा जाता । मैंने भद्रायण से पूछा, 'तो आप भी इससे विवाह करेंगे ?'

" 'क्या हानि है ?'

"मैंने मीनार से पूछा, 'तुम जीतने वाले से विवाह करोगी ?'

"उसने यह बात बताई जो मैंने उसके आने के विषय में कही है । पश्चात् उससे कहा, 'तापसी बाबा मुझे प्यार करने लगे और मुझको भी प्यार करने के लिए कहने लगे । मैं अभी इन्कार कर ही रही थी कि केशव बाबू उस दरवाजे से आए । उन्होंने बाबाजी को मना किया । पर बाबाजी ने कहा, 'मीनार मेरी बीवी बनेगी ।' केशव ने मुझसे पूछा तो मैंने मना कर दिया । इस पर बाबाजी ने पूछा कि क्या मैं केशव की बीवी बनूँगी । मैंने इससे भी इन्कार कर दिया । इस पर दोनों कहने लगे कि दोनों मुझसे बलपूर्वक व्यभिचार करेंगे । मैंने छुट्टी पाने के लिए कह दिया कि मैं केवल एक को प्रसन्न कर सकती हूँ । दोनों कुश्ती कर लें । जो जीतेगा उसको मैं प्रसन्न कर दूँगी । इस पर दोनों कुश्ती करने लगे । मैं यहाँ से भागने का उपाय सोच रही थी ।'

"मुझको मीनार की चतुराई पर क्रोध चढ़ आया । मैंने उसके मुख पर जोर से चपत लगाई और कहा, 'भाग जाओ । शर्म नहीं आती अपने से बड़ों की हँसी उड़ाते हुए ।'

"वह तो यही चाहती थी । इस कारण यहाँ से भागने लगी ।"

मैं भी वृत्तान्त सुन हँसने लगा । रोमिली भी हँस रही थी । मैंने पूछा, "भाभी ! यदि तुम केशव को हार जाने देतीं तो मीनार पर भद्रायण का दावा होता । तुम छुट्टी पा जातीं और मीनार भी शायद प्रसन्न हो जाती । केशव भी हारकर मीनार का नाम न लेता । एक पत्थर से दो पक्षी मारने की बात सिद्ध हो जाती ।"

"विनोद जी ! आप भूतकाल की बातें कर रहे हैं । तब से करोड़ों टन जल चन्द्रभागा में बहकर निकल चुका है ।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब यह कि भद्रायण केशव से अधिक सुन्दर और योग्य व्यक्ति है । मैं यहाँ भद्रायण के साथ रहकर विहार करूँगी । भद्रायण मान गया था । आज अकस्मात् मीनार को देख उसका चित्त विचलित हो गया था ।"

यह सुन तो मेरी और भी हँसी निकल आई । रोमिली भी हँस रही थी । मैंने उससे पूछा, "तो भाभी ! अब क्या करोगी ?"

"भद्रायण मान जाएगा । मैं मीनार को केशव से विवाह करने के लिए तैयार कर लूँगी । इस प्रकार जीवन शान्ति से चल पड़ेगा ।"

मैं इस स्त्री को अपने सुख और आराम के लिए इस प्रकार योजना बनाते देख मन-ही-मन दुःख अनुभव करता था । मैंने एक लम्बी साँस ली और कहा, "अब तो तुम्हें मेरे इन्कार करने का दुःख नहीं रहा न ?"

"आप ? यह बात नहीं । आप आज भी मेरे साथ सम्बन्ध बनाना स्वीकार कर लें तो मैं यह सब कुछ छोड़ आपके साथ चलने के लिए तैयार हूँ ।"

"पर भद्रायण तो सुन्दर है ।"

"वह गंवार है ।"

"वह मुझसे अधिक युवा और शक्तिशाली है ।"

"एक बैल की भाँति ।"

"मुझको समझ नहीं आता कि मुझमें तुम क्या देख रही हो ?"

"यदि मेरी आँखों से देखते तो समझ जाते ।"

"मैंने अपने को दर्पण मैं देखा है ।"

"अपनी आँखों से न ? एक बात मैं आपको बता देना चाहती हूँ कि जो कुछ आपके मुख पर दिखाई देता है और जिसका मैं वर्णन नहीं कर सकती, एक चमकते हाँडे के अन्दर जैसे लैम्प की सम्भावना रहती है, वैसे ही कुछ है ।"

मैं मुस्कराकर उसके कमरे से बाहर निकल गया ।

वहाँ से मैं केशव के कमरे में गया । वह अपने पलंग पर लेटा गरम 'इलैक्ट्रिक पैडों' से सेक कर रहा था । प्लास्टिक की एक पुतली इसमें उसकी सहायता कर रही थी । दरवाजे पर खड़े हो मैंने पूछा, "मैं अन्दर आ सकता हूँ केशव ?"

"हाँ-हाँ आओ ।"

मैं उसके समीप पलंग पर बैठ गया और पूछने लगा, "क्या हुआ है ?"

"जवानी जोश मार उठी थी । भद्रायण से हाथा-पाई हुई । मेरे मन में विचार था कि कुछ भी हो, है तो वह पिच्यानवें वर्ष का बूढ़ा । परन्तु मेरा विचार गलत

निकला । उसने हाथा-पाई में मेरी वह गत बनाई कि जीवन-भर याद रखूँगा ।''

''पर यह सब हुआ क्यों ?''

''मैं उद्यान में लगे उस पम्प को देख रहा था । उसमें कुछ दोष आ गया है । वहाँ से मैंने देखा कि मीनार ड्यौढ़ी में खड़ी किसी की प्रतीक्षा कर रही है । मैं उससे जाकर पूछना चाहता था कि वह किसको ढूँढ रही है कि इतने में वह शैतान का बच्चा भद्रायण आया और उसको अपने कमरे में ले गया । मैं पिछले दरवाजे से उसके कमरे में गया तो देखा कि वह मीनार को अपनी भुजाओं में जकड़ उसका मुख चूमने का यत्न कर रहा है । मीनार छटपटा रही थी । मैंने उसको छुड़ाया । मीनार ने कह दिया कि दोनों में से जो कुश्ती में दूसरे को पछाड़ेगा, वह उसको प्रसन्न कर देगी । बस फिर क्या था । हम दोनों कुश्ती करने लगे । भद्रायण तो साँड़ की भाँति मजबूत निकला और मैं चक्कर खाकर गिरने ही वाला था कि रोमिली आ गई । उसने मीनार के मुख पर एक चाँटा लगाया और भगा दिया ।''

''पर केशव !'' मैंने गम्भीर होकर कहा, ''तुमने तो मीनार का विचार छोड़ दिया था । । फिर यह सब कैसे हुआ ?''

''मैं तो केवल यह देखने गया था कि मीनार वहाँ क्या कर रही है । वहाँ जब उसने कहा कि जो भी कुश्ती में जीतेगा, वह उसे प्रसन्न कर देगी तो मैं लालच में आ गया । साथ ही भद्रायण की ललकार को सहन नहीं कर सका ।''

''परिणाम यह हुआ कि मीनार तुम दोनों को मूर्ख बनाकर चली गई ।''

''हमें मूर्ख बनाने का परिणाम तो उसे मिल ही गया है । मैं समझता हूँ कि घर जाकर गाल पर सेंक कर रही होगी ।''

मेरी हँसी निकल गई । केशव मेरी ओर देखने लगा तो मैंने कहा, ''उसके मुख पर चाँटा लगाने से तुम्हारी पीड़ा कम हो गई है क्या ?''

''मन को सन्तोष हुआ है ।''

''दूसरे के दुःख से सन्तोष करना अच्छी बात नहीं है ।''

''कुछ भी हो, मजा आ गया है । पर मैं तो भद्रायण के व्यवहार पर विस्मय कर रहा हूँ । वह साधु जो अस्सी वर्ष तक ब्रह्मचर्य पालन कर चुका है; अब किस प्रकार व्याकुल हो रहा था ।''

''इसका अचम्भा मुझको भी है । मेरा विचार था कि वह स्वस्थ शरीर पाकर लोक-कल्याण कार्य में लग जाएगा । परन्तु वह तो सर्वथा पशु निकला ।''

''मैं देख रहा हूँ कि इस कायाकल्प की चिकित्सा के उपरान्त भिन्न-भिन्न व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकृति के बन रहे हैं । एक सरस्वती थी । उसने अप्सरा बनना स्वीकार किया । इस समय वह वहाँ की सब स्त्रियों से श्रेष्ठ नाचने वाली बन गई है । रामी तो युवा बन अपने पुत्र-पौत्रों में लीन हो गई है । मीनार का व्यवहार तो तुम देख ही रहे हो । यह भद्रायण तो सबसे विलक्षण निकला ।''

"इसका कारण जानने का यत्न करो केशव ! यह भी जानकारी का विषय है।"

"यदि रोमिली यहाँ न आती तो वह मुझको मार ही डालने वाला था। मैं उसको कल छुट्टी दे देना चाहता हूँ। जहाँ उसकी इच्छा हो चला जाए।"

मैं मन में विचार कर रहा था कि भद्रायण भी इस भवन की एक समस्या बनने जा रहा है। मैंने केशव को सचेत कर दिया, "केशव ! मान लो कि वह यहाँ से न जाए और एक अन्य स्त्री वही समस्या तुम्हारे सामने रख दे, जो मीनार ने रख दी है कि तुम दोनों में द्वन्द्वयुद्ध हो जाए और जो जीते वही यहाँ रहे तो क्या करोगे ?"

केशव को मेरे इस कथन का अर्थ समझने में कुछ समय लगा। जब वह ठीक अर्थ समझ गया तो कहने लगा, "तुम्हारा मतलब रोमिली से है न ?"

"मेरे कहने का मतलब है कि वह ऐसा कह सकती है।"

"कुछ बात हुई है उसकी तुमसे ?"

"मेरा यह अनुमान है।"

यह सुन केशव, गम्भीर विचार में पड़ गया। फिर कुछ विचारकर कहने लगा, "कल इसका निर्णय करूँगा।"

"देखो केशव ! किसी अन्तिम निर्णय करने से पूर्व मुझसे राय कर लेना। कदाचित् मैं तुम्हें कोई सुझाव दे सकूँ।"

रात के भोजन पर केशव उपस्थित न हो सका। रोमिली इधर-उधर की बातें करती रही। राधा और टूनी को भी इन घटनाओं का पता चल रहा था। इस समय केशव के विषय में किसी ने कुछ नहीं पूछा और न ही किसी ने कुछ कहा।

भोजनोपरान्त हम केशव के कमरे में पहुँचे। वह गहरी नींद सो रहा था। रोमिली ने कहा, "आज की मेहनत से थककर सो रहे हैं।"

हम दबे पाँव वहाँ गए थे और वैसे ही वापस लौट आए। राधा और टूनी तो ड्राइंगरूम में रेडियो सुनने चली गईं। मैं और रोमिली भद्रायण के कमरे में चले गए। वह बिल्कुल ठीक था। भोजन कर कमरे में टहल रहा था। हमें देख वह खड़ा हो गया और प्रश्न-भरी दृष्टि से देखने लगा। बात मैंने आरम्भ की, "महाराज ! सुना है कि आपकी केशव से कुश्ती हो गई थी ?"

"हाँ। मैं उसको पछाड़ने ही वाला था कि देवी जी वहाँ आ पहुँचीं और बीच-बचाव करने लगीं। वह बच गया।"

"केशव कह रहा था कि आप अब सब प्रकार से ठीक हैं। अब आपको जाने का प्रबन्ध करना चाहिए। कब जा रहे हैं आप ?"

"यह भवन इन देवी जी का है। जब ये कहेंगी तब ही चला जाऊँगा। अब मैं

कन्दरा में वापस नहीं जा रहा। इस भवन का-सा सुख और आराम वहाँ नहीं है।"

"यह ठीक है। परन्तु यह तो दूसरे का मकान है न? अभी तो आप गाँव में किसी गृहस्थ के घर चले जाइये। पश्चात् अपना एक मकान बनवा लीजिएगा।"

"इतना अच्छा मकान बनाना मेरी सामर्थ्य के बाहर है और यदि सम्भव हुआ तो मैं इस मकान में ही रह जाऊँगा। यह बहुत बड़ा है। इनमें दो से कहीं अधिक प्राणी रह सकते हैं।"

"इस मकान के मालिक तो चाहते हैं कि आप चले जाएँ।"

"मालकिन यह हैं। क्यों रोमिली देवी! आप चाहती हैं कि मैं चला जाऊँ?"

रोमिली ने उत्तर देने के स्थान मुझसे पूछ लिया, "क्या केशव ने आपसे यह कहा है?"

"नहीं, यह मैं अपने मन से कह रहा हूँ। मेरा अनुमान है कि इन महाराज के चले जाने से ही अब तुम्हारा कल्याण होगा।"

"इसके लिए मैं स्वयं केशव से बात कर लूँगी।"

भद्रायण मेरी ओर देख मुस्कराया और बोला, "विनोद बाबू! आप मित्र के अधिकारों को पार कर गए हैं। देवीजी ने आपको आपका स्थान बता दिया है। मैं समझता हूँ कि आप पुनः ऐसी धृष्टता नहीं करेंगे।"

"मैंने आपको आदेश नहीं दिया था। यह तो सुझाव था। आपने नहीं माना। इसके जो भी भयंकर परिणाम हो सकते हैं, वे आप सहन करिए। मैंने अपना कर्तव्य-पालन कर दिया है।"

इतना कह मैं कमरे से निकलने के लिए घूम गया। रोमिली वहीं रह गई। मैं अपने कमरे में चला आया। राधा और टूनी ताश खेल रही थीं। मुझको अपने कमरे में जाते देख दोनों मेरे कमरे में आ गई। मैंने बात टालने के लिए कह दिया, "ताश के लिए मुझे भी निमंत्रण देने आई हो?"

उत्तर टूनी ने दिया, "नहीं, मैं तो आपसे एक बात कहने आई हूँ।"

"क्या?"

"मैं और राधा भाभी कई दिनों से गाँव में जाकर वहाँ के रहने वालों से मिल रही हैं। इससे हमें कई बातों का रहस्य पता चल गया है। एक तो यह कि रोमिली ने गाँव-भर में यह विख्यात कर रखा है कि वह मालकिन है। केशव तो एक भूखा-नंगा युवक था, जिसके प्रेम में फँसकर उसने विवाह कर लिया था। परन्तु वह महा-पतित निकला है। अब उससे उसका सम्बन्ध नहीं रहा।

"दूसरी बात यह विख्यात की गई है कि केशव एक दिन पूर्ण गाँव को ध्वंस कर देना चाहता है। अभी तक वह ऐसा नहीं कर सका इसका कारण रोमिली है। अपने को वह दया की मूर्ति बता रही है।

"तीसरे यह कहा जा रहा है कि केशव राबर्ट को वापस बुला रहा है। राबर्ट

केशव का बहनोई है और वह उस दुष्ट को बुलाना चाहता है।

"इन बातों का परिणाम यह हो रहा है कि गाँव में केशव के विरुद्ध षड्यन्त्र किया जा रहा है।"

"वह ऐसा क्यों कर रही है?"

"कारण हम नहीं जानते। परन्तु यह सत्य है कि वह केशव से घृणा करने लगी है।"

"यह तो अति भयंकर परिस्थिति है।"

"हाँ, और अब हम लोगों को यहाँ से चला जाना चाहिए। आपके यहाँ रहने से रोमिली का मन अशान्त रहता है और वह अपना क्रोध दूसरों पर निकाल रही है।"

"मैं केशव को भी साथ ले जाना चाहता हूँ।"

"पर वह चलेगा क्या?"

"उसको समझाने का यत्न करूँगा।"

"यह तुरन्त करना चाहिए। यह भद्रायण बाबा महादुष्ट है। यह भी एक कारण है इस झगड़े का।"

"सो मैं जानता हूँ।"

अगले दिन समाचार मिला कि मीनार गाँव छोड़कर चली गई है। समाचार लाने वाले से मैंने पूछा कि किधर गई है? उसने कहा, "कह नहीं सकते। उसने पीरू की बीवी से रामवन के लिए टट्टू भाड़े पर लिया था। करामत का छोटा भाई टट्टू साथ लेकर गया था।"

रोमिली ने यह समाचार सुना तो हँसते हुए कहा, "एक ही चपत से चन्द्रभागा के पार जा गिरी है।"

मुझको भी यह समझ आया कि वह मालकिन से झगड़ा कर यहाँ रहना असंभव समझ, चली गई है।

केशव अब ठीक हो गया था। रात-भर की नींद के पश्चात् वह तरोताजा अनुभव करने लगा था। उसमें और रोमिली में उस दिन एक घण्टा-भर वार्तालाप हो चुका था। ऐसा प्रतीत होता था कि वे किसी समझौते पर पहुँच चुके हैं। केशव को जब मीनार के चले जाने का पता चला तो वह आश्चर्य में खड़ा रह गया। पश्चात् उसे सन्तोष ही हुआ।

प्रातः के अल्पाहार के पश्चात् मैं पुस्तकालय में अध्ययन कर रहा था। रोमिली वहाँ आ गई। मैंने उसको आते देखा तो कहा, "भाभी! ऐसा प्रतीत होता है कि केशव भैया से बातचीत हो गई है।"

"हाँ, उसी विषय में आपसे कुछ कहने आई थी।"

"मुझसे?"

"हाँ। मैं बहुत ही धनवान हूँ। यह तो आप जानते ही हैं। इस गाँव पर और इस भवन पर सब धन मेरा ही लगा हुआ है। सब लगभग एक मिलियन डालर व्यय हो चुका है। मैं इतना कुछ करने के पश्चात् अब यहाँ की मालकिन बनकर रहना चाहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि कोई भी व्यक्ति मुझको आदेश देने वाला रहे।

"मैंने यह सबकुछ केशव को भी बता दिया है और वे मान गए हैं।"

"तो अब मुझको यह कहना चाहती हो कि हम केशव के मेहमान हैं और इस कारण यहाँ नहीं रह सकते ?"

"आप तो मेरे मेहमान हैं।"

"नहीं। मुझको केशव ने आमन्त्रित किया था। उसने यह समझ निमन्त्रण दिया था कि वह यहाँ का मालिक है। मैं भी कुछ ऐसा ही समझता था। अब मेरा और केशव का भ्रम दूर हो गया है। इस कारण मैं आज ही जाने का प्रबन्ध कर देता हूँ।"

"विनोद बाबू ! मैं आज से आपको आमन्त्रित करती हूँ। आप देखेंगे कि केशव से मैं कम खातिर करने वाली नहीं हूँ।"

"आपका बहुत धन्यवाद है।आपका निमन्त्रण मिल गया है। परन्तु मैं विचार कर ही इसको स्वीकार कर सकता हूँ। मेरे साथ राधा भी है। उससे भी राय करनी होगी।"

"उसको मैं निमन्त्रण दे आई हूँ। उसने कुछ उत्तर नहीं दिया। कहती थी कि एक हिन्दू पत्नी के नाते वह बिना आपकी राय के यहाँ रहना नहीं मान सकती, अन्यथा वह मेरे निमन्त्रण से प्रसन्न थी। अभी आपकी छुट्टियाँ भी बाकी हैं। राधा का स्वास्थ्य सुधर रहा है। इस कारण आपको यहाँ रहने में संकोच नहीं करना चाहिए।"

"अच्छी बात है। राधा से बात कर आपकी सेवा में निवेदन करूँगा।"

मैं पुस्तकालय से निकल राधा को ढूँढता हुआ टूनी के कमरे में जा पहुँचा। टूनी अपना बिस्तर बाँध रही थी। मुझको देख वह राधा से बोली, "विनोद जी आ गए हैं।"

"हाँ, क्या हो रहा है ?" मैंने पूछा।

"आपसे रोमिली भाभी की बातचीत हुई है क्या ?"

"हुई है। यहाँ राज्य-परिवर्तन हो गया है। नवीन राजा की ओर से मुझको यहाँ रहने का निमन्त्रण मिल गया है।"

"वह तो महारानी जी मुझको भी दे गई हैं। टूनी को निमन्त्रण नहीं मिला। इस कारण यह जाने की तैयारी कर रही है। मैं आपसे राय की प्रतीक्षा में हूँ।"

"मैं अन्तिम निर्णय से पूर्व केशव से मिलना चाहता हूँ।"

"वह बाहर लॉन में टहल रहे हैं। उनको साथ से चलना चाहिए। वे तो नवीन राज्य में बन्दी बनकर ही रह सकेंगे।"

"रोमिली ने इस विषय में कुछ कहा है?"

"नहीं। परन्तु इतिहास के अध्ययन से मैं इसको ऐसा ही समझी हूं। राज्य-परिवर्तन पर पुराने राजा का स्थान जेलखाना ही होता है। भले ही वह जेलखाना सोने का बना हो।"

मैं बाहर लॉन में जा पहुँचा। केशव ने मुझे देख सीधा पूछा, "तुम जा रहे हो विनोद?"

"तुमको साथ ले चलने के लिए ठहरा हूँ।"

"मुझको साथ ले चलकर क्या करोगे? मेरा स्थान अपनी बीवी के पास है। वह इस समय काम-वासना से पागल हो रही है। इस पागलपन में उसको छोड़कर जाना उचित नहीं समझता।"

"पर क्या वह तुम्हारी पत्नी है?"

"तो क्या है?"

"मुझको तो यह प्रतीत हुआ है कि अमेरिकन धनी औरतों की भाँति उसने अपने लिए एक अस्थाई पति भाड़े पर रखा हुआ था। अब उस पति-नौकर की सेवाएँ समाप्त हो गई हैं। उसके स्थान पर कोई अन्य रखा जा रहा है।"

"ऐसा भी मान लूँ तब भी तो मुझको अभी डिसमिस नहीं किया गया।"

"तुमको एक पदच्युत-राज्याधिकारी की भाँति कैदी बना लिया गया है।"

केशव हँस पड़ा और बोला, "कैदी? विनोद! तुम मुझको अभी नहीं जानते। मेरा चरित्र अमेरिका और किश्तवार में निर्माण हुआ है। यह कैदी होकर चुप रहने वाला नहीं है।"

"केशव! संसार इस गाँव और भवन से बहुत बड़ा है। इससे भी अधिक अद्‌भुत बातों से भरा पड़ा है। मत लोभ में फँसो। आओ, मेरे साथ। तुम अपनी योग्यता से संसार में सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक की पदवी पा जाओगे। मैं तुमको इस संसार में उस स्थान पर ले जाकर बैठा दूँगा, जहाँ पर रोमिली इत्यादि विषय-लोलुप स्त्रियाँ दृष्टि भी नहीं डाल सकतीं।"

"बस! बस! विनोद! मैं अभी नहीं चल रहा। तुम जाओ। पर वह तो मुझको कहती थी कि आपको यहाँ ठहरने का निमन्त्रण देगी।"

"वह मिल गया है और मैंने उस निमन्त्रण को अस्वीकार करने का निश्चय कर लिया है।"

केशव मेरे मुख पर देखता रहा। वह मन-ही-मन कुछ विचार कर रहा था। अन्त में उसने भूमि की ओर देखते हुए कहा, "जाओ विनोद। तुम लोग जाओ। मैं तुम्हारे पीछे-पीछे ही आऊँगा।"

"तो हमारे साथ नहीं चलोगे ?"

"नहीं। मेरा काम अभी समाप्त नहीं हुआ। मैं उसको पूरा करके ही यहाँ से जाऊँगा।"

"क्या काम है तुम्हारा? यदि तो उसका परीक्षणों से सम्बन्ध है, तो तुम्हारे पास साधन है और तुम लाहौर में ही ऐसी लैबोरेटरी स्थापित कर सकते हो।"

"नहीं, इसके अतिरिक्त भी कुछ काम है।"

मैंने केशव को प्रलोभन देने के लिए कहा, "मीनार लाहौर चली गई है।"

"मीनार मुझको बहुत पसन्द है। परन्तु उससे भी अधिक मुझे कोई और पसन्द है और वह यहाँ है।"

"तुम्हारा मतलब है रोमिली ?"

"हाँ और नहीं भी। विनोद ! तुम जाओ। मैं तुम्हारे साथ नहीं चल सकता। रोमिली तुमसे भी घृणा करने लगेगी। मैं यह नहीं चाहता। मैं इन सर्दियों में ही लाहौर पहुँच जाऊँगा और फिर वहाँ लैबोरेटरी खड़ी करने का विचार कर लेंगे।"

मेरा मन किसी अज्ञात भय की आशंका से काँप रहा था। एक बात मैं जानता था कि अणु अन्तर्गत शक्ति के विनाशकारी प्रभाव से तो कोई बच नहीं सकता। इस कारण दोनों में से कोई भी इसका प्रयोग नहीं कर सकेगा। मैंने एक बार फिर प्रयत्न करते हुए कहा, "रोमिली से मुझको भय नहीं। मैं तो भद्रायण से डरता हूँ। वह तुमसे अधिक शक्ति रखता है। साथ ही वह गँवार बैल बुद्धि वाला है।"

"तुम मेरी चिन्ता मत करो। विश्वास रखो मैं तुम्हारे पास आठ दिसम्बर तक पहुँच जाऊँगा। तब तक मेरा यहाँ का कार्य समाप्त हो जाएगा।"

इस समाप्ति की बात सुन मेरा हृदय काँपने लगा। मैं बहुत ही अर्थपूर्ण भाव से केशव की ओर देखने लगा। वह मुझे अकेला छोड़ अन्दर चला गया। मुझे विश्वास था कि वह अपने आँसू छिपाने के लिए कहीं खिसक गया है।

मैं सीधा अपने कमरे में पहुँचा और राधा को, जो अपना सामान बाँध रही थी, बोला, "केशव हमारे साथ नहीं जा रहा और हम लोग आज मध्याह्न के भोजन के पश्चात् यहाँ से रवाना हो जाएँगे। पीरू को यह कहने जा रहा हूँ कि वह किश्त-वार से पाँच टट्टू, दो सामान लादने के लिए और तीन सवारी के लिए लेकर हमारी चन्द्रभागा के पुल के उस ओर प्रतीक्षा करे। यहाँ से हम विमान से चलेंगे।"

"यहीं से घोड़ों पर क्यों नहीं ?"

"बिना रोमिली की स्वीकृति के जाना असम्भव है। सीमा पर बाधा जो है। इस कारण रोमिली से विमान माँगने में भी कोई हानि नहीं।"

"ठीक है।"

मैं घुड़सवार की पोशाक पहन गाँव को चला गया। मध्याह्न के भोजन के समय प्रबन्ध कर लौट आया। भोजन में केशव भी मेज पर साथ बैठा था। आज

एक विशेष बात थी। भद्रायण के लिए भी मेज पर प्रबन्ध किया हुआ था। रोमिली केशव और भद्रायण के बीच में थी। भोजन करते हुए मैंने रोमिली से कहा, "भाभी ! हम आज यहाँ से जा रहे हैं। आप लोगों के हम बहुत कृतज्ञ हैं, जो हमारी सेवा आप लोगों ने की है। वास्तव में यहाँ डेढ़ मास का निवास जीवन-भर स्मरण रहेगा।"

"तो आप मेरा निमन्त्रण अस्वीकार कर रहे हैं ?"

"क्या यह निमन्त्रण अगले वर्ष के लिए स्थगित नहीं किया जा सकता ?"

"वह बहुत दूर है। इस पर भी आप जब चाहें आ सकते हैं। यदि आने से पूर्व एक पत्र डाल देंगे तो रामवन में आपके लिए घोड़े तैयार मिलेंगे।"

"धन्यवाद। आशा करता हूँ कि अगले वर्ष फिर इस स्थान का अभ्यागत बनूँगा।"

"अच्छी बात है। इस वर्ष तो आप केशव से मिलने आए थे। देखें, आपमें मुझसे मिलने की इच्छा होती है अथवा नहीं। आपके लिए घोड़ों का प्रबन्ध कर देती हूँ।"

"मैंने पीरू को भेज नदी पार घोड़ों का प्रबन्ध कर लिया है। आप हमको नदी तक भेजने का प्रबन्ध कर दीजिए।"

"आपका सामान टट्टुओं पर चला जाएगा। आपको मैं विमान पर छोड़ आऊँगी। यह विमान हम अपने इलाके से बाहर नहीं ले जा सकते। इसके उड़ाने की स्वीकृति का प्रश्न है। वह हमने नहीं ली।"

"मैं यही कहने वाला था कि विमान पर हमको नदी तट तक भेज दीजिए। आगे हम स्वयं चले जाएँगे।"

रोमिली ने टूनी की ओर देखकर अधिकार-युक्त भाषा में कहा, "टूनी ! तुम बताओ, जा रही हो या यहाँ रहने का विचार है ?"

"मैंने विनोद जी के साथ जाने का निश्चय कर लिया है।"

"प्रसव के लिए यहाँ आओगी ?"

"नहीं, लाहौर अस्पताल में प्रबन्ध हो जाएगा।"

इस प्रकार बात सुगमता से निपट गई। हम भोजन के पश्चात् अभी विश्राम कर ही रहे थे कि हमारा सामान टट्टुओं पर लाद दिया गया और नदी की ओर भेज दिया गया।

विदा होने से पूर्व मैंने केशव से मिलने का यत्न किया परन्तु वह अपने कमरे में भीतर से द्वार बन्द किए हुए था। मैंने धीरे-धीरे खटखटाया परन्तु उसने खोला नहीं। विवश हम भवन की छत पर जा पहुँचे। रोमिली ने हमको विमान पर चढ़ाया और स्वयं भी उसमें सवार हो गई। पाँच मिनट में हम नदी के किनारे पर जा पहुँचे। इस बार विमान नदी पार जाकर उतरा। पीरू हमारे लिए घोड़े लिये तैयार

खड़ा था। हमारा सामान किश्तवार से आए टट्टुओं पर लाद दिया गया था। हमने रोमिली से हाथ मिलाया और सवार होकर किश्तवार की ओर चल दिए।

जब रामवन के डाकबंगले पर पहुँचे तो वहाँ मीनार हमें मिल गई। वह हमको आते देख, आगे बढ़कर हमारे सामने आ खड़ी हो गई। ज्योंही मैंने उसको पहिचाना, उसने झुककर सलाम की और कहा, ''बाबू साहब ! नौकरी मिल जाए। बहुत गरीब दुखिया हूँ।''

मैंने पूछा, ''क्या काम करोगी ?''

''बच्चों को खिलाऊँगी, कपड़े धो दूँगी, बिस्तर लगा दूँगी। पाँव दबाऊँगी, सिर मसलूँगी और जो भी काम आप बताएँगे, कर दूँगी।''

मैंने पूछा, ''वेतन क्या लोगी ?''

''रोटी, कपड़ा और रहने को स्थान।''

''कुछ चुराकर भाग गई तो ?''

''चोरी करने की आदत नहीं बाबूजी ! इस पर भी कुछ चुरा लिया तो आपके घर में ही रखूँगी। ले नहीं जाऊँगी। मेरा और कोई है भी तो नहीं।''

''कोई हो गया तो ?''

''उसको भी आपके घर ले आऊँगी।''

''तुम्हारे लड़के का क्या हुआ ?''

''कौन लड़का बाबूजी ! मेरा तो अभी विवाह भी नहीं हुआ।''

''यूसुफ तुम्हारा लड़का नहीं है क्या ?''

''कौन यूसुफ ? गाँव मीराँ वाला ? तो मीनार का लड़का था। मीनार मर गई है। मैं···मेरा नाम···मीनार नहीं है।''

''तो क्या नाम है तुम्हारा ?''

''जो भी आप रख लें।''

इस समय डाकबंगले का बैरा चला आया और हमारा सामान टट्टुओं से उतरवाकर भीतर ले जाने लगा। मैंने मीनार पूछा, ''कहाँ ठहरी हो ?''

''वह नीचे यूसुफ के श्वसुर का मकान है। वह मुझको पहिचान नहीं सका। इस पर भी मेरी खूबसूरती देख, मुझको अपने लड़के, यूसुफ के साले, के साथ शादी करने के लिए कह रहा है। मैंने उसको कहा है कि मैं पंजाब जा रही हूँ कमाने के लिए। इस पर वह बहुत समझा रहा था। वहाँ पेशेवर औरतों की बातें बताकर मुझको डरा रहा है। यूसुफ का साला बीस वर्ष का अच्छा-खासा जवान है। मैंने उसको अभी न नहीं की। नदी पार करते आपको देखा तो सब-कुछ भूल यहाँ आ आपकी प्रतीक्षा करने लगी थी।''

''राधा से पूछ लो। यदि उसको नौकरानी की आवश्यकता हुई तो नौकरी

मिल जाएगी।"

राधा और टूनी घोड़ों से उतर पड़ी थीं। मैं भी घोड़े से उतर लगाम से उसे एक पेड़ के साथ बाँध, डाकबंगले में चला गया। राधा और टूनी मीनार से बातें करती रहीं। मैं अपना बिस्तर पलंग पर खोल लेट गया। इस समय राधा आई और कहने लगी, "मैंने उस स्त्री को नौकर रख लिया है।"

"कौन स्त्री ?" मैंने चौंककर पूछा।

"यही जो बाहर खड़ी है। यह कहती है कि इसका नाम गुलबदन है।"

"वह कहती थी कि उसकी शादी की बातचीत यूसुफ के साले से हो रही है।"

"यूसुफ का साला किसी अन्य स्त्री से विवाह कर लेगा। वह हमारे साथ चलेगी। कल वह हमारे चलने से एक घण्टा पहले चल पड़ेगी और बटोत में हमारे साथ पहुँचेगी। पश्चात् वह हमारे साथ ही लाहौर रहेगी।"

"जैसा मन में आवे, करो।"

"तो आपको यह प्रबन्ध पसन्द नहीं ?"

"राधा ! वह आग है।"

"नहीं जी ! वह पिचहत्तर वर्ष की अनुभवी होने से शान्ति और सुख का सागर होगी।"

मैं हँसकर चुप रहा।

जब हम बटोत पहुँचे तो गुलबदन हमको अपनी गठरी पीठ पर लटकाए डाकबंगले की ओर जाती दिखाई दी। हम पहुँचे तो वह हमारी मंडली में नौकरानी के रूप में सम्मिलित हो गई।

मैं छुट्टियाँ समाप्त होने के पन्द्रह दिन पूर्व ही लाहौर पहुँच गया था। वहाँ पहुँच राधा, टूनी और गुलबदन कोठी की सफाई आदि में लग गईं।

मैं माता-पिता तथा अन्य सम्बन्धियों से मिलने चला गया।

टीमू हमारे वहाँ पहुँचने से दो दिन पश्चात् पहुँच गया। वह गुलबदन को देख विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। धीरे-धीरे दोनों में परिचय हुआ और फिर स्नेह हो गया। गुलबदन टीमू को बहुत ही प्यार करने लग गई। उसकी देखभाल गुलबदन का विशेष कार्य हो गया।

टीमू इस समय नौ वर्ष का हो गया था और वह बहुत ही समझदार लड़का था। एक दिन वह मेरे स्टडी-रूम में आया और मेरे सामने आकर खड़ा हो गया। मैं एक पुस्तक पढ़ने में सर्वथा लीन था। इस कारण मुझको उसके आने का पता नहीं चला। एक बार शायद उसने धीरे-से कहा भी, "पिताजी !" परन्तु मैंने ध्यान नहीं दिया। इस पर वह चुपचाप खड़ा मेरे पुस्तक से ध्यान टूटने की प्रतीक्षा करने लगा।

जब मैंने उसकी ओर देखा तो उसने बताया कि वह पन्द्रह मिनट से मेरे ध्यान टूटने की प्रतीक्षा कर रहा था। मैंने चिन्तित हो पूछा, "क्या बात है टीमू ?"

"पिताजी ! यह गुलबदन कौन है ?"

"क्यों क्या हुआ है ?"

"कल मेरा कमरा साफ कर रही थी तो मेरी पुस्तकों और कपड़ों को ध्यान से सजा-सजाकर रख रही थी। मैंने उससे कहा, 'गुलबदन ! जाओ। मेरे मित्र आ रहे हैं।'

" 'तो क्या हुआ ?' उसने पूछा।

" 'वे तुम्हारी बातें करते हैं। मुझे पसन्द नहीं।'

" 'क्या कहते हैं वे ?'

" 'कुछ है, जो मुझे कहते लज्जा आती है।'

"इस पर वह मुझे प्यार देकर पूछने लगी, 'क्या कहते हैं बेटा टीमू ! क्या मेरी निन्दा करते हैं ?'

" 'नहीं। वे कहते हैं कि तुम पिताजी की बीवी हो।'

'इस पर उसने पूछा, 'तुम्हारे पिताजी की बीवी तुम्हारी क्या लगी ?'

" 'मेरे पिताजी की बीवी मेरी माँ है।'

" 'तो तुम्हारे पिताजी की बीवी तुम्हारी माँ लगी न ?'

"मैं उसका मतलब नहीं समझा। इस पर उसने कहा, 'तुम्हारी माँ राधा है न ?'

" 'हाँ।' मैंने कहा।

" 'वह तुम्हारे पिता की बीवी है न ?'

" 'हाँ।'

" 'तो तुम्हारे पिता की बीवी तुम्हारी माँ लगी ?"

" 'हाँ।'

" 'तो मेरा तुम्हारी माँ कहे जाने पर तुमको लज्जा क्यों लगती है ?'

"रात मैंने माताजी से पूछा तो वे कहने लगीं कि गुलबदन ठीक कहती है। इसमें लज्जा की क्या बात है ? वह तुम्हारी माँ ही सही। क्या हो गया फिर। इस पर मैंने माताजी से पूछा, 'क्या गुलबदन की पिताजी से शादी हो गई है ?'

"माताजी ने कहा, 'यह पिताजी से पूछना।'

"पिताजी ! यही पूछने के लिए खड़ा हूँ।"

पहले तो मुझको चिन्ता लग गई कि टीमू को क्या बताऊँ। पश्चात् यह सोचकर कि इस लड़के को झूठ नहीं बतलाना चाहिए, साथ ही इसको उतनी बातें ही बतानी चाहिए, जितनी यह समझ सकता है, मैंने उसको समीप रखी कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। अभी तक वह स्वभावानुकूल खड़ा था। जब वह बैठ गया तो मैंने

कहा, "गुलबदन बहुत अच्छी लड़की है। वह मुझसे प्रेम करने लगी है। मेरा उससे विवाह नहीं हुआ और न ही वह मेरी बीवी है। परन्तु वह कहती है कि मेरे अतिरिक्त वह किसी से विवाह नहीं करेगी। जब तक वह यह समझती है, वह अपने को तुम्हारी माँ ही समझेगी।"

"पर पिताजी ! मेरे मित्र मेरी हँसी क्यों उड़ाते हैं ?"

"इसलिए कि उनकी माता गुलबदन जैसी सुन्दर नहीं हैं। वे तुमसे ईर्ष्या करते हैं।"

"पर पिताजी ! वे कहते हैं कि वह आपकी बीवी है।"

"वे मूर्ख हैं। वे ये सब बातें नहीं जानते।"

"पर मैं क्या करूँ ?"

"तुम उनसे कहो कि वह तुम्हारी माँ है। किसी स्त्री को माँ कहने में लज्जा क्यों लगती है ?"

"यदि वह बुरे चरित्र की हो तो।"

"गुलबदन बुरे चरित्र की नहीं है। तुमने उसमें कोई बुरी बात देखी है क्या ?"

"नहीं। पर लड़के जो हँसी करते हैं ?"

"यदि तुम्हारी माता की कोई हँसी करे तो ?"

"तो मैं उससे लड़ पड़ूँगा।"

"ठीक है। पर ध्यान रखो। लड़ाई में जीतने वाले की सब प्रशंसा करते हैं। हारने वाले की सब हँसी उड़ाते हैं। लड़ना है तो जीतकर दिखलाओ। वरना एक दूसरा भी उपाय है।"

"वह क्या है ? पिताजी !"

"हँसी करने वालों की परवाह ही मत करो।"

परन्तु टीमू अवहेलना नहीं कर सका। अगले दिन वह स्कूल से आया तो उसके बहुत स्थानों पर चोटें लगी थीं। उसकी आँखें भी सूज रही थीं और घावों से खून बहा प्रतीत होता था। राधा ने उसे देखा तो घबराकर पूछने लगी, "टीमू ! यह क्या हुआ है ?"

"लड़ाई हुई है माँ ! मोहन जो हमारे घर आता है न, वह सब लड़कों के सामने गुलबदन की हँसी उड़ाने लगा। मैंने उसे मना किया परन्तु वह माना नहीं। फिर मैं उससे लड़ पड़ा। मैंने उसको खूब पीटा है। मुझको तो हल्की-सी ही चोट लगी है।"

गुलबदन टीमू की बातें सुन रही थी। वह यह सुन कि टीमू उसके लिए ही लड़ा था और उसने एक लड़के को खूब पीटा है, प्रसन्नता से रो पड़ी। टीमू ने उसकी आँखों में आँसू देख पूछा, "गुलबदन ! तुम क्यों रोती हो ?"

"मेरा बेटा मेरी इज्जत के लिए लड़ता है, यह जान मुझको बड़ी प्रसन्नता हुई है। आओ बेटा ! तुम्हारे माथे पर सेंक कर दूँ।"

मैं आया तो राधा ने मुझको सारी बातें बताईं। राधा को चिन्तित देख मैंने कहा, "इसमें चिन्ता की कोई बात नहीं। मुझको विश्वास है कि अब लड़के कभी उसको तंग नहीं करेंगे। मेरी इच्छा होती है कि जाकर देखूँ कि इससे लड़ने वाले के कितनी चोट लगी है और वह कुछ अक्ल भी सीखा है अथवा नहीं।"

मैंने टीमू के मित्रों से, जो कभी-कभी उसके साथ घर आया करते थे, पता किया और मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि मोहन पाँच दिन तक स्कूल नहीं आ सका। सब लड़के कहते थे कि मोहन ने टीमू को 'गुलबदन रंडी के लड़के' कह-कर पुकारा था। इस पर टीमू ने उसको मना किया और जब वह नहीं माना तो टीमू उससे भिड़ गया। कई बार झपट हुई। आखिर लहूलुहान हो मोहन भाग गया।

ऐसा प्रतीत होता है कि पीटे जाने के पश्चात् मोहन की समझ में आ गई थी। इसके कई दिन बाद वह टीमू से कहने लगा, "अब तुम मुझको घर नहीं बुलाते?"

"तुमको शरीफ लोगों के घर जाने का तरीका नहीं आता।"

"देखो टीमू! मेरे पिताजी ने कहा है कि मैं तुम्हारी माँ से जाकर क्षमा माँगूँ।"

"क्षमा माँगने से क्या होगा?"

टीमू चुप रहा परन्तु घर आकर उसने मुझको सब बात बताई। मैंने कहा कि वह गुलबदन से पूछे। यदि वह क्षमा देना चाहती है तो मोहन को बुला ले।

"आप पूछ लीजिए।"

टीमू गुलबदन को बुला लाया। वह आई तो मैंने कह दिया, "टीमू तुमसे कुछ कहना चाहता है।"

"हाँ, टीमू! बताओ।" गुलबदन ने कहा।

टीमू ने वही सारी बात गुलबदन को बता दी। पश्चात् उसने पूछा, "मौसी! क्या कहूँ उसको?"

वह मेरी ओर मुस्कराकर पूछने लगी, "बताइये क्या कहा जाए?"

"जैसे मन में आए, करो।"

"मुझसे पूछकर तो टीमू लड़ा नहीं। मैं तो उसकी ऐसे ही परवाह न करती, जैसे भौंकने वाले कुत्तों की नहीं की जाती। अब टीमू लड़ा है तो मैं क्या जानूँ यह अब उससे कैसा व्यवहार करेगा?"

"मान लो कि वह स्वयं तुम्हारे पास आए तो क्या करोगी?"

"मेरे पास ऐसे बच्चों के लिए सिवाय प्यार के और कुछ नहीं है। उस बच्चे का पिता बहुत ही अच्छा प्रतीत होता है।"

जब मोहन क्षमा माँगने आया तो गुलबदन उसको अपने कमरे में ले गई और

उसने उसे मिठाई और फल खिलाए और अन्त में कहा, "मोहन ! अब तुम भी मेरे बेटे हो गए हो, समझे ! अब मैं तुमसे भी वैसे ही प्यार करूँगी, जैसे टीमू से करती हूँ। तुम अपने पिताजी से पूछना कि मेरा तुमको बेटा कहने से मैं उनकी बीवी हो गई क्या ?"

मोहन बात को समझ रहा था। ऐसा कहने से वह रो पड़ा।

टूनी अब कोठी से बाहर नहीं आती थी। इस बार उसको विशेष कष्ट हो रहा था। गुलबदन उसकी सेवा में दिन-रात लगी रहती थी। राधा ने एक दिन उससे कहा भी, "गुलबदन ! तुम यहाँ विवाह के लिए आई थीं। तो क्या तुम्हारे लिए वर ढूँढा जाए ?"

"मेरा विवाह तो हो चुका है। कोई माने चाहे न माने। मेरा विवाह विनोद बाबू से हो गया है। रही भोग-विलास की बात, वह मैंने अपने जीवन में बहुत किया है। और अधिक नहीं किया तो कुछ हानि नहीं हो रही।"

"मेरा विचार है कि तुमको विवाह कर लेना चाहिए। मुझको भय है कि तुम्हारा हाल कहीं टूनी की तरह न हो जाए।"

"नहीं होगा राधा बहन। टूनी और मुझमें भारी अन्तर है। जब उसने पहला विवाह किया था, तो उसको कुछ भी ज्ञान नहीं था। दूसरा विवाह भी उसने भूल से किया था। मैंने तो गृहस्थ भलीभाँति भोगा है। वह पहला पति यूसुफ का बाप मुझसे बहुत प्यार करता था। मेरा मन विषयभोग से भर चुका है।

"मैं तो विवाह का विचार भी नहीं करती। परन्तु विनोद बाबू को देख मुझे उनकी सेवा करने की इच्छा जाग उठी है। सो यह करने का अवसर मिल गया है। मुझको इससे अधिक और कुछ नहीं चाहिए।"

पंचम परिच्छेद

मैंने नवम्बर के तीसरे सप्ताह में केशव को एक पत्र लिखा और उसको स्मरण कराया कि उसने दिसम्बर की आठ तारीख को लाहौर आने का वचन दिया था। मेरा पत्र लौट आया। किश्तवार के डाकखाने की मोहर लगी हुई थी और ऊपर लिखा था कि केशव का भवन जलकर राख हो गया है। वहाँ कोई नहीं है।

लिफाफे पर यह लिखा पढ़ मुझे भारी शोक हुआ। राधा ने यह सुनते ही कहा कि वहाँ जाकर पता करना चाहिए। गाँव में यदि कोई बच गया होगा तो कुछ पता चल सकता है। मैंने एक सप्ताह की छुट्टी ली और किश्तवार के लिए चल पड़ा। अभी बर्फ पड़नी शुरू नहीं हुई थी। इस पर भी सर्दी काफी हो गई थी। जम्मू में टट्टू करने के लिए मण्डी पहुँचा तो मुझको एक व्यक्ति, जिसके मुख तथा शरीर के कुछ अन्य भागों में पट्टियाँ बँधी थीं, दिखाई दिया। शरीर की लम्बाई तथा रंग से मुझे ऐसा लगा कि जैसे राबर्ट हो। वह मंडी में एक दुकान पर बैठा था। मैं उसके पास गया तो मैंने देखा कि उसका मुख पूर्ण रूप से पट्टियों से ढँका हुआ था, उसकी आँखें भी खुली नहीं थीं। मैंने उसको धीरे से पुकारा, "राबर्ट !" उसने सिर उठाकर मेरी ओर देखने का यत्न किया परन्तु आँखों पर पट्टी बँधी होने से कुछ भी देख न सका। उसने पूछा, "कौन ?"

मैंने उत्तर दिया, "विनोद।"

"ओह ! कैसे आए हो ?"

"केशव का पता करने।"

"कुछ पता नहीं कहाँ है ?"

"रोमिली ?" मैं उसके पास बैठ पूछने लगा।

"उसकी तो हड्डियाँ तक पिघल गई लगती हैं।"

"ओह ! तुम यहाँ कैसे आए हो ? यह सब क्या और कैसे हुआ ?"

"मेरे पास रुपया समाप्त हो गया था। मैंने विचार किया कि रोमिली से कुछ लेकर अमेरिका लौट जाऊँ। किश्तवार पहुँचा और भवन में जाकर देखा कि न तो वहाँ टूनी है और न केशव। रोमिली एक सुन्दर नौजवान के साथ वहाँ रहती थी। वह मुझको देख धमकाने लगी कि पुलिस के हवाले कर देगी। मैं जानता था कि मेरे विरुद्ध कुछ सिद्ध नहीं किया जा सकता। मैं रोमिली के विरुद्ध बहुत कुछ सिद्ध कर सकता था।

"इस कारण मैं वहाँ डट गया। दो-तीन दिन पश्चात् वह शान्त हो गई और मैं अपने पुराने सम्बन्ध उससे बनाने लगा। उसका वह नौजवान मित्र, जिसको वह भद्रायण कहती थी, मुझसे चिढ़ने लगा। एक दिन वह मुझसे भिड़ गया। मैंने उसकी खूब मरम्मत की। वह घायल हो खाट पर लेट गया। उसको घायल देख रोमिली मुझसे नाराज हो गई।

"भद्रायण का पास-पड़ोस के गाँवों में खूब रसूक था। उसने पीटे जाने पर अपने भक्तों और मित्रों को कहला भेजा। इस पर वे हजारों की संख्या में भवन के चारों ओर एकत्रित होने लगे। भद्रायण ने लोगों को कहला दिया कि मैंने उसको घायल किया है। मैं उसको मारकर खा जाना चाहता था। अतएव एकत्रित लोगों ने और पंचायत ने रोमिली से मुझको माँगा। लोग इतने क्रुद्ध थे कि वे भवन को गिरा देना चाहते थे और आग लगा देने की धमकी देने लगे थे। मैंने जब देखा कि भवन को आग लगने वाली है और रोमिली अपने साधनों से उस भीड़ को जला देने में संकोच करती है तो मैंने उससे कहा कि वह अणु हथगोले मुझको दे दे, मैं भीड़ में चलाता हुआ निकल जाऊँगा। उसने यही ठीक समझ मुझको कई वैसे गोले दे दिए। मैं भवन की ड्योढ़ी में खड़ा लोगों से पूछने लगा, 'बताओ क्या चाहते हो?'

" 'तुम्हारा जीवन! तुमने हमारे गुरुजी को पीटा है।'

"मैंने कहा, 'यह झूठ है कि मैंने पीटा। वास्तव में यह मुझको मार डालना चाहता था। मैंने अपनी रक्षा में एक-दो घूँसे उस पर चलाए हैं।'

"इस समय भीड़ के पीछे से आवाज आनी शुरू हो गई, 'मार डालो इस दुष्ट को।' इस पर भीड़ मुझपर टूट पड़ी। मैं चबूतरे से उतर बाहर की दीवाल पर जा पहुँचा। लोग मुझपर लपके। मैंने जेब से एक हथगोला निकाल भीड़ में फेंक दिया। वह मुझसे लगभग बीस फीट के फासले पर जाकर फटा। उसके फटते ही वहाँ आग लग गई। लोग मशालों की भाँति जलने लगे। लोगों में भगदड़ मच गई। इस भगदड़ में मैं अपने को सुरक्षित पा एक ओर भागने लगा। उधर कुछ लोगों ने मुझे घेर लिया। मैंने उन पर दूसरा हथगोला छोड़ा। वे लोग मेरे बहुत समीप आ पहुँचे थे। इस कारण इस हथगोले की लपट मुझको भी लग गई। एक आदमी, जिसको आग लग गई थी, मुझसे आकर लिपट गया। मैंने बहुत कठिनाई से अपने को छुड़ाया, परन्तु उस समय तक मेरे कपड़ों को भी आग लग गई थी। उस आग को बुझाते-बुझाते मेरे हाथ और मुख झुलस गए। आँखों में घाव आए। मैं किश्तवार और वहाँ से पिट्ठू पर बैठ जम्मू चला आया। यहाँ पन्द्रह दिन अस्पताल में रहने के पश्चात् बम्बई जाने की तैयारी में बैठा हूँ। मेरे साथ बम्बई से एक नौकर आया था। उसको मैंने किश्तवार में छुपा रखा था। वह मुझको यहाँ तक लाया है। अब बम्बई ले जाने का प्रबन्ध वही कर रहा है।"

मैंने पूछा, "केशव का कुछ पता चला ?"

"नहीं। रोमिली से मैंने पूछा था। उसने यह कहा था कि वह कहीं भाग गया है।"

"वह वहाँ भवन में नहीं था ?"

"मैंने नहीं देखा।"

"कितने दिन रहे हैं आप ?"

"पन्द्रह-सोलह दिन।"

"रोमिली का क्या हुआ ?"

"मैं जब किश्तवार में घायल पड़ा था तो मैंने वहाँ के कई लोगों से सुना है कि केशव-भवन जलकर भस्म हो गया है। गाँव मीराशाह का तो चिह्न मात्र भी नहीं रहा। लोगों की भीड़, जो मुझको मार डालने के लिए दौड़ी थी, सब बुरी तरह जलकर भस्म हो गई थी।

"मेरे हथगोलों से तो इतना भयंकर परिणाम नहीं निकल सकता था। उससे दो-तीन सौ से अधिक मर नहीं सकते थे। भवन को आग कैसे लगी और गाँव कैसे बरबाद हुआ, मैं नहीं जानता।"

"रोमिली ने कदाचित् स्वयं आग लगा दी होगी।"

"इसमें कोई कारण प्रतीत नहीं होता। मेरी रक्षा के लिए उसने यह किया होगा, मुझको विश्वास नहीं आता। कुछ भूल अथवा घबराहट में हो गया हो तो हो सकता है अथवा उस मूर्ख भद्रायण ने ही स्वयं आग लगा दी हो।"

"तुमको विश्वास है कि भवन में कोई नहीं बचा ?"

"मेरी आँखें खराब हो गई थीं। इस कारण मैं कुछ देख नहीं सका। मेरे नौकर ने बताया था कि भवन में आग की लपटें निकलती हुई किश्तवार में दिखाई दे रही थीं। भवन तीन दिन तक जलता रहा था और बीच-बीच में उसमें विस्फोट होते रहे थे।"

"इतना भयंकर कांड हो गया और किसी को पता तक नहीं।" मैंने मन में विचार किया। इसका उत्तर राबर्ट के एक वाक्य से मिला, "अस्पताल में मुझसे डॉक्टर ने यह वचन लिया है कि मैं किसी भी समाचार-पत्र अथवा सार्वजनिक स्थान पर यह बात नहीं बताऊँ।"

मैं राबर्ट से केशव के विषय में कुछ जान नहीं सका। इतना समाचार सन्तोष-जनक प्रतीत होता था कि घटना के समय वह भवन में नहीं था। घटना के कई दिनों पूर्व वह वहाँ से कहीं चला गया था। रोमिली का यह कहना कि वह कहीं भाग गया है, यह बताता था कि उसको भी उसका पता नहीं था।

बहुत विचारोपरान्त मैंने यही उचित समझा कि किश्तवार जाऊँ और वहाँ से पता करूँ कि क्या केशव का कोई समाचार मिल सकता है ?

मैं किश्तवार के लिए चल पड़ा। डोडा में से जा रहा था कि करामत मिल गया। वह वहाँ पर पगडंडी के एक किनारे पर पत्थर पर बैठा थकावट दूर कर रहा था। मैंने उसको पहिचान, अपना घोड़ा रोका। उसने मुझको पहिचान सलाम की। मैंने पूछा—

"क्या कर रहे हो?"

"मैं पंजाब नौकरी करने जा रहा हूँ।"

"मीराशाह का क्या हुआ है?"

"कुछ नहीं बचा सरकार! एक दिन सवेरे मालकिन ने मुझको बुलाकर कुछ पत्र डाक में डालने के लिए किश्तवार भेजा था। मैं जब किश्तवार को आ रहा था, तो आसपास के गाँवों के सहस्रों लोग भवन की ओर जाते हुए मिले। सब कह रहे थे कि हब्शी ने तापसी बाबा को मार डाला है। इससे मैं चिन्ता अनुभव कर रहा था। इस कारण जल्दी-जल्दी डाकखाने पहुँच चिट्ठियाँ आदि रजिस्ट्री करवा रहा था कि भवन की ओर से बहुत चीख-पुकार के शब्द सुनाई देने लगे। मैंने उस ओर देखा तो भवन से लपटें निकलती दिखाई दीं। पश्चात् भवन में से भवन के बड़े-बड़े पत्थर आकाश की ओर उड़ने लगे। यह तीन दिन तक चलता रहा। तीन दिन के पश्चात् आग तथा लपटें बन्द हुईं। इस समय तक मैं किश्तवार ही पड़ा रहा और यह सब देखता रहा। तीन दिन के पश्चात् मैं गाँव के लोगों की खबर लेने के लिए उधर को गया। मैं नदी पार कर कुछ ही दूर जा सका था। भूमि गर्मी से पिघलकर पत्थर बन गई थी। इस पर भी अभी वहाँ की जमीन इतनी गरम थी कि मैं उस पर पैदल नहीं चल सका। एक बात वहाँ जाकर दिखाई दी कि भूमि पिघल कर स्लेट की भाँति सपाट हो गई है। वहाँ न तो कोई जीव-जन्तु और न ही कोई पेड़, घास, फूस आदि बचा है।"

मैंने करामत से पूछा, "केशव को तुमने कब देखा था?"

"वे तो इस घटना के कई दिन पूर्व से ही कहीं लापता थे। मालकिन बताती थीं कि वे नाराज होकर कहीं चले गए हैं।"

"नाराज क्यों हो गए थे?"

"शायद मालकिन और तापसी बाबा का विवाह हो गया था, इसी कारण। बाबूजी! ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ शैतान का राज्य हो गया था। उसने सबकी बुद्धि मलिन कर दी थी। कुछ दिन से हब्शी भी वहाँ लौट आया था। उसका भी पता नहीं चला कि कहाँ गया है।"

केशव के विषय में कुछ पता नहीं चला कि कहाँ गया है। यदि वह वहाँ से कई दिन पूर्व ही चल पड़ा था, तो उसे लाहौर आना चाहिए था। वह क्यों नहीं आया? यह एक रहस्य की बात थी। मैं बार-बार विचार करता था कि वह कहाँ जा सकता है? मुझको इस प्रश्न का कुछ भी उत्तर नहीं सूझता था।

मैंने करामत को अपने साथ लिया और किश्तवार जा पहुँचा। वहाँ जाकर करामत और राबर्ट के बयानों का समर्थन प्राप्त हुआ। किसी ने केशव बाबू को नहीं देखा था। मैं वहाँ के तहसीलदार से मिला। वह भी घटना की जाँच करने वहाँ आया हुआ था। वह मुझको देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसका विचार था कि शायद मैं इस घटना पर प्रकाश डाल सकूँ। जब मैंने बताया कि मैं स्वयं जानकारी प्राप्त करने आया हूँ, तो उसको बहुत निराशा हुई। उसने अपना अनुमान बताया, "यह अमेरिकन औरत रोमिली, अमरीका वालों का दारू-बारूद का गोदाम यहाँ बनाए हुए थी। हमको विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि यहाँ से तिब्बत पर हमला करने की तैयारी की जा रही थी।"

मैं यह अनुमान सुन मन-ही-मन हँसा। इस पर भी मैंने इस विचार का खण्डन नहीं किया। केशव के विषय में जानकारी प्राप्त करने पर बताया, "मेरे गुप्तचरों ने एक बात पता की है। केवल एक आदमी भवन से बचकर निकला है। उसके दोनों हाथ और मुख बुरी तरह झुलसे हुए थे। वह एक दिन यहाँ रहा है और फिर उसका पता नहीं चला कि कहाँ गया है।"

मेरा अनुमान था कि तहसीलदार राबर्ट के विषय में कह रहा है। मैं चन्द्रभागा पार कर भवन के स्थान पर पहुँचा। वहाँ की भूमि वास्तव में पिघलकर एक बहुत बड़ा टीला बन गई थी। वहाँ से दो मील की परिधि में तो हरियाली का चिह्न मात्र भी नहीं रहा था।

गाँव भी इस दो मील की परिधि के बीच आ गया था। पावर स्टेशन तक जाने का मार्ग टूट गया था। इस पर भी वहाँ एक इमारत के खण्डहर दिखाई देते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि भवन के धमाकों से वहाँ की इमारत टूट गई है।

मैं निराश लाहौर लौट आया। मुझे वहाँ पहुँचने पर पता चला कि राबर्ट बुरी तरह से घायल होकर लाहौर मेयो अस्पताल में पड़ा है। उसके घाव भर नहीं रहे थे और डॉक्टर बहुत परेशान थे।

मैं उसे अस्पताल में मिलने गया। डॉक्टरों ने बताया कि उसके हाथों में गंगरीन हो गई थी। इस कारण उसके हाथ काटने पड़े थे। उसके मुख पर भी दोबारा ऑपरेशन किया जा चुका था। डॉक्टरों ने यह कहा कि उसके ठीक होने में दो मास का समय लग जाएगा। इस पर भी वह कुरूप तो हो ही गया है।

दिसम्बर और जनवरी भी समाप्त हो गया। राबर्ट ठीक तो हो गया; परन्तु उसका मुख अति भयंकर हो गया था। दोनों हाथ कट चुके थे। उसका अस्पताल का खर्चा टूनी दे रही थी।

जब वह अस्पताल से निकला तो टूनी से आर्थिक सहायता ले वह पैरिस में प्लास्टिक सर्जरी के लिए चला गया। वह मार्च के अन्त में बिदा हुआ। उसका विचार था कि टूनी भी उसके साथ चले, परन्तु टूनी का प्रसवकाल समीप था,

इस कारण इस विषय पर विचार करना भी आवश्यक नहीं था ।

जहाँ तक केशव का सम्दन्ध था, उस पर राबर्ट कुछ भी प्रकाश नहीं डाल सका था । मैंने केशव के चित्र के साथ उसका पता बताने वाले को पाँच सहस्त्र रुपया के इनाम की घोषणा कर दी । लाहौर, दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई के कई पत्रों में इस घोषणा का विज्ञापन दिया गया ।

टूनी के इस बार एक लड़की हुई । वह रंग की तो काली थी, परन्तु उसकी सूरत टूनी से मिलती थी । टूनी इस लड़की को पा बहुत प्रसन्न थी ।

मेरे मस्तिष्क में यह बात बैठ-सी गई थी कि केशव कहीं चला गया था। शायद वह तिब्बत ही चला गया हो और पीछे होने वाली दुर्घटनाओं का उसे ज्ञान तक न हो । इस कारण समाचार-पत्रों में कभी-कभी उसके लिए इनाम सहित घोषणा करवा दिया करता था ।

अप्रैल की दस तारीख की बात है कि मैं कॉलेज जा रहा था कि एक व्यक्ति मुख पर कपड़ा लपेटे, सिर पर पगड़ी बाँधे और एक लम्बा चोगा, कश्मीरी ढंग का पहिने, कोठी के बाहर खड़ा, मुझे मिला। वह आगे आ मुझसे भीख माँगने लगा। जो हाथ उसने आगे पसारा था वह लकड़ी का था । मुझको उसपर दया आ गई । कुछ देने के विचार से मैं जेब टटोलने लगा । मेरे पास एक अठन्नी थी । मेरे मन में आया कि कह दूँ कि इस समय पैसे नहीं हैं । फिर सोचा कि चलो अठन्नी ही दे दूँ। यह सोचते-सोचते मैं कुछ आगे निकल गया । अठन्नी देने के विचार से मुख घुमाकर पीछे देखा । मुझको उसका मुख दिखाई दिया । उसके मुख की आकृति विचित्र ही थी । मुख का बहुत-सा भाग तो पगड़ी तथा अंगोछे से, जो उसने मुख पर लपेटा हुआ था, छुपा था । इस पर भी उसके मुख का कुछ भाग दिखाई दे गया । वह पिघले हुए खिंगार की तरह काला और आकृति-विहीन दिखाई दिया । नाक के स्थान पर एक चपटा सुराख था । आँखें भी दो सुराख-सी ही शेष थीं ।

मैंने अठन्नी उसके लकड़ी के हाथ पर रखने के लिए निकाली और उसका मुख देख अवाक् रह गया । अठन्नी दे लौटने लगा कि उसका मुख खुला और उसने कुछ कहा । मैं समझा कि मेरा नाम ले रहा है । मैं रुक गया । उसने दूसरा शब्द बोला, "केशव ।"

मुझको चक्कर से आने लगे । सड़क के किनारे लगे पेड़ का आश्रय ले मैं खड़ा हो गया । वह मेरे समीप आ अपना लकड़ी वाला हाथ अपने हृदय पर रख बोला, "के···श···व ।"

"तुम केशव ?" मैंने आँखें फाड़-फाड़कर देखते हुए पूछा ।

उसने सिर हिलाकर स्वीकार किया । मैं उसको बाँह से पकड़ कोठी के भीतर ले गया । उसको ड्राइंगरूम में बैठा, कॉलेज टेलीफोन कर दिया कि मैं बीमार हूँ और कॉलेज नहीं आ रहा । पश्चात् मैं उसके पास जाकर बैठ गया और पूछने लगा,

"तुम दिखाई तो कुछ और, मेरा मतलब है कि कुछ नहीं देते। पर तुम यहाँ आए कैसे ?"

उसने पुनः संकेत से कहा, "मैं···बोल न···हीं···स···क···ता।" मैंने उसका चोगा उतारा। उसका पूर्ण शरीर वैसा ही था, जैसा उसका मुख। दोनों हाथों के ठूँठ रह गए थे। टाँगें भी जल गई थीं। केवल वे चलने-फिरने योग्य थीं। मैंने नौकर को बुलाया और उसकी सहायता से केशव को नहलवाया। नये कपड़ पहिनाए। पश्चात् राधा और टूनी को बुलाया। वे इस जले-भुने मांस के पिण्ड को देख विस्मय में देखती रह गईं।

अब केशव की चिकित्सा आरम्भ हुई। मैंने एक योग्य बढ़ई बुलाकर उसके लिए लकड़ी के हाथ बनवाए। एक योग्य हकीम को बुलाकर उसके शरीर पर नित्य मालिश करानी आरम्भ कर दी।

गुलबदन ने जब उसको देखा तो उसकी सेवा में जी-जान से लग गई। कई मास की मालिश तथा ओषधि के पश्चात् केशव इस योग्य हुआ कि बोल सके। उसकी जिह्वा अब काम करने लगी थी और वह मन के भावों को प्रकट करने योग्य हो गया था। लकड़ी के हाथों में पेन्सिल लेकर मोटे-मोटे अक्षरों में वह लिखने योग्य हो गया था।

अच्छा पौष्टिक भोजन मिलने से उसका मस्तिष्क भी काम करने लग गया था।

चिकित्सा करते-करते अप्रैल से अक्टूबर मास हो आया। मैंने कॉलेज से दो वर्ष की छुट्टी ली और उसके इलाज के लिए विमान से वियाना जाने की तैयारी कर दी। टूनी अपने बच्चों से मिलने के लिए उत्सुक थी। राधा और गुलबदन केशव के निमित्त साथ चल दीं।

वियाना में डॉक्टरों के बोर्ड ने उसकी परीक्षा कर कह दिया कि वह प्लास्टिक सर्जरी से ठीक नहीं हो सकता। उसके चमड़े के सैल सर्वथा मर चुके थे। सब डॉक्टर विस्मय करते थे कि अभी वह जीवित है तो किस प्रकार है।

वहाँ से हम अमेरिका चले गए। रोमिली की मृत्यु घोषित हो चुकी थी। उसकी सम्पत्ति का कोई उत्तराधिकारी न होने से स्टेट ने उसे आत्मसात कर लिया था।

फिलाडैल्फिया जाकर पता चला कि राबर्ट को जब पैरिस में डॉक्टरों ने चिकित्सा के योग्य नहीं समझा, तो उसने पोटेशियम साईनाइड खाकर आत्महत्या कर ली।

केशव ने जब देखा कि डॉक्टरों ने उसको भी चिकित्सा से ऊपर घोषित कर दिया है तो उसने मुझको पृथक् बुलाकर कहा, "विनोद ! मेरा मन कहता है कि मैं ठीक हो सकता हूँ। मैं अपने ऊपर कायाकल्प की चिकित्सा करना चाहता हूँ। मेरा विचार है कि मेरे शरीर का नव-निर्माण हो सकता है। परन्तु इसके करने से पूर्व मैं दो बातें करना चाहता हूँ। एक तो चिकित्सा की पूर्ण प्रक्रिया और सम्भावित

भय के समय क्या किया जाए, लिख देना चाहता हूँ। दूसरे मैं भवन से तुम्हारे चले आने के पश्चात् क्या हुआ और मैं कैसे बच निकला, बता देना चाहता हूँ। सम्भव है कि चिकित्सा में यह शेष शरीर भी समाप्त हो जाए। इस कारण मेरे पूर्ण प्रयत्नों का परिणाम लिखित रूप में आ जाना चाहिए।''

यद्यपि मुझको उसकी चिकित्सा से उसके बचने की आशा नहीं थी, इस पर भी उसको निराश करना अनुचित था। मैंने देखा कि उसका शरीर दिन-प्रतिदिन क्षीण होता जाता था। उसके शरीर के कोषाणुओं में नये कोषाणु बनाने की शक्ति नहीं थी। साथ ही उसकी खाल तो सर्वथा मर चुकी थी। उसमें अनुभव करने की शक्ति भी नहीं रही थी।

केशव का कहना था कि यदि उसकी 'थ्यूरी' (विचारधारा) ठीक है तो निस्सन्देह उसको ठीक हो जाना चाहिए। कम-से-कम उसका मस्तिष्क और शरीर के शेष अंग कार्य करने के योग्य अवश्य हो जाएँगे। उसके शरीर का क्षय रुक जाएगा।

केशव की योजना में मैं रुचिपूर्वक सहयोग देने लगा। हम न्यूयार्क में ही थे कि उसने, पूर्ण उपकरण की सूची, जो उसको अपनी चिकित्सा के लिए चाहिए थी, बना डाली। उसने सूची में नाप-तोल, बनावट और उसके काम करने की विधि का एक विवरण लिखवा दिया। इसके लिखने में उसको एक मास से ऊपर लग गया। उसका मस्तिष्क अब उतने वेग से कार्य नहीं करता था, जितना पहले किया करता था। इस पर भी वह समीप बैठा मुझको लिखाता जाता था। सब वृत्तान्त इतना रोचक और चमत्कारिक था कि उसको लिखने में भी एक प्रकार का आनन्द-सा आ रहा है।

केशव ने लिखाया—

''शरीर छोटे-छोटे कोषाणुओं का बना है। ये कोषाणु शरीर के अंगों में हैं और इन कोषाणुओं के बीच-बीच में जो स्थान रिक्त रह जाता है, उसमें मल एकत्रित होता रहता है। ये कोषाणु, जिनको अंग्रेजी भाषा में 'सैल' कहते हैं, शरीर का जीवित भाग हैं। कोषाणुओं के बीच-बीच में रिक्त स्थानों पर एकत्रित मल, शरीर का निर्जीव भाग है।

''जीवित और निर्जीव भाग में अन्तर यह है कि जीवित भाग में बढ़ने की शक्ति रहती है। एक कोषाणु से दो कोषाणु, दो से चार, चार से आठ, इसी तरह कोषाणु बढ़ते जाते हैं। यह कोषाणु-विभाजन-क्रिया जब तक शरीर में जीवन है, निरन्तर चलती रहती है। मल में इस प्रकार की बढ़ौती नहीं होती। मल कोषाणुओं में से उत्पन्न, उनका व्यर्थ का भाग है, जो रिक्त स्थानों में एकत्रित होता है। इस पर भी शरीर के स्वास्थ्य के लिए शरीर का मल भाग उतना ही आवश्यक है, जितना जीवित भाग।

''प्रत्येक कोषाणु की बनावट में तीन अंग आवश्यक हैं। प्रथम तो उस कोषाणु

की दीवार, जो कोषाणु को चारों ओर से घेरे रहती हैं। दूसरा कोषाणु के बीच एक प्रकार का अर्द्ध-तरल पदार्थ, 'प्ररस' (प्रोटोप्लाज्म) नाम का भरा रहता है। तीसरा इस 'प्ररस' के भीतर एक प्रायः पीले रंग का बिन्दु समान कण रहता है। इस बिन्दु को 'न्यष्टि' (न्यूक्लियस) कहते हैं। पूर्ण कोषाणु की लम्बाई-चौड़ाई एक इंच का पाँचसौवाँ भाग होती है।

"कोषाणु के विभाजन को वृद्धि कहते हैं। शरीर की रक्षा तथा वृद्धि के लिए यह वृद्धि भी निरन्तर होनी आवश्यक है। शरीर जब कार्य करता है तो कोषाणु टूटते हैं और इस टूट-फूट से होने वाली कमी की पूर्ति के लिए नये कोषाणु बनते रहने आवश्यक हैं, अन्यथा शरीर में क्षय आरम्भ हो जाता है।

"कोषाणुओं में वृद्धि, विखंडन अर्थात् फिशन (Fission) क्रिया से होता है। कोषाणु, जिसमें विखंडन होता है, में स्थित न्यष्टि (न्यक्लियस) दो भागों में बँट जाता है। न्यष्टि के दो खंड एक-दूसरे से दूर-दूर हो जाते हैं। तदनन्तर प्ररस (प्रोटोप्लाज्म) न्यष्टि के दो खंडों के आस-पास एकत्रित होने लगता है। बीच में स्थान रिक्त हो जाता है और इस रिक्त स्थान पर घर अर्थात् कोषाणु की दीवार बैठनी आरम्भ हो जाती है। अन्त में आर-पार की दीवार वहाँ मिलकर घरों को दो भागों में बाँट देती है। इस तरह एक कोषाणु अर्थात् सैल से दो सैल हो जाते हैं। यथासमय नये बने कोषाणु पुनः इसी प्रकार विखंडित होते हैं।

"घरों के विखंडन होने की प्रक्रिया अनन्त काल तक नहीं चल सकती। कई लाख बार विखंडित होने पर न्यष्टि (न्यूक्लियस) में विखंडित होने की शक्ति क्षीण होती जाती है। अन्त में यह शक्ति सर्वथा नष्ट हो जाती है।

"प्रकृति ने न्यष्टि में विखंडित होने की इस शक्ति को पुनर्जीवित करने का एक उपाय बनाया है। वह है पुरुष-बीज कोषाणु तथा स्त्री-बीज कोषाणु का समागम। इन दो कोषाणुओं के समागम से जो नवीन न्यष्टि बनती है, उसमें पुनः विखंडित होने की पूर्ण शक्ति आ जाती है और यह पुनर्जीवित न्यष्टि पुनः लाखों बार विखंडित होने में सफल हो जाती है।

"पुरुष-बीज कोषाणु और स्त्री-बीज कोषाणु की शक्ति का भी मैंने अध्ययन किया है। अध्ययन के पश्चात् मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि यह प्रकृति की विशेष शक्ति है, जो समागम से बने न्यष्टि में उत्पन्न होती है।

"अणु (एटम) जैसा कि प्रायः सब वैज्ञानिक जानते हैं, किसी मूल द्रव्य (ऐलिमैंट) का छोटा कण है। लोहा ले लीजिए। इसके प्रत्येक टुकड़े में वही अणु है जो लोहे के बड़े टुकड़े में है। आप अपने यन्त्रों से बारीक से बारीक टुकड़ा कर लीजिए, तब भी जो टुकड़ा बनेगा, वह बड़े टुकड़े के समान ही गुण वाला होगा। लोहे के टुकड़े यन्त्रों से बहुत बारीक नहीं हो सकते। और भी बारीक टुकड़े करने हों तो रासायनिक उपायों को प्रयोग में लाया जाता है।

"यह बारीक और बारीक टुकड़े करने की प्रक्रिया भी असीम नहीं। एक ऐसी सीमा आती है, जहाँ पर लोहे के और बारीक टुकड़े करने पर लोहा अपना गुण खो बैठता है। ऐसे बारीकतम टुकड़े को, जो लोहे के गुण वाला होता है, अणु कहते हैं।

"संसार के सब पदार्थ लगभग बानवें मूल द्रव्यों से बने हैं। अर्थात् संसार में बानवें प्रकार के अणु पाए जाते हैं। ये बानवें अणु जब आगे विखंडित किए जाते हैं, तो इन सबमें से तीन प्रकार के अंश निकलते हैं। एक अंश को इलैक्ट्रोन कहते हैं। दूसरे को प्रोट्रोन और तीसरे को न्यूट्रोन।

"सब मूल द्रव्यों के अणु, विभक्त होने पर एक जैसे ही तीन प्रकार के कणों को छोड़ते हैं। परन्तु एक प्रकार के अणु और दूसरे प्रकार के अणु में अन्तर उनमें के इलैक्ट्रोन, और न्यूट्रोन की संख्या और स्थान के ऊपर निर्भर करता है।

"भिन्न-भिन्न मूल द्रव्यों में तीन प्रकार के मुख्य अन्तर देखे गए हैं। एक उनके रासायनिक गुणों में, दूसरे उनके अणुभार में और तीसरे उनके अखंडित रहने की शक्ति में। ये तीनों गुण उन द्रव्यों के अणुओं में इलैक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन कणों की संख्या और स्थान के अनुसार होते हैं। इलैक्ट्रोनों से रासायनिक गुण बनते हैं। प्रोटोनों की संख्या से अणुभार और न्यूट्रोन की संख्या से विखंडित होने की शक्ति।

"एक अणु के विखंडित होने से दो अथवा कई छोटे-छोटे कण, जो नवीन मूल द्रव्यों के अणु होते हैं, बन जाते हैं। इस विखंडन क्रिया के होने पर एक अणु में से कई इलैक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन नव-निर्मित अणुओं में स्थान नहीं पाते और स्वतंत्र हो जाते हैं। स्वतंत्र होने पर ये इलैक्ट्रोन, प्रोटोन और न्यूट्रोन अपना-अपना कार्य करते हैं। इलैक्ट्रोन स्वतंत्र होकर विद्युत् शक्ति को उत्पन्न करते हैं। प्रोटोन स्वतंत्र होने पर ऊष्मा और न्यूट्रोन स्वतंत्र होने पर उत्तेजना उत्पन्न करते हैं। जिस भी द्रव्य में ये, चाहे तो वह मूल द्रव्य हो अथवा कार्य द्रव्य हो जाते हैं, उसमें अपने-अपने कार्य के अनुसार हलचल उत्पन्न कर देते हैं।

"मेरा मत है कि पुरुषबीज और स्त्रीबीज कोषाणुओं के न्यष्टियों का जब समागम होता है, तो उनमें उपस्थित अणुओं के न्यूट्रोन में अदला-बदली होती है और इनके कारण ही उन कोषाणुओं से बने डिम्ब के कोषाणुओं में पुनः विखंडित होने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है।

"मैंने एक प्राणी के शरीर में असंख्य कोषाणुओं के न्यष्टियों में, अपने यंत्रों द्वारा, स्वतंत्र हुए न्यूट्रोनों का समावेश करने का प्रबन्ध कर दिया है और प्राणी के कोषाणुओं में विखंडित क्रिया को बल प्रदान कर, प्राणी में पुनर्जीवन का संचार किया है। यही कायाकल्प है।

"प्राणी में कोषाणुओं का विखंडित होकर स्वस्थ कोषाणु बनाना ही जीवन और यौवन का लक्षण है। इस प्रकार हमारी प्रक्रिया से प्राणी यौवनावस्था में आ जाता है।

"इस क्रिया के होने में एक बाधा रहती है। यह कोषाणुओं के मध्य में स्थित मल है। मल शरीर के धातुओं को दृढ़ता प्रदान करता है। परन्तु यदि यह मात्रा से अधिक एकत्रित हो जाता है, तो कोषाणुओं के विखंडित होने में बाधा बन जाता है। इस कारण जहाँ यह आवश्यक है कि न्यष्टियों में विखंडित होने की असीम शक्ति आ जाए, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उसमें विखंडित होने में बाधा, अर्थात् मल, न्यून-से-न्यून आवश्यक मात्रा में ही रहे। अतएव न्यूट्रोन के शरीर में संचार करने से पूर्व शरीर में से वह मल, जो आवश्यकता से अधिक है, निकाल दिया जाए। इसके लिए इलैक्ट्रोन की किरणों का प्रयोग किया जाता है।

"शरीर को शुद्ध कर प्राणी को न्यूट्रोन की वर्षा में स्नान कराना चाहिए। जब किसी अणु में से न्यूट्रोन निकलते हैं, तो उसमें का कुछ प्रोटोन भाग स्वतंत्र हो जाता है। यह अत्यन्त ऊष्मा अर्थात् तीव्र गर्मी में परिवर्तित हो जाता है। इस तीव्र गर्मी से बचने के लिए पूर्ण यंत्र शीतल जल से घिरा रहता है।

"मूल पदार्थ यूरेनियम का एक रूप (आईसोटोप) सुगमता से विखंडित हो जाता है। मैंने पारे का एक ऐसा रूप भी पता कर लिया है, जो विखंडित किया जा सकता है। पारे के उस रूप में विखंडन क्रिया आरम्भ करने के लिए पारे के अणुओं पर न्यूट्रोन की वर्षा करनी पड़ती है। ये न्यूट्रोन विखंडित हो रहे यूरेनियम में से प्राप्त किए जाते हैं। जब एक बार पारे का वह रूप विखंडित होने लगता है तो वह होता रहता है। जहाँ इसके विखंडित होने से अतुल मात्रा में ऊष्मा निकलती, है, वहाँ स्वतन्त्र न्यूट्रोन भी निकलते हैं। ये न्यूट्रोन प्राणी के शरीर में कोषाणुओं के न्यष्टियों को जीवन प्रदान करते हैं।

"इस कार्य के लिए हमें भारी दबाव वाला विद्युत् प्रवाह चाहिए। उसके लिए यहाँ से एक विद्युत् उत्पादक यंत्र ले चलना चाहिए। बहुत शक्तिशाली इलैक्ट्रो-मैगनैटिक फील्ड उत्पन्न करने के लिए यंत्र चाहिए। आईसोटोप पृथक् करने के लिए पाइल बनवाने चाहिए और फिर आईसोटोप में विखंडन आरम्भ करने के लिए रिएक्टर चाहिए।

"यह सब सामान लाहौर में नहीं लग सकेगा। हमें किसी पहाड़ी स्थान पर जाकर ऐसा प्लांट लगाना होगा। कश्मीर में अब यह नहीं हो सकता। वहाँ पर जो दुर्घटना हुई है, उसमें हमें पुनः वहाँ प्लांट लगाने में कठिनाई होगी। मेरा विचार है कि मसूरी, नैनीताल अथवा अल्मोड़ा के किसी एकान्त स्थान पर, जहाँ का जलवायु उत्तम हो, तथा तापमान कम हो, हमें प्लांट लगा लेना चाहिए।"

केशव ने यह सब लिखवाया। साथ ही डाईनमो की स्पैसिफिकेशन्स, इलक्ट्रो-मैग्नेट्स की रूपरेखा तथा अन्य उपकरणों के चित्र बनवाए। इस प्रकार सब वस्तुओं के विषय में विचार करने तथा उनके उचित यन्त्रों का निर्माताओं को आर्डर देने में

कई मास लग गए। इस सब समय हम न्यूयार्क में रहे और गुलबदन जी-जान से केशव की सेवा करती रही।

जब यह सामान तैयार हो रहा था, हम भारत लौट आए। कुछ दिन दिल्ली में रहकर मैं पहाड़ी इलाकों के विषय में जानकारी प्राप्त करने लगा। स्थान के लिए तीन बातें आवश्यक थीं। एकान्त तथा ठंडा स्थान हो, जहाँ का जल मीठा और स्वास्थ्य के लिए अच्छा हो, जहाँ समीप कोई ऐसे नदी-नाले में जलप्रपात हो, जो बारहों मास चलता रहे। इस प्रकार का स्थान ढूँढने में पर्याप्त दौड़-धूप करनी पड़ी। अन्त में अल्मोड़ा के मार्ग में भुवाली से एक ओर, रामनगर गाँव के मार्ग पर एक स्थान मिल गया। वहाँ पर पावर स्टेशन बनाया गया। पश्चात् वहाँ रहने के लिए एक मकान बनवाया। पावर स्टेशन के समीप एक पाइल और एक रिएक्टर लगवा लिया था।

यह सब करते-करते दो वर्ष व्यतीत हो गए। इस सब समय केशव लाहौर कोठी में ही रहा। गुलबदन केशव की सेवा में सन्तोष पाती थी। टूनी जो हमारे साथ योरोप गई थी और स्विट्जरलैंड में ही रह गई थी, अब वह भी लौट आई थी। इस बार वह अपने दोनों लड़कों को भी साथ ले आई। उसकी इच्छा यह थी कि इनको भारत में ही पढ़ाये।

उसका सबसे बड़ा लड़का बिल्कुल अपने फ्रैंच पिता पर गया था। वह इस समय ग्यारह वर्ष का था। उससे छोटा छः वर्ष का था और तीसरी लड़की थी, जो इस समय दो वर्ष से ऊपर की हो चुकी थी। तीनों भिन्न-भिन्न आकृति तथा स्वभाव के बालक थे। इस पर भी टूनी उनको साफ-सुथरा रखने में और उनकी देखभाल करने तथा शिक्षा दिलाने में दिन-रात लगी रहती थी।

गुलबदन केशव की, एक पत्नी से भी अधिक सेवा कर रही थी। राधा अन्य सारा प्रबन्ध तथा हमारे सुख और आराम का प्रबन्ध करती थी। सर्दी की ऋतु में रामनगर में काम बन्द था। इस कारण मैं अब प्रायः लाहौर में ही रहता था। यही विचार था कि इमारत का काम अप्रैल में पुनः आरम्भ हो जाएगा।

इन दिनों केशव ने मीराशाह में हुई दुर्घटना का पूर्ण वृत्तान्त लिखवा दिया, उसने लिखवाया—

"जब आप लोग भवन से चले गए, मैं अपने मन में विचार करने लगा कि क्या रोमिली का व्यवहार क्षमा योग्य है? रोमिली ने विवाह के समय मुझे वचन दिया था कि वह मेरी निष्ठावान पत्नी बनकर रहेगी। पिछली अर्थात् विवाह से पूर्व की सब बातें छोड़ देगी। उस समय उसकी कही बात उसके हृदय से निकलती प्रतीत हुई थी। जब उसने राबर्ट को अपने पिता के फार्म पर काम करने के लिए बुलाया, तो मुझको सन्देह हुआ कि वह अपना वचन भंग कर रही है। मैंने उसके रहन-सहन की देख-रेख आरम्भ कर दी। इस पर भी मुझे उसके व्यवहार में कोई

दोष प्रतीत नहीं हुआ। मैं और वह दोनों परस्पर बहुत प्रेम करते थे।

"हमारे भारत आने तक मुझको वह अपने पति-व्रत वचन पर आरूढ़ ही प्रतीत हुई थी। लाहौर में उसने रावर्ट और टूनी को पत्र लिखा कि वे चले आएँ। उन दिनों मैं अपने स्वर्गधाम की रूपरेखा बनाने में लगा था। रावर्ट बहुत ही अच्छा इंजीनियर था। उसका पिता इंजीनियरी का काम करता था। इस कारण उसकी सेवाएँ स्वर्गधाम के निर्माण करने में अत्यावश्यक हो गई। रावर्ट के विषय में पहला विवाद लाहौर में हुआ। मैंने रोमिली से कहा था, "भारत में बहुत ही कम वेतन पर बहुत अच्छे कारीगर मिल सकते हैं।"

"रोमिली ने कहा था, 'रावर्ट केवल कारीगर ही नहीं, प्रत्युत वैज्ञानिक भी है। उसको हम अपना उद्देश्य बताएँगे तो वह बिना अधिक पूछताछ के हमारे मतलब की वस्तु बना देगा। जहाँ तक वेतन का प्रश्न है, वह हमसे कुछ नहीं लेगा। वह टूनी का पति है और मैं टूनी को अपने 'हेवनली एवोड' का एक निवासी बनाना चाहती हूँ।'

" 'देखो रोमिली!' मैंने अपने मन के सन्देह को स्पष्ट रूप में उसके सम्मुख रख दिया, 'तुम्हारा जो सम्बन्ध रावर्ट से रहा है, उसके कारण तुमको रावर्ट से दूर ही रहना चाहिए।'

" 'मेरा सम्बन्ध तो कॉलेज के बीसियों विद्यार्थियों से रहा है। इससे क्या होता है? मैं अब सबको स्मरण नहीं रखती।'

" 'पर डार्लिंग! तुम स्वयं ही कहती थीं कि रावर्ट तुमको सबसे अधिक पसन्द था। मैं यह नहीं कह रहा कि तुम उसको उसी लगाव के कारण बुला रही हो। मैं तो यह कहता हूँ कि उसके समीप आ जाने से तुमको उसके साथ मधुर सम्बन्ध की याद आती रहेगी और किसी भी समय तुम पदच्युत हो सकती हो।'

" 'नहीं, ऐसा कुछ नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहें।'

"इस प्रकार रोमिली ने मेरे मन में उठी आशंका को दूर कर दिया और हम लाहौर से अपने स्वर्गधाम के लिए स्थान ढूँढ़ने चल पड़े।

"पिताजी को मैंने अपनी योजना नहीं बताई। मैं इसमें समय व्यर्थ गँवाना नहीं चाहता था। हम लाहौर से मरी गये। मरी से एबटाबाद। मार्ग में गलियों का भी निरीक्षण किया। हमने स्थान के चुनाव में कुछ शर्तें बना रखी थीं। पहली शर्त यह थी कि भूमि उपजाऊ हो। दूसरी, स्थान कुछ मैदानी हो और कुछ पहाड़ी हो। तीसरी, वहाँ जलप्रपात हो, जो वर्ष-भर चलता रहे। चौथी, वर्षा कम होती हो। पाँचवीं, बर्फ भी कम पड़ती हो। छटी गर्मियों में तापमान अस्सी डिग्री 'फारनहाइट' से अधिक न हो। सातवीं, वहाँ के निवासी सुन्दर स्त्री-पुरुष हों तथा मतमतांतरों के झगड़ों से ऊपर हों।

"इन आधारभूत बातों के अधिक से अधिक मात्रा में ढूँढने के लिए हम कश्मीर

गए। वहाँ से एबटाबाद। यहाँ के इलाके में तो हमको अपनी शर्तों में कोई भी नहीं मिल रही थी। सबसे बड़ी त्रुटि वहाँ पर यह थी कि रहने वाले मुसलमान प्रायः मूर्ख, गँवार, मजहबी दीवाने और अतिक्रूर प्रकृति रखने वाले थे। वहाँ के अधिकांश स्त्री-पुरुष, कुरूप, तथा बेडौल थे।

''इसके पश्चात् हम कश्मीर की वादी में पहुँचे। भूमि उपजाऊ थी। जलप्रपात पहाड़ों पर थे। मैदानी क्षेत्र भी थे। लोग भी सुन्दर थे परन्तु अनपढ़ थे और मुल्लाओं के हाथों में थे। कश्मीरी पंडित मुसलमानों से भी अधिक भ्रम और साम्प्रदायिकता में फँसे हुए थे। सबसे बड़ी त्रुटि इस क्षेत्र में महाराज का समीप होना था, जो हमारे परीक्षणों में अनधिकार हस्तक्षेप करता। यह स्थान एकान्त भी नहीं था। सहस्रों की संख्या में यात्री प्रतिवर्ष इस ओर आते थे और वे वादी के कोने-कोने में जाने का यत्न करते थे।

''जब हम किश्तवार में पहुँचे तो वहाँ का चित्र ही विलक्षण देखा। सर्वथा एकान्त स्थान था। वादी कश्मीर की वादी से काफी छोटी थी। भूमि उपजाऊ भी काफी थी। वर्षा कश्मीर से कम होती थी। स्त्री-पुरुष सुन्दर, सुडौल और मजहबी पागलपन से पृथक् थे। बौद्ध मत का प्रभाव यहाँ पर पर्याप्त था। जहाँ तक चरित्र की सरलता का प्रश्न था, मुझको वहाँ के लोग बहुत ही भले प्रतीत हुए थे।

''मैं और रोमिली चन्द्रभागा के किनारे पर बैठे अपनी योजनाएँ बना रहे थे कि एक दिन चन्द्रभागा में स्नान करने के लिए दो-तीन पुरुष तथा स्त्रियाँ आईं। वे निस्संकोच भाव में अपने कपड़े उतार नदी में स्नान करने लगे। उन्होंने हमें वहाँ बैठे नहीं देखा। हम धूप से बचने के लिए एक बड़े से पत्थर की छाया में बैठे थे। कुछ देर तक वहाँ स्नान करते रहे। पश्चात् नदी से निकल कपड़े पहिन वहाँ से चले गए। मुझको ऐसा प्रतीत हुआ, मानो जंगली हिरण तथा हिरणियाँ एक ओर से आईं तथा दूसरी ओर निकल गईं। चरित्र में यह सरलता देख इस स्थान पर हम मोहित हो गए। हमने निश्चय कर लिया कि अपना परीक्षण-क्षेत्र इसी स्थान को बनाएँगे। इसके पश्चात् हमने किश्तवार में खेमे लगवाकर रहना आरम्भ कर दिया और स्थान मोल लेने का प्रबन्ध करने लगे।

''यह काम कठिन नहीं था। जो रुपया रोमिली अमेरिका से मँगवा रही थी वह सब बाधाओं को दूर करता जा रहा था। प्रारम्भिक प्रबन्ध में हमको छः मास लग गए।

''भूमि मोल लेकर जहाँ एक ओर भवन निर्माण करने लगे, वहाँ साथ ही जलप्रपात पर एक छोटा-सा कुंड बनवा दिया और वहाँ विद्युत् उत्पादन यंत्रादि लगवाने लगे।

''इन्हीं दिनों राबर्ट तथा टूनी भी वहाँ आ गए। उनके लिए भी हमने रहने का प्रबन्ध कर दिया। टूनी के बच्चा होने वाला था। इस कारण राबर्ट यहाँ की

सुन्दर स्त्रियों से छेड़छाड़ करने लगा। हम नहीं चाहते थे कि हमारे रहने का भवन बनने से पूर्व ही हमारी प्रतिष्ठा मिट जाए। मैंने राबर्ट को समझाया। रोमिली ने भी उससे इस विषय पर बातचीत की। उसने एकाएक देहाती स्त्रियों को तंग करना बन्द कर दिया परन्तु इसका कारण यह नहीं था कि उसको सद्बुद्धि आ गई थी, प्रत्युत उसकी वासना-तृप्ति रोमिली से होने लग गई थी। इस बात का पता मुझे एक दिन चल ही गया। मैं पावर हाउस की इमारत का निरीक्षण कर लौटा तो रोमिली का कमरा भीतर से बन्द था। उन दिनों हम किश्तवार के एक मकान में ठहरे हुए थे। टूनी उस समय अपने कमरे में आराम कर रही प्रतीत होती थी। राबर्ट का कमरा खाली था। मैं अपने कमरे में बैठ एक पुस्तक पढ़ने लगा। मेरा विचार था कि रोमिली आराम कर रही है।

"मुझको बैठे अभी आधा घंटा भी नहीं हुआ था कि रोमिली का कमरा खुला और राबर्ट स्लीपिंग गौन पहिने भीतर से निकला। मैंने उसकी ओर देखा तो वह आँखें चुराकर कमरे में चला गया। उसका कमरा टूनी के कमरे के साथ लगता था। मैं अभी विस्मय में इसका अर्थ समझने की कोशिश कर ही रहा था कि मैं उठा और रोमिली के कमरे में चला गया। रोमिली अपने पलंग पर निर्वस्त्र लेटी हुई थी। मुझको देख वह चौंककर उठ बैठी। मैं एक-दो क्षण उसका मुख देखता रहा। पश्चात् यह कह, "रोमिली डार्लिंग ! मैं अन्दर आ जाऊँ या तुम बाहर आओगी ?"

"मैं बहुत थकी हुई हूँ। यहाँ बैठकर बता दीजिए। क्या कहना चाहते हैं ?" उसने मेरे सामने लेटे-लेटे ही चादर ओढ़ ली।

मैंने कहा, "थकी हो तो सो जाओ। बात रात के खाने के समय हो जावेगी।"

"जो बात होनी है, वह मैं जानती हूँ। मेरा उसमें केवल इतना ही कहना है कि आप अपना काम करते जाइए। मैं उसमें हस्तक्षेप नहीं करूँगी। आप मेरी बातों में हाथ मत डालिए।"

"तो वह वचन, जो तुमने विवाह से पूर्व मुझे दिया था, भंग हो गया है ?"

"वचन भंग हुए तो चिरकाल हो गया है। केवल पकड़ी आज गई हूँ। इस पर भी मैं यही निवेदन करती हूँ कि एक समझदार पति को इन छोटी-सी बातों में ध्यान नहीं देना चाहिए।"

"तो क्या इसका अर्थ यह समझ लूँ कि तुम्हारे दो पति होंगे ?"

"क्या हानि है ?"

"यदि सन्तान हुई और वह राबर्ट के ऊपर गई तो लोग मेरी हँसी उड़ायेंगे।"

"कौन हँसी उड़ायेगा ? क्या हमको लोगों की अरुचि-रुचि देखकर अपना जीवन चलाना है ?"

"मैं उस समय अपने उस महान् परीक्षण में लगा हुआ था, जो मेरे जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। मैं स्वर्गलोक के निर्माण में लीन था और उस स्वर्गलोक में इन्द्र

के समान रहना चाहता था। इस कारण मैंने उस समय रोमिली से केवल इतना कहा, "जो कुछ तुमने किया है मैं उसको अपने मन से निकालने के लिए तैयार हूँ परन्तु उसमें केवल यह शर्त है कि मुझको मेरा पति का भाग मिलता रहे और यदि राबर्ट अथवा अन्य किसी से सन्तान हुई तो उसे मरवा डालूँगा। मैं संसार में मूर्ख पति नहीं कहाना चाहता।"

"मैं यह दोनों बातें स्वीकार करती हूँ।" रोमिली ने कहा।

"इस उत्तर को प्राप्त कर मैं अपने कमरे में आकर अपने भविष्य के विषय में विचार करने लगा। इन घटना के पश्चात् छः मास तक मैंने रोमिली के साथ एक बिस्तर पर पाँव नहीं रखा। इस बीच में उसने कई बार मेरे कमरे में आने की इच्छा की, परन्तु मैं अपने मन को उससे प्यार करने के लिए तैयार नहीं कर सका।

"इस समय हमारा भवन और पावर स्टेशन तैयार हो गए थे। अपने भवन का नाम मैंने केशव-भवन रखा और अपने पूर्ण इलाके का नाम स्वर्गलोक। मैंने पावर स्टेशन से अपने भवन में विद्युत् से प्रकाश, गरम करने का प्रबन्ध और अन्य सुविधाएँ तैयार कर लीं और अपने भवन में रहने लगा। इस भवन में प्रत्येक वस्तु, जो मनुष्य को सुख तथा आराम के लिए मैं विचार कर सका, मैंने लगवा ली।

"इस भवन में जाने पर मेरी रोमिली से सुलह हो गई। उसने मुझको यह वचन दिया कि जब तक टूनी स्वस्थ रहेगी, वह राबर्ट से सम्पर्क नहीं बनाएगी। इसके अतिरिक्त मैं इस बात को अनुभव करने लगा था कि राबर्ट हमारे भवन का एक आवश्यक अंग बन गया है। इससे उसपर कुछ अधिक प्रतिबन्ध लगाने उचित नहीं। राबर्ट ने हमारे भवन का मानचित्र तैयार किया था। उसने कमरों तथा ड्राइंगरूम की सजावट का प्रबन्ध किया था। जब मैं पारे के आईसोटोप्स तैयार कर रहा था, तब वह हमारे भवन को अधिकाधिक सुन्दर तथा सुखदायक बना रहा था।

"मेरी यह परीक्षा की बात हुई थी कि पारे के कई आईसोटोप्स हैं। आईसोटोप्स उन मूल तत्त्वों को कहते हैं, जिनके रासायनिक गुण सर्वथा समान हों, परन्तु परमाणु-भार भिन्न-भिन्न हों। एक ही मूल तत्त्वों के आईसोटोप्स को पृथक्-पृथक् करने के लिए इलैक्ट्रोमैगनैटिक आकर्षण से काम लिया जाता है। पारे की बहुत बारीक फुहार विद्युत् से बनाए चुम्बकों के मध्य में से गुजारी जाती है। आईसोटोप्स के अणुओं पर चुम्बक का आकर्षण भिन्न-भिन्न मात्रा में होने से पृथक्-पृथक् हो जाते हैं। कई बार इस प्रक्रिया को करने पर आईसोटोप्स पर्याप्त शुद्ध अवस्था में मिल जाते हैं। इस प्रकार पारद के दो आईसोटोप्स पृथक्-पृथक् कर लिये गए परन्तु दोनों के अणु खंडित नहीं होते थे। इनमें से एक, जिसका अणुभार २०२ था, यूरेनियम के न्यूट्रोन की चोट से खंडित होने लगा। यह एक चमत्कारिक खोज थी। इस पारद के अणु के विभक्त होने से अणु के कुछ अंश में प्रोटीन स्वतन्त्र होने लगे। यह शक्ति में परिणत होने लगे। इससे विद्युत् प्रवाह और तदनन्तर उससे अन्य अनेक कार्य

किए जाने लगे।

"मुझको आईसोटोप्स पृथक्-पृथक् करने के लिए पाईल बनवाने में पूरा एक वर्ष लग गया। पाईल बनने के पश्चात् पारे को विखंडित करने वाला आईसोटोप्स बनने लगा। इसके बन जाने के पश्चात् सबसे पहले मैंने इलैक्ट्रोनिक ब्रेन बनाने का यत्न किया।

"पहले लोहे का एक पुतला बना। उसकी खोपड़ी में इलैक्ट्रोनिक ब्रेन लगाया गया। उस मस्तिष्क से हाथ-पाँव के से कार्य करने के लिए यंत्र लगा दिए गए। पहले विद्युत् संचालित पुतला लोहे का बनाया गया और वह केवल दो या तीन प्रकार के कार्य करता था। धीरे-धीरे मैंने उसमें उन्नति करनी आरम्भ कर दी। अन्त में ऐसे पुतले बनाए गए, जो बीस से पच्चीस तक कार्य कर सकते थे। ऐसे कई पुतले बनाए और सब मिल-मिलाकर तीन सौ प्रकार के कार्य हम इन पुतलों से लेने लगे। इस समय राबर्ट एक प्लास्टिक का पुतला बनाने में सफल हो गया, जिसमें कार्य करने वाला ढाँचा तो लोहे का था। परन्तु उस ढाँचे पर प्लास्टिक का खोल था। बीच में हवा भर दी गई। इससे प्लास्टिक के पुतले का स्पर्श मनुष्य समान कोमल बन गया। इसके साथ ही इलैक्ट्रोनिक शक्ति से इतनी ऊष्मा उत्पन्न करने का प्रबन्ध कर दिया गया, जिससे पुतले में मानवी तापक्रम बन गया।

"इन पुतलों को सुन्दर स्त्री अथवा पुरुष का रूप राबर्ट ने दिया। यदि कोई अपरिचित व्यक्ति राबर्ट के बनाए इन पुतलों को देख लेता, तो उनको मानवी होने का विश्वास कर लेता। विशेष रूप में स्नानागार में अर्ध-नग्न स्त्री का चलता-फिरता पुतला एक विशेष प्रकार की गुदगुदी उत्पन्न करने वाला सिद्ध होता था।

"इस समय रोमिली एक नयी सृष्टि रचने में लगी हुई थी। जब हम किश्तवार में रहते थे, तो हमने एक नौकर रखा हुआ था। उसका नाम नूरुद्दीन था। रोमिली ने उसको भूमि का एक टुकड़ा देकर भवन के बाहर एक मकान बनवा दिया। वह कुछ इधर-उधर का काम करता था और भूमि पर खेती-बाड़ी करता था। रोमिली के कहने पर नूरुद्दीन ने आसपास के गाँवों में से लोगों को भवन के समीप आकर बसने का निमंत्रण देना आरम्भ कर दिया। जो स्वीकार करता था, उसको हम थोड़ी सी भूमि खेती-बाड़ी के लिए पाँच वर्ष तक बिना किराये के दे देते थे।

"हमारे भवन का निर्माण-कार्य लगभग समाप्त हो चुका था। अतएव हमारी भूमि पर आकर खेती-बाड़ी करने वालों के लिए हमने एक गाँव बनाने की योजना कर दी। इसमें भी राबर्ट की सेवाएँ बहुत उपकारी सिद्ध हुईं। उसने एक छोटे से गाँव का मानचित्र बना दिया। गाँव का नाम वहाँ के एक पीर के नाम पर मीराशाह रख दिया। उसमें सड़कें, विद्युत् प्रकाश तथा ऊष्मा के लिए उचित प्रबन्ध और अन्य उद्यान बनाए। रोमिली ने उसमें लोगों को रहने का और उन उपकरणों के प्रयोग का ढंग, जो हमने प्रत्येक मकान में लगवाए थे, सिखाया। तब से गाँव के लोग

रोमिली को मालकिन कहने लगे।

"रोमिली ने गाँव के प्रबन्ध के लिए गाँव के लोगों की पंचायत बना दी और उस पंचायत में अपने झगड़ों का शान्तिपूर्ण निर्णय करने का ढंग सिखाना आरम्भ कर दिया।

"मैंने इलैक्ट्रोनिक यंत्रों को अधिक और अधिक कल्याणकारी कार्यों में प्रयोग करना आरम्भ कर दिया।

"भवन में पाचक और एक-आध नौकर के अतिरिक्त कोई प्राणी काम करने के लिए नहीं था। प्रत्येक काम यंत्रों द्वारा होता था। भवन की झाड़-फूँक से लेकर रोटी खिलाने तक का काम यंत्र करते थे और राबर्ट ने इन यंत्रों को प्लास्टिक के पुतलों में ऐसे ढंग से लपेटा कि वे मनुष्य की भाँति काम करते प्रतीत होते थे।

"भवन के सब यंत्रों की देख-रेख राबर्ट करता था। रोमिली और टूनी गाँव की पंचायत का और गाँव के लोगों की सुविधाओं का प्रबन्ध करती थीं। मैं अपने इलैक्ट्रोनिक्स पर नये-नये परीक्षण करता रहता था।

"मैंने पेड़-पौधों पर न्यूट्रोन तथा इलैक्ट्रोन का प्रभाव देखना आरम्भ कर दिया। जब अणु विखंडित होता है तो उसके भीतर रहने वाले तीनों प्रकार के कण निकलते हैं। एक इलैक्ट्रोन, दूसरे न्यूट्रोन और तीसरे प्रोटोन। इलैक्ट्रोन तो विनाशकारी प्रभाव रखते हैं। न्यूट्रोन जीवन-संचार का कार्य करते हैं। प्रोटोन शक्ति-प्रसार करते हैं। शक्ति, ऊष्मा, विद्युत्-शब्द इत्यादि रूपों में प्रकट होती है। मेरा प्रयत्न यह था कि अणु में से प्रष्फुटित होने वाले इन तीनों प्रकार के कणों को पृथक्-पृथक् कर सकूँ। इसके लिए इलैक्ट्रोन-मैगनैटिक यंत्र उपकारी सिद्ध हुआ। जहाँ पर मैंने विनाशकारी तथा ध्वंसकारी कार्य करना होता, मैं इलैक्ट्रोन को पृथक् कर उस ओर ले जाता, जिधर उनके कार्य की आवश्यकता होती। जहाँ ऊष्मा, विद्युत् इत्यादि की आवश्यकता होती, वहाँ प्रोटोन बहाकर ले जाता और जहाँ जीवन-संचार करना होता, वहाँ न्यूट्रोन का प्रयोग करता।

"इस रहस्य के जानने पर मेरे लिए विखंडित अणु से असीम कार्यक्षेत्र खुल गया। मैंने खेतों पर न्यूट्रोन की वर्षा के लिए यंत्र बनाया। इसका परिणाम बहुत ही चमत्कारपूर्ण सिद्ध हुआ। मैंने प्राणियों के शरीर पर भी अणु के भीतर के कणों का प्रभाव देखना आरम्भ कर दिया। चूहे, बिल्लियाँ, लोमड़ियाँ, खरगोश आदि अनेकानेक जानवरों पर अपने परीक्षण करने लगा।

"इस प्रकार शरीर-शुद्धि अर्थात् मल-निवारण के लिए उपकरण तथा जीवन-संचार करने के लिए यंत्र बनाने में सफल हो गया।

"इस समय चारों ओर सुख-सुविधा बरसती देख राबर्ट के मन में विकार उत्पन्न होने लगा। उसने पुनः रोमिली से सम्बन्ध बनाने का यत्न किया परन्तु

रोमिली का मन अब गाँव के एक पंच शिवानन्द से मेल की इच्छा करने लगा था।

"मैं अपने परीक्षणों में इतना लीन था कि मेरा ध्यान इस ओर बिल्कुल नहीं था, इस पर भी एक दिन यह अवस्था मुझपर प्रकट हो गई। एक सायंकाल मैं अपनी प्रयोगशाला में से निकल चाय का प्रबन्ध कर रहा था कि रोमिली राबर्ट को, आश्रय दिए हुए लाती दिखाई दी। राबर्ट घायल हुआ था। उसका सिर फट चुका था। उसमें से रक्त प्रवाहित हो रहा था। वह लंगड़ाकर चल रहा था। उसकी टाँगों में भारी चोट आई प्रतीत होती थी। मैंने चाय का ध्यान छोड़ राबर्ट की मरहम-पट्टी की और उसको बिस्तर पर लिटाकर रोमिली से पूछने लगा कि क्या हुआ है। रोमिली ने बताया कि पहाड़ से पाँव फिसल जाने के कारण यह खड्ड में गिर पड़ा था। सौभाग्य से बच गया है।

"परन्तु उसी रात राबर्ट ने मुझको बताया, 'रोमिली वन में शिवानन्द से विहार कर रही थी कि मैं वहाँ जा पहुँचा। मुझसे यह सहन नहीं हो सका। रोमिली मुझको यह कहकर टालती रहती थी कि उसने तुमको वचन दिया है कि अब वह किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध नहीं रखेगी। इस कारण क्रोध में आकर मैं रोमिली को ही मार डालने वाला था कि शिवानन्द मुझसे भिड़ गया। वह, मेरे अनुमान से कहीं अधिक बलशाली निकला। यदि मेरे पास पिस्तौल नहीं होती तो वह मुझको मार डालता। जब उसने मुझको पहाड़ पर से धकेलकर खड्ड में फेंक दिया तो मैंने मर जाने का बहाना कर दिया। मैं एक ढेर की भाँति झाड़ियों में पड़ा रहा। वह यह देखने के लिए कि मैं मर गया हूँ कि नहीं, खड्ड में उतरकर मुझको देखने लगा। इस समय मैंने जेब से पिस्तौल निकालकर उस पर वार किया। एक ही गोली से उसका काम तमाम कर दिया। पश्चात् उसको पत्थरों के नीचे दबाकर छोड़ आया हूँ।'

"इस घटना से मुझको भारी दुःख हुआ। रोमिली का पुनः वासनावश अपने आपको दूसरों के अधीन करना दुःखदाई था। साथ ही राबर्ट को नररक्त बहाने का रस मिलना, अति भयंकर सिद्ध हुआ। मैं अपनी अवस्था पर विचार करने लगा था। जब सब कोई उलटे मार्ग पर चलने लगे तो मैं भी उनके साथ बह गया।

"भवन में इतना आराम और सुख था कि इंद्रियों को सुख माँगने से रोक नहीं सका। मैं भी अपनी वासना-तृप्ति के साधन बनाने लगा। मैंने गाँव में एक अप्सरा भवन निर्माण किया और उसमें दूर-दूर से सुन्दर लड़कियों को एकत्रित कर उनको संगीत, नृत्य सिखाने का प्रबन्ध करने लगा। फिर उन लड़कियों से अपना सम्बन्ध बनाने लगा। मैं समझने लगा कि वह स्वर्ग-लोक ही क्या हुआ, जिसमें अप्सराएँ नहीं। वह बहिश्त ही कैसा, जहाँ हूरें नहीं मिलतीं। परिणाम यह हुआ कि हमारे गाँव में दिन-रात छनक-छनक पायल बजने लगी और देश-विदेश के संगीत की ध्वनि उठने लगी।

"राबर्ट को यह गाना-बजाना पसन्द नहीं था। वह अपना मनोरंजन गद्दी

जंगली लड़कियों से करना चाहता था। गद्दी स्त्रियाँ इलाके के अन्य रहने वालों से अधिक सच्चरित्र थीं। इस कारण राबर्ट को वह सफलता नहीं मिली, जो वह उनकी निर्धनता के कारण प्राप्त करने की आशा करता था।

"एक दिन सायंकाल वह एक बंडल-सा अपनी पीठ पर उठाए हुए भवन में पहुँचा। मैं ड्योढ़ी में खड़ा काले आसमान पर तारों की छटा देख रहा था। मैंने उसको भवन के तहखाने की ओर जाते देख पूछा, 'यह क्या है?'

" 'कुछ परीक्षण की वस्तु है।'

"परीक्षण शब्द ने मेरे कान खड़े कर दिए। राबर्ट ने कभी भी मेरे परीक्षणों में रुचि नहीं ली थी। जब मैं कोई यंत्र-निर्माण करता था, तो वह उसकी रूपरेखा कलात्मक तथा सुन्दर बनाने में मेरी सहायता करता था। आज उसको परीक्षण के लिए कुछ लाने की बात सुन मेरे मन में उत्सुकता पैदा हो गई। मैं उसके पीछे-पीछे भीतर चला गया। वह इलैक्ट्रोनिक भट्टी के समीप जाकर खड़ा हो गया। मैंने उससे फिर पूछा, 'क्या है यह?'

" 'एक जानवर था। मुझको बहुत भला प्रतीत हुआ। मैं पकड़कर भवन में लाना चाहता था, परन्तु वह पकड़ में नहीं आता था। इस पकड़-धकड़ में उसका गला दब गया और अब वह मर गया। अब मैं उसको भट्टी में जला देने के लिए लाया हूँ।'

"उसने गठरी भूमि पर रख दी। मैंने गठरी खोली। यह कम्बल में बँधी हुई एक युवा लड़की थी। मैं देखकर स्तब्ध रह गया। मैंने प्रश्न-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा। उसने बताया, 'यह नव गाँव के गद्दी पंच की बड़ी लड़की है। जंगल में घूमती हुई मिल गई थी। मैंने उसको बहुत समझाया, परन्तु वह मानी नहीं। मैंने बलप्रयोग करना चाहा तो यह लड़ने लगी। विवश मुझको उसे समाप्त करना पड़ा। अब इसको इस भट्टी में जलाकर इसकी खुर-खोज मिटा देना चाहता हूँ।'

"मैं इस कथा को सुन संज्ञा-शून्य अवाक् खड़ा रह गया। उसने भट्टी का मुख खोला, उस लड़की को उसने धकेल दिया और भट्टी का मुख बन्द कर दिया। पश्चात् उसने बटन दबाकर शव को भस्म कर दिया। इस भट्टी में तो हड्डियाँ तक वाष्प बन अदृश्य हो जाती थीं।

"यह सब पाँच मिनट में हो गया। वहाँ से मैं राबर्ट को अपने कमरे में ले गया। वहाँ ले जाकर उसके लिए कॉफी का एक प्याला मँगवाया और कहने लगा, 'राबर्ट! यह एक नयी बात हुई है। मैं इसे बिल्कुल पसन्द नहीं करता।'

" 'तुम कौन हो इसको पसन्द करने वाले? यहाँ रोमिली का राज्य है और मैं जो कुछ कर रहा हूँ, उसकी अनुमति से ही कर रहा हूँ। यह लड़की अचेत थी। मरी नहीं थी। मैं इसकी आत्मा को देखना चाहता था और वह इसके डालने पर दिखाई नहीं दी।'

"मैंने तुरन्त रोमिली को बुलाया और उसको पूर्ण घटना से अवगत कराकर,

कहा, 'रोमिली ! तुमको यह सब कुछ बन्द करना पड़ेगा। अन्यथा मैं आज यहाँ से बिदा हो जाऊँगा।'

"मैंने राबर्ट को कहा, 'तुमने एक जीवित मनुष्य को जला डाला है। यह अपराध है।'

" 'मैं आत्मा को देखना चाहता था। शरीर जलने के पश्चात् वह इस भट्टी में होनी चाहिए थी। भट्टी खोलने पर वह नहीं निकली।'

" 'मैं यह परीक्षण पसन्द नहीं करता।'

"राबर्ट मेरी इस धमकी को हँसी में उड़ाना चाहता था। उसने कहा, 'तब क्या होगा ?'

"परन्तु रोमिली ने परिस्थिति को सम्हाल लिया। उसने राबर्ट से कहा, 'होगा यह कि तुमको अमेरिका का टिकट देकर अमेरिका भेज दूँगी। तुम यहाँ इस प्रकार नहीं रह सकते।'

" 'मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा। मैं टूनी और तुम दोनों को प्यार करता हूँ। तुम दोनों को छोड़कर मैं कैसे जा सकता हूँ।'

" 'तुम टूनी को साथ ले जाओ, मुझको कुछ भी आपत्ति नहीं।'

" 'मैं तुमको भी चाहता हूँ। तुमने मेरा तिरस्कार किया, इस कारण मैं अपनी आवश्यकताएँ दूसरे स्थान पर पूरी करना चाहता हूँ।'

" 'तुम निपट पशु हो। तुमको गले में रस्सा बाँधकर रखना पडेगा।'

" 'मैं रस्सा तोड़कर भाग जाऊँगा। देखो रोमिली ! मैं कुरूप हूँ परन्तु उच्च शिक्षा पाने के कारण मेरी इच्छाएँ बहुत उच्च कोटि की बन गई हैं। मैं विवश हूँ। मैं नहीं जानता कि मैं क्या करूँ ?'

"इस समय मैंने उससे कहा, 'तुम अप्सरा भवन का प्रयोग कर सकते हो।'

" 'पर वहाँ मेरे मतलब की एक भी वस्तु नहीं है।'

" 'तुम अमेरिका चले जाओ।' रोमिली ने धीरे से कहा, 'वहाँ तुम मनवांछित फल पा सकोगे। मैं तुम्हारी पैन्सन लगा दूँगी।'

" 'पर मैं टूनी को भी साथ ले जाना चाहता हूँ।'

" 'हाँ, यदि वह स्वेच्छा से जाना चाहे।'

"इस पर रोमिली, टूनी और राबर्ट में इस विषय पर विचार-गोष्ठियाँ होने लगीं। मैं उनकी गोष्ठियों से पृथक् रहता था।

"मेरे मस्तिष्क में एक धुन सवार थी। मैं वनस्पतियों के विकास करने में सफल हो गया था। जंगली आमलों के समान मोटे-मोटे दानों वाले मटर, आठ-दस सेर की गोभी का फूल, पाँच सेर की गाजर, सात सेर की शलजम, बीस सेर का जिमींकन्द तैयार होने लगा था। मैं मन में विचार करता था कि जैसे वनस्पतियों में न्यष्टियों को स्फूर्ति प्रदान कर, मैं विशेष कंद के फल-फूल तैयार करने लगा हूँ, वैसे ही बच्चों

पर वही प्रयोग करूँ तो हमें पन्द्रह फीट के मनुष्य बना देने असम्भव नहीं। इस निमित्त एक दिन मैंने एक कुत्ते के पिल्ले पर प्रयोग किया। वह मर गया। फिर मैंने एक कुतिया पर, जिसके पेट में बच्चे थे, अपना परीक्षण किया। वह भी मर गई। इस प्रकार मेरी युक्ति और गणना ठीक होने पर भी सफलता मिल नहीं रही थी।

"मैं जनन-विज्ञान पर नित नयी पुस्तकें मँगवाता था, उनका अध्ययन करता था और जब कोई नया विचार मन में आता, उस पर परीक्षण करने लगता था।

"एक चुहिया, जिसके पेट में बच्चे होने का मेरा अनुमान था, पर परीक्षण कर रहा था कि मेरा यन्त्र बिगड़ गया। जन्तु पर न्यूट्रोन की वर्षा होने के स्थान इलैक्ट्रोन की वर्षा होने लगी। चुहिया को दस्त, पेशाब तथा पसीना आने लगा। मैंने देखा कि चुहिया मरने ही वाली है। इस समय मैंने यन्त्र में दोष देख लिया। मैंने उसे ठीक कर उस मरणासन्न चुहिया पर न्यूट्रोन की वर्षा आरम्भ कर दी। आधे घंटे में न केवल चुहिया मरने से बच गई प्रत्युत वह स्वस्थ और सुन्दर हो गई।

"इससे मेरे मन में कायाकल्प का विचार जाग्रत् हुआ। मैंने इसी दिशा में और कई परीक्षण किए और अन्त में मैंने कायाकल्प की प्रक्रिया पूर्ण कर ली।

"कई दिनों के वार्तालाप ये टूनी, राबर्ट और रोमिली में एक समझौता हो गया प्रतीत होता था। अब मैं अपने परीक्षणों में और अपने अप्सरा भवन में इतना लीन था कि मुझको उनकी बातों में ध्यान देने का अवकाश ही नहीं था। एक दिन रोमिली ने स्वयं बताया, 'मैंने राबर्ट को समझा दिया है। वह अब वैसी बात नहीं करेगा।'

" 'गद्दी लड़की के लापता हो जाने का क्या परिणाम निकला?'

" 'गद्दियों में भारी हलचल मच गई थी परन्तु जब उसका कोई पता-ठिकाना न मिला तो वे यह समझ चुप कर गए कि उसे शायद बाघ अथवा रीछ उठा ले गया है और मारकर खा गया है।'

" 'देखो रोमिली!' मैंने उसको बताया, 'मैं एक अद्भुत आविष्कार की ड्यौढी तक पहुँच गया हूँ और मैं चाहता हूँ कि तुम तो कम-से-कम इस समय उच्छृंखलता का व्यवहार न रखो। कहीं हमको यहाँ से इस उच्छृंखलता के कारण भाग जाना पड़ा तो जो यहाँ पर हुआ है, पुनः होना कठिन हो जावेगा।'

"मैंने रोमिली को परीक्षणों का परिणाम बताकर कहा, 'मैं समझता हूँ कि जरा और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए देवता, दानव, सन्त, महात्मा और योगी, तपस्वी आदि-काल से यत्न करते रहे हैं। वह मैं अनायास ही प्राप्त कर रहा हूँ। मैंने इतर जन्तुओं पर अनेक परीक्षण किए हैं और अब मैं किसी बूढ़े पुरुष अथवा स्त्री पर परीक्षण करने वाला हूँ। यदि इसमें भी सफल हो गया तो मेरी अगली

खोज कहे जाने वाले परमात्मा पर होगी। शक्ति प्रकृति का एक रूप ही है। परमात्मा केवल मात्र एक महान् शक्ति है। सो उसको ढूँढकर उसको मनुष्य के लाभ के लिए लगा देना मेरा काम होगा।'

''रोमिली के मन में मेरी सफलता की बात सुन कितनी प्रसन्नता हुई, उसका अनुमान इस बात से लग सकता है कि वह मेरा मान करने लगी और मेरे परीक्षणों में रुचि प्रकट करने लगी। अब वह मुझको अपने साथ गाँव ले जाती और हम सोचते रहते कि किस वृद्ध व्यक्ति पर अपना परीक्षण करें।

''इन दिनों टूनी, जो प्रसव के पश्चात् स्वस्थ हो चुकी थी, राबर्ट के साथ घूमती रहती थी। राबर्ट का व्यवहार भी ठीक था। वह अभी भी भवन तथा गाँव में सुधार करता रहता था। राबर्ट में जो कुछ भी दोष रहा हो, एक बात उसमें विशेष थी। वह गाँव के घर-घर जाकर उनके दोष तथा उनमें रहने वाली आवश्यकताओं को जान, उनमें सुधार किया करता था। अब हमने गाँव के सब रहने वालों को समझा-बुझाकर पंचायत का कर देने की व्यवस्था कर दी। गाँव में प्रत्येक रहने वाले के पास खेती-बाड़ी के लिए भूमि थी। फलों के, उद्यान के और उनमें पैदावार में चमत्कारपूर्ण उन्नति हमारे प्रयत्नों से हो रही थी। किश्तवार से फल जम्मू इत्यादि शहरों में जाने लगे थे। गाँव के कुछ लोग खनिज पदार्थों का व्यापार भी करने लगे थे। पंचायत के पास धन आता था, तथा उससे गाँव का प्रबन्ध चलता था।

''शिवानन्द, गाँव वालों के विचारानुकूल जीविकोपार्जन के लिए पंजाब चला गया था। उसकी एक माँ थी, वह लगभग साठ वर्ष की विधवा स्त्री थी। एक दिन वह अपने खेत में काम करती-करती थककर खेत की मेंड पर बैठी विश्राम कर रही थी, मैं और रोमिली उधर से गुजर रहे थे। वह बैठी हुई विरह गीत गा रही थी। उसके गीत में कुछ विशेष रस था, जिसने मुझे आकर्षित किया। मैंने रोमिली से कहा, 'बहुत ही मधुर स्वर है इस औरत का।'

'' 'यह शिवानन्द की माँ सरस्वती है। इसको अपने पुत्र के चले जाने का भारी दुःख है।'

''हम वहाँ खड़े-खड़े उसका गीत सुनते रहे। उसने हमें देखा तो चुप हो गई। रोमिली ने कहा, 'सरस्वती ! गाओ। बहुत अच्छा गाती हो तुम !'

'' 'मालकिन ! यह गाना नहीं, रोना है।'

''इस पर मैंने पूछ लिया, 'क्या गाती हो तुम ?'

''वह कुछ देर तक मेरे मुख पर देख, कहने लगी, 'क्या सुनोगे मालिक ! एक बूढ़ी औरत के मन की हूक है।'

''मैंने सहानुभूतिपूर्ण मुद्रा बनाकर पूछा, 'सरस्वती ! क्या यह कोई मन का रहस्य है ?'

'' 'रहस्य ? इसमें गुप्त तो कुछ भी नहीं। संसार में प्रिय-प्रीतम की बातें किससे

छिपी हैं ? मेरे भी एक प्रियतम थे। निर्दयी मौत ने उनको मुझसे छीन लिया। वे जाने से पूर्व अपनी एक निशानी मुझको दे गए थे। वह था शिवानन्द। जब उसके पिता का देहान्त हुआ तो वह छः मास का था। तब से मैं उसको अपने प्रियतम का प्रतिनिधि मान प्रेम करती रही। वह बड़ा हुआ और ठीक अपने पिता के समान सुन्दर-सुडौल निकला। परन्तु भगवान् जाने क्या हुआ कि एक दिन घर से गया फिर वापस नहीं आया। अब मैं अकेली हूँ। बूढ़ी हो गई हूँ और निस्सहाय इस खेत में मेहनत कर अपना जीवन चलाती हूँ। जब खेतों में काम करते-करते थक जाती हूँ तो शिवानन्द और उसके पिता को याद कर लिया करती हूँ और आँखों में अटके दो-तीन बूँद आँसू बहा लेती हूँ।'

"यह कहती-कहती वह रो पड़ी और आँचल से आँसू पोंछने लगी। मेरे मन में एक विचार आया। उससे प्रेरित हो मैंने उसको कहा, 'तुम कोई अपना साथी क्यों नहीं ढूँढ लेतीं जो तुमको इस खेत के बोने-जोतने में सहायता दे सके?'

" 'अब इस बूढ़ी औरत को कौन साथी मिलेगा ! अब तो भगवान् से प्रार्थना है कि वह मुझको शीघ्र बुला ले। बहुत थक गई हूँ मालिक !'

"मैंने कहा, 'सरस्वती, एक बात कहूँ ?'

" 'कहो मालिक !'

" 'मेरे पास एक ऐसा इलाज है, जिससे मैं तुमको फिर से पन्द्रह वर्ष की युवती बना सकता हूँ।'

"वह खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसने समझा कि मैं उसकी हँसी उड़ा रहा हूँ। इस कारण उसने कहा, 'गरीब औरत देखकर हँसी मत करो ! मैं बहुत दुखिया हूँ।'

" 'मैं हँसी नहीं करता सरस्वती ! तुम कल भवन में आना और यदि कोई बूढ़ा जानवर घर में हो तो ले आना। मैं तुमको अपनी शक्ति दिखाऊँगा।'

"इतना कह मैं अपने रास्ते पर चल पड़ा। मेरा विचार था कि वह हमारी बात को केवल हँसी समझ नहीं आएगी। मार्ग में रोमिली ने भी कहा, 'इस बूढ़ी पर परीक्षण मत करिएगा। इसके पति के देहान्त का उत्तरदायित्व मुझपर है और कहीं इसके मरने में आप कारण न बन जाएँ।'

" 'रोमिली ! मुझको अपने परीक्षणों पर पूर्ण विश्वास है। मैं कुत्तों और बिल्लियों पर तो परीक्षण कर चुका हूँ। अब मैं किसी मनुष्य पर करना चाहता हूँ। सरस्वती तो आएगी नहीं, यह मैं जानता हूँ। इस पर भी मैंने आज से कोई उचित व्यक्ति ढूँढना आरम्भ कर दिया है, जिस पर मैं अपने विचारों का परीक्षण कर सकूँ।'

" 'किसी मनुष्य को इस कार्य के लिए तैयार करना अति कठिन है।'

" 'सरस्वती जैसा ही कोई जीवन से तंग आया व्यक्ति तैयार हो सकेगा।'

"अगले दिन सरस्वती अपनी बूढ़ी गाय के गले में रस्सा बाँध भवन के द्वार पर आ पहुँची। उसको देख मेरी बरबस हँसी निकल गई। मेरी हँसी को सुन उसका

मुख लाल हो गया। उसने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, 'मालिक, निर्धन दुखियारी लोगों से ऐसी हँसी भगवान् को नहीं सुहाती।'

" 'हँसी नहीं सरस्वती ! आओ। इसको पिछली ओर से भीतर ले आओ। मेरी हँसी तो इस कारण निकली थी कि इसको कमरे के भीतर जहाँ चिकित्सा होगी, कैसे ले जाऊँ ?'

"मैंने एक नौकर को सरस्वती तथा उसकी गाय को भीतर लाने को कह रोमिली को बुला लिया। खींच-खाँचकर क्रेन से ऊपर की छत पर गाय को एक कमरे के भीतर ले जाया गया। उसको यंत्र के नीचे खड़ा किया और प्रथम प्रयोग आरम्भ हुआ। गाय पच्चीस वर्ष की बूढ़ी थी। उसकी सबसे बड़ी बछड़ी भी बच्चे देने बन्द कर चुकी थी। वह सूखकर काँटा हो चुकी थी।

"गाय की शोधन-क्रिया की गई। वह इस क्रिया से आधे घंटे में ही मरणासन्न हो गई। मैंने उसको एक घंटे-भर की नियत चिकित्सा दी। इस क्रिया के पश्चात् गाय इतनी दुर्बल हो गई कि वह चलकर दूसरे कमरे में नहीं जा सकती थी। उसको एक चौड़े तख्ते पर लेटा कर ले जाया गया। दूसरे कमरे में उसे रसायन-क्रिया दी गई।

"सरस्वती अगले दिन गाय को देखने आई तो चकित रह गई। गाय बहुत मजे में घास खा रही थी। सरस्वती ने उसे आवाज दी तो वह सिर हिलाकर अपनी प्रसन्नता प्रकट करने लगी। सरस्वती ने गाय को प्यार किया तो वह कान हिलाकर हर्ष प्रकट करने लगी।

"पश्चात् गाय की एक सप्ताह भर और चिकित्सा की गई। सातवें दिन गाय एक बछड़ी के रूप में उछलती-कूदती भवन से सरस्वती के साथ चली गई।

"इसके दो मास पश्चात् मैं लॉन में बैठा वसन्त ऋतु के आगमन की शोभा को निहार रहा था कि सरस्वती मेरे सामने आकर खड़ी हो गई। मैंने उसकी ओर प्रश्नभरी दृष्टि से देखा तो वह बोली, 'गाय के बच्चा होने वाला है।'

" 'सत्य ?' मैंने विस्मय से पूछा। मुझको सरस्वती के यह सूचना लेकर आने की आशा नहीं थी। उसकी गाय के परीक्षण के पश्चात् मुझको कायाकल्प की प्रक्रिया में पूर्ण विश्वास हो गया था। इस पर भी मुझको आशा नहीं थी कि सरस्वती चिकित्सा कराने आएगी।

"मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा जब उसने कहा, 'मालिक, मेरी चिकित्सा नहीं करोगे ?'

" 'हाँ, यदि तुम चाहोगी तो जरूर करूँगा।'

" 'मैं इसीलिए तो आई हूँ। मैं बुढ़ापे से तंग आ गई हूँ। मैं अपना जीवन फिर से शुरू करना चाहती हूँ।'

" 'ऐसा ही होगा।' मेरा उत्तर था, 'तुम कल प्रातःकाल आ जाना। और हाँ,

तुम्हारा कोई सम्बन्धी अथवा जान-पहिचान है यहाँ ?'

" 'कोई नहीं मालिक।'

" 'यदि चिकित्सा में मर गई तो ?'

" 'तो भी मैं कृतज्ञ रहूँगी।'

" 'यह लिखकर देना होगा।'

" 'लिखवा लीजिएगा।'

" 'एक बात और है। यदि युवा होने पर विवाह की इच्छा हुई तो ?'

" 'मेरी मंगली गाय, जिस दिन यहाँ से गई। उसी दिन अपनी बछड़ी के एक बछड़े से, जो साँड़ बन गया था, मिल गई। और उसी से उसके पेट में बच्चा हो गया।'

" 'तो तुमको इसकी चिन्ता नहीं ?'

" 'तो मैं कल आऊँ ?'

" 'हाँ। दिन निकलते ही आना। वही समय चिकित्सा का सबसे अच्छा है।'

"सरस्वती जब चिकित्सा करवा कर पन्द्रह वर्ष की युवती बनकर निकली तो अपने ही परीक्षण से उत्पन्न उसको देख मेरा मन उस पर लुभक आया। मैंने सरस्वती से प्रस्ताव किया और वह मान गई। मैं उसको भवन में रखने लगा। इस पर मेरे और रोमिली में भारी विवाद हुआ। अन्त में मुझे सरस्वती को अप्सरा भवन में रखना पड़ा।

"इस समय मैंने पिताजी को लाहौर में अपनी सफलता का परिचय पत्र द्वारा दिया। न जाने क्या हुआ कि पत्र मिलने के दूसरे ही दिन उनका देहान्त हो गया।

"मेरे सरस्वती से सम्बन्ध के कारण रोमिली मुझसे रुष्ट रही। मैं विस्मय करता था कि जिस बात को वह अपने लिए ठीक समझती थी, वह मेरे लिए ठीक क्यों नहीं समझती ? दूसरी ओर सरस्वती में जीवन-शक्ति प्रचुर मात्रा में उत्पन्न हो गई थी कि वह केवल मात्र गृहस्थ जीवन से सन्तुष्ट न रहकर नृत्य और संगीत में रुचि रखने लगी। उसने मुझसे कहा कि उसको इन कलाओं में शिक्षा देने के लिए कोई योग्य व्यक्ति बुलाया जाए। मैंने यत्न कर उसके लिए नृत्य-कला तथा संगीत-कला के विज्ञ बुला दिए। वह अत्यन्त रुचि से सीखने लगी। एक ही वर्ष में वह अप्सरा भवन की सर्वश्रेष्ठ नर्तकी विख्यात हो गई।

"मेरे रोमिली से सम्बन्ध फिर ढीले पड़ गए। राबर्ट पुनः उसके मस्तिष्क पर छाने लगा। इस समय एक घटना घटी। तापसी बाबा ने मुझे बुला भेजा। मैंने उसके विषय में सुन रखा था कि वह बहुत बड़ा सन्त और भगवान् का भक्त है। मुझको अपने पिता की शिक्षा से ही भगवान् से घृणा थी। अब मैं कायाकल्प में सफल होकर यह विचारने लगा था कि भगवान् के अस्तित्व का सबसे बड़ा प्रमाण, प्राणियों का निर्माण, असत्य सिद्ध हो चला था। यह ठीक है कि मैं कोई नवीन प्राणी नहीं बना

सका था इस पर भी मैंने प्राणी में जीवनस्रोत (कोषाणुओं के न्यष्टियों में स्फूर्ति) उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त करली थी। मैं समझता था कि मैं शीघ्र ही बीज कोषाणु के न्यष्टि के रहस्य को जान जाऊँगा। यदि उसके रहस्य में कारण को मैं कृत्रिम उपायों से उत्पन्न कर सका तो मैं ईश्वर के ढोल की पोल खोल दूँगा।

"जब मैं परमात्मा के विषय में ऐसे विचार रखता था तो परमात्मा के भक्तों के विषय में क्या समझ सकता था, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

"मैं तापसी बाबा से मिलने की इच्छा नहीं रखता था, परन्तु यह समाचार कि बाबा मुझसे मिलना चाहता है, लाने वाला गाँव का सरपंच नूरुद्दीन था और रोमिली उसको बहुत मानती थी। अतएव वह मुझको लेकर वहाँ पहुँची।

"वहाँ जाकर मुझको पता चला कि वह बौद्ध हैं। बौद्ध आत्मा-परमात्मा को नहीं मानते। यह जानकर मुझको बहुत प्रसन्नता हुई। इस पर भी मेरे दृष्टिकोण और उसके दृष्टिकोण में भारी अन्तर था। मैं नमस्कार कर जब उसके सामने बैठा तो उसने आँखें खोलकर मुझको और रोमिली को देखा। पश्चात् मुख में कुछ बड़-बड़ाकर, उसने कहा, 'आ गए हो तुम ?'

" 'हाँ बाबा !' उत्तर रोमिली ने दिया।

" 'तुम कौन हो ?'

" 'मैं इनकी पत्नी हूँ। मेरा नाम रोमिली है।'

" 'ओह ! समझा, पर तुम केशव की पत्नी हो क्या ? सत्य कहती हो ?'

"रोमिली बितर-बितर मुख देखती रही। इस पर बाबा ने फिर कहा, 'वह दानव तुम्हारा पति नहीं है क्या ? '

" 'नहीं ? इनकी बहन मालती का पति है।'

" 'झूठ बोलती हो। आजकल वह तुम्हारा पति है। पति विवाह होने से ही नहीं होता। पति सहवास से माना जाता है। मुझको तुमसे कुछ भी काम नहीं। हाँ, यदि तुम उस दानव को भेज दो तो उसको मैं कुछ बताना चाहता हूँ। आज तो मैंने केशव बाबू को बातचीत करने के लिए बुलाया है।

" 'तुमने उस राँड को युवती बना दिया है ?' बाबा ने मेरी ओर देखकर कहा।

" 'हाँ महाराज !'

" 'उसको पुनर्जन्म देकर उसे पत्नी बना लिया है ?'

" 'पुनर्जन्म देने का यह अभिप्राय नहीं कि वह मेरे वीर्य से उत्पन्न हुई है। मेरा उसका रक्त का भी सम्बन्ध नहीं है। वह युवा हुई तो बहुत सुन्दर बनी। सुन्दर वस्तुओं को प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक योग्य प्राणी का है। मैं योग्य था, मैंने उसे प्राप्त कर लिया।'

" 'तुम महापातकी हो। तुमने अपनी कन्या से व्यभिचार किया है।'

" 'वह मेरी कन्या कैसे हो गई ? निर्माण मैंने अवश्य की है। वैसे तो ब्रह्मा ने

पूर्ण सृष्टि का निर्माण किया है और वह भोग भी कर रहा है।'

"'ब्रह्मा कहाँ है?'

"'यह प्रकृति ही ब्रह्मा है। प्रकृति ही सबको उत्पन्न करती है और प्रकृति ही सब उत्पन्न बस्तुओं का भोग करती है।'

"'तो तुम नास्तिक हो?'

"'हाँ, महाराज!'

"'इस पर भी तुमने सरस्वती को नवीन जन्म दिया। तुमने यह जानते हुए कि नया जीवन देने से तुम एक प्राणी की यन्त्रणा के काल को लम्बा कर रहे हो, तुमने किया है। कितना घोर पाप है यह?'

"'पर महाराज! क्या सरस्वती को कुछ कष्ट है? मैं तो कल भी उससे मिला था और मैंने उससे पूछा था कि वह प्रसन्न है क्या? उसका उत्तर था, बहुत प्रसन्न है।'

"'प्राणी वास्तविक सुख-दुःख को जान नहीं सकता। उसको सुख में दुःख की और दुःख में सुख की भ्रान्ति होती है। यथार्थ बात तो यह है कि जीवन दुःखों का भण्डार है। इसको लम्बा करने से तुम दुःखों का सृजन कर रहे हो। केशव बाबू! प्रकृति ने जो कुछ बनाया है, उसको ज्यूँ का त्यूँ चलते देना ही ठीक है।'

"'महाराज! मैं ऐसा नहीं समझता। मनुष्य जीवन एक अद्भूत, मनोरंजक, अति सुखकारक समागम है। आप जैसे वक्रदृष्टि रखने वालों के कथन को सत्य मानकर ही लोग अति सुखमय वस्तु को दुःखकारक मानने लगते हैं।

"'देखिए महाराज! एक दिन एक बकरी का मेमना उस पहाड़ की चोटी से गिरकर मर गया। अब उसके लिए सोच करना मूर्खता है। इसी प्रकार किसी भी घटना पर दुःख अनुभव करना अज्ञानता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।'

"'परन्तु जब रोग-ग्रसित मनुष्य कष्ट पाता है, तब तो दुःख होता है। जीवन एक रोग है। इस कारण दुःखमय है।'

"'महाराज! सरस्वती को बुलाकर पूछिए कि वह दुखी है अथवा सुखी। आप यहाँ संसार से इतनी दूर बैठे हुए सांसारिक जीवों को दुखी मान व्यर्थ में व्यथित हो रहे हैं। रोग होते हैं मूर्खता के कारण। इस कारण जीवन को दुःखमय मानना अपनी भूल है।'

"'तुम अपना भी कायाकल्प करोगे क्या?'

"'मैं अभी बूढ़ा नहीं हुआ। मेरे अंग-प्रत्यंग चलते हैं। मैं जीवन के सार सुख को मन भरकर पान करता हूँ। कभी किसी बात का दुःख होता है, परन्तु मन में उसकी विवेचना कर जान जाता हूँ कि मैं मिथ्या भ्रम में फँस गया था। उस भ्रम को निकाल देने पर फिर जीवन सुखमय हो जाता है।'

"'महाराज! मेरे पिताजी के देहान्त का समाचार कुछ दिन हुए मिला। कुछ

क्षणों के लिए दुःख हुआ था, परन्तु जब यह ज्ञान हुआ कि एक प्रकृति का अंश महान् प्रकृति में जा मिला है, तो दुःख नहीं रहा।'

"'तुम जब देखते हो,' तापसी बाबा ने आँखें खोल मेरी ओर देखते हुए कहा, 'कि तुम्हारी पत्नी के पलंग पर कोई अन्य पुरुष शयन कर रहा है, क्या तुमको दुःख नहीं होता?'

"'क्षणिक भ्रम तथा मोहवश दुःख होता है। परन्तु भ्रम निवारण होते ही दुःख मिटकर, सुख, जो जीवन का मौलिक गुण है, मिलने लगता है।'

"वास्तव में हम न तो युक्तियाँ दे रहे थे और न ही उदाहरण। अपने-अपने मनों की धारणाएँ ही वर्णन कर रहे थे। इससे न तो कोई परिणाम निकलता है न ही विचार-परिवर्तन होते हैं। इस कारण मैंने अनावश्यक बात को छोड़, आवश्यक बात पकड़ ली, 'आप जीवन का नाश करना चाहते हैं?'

"'नहीं तो।' उसके मुख से निकल गया।

"'तो निर्वाण-प्राप्ति क्या है? जीवन प्रकृति में एक गाँठ है। आप उसको खोलकर जीवन का अन्त करना चाहते हैं। क्यों? इस गाँठ के होते हुए दुःख होता है क्या? मैं पूछता हूँ कि दुःख किसको होता है?'

"'चेतनता एक गाँठ है। इसको खोल देने से चेतनता लोप हो जाती है और दुःख समाप्त हो जाता है।'

"'आपका कहना ठीक है। चेतनता एक गाँठ है। परन्तु दुःख इस गाँठ का गुण नहीं। यदि दुःख गुण होता तो सुख जीवन-काल में न होता। दुःख-सुख परस्पर विरोधी गुण हैं। महात्मा बुद्ध जरा तथा मरण देख घबरा गए। उन्होंने इन दोनों के कारण जानने का यत्न न कर जीवन को ही समाप्त करने का यत्न किया। मैंने जरा और मरण का कारण अपने गुरुओं से जाना है और उन कारणों को दूर कर जीवन को असीम बनाने का यत्न कर रहा हूँ। सरस्वती का नया यौवन उसी प्रयत्न का फल है।'

"'आप गाँठ खोलकर अपना अस्तित्व ही मिटा देना चाहते हैं। मैं गाँठ को दृढ़ करने का यत्न कर रहा हूँ। आपके उपाय से तो सुख मिलने की आशा नहीं, मेरे उपाय से सुख-वृद्धि भी हो सकती है।'

"'तो तुम अपने इस काम से नहीं रुकोगे?'

"'मैं कोई ऐसा काम नहीं कर रहा, जिसके करने में मुझको लज्जा लगती हो। मैं जब सरस्वती को आनन्द से भरे हुए नाचते देखता हूँ तो अपने प्रयास की श्रेष्ठता पर प्रसन्न होता हूँ। मैं अपने प्रयत्न को स्तुत्य मानता हूँ।'

"'तो जाओ। अपने कर्मों का फल भोगो। अनन्त काल तक जन्म-मरण के बन्धन में बँधे हुए घोर यन्त्रणा सहन करो। मैंने चेतावनी दे दी है। अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने।'

"इस प्रकार यह भेंट समाप्त हुई। तापसी बाबा का श्राप सिर पर उठाए हुए मैं और रोमिली चले आए। रोमिली कन्दरा से दूर आकर खूब हँसी। मैं भी हँस रहा था। रोमिली ने कहा, 'इस गंवारों के गुरु ने हमको भी अपने चेलों की भाँति अज्ञानी और मूर्ख समझा था।'

" 'पर रोमिली! तुम जब मुझको सरस्वती के सहवास में देखती हो तो दुःख अनुभव करती हो या नहीं?'

" 'इसको दुःख नहीं कहते। इसको ईर्ष्या कहते हैं। मेरा आपको मना करना इस बात का सूचक है कि मेरा आपसे भारी प्रेम है और मैं अपने स्थान पर किसी अन्य को देख नहीं सकती।"

" 'परन्तु जब तुम किसी अन्य से सहवास करती हो तो तुम्हारा मेरे प्रति प्रेम कहाँ चला जाता है?'

" 'वह तो रहता ही है। साथ ही किसी अन्य से भी प्रेम उमड़ आता है। परन्तु आप मुझसे प्रेम नहीं करते। यदि करते होते तो अपने स्थान किसी अन्य को आते देख ईर्ष्या अनुभव करते।'

"यह युक्ति सुन मैं स्तब्ध रह गया। इसका अर्थ यह था कि मुझको उसके किसी भी दूसरे प्रेमी से भिड़ जाना चाहिए। वह विचार कर मैंने कहा, 'रोमिली! मैं तो इसे इस प्रकार नहीं समझता। मुझको उस व्यक्ति से ईर्ष्या होती है, जो मेरे स्थान पर आसीन होता है। परन्तु मैं उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहता, जैसा राबर्ट ने शिवानन्द से किया था अथवा उसने उस गद्दी लड़की से किया था। इस महान् कार्य में विघ्न न पड़ जाए इस कारण मैं यह सब कुछ सहन कर रहा हूँ।'

"इससे रोमिली गम्भीर विचार में पड़ गई। मैंने अनुभव किया कि इसके कई मास बाद तक उसका मेरे साथ बहुत ही प्रेममय व्यवहार रहा।

"कई मास तक मेरा जीवन सुखमय रहा। मैंने फिर अपने परीक्षणों में ध्यान लगाना आरम्भ कर दिया। इन परीक्षणों में मुझे एक दिन एक दिल दहला देने वाली वस्तु दिखाई दी। एक दिन मैंने एक चुहिया को बच्चे देते देखा। मैं पावर हाऊस के निरीक्षक की कुटिया देखने गया था। उसमें कुछ परिवर्तन कराने का विचार हो रहा था। वहाँ कोने में चुहिया के नवजात बच्चे देख मेरे मन में एक विचार आया। मैं उन बच्चों को उठाकर भवन में ले आया और उनमें जीवन-संचार का प्रयोग करने लगा। पाँच बच्चे थे। चार तो मर गए। केवल एक बचा। चौबीस घंटे के प्रयोग के पश्चात् मुझको उसमें कुछ भी परिवर्तन प्रतीत नहीं हुआ। हाँ, बच्चे की आँखें खुल गई थीं और वह देखने में भूख से व्याकुल प्रतीत होने लगा था। मैंने उसके मुख में दूध डाला। यह जबान निकालकर चाटने लगा। दूसरे दिन वह बच्चा भाग गया।

"मैं अपने परीक्षण की सफलता पर विचार करता रहा। इसमें दो समस्याएँ थीं। एक यह कि वे चार बच्चे मरे क्यों और दूसरा यह कि पाँचवें को बन्द करके रखना चाहिए था जिससे मेरे परीक्षण का परिणाम पता चल सकता। दो दिन तक तो उसमें कुछ परिणाम नहीं निकलता दिखाई देता था।

"बात समाप्त हुई और मैं किसी अन्य जन्तु पर परीक्षण करने का विचार करता रहा, परन्तु कोई नवजात शिशु मिला नहीं।

"छः मास व्यतीत हो गए थे। मैं लॉन में कुर्सी रखकर बैठा एक पुस्तक का अध्ययन कर रहा था। इतने में एक खरगोश के कद का, परन्तु चूहे की रूपरेखा वाला जन्तु, घास पर फुदकता दिखाई दिया। मैंने उसको बहुत ध्यान से देखा, परन्तु वैसा जानवर पहले मैंने कभी देखा नहीं था। मैंने सामने मेज पर रखी पैन्सिल उसकी ओर फेंकी। वह उसको कुतरने लगा और दो मिनट में उसने पैन्सिल के दो टुकड़े कर डाले। उस जानवर की रूपरेखा तथा उसके कुतरने को देख मुझको सन्देह हुआ कि कदाचित् यह वही चुहिया का बच्चा न हो, जिस पर मैंने जीवन-संचार का प्रयोग किया जा। मेरे मन में विचार आया कि मैं इसको पकड़ किसी सन्दूक में बन्द कर दूँ। मैं उसको पकड़ने दौड़ा तो वह भागकर लॉन के बाहर जा एक झाड़ी की जड़ में एक बड़े से बिल में घुस गया।

"मैंने उसको पकड़ने के लिए एक बड़ा-सा फन्दा बनवाया और उसी बिल के पास रख दिया। उसमें रोटी का बड़ा टुकड़ा लटका दिया।

"मैं रात को उस फंदे को देखने आया। वह बृहुत्काय चूहा उसमें फँसा हुआ था और बहुत तेजी से उस फंदे को कुतर रहा था। आने में यदि पन्द्रह-बीस मिनट की और देरी हो जाती तो निःस्सन्देह वह फंदे को कुतरकर रास्ता बनाकर लापता हो जाता। इस प्रकार उसको भागने का यत्न करते देख मैं भागता हुआ गोदाम में गया और लोहे का एक सन्दूक उठा लाया और फंदे में से उसको लोहे के सन्दूक में बन्द कर भीतर ले गया।

"अगले दिन प्रातःकाल ही मैंने एक सुदुढ़ लोहे का पिंजरा बनवाया और उस चूहे को उसमें डाल दिया। डबल रोटी और गाजरों पर उसको पालने लगा। तीन महीने में वह इतना बड़ा हो गया कि उसको पिंजरे में रखना कठिन हो गया। वह देखने में एक अति खूँखार बड़े कुत्ते के कद का हो गया था।

"इस परीक्षण ने मुझे एक गम्भीर विचार में डाल दिया। यदि किसी मनुष्य के बच्चे पर यह परीक्षण करता तो वह पुराणों में वर्णित वृहत्काय राक्षस ही बन जाता। फिर उसकी बुद्धि का विकास भी हो सकता था और न जाने क्या-क्या आविष्कार वह बृहत्काय राक्षस कर सकता। यदि दो-चार ऐसे बृहतकाय मनुष्य बनाकर मैं इस घर में रख लूं तो मेरी क्या गति होगी। इस विचार ने मुझे ऐसा परीक्षण करने से पूर्व सैंकड़ों बार विचार करने पर विवश कर दिया। मैं सोचता

था कि संसार में दूसरे मनुष्य ऐसे प्राणी को मार डालेंगे और कहीं उसका दाँव चल गया तो वह हमको भी मार सकता है। इस प्रकार के प्राणी अथवा मनुष्य बनाना अपने स्वार्थ के विरुद्ध समझ, मैंने ऐसे परीक्षणों से हाथ खींच लिया।

"पन्द्रह-बीस दिन में ही चूहे को उस पिंजरे में बन्द कर रखना कठिन हो गया। मैंने उसके पिंजरे को खोल उसे निकाला। मैं चाहता था कि उसको स्वच्छन्दता से विचरने दूँ। वह चूहा पिंजरे से निकलते ही भूमि कुरदने लगा। सीमेंट की भूमि होने पर भी उसके कुरदने के निशान बनने लगे। मैंने उसको डराकर भगा देना चाहा। इस पर वह मुझपर ही लपका और यदि मैं कूदकर पीछे न हट जाता तो वह मेरे मुख पर अपने पंजों से वार करता। मेरे बच जाने पर भी उसने मेरा पीछा न छोड़ा। वह एक बार फिर मेरे ऊपर कूदा। इस बार मैं सचेत था। मैं पुनः एक ओर हटकर उसके आक्रमण से बच गया।

"मैंने तुरन्त निर्णय कर लिया कि इस भयंकर जन्तु को मार डालना चाहिए। जब तीसरी बार उसने आक्रमण किया तो मैं दौड़कर वहाँ रखी मेज के पीछे हो गया। उसने जोर से मेज को धक्का दिया और उसको उलट दिया। मेज पर रखा सामान बिखर गया। मैं तो अपनी जान बचाकर उस कमरे से अपने सोने के कमरे की ओर भाग गया। वहाँ मेरा पिस्तौल रखा था। इस पर उसने मेरा पीछा छोड़ दिया। वह भवन से निकल लॉन में चला गया और वहाँ धूप में प्रसन्नता अनुभव करने लगा। मैं अपने ड्रेसिंग टेबल में से पिस्तौल निकाल, उनमें पाँच गोलियाँ भर लॉन में गया। वह मुझको अपनी ओर आते देख पुनः भड़क उठा और फिर मेरी ओर लपका। मैंने उसके सिर का निशाना बाँध गोली चला दी। गोली माथे पर लगी, परन्तु एक से उसका अन्त नहीं हुआ और वह कुछ क्षण ठहर पुनः सामने आया। मैंने दूसरी गोली उसकी कनपटी पर चलाई। इसने उसका काम तमाम कर दिया।

"मेरे मन में विचार आया कि मैंने प्रकृति का एक भयंकर रहस्य जान लिया है। इसका प्रयोग तो मनुष्य समाज का विनाश करने वाला हो सकता है।

"टूनी और राबर्ट कुछ काल के लिए अच्छे सहिष्णुता के सम्बन्ध में रहे परन्तु राबर्ट अपने स्वभावानुकूल अपने व्यवहार में स्थिर नहीं रह सका। अब वह फिर जंगल में घूमने लगा। उसकी असभ्यतापूर्ण प्रवृत्ति उसको अपनी इच्छा अप्सरा भवन में पूर्ण करने के स्थान गरीब देहाती स्त्रियों पर आघात करने के लिए विवश करती थी। मैंने उसको एक दिन बुलाकर सचेत भी किया, परन्तु उसका कहना था, 'हम लोग जो न परमात्मा को मानते हैं न आत्मा को, इस प्रकार के कार्य में पाप-पुण्य नहीं मानते। हमारे लिए स्व-सुख ही पुण्य है और हम अपना दुःख ही, पाप मानते हैं।'

" 'परन्तु राबर्ट ! जो मेरे लिए सुखकारक है वह दूसरे के लिए दुःखदायी भी

हो सकता है ।'

" 'जब हम एक सेब खाते हैं तो हम यह नहीं देखते कि उस सेब को दुःख होता है अथवा सुख । मनुष्य स्वार्थ-रत प्राणी है ।'

" 'ऐसा नहीं राबर्ट ! ससाज एक संस्था है । उसने अपने भीतर रहने वाले मनुष्य के लिए नियम बनाए हैं । उन नियमों को भंग करना पाप है ।'

" 'ठीक है । समाज का नियम भंग करना ठीक नहीं । इस कारण कि नियम भंग करने वाले को समाज दण्ड देता है । इस कारण मैं ऐसे ढंग से नियम भंग करता हूँ कि समाज मुझको पकड़ नहीं सकता । अतः मैं दण्ड का भागी नहीं होता । अर्थात् मैं पापी नहीं बनता ।'

" 'समाज का नियम भंग करना पाप है इस कारण नहीं पकड़े जाने पर दण्ड होगा; प्रत्युत इसलिए कि नियम भंग की प्रवृत्ति यदि समाज में चालू हो गई तो बलशाली प्रभाव रखने वाले और चतुर मनुष्य दूसरों का जीवन दूभर कर देंगे ।

" 'जैसे हम किसी दूसरे से दुःख दिया जाना पसन्द नहीं करते, वैसे ही दूसरे भी नहीं करते । इस कारण समाज में व्यवस्था बनाये रखने के लिए हमको समाज के नियमों का पालन करना ही चाहिए ।'

" 'दुर्बल प्राणी ऐसी ही बातें करते हैं । वास्तव में संसार बलवान, चतुर और प्रभाव रखने वालों की भोग वस्तु है । दुर्बल, निस्तेज और मूर्खों के लिए संसार नहीं । उनको पीछे हट दूसरों के लिए मार्ग साफ कर देना चाहिए ।'

" 'यही तो एक कठिन समस्या है । राबर्ट ! मैं समझता हूँ कि हमारा-तुम्हारा साथ-साथ रहना कठिन होता जा रहा है ।'

" 'जब असम्भव हो जाएगा, तो केशव ! बता देना । हम दोनों में जो दुर्बल होगा, वह यहाँ से चला जावेगा ।'

" 'इसका मतलब है कि हमको एक दिन मल्लयुद्ध करना पड़ेगा ।'

" 'हाँ, यह भी हो सकता है । पशुबल के अतिरिक्त युक्तिबल भी तो वस्तु है । विरोधियों को परास्त करने लिए धनबल एक और उपाय है ।'

" 'यदि इस प्रकार झगड़ा करोगे तो बुरी भाँति परास्त होगे राबर्ट ! मैं ज्ञान में तुमसे बहुत बढ़ गया हूँ ।'

" 'मैं तुमसे झगड़ा नहीं कर रहा केशव ! मेरा झगड़ा तो यहाँ के गंवार, अनपढ़, मूर्ख देहातियों से है । प्रकृति ने उसको रूप दिया है परन्तु बुद्धि नहीं दी । उन पर मेरा प्रभाव बना रहेगा । वे मेरे लिए सुख-सामग्री उपस्थित करते रहेंगे । तुम यदि इन लोगों की रक्षा के लिए खड़े होगे तो मेरा तुमसे भी झगड़ा होगा । परन्तु मैं तुमको मूर्ख नहीं समझता कि तुम व्यर्थ में मुझसे झगड़ा करोगे ।'

'देखो राबर्ट ! मेरे विचार में हम अपने सुख के लिए उनको विवश नहीं कर सकते । ऐसा करने में मुझको अपना, तुम्हारा और जो कुछ भी हमारा है, उसका

कल्याण दिखाई नहीं देता। मैं उनकी रक्षा में तुमसे झगड़ा नहीं करता, प्रत्युत अपनी और तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे व्यवहार पर नियन्त्रण रखने का यत्न करना चाहता हूँ।'

" 'असल बात यह है कि तुम्हारे विचार में मेरा व्यवहार हम सबके कल्याण के लिए नहीं ?'

" 'हाँ। मैं इसको हानिकर समझता हूँ।'

" 'परन्तु मैं इसको अपने हित में समझता हूँ और आपके लिए किसी प्रकार भी हानिकर नहीं समझता। मुझको समझा दीजिए कि यह आपके लिए कैसे हानिकर है।'

"मैं लाचार हो गया और राबर्ट को अपने विचारानुकूल नहीं बना सका। इस कारण बात दिन-प्रतिदिन बिगड़ती गई। एक दिन राबर्ट आया और बोला, 'जंगल में मैंने एक बहुत बड़ा हिरण मारा है और उसका मांस भूनकर खाया था। थोड़ा-सा आप यदि लेना चाहें तो ले सकते हैं। नहीं तो मैं कल के लिए रख छोड़ूँगा।'

"पावर हाऊस की ओर ऊँची पहाड़ियों पर कस्तूरी वाले हिरण मिलते थे। यह कहा जाता है कि उसके मांस में कस्तूरी की-सी सुगन्धि और पुष्ट करने के गुण रहते हैं। इस कारण हम इस मांस के खाने की इच्छा करने लगे। उस भूने हुए मांस को रसोईघर में भेज दिया गया और वह रात को खाने में परस दिया गया।

"खाने के समय हमको वह स्वादिष्ट नहीं लगा। हिरण का मांस हमने खाया था, वह इतना कोमल नहीं होता। इस पर भी मुझको किसी प्रकार का सन्देह नहीं हुआ; परन्तु अगले दिन पाचक, जो कि इटैलियन था, मेरे पास आया और कहने लगा, 'मास्टर! मैं नौकरी छोड़ इटली लौट जाना चाहता हूँ।'

" 'क्यों, क्या हुआ है ?'

" 'मैं आपके भोजनालय में कार्य नहीं कर सकता।'

" 'पर हुआ क्या है ?'

" 'आपके रसोईघर में नरमांस बनता है।'

" 'कौन बनाता है ?'

" 'कल जो मांस मि० राबर्ट ने भेजा था वह मुझको पता चला है कि नरमांस था।'

" 'तो तुमने हमको पहले क्यों नहीं बताया ? हमको मालूम होता तो न हम खाते और न बनवाते। तुमको जाने की जरूरत नहीं। मैं इस बात को आज ही बन्द कर देता हूँ। मैं इसको पसन्द नहीं करता।'

'मैंने राबर्ट को बुलाकर इस विषय में बातचीत की। पहले तो उसने मानने से इन्कार किया, परन्तु जब मैंने बताया कि वह तुम्हारा शत्रु नहीं और बहुत ही समझदार व्यक्ति है, उसकी बात को गलत नहीं कहा जा सकता।

" 'राबर्ट नहीं माना। इसपर मैंने पाचक को वहाँ बुलाया और राबर्ट के सामने

प्रस्तुत कर दिया। पाचक ने कहा, 'उस मांस में से एक हड्डी का टुकड़ा निकला है। इसकी जाँच करवा ली जाए। मुझको विश्वास है कि वह मनुष्य की हड्डी है।'

''मैंने पाचक को कहा, 'हड्डी ले आओ।'

''वह गया और रीढ़ की हड्डी उठा लाया और बोला, 'इसको लाहौर मैडिकल कॉलेज में भेज परीक्षा करवा लीजिए। मैंने वह हड्डी रख ली और पाचक को कह दिया—

'' 'आज से जो तुम अपने सम्मुख तैयार करवाओ उस मांस के अतिरिक्त हमारे किचन में और कुछ नहीं बनेगा।'

''जब पाचक शान्त होकर चला गया तो मैंने राबर्ट से कहा, 'अब बताओ।'

'' 'मैं इस मूर्ख के सामने मानने को तैयार नहीं था। वास्तव में मैं एक असभ्य गंवार मनुष्य को एक वनजन्तु से अधिक नहीं समझता।'

'' 'तुम एक सेब को वनजन्तु से और एक देहाती मनुष्य को वनजन्तु से अधिक नहीं समझते। यह तो अति भयंकर मनोवृत्ति है।'

''उस मध्याह्नोत्तर इस विषय पर विचार करने के लिए हम सब एकत्रित हो गए। टूनी, रोमिली, मैं और राबर्ट। मैंने उस पाचक का आरोप और राबर्ट का उत्तर बताकर पूछा कि क्या करना चाहिए।

''टूनी को यह जब ज्ञान हुआ कि पिछली रात उसने नरमांस खाया है तो उसको मचली-सी होने लगी और वह उठकर अपने शयनागार में चली गई। मैं, रोमिली और राबर्ट पीछे रह गए। रोमिली को भी इससे बहुत क्रोध चढ़ आया। उसने कहा, 'राबर्ट ! तुमने यह झूठ क्यों बताया ?'

'' 'मैं उस औरत और जंगल की हिरणी में कोई अन्तर नहीं मानता। इस कारण मैंने कह दिया कि एक हिरणी का मांस है।'

'' 'यदि तुम पुलिस के हवाले नहीं होना चाहते तो आज ही यहाँ से चले जाओ।'

'' 'मैं पकड़ा गया तो आप सबको साथ लेकर ही जेल जाऊँगा। इस भवन के सुन्दर आवरण के नीचे क्या-क्या घिनौनी बातें हो रही हैं, सब कोर्ट में कह दूँगा।'

''मैंने पूछा, 'क्या घिनौनी बातें हो रही हैं ?'

'' 'रोमिली जानती है।'

''मैंने रोमिली के मुख पर देखा तो उसने आँखें नीची किए ही कह दिया, 'राबर्ट ! मैं नहीं चाहती कि हम आपस में झगड़ा करें। हममें कोई दोष है अथवा नहीं, मैं यह विचार का विषय वनाना नहीं चाहती। तुम बताओ कि तुम किस शर्त पर यहाँ से जाओगे ?'

'' 'मुझको विचार करने का अवसर दिया जाए।'

'' 'ठीक है। दो दिन में लिखकर तुम अपने विचार हमें बता दो। पश्चात् उस पर विचार कर लेंगे। आज से तुम हमारे साथ बैठकर भोजन नहीं कर सकते।'

"इतना सुन राबर्ट उठकर कमरे से बाहर निकल गया। पश्चात् मैं टूनी के पास गया। उसको उल्टी आ रही थी। उसके मन में ग्लानि उत्पन्न हो गई थी। उसने कहा, 'भैया! मैं इस आदमी को मार डालना चाहती हूँ।'

" 'यह एक और मूर्खता करोगी। पहले तो इससे विवाह कर भूल की है। अब इसको मारकर स्वयं फाँसी के तख्ते पर लटकने का प्रबन्ध करोगी।'

" 'तो इससे मैं कैसे छुट्टी पा सकती हूँ?'

"मैंने उसको रोमिली की वात बताई। इस पर टूनी ने पूछा कि वह अब क्या कहेगा। मैंने कहा कि शायद रोमिली का अभिप्राय है कि उसको पर्याप्त धन देकर यहाँ से विदा कर दिया जाए।

"तीन दिन के पश्चात् राबर्ट ने वहाँ से जाने के लिए तीन शर्तें रख दीं। उसने मेरे सामने रोमिली से कहा, 'मैं तब तक यहाँ से नहीं जाऊँगा जब तक हजार डालर मासिक की मेरी पैंशन नहीं लगा दी जाती। साथ ही टूनी मेरी पत्नी है। इसको मेरे साथ जाना पड़ेगा।'

" 'एक हजार डालर मासिक?' रोमिली ने मुख लम्बा कर पूछा, 'यह कौन देगा?'

" 'तुम और कौन?'

" 'मैं क्यों दूँगी?'

" 'तुमने मुझको यहाँ वुलाया था और मुझसे इस भवन के निर्माण में तथा अन्य कार्यों के लिए सेवाएँ ली हैं। मैं इन सेवाओं के लिए पैंशन लेना चाहता हूँ। टूनी मेरी पत्नी है इसको मेरे साथ जाना होगा।'

"टूनी, जो यह सब कुछ सुन रही थी, पूछने लगी, 'और मुझको छुट्टी देने के लिए क्या चाहते हो?'

" 'तुम्हारी पूर्ण सम्पत्ति।'

"इस पर रोमिली ने कहा, 'यदि हम तुम्हारी शर्त न मानें तो?'

'मैं यहाँ रहूँगा और अपनी इच्छानुसार जीवन व्यतीत करूँगा। यदि आपने मुझे पुलिस के हवाले किया तो यहाँ का सब भण्डा फोड़ दूँगा। इससे यहाँ का बना-बनाया काम तो बिगड़ेगा ही, साथ ही तुम संसार में कहीं भी रहने के योग्य नहीं रहोगे। मेरे लिए तो मेरा अपना समाज है। वहाँ नर-मांस-भक्षण आपत्तिजनक नहीं माना जाता।'

"मैं उसकी धमकी की परवा किए बिना उसको धक्के मार-मार कर वहाँ से निकाल देना चाहता था परन्तु रोमिली उस समय भयभीत प्रतीत होती थी। वह नहीं चाहती थी कि राबर्ट को अपने विरोध में खड़ा कर लिया जाए।

"मैं उसकी बातों को समझ नहीं सका। परन्तु उस समय तक वह मेरे मस्तिष्क

पर राज्य करती थी। परिणाम यह हुआ कि एक ओर राबर्ट और रोमिली में और दूसरी ओर राबर्ट और टूनी में बात-चीत आरम्भ हो गई। रोमिली और टूनी ने उस सौदेबाजी से मुझको पृथक् रखा। दो मास के विचार-चिन्तन के पश्चात्, टूनी और राबर्ट ने आपस में एक समझौता कर लिया और उसको मुझे बता दिया गया। रोमिली एक सौ डालर प्रति मास उसकी फिलाडैल्फिया के एक बैंक द्वारा भेज दिया करेगी। टूनी अपनी सम्पत्ति में से एक लाख रुपया लाहौर में देगी और स्वयं उसके साथ, जहाँ वह कहेगा, जाएगी।

"मुझको इन स्त्रियों के मन पर राबर्ट का प्रभाव देख विस्मय हुआ। मेरी अवस्था भीं कुछ ऐसी ही थी। मैं रोमिली के सम्मोहन में फँसा हुआ था। उसकी प्रत्येक प्रकार की उच्छृंखलता को सहन करता जाता था।

"इन दिनों विनोद और राधा के हमारे स्वर्गधाम में अपना ग्रीष्म का अवकाश व्यतीत करने के लिए अपना निश्चय हो चुका था और मैं राबर्ट का उसके आने से पूर्व चला जाना पसन्द करता था। इस कारण मैंने उसके समझौते को मान लिया। शीघ्र ही उसके जाने का मैं प्रबन्ध भी करने लगा।

"टूनी के राबर्ट के साथ जाने के पूर्व, मैंने उससे एकान्त में पूछा, 'तुम उसके साथ क्यों जा रही हो ?'

" 'मुझको इसके अतिरिक्त और कोई उपाय भी दिखाई नहीं देता। मेरे मन में निश्चय है कि मैं इसके साथ नहीं रहूँगी। इसके लिए एक लाख रुपया देना और इसके साथ प्रेमपूर्वक रहना आवश्यक हो गया है, इस प्रकार इसको धोखा देकर इसको भारत से बाहर ले जाकर, छोड़ आना चाहती हूँ।'

" 'पर तुम दोनों इससे डरती क्यों हो ?'

" 'मैं नहीं डरती। भाभी डरती है। इसका कुछ रहस्य है जो वह जानता है और वह इस रहस्य को प्रकट होने से रोकना चाहती है।'

"मैं इन स्त्रियों की बातों को न समझ सकने के कारण चुप था। नियत दिन टूनी और राबर्ट बिदा हो गए। मुझको भारी आश्चर्य हुआ। जब टूनी, विनोद और राधा के घर पहुँच गई और विनोद ने लिखा कि राबर्ट उसकी हत्या करने का विचार रखता था।

"राबर्ट के चले जाने के पश्चात् रोमिली का व्यवहार मुझसे बदलना आरम्भ हो गया। वह गाँव वालों से अधिक और अधिक मेल-जोल उत्पन्न करने लगी और अपने को वहाँ की मालकिन प्रसिद्ध करने लगी। मेरी रुचि अपने परीक्षणों में थी। मैंने करीम का कायाकल्प किया और उसके व्यवहार से चकित रह गया।

"जब विनोद और राधा टूनी सहित यहाँ आए तो जीवन कुछ दिन तक सरस चल पाया। पश्चात् रोमिली फिर उच्छृंखलता करने लगी। रोमिली के मुख पर विनोद ने चपत लगाई। उसने रोमिली के प्रेम, अथवा जो कुछ भी उसको कहा

जाए उसका तिरस्कार कर दिया। इससे रोमिली मन-ही-मन आग बबूला हो गई। राधा, विनोद और टूनी के स्वर्गलोक से जाने के पश्चात् तो मेरी स्थिति वहाँ पर अति विकट हो गई। रोमिली और भद्रायण खुल्लमखुल्ला पति-पत्नी के रूप में रहने लगे थे। मैं दिन-भर पढ़ने अथवा परीक्षणों में लगा रहता और रात को अपने कमरे में सोया करता था। भोजन मैंने अपने कमरे में ही करना आरम्भ कर दिया।

"एक सप्ताह भर ऐसा चला। पश्चात् एक दिन हमारा इटैलियन पाचक मेरे कमरे में आया और मुझसे कहने लगा, 'मास्टर! मुझको दो बार आपको विष देकर मार डालने की आज्ञा हो चुकी है। मैंने अभी तक आज्ञा का पालन नहीं किया। आज मुझको एक पुड़िया आपके फूडिंग में मिलाने को दी गई है। मैंने उसमें से थोड़ी एक बिल्ली को खिलाई है, वह खाते ही मर गई।'

" 'तो?'

" 'मैं तो यह कार्य नहीं करूँगा। परन्तु कोई दूसरा भी तो कर सकता है।'

"मैंने पाचक का धन्यवाद किया और उसके चले जाने के पश्चात् अपने भोजन का प्रबन्ध स्वयं कर लिया। मैं किश्तवार गया और वहाँ पर से एक हार्लिक्स की बोतल, एक क्वेकर्स-ओट्स का डिब्बा और अन्य डिब्बों में बन्द सामान, जो विदेशों से आता था और जो कुछ वहाँ से मिलता था, ले आया। उनको लाकर अपनी अलमारी में रख बाहर से ताला लगा दिया। मैं नित्य प्रातःकाल मीरा-शाह के खेतों में से गाजर-मूली उखाड़ लाता, गाँव से अंडे खरीद लाता। यह मैं नित्य नये खेत की, और नये व्यक्ति से लाता। मेरे मन में भय समा गया था कि इनमें भी कहीं विष न मिला दिया जाए। मैं घर पर आता और इलैक्ट्रिक स्टोव पर अपना खाना स्वयं बनाता और बनाते ही खा लेता। मुझको सन्देह हो रहा था कि कहीं मैंने भोजन रखा तो उसमें विष मिलाया जा सकता है।

"कुछ दिन तक ऐसे ही चलता रहा। मैं अब रोमिली का मुख तक नहीं देखता था। इस पर मैं यह आशा करता था कि भद्रायण से उकताकर रोमिली मेरे पास आएगी। एक दिन वह आई, परन्तु उस अभिप्राय से नहीं, जिससे मैं आशा करता था।

"उसने मेरे सामने खड़े होकर कहा,'आपके इस प्रकार नाराज पड़े रहने से लोग चर्चा करने लगे हैं। मेरी सम्मति है कि अब आपको मनुष्यों की तरह रहना आरम्भ कर देना चाहिए।'

"मैंने उसको बैठने के लिए नहीं कहा और उसकी बात का उत्तर दे दिया, 'रोमिली! मेरा विचार है कि लोग मेरे इस प्रकार के कमरे में पड़े रहने की चर्चा नहीं करते परन्तु तुम्हारे भद्रायण को मेरे आसन पर आसीन करने की चर्चा करते हैं। तुमको भ्रम हो गया है।'

" 'मैं लोगों की नौकरानी नहीं हूँ, जो उनसे राय लूँ कि कौन मेरे साथ रहेगा

और कौन मुझसे दूर ।'

" 'तो ठीक है तुमको इस बात की भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि लोग मेरे विषय में क्या कहते हैं ।'

" 'इस पर भी मैं चाहती हूँ कि आप हमारे साथ बैठकर भोजन किया करें ।'

" 'बात यह है कि तुम्हारे साथ बैठकर तो भोजन करता ही था और कर भी सकता हूँ, परन्तु इस भद्रायण के साथ बैठकर भोजन नहीं कर सकता ।'

" 'क्यों ?'

" 'वह हत्यारा है । उसने मुझको मार डालने का प्रयत्न किया है ।'

" 'कैसे ?'

" 'विष देकर ।'

" 'कौन कहता है ?'

" 'मैं कहता हूँ । किश्तवार के फोटोग्राफर से पोटेशियम-साईनाईड इस भवन में मँगवाई गई है ।'

" 'ओह ! आप भी लालबुझक्कड़ हैं । यह तो मैंने अपना एक फोटोग्राफ धोने के लिए मँगवाई थी ।'

" 'और तुमने भोजन में डलवा दी थी ?'

" 'तो आपके भोजन में क्या साईनाईड मिली पाई गई है ?'

" 'हाँ ।'

" 'आपने जाँच की थी इस विषय में ?'

" 'की थी । और इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि अवश्य भद्रायण ने मिलाई है । तुम तो एक सभ्य औरत हो । तुमसे मैं यह आशा नहीं कर सकता कि तुम मुझको मार डालोगी, परन्तु वह विश्वास योग्य नहीं है ।'

"रोमिली इससे गम्भीर विचार में पड़ गई । मैं उसको बैठने के लिए कहने के स्थान पर स्वयं उठकर खड़ा हुआ और कहने लगा, 'देखो रोमिली ! विनोद ने मुझको दो सहस्र रुपया भेज दिया है । अब मैं उसपर ही अपना निर्वाह कर रहा हूँ । अपने खाने-पहिनने का प्रबन्ध उसमें से करता हूँ । यह कमरा इस भवन में तुम्हारे धन से बना है । मैं चाहता हूँ कि तुम इसका किराया निश्चित कर लो । वह मैं तुमको प्रति मास देता रहूँगा । मुझको मेरे हाल पर छोड़ दो । अब मैं अपने परीक्षणों पर एक थीसिज लिख रहा हूँ । उसके लिए मुझे मन में शान्ति की आवश्यकता है ।'

" 'तो अब आप इस भवन में किरायेदार बनकर रहना चाहते हैं ?'

" 'इसलिए कि कहीं तुम्हारे भद्रायण को आपत्ति न हो कि मैं उसकी पत्नी का धन व्यर्थ कर रहा हूँ ।'

" 'मैं उसकी पत्नी नहीं हूँ आप भूल कर रहे हैं । मैं उसकी भी मालकिन हूँ ।

मैं यहाँ की रानी हूँ और यहाँ पर मेरा राज्य है।'

"'इसीलिए तो कह रहा हूँ महारानी जी ! आपकी प्रजा इस स्थान पर रहने का किराया दे सकती है। राजा-महाराजा प्रजा से किराया अथवा कर लेते ही हैं।'

"'बहुत अच्छी बात है। आपके इस प्रबन्ध के विषय में विचार करूँगी। यदि आप यहाँ पर हमारे साथ मिल-जुलकर नहीं रह सकते तो फिर रहने का प्रयोजन ही क्या है।'

"'ठीक है, मैं भी इस बात पर विचार करूँगा।'

"'आप आइए मेरे साथ। बाहर लॉन में धूप है। वहाँ बैठकर खुली हवा का सेवन करेंगे।'

"'वह तो नित्य कर लेता हूँ। इसके लिए मुझे किसी का आभारी नहीं होना पड़ता। इस पर भी चलो। तुमने आज मेरे साथ भ्रमण की इच्छा प्रकट की है। मैं इस सौभाग्य को खोना नहीं चाहता।'

"हम दोनों लॉन में आए। रोमिली ने अपने मेरे साथ विवाहित जीवन के प्रारम्भिक दिन याद दिलाने शुरू कर दिए। उसने एक दिन का उल्लेख किया। उस समय हम दोनों यौवन-उन्माद में भरे हुए थे। कभी जब वासना का वेग प्रबल होता था, तो हम बिना इस बात का विचार किए कि कोई हमें देख रहा है, परस्पर आलिंगन करने लगते थे। एक दिन हम एक उद्यान में बैठे एकाएक परस्पर आलिंगन करने लगे, तो एक वृद्ध पुरुष हमको इस प्रकार कल्लोल करते देख हँस पड़ा। मैंने रोमिली को भुजाओं में से छोड़े बिना कहा था, 'दाख न मिली थ् कड़वी।'

"वह हँसकर बोला, 'नहीं दोस्त ! दाख मीठी है, बहुत खाई है, परन्तु तश्तरी में रखकर और धो-पोंछकर। हाँ, जब किसी पराए के बाग में चोरी की हो, तब ऐसे ही खाई जाती है।'

"मैंने कहा था, 'ग्रैंडी ! (पिता के पिता) यह चोरी की हुई दाख नहीं है। केवल इतना धैर्य नहीं कि इसको धो-पोंछकर तश्तरी में रखने तक की प्रतीक्षा करूँ।'

"'प्रतीक्षा का फल बहुत मीठा होता है।'

"'आज तो कड़वा ही स्वाद लग रहा है।'

"वह मेरे इन सतर्कता से दिए उत्तरों को सुनकर खिलखिलाकर हँस पड़ा और चल दिया।

"रोमिली ने मुझको वे दिन याद कराये। मैं समझ रहा था कि मेरे साथ पुनः अपना सम्बन्ध बनाना चाहती है। मैं मन में विचार कर रहा था कि क्या यह भद्रायण से उकता गई है?

"मैं अभी उसकी बातों का विश्लेषण कर ही रहा था कि भद्रायण भवन से

निकल हमारी ओर चला आया। मेरे समीप आ, वह मुझसे कहने लगा, 'बहुत दिन के बाद दर्शन हुए हैं आपके ?'

" 'हाँ, कुछ स्वास्थ्य बिगड़ गया था।'

" 'तो अब ठीक है क्या ?'

" 'सब प्रकार से तो ठीक नहीं।'

" 'क्या ओषधि लेते हैं ?'

" 'गरम जल से स्नान करता हूँ।'

" 'आजकल आप किसी का कायाकल्प नहीं कर रहे ?'

" 'मैं अपने परीक्षणों पर मनन कर रहा हूँ। मैं विचार कर रहा हूँ कि उनसे लाभ क्या हुआ है ?'

" 'लाभ तो बहुत हुआ है। आपकी कृपा से मेरा बहुत कल्याण हुआ है और यह मैं हृदय से अनुभव करता हूँ।'

" 'तभी तो आपकी मुझपर अपार कृपा-दृष्टि हो रही है। मैं आपका कृतज्ञ हूँ।'

"वह इसका अर्थ समझ मुस्कराया और हमारे साथ टहलने लगा।

" 'केशव बाबू ! वास्तव में मैंने अपना जीवन ही व्यर्थ गँवाया है। यदि इसका पुनरुद्धार आप नहीं करते तो मैं भ्रम में फँसा हुआ ही जीवनान्त कर बैठता। यह तो रोमिली देवी हैं, जिन्होंने मेरे मन पर से अज्ञान का पर्दा उठाया है। मैं समझ गया हूँ कि संसार ही सब कुछ है और अब मैं इसका भोग कर रहा हूँ।'

"मुझको उसकी बात सुनकर हँसी आ गई। मैं भी ठीक ऐसा ही विचार रखता था। मैंने विनोद से इस बात पर काफी बहस भी की थी। परन्तु आज अपने को इन विचार रखने वालों का शिकार बना देख, मैं इस कथन को अपने ऊपर कसा हुआ एक भारी व्यंग्य समझ रहा था। क्या मजाक है ! यह जीवन, इस भवन के निर्माण करने वाला, भूमि पर स्वर्गलोक का चित्र खींचने वाला, मनुष्य के जरा-मरण को दो-दो आँखें दिलाने वाला और परमात्मा से हाथापाई करने की तैयारी करने वाला, अपने जीवन के भय से काँपता हुआ छुप-छुपकर भोजन खाता-फिरता है। मुझको भय लग गया था कि कोई मुझको विष न दे दे। मैं रात को कमरा भीतर से बन्द कर सोता था, जिससे रात को कोई पेट में छुरा न घोंप दे। मैं हर समय अपनी जेब में पिस्तौल रखता था, जिससे यदि कोई मुझपर आक्रमण करे, तो मैं अपनी रक्षा कर सकूँ।

"मैं विचार करता था कि क्या हो रहा है। ऐसा क्यों है ? भद्रायण मेरी हँसी का अर्थ नहीं समझा। उसका विचार था कि मैं उसके ज्ञानचक्षु खुल जाने से प्रसन्न होकर हँसा हूँ। इस कारण उसने कहा, 'मैं सत्य कहता हूँ केशव बाबू !

इन्द्रियों के सुख इतने मधुर हैं कि जिसने उनको प्राप्त नहीं किया वह मूर्ख ही कहा जा सकता है।'

"मैं फिर हँसा और मैंने रोमिली से कहा, 'बहुत अच्छा चेला मिल गया है। मैं तुमको बधाई देता हूँ, परन्तु देखना तो केवल यह है कि यह भ्रान्ति कितने दिन तक चलती है।'

" 'किसकी भ्रान्ति ?' भद्रायण ने पूछा।

" 'आपके रोमिली पर और रोमिली की आप पर सम्मोहन की।'

" 'जब तक चलेगी तब तक तो सुख भोग लूँ।'

" 'और पीछे मेरी तरह ईर्ष्या, भय और विषाद की अग्नि में जलना होगा।'

" 'जब वह समय आएगा तो देख लूँगा।'

" 'मैं तो देख रहा हूँ। इसी कारण आपको सावधान कर रहा था।'

" 'मैं तुम्हारी भाँति मूर्ख नहीं बनूँगा।'

" 'मेरी शुभकामना आपके साथ है।'

" 'तो क्या तुमको इसमें सन्देह है कि मैं अपनी अवस्था को स्थायी नहीं रख सकूँगा ?'

" 'मैं चाहता हूँ कि आप रख सकें, परन्तु आशा कम प्रतीत होती है।'

" 'कौन हर लेगा मेरी जवानी को ? मैं तो इसी को अपनी निधि समझता हूँ।'

" 'जिसने दी है वह हर भी सकता है।'

" 'हाँ, यदि ऐसा करने के लिए जीता रहा तो।'

" 'अभी तक तो जीता है। उसको दिया गया विष निष्फल गया है।'

" 'यह झूठ है।'

" 'हाँ, सत्य तो तब होता जब वह अपना फल दिखा देता।'

"इस समय रोमिली ने वार्तालाप में भाग लिया और कहा, 'आप बच्चों की भाँति लड़ते ठीक प्रतीत नहीं होते। मेरी प्रार्थना है कि इस प्रसंग को छोड़िए।'

" 'मैं ऐसे झूठे आदमी से बात नहीं करना चाहता।' यह कह वह भवन में लौट गया।

"मैं उसको जाते देखता रहा। लॉन के किनारे एक सपाट पत्थर पड़ा था। मैं उस पर जाकर बैठ गया। रोमिली मेरे पास बैठ गई और कहने लगी, 'मैं इस प्रकार के झगड़े को पसन्द नहीं करती। देखिए, इतने वर्ष तक मैं आपके साथ रही हूँ। अब मैं इसके साथ रहना चाहती हूँ। मैं ऐसा करना अपना अधिकार समझती हूँ। मेरी सम्मति मानिए, आप कुछ समय के लिए लाहौर चले जाइए। जब मैं इससे उकता जाऊँगी तो आपको बुला लूँगी।'

"मैंने कहा, 'तुम्हारे प्रस्ताव पर विचार करूँगा।'

" 'कब तक निर्णय कर सकोगे ?'

" 'दो-तीन दिन में। जहाँ इतने वर्ष यहाँ रहा हूँ, तुम दो-तीन दिन के लिए क्यों उतावली हो रही हो ?'

" 'डर रही हूँ कि आप दोनों लड़कर कुछ खराबी न कर बैठें। मेरे लिए आप दोनों समान हैं।'

" 'धन्यवाद रोमिली ! मैं परसों अपना निर्णय कर लूँगा।'

" 'निर्णय का तो प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। परसों आपको जाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।'

" 'तो यह आज्ञा है ?'

" 'आज्ञा ही समझ लीजिए।'

"इसके पश्चात् मैं अपने कमरे में लौट आया। वहाँ कमरा भीतर से बन्द कर अपनी परिस्थिति पर विचार करने लगा। भद्रायण की एक बात मुझको चुभ गई। उसने कहा था कि वह मेरी तरह मूर्ख नहीं है, जो पीछे ईर्ष्या-विषाद में पड़े।

"इसका अर्थ यह था कि मुझको ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए। न ही किसी प्रकार का दुःख मानना चाहिए। तो प्रश्न था क्या करना चाहिए। इसका सुझाव भी उसने दे दिया था, उसने कहा था कि यदि मैं जीता रहा, तभी तो उसकी जवानी हर सकूँगा। इसका मतलब यह था कि जीता नहीं रहूँगा।

"इसका अर्थ था कि मुझे जीता रहना है। जीता रहने के दो उपाय थे। एक यह कि मैं यहाँ से चला जाऊँ। उसके लिए मैदान खाली हो जाएगा। अर्थात् मैं उसके लिए जीता न रहूँगा। इस कारण यह उपाय मुझको पसन्द नहीं आया। मैं तो जीता रहना चाहता था। यह दिखाने के लिए कि जो जीवन देता है, वह जीवन ले भी सकता है। मैं मैदान छोड़कर भाग जाने में अपनी हेठी समझता था। इसमें मैं मूर्ख कहाता।

"अतएव मेरा निर्णय हुआ कि यह जो कुछ बना हुआ है, उसको नष्ट कर दूँ, जिससे भद्रायण जैसा धूर्त, स्वार्थी और विषय-लोलुप इसका सुख न भोग सके।

"मैंने निर्णय कर लिया कि यह स्वर्गलोक भी नहीं रहेगा। मैं यह चाहता था कि रोमिली और गाँव के लोग बच जाएँ, और भद्रायण इस उल्कापात में, जो मैं वहाँ उत्पन्न करना चाहता था, भस्म हो जाए।

"इस निर्णय के पश्चात् मैं यह कार्य करने के लिए योजना बनाने लगा। मैं अपने पलंग पर लेटा हुआ अपनी योजना की एक-एक कड़ी बनाकर विचार करता गया। उसका श्रीगणेश मैं उसी दिन कर देना चाहता था। मेरे कमरे में एक बड़ी घड़ी 'अलार्म-पीस' चिमनी पर रखी थी। उसके डायल में ठीक तीन के निशान पर एक सुराख कर, उसमें एक कील ऐसे ढंग से लगाना चाहता था कि घंटों की सुई उसको छूती हुई घूमे। इसके लिए मैंने राबर्ट के टूल बक्स को निकाला और डायल में सुराख कर दिया। एक कील लेकर उसमें खोंस दी। पश्चात् कील के ऊपर का

सिर रेती से ऐसा रगड़ दिया कि घंटों की सुई जब तीन के अक्षर पर आए तो कील से लग जाए।

"यह तो मैंने उसी दिन कर लिया। दूसरा काम था तहखानों की चाबियाँ दुहरी करना। मैं असली चाबियों को लेकर उसकी नकल उतरवाना चाहता था। इसके लिए तीन-चार दिन तक अपनी चाबियों के गुम रखने का प्रबन्ध करना था। इसके लिए रात को रोमिली के शयनागार में जाने की बात थी। चाबियाँ ड्रैसिंग टेबल में रखी रहती थीं। वहाँ से वे चाबियाँ कैसे लाई जाएँ, यह प्रश्न था। बहुत सोचने पर इसके लिए एक मार्ग सूझ गया।

"मुझे अपना भोजन बनाना था। इस कारण कप-बोर्ड को खोल, उसमें से ताजी खेत से, उखाड़कर लाई सब्जियों को कतरने लगा। शलजम चाकू से कतर रहा था कि मुझको शलजम में सुई का सा एक सुराख दिखाई दिया। मैंने समझा कि शायद इनमें कीड़ा लग गया हो। इस कारण उस शलजम को छोड़ दूसरा निकाला। उसमें भी सुराख था। मैं प्रातःकाल जब खेत से लाया था और लाकर उनकी मिट्टी धो रहा था, तो ये सुराख मैंने नहीं देखे थे। अब देख मुझको विस्मय हुआ। मैंने तीसरा शलजम निकाला तो उसमें भी सुराख दिखाई दिया। विचित्र बात यह थी कि सबमें एक-एक सुराख था और सब सुराख समान थे। मुझको कुछ सन्देह हो गया तो मैंने एक गाजर निकाली। उसमें भी वैसा ही सुराख था। मैंने एक मूली निकाली। उसमें भी वैसा ही सुराख दिखाई दिया। इस पर मेरा सन्देह विश्वास में बदल गया। मैंने गाजर ली और उसको कतर कर बाहर बाग में ले आया। वहाँ हमारे पाचक की बकरी खड़ी थी। मैंने गाजर उसको खिला दी। वह गाजर खाते ही एक मिनट में गिर पड़ी और छटपटाते हुए मर गई।

"मैं अपने कमरे में लौट आया और सुराख वाली सब्जियाँ ले रोमिली के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ रोमिली और भद्रायण एक ही सोफे पर बैठे कुछ बातें कर रहे थे। मैंने रोमिली से पूछा, "क्या मैं किसी प्रकार से आपके आनन्द में बिघ्न बन रहा हूँ?'

"उत्तर भद्रायण ने दिया, 'जल्दी बताओ क्या चाहते हो? हम किसी आवश्यक विषय पर बात कर रहे हैं।'

" 'मैं तो केवल यह कहने आया था कि मैं प्रातःकाल अपने कमरे में रात के भोजन के लिए सब्जियाँ रखकर आपके साथ लॉन में टहलने लग गया था। कोई मेरे पीछे मेरे कमरे में आया है और सब्जियों में विष डाल गया है।'

"भद्रायण यह सुन हँस पड़ा। रोमिली ने कहा, 'केशव जी! यह भला कैसे हो सकता है? मैं आपके साथ थी और भद्रायण भी बाग में था। कोठी में और कौन है, जिसका आपसे द्वेष हो?'

" 'मुझको विश्वास है कि यह काम भद्रायण का है। उसने इंजैक्शन की सुई से

उन सब्जियों में अतिघातक वस्तु का संचार कर दिया है।'

" 'आपका मस्तिष्क खराब हो गया है जो आप ऐसा समझने लगे हैं। या तो आप मूर्ख हैं या धूर्त।'

" 'मैं तो समझता हूँ,' भद्रायण ने कहा, 'कि आपने स्वयं ही इन सब्जियों में कुछ मिला दिया है और मुझको यहाँ से निकलवाने के लिए झगड़ा आरम्भ कर दिया है। परन्तु मुझको विश्वास है कि रोमिली देवी सब समझती हैं।'

"मुझको अपने पर ग्लानि उत्पन्न होने लगी कि रोमिली के सामने इस दुष्ट की दुष्टता सिद्ध करने क्यों आया? क्या वह यहाँ के न्यायकर्ता के पद पर है? क्या यह सत्य ही यहाँ की मालकिन है और मैं उसकी प्रजा हूँ? अपने को एक अधीन और निस्सहाय अवस्था में देख, मुझे अपने पर क्रोध चढ़ आया। अतएव मैं बिना एक भी शब्द बोले वहाँ से लौट आया। कमरे के बाहर निकल मैं विचार करने लगा कि अपने कमरे में जाऊँ अथवा भवन छोड़ चला जाऊँ।

"एकाएक मुझको भद्रायण और रोमिली, दोनों के खिलखिलाकर हँसने का शब्द सुनाई पड़ा। मैं सतर्क हो सुनने लगा। भद्रायण ने हँसकर कहा, 'बेचारा रानी जी के सामने मुकद्दमा लेकर आया था, परन्तु एक ही क्षण में दावा खारिज हो गया।'

" 'मैं अभी जाकर मना लेती हूँ। वैसे वह बहुत काम का व्यक्ति है। यह जो कुछ भी सुख और आनन्द हम यहाँ देखते हैं उसका ही निर्माण किया हुआ है। उसको यहाँ से जीवित भाग नहीं जाने देना चाहिए। वह बहुत हानि भी पहुँचा सकता है।'

"मुझको और अधिक सुनने की आवश्यकता नहीं रही थी। मैं अपने कमरे में चला आया। इस बात में अब सन्देह नहीं रहा था कि केवल भद्रायण ही नहीं, उसके साथ रोमिली भी मेरी जान लेने पर तुली हुई थी। मेरे लिए अब विचारणीय बात यह रह गई थी कि मैं यहाँ से कैसे निकल सकता हूँ और निकलने से पहले क्या हानि इन दोनों को पहुँचा सकता हूँ।

"मैं अपने कमरे में अभी पहुँचा ही था कि रोमिली वहाँ आ पहुँची और बहुत ही प्रेमपूर्वक मेरे गले में बाँह डालकर कहने लगी, 'केशव! मैं समझती हूँ कि आपको भ्रम हो गया है कि कोई आपको मार डालना चाहता है। वास्तव में ऐसी कोई बात नहीं हो रहीं।'

"मैंने पश्चात्ताप करने के भाव में कहा, 'तुम ठीक ही कहती हो। परन्तु मेरे मन में भद्रायण का कुछ ऐसा आतंक छा गया है कि प्रत्येक बात में मुझको उसका हाथ दिखाई देता है। मैं बहुत यत्न करता हूँ कि ऐसा भाव मैं मन से निकाल दूँ; परन्तु वह बार-बार मुझको कष्ट देता रहता है।'

" 'मेरा विचार है कि आपको 'नरवस-ब्रेक-डाऊन' (भ्रम-रोग) हो गया। आपके लिए आवश्यक है कि आप स्थान बदलकर किसी अन्य स्थान पर चले जाएँ।

वातावरण और परिस्थिति बदलने से आपका चित्त स्थिर हो जाएगा।'

" 'मैं भी यही विचार कर रहा हूँ। मैं दो-तीन दिन में यहाँ से कहीं अन्यत्र चला जाना चाहता हूँ। परन्तु यह दो-तीन दिन भी यहाँ रहना भय-युक्त है।'

" 'तो आप कल ही जाइए न।'

" 'कल ही ? हाँ, ठीक ही तो है। मेरे लिए कल और परसों में क्या अन्तर पड़ सकता है। मैं अभी अपना सामान बँधवा देता हूँ। कल यहाँ से विदा हो जाऊँगा।'

"इतना निश्चय कर रोमिली उठकर जाने लगी। मैंने उसका हाथ पकड़कर कहा, 'एक बात है। आज रात मैं तुम्हारे शयनागार में आना चाहता हूँ।'

" 'आप जब स्वस्थ हो जावेंगे, तब ही यह ठीक रहेगा। मेरा विचार है कि दो मास में आप ठीक हो जावेंगे।'

" 'नहीं डार्लिंग, जाने से पूर्व···!'

" 'नो···नो···। इसमें तो आपके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ सकता है।'

"इतना कहकर वह अपना हाथ छुड़ाकर वहाँ से चली गई। मैं एक मिनट ठहर उसके पीछे-पीछे गया। वह भद्रायण के कमरे में गई थी। मैं उस कमरे के बाहर जा दरवाजे के बाहर लगे पर्दे से कान लगा सुनने लगा। भद्रायण कहता सुनाई दिया, 'अपने कमरे में मत जाता। मुझको भय है कि वह तुम पर हाथ उठायेगा।'

" 'मुझको विश्वास नहीं आता वह अभी हमारे सम्मोहन में बँधा हुआ है।'

" 'नहीं प्रिये ! मेरा कहना मानो। आज तुम इसी कमरे में रहो। हाँ, कल उसको यहाँ से विदा कर देना चाहिए, परन्तु उसे चन्द्रभागा से पार जाने देना ठीक नहीं।'

" 'तो मुझको अभी नूरुद्दीन को बुलाकर प्रबन्ध कर देना चाहिए।'

" 'नूरुद्दीन का विश्वास किया जा सकता है क्या ?'

" 'वह सोलह आने विश्वास के योग्य है।'

"मैं अपने कमरे में लौट आया और अपने कार्यक्रम पर विचार करने लगा।

"मैंने अपना सामान तैयार कर लिया। एक बड़ा कोट, एक अटैचीकेस, वह घड़ी, जिसमें मैंने कील गाड़ी थी। घड़ी मैंने अटैचीकेस में रख ली और उसमें कुछ औजार, जो अपनी योजनानुसार मुझको चाहिए थे, ले लिये। अब मैं रात्रि के अँधेरे की प्रतीक्षा करने लगा।'

"किसी ने मेरा दरवाजा बहुत धीरे से खटखटाया। मैंने जेब से पिस्तौल निकाल लिया और उसका घोड़ा चढ़ा, हाथ में उसे तान, द्वार खोल दिया। यह हमारा पाचक था। वह मेरे हाथ में पिस्तौल देख एक क्षण के लिए दरवाजे पर ठहर गया। मैंने उसको पहिचाना और पिस्तौल नीचे कर मुस्कराकर कहा, 'ओह तुम हो ! मैंने समझा था···। कुछ नहीं, आ जाओ।'

"मैंने पिस्तौल जेब में रख लिया।"

"पाचक ने बैठकर धीरे से कहा, 'मास्टर ! आज आपको मार डालने की योजना फिर बनाई गई है।'

" 'क्यों ? कैसे कहते हो ?'

" 'मेरी बकरी मार डाली गई है। मेरा विचार है कि कोई नयी विष तैयार की गई है और उसकी परीक्षा बेचारी बकरी पर की गई है।'

" 'मुझको तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि गाँव के कुछ लोग बुलाकर मुझको मार डालने का विचार है।'

" 'तो आप भाग क्यों नहीं जाते ?'

" 'यह सम्भव नहीं। तुमको पता है कि सीमा पर बन्धन लगाया हुआ है। बिना कंट्रोल की स्वीकृति कोई जा नहीं सकता।'

" 'तो फिर क्या होगा ?'

" 'यदि तुम मेरी सहायता करो तो मैं बचकर निकल सकता हूँ।'

" 'मैं तो अभी भी आपको अपना मास्टर मानता हूँ और अपने को आपका नौकर समझ रहा हूँ। उस ह्वोर(वेश्या) को मैं अपना मालिक नहीं समझता। आप बताइए कि मैं क्या कर सकता हूँ ?'

" 'मुझको रात के खाने के पश्चात् बता दो कि रोमिली किस कमरे में सोई है।'

" 'वह आज भद्रायण के कमरे में सोएगी। वहाँ खाने का प्रबन्ध किया गया है। वहाँ की सेविका खाना खिलाने का कार्य नहीं कर सकती। इस कारण मुझको खाना वहीं परसने की आज्ञा हुई है। पर मास्टर ! नूरुद्दीन को तो अभी बुलाया गया है। कहीं भोजन के समय तक भागने का अवसर ही न रहे।'

" 'इसकी तुम चिन्ता न करो। मेरे इस कमरे में मुझको कोई छू नहीं सकता। यहाँ मेरे पास सुरक्षा का सब प्रबन्ध है। परन्तु जब मैं इस कमरे से बाहर चला जाऊँगा तो फिर मेरे पास रक्षा का कुछ भी साधन नहीं रहेगा।'

" 'तो फिर क्या आज्ञा है ?'

" 'जब ये लोग भोजन कर रहे हों, मुझको सूचना देना।'

" 'वह जाने लगा तो मैंने उसकी आँखों में देखकर कहा, 'मैं तुमको मित्र समझता हूँ।'

" 'मैं यहाँ से चला जाना चाहता हूँ।'

" 'तुम लाहौर आ जाना। मैं; जैसा भी तुम चाहोगे, प्रबन्ध कर दूँगा।'

"जब वह चला गया तो मैंने एक बन्द बोतल हार्लिक्स की खोली और उसमें से दूध बनाया। एक गिलास भर पीकर तैयार हो गया।

"रात के नौ बजे पाचक आया और उसने बताया, 'नूरुद्दीन को आज्ञा हो गई

है कि वह कल प्रातःकाल आपकी चन्द्रभागा के इस पार प्रतीक्षा करे। आपका शव चोरी-चोरी कोठी में लाया जावे। उसको अपने साथ छः विश्वस्त गाँव वालों को रखने की आज्ञा हुई है। एक सहस्र रुपया उसको इन लोगों में बाँट देने लिए दे दिया गया है। परन्तु नूरुद्दीन परेशान दिखाई देता है। बाहर निकलने पर मैंने पूछा तो उसने सारी बात बता दी।'

" 'वह क्या करना चाहता है?'

" 'उसने अभी फैसला नहीं किया। मैंने कहा था, मालिकों के झगड़े में हमको नहीं पड़ना चाहिए। उसने कहा, 'मैं समझता हूँ मगर क्या किया जावे। मैं मालकिन को नाराज नहीं करना चाहता। मैं गाँव में जाकर वहाँ के अन्य लोगों से बातचीत करूँगा।' वह चला गया है?'

" 'इस समय मालकिन कहाँ है?'

" 'भद्रायण के कमरे में। अब वे अपने कमरे में नहीं आएँगी। सोने का प्रबन्ध वहाँ कर दिया गया है।'

" 'ठीक है। तुम एक काम करो कि उनके कमरे के बाहर छुपकर देखते रहो। यदि मालकिन अपने कमरे में आना चाहे तो मालकिन के कमरे का द्वार तीन बार खटखटा देना। मैं समझ जाऊँगा। मुझको उस कमरे में कुछ काम है। दस मिनट से अधिक नहीं लगेंगे।'

"वह तैयार हो गया। मैंने अपना अटैचीकेस लिया और दबे पाँव रोमिली के कमरे में जा पहुँचा। पाचक कमरे के बाहर प्रतीक्षा करता रहा। उसको मुझे खबर करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। मैंने ड्रैसिंग टेबल का दराज खोला और उसमें रखी चावियों में से दो चाबियाँ निकाल लीं। एक तो गाँव के कण्ट्रोल रूम की थी और दूसरी भवन के नीचे के तहखाने की, जहाँ स्टाक रूम में आईसोटोप्स रखे थे। मैंने कुछ देर तक पुनः अपनी योजना पर विचार किया और यह समझ कि इन दो चाबियों से काम चल जाएगा, दराज को बन्द कर दिया और कमरे से बाहर निकल आया। पाचक अपने नियत स्थान पर खड़ा था। मैंने उसको संकेत से अपने कमरे में बुला लिया और उसको कहा, 'मैं अभी कुछ दिन यहाँ छुपकर रहूँगा। वहाँ से तुमको भाग जाने की सूचना दूँगा। तुम भाग जाना। यहाँ सब मौत के मुख में हैं और कोई नहीं बचेगा।'

"इतना कह मैंने अटैची और ओवरकोट लिया और भवन से बाहर निकल गया।

"पाचक मुझको देखता रह गया। भवन के द्वार पर चौकीदार ने मुझको पूछा, 'मालिक कहाँ जा रहे हैं?'

" 'गाँव को। अभी आधे घंटे में लौट आऊँगा।'

"वह मुस्कराकर चुप रहा। उसको पता था कि जब मैं अप्सरा भवन में जाता

था, तो ऐसा ही कहता था। मैं गाँव की ओर चल पड़ा। भवन से बाहर निकल शीतल पवन से मेरे मस्तिष्क में आत्म-विश्वास जाग उठा। मैं समझने लगा कि यह पूर्ण भवन ईंटों और पत्थरों का ढेर हो जाएगा। गाँव भी जलकर भस्म होने वाला है। यहाँ पर प्रलय का दृश्य उपस्थित होने वाला है। इस प्रकार के विचार करता हुआ मैं गाँव में जा पहुँचा।

"मैं अप्सरा भवन में जाना नहीं चाहता था। इससे नन्दू पांडे के घर जा पहुँचा। वह सोने की तैयारी कर रहा था। मुझको दरवाजे पर आया देख वह चकित रह गया। उसने अपने होंठों पर उँगली रख मुझको भीतर ला दरवाजा बन्द कर लिया। मैंने पूछा, 'क्या है?'

" 'मालिक, यहाँ क्यों आए हैं? यहाँ तो आपको मार डालने का षड्यन्त्र हो रहा है।'

" 'मुझको मालूम है, वह कल प्रातःकाल के लिए है। उस काल में अभी दस घंटे शेष हैं। तुम बताओ तुम मेरे साथ हो या भद्रायण के?'

" 'मैं तो मालिक आपका सेवक हूँ। परन्तु पीरू की बीवी जो इसी मकान में है, विश्वास के योग्य नहीं है।'

" 'तो ठीक है किसी को बताना नहीं कि मैं यहाँ हूँ। तुम एक काम करो। अप्सरा भवन में जाकर सरस्वती को यहाँ बुला लाओ। उसको धीरे से कहना कि मैं यहाँ बुला रहा हूँ। किसी को पता न चले।'

"पीरू की बीवी अपने बच्चों के साथ घर के पिछले कमरे में सो रही थी। नन्दू ने मुझे दूसरे कमरे में बैठाकर कमरा बन्द कर दिया और सरस्वती को बुलाने के लिए चल पड़ा।

"नन्दू ने मकान के बाहर इधर-उधर देखा कि कोई देख तो नहीं रहा और बाजार जनशून्य पा, वह अप्सरा भवन की ओर चला गया। मैंने भीतर से किवाड़ बन्द कर लिये और खिड़की से मैं देखता रहा कि वह कब लौटता है।

"मुझको नन्दू पांडे पर बहुत विश्वास था। इसी कारण उसके मकान पर आया था। यहाँ प्रतीक्षा करते-करते मैं विचार करने लगा कि दो-चार भले लोगों को यहाँ से बचाने का उपाय करना चाहिए। इस पर भी समय से पूर्व मैं इनको अपनी योजना नहीं बताना चाहता था। मुझको भय था कि कहीं मेरी योजना का पता रोमिली को मिल गया तो वह इसे विफल करने की क्षमता रखती है।

"सरस्वती के आने में कुछ देरी लगी। उसने बताया कि नूरुद्दीन ने अप्सरा भवन में नाच करवाया था। जब तक वे सब शराब पीकर घरों को चले नहीं गए उसको पांडे जी कुछ कह नहीं सके। पीछे इन्होंने सब बता दिया। नूरुद्दीन को मालकिन ने बहुत-सा रुपया दिया है जिससे कल मुझे वह मरवा डाले। रुपये से आज जशन हुआ है।

" 'बताइये क्या करना है ?'

" 'मैं सरस्वती को एक ओर ले गया और कहने लगा, 'मैं यहाँ ही कहीं छुपकर रहना चाहता हूँ। तुमसे यह चाहता हूँ कि मुझको नित्य भोजन खिलाने आया करो। उसके लिए जो कहोगी, दूँगा।'

" 'कहाँ रहोगे मालिक ?'

" 'अभी तो विचार है कि तापसी बाबा की गुफा में ही रहूँ।'

"सरस्वती ने सिर हिला दिया। मैंने उसके मुख पर देखा तो उसने कहा, 'वहाँ तो आपका एक दिन में ही पता चल जाएगा। मैं यदि भोजन लेकर वहाँ गई तो सबको सन्देह हो जाएगा। एक बात आप करिए। मैं अभी अपने घर जा रही हूँ। मेरे पाँच मिनट पश्चात् आप वहाँ आ जाइए। आपको छुपाकर रखने का प्रबन्ध कर दूँगी। मैं समझती हूँ कि पांडे जी के घर भी रहना उचित नहीं। यह महा डरपोक आदमी है। किसी भी समय भेद खोल सकता है।'

" 'अच्छा, तुम चलो मैं आता हूँ।'

"सरस्वती चली गई और नन्दू पांडे उसके जाने के पश्चात् मेरे पास आया और पूछने लगा, 'क्या तय हुआ है ?'

" 'मैंने सरस्वती को कुछ बताना था वह बता दिया है। अब मैं दिन निकलने से पहले ही यहाँ से चला जाना चाहता हूँ। कल मैं किश्तवार थानेदार के घर रहूँगा और वहाँ से जाने का प्रबन्ध होते ही चल दूँगा।'

" 'फिर कब दर्शन होंगे ?'

" 'मैं तीन मास तक लौटूँगा। मुझको विश्वास है कि रोमिली भद्रायण से उचाट होकर उसको घर से निकाल देगी। तब ही मैं यहाँ आ सकूँगा ?'

" 'वह कैसी औरत है, मालिक ?'

" 'वह भी अब यहाँ नहीं रह सकेगी।'

"नन्दू इन बातों को ठीक-ठीक नहीं समझ सकता था। इस कारण चुप रहा। मैं पाँच-दस मिनट और वहाँ बैठ अपना अटैचीकेस और ओवरकोट उठा सरस्वती के मकान की ओर चल पड़ा। वहाँ वह मेरी प्रतीक्षा कर रही थी। जब मैं मकान के भीतर पहुँचा तो उसने द्वार बन्द कर मुझको बैठाया और पूछा, 'अब बताइये, क्या चाहते हैं ?'

" 'मैं यदि यहाँ से भागना चाहूँ तो भाग सकता हूँ। मुझको जाने के लिए बहुत से मार्ग मालूम हैं, परन्तु मैं कुछ काल तक यहाँ रहना चाहता हूँ। मेरा यहाँ से जाने का समय अभी नहीं आया।

" 'साथ ही गाँव के लोग मुझको मार डालने का यत्न कर रहे हैं। उनसे खुले में मुकाबला अभी नहीं करना चाहता। इससे भारी हल्ला हो जाएगा और मेरा काम नहीं हो सकेगा।'

" 'क्या काम है आपका ? मेरी राय तो यह है कि यहाँ से आपको चले जाना चाहिए। मुझको भी साथ लेते चलिए।'

" 'तब तो बहुत ठीक रहेगा। यदि मैं तुम्हारे ही मकान में रहूँ तो किसी को पता तो नहीं लगने दोगी ?'

" 'यहाँ आपको कोई नहीं पा सकता। दिन के समय बाहर मत निकलिएगा। रात को मैं देख लूँगी।'

"मैंने मकान के भीतर के एक कमरे में ठहरने का प्रबन्ध कर लिया। अगले दिन सरस्वती जब अप्सरा भवन में संगीत और नृत्य का अभ्यास कर लौटी तो उसने बताया, 'पूर्ण गाँव में यह विख्यात हो गया है कि आप पंजाब चले गए हैं। नूरुद्दीन नदी के पुल पर से लौट आया है। वह बहुत ही चिन्तित प्रतीत होता है। उसके साथ गए लोग अपने-अपने घरों में छुपे हैं। गाँव वाले यह आशंका कर रहे हैं कि आप पुलिस लेकर लौटेंगे। इससे जो लोग आपकी हत्या करने गए थे वे डर रहे हैं।'

"मैं इस समाचार से प्रसन्न था। रात को सरस्वती आई तो उसने बताया, 'आज दिन-भर भवन में गुप्त गोष्ठियाँ होती रही हैं। लोग आपके विषय में भिन्न-भिन्न बातें कह रहे हैं। नन्दू पांडे को भी बुलाया गया था। मैं उससे मिली थी। उसने बताया है कि भद्रायण तो आपके चले जाने से प्रसन्न है परन्तु मालकिन चिन्तित हैं। नूरुद्दीन को आपके विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए जम्मू तक जाकर पता करने के लिए कहा गया है।'

"अगले दिन नूरुद्दीन रामवन की ओर चला गया। एक आदमी को भद्दरवाह की ओर भेजा गया। इन सब बातों से मेरा यह अनुमान निकला था कि रोमिली के मन में मेरे से कुछ भय लग रहा है। मैंने अपने मन में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि इस सब कुछ को, जो मैंने बनाया है, समाप्त कर ही यहाँ से जाऊँगा।

"तीन दिन तक चुपचाप मैं सरस्वती के घर पड़ा रहा। मैंने घड़ी को तब तक 'टाईम बम्ब' संचालन के योग्य बना लिया था। घड़ी चलती-चलती जब तीन नम्बर पर आती तो घंटे की सुई अटक जाती। कील जो मैंने नम्बर तीन पर लगाया था, को एक बिजली की तार से जोड़ दिया गया था और घड़ी की सुई दूसरी बिजली की तार से जोड़ दी थी। ठीक तीन बजे, जब सुई तीन पर आती तो विद्युत् प्रवाह चालू हो जाता। इस विद्युत् प्रवाह का सम्बन्ध एक डिब्बे के ढकने से लगा दिया था। विद्युत् प्रवाह चालू होते ही ढकना खुल जाता था। यह डिब्बा और ढकना 'ग्रैफाईट' का बना हुआ था। इस सम्बन्ध की मैंने कई बार परीक्षा की। घड़ी को प्रातः दस बजे चालू कर देता था। ठीक तीन बजे घड़ी की घंटे बजाने वाली सुई कील के साथ अटकती और खट से डिब्बे का ग्रैफाईट का ढकना नीचे गिर पड़ता।

"रात के समय मैं गाँव से अप्सरा भवन के नीचे आईसोटोप्स के गोदाम में

गया। इस समय अप्सरा भवन शान्त हो चुका था। सब लोग सो रहे थे। मैं वहाँ गया और गोदाम का द्वार खोल नीचे उतर गया। वहाँ प्रकाश कर मैंने देखा कि आईसोटोप्स ग्रैफाईट के डिब्बे में रखे हैं; परन्तु सब डिब्बे तालों से बन्द थे।

"वहाँ पर मैंने यूरेनियम २३३ का कुछ स्टाक रखा था। वह भी उनमें से किसी एक डिब्बे में बन्द था। इस कारण अब समस्या यह हो गई कि ये ताले तोड़े जावें। इसके लिए कई दिन लगाने थे। एक विशेष बात यह हुई कि गाँव के तहखाने से भवन तक जाने के लिए जो सुरंग थी, उसका द्वार भी बन्द था। उसको भी खोलना था।

"उस दिन तो मैं इतना ही देख चला आया। अगले दिन मैं अपने साथ एक तेज रेती लेकर वहाँ पहुँचा। तहखाने का द्वार भीतर से बन्द कर मैंने ग्रैफाईट के डिब्बों को रगड़-रगड़कर खोलना आरम्भ कर दिया। यूँ तो दो डिब्बों में जितना मसाला था, वह मेरे लिए पर्याप्त था। परन्तु मैं तो यूरेनियम ढूँढ रहा था और वहाँ पर बीस डिब्बे थे। यह पता नहीं था कि यूरेनियम किसमें है। उस रात मैं दो डिब्बे ही खोल सका था।

"इस पर भी मैंने साहस नहीं छोड़ा। मैं नित्य वहाँ जाकर एक के बाद दूसरा डिब्बा खोलने लगा। एक रात में दो डिब्बों से अधिक नहीं खोल सकता था। रात को दस बजे के पश्चात् ही वहाँ जा सकता था। उससे पहले लोग अप्सरा भवन में गाना सुनने आया करते थे।

"एक दिन सरस्वती सूचना लाई। राबर्ट वहाँ फिर आ गया है। यह क्यों, मैं समझ नहीं सका। मैंने सरस्वती से कहा, 'पता करो, वह क्या कर रहा है?'

" 'मेरा वहाँ कोई जान-पहिचान का व्यक्ति नहीं।'

" 'मैं तुमको पहिचान देता हूँ। तुम भवन के पाचक ल्यूनार्डी के पास चली जाना और उसको कहना कि तुमको मेरी चिट्ठी आई है। शेष बात तुम कर लेना। अगर वह पूछे कि कहाँ से चिट्ठी आई है तो कह देना कि रामवन से एक आदमी लेकर आया है। अपने विषय में कहना कि तुम पंजाब जाने का विचार कर रही हो।'

"उसी दिन सरस्वती भवन में गई। सायंकाल वह लौट आई और उसने बताया, 'पाचक को मेरे कहने का विश्वास नहीं आता था। पश्चात् मैंने उसे वह तिथि बताई, जिस दिन आप वहाँ से चले थे और बताया कि मैंने आपको छुपाकर भाग जाने में सहायता की थी।

" 'जब बातचीत होने लगी तो उसने बताया कि राबर्ट मालकिन से रुपया माँग रहा है और वे देना नहीं चाहतीं। साथ ही भद्रायण और उसमें बन नहीं रही।'

"मैंने समाचार पा सन्तोष प्रकट किया। मैं मन में चाहने लगा कि दोनों आपस में भिड़ जाएँ तो बहुत अच्छा हो। उसी रात मैं दोनों तहखानों का द्वार खोलने में सफल हो गया। मैं द्वार खोल भवन के नीचे तहखाने में जा पहुँचा। वहाँ

और अधिक आईसोटोप्स की मात्रा रखी थी। कठिनाई यूरेनियम की हो रही थी। बिना यूरेनियम के आईसोटोप्स में विखण्डन चालू नहीं हो सकता था। उस दिन मैंने वह डिब्बा ढूंढना आरम्भ कर दिया, जिसमें यूरेनियम रखा था। उस दिन सफल नहीं हुआ। परिणाम यह हुआ कि मुझको भवन के नीचे तहखाने में नित्य जाने की आवश्यकता पड़ने लगी। मैंने एक-एक कर सब डिब्बों को खोलने का निश्चय कर लिया।

''सरस्वती नित्य ल्यूनार्डी से मिलने जाती थी और उससे समाचार लाती थी। रोमिली मेरी तरह राबर्ट को निकाल नहीं सकी। प्रत्युत उसके उससे पूर्व सम्बन्ध बनने लगे थे। इससे तो ऐसा प्रतीत होने लगा था कि रोमिली की इच्छा थी कि राबर्ट और भद्रायण में लड़ाई हो जाए और दोनों एक-दूसरे को मार डालें।

''एक दिन सरस्वती यह सूचना लाई कि राबर्ट और भद्रायण में मुक्केबाजी हो गई थी और राबर्ट ने भद्रायण को बुरी तरह घायल कर दिया है। भद्रायण तो खाट पर लेट गया है। मैं विचार कर रहा था कि यह समय है, जब इस शैतान के घर को इसमें रहने वालों सहित उड़ा दिया जाए। मैं उस रात फिर भवन के तहखाने में जा पहुँचा। मैंने यूरेनियम एक ग्रैफाईट के डिब्बे में बन्द कर रखा था। ऐसा प्रतीत होता है कि रोमिली वहाँ के सामान में उथल-पुथल करती रही है। तभी वस्तुएँ वैसी नहीं थीं, जैसी मैंने रखी थीं।

''एक दिन मैं तहखाने से सुरंग में पहुँचा तो वहाँ प्रकाश देख मैं दीवार के साथ लगकर खड़ा हो गया। रोमिली और राबर्ट वहाँ थे और कुछ ढूँढ रहे थे। मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वे भी वही वस्तु ढूँढ रहे हैं, जो मैं ढूँढ रहा था। मैं छुपकर देखता रहा कि वे करते क्या हैं। वे डिब्बों को खोल-खोलकर देखते थे और फिर उनको बन्द कर रखते जाते थे। रोमिली ने कहा, 'बहुत डिब्बे तो खुले रखे हैं। न जाने केशव का क्या अभिप्राय था इनसे ?'

'' 'जब तहखानों को ताला लगा है तो डिब्बों को ताला लगाने की क्या जरूरत थी ?'

'' 'पर कई डिब्बे बन्द हैं।'

'' 'पर मैं तो यूरेनियम चाहता हूँ। मैं उससे बम्ब बनाकर एकत्रित होने वाली भीड़ को स्वाहा कर देना चाहता हूँ।'

'' 'वह तो मिल नहीं रहा न। तुम दो-तीन हथगोले ले लो। उनसे तुम्हारा काम चल जाएगा।'

'' 'तो वही दे दो।'

'' 'रोमिली ने एक अलमारी में से तीन हथगोले निकालकर राबर्ट को दे दिए। उसने इनको जेब में रख लिया और फिर दोनों लैम्प बुझाकर तहखाने से बाहर निकल गए। जब ऊपर का द्वार बन्द हो गया तो मैंने लैम्प जलाकर प्रकाश किया

और सोचने लगा कि चार-पाँच हथगोले लेकर उनमें छेद कर, उनमें रखे यूरेनियम को ही निकाल लूँ। इससे ही मेरा काम चल जाएगा। इसी अर्थ में मैंने अलमारी खोली और उसमें हथगोले निकालने के लिए हाथ बढ़ाया। भाग्य की बात, कि मेरे हाथ में गोले के स्थान एक डिबिया आ गई। यह डिबिया यूरेनियम वाली ही थी। उसको देख मैं एकदम पहिचान गया। मेरा दिल धक्-धक् करने लगा। मुझको यह प्रतीत होने लगा कि प्रलय मेरी हथेली में है।

"मैंने अलमारी को बन्द करने का यत्न तक नहीं किया और लैम्प बुझा, गाँव के तहखाने और फिर वहाँ से अप्सरा भवन से निकल सरस्वती के मकान में आ गया। अब मैं अपना शेष काम ठीक करने लगा। मैंने दो डिब्बे तैयार किए और दोनों का सम्बन्ध घड़ी की सुइयों के साथ कर दिया। एक डिब्बा गाँव के तहखाने में रख दिया और दूसरा भवन के तहखाने में। इतनी लम्बी तार से सम्पर्क बना दिया, जितनी लम्बी सुरंग थी। घड़ी मैंने अप्सरा भवन के नीचे रख दी। एक बार फिर मैंने घड़ी की परीक्षा की, दोनों डिब्बों के ढकने भलीभाँति खुलते हैं अथवा नहीं। मैंने सम्बन्ध जोड़ घड़ी में पौने तीन बजा दिए। ठीक तीन बजते ही दोनों डिब्बों के ढकने खुल गए।

" 'अपने सारे सामान की परीक्षा कर मैंने दोनों डिब्बों में थोड़ा-थोड़ा यूरेनियम रख दिया और ढक्कनों को बन्द कर दिया। पश्चात् ढक्कनों पर पारा २०२ का एक-एक 'सिलिंडर' भरकर रख दिया।

"कार्यविधि यह थी कि घड़ी में चार बजा दिए जाते। ग्यारह घण्टे के पश्चात् घण्टे की सुई तीन पर आनी थी। वहाँ उसका सम्बन्ध कील के साथ होना था। इस सम्बन्ध के बनते ही विद्युत् प्रवाह तारों में चालू हो जाना था और डिब्बों के ढक्कन खुल जाने थे। ढक्कन खुलने से उन पर रखा पारा डिब्बों में गिर पड़ना था। वहाँ वह यूरेनियम निकल रहे न्यूट्रोन के प्रभाव में आ जाता। कोई न्यूट्रोन पारे के किसी अणु को विखंडित करता तो उसमें से और न्यूट्रोन निकलते। वे पारे के अन्य अणुओं को विखंडित करते। इस प्रकार अणुओं को विखंडित होने का एक प्रवाह-सा चल पड़ता। इसमें से निकल रहे फालतू प्रोट्रोन गर्मी उत्पन्न करते और ढकना खुलने के एक क्षण के भीतर ही पारे में असंख्य अणु विखंडित हो जाते और इतनी गर्मी निकलती कि सब कुछ जो उसके समीप आता, स्वाहा हो जाता।

"उस दिन तारों का सम्बन्ध कर मैं चला गया। अभी यूरेनियम वाले डिब्बों पर पारा मैंने नहीं रखा था और न ही घड़ी को चलाया था।

"अगले दिन सरस्वती ने मुझे बताया कि गाँव-भर में यह समाचार फैल गया है कि हब्शी ने भद्रायण को मार डाला है। सब लोग केशव भवन में एकत्रित हो हब्शी को दण्ड देंगे और भद्रायण के शव का दाह-संस्कार करेंगे। मैंने भी वही दिन अपने कार्य का निश्चित कर लिया।

''इस रात मैं तहखाने में गया और डिब्बों पर पारा २०२ रख और दूसरे डिब्बों में से पारा २०२ निकालकर डिब्बों के आसपास रखकर, तारों को ठीक कर और घड़ी को चलाकर, उसमें साढ़े तीन बजा आया। उस समय प्रातःकाल का चार बजे का समय था। इस अगले दिन साढ़े तीन बजे विस्फोट होने वाला था। मैंने एक बार फिर सारा प्रबन्ध देख लिया और वहाँ से निकल सरस्वती के घर चला गया।

''जब मैं सरस्वती के घर पहुँचा तो वह सो रही थी। मैंने भी यही उचित समझा कि तीन-चार घंटे सोकर तरोताजा हो लूँ, जिससे मैं समय से पूर्व विस्फोट के प्रभाव-क्षेत्र से दूर हो जाऊँ।

''मैं जब सोकर उठा तो सरस्वती घर से बाहर जा चुकी थी। इससे मैं बहुत ही चिन्तित होने लगा। दो घंटे तक और प्रतीक्षा कर देखा। जब वह नहीं लौटी तब मैंने यही सोचा कि नन्दू पांडे को साथ ले लूँ, और उस द्वारा सरस्वती तथा ल्योनार्डी को भाग जाने की सूचना भेज दूँ।

''इस अर्थ से मैं, अपनी सूरत को बदलने के लिए मुख पर कुछ निशान बना तथा वहाँ के देहातियों की ही पोशाक पहन, घर से बाहर निकल गया। इस समय सब लोग मुझे भवन की तरफ जाते दिखाई दिए। नन्दू पांडे भी उधर ही गया हुआ था। मैंने भी यही उचित समझा कि भीड़ में मैं मिल जाऊँ और वहाँ जाकर, जिनसे मेरा लगाव है, उनको सचेत कर दूँ। गाँव के सब लोग भवन के सामने पहुँच चुके थे। भीड़ में नन्दू पांडे सबसे आगे खड़ा था। मैं अनुभव कर रहा था कि हम सब ज्वालामुखी के मुख पर खड़े हैं, जो शीघ्र ही फटने वाला है। मैं भीड़ को चीरता हुआ नन्दू पांडे के पास जा खड़ा हुआ। वह मुझको विस्मय में देखता रह गया। 'आप ?' उसने कहा और चुप रह गया। मैंने उसको संकेत से अपने साथ आने को कहा। वह बोला, 'उस हब्शी का तमाशा देख लूँ।'

''विवश मुझको बोलना पड़ा, 'तुरन्त यहाँ से भाग खड़े हो। वह सबको मार डालेगा।' मैंने घड़ी में समय देखा। ग्यारह बज रहे थे। मैंने पांडे से कहा, 'मेरे साथ बाहर आओ।'

''वह मेरे पीछे-पीछे चल पड़ा। भीड़ से निकल मैंने उससे पूछा, 'सरस्वती को देखा है ?'

'' 'नहीं मालिक !'

'' अच्छा यह पत्र भवन में जाकर पाचक को दे दो।'

'' 'मैं यह तमाशा देखना चाहता हूँ। सुना है वह नरमांस-भक्षण करने वाला है। आज इसका मांस चीलें और गिद्ध खायेंगे।'

'' 'तुम कुछ मूर्ख हो पण्डित ! वह तुम सबको मारकर भाग जाएगा। उसके पास ऐसे अस्त्र हैं कि इतनी भीड़ उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेगी। तुम यह पत्र

लेकर जाओ और एक घंटे के भीतर चन्द्रभागा पार कर जाओ। नहीं तो तुम्हारी राख भी दिखाई नहीं देगी।'

"मेरे कहने का वह अर्थ समझा अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। परन्तु वह मेरा पत्र लेकर जाने को तैयार हो गया। मैंने अपनी पाकेट-बुक में से एक पन्ना फाड़, उस पर पैंसिल से लिख दिया, 'रन अवे फ्रौम भवन। क्रौस स्ट्रीम बिफोर थ्री पी० एम० दि होल प्लेस इज गोईंग टू ऐक्सप्लोड। (यहाँ से भाग जाओ। तीन बजे से पूर्व नदी पार कर लो। इस सब स्थान पर विस्फोट होने वाला है)।' नीचे मैंने अपना नाम लिख दिया।

"जाने से पहले मैंने नन्दू पांडे को फिर समझाया, 'पत्र देकर भागकर तीन बजे से पहले नदी पार कर जाओ। यह सब स्थान जलकर स्वाहा हो जाने वाला है। कहीं सरस्वती मिले तो उसको भी कह देना। जाओ, अब देरी मत करो। ग्यारह बज चुके हैं।'

"इतना कह एक ऊँचे टीले पर चढ़ मैंने सरस्वती को देखने का यत्न किया। वह कहीं दिखाई नहीं दी। निराश हो मैं वहाँ से चल पड़ा।

"मैं जानता था कि नदी पर क्या प्रबन्ध है। इस कारण उस स्थान को, जहाँ सुरक्षा के लिए बन्दिश का प्रबन्ध था, छोड़ मैं नदी किनारे-किनारे ऊपर चढ़ गया। मैं एक ऐसा स्थान जानता था, जहाँ से मैं नदी पार कर सकता था।

"मैं उसी स्थान की ओर चल पड़ा।

"इस समय मध्याह्नोत्तर के अढ़ाई बज गए थे। मैं नदी के उस स्थान पर पहुँच गया था, जहाँ पत्थरों पर से कूद-कूदकर नदी पार की जा सकती थी। मैं अभी पार करने को जाने ही वाला था कि मेरी दृष्टि सामने के किनारे पर कुछ लोगों पर, जो उधर ही आ रहे थे, पड़ी। मैंने ध्यान से देखा तो पता चला कि सरस्वती के साथ कुछ लोग आ रहे हैं। उनमें एक नूरुद्दीन भी था। वे लोग उसी स्थान से नदी पार करने लगे। मेरे पास पिस्तौल था, परन्तु मैं उसका प्रयोग करना नहीं चाहता था।

"इस कारण एक बड़े से पत्थर के पीछे छुप गया। वे हँसते-कूदते नदी पार कर इस किनारे पर पहुँचे। सरस्वती ने कहा, 'मैं थक गई हूँ।'

" 'तो यहीं बैठकर गाना हो जाए।' नूरुद्दीन ने कहा।

"मेरे लिए मुसीबत हो गई। मैं सरस्वती को बचाना चाहता था। परन्तु वे लोग तो गाँव की ओर जा रहे थे और वह स्थान, जहाँ मैं छुपा बैठा था, मेरे विचार में विस्फोट की मार के भीतर था। सरस्वती एक बड़े से पत्थर पर बैठ गई और शेष लोग उसके आसपास बैठ गए। वे लोग सरस्वती से गाना सुनाने के लिए कहने लगे।

" 'मैं कुछ दूर छुपकर बैठा था। घड़ी में समय देखा तो तीन बज गए थे।

आधा घंटा शेष था। वह भी इस कारण कि मैंने घड़ी आधा घंटा पीछे रखी थी। मैंने निर्णय कर लिया और छुपे स्थान से निकलकर उनके सामने चला आया। वे मुझको पहिचान गए और मेरी ओर लपके। मैंने पिस्तौल निकाल लिया। वे रुके नहीं। मैंने जो सबसे आगे था, उसकी छाती पर वार किया। वह चक्कर खाकर गिर पड़ा। इसपर वे वहीं खड़े हो गए। नूरुद्दीन ने कहा, 'पिस्तौल फेंक दो और अपने को हमारे हवाले कर दो।'

" 'क्यों ?'

"'मालकिन की आज्ञा है।'

" 'वह आधे घंटे में मर जाएगी। तुम लोग भी यदि मरना नहीं चाहते तो नदी पार कर यहाँ से एक मील दूर चले जाओ। यह सब भूमि जल जाएगी।'

"वे सब हा-हा-हा कर हँसने लगे।

"मैंने फिर कहा। इस समय सरस्वती और नूरुद्दीन भी वहाँ आ गए।

"मैंने कहा, 'देखो नूरुद्दीन। इस सब इलाके पर, भवन से लेकर इस किनारे तक विस्फोट होने वाला है। यहाँ पर कोई प्राणी बच नहीं सकेगा। इसीलिए मैं भागा जा रहा हूँ। तुम लोगों को यदि जान प्यारी है तो नदी पार कर कम-से-कम यहाँ से एक मील दूर चले जाओ।'

"नूरुद्दीन ने कहा, 'हमें मूर्ख मत बनाओ। सीधे चले चलो। नहीं तो हाथ-पाँव बाँधकर तुम्हें ले चलेंगे।

" 'सरस्वती !' मैंने कहा, 'इनको समझाओ। ये सब मौत के मुख में जा रहे हैं। आज यहाँ उल्कापात होने वाला है। गाँव से जितना दूर जा सकते हो, चले जाओ। अब घड़ी में तीन बजकर दस मिनट हो गए हैं। मुश्किल से बच निकलने का समय है।

"सरस्वती ने नूरुद्दीन से कुछ कहा, परन्तु उसने अपने साथियों से कहा,'पकड़ लो इस बागी को। यह बकवास कर रहा है।'

"वे लोग फिर मेरी ओर लपके। मैंने एक और पर निशाना लगाया। वह भी भूमि पर लेट गया। अब मैं कूदकर एक और बड़े पत्थर के पीछे हो गया और अपने को पत्थर की ओट में रख एक और गोली चलाई। तीसरा भी गिर गया। अभी भी पाँच आदमी थे। मेरे पास गोलियाँ तीन थीं। मैंने, जब वे फिर मेरी ओर लपके तो एक और निशाना लगाया। इस समय वे मुझको घेरने लगे थे। मैंने नूरुद्दीन से कहा, 'स्वयं सामने क्यों नहीं आते ? इनको बेकार में मरवा रहे हो।'

"वह दूर खड़ा बोला, 'जो इसको पकड़ेगा उसको एक हजार इनाम दूँगा।'

"मैंने एक और निशाना लगाया। दूसरी ओर अभी भी तीन थे। मेरे पास गोली केवल एक ही थी। मैंने पुकार कर कहा, 'सरस्वती ! तुम तो भाग जाओ। नदी पार कर दूर निकल जाओ।'

"परन्तु वह नहीं गई। मैंने अपनी आखिरी गोली चलाई। अब मैं भागकर अपने और नरुद्दीन के बीच का अन्तर बढ़ाने लगा, जिससे मैं पिस्तौल भर सकूँ। परन्तु वे भी मेरी कठिनाई समझ गए। मैंने पिस्तौल को जेब में डाल लिया और नूरुद्दीन से जूझ गया। उसका साथी भी पकड़ने के लिए मेरी ओर लपका। इस समय सरस्वती मेरी सहायता के लिए आई। उसने एक बड़ा-सा पत्थर नूरुद्दीन के सिर पर दे मारा। नूरुद्दीन चक्कर खाकर भूमि पर गिर पड़ा। मेरी दूसरे आदमी से हाथापाई हो रही थी। सरस्वती ने पूर्व इसके कि वह उठे, एक और पत्थर उठाया और उसके सिर का कचूमर निकाल दिया। इतने में मैंने भी अपने से लड़ने वाले को भूमि पर गिरा दिया था और उसकी मरम्मत मुक्कों से करनी आरम्भ कर दी थी। अब सरस्वती एक और पत्थर उठा लाई और बोली, 'मालिक ! एक ओर हट जाइए,' उसने पत्थर उसके सिर पर दे मारा।

"मेरे पास समय नहीं था कि देखूँ कौन जीता है अथवा मर गया। मैंने घड़ी में समय देखा। आधा मिनट रह गया था। मैंने सरस्वती का हाथ पकड़ा और कहा, 'भागो, मौत आ रही है।'

"उसने बिना विचार किए मेरा हाथ पकड़ा और मैं उसको नदी पार कराने लगा। इस पर समय हो गया था। हम नदी के मध्य में थे, जब पहला विस्फोट भवन में हुआ। फिर दूसरा और तीसरा। इस प्रकार कई विस्फोट होने लगे। मैंने सरस्वती से कहा, 'जल में कूद पड़ो।' वहाँ जल घुटने-घुटने था परन्तु बिलकुल बर्फ के समान था। इतने में गाँव के समीप की पहाड़ी ऐसे उड़ी मानो इसके नीचे बारूद रखकर उड़ाई गई हो। वहाँ से एक बड़ा-सा पत्थर उड़कर हमारे ऊपर गिरा। जल में खड़े होने के कारण हमारी टाँगें सुन्न हो गई थीं और हम हिल नहीं रहे थे। पत्थर सरस्वती के सिर पर गिरा और वह पत्थर सहित मेरे हाथों में आ गिरी। पत्थर पन्द्रह-बीस मन का अवश्य होगा। सरस्वती का तो कचूमर निकल गया और मेरे दोनों हाथ चूर-चूर हो गए। यदि उसी पहाड़ी के उड़ने के वेग से भूमि को झटका न मिला होता तो मेरे हाथ जो पत्थर के नीचे फँस गए थे और बाहर नहीं निकल सकते थे। उससे नदी की भूमि, जिस पर मैं खड़ा था, बह गई और मैं तथा सरस्वती का शव नदी और भूमि के साथ-साथ बहने लगे। गाँव में अभी भी धमाके हो रहे थे और अब भवन तथा गाँव की ओर से ऊष्ण वायु आने लगीं। वायु इतनी गरम हो गई कि जल खौलने लगा। जो भाग नदी के बाहर था, वह भी गरम हो पिघलने लगा। मैं शरीर को ठण्डा करने जल में डुबकी लगाता था, परन्तु वह भी गरम था। इस समय मैं अचेत हो गया और उसी अवस्था से जल में बह गया।

"मुझको चेतनता हुई, जब मैं एक छोटे से कमरे में पड़ा था। एक देहाती और उसकी स्त्री मेरे सिर के पास खड़े मुझे देख रहे थे। मेरी आँखें खुलीं, मैंने उनको

देखा, परन्तु मैं कुछ समझा नहीं कि क्या हुआ है। मेरी स्मरण-शक्ति तथा विचार-शक्ति लोप हो गई थी।

"मुझको तो न दिन-रात का ज्ञान होता था और न स्थान का। एक दिन मुझको सुनाई दिया कि मेरे समीप खड़ी एक स्त्री कह रही थी, 'इस बेचारे की जान बचाकर क्या करिएगा। इसका शरीर तो भुनकर कोयला हो चुका है।'

"ये शब्द थे जिनका मुझे आज स्मरण है और जो मैंने चेतनता पाने के पश्चात् सुने। इनसे पहले भी अवश्य कुछ सुना होगा। परन्तु उसको मैं बिल्कुल भी स्मरण नहीं कर पा रहा। इनके उत्तर में एक पुरुष की आवाज थी, 'भगवती ! मेरा काम जीवन देना है। फल भोगना मनुष्य के कर्मों के अधीन है।'

"मुझको कोई दिखाई नहीं दे रहा था। या तो मेरी दृष्टि में दोष था या वे ऐसे स्थान पर खड़े थे, जहाँ मेरी दृष्टि नहीं जाती थी। मैं खाट पर हिल-डुल नहीं सकता था। मेरे में न तो इसकी शक्ति थी और न इच्छा।

"इसके कई दिन बाद की बात है, मुझको स्मरण नहीं आ रहा कि कितने दिन की, कि एक स्त्री मुझको तेल में भीगी हुई गद्दी के साथ टकोर कर रही थी। मैं उसको कुछ कहना चाहता था, परन्तु मेरे मुख से साँस निकल गया और शब्द कुछ नहीं बना। उस स्त्री ने यह देखा और कहा, 'महाराज ! इसके होंठ फड़क रहे हैं।'

"इस समय एक वृद्ध पुरुष मेरे समीप आया और मुझे झुककर देखने लगा। उसने कहा, 'बच जाओगे परन्तु...।'

"उसके मुख से इसके आगे कुछ नहीं निकला या हो सकता है निकला हो और मैं सुन न सका होऊँ। अब दिन-प्रतिदिन मुझको ज्ञान होने लगा कि मैं कहाँ हूँ। मुझको दिन-रात का भी ज्ञान होने लगा। वह वृद्ध वैद्य था। और उसके साथ उसकी स्त्री थी। किश्तवार से नीचे चन्द्रभागा के किनारे पर एक छोटे-से गाँव में वह मकान था जहाँ मैं पड़ा था। कई मास की सेवा-शुश्रूषा के पश्चात् मैं उठकर चलने-फिरने योग्य हुआ।

"वैद्यजी ने मुझको बताया कि जिस दिन मीराशाह वाली घटना घटी, उस सायंकाल वैद्यजी की धर्मपत्नी नदी में गागर भर रही थीं कि एक स्त्री और एक पुरुष पत्थर से अटके दिखाई दिए। उस स्त्री ने दोनों को देखा तो समझ गई हम उस महान आग में जले हुओं में से हैं। उसको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि मैं जीवित हूँ। सो उसने दोनों शवों को किनारे पर कर अपने पति को बुलाया। स्त्री को मरा देख उन्होंने उसे नदी में बहा दिया और मेरे जीवन लक्षण देख उठाकर घर ले आए।

"उसी समय से वे मेरी चिकित्सा कर रहे थे। मेरी चमड़ी बुरी तरह झुलस गई थी। उस पर अनेकों घाव हो गए थे। वैद्यजी की ओषधियों और उनकी पत्नी

की सेवा-सुश्रूषा ने न केवल मेरी जीवन-रक्षा की, साथ ही मुझको इस योग्य कर दिया कि मैं लाहौर पहुँच सकूँ।

"लाहौर में जो कुछ विनोद ने मेरे लिए किया, वह मैंने अपने वक्तव्य में लिखवा दिया है। मेरा शरीर तो आज किसी योग्य नहीं रहा। न उसमें सौन्दर्य है, जिस पर रोमिली मोहित हुई थी, न ही आँखों में चमक रही है, जिस पर स्त्रियाँ मुग्ध हो जाती थीं। वाणी में वह रस नहीं, जिससे मैं श्रोतागणों पर जादू चलाता था।

"इनके साथ ही मेरा मन और विचार भी वह नहीं रहे, जो पहले थे। जब मैंने प्रथम कायाकल्प कर सरस्वती को यौवन प्रदान किया था, मैं समझने लगा था कि परमात्मा कहे जाने वाले को अब मैं कुठाली और भट्टी में डालकर परीक्षा का विषय बनाऊँगा।

"जब वह चूहा इतना बड़ा हो गया कि एक हट्टे-कट्टे मनुष्य को चबाकर खा सके तो मैं विचार करता था कि यह मनुष्य की शक्ति में आ गया है कि वह इस सृष्टि में नवीन योनियाँ उत्पन्न करे। प्रकृति ही परमात्मा है, यह मेरे मन में पूर्ण विश्वास जम गया था।

"रोमिली का व्यवहार देखकर इन सब विचारों में परिवर्तन हुआ। मेरी प्रथम धारणा, जिस पर मुझको सन्देह उत्पन्न हुआ, वह थी मनुष्य का स्वतन्त्र और स्वच्छन्द जीवन। जब तक मैं स्वयं ऐसा जीवन व्यतीत करता था, मुझको वह सुख-प्रद और उचित जीवन प्रतीत होता रहा। जब वह जीवन रोमिली और भद्रायण व्यतीत करने लगे और वह मेरे सुख के विपरीत जाने लगे तो मुझको ज्ञान हुआ कि जहाँ अपने लिए सुख-प्राप्ति जीवन का ध्येय है, वहाँ उस सुख को स्थाई बनाने के लिए दूसरों के सुखों की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है।

"मेरे विचारों में क्रान्ति तो वैद्य और उनकी पत्नी के व्यवहार ने उत्पन्न की। एक दिन उनकी धर्मपत्नी ने मुझसे कहा था, 'हम कौन हैं जीवन-प्रदान करने वाले? जीवन भगवान् देता है। साधन हम बन जाते हैं। तुम तो मृत शव के साथ बहते जा रहे थे। मैंने मरा हुआ ही समझा था, परन्तु जब तुम मेरी टाँग से लगे तो मुझको कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि तुममें और दूसरे शव में अन्तर है। मैं तुम दोनों को घसीट-कर किनारे पर लाई। वहाँ भी मुझको तुम दोनों में अन्तर प्रतीत हुआ। अतः मैं भागी हुई गई और वैद्यजी को बुला लाई। मैं तो समझती हूँ कि भगवान् की प्रेरणा ही थी जिससे मैं यह सब कुछ कर रही थी। अभी तुम्हारे कर्मफल शेष थे और भगवान् ने मुझको साधन बनाकर तुम्हारा जीवन बचा दिया।

"फिर वैद्यजी का यह कहना, मैं तो जीवन बचाने वाला हूँ। उससे किसी को सुख मिलता है अथवा दुःख, यह देखना मेरा काम नहीं।

"जब मैं कुछ स्वस्थ हो गया और खाट पर बैठा हुआ वैद्यजी को भगवान् का

पूजन और जप करते देखने लगा तो विस्मय करता था कि कितनी निष्ठा है इसकी। यदि यह एक भ्रम है तो भी बहुत मधुर है। अपने भवन की अशान्ति और इस कुटिया की शान्ति का मुकाबला करता था तो चकित रह जाता था। रोमिली दस बजे प्रातः मुझसे प्रेम करती तो मध्याह्न दो बजे इसका मन विनोद के पीछे भागने लगता था। इस मास उसका राबर्ट से लगाव है तो अगले मास भद्रायण के लिए लालायित हो उठती थी। जब इच्छित वस्तु हमको नहीं मिलती थी, तो कितनी बेचैनी और दुःख हम अनुभव करते थे? यहाँ वैद्यजी और उनकी पत्नी मक्की की मोटी-मोटी रोटी खाकर, जितना सन्तोष अनुभव कर रहे थे, वह वहाँ हमें हिरण के मांस में भी नहीं मिलता था। वैद्यजी साधारण और सरल भोजन कर भगवान् का धन्यवाद करते थे, वहाँ रोमिली कस्टर्ड पूडिंग खाकर भी पाचक को गालियाँ देती थी।

"मैंने एक दिन वैद्यजी से पूछा, 'महाराज! यह भोजन न तो स्वादिष्ट है और न ही पौष्टिक। इस पर भी आप भगवान् का, जो आपके विचारानुसार आपको यह दे रहा है, धन्यवाद करते हैं। यह मेरी समझ में नहीं आता।'

"वैद्यजी ने कहा, 'बेटा! यदि स्वादिष्ट न होता तो मेरे मुख से धन्यवाद कभी न निकलता। ऐसा प्रतीत होता कि तुम्हारे मुख का स्वाद बिगड़ गया है, जिससे इतना मधुर भोजन तुमको अच्छा नहीं लगता।'

"ऐसा सन्तोष और ऐसी सरलता मुझको अपने भवन में कभी ही दिखाई नहीं दी थी, जिसके निर्माण में लाखों रुपये व्यय हुए थे। इसने मेरे मन में परिवर्तन लाना आरम्भ कर दिया। मैं समझने लगा कि परमात्मा है अथवा नहीं है, यह विवाद व्यर्थ है। वास्तविक बात यह है कि परमात्मा को मानने वाला व्यक्ति कठिन दिनों को कैसे हँसते-खेलते निकाल देता है। वैद्यजी की पत्नी साधारण आकृति की स्त्री थी। इस पर भी पति-पत्नी परस्पर हेल-मेल रखते थे।

"एक दिन मैंने कहा, 'महाराज! आप मेरे लिए बहुत कुछ कर रहे हैं। मैं तो इसका बदला चुका नहीं सकता।'

" 'देखो बेटा! मैं किसी के लिए कुछ नहीं करता। सब अपने-अपने कर्मों का फल भोगते हैं। मैं, तुम तथा पण्डिताइन सब कर्मफल से बँधे हुए कार्य कर रहे हैं। अतएव मुझको कुछ देने की आवश्यकता नहीं।'

"उस दिन, मैं परमात्मा को, यद्यपि युक्ति और विश्वास के रूप में नहीं, तथापि मन में शान्ति देने वाले विचार के रूप में मानने लगा था।

"पश्चात् मैं लाहौर आया। यहाँ आकर मैंने विनोद की कोठी के बाहर भीख माँगी। मैं समझता था कि मेरी अवस्था से मुझको वह पहचान नहीं सकेगा। उसका न पहचानना, उसको लाखों की सम्पत्ति का मालिक बना सकता था, परन्तु मेरा उसे संकेत करते ही कि मैं केशव हूँ वह सब कुछ भूलकर मेरी सेवा में लग गया।

"विनोद से बढ़कर गुलबदन का व्यवहार मुझको चकित करने वाला लगा है। मेरी सूरत और शक्ल देखकर लोग मुझसे घृणा करते थे। इसपर भी वह मेरी सेवा में लग गई। मैंने एक दिन उससे पूछा भी, 'गुलबदन ! यह तुम क्या करती हो ? तुम किसी भद्र पुरुष से विवाह क्यों नहीं कर लेतीं ?'

" 'तो आपकी सेवा कौन करेगा ?'

" 'मैं सेवा करने के योग्य हूँ क्या ? मेरा शरीर देखकर तुमको घृणा नहीं होती ?'

" 'मैं तो शरीर नहीं देखती मालिक। मुझको आपकी रूह में खुदा का नूर दिखाई देता है। वही मुझको हिदायत कर रहा है, कि मैं आपकी सेवा करूँ।'

" 'यह तुम्हारा भ्रम नहीं है क्या ?'

" 'हो सकता है। पर इससे सुख मिलता है।'

" 'सुख तो इन्द्रियों के द्वारा ही मिलता है। भला मेरे जैसे की सेवा किस इन्द्रिय का विषय है ?'

" 'मैं समझती हूँ कि आदमियों की इन्द्रियों के अलावा उसमें कुछ और भी है, जो इन्द्रिय के बिना भी आनन्द भोग करता है। ऐसा आनन्द सेवा-सुश्रूषा से मिलता है।'

"मुझको विनोद और गुलबदन की सेवा लेते हुए दो वर्ष व्यतीत हो गए हैं और जिस लगन से विनोद मेरे लिए कायाकल्प का प्रबन्ध कर रहा है, इससे तो यही प्रतीत होता है कि मैं उसके अपने शरीर का भाग हूँ। एक दिन भुवाली में बैठे हुए मैंने विनोद से कहा, 'विनोद ! मेरे मन में कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि कायाकल्प के प्रबन्ध होने से पूर्व ही न चल बसूँ।'

"विनोद ने कहा, 'जिसने तुमको अब तक बचाया है, उसको भगवान् कहो अथवा भाग्य कहो, 'लक' कहो अथवा 'प्लक', किस्मत कहो अथवा पुरुषार्थ, उसपर विश्वास रखो। विश्वास ही आस्तिकता है। घबराओ नहीं। जो होगा, उसको अपना समझ स्वीकार करो।'

"इतना कह विनोद, जो तीस मील की पैदल यात्रा कर आया था, मुझको सन्तोष देने लगा। इन सबको निःस्वार्थ, निष्काम भाव से और निर्लिप्त होकर कार्य करते देख मुझको विशेष प्रकार की शान्ति मिलती थी।

"मैं आस्तिक बन रहा था।"

मैंने केशव की यह कथा लिखी। उसने इसे लिखाने में कई मास लिये। इतनी देर लगने में कारण उसकी स्मरण-शक्ति दुर्बल पड़ जाना, उसके बोलने में कष्ट और अपने मन के भावों को समझाने में कठिनाई अनुभव करना था। वह निपट नास्तिक था। विज्ञान की शिक्षा ने उसके नास्तिक्य को पुष्ट ही किया था। वह जर्मनी में भ्रमण करते हुए गणित के प्रोफेसर आईन्स्टीन से मिला था और उसने

इसको कहा था, 'मैं गणित द्वारा सिद्ध कर सकता हूँ कि परमात्मा शून्य के बराबर है।'

उस 'महान' पुरुष के इस वाक्य का केशव के मस्तिष्क पर बड़ा प्रभाव पड़ा था और उस वाक्य को विज्ञान में अन्वेषण करते हुए वह सदा स्मरण किया करता था। वह कहा करता था, "गणित से भगवान् शून्य ही सिद्ध होता है।" परन्तु आज जब उसने अपना वक्तव्य समाप्त किया तो कहने लगा, "विनोद ! आज मुझको आईन्स्टीन के शब्द याद आ रहे हैं। मैं आज भी उनको सत्य मानता हूँ। परन्तु एक बात, वह 'महान' पुरुष भूल जाता था। अथवा बताना नहीं चाहता था। वह मैं आज समझ पाया हूँ। संसार के पदार्थों का विश्लेषण करते-करते सत्य ही गणित से भगवान् को शून्य ही सिद्ध किया जा सकता है। जो सचाई आज मैं समझ सका हूँ वह गणित की एक और खोज है। शून्य और असीम (जीरो एण्ड इनफिनिटी) पर्यायवाचक शब्द हैं। जब गणितज्ञ भगवान् को शून्य सिद्ध करता है, तो वास्तव में वह उसको 'इन्फाईनाईट' अर्थात् अपार ही सिद्ध करता है।

"मुझको अचम्भा तो इस बात का हो रहा है कि पहले मुझको इस तथ्य का ज्ञान क्यों नहीं हुआ। कदाचित् उस समय मेरा इस ओर ध्यान जाता भी तो मैं परमात्मा के अस्तित्व को मानने के स्थान गणित के सिद्धान्त पर सन्देह करता। यह यौवन का उन्माद था।"

मैंने कालेज से अवैतनिक छुट्टी ली हुई थी। इसको दो वर्ष हो चुके थे। मुझको डायरेक्टर ऑफ एजूकेशन ने लाहौर बुलवाया। मैं उससे मिलने गया तो वह कहने लगा "मिस्टर विनोद ! इस प्रकार कोरा प्रोफेसरों की सूची में नाम लिखा रखने से तो काम नहीं चलेगा। इस प्रकार जो टैम्पोरेरी (अस्थाई) रूप में आपके स्थान पर कार्य कर रहा है, उसके मार्ग में रुकावट कर उसके साथ अन्याय कर रहे हैं।"

मैंने कहा, "मैं एक महान् वैज्ञानिक तथ्य के अन्वेषण में लगा हुआ हूँ। उस पर लाखों रुपये व्यय कर चुका हूँ। मैं इसको अधूरा नहीं छोड़ सकता। यदि आप समझते हैं कि मैं इस प्रकार छुट्टी लेने से किसी की तरक्की में बाधक हो रहा हूँ, तो मैं त्याग-पत्र दे देता हूँ।"

"मेरा भी यही विचार है। यद्यपि आप और छुट्टी माँगें तो मैं इंकार नहीं कर सकता, तो भी आपके स्थान पर कार्य करने वाले के साथ न्याय के विचार से मेरी सम्मति यही है कि आप या तो कार्य पर आ जाएँ अथवा त्याग-पत्र दे दें।"

मैंने वहीं डायरेक्टर के सामने त्याग-पत्र लिखकर दे दिया। मेरे लिए यह कुछ अधिक विचार अथवा चिन्ता का विषय नहीं था। परन्तु इसका ज्ञान जब केशव को हुआ तो उसको चिन्ता लग गई। वह जानता था कि मैंने उस दिन तक; उसके पिता से लिये धन में से एक पैसा भी अपने लिए प्रयोग नहीं किया था। यद्यपि मैं

उसमें से व्यय करता तो उसे प्रसन्नता ही होती, परन्तु वह जानता था कि मैं ऐसा नहीं करूँगा और मेरा निर्वाह कठिन हो जाएगा।

उसने मेरे त्याग-पत्र की बात सुनी तो कहा, "यह क्या कर दिया तुमने ?"

"डायरेक्टर ने कहा कि अपने स्थानापन्न के मार्ग में बाधक न बनूँ तो मेरे लिए कुछ उपाय ही नहीं रहा।"

"वह झूठा है। यदि तुम कॉलेज जाने लगते तो क्या उसका मार्ग खुल जाता ? वास्तविक बात यह है कि उसका कोई आदमी है। उसने डरा-धमकाकर उसकी नौकरी पक्की कर ली है।"

"यह सब तो मैं जानता नहीं, केशव ! असल बात तो यह है कि मुझको अब कॉलेज की नौकरी में रुचि नहीं।"

"यह ठीक है, यदि तुम एक बात मानो। पिताजी से दिए धन में से अब अपने प्रयोग में लाने लगो तो।"

"देख लूँगा। अभी तो मेरा बैंक बैलैंस पर्याप्त है। कालेज के वेतन के अतिरिक्त अभी स्कूल-कॉलेजों में मेरी पुस्तकें चलती हैं।"

कठिनाई केशव के कायाकल्प में यह थी कि उसका चमड़ा शरीर का जीवित भाग नहीं था। वह एक तरह से मल की तह मात्र थी। मल तो इलैक्ट्रोनों के प्रभाव से द्रवित हो जावेगा। उसके स्थान पर नयी चमड़ी बन सकेगी अथवा नहीं, यह कहना कठिन था। यदि कुछ भी खाल के कोषाणु जीवित होते तो उससे नयी खाल का निर्माण सम्भव था, परन्तु केशव की पूर्ण खाल जल-भुन चुकी थी। खाल के रोगों के विशेषज्ञों को बुलाया गया और उनकी राय ली गई। किसी की भी सम्मति में नयी खाल बननी सम्भव नहीं थी।

इस पर भी केशव को कायाकल्प की सफलता में पूर्ण आशा थी। उसका कहना था कि कोषाणुओं में बदलने की अपार शक्ति है। जब नये कोषाणु पर्याप्त मात्रा में बन गए तो खाल के कोषाणु दूसरों में से ही बन जाएँगे। जैसे डिम्ब के कोषाणुओं में भेद नहीं होता, सब कोषाणु एक समान होते हैं। पीछे मांस, मज्जा, अस्थि इत्यादि के कोषाणु भिन्न-भिन्न रूप और विशेषता ग्रहण कर लेते हैं। इसी प्रकार अब होगा।

मुझको भय था कि जब वह मृत खाल पिघलकर बह जावेगी तो भीतर का मांस नंगा हो जावेगा। तब कष्ट असह्य होने से प्राणान्त हो जावेगा। कलकत्ते से एक 'डर्माटौलौजिस्ट' (चर्म विशेषज्ञ) को बुलाकर कायाकल्प की प्रक्रिया समझाई गई, तो वह दस मिनट तक हमारा मुख देखता रह गया। पश्चात् बोला, "आप सब पागल हो गए हैं। ऐसा नहीं हो सकता।"

"कैसा नहीं हो सकता ?" मेरा प्रश्न था।

"इलैक्ट्रोन की बौछार से मल कैसे पिघल जावेगा ?"

"डाक्टर साहब ! आपको इस विषय में युक्ति करने की आवश्यकता नहीं कि यह कैसे होगा । हमने ऐसा किया हुआ है । आप अब यह बताइये कि यदि ऐसा हो जाए तो आप कुछ काल तक इनको जीवित रखने के लिए क्या करेंगे ?"

"मैं यह केस हाथ में नहीं ले सकता । इसमें मृत्यु निश्चित है ।"

एक दिन केशव ने कहा, "विनोद ! यदि तुम किसी चिकित्सक का मेरे पास होना आवश्यक समझते हो तो उन वैद्यजी को बुलाओ, जिन्होंने मुझको मृत्यु के मुख से बचाया था ।"

मैं अपने मस्तिष्क की सूझ-बूझ के अभाव, अर्थात् उसके इन वैद्यजी तक न पहुँचने पर, विस्मय कर रहा था । जब केशव ने मेरा ध्यान वैद्यजी की ओर किया तो मैं उनको बुलाकर लाने के लिए चल पड़ा ।

रामवन से तीसरे पड़ाव पर नदी के किनारे पर शादपुर नाम के एक गाँव में वैद्य उमाचरण रहते थे । मैं उनके घर पहुँचा तो देखा कि वैद्यजी गाय की सानी कर रहे थे । एक अपरिचित व्यक्ति को द्वार पर खड़ा देख, वह विस्मय में मुख देखते रह गए ।

मैंने पूछा, "वैद्य उमाचरण आप ही हैं ?"

"हाँ, आज्ञा करिए ।"

"मैं आपसे मिलने के लिए लाहौर से आया हूँ ।"

"ओ नन्दिनी !" वैद्यजी ने घर की ओर मुख कर आवाज दी । एक पचास-पचपन वर्ष की वृद्धा घर में से निकलकर आई और मुझको देख, संकोचवश चुप-चाप खड़ी रह गई । पण्डितजी ने कहा, "घर में अतिथि आए हैं । यह सामने धूप में खाट डाल दो । इनको बैठाओ ।"

पण्डितजी ने गाय के लिए सानी तैयार कर गाय के सामने रख दी । पश्चात् हाथ धो, घर के भीतर से एक बर्तन ले आए और दूध दुहने लगे । पण्डिताइनजी ने आकर मुझसे पूछा, "आप दूध पीयेंगे अथवा भोजन करेंगे ?"

मैंने बताया, "आज सवेरे सात बजे किश्तवार से घोड़े पर चला था । अब तो मध्याह्न हो गया है । सुना है आपके यहाँ मक्की की रोटी बहुत स्वादिष्ट बनती है । यदि एक-आध रोटी वैसी मिल जाए तो कृत-कृत्य मानूँगा ।"

पण्डितजी दूध निकाल चुके थे । वह मक्की की रोटी की बात सुन हँस पड़ और बोले, "मालूम होता है आप केशव के कोई सम्बन्धी हैं ।"

"जी ! आपने खूब याद रखा है ।"

"नन्दिनी !आज मक्की की रोटी बनेगी । शक्कर और घी के साथ ।"

पण्डिताइन रोटी बनाने चली गईं । पण्डितजी मेरे समीप आ बैठ गए और पूछने लगे, "आप कैसे आए हैं ?"

"केशव के विषय में आप जान तो गए हैं । हम उसका इलाज करवा रहे हैं ।

एक उपाय से उनके शरीर का पुनरुद्धार हो सकता है, ऐसा हमारा विचार है। परन्तु उसके भीतर कष्ट अधिक भी हो सकता है। उस समय के लिए कोई योग्य चिकित्सक समीप रहना चाहिए। चूंकि आपने उसकी चिकित्सा की है, इस कारण आपको साथ ले चलने लिए आया हूं।''

''कहाँ चलना होगा ?''

''यहाँ से लाहौर। वहाँ से बरेली। बरेली से काठगोदाम और अल्मोड़ा के मार्ग पर रामनगर नाम का एक गाँव है।''

''आप उसको इतनी दूर क्यों ले गए हैं ?''

''यह रसायन-क्रिया अर्थात् कायाकल्प किसी ऊष्ण स्थान पर नहीं किया जा सकता।''

''यह आप कैसे करेंगे ?''

मैं समझा तो सकता था परन्तु वैज्ञानिक भाषा का अनुवाद करना मेरे लिए अति कठिन था। इस कारण जब मैंने वैद्यजी को उत्सुकता से अपनी ओर देखते हुए पाया तो टूटी-फूटी भाषा में कहने लगा, 'पंडितजी ! संसार के सब पदार्थ अणुओं से बने हैं और प्रत्येक अणु तीन प्रकार की शक्तियों के मेल से बना होता है।''

इतना कह मैं पंडितजी के मुँह पर जानने के लिए यह देखने लगा कि वे कुछ समझे भी हैं अथवा नहीं। मुझको आश्चर्य हुआ जब मैंने उनको सिर हिलाते हुए देखा मानो वे मेरे कहने का अर्थ समझ गए हों। मैंने आगे चलने से पूर्व पूछा, ''आप समझ गए न ?''

''हाँ, हाँ ! यह तो हमारे शास्त्र की बात ही है, जो आप बता रहे हैं। अणु प्रकृति का छोटे से छोटा कण होता है और उसमें सत्व, रज, तम तीन प्रकार के गुण विद्यमान होते हैं। उस रूप में प्रकृति त्रिगुणात्मक कहाती है। अर्थात् गुण ही गुण रह जाते हैं और उनके अतिरिक्त कुछ नहीं।''

मुझको आईन्स्टीन का यह कथन स्मरण हो आया, 'मैटर इन इट्स अल्टिमेट फॉर्म इज़ नथिंग बट ऐनर्जी' अभिप्राय यह कि प्रकृति आदि रूप में शक्ति होती है।

पंडितजी को इस ज्ञान के आधार पर मैंने चिकित्सा का कार्यक्रम समझा दिया। मैंने कहा, ''हमने ऐसा यंत्र बनाया है जिससे प्रकृति के अणुओं का विखंडन कर सकते हैं। परमाणुओं के विखंडन से तीनों प्रकार की शक्तियाँ स्वतन्त्र हो निकलने लगती हैं।''

''सत्य ?''

''हाँ पंडितजी ! पश्चात् हम इन तीनों प्रकार की शक्तियों को तीन भिन्न-भिन्न धाराओं में प्रवाहित कर लेते हैं। एक धारा विनाशकारी प्रभाव रखती है, दूसरी पौष्टिक, और तीसरी उत्तेजक।''

'हाँ, तामसी शक्ति विनाशकारी प्रभाव उत्पन्न करती है, सात्विक पौष्टिक और राजसी उत्तेजक।''

''इसी प्रकार शरीर के दो भाग होते हैं। एक जीवित भाग और दूसरा मल। मल यदि शरीर में अधिक मात्रा में हो जावे तो उसको हम विनाशकारी धारा से जला डालते हैं। पश्चात् हम पौष्टिक धारा से शक्ति का संचार करते हैं। इस प्रकार शरीर का निर्माण करते हैं।''

''यह ठीक ही मालूम होता है।''

''जब हम मल को जलाते हैं तो मनुष्य में दुर्बलता आती है और शरीर से मल का निस्सरण होता है। इसको हम शरीर की शुद्धि कहते हैं।''

''बहुत खूब।''

''पश्चात् हम पौष्टिक शक्ति की धारा में रोगी को स्नान कराते हैं।''

''अर्थात् रसायन-क्रिया करते हैं।''

''हाँ। परन्तु केशव के विषय में ध्यान रखने योग्य बात यह है कि उसकी चमड़ी तो मल रूप हो चुकी है। शरीर-शुद्धि के समय तो वह सर्वथा गलकर निकल जाएगी। उस समय उसके शरीर का मांस नंगा हो जावेगा। तब क्या उपचार किया जावे कि रोगी वेदना सहन कर सके।''

पंडित उमाचरण हमारी कठिनाई को समझ चुप कर गए। वे चिरकाल तक समस्या पर विचार करते रहे। अन्त में बोले, ''यदि आपको कोई योग्य चिकित्सक न मिले तो मैं भरसक यत्न करूँगा। मैंने पहले तो ऐसा कोई कार्य नहीं किया। इस पर भी यत्न कर सकता हूँ।''

''आप चलने के लिए तैयार हो जाइए।''

''मैं और पंडिताइन दोनों चलेंगे। मैं किसी अन्य के हाथ का बना भोजन नहीं करता।''

''ठीक है। आप दोनों चलें। हमें और भी प्रसन्नता होगी। माताजी केशव की अपने बेटे की भाँति सेवा-सुश्रूषा करती रही हैं और यदि ठीक हो गया तो वह इनकी सेवा कर अपने को कृत-कृत्य समझेगा।''

बात तय हो गई। अगले दिन मैं, वैद्यजी तथा उनकी धर्मपत्नी को लेकर चल पड़ा। इस समय तक केशव को रामनगर के पास बनाए बंगले में ले जाया जा चुका था। वैद्य उमाचरण ने उसको देखा तो चकित रह गये। उन्होंने कहा, ''केशव तो बहुत दुर्बल हो गया है। जब वह हमारे गाँव से चला था, तो इतना कमजोर नहीं था।''

मैंने बताया कि उसका मांस दिन-प्रतिदिन क्षय को प्राप्त हो रहा है।

वैद्यजी ने अपनी ओषधि तो उसी दिन से देनी आरम्भ कर दी। मैं यन्त्रादि ठीक करने में लग गया। पहले परीक्षा के लिए एक बूढ़ी बिल्ली ली गई और वैद्य

जी के सम्मुख उसकी चिकित्सा कर देखा गया। नियमानुसार वह बिल्ली सात दिन में युवा होकर चली गई।

केशव के शरीर की शुद्धि के समय सत्य ही बहुत ही कठिनाई उपस्थित हुई। परन्तु वैद्यजी की योग्यता ने यहाँ फिर उसकी सहायता की। उन्होंने ओषधियों से संयुक्त ऐसा तैल बनवाया कि जहाँ-जहाँ से चमड़ी जल-जलकर उखड़ती जाती थी, वहाँ लगाने पर एक प्रकार की तह बन वह उस स्थान पर चिपट जाता था और वह शरीर के भीतरी मांस की रक्षा करने लगता था।

दूसरी ओर शोधन-क्रिया एक दिन के स्थान पर पन्द्रह दिनों में पूर्ण की गई और रसायन-क्रिया साथ-साथ दी गई। दो मास के अथक प्रयत्न से केशव के नये शरीर का निर्माण हो गया। सबसे अद्‌भुत बात यह हुई कि बाँहें, जो कट चुकी थीं, वे लम्बी होनी आरम्भ हो गईं। बाँहों की पूरी लम्बाई पर आकर वे रुक गईं। हाथ और उंगलियाँ नहीं बनीं।

इसके अतिरिक्त चमड़े की कोमलता, उज्ज्वलता और दृढ़ता पहले से किसी प्रकार भी कम नहीं थी। पूरा शरीर अति सुन्दर, निर्मल ओजपूर्ण बना था। केशव अपने को दर्पण में देख गर्व अनुभव करता था।

हाथों और उंगलियों की कमी को कृत्रिम हाथ लगाकर पूर्ण करने का यत्न किया गया। साधारण रूप से देखने में केशव एक सुन्दर युवा पुरुष ही लगता था।

वैद्य उमाचरण इस चमत्कार को देख मुग्ध हो गए तथा केशव और मुझे देवता समझने लगे।

वैद्यजी को विदाई पर पाँच सहस्र रुपये की थैली और पति-पत्नी के लिए रेशमी वस्त्र दिए। वैद्यजी ने यह सब कुछ लेने से पहले तो इन्कार कर दिया। उसने कहा, "आप जैसे गुणी जनों की सेवा में रहने का सौभाग्य कुछ कम पुरस्कार नहीं।" परन्तु केशव ने जब बहुत मिन्नत की तो वे लेकर विदा हो गए।

केशव ने ठीक होते ही मुझसे कहा, "मैं इस सब उपकरण को ध्वस्त (डिस-मैण्टल) कर देना चाहता हूँ।"

मेरे मन में इन परीक्षणों को जारी रखने का विचार आ रहा था, परन्तु केशव के मस्तिष्क में यह समा गया था कि यह शैतानी कार्य है। ज्यूँ ही मनुष्य युवा होता है वह शैतान का शिष्य बन जाता है।

इसके विपरीत मेरा मन था कि कोई देवता बने अथवा शैतान, यह इसके पूर्व-जन्म के संस्कारों के अधीन है। उसका यौवन और बुढ़ापे से कोई सम्बन्ध नहीं।

इस पर भी केशव हठ कर रहा था। उसको पंडित उमाशंकर जी के कथन पर विश्वास और श्रद्धा हो गई थी। पंडितजी ने कहा था, "प्रकृति ने जो ढंग पुनर्जन्म का बनाया है, वह बहुत ही श्रेष्ठ है। नवीन जन्म होने से पुराने मित्र अथवा

शत्रु सब भूल जाते हैं। साथ ही बाल्यकाल नवीन संस्कारों को ग्रहण करने का अवसर देता है। इससे ही मनुष्य समाज उन्नति करता रहता है। माँ का गर्भ एक प्रकार से छननी का कार्य करता है, जिससे व्यर्थ के संस्कार छनकर आत्मा से पृथक् हो जाते है। कम-से-कम मनुष्य अभी इस चमत्कारपूर्ण आविष्कार का अधिकारी नहीं बना।''

एक विकट समस्या तब उत्पन्न हुई जब केशव ने गुलबदन से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। गुलबदन युवा थी, सुन्दर थी और अनुभवयुक्त स्त्री थी। उसने अब विवाह करने से बिल्कुल इन्कार कर दिया।

हम सब उसके इस निर्णय पर आश्चर्य कर रहे थे। लाहौर में निस्बत रोड की कोठी में रहते यह प्रश्न उपस्थित हुआ था। केशव स्वयं यह प्रस्ताव गुलबदन से कर चुका था। अब उसने हम सबके सामने यह प्रस्ताव उसके सम्मुख रखा था।

गुलबदन ने एक शब्द में उत्तर दिया, ''मैं यहाँ से कल अपने देश चली जाऊँगी।''

''क्यों?''

''केशव बाबू बार-बार मुझसे विवाह का आग्रह कर रहे हैं। इसका अर्थ यह निकला कि यदि मैं यहाँ रहूँ तो मैं इनसे विवाह के लिए मान जाऊँ, अन्यथा मेरे यहाँ रहने से इनके मन में अशान्ति होती है।''

केशव ने उसकी बात सुनकर कहा, 'ऐसी बात नहीं है। यदि तुम मुझसे विवाह नहीं करना चाहतीं, तो जिससे चाहो कर सकती हो। मैं आज से तुम्हें इसके लिए कदापि नहीं कहूँगा।''

इस पर मैंने पूछा, ''गुलबदन! एक बात पूछूँ?''

''हाँ पूछिए विनोद बाबू!

''यह केशव से विवाह करने का अनिश्चय कब से और क्यों हुआ है?''

''केशव बाबू, विनोद बाबू अथवा और कोई बाबू हो, मैं अब किसी से विवाह न करूँगी। पहले जब मैं मीराशाह में रहती थी, मैं विवाह करने के लिए उतावली हो रही थी। मैं समझती हूँ कि वहाँ का वातावरण ही वासनामय था। वही मेरे मस्तिष्क को पागल बना रहा था।

''ज्यूँ ही मैंने रामवन में पग रखा, मैं अपनी मूर्खतापूर्ण बातों को स्मरण कर हँसती थी। मैं सोचने लगी कि पिचहत्तर वर्ष की बूढ़ी, जो प्रसव की यातना सह चुकी हो कैसे फिर वही कुछ करने को तैयार हो गई? मैंने तब ही निश्चय कर लिया था कि अब शेष जीवन परमात्मा को स्मरण कर लोक-सेवा में व्यतीत करूँगी। केशव बाबू धनी हैं, युवा हैं। इनको कोई न कोई सुन्दर लड़की मिल जाएगी। मुझ जैसी मन से बूढ़ी पत्नी को पाकर ये क्या करेंगे।''

केशव ने फिर विवाह की इच्छा नहीं की। उसने अविवाहित ही रहने का

निश्चय कर लिया।

मैं यूनिवर्सिटी के अन्वेषण विभाग में पुनः नौकरी पा गया और रुचिपूर्वक वहाँ कार्य करने लगा।

केशव की अनुमति से उसके पिता के धन का एक ट्रस्ट बना दिया गया और उससे हमने एक शिक्षालय स्थापित करने की योजना बना डाली, जहाँ मुख्यतया वैज्ञानिक शिक्षा का प्रबन्ध ही करने का विचार हुआ। वैज्ञानिक शिक्षा के साथ ही भारतीय दर्शन शास्त्रों की शिक्षा देना इस योजना की विशेषता रखी गई।

□□□

गगन के पार

•

प्रकृति के कुछ नियम होते हैं। उन नियमों को समझकर अपने अनुसार कल्पना करना वैज्ञानिक उपन्यासकार का काम है। इस कल्पना में ही वैज्ञानिक उन्नति का रहस्य छिपा रहता है।

'गगन के पार' उस कल्पना का एक नमूना है।

प्रथम परिच्छेद

भारत सरकार के द्वारा परिवार-नियोजन के लिए बीस वर्ष तक निरन्तर प्रयत्न करने पर भी देश की जनसंख्या द्रुत गति से बढ़ती ही जाती थी। परिवार-नियोजन पर व्यय करने के लिए सरकार ने बजट में अरबों रुपये रखे थे। इसके लिए नये कानून भी बनाए और समाज की धारणाओं को बदलने के लिए भरसक यत्न किया। साहित्य, कला और कानून के माध्यमों से जन-मानस में सन्तान के प्रति घृणा उत्पन्न करने का यत्न किया गया था। यहाँ तक कि भूल-चूक से गर्भ-स्थिति पर गर्भपात की स्वीकृति दे दी थी और डॉक्टर लोगों ने इस कला में भी कौशल प्राप्त करने का अथक यत्न किया था।

तब भी आगामी जनगणना के लिए यह अनुमान लगाया जा रहा था कि भारत की जनसंख्या सत्तर करोड़ का अंक छू जाएगी। यह न केवल भारत की समाजवादी सरकार की चिन्ता का विषय था अपितु भारत के तथाकथित बुद्धिवादी भी जन-संख्या की वृद्धि अवरुद्ध न होने पर गम में घुलते जा रहे थे।

ऐसे ही एक दम्पती दिल्ली के कनाट सरकस के समीप टाटा भवन में हुए एक व्याख्यान को सुनकर अपने विश्वविद्यालय निवास-गृह की ओर जा रहे थे। दोनों अपनी मोटरगाड़ी में सवार थे। पति गाड़ी चला रहा था और पत्नी अगली सीट पर उसके साथ ही बैठी थी। मिंटो ब्रिज के नीचे दो ट्रकों में टक्कर हो जाने से मार्ग अवरुद्ध हो गया था और सायं छः बजे का समय होने के कारण आने-जाने वालों की भीड़ इतनी थी कि जो गाड़ियाँ इस भीड़ में अटक गईं, उनके लिए पीछे लौटने का भी मार्ग नहीं था।

पत्नी ने कहा, "घर पर मुन्ना नर्सरी से आएगा तो परेशानी अनुभव करेगा।"

"पर अब तो लौटने को भी मार्ग नहीं रहा।"

"यत्न करिए। यदि हम निकल सके तो तिलक ब्रिज की ओर से जा सकते हैं।"

पति ने गाड़ी को दाहिनी ओर घुमाने का यत्न किया। दाहिनी ओर मिंटो ब्रिज की ओर से आने वाली गाड़ियों के लिए मार्ग था, परन्तु मिंटो ब्रिज की ओर जाने वाली गाड़ियों ने ही उसे भी रोक रखा था। अतः वापस जाने के लिए भी वह मार्ग रिक्त नहीं था।

ये दम्पती थे दिल्ली विश्वविद्यालय में भौतिकी के प्राध्यापक डॉक्टर सरस्वती

भूषण आयंगर और उनकी पत्नी प्रमिला जो कभी उनकी ही शिष्या रह चुकी थी। प्रमिला देवी पंजाबी लड़की थी। जब इसने डॉक्टरेट किया तो डॉक्टर आयंगर ने उसके साथ विवाह का प्रस्ताव कर दिया। दोनों का विवाह होने तक डॉक्टर प्रमिला विश्वविद्यालय में माइक्रो इलेक्ट्रिक तरंगों पर अनुसंधान करने लगी थी।

दोनों का विवाह हुए चार वर्ष हो चुके थे और अब उनके घर में ढाई वर्ष का एक लड़का था। वह लड़का विश्वविद्यालय के कर्मचारियों के लिए स्थापित शिशु-भवन में भरती करा दिया गया था और बच्चा सायं सात बजे नर्सरी की दाई के साथ क्वार्टर पर आता था।

बच्चे के माता-पिता को चिन्ता लग रही थी कि बच्चे के वापस आने पर क्वार्टर बन्द देख बच्चा और दाई दोनों घबराएँगे और वे क्या करेंगे, यह वे समझ नहीं पा रहे थे।

इस प्रकार मार्ग अवरुद्ध पा डॉक्टर आवेश में गाड़ी से उतरकर देखने लगा कि किधर जाए? इस समय उसकी दृष्टि एक हेलीकॉप्टर की ओर गई जो उड़ता हुआ उन ट्रकों के ऊपर मँडराने लगा था। ट्रक टक्कर लगने से उलटकर पूर्ण सड़क को रोके हुए थे। डॉक्टर आयंकर समझ गया कि मार्ग शीघ्र ही खाली हो जाएगा। देखते-देखते हेलीकॉप्टर एक ट्रक के ऊपर हवा में खड़ा हो गया। हेलीकॉप्टर में से स्टील के रस्से लटक पड़े। ट्रक को रस्सों में बाँध दिया गया और हेलीकॉप्टर ने उसे उठाकर सड़क के किनारे फुटपाथ पर रख दिया। इसमें चार-पाँच मिनट लगे। चार मिनट में दूसरा ट्रक भी उठाकर सड़क के दूसरी ओर के फुटपाथ पर रख दिया गया।

आयंगर लपककर गाड़ी में चढ़ते हुए बोला, "ईश्वर का धन्यवाद है कि भारतवासियों को कुछ तो अक्ल आई कि समय कैसे बचाया जा सकता है।"

ट्रकों को उठाकर फुटपाथ पर रखने में इतना समय नहीं लगा जितना कि मोटरगाड़ियों को पुल के नीचे से सड़क पार करने में। पुल के दोनों ओर गाड़ियों, स्कूटरों, बसों और पैदल चलने वालों का जमघट-सा लग गया था।

जब गाड़ी चलने लगी तो पत्नी ने पूछा, "आप भगवान् को मानते हैं क्या?"

"भगवान् को? क्या हुआ है उसे?"

"उसे कुछ हुआ है, सो तो मैं नहीं जानती। परन्तु अभी आपने ईश्वर को स्मरण किया था। इस कारण पूछ रही हूँ।"

"ओह! स्मरण आ गया है। जब हेलीकॉप्टर ने ट्रकों को उठाकर मार्ग साफ किया था तो मैंने स्वभाववश भगवान् का धन्यवाद किया था। परन्तु वह तो एक 'मैटाफर' (लाक्षणिक रूपक) ही था।"

"अर्थात् आपने धन्यवाद किसी अन्य का किया था और नाम परमात्मा का ले लिया था।"

"बस, यह समझ लो कि वही परमात्मा है जिसको धन्यवाद किया था। वह धन्यवाद मैंने हेलीकॉप्टर बनाने वाले तथा उसका इस काम के लिए प्रयोग करने वाले का किया था। आज के युग में इन्हें ही परमात्मा मानना चाहिए।"

प्रमिला हँस पड़ी। वह बोली, "हेलीकॉप्टर कौन चला रहा था?"

"पेट्रोल और ड्राईवर।"

"ये दोनों किसने बनाए हैं?"

"पेट्रोल पृथ्वी में से बनकर निकलता है और ड्राईवर को उसके माता-पिता ने उत्पन्न किया होगा।"

"माता-पिता के चाहने पर भी कभी बच्चा उत्पन्न नहीं होता और न चाहने पर भी होता देखा जाता है। आज बच्चे उत्पन्न होने से रोकने के लिए अरबों रुपये व्यय किए जा रहे हैं; फिर भी जनसंख्या बढ़ती जाती है।"

"इसका कारण तो बच्चा उत्पन्न करने की प्रक्रिया का ज्ञान न होना है। अज्ञानवश लोग बच्चे उत्पन्न करते चले जाते हैं।"

"परन्तु जब पढ़े-लिखे, विश्वविद्यालयों के प्राध्यापक भी न चाहते हुए बच्चे उत्पन्न करने लगें तो उसे क्या कहेंगे?"

"किसकी बात कर रही हो?"

"मेरी ही बात समझ लीजिए।"

"ओह! तो तुम बच्चा नहीं चाहती थीं?"

"मैं तो चाहती थी, परन्तु तुम नहीं चाहते थे और तुम्हारे न चाहने पर भी बच्चा हो गया था।"

"मैं नहीं चाहता था? यह तुम कैसे कहती हो?"

"आप मुझको सन्तान-निरोधक गोलियाँ जो लाकर देते रहते हैं और कहते रहते हैं कि ये गर्भ-निरोधक गोलियाँ हैं।"

"तो तुम उनका प्रयोग नहीं करती थीं?"

"कुछ समय के लिए प्रयोग करना बन्द कर दिया था। मैं चाहती थी कि घर में एक-दो बच्चे हो जाने चाहिएँ।"

"तो मुझे धोखा दिया था श्रीमतीजी ने?"

"जी नहीं। एक दिन आपको भी सन्तान वाले माता-पिता के सौभाग्य की बात करते सुना तो मैं समझी थी कि आप भी सन्तान तो चाहते हैं, परन्तु प्रथा को पीटते हुए नव-विवाहिता को भी गोली खाने के लिए विवश कर रहे हैं। अतः आपको मिथ्या पूर्व-ग्रहों से मुक्त करने के लिए मैंने गोली खानी छोड़ दी थी।"

"वह तो विश्वविद्यालय में डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती व्याख्यान देने आया था और मैं उसकी कही हुई बात बता रहा था।"

"इस बात को साढ़े-तीन वर्ष हो गए हैं। मुझे ठीक-ठीक स्मरण नहीं कि आपने

अपने मन की बात कही थी अथवा किसी अन्य के मन की ।''

''खैर, यह तो ठीक ही हुआ था ।'' डॉक्टर आयंगर ने मुस्कराते हुए कहा, ''परन्तु अब बस करना चाहिए ।''

''परन्तु मेरा तो पेट भरा नहीं । मैं तो पाँच बच्चों की माँ बनना चाहती हूँ ।''

''वाह ! पाँच तो डॉक्टर श्यामसुन्दर के भी नहीं । उसके भी तीन बच्चे हैं । अब तो उसके बच्चे सज्ञान हो गए हैं । उनके विवाह हो गए हैं और उनके भी बच्चे हो रहे हैं ।''

''मैं तीन की संख्या अपशकुन समझती हूँ । इस कारण पाँच चाहती हूँ ।''

''पर श्रीमतीजी ! बहुत जल्दी-जल्दी नहीं ।''

''तो कब ? जब मैं बूढ़ी हो जाऊँगी ?''

''अभी बूढ़ी कहाँ होगी ?''

''मैं इस समय अट्ठाईस वर्ष की हूँ । पाँच बच्चे होते-होते मैं चालीस वर्ष की हो जाऊँगी ।''

''बस, तुम-जैसी स्त्रियों ने ही तो भारत के अरबों रुपये नाली में बहा दिए हैं ।''

''और जानते हैं कि आजकल चक्रवर्ती क्या कह रहा है ?''

''उसके विषय में आज रेडियो पर एक समाचार था ।''

''क्या था ?''

''सुना नहीं । मैं डॉक्टर कैलाशनाथ के घर गया हुआ था । वहाँ से चलने लगा तो उसकी स्त्री ने रेडियो खोल दिया और उसमें डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, वाइस-चान्सलर राजस्थान विश्वविद्यालय, बस इतना ही सुन सका था ।''

''वह है नर व्यक्ति । निडर होकर वह विद्यार्थियों को छुट्टियों के दिनों में राजनीति के प्रचार के लिए तैयार कर रहा है ।''

''हाँ, पिछले वर्ष उसने दस-सहस्र विद्यार्थी देश-भर में प्रचार-कार्य के लिए भेजे थे और इस वर्ष उसने पचास सहस्र भेजने का कार्यक्रम बनाया है ।''

''इतना धन उसके पास कहाँ से आता है ?''

''भगवान् जाने ।'' डॉक्टर आयंगर ने कहा और कहते-कहते हँस पड़ा ।

प्रमिला ने पूछा, ''हँसे किसलिए हैं ?''

''भगवान् के नाम लेने पर । मैंने कहा है भगवान् जाने । अर्थात् वह रुपया भी देता है ।''

प्रमिला भी हँस पड़ी । तब तक वे अपने क्वार्टर पर पहुँच गए थे । डॉक्टर ने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखा तो कह दिया, ''बच्चों को आने में अभी पन्द्रह मिनट हैं ।''

प्रमिला ने कहा, ''और अब भी परमात्मा का धन्यवाद कर दीजिए ।''

''नहीं । मैं परमात्मा नहीं बनना चाहता । समय पर तो मैंने तुम्हें पहुँचाया है ।

इस कारण अब तो अपना ही धन्यवाद करूँगा।''

दोनों हँसते हुए सोफे पर बैठ गए। डॉक्टर आयंगर ने पत्नी की कमर में हाथ डालकर कहा, ''आज तो गोली खाई है न?''

''नहीं। क्यों?''

''खा लो।''

''मैं तो एक महीने से नहीं खा रही।''

''अरे! यह क्या अनर्थ कर रही हो?''

''मैं सिद्ध करना चाहती हूँ कि आप सत्य ही परमात्मा हैं। संसार का सबसे विचित्र कर्तव्य करने की सामर्थ्य आपमें है।''

''इसमें वैचित्र्य क्या है? सब पशु-पक्षी यह करते हैं।''

''परन्तु लोहा, सोना, चाँदी अपने बच्चे क्यों नहीं उत्पन्न कर सकते?''

''तो इस प्रकार तुम परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करना चाहती हो? बस, तुम अन्वेषण कर चुकीं। जो व्यक्ति इस प्रकार की ढीली युक्ति करता है, वह भला क्या अन्वेषण करेगा?''

''परन्तु मैं तो अपने कार्य में सफल हो रही हूँ।''

''क्या सफलता प्राप्त कर रही हो?''

''मैंने ऐसी वेञ्ज निर्माण करनी सीख ली हैं जो यहाँ से दस लाख मील के अन्तर पर पड़ी वस्तु पर भी केन्द्रित हो जाएँ तो उसे भस्म कर डालेंगी और यदि उसकी किरणों का चलन समानान्तर रेखा में रहे तो जहाँ कहीं भी चली जाएँ तो वहाँ पर अपार शक्ति का संचार कर सकती हैं।''

''यह तो ठीक है, परन्तु इसमें परमात्मा कहाँ से आ गया?''

''उसी ने तो मुझे इसकी खोज कराई है। मुझे ऐसा अनुभव होता है कि जब मैं प्रयोगशाला में कार्य कर रही होती हूँ तो वह मेरे पास खड़ा मुझे बताता रहता है कि अब यह करो और फिर यह करो।''

आयंगर हँसता हुआ बोला, ''मैं समझता हूँ कि तुम्हें ब्रेन टॉनिक देनी पड़ेगी। तुम गजब कर रही हो। एक ओर परमात्मा से मित्रता गाँठ रही हो और दूसरी ओर मेरे घर में बच्चे उत्पन्न करने की योजना बना रही हो।''

''यह तो आप कर रहे हैं। भला बताइए कि आप मुझे अपने समीप किसलिए घसीट रहे हैं?''

इस समय क्वार्टर के बाहर लगी घण्टी बजी। प्रमिला उठते हुए बोली, ''मुन्ना आ गया है।''

: २ :

प्रमिला को लौटने में देर हो रही थी। आयंगर ने खिड़की में देखा। उसमें डाक डालने के लिए एक छेद बना था जिसमें डाकिया तथा अन्य लोग पत्र इत्यादि

डाल जाया करते थे। आयंगर ने डाक उठा ली। उसमें 'ईवनिंग न्यूज' की एक प्रति भी थी। आयंगर को स्मरण आ गया कि उसने राजस्थान विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर के विषय में कुछ समाचार रेडियो पर सुना था। अतः उसने अन्य डाक को छोड़ पहले समाचार-पत्र को ही पढ़ा। प्रथम पृष्ठ पर ही लिखा था कि राष्ट्रपति ने राजस्थान विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर को 'डिसमिस' कर दिया है। इस शीर्षक के नीचे लिखा था कि उप-कुलपति डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती की राजनीतिक गतिविधियों के कारण उसे अपने पद से पृथक् किया जाता है। राष्ट्रपति ने डॉक्टर यदुनाथ दास को विश्वविद्यालय का उप-कुलपति नियुक्त किया है।

इस समाचार से यह भी स्पष्ट होता था कि डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती के विचार रूसी राज्य-प्रणाली की ओर झुकते हैं। अतः यह सन्देह किया जाता है कि भारत सरकार रूसी राज्य-प्रणाली यहाँ चलने नहीं देना चाहती। इस कारण विद्यार्थियों में अधिनायकवाद के प्रचार को रोकने के लिए डॉक्टर साहब को पद से पृथक् करना आवश्यक समझा गया है। उसमें यह भी लिखा था कि सम्भवतः डॉक्टर साहब न्यायालय का द्वार खटखटाएँ।

डॉक्टर आयंगर अभी समाचार पढ़ ही रहा था कि प्रमिला अपने बच्चे विश्वनाथ को गोद में लिये हुए भीतर आ गई। बच्चा अपने पिता को देख बोल उठा, "पापा!"

"ओह! आ गए हो, विश्वनाथ?"

"पापा!" बच्चा कुछ कहना चाहता था, परन्तु कहते-कहते भूल गया था और टुकर-टुकर पिता का मुख देखने लगा था। आयंगर ने भी बच्चे की ओर से ध्यान हटा पत्नी को कह दिया, "श्यामसुन्दर विश्वविद्यालय के उप-कुलपति पद से हटा दिए गए हैं।"

"हाँ। नर्स बता रही थी कि यह समाचार तीन बजे के लगभग रेडियो पर घोषित किया गया था और तुरन्त ही विद्यार्थी अपनी-अपनी श्रेणियों से बाहर निकल आए थे और यह सम्भावना है कि कल सब कॉलेजों में हड़ताल होगी।"

आयंगर ने कहा, "पहले विद्यार्थियों ने हड़ताल और तोड़-फोड़ के आयोजन किए तो उन्हें शान्त करने के लिए विश्वविद्यालयों की गवर्निंग कौन्सिलों में छात्र प्रतिनिधियों को स्थान मिला। तदनन्तर विश्वविद्यालय की कौन्सिलों में और अन्त में 'अकेडैमिक कौन्सिल' में भी स्थान दिया गया है। इससे कुछ वर्ष तक तो शान्ति रही थी, परन्तु अब पुनः यह छूत की बीमारी फैल रही है। प्राध्यापकों की नियुक्ति में छात्र अपनी सम्मति देते थे, परन्तु अब उप-कुलपति की नियुक्ति में भी अपनी धींगा-मस्ती चलाना चाहते हैं।"

"परन्तु विश्वविद्यालय के उप-कुलपति को पदच्युत करना भी तो अभूतपूर्व कार्य है। पहले जब कभी उप-कुलपति से मतभेद होता था तो उसे कह दिया जाता

था कि वह स्वयं पद से त्याग-पत्र दे दे।"

"यह तो ठीक है कि पहले कभी ऐसा नहीं किया गया। परन्तु इस उप-कुलपति ने भी तो अपने कार्यों की अपेक्षा अतिरिक्त कार्यों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था।"

प्रमिला समझती थी कि राष्ट्रपति ने भूल की है। उसने कह दिया, "राष्ट्रपति ने भी तो अपने कार्यों में सरकार को हस्तक्षेप करने की स्वीकृति दे दी है।"

"क्या हस्तक्षेप किया है सरकार ने ?"

"श्यामसुन्दर प्रौढ़ावस्था के व्यक्तियों से लिए राजनीतिक शिक्षा का प्रबन्ध कर रहा था। यह काम विश्वविद्यालय का ही है। यह शिक्षा के साथ ही सम्बन्ध रखता है। सरकार जो राजनीति की ठेकेदार बनी हुई है वह उससे नाराज थी। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत सरकार ने राष्ट्रपति पर दबाव डालकर उप-कुलपति की छुट्टी कर दी है।"

"प्रमिलाजी ! हमें राजनीति में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।"

"तो जनता को राजनीति की शिक्षा कौन दे ?"

"राजनीतिक नेतागण। सत्ताधारी दल के नेता और विपक्षी दल के नेता।"

"वाह ! जब राजनीति की मिथ्या आधारशिला ही बदलनी हो तब यह राजनीतिक नेता उस राजनीति के विरुद्ध कैसे कहेंगे जिसने उनको नेता बनाया हुआ है ?

"वर्तमान नेता कथित प्रजातन्त्र से ऊपर उभरे हैं। उनमें केवल जन-साधारण के मनोद्‌गारों को उभारने की योग्यता है और उसके बल पर ये नेता बन गए हैं। यदि इस प्रथा को ही बदलना हो तो यह क्यों करेंगे ?"

"अर्थात् तुम भी यही समझती हो कि अधिनायकवाद चलना चाहिए ?"

"मैंने तो यह नहीं कहा। मैं तो यह कह रही हूँ कि सैद्धान्तिक राजनीति के विषय में विश्वविद्यालय ही उपयुक्त साधन है।"

"यही तो इस समाचार-पत्र में लिखा है।"

"क्या लिखा है ?"

"यही कि डॉक्टर साहब इस देश में अधिनायक-प्रणाली का राज्य स्थापित करना चाहते हैं।"

यह सुन प्रमिला हँस पड़ी। आयंगर विस्मय में पत्नी का मुख देखने लगा। प्रमिला ने अपने मनोभावों को समझाते हुए कहा, "इसी मिथ्यावाद को मिटाने के लिए ही तो विश्वविद्यालयों को आगे आना चाहिए। यदि पढ़े-लिखे लोग सत्य की स्थापना नहीं करेंगे तो ये झूठ के पुलन्दे तो राजनीति को कलुषित करते रहेंगे।"

"इन्होंने क्या कलुषित किया है ?"

"यह झूठ है कि श्यामसुन्दर रूसी-शैली का राज्य चलाना चाहता है। उसने

कभी अधिनायकवाद को चलाने की बात कही भी नहीं।"

"तो वह क्या चाहता है?"

"अब वह स्वतन्त्र हो गया है और उसे अपना वक्तव्य खुलकर देना चाहिए।"

"अब उसे कोई पूछेगा भी नहीं। सरकार द्वारा दिए गए ऊँचे स्टूल पर खड़ा होकर ही वह सबको दिखाई देता था। स्टूल से नीचे उतार दिए जाने पर तो वह जनता की दृष्टि से ओझल हो जाएगा।"

"देखें। नर्स कह रही थी कि कल दिल्ली के विद्यालयों में हड़ताल होगी।"

"बस, यही तो खराबी है। जरा-सी बात हुई तो हड़ताल कर दी और फिर सड़कों पर निकलकर तोड़-फोड़ आरम्भ कर दी।"

"अच्छा, श्रीमतीजी!" आयंगर ने बात बदलकर कहा, "भोजन का समय हो रहा है।"

"मैं समझती हूँ कि आज रैस्टोराँ में टेलीफोन कर दीजिए। भोजन वहाँ से आ जाएगा।

"तो तुम भी हड़ताल कर रही हो?"

"नहीं, यह बात नहीं। मैं अपने अन्वेषण-कार्य पर रिपोर्ट तैयार कर रही हूँ। उसके लिए समय बचाना चाहती हूँ।"

आयंगर ने सामने रखे टेलीफोन का चोंगा उठाया और रैस्टोराँ का नम्बर घुमाकर आर्डर दे दिया। विश्वनाथ को उसके पापा के समीप बैठाकर प्रमिला अपने स्टडी-रूम में चली गई।

आयंगर ने अभी भी हाथ में समाचार-पत्र पकड़ा हुआ था। उसने अन्य समाचार पढ़ने आरम्भ कर दिए। बच्चा अपनी गेंद ले भूमि पर बैठकर खेलने लगा।

अगले दिन प्रातःकाल चार बजे प्रमिला जागी और मुख-हाथ धो अपने स्टडी-रूम में चली गई। रात वह अपनी रिपोर्ट समाप्त नहीं कर सकी थी। विश्व-विद्यालय के अन्वेषण-विभाग के मुख्य अधिकारी डॉक्टर कैलाशनाथ ने अपने विभाग में सब अन्वेषणकर्त्ताओं को अपने-अपने कार्य की रिपोर्ट तैयार करने के लिए कहा था। प्रमिला को भी आज्ञा हुई थी। प्रमिला की रिपोर्ट गुप्त थी। इस कारण उसने उसके बाहर ही लिखा था "ए सीक्रेट डॉक्यूमेण्ट।"

इसका अभिप्राय यह था कि यह रिपोर्ट सरकारी सैनिक-विभाग को जावेगी। आठ बजे तक उसने अपनी रिपोर्ट पूर्ण कर ली। उसने रिपोर्ट टाईप की और उसे एक लिफाफे में बन्द कर, लिफाफे को मोहरबन्द कर मेज के दराज में रख उसे ताला लगा दिया। तदनन्तर उसने अपने अन्वेषण के 'नोट्स' को भी मेज के नीचे 'कपबोर्ड' में रख उसे भी ताला लगा दिया।

आयंगर छः बजे के लगभग जागा और शौचादि से निवृत्त हो उसने बच्चे को जगाय।। उसे भी स्नानादि से निवृत्त कर कपड़े पहना, उसके लिए दूध, कार्न फ्लैक

और मिठाई मेज पर रख उसे खिला-पिलाकर नर्सरी जाने के लिए तैयार कर दिया।

प्रमिला अपने कागजों को ताले में बन्द ही कर रही थी कि द्वार की घण्टी बजी। बाहर नर्स यह कहने खड़ी थी कि आज विश्वविद्यालय बन्द है। इस कारण नर्सरी स्कूल भी बन्द रहेगा।

आयंकर ने पूछा, "तो तुम लोग भी हड़ताल कर रहे हो?"

"डॉक्टर साहब, नहीं।"

"तो नर्सरी क्यों बन्द है?"

"यह मैं क्या जानूं? आप टेलीफोन पर पूछ लीजिए।"

आयंगर विश्वनाथ को लेकर भीतर घूमा और उसके मुख से निकल गया, "ये लोग गहरे पानी में पैठ रहे हैं।"

"श्यामसुन्दर के साथ अन्याय तो हुआ है।" प्रमिला ने साथ चलते-चलते कहा।

"छोड़ो उस रूसी पिट्ठू की बात। मगर देखो, सरकार ने यह जानते हुए कि वह मास्को विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट किये है, पहले उसे उप-कुलपति बनाया और अब उसे निकाल दिया है।"

"परन्तु डियर! वह रूसी एजेण्ट नहीं है।"

"यह तुम कैसे कहती हो?"

"कुछ दिन हुए 'इलस्ट्रेटिड वीकली' में उसकी भेंट-वार्त्ता छपी थी। उसमें उसने कहा था कि वह हिन्दू राजनीति को पसन्द करता है।"

"यह तो अधिनायकवाद से भी बुरी बात है।"

"परन्तु मैं अच्छी और बुरी का नाप-तोल नहीं कर रही। मैं तो रूसी और हिन्दू की बात कह रही हूँ।"

आयंगर ने ड्राइंग-रूम में आकर दूरभाष पर उप-कुलपति का नम्बर घुमाया। सम्पर्क बना तो आयंकर ने अपना नाम बताकर पूछा, "उप-कुलपति हैं?"

उत्तर आया, "राष्ट्रपति ने बुलाया है, वे वहाँ गए हैं।"

"क्या काम था उनको वहाँ?"

"उप-कुलपतिजी ने आज विश्वविद्यालय को बन्द करने की आज्ञा दी है। शायद इसके सम्बन्ध में ही उनको बुलाया गया प्रतीत होता है।"

आयंगर ने टेलीफोन बन्द करते हुए प्रमिला को कहा, "लो हमारे विश्वविद्यालय के भी उप-कुलपति गए। उनकी भी राष्ट्रपति के सामने पेशी हो रही है।"

"यही तो मैं कह रही हूँ कि इस प्रकार की राजनीति के विरुद्ध प्रचार करने का अधिकार विश्वविद्यालय को है। यह भी तो एक प्रकार का शिक्षा-कार्य है।"

"श्रीमतीजी ! तनिक धीरे-धीरे बोलिए। अन्यथा आपको भी छुट्टी मिल सकती है।"

"तो क्या होगा ? ये मूर्ख राजनीतिज्ञ तो पूर्ण देश को विनष्ट करने का प्रबन्ध कर रहे हैं। मेरे वाशिंगटन में पग धरते ही मुझे वहाँ काम मिल जाएगा और लाखों रुपये व्यय करके जो ज्ञान मैंने प्राप्त किया है वह अमेरिका की सम्पत्ति बन जाएगा।"

"क्या तुम ऐसा देश-द्रोही कार्य करोगी ?"

"मैं तो नहीं करूँगी परन्तु जब मुझे कोई सैनिक-विभाग का काम देगा तब मैं अन्वेषण-कार्य करूँगी ही।"

"और तुम कहती हो कि तुम्हारे अन्वेषण देश की सुरक्षा के काम आ सकेंगे।"

"मेरा ऐसा ही विचार है। मैं अपनी इच्छा से देश नहीं छोड़ूँगी। परन्तु यदि धक्के दे-देकर निकाल दी गई तो फिर यहाँ कैसे रह सकूँगी ?"

आयंगर इस नयी परिस्थिति से परेशान हो रहा था। उसने रजिस्ट्रार के कार्यालय से दूरभाष का नम्बर मिलाया। वहाँ से समाचार मिला कि उप-कुलपति साहब की आज्ञा से पूर्ण विश्वविद्यालय एक दिन के लिए बन्द किया जाता है। रात विश्वविद्यालय की गवर्निंग कौन्सिल की बैठक में ही यह निश्चय किया गया था।

"क्यों ?"

"उप-कुलपति का कहना है कि शिक्षा-क्षेत्र का अपमान किया गया है। उप-कुलपति को उसके कार्य-काल के समाप्त होने से पहले निकालना पूर्ण शिक्षा-विभाग का अपमान करना है।"

डॉक्टर आयंगर ने समझा कि सारा संसार ही पागल हो रहा है। उसने दूरभाष का चोंगा रखा और प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा, "आज दिन-भर मैं अपनी प्रिय पत्नी की संगति में रहूँगा।"

"हाँ। विश्वविद्यालय की हड़ताल का यह तो सुखद परिणाम है ही।"

: ३ :

अगले दिन विश्वविद्यालय में शान्ति स्थापित हो गई थी। पिछले दिन दिल्ली-भर के विद्यालयों के छात्रों का एक विशाल समूह एकत्र हुआ था। तीस सहस्र से अधिक विद्यार्थी विश्वविद्यालय-क्षेत्र के मैदान में एकत्रित हुए थे और वहाँ पर सरकार के कार्य की निन्दा का प्रस्ताव पारित कर दिया गया। तदनन्तर विद्यार्थियों को कहा गया कि शान्तिपूर्वक अपने पढ़ाई के कार्य में लग जाएँ और आगामी कार्य की रूपरेखा की प्रतीक्षा करें।

प्रमिला ने गवर्निंग कौन्सिल के एक छात्र सदस्य से पूछ लिया, "आज आप सब पढ़ाई करेंगे ?"

"हाँ, डॉक्टर !"

"जुलूस और तोड़-फोड़ नहीं होगी ?"

"जी नहीं।"

"यह तो बहुत ठीक हो रहा है।"

"हम समस्या का वास्तविक स्वरूप समझ गए हैं। अतः हमने तदनुसार व्यवहार करने का निश्चय कर लिया है।"

"समस्या ? समस्या का वास्तविक रूप क्या समझे हैं आप ?"

"समस्या है प्रजातन्त्र ! यह एक पंगु ढंग की राज्य-पद्धति है। पहले हम समझते थे कि यह जनता का राज्य है। इस कारण राज्य से रुष्ट होने पर जनता की सम्पत्ति को विनष्ट करते थे। परन्तु अब हम समझ गए हैं कि बात ऐसी नहीं है। जनता तो वैसे ही पंगु है जैसे हम हैं। अतः जनता की सम्पत्ति को हानि पहुँचाने से राज्य में सुधार नहीं होगा। समस्या है देश के नेताओं की, और वे अशिक्षित हैं। अतः हमारा झगड़ा ऐसे नेताओं को राज्यारूढ़ होने से रोकना है। हमारा झगड़ा इन नेताओं से है और इनके स्थान पर बुद्धिमान विद्वान् नेताओं को आरूढ़ करना है।"

प्रमिला उनकी बात को समझ रही थी। एक बात वह यह भी समझ रही थी कि सामान्य जनता से अधिक सुगमता के साथ विद्यार्थी-वर्ग नियन्त्रण में रखा जा सकता है। क्या यह इस कारण नहीं कि ये सामान्य जनता से बौद्धिक-स्तर में ऊँचे हैं ?

अगले दिन से विद्यालयों और विश्वविद्यालय का कार्य सामान्य रूप में चलने लगा। प्राध्यापकों और विद्यार्थियों का जीवन यथापूर्व चलने लगा। बाहरी लोग यह समझे कि डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती के पदच्युत किए जाने पर प्रकट हुआ रोष शान्त हो गया है।

इस अवधि में प्रमिला देवी के कार्य की रिपोर्ट शिक्षा-मन्त्री द्वारा सुरक्षा-मन्त्री के पास गई। इस गुप्त रिपोर्ट पर मन्त्रिमण्डल में विचार किया गया और यह निश्चय किया गया कि इस अन्वेषण को सुरक्षा-विभाग में ले जाया जाए। वहाँ इस पर काम किया जाए और विश्वविद्यालय से प्रमिला देवी की प्रयोगशाला तथा उपकरण मोल ले लिये जाएँ।

तदनुसार कार्य किया गया और प्रमिला देवी को सैनिक अन्वेषण-विभाग में कार्य करने का आदेश दिया गया। प्रमिला देवी जनवरी मास में पालम में स्थित अन्वेषण-विभाग में पहुँच गई। वहाँ वह अपनी प्रयोगशाला स्थापित करने लगी।

ऐप्रिल मास आ गया था। प्रमिला देवी अभी विश्वविद्यालय में अपने पति के पास ही रहती थी। डॉक्टर आयंगर अपनी श्रेणी के विद्यार्थियों की परीक्षा लेने में व्यस्त था। एक दिन वह परीक्षा का कार्य समाप्त कर मध्याह्न के दो बजे क्वार्टर पर पहुँचा तो प्रमिला वहाँ पहले ही पहुँची हुई थी। आयंगर ने पूछा, "प्रमिला

जी ! आज क्या बात है ? इस समय यहाँ कैसे ?''

''मैं एक सप्ताह का अवकाश ले आई हूँ ।''

''क्यों ? स्वास्थ्य तो ठीक है ?''

''शरीर तो ठीक ही कार्य करता प्रतीत होता है । परन्तु मन स्वस्थ नहीं है ।''

''क्यों ?''

''पिछले चार महीने से मेरा काम अवरुद्ध पड़ा है । अभी तक मेरे यन्त्र भी स्थापित नहीं हुए । कुछ तो यहाँ से ले जाने में बिगड़ गए थे । उनको ठीक करवाने के लिए मिस्त्री की माँग की थी और अभी तक किसी की नियुक्ति नहीं हुई ।

''पिछले दो मास से मैं नित्य वहाँ जाती हूँ और बिना एक तिनका भी तोड़े लौट आती हूँ ।''

''तो उदास होकर चली आई हो ?''

''जीवन व्यर्थ जा रहा अनुभव होता है । आज मैं अन्वेषण-विभाग के अध्यक्ष के पास गई थी और उसको मैंने जब यह बताया कि मैं चार महीने से बेकार बैठी हूँ । इस काल में मुझे छः हजार रुपया वेतन मिला है । एक सहस्र रुपया यातायात एलाउंस मिला है और मैंने कुछ भी काम नहीं किया तो कैप्टन सुरेन्द्रसिंह हँस पड़े और पूछने लगे कि इससे मेरी कुछ हानि हो रही है ?''

'' 'हाँ । मेरा जीवन व्यतीत हो रहा है और उससे मानवता को कुछ लाभ नहीं हो रहा ।''

''कैप्टन साहब गम्भीर हो कहने लगे, 'आप किसी अन्य विषय पर अन्वेषण आरम्भ कर दीजिए ।'

'' 'और इस विषय को छोड़ दूँ ?'

'' 'हाँ । हमारी सरकार की नीति अब इस विषय पर अन्वेषण-कार्य कराने की नहीं है ।'

''मैं आश्चर्यचकित हो कैप्टन साहब का मुख देखने लगी । मैंने बहुत ही विनम्रता से कहा, 'मेरी इस विषय में रुचि है । मैंने इस विषय में कुछ सफलता भी प्राप्त की है । इसको छोड़ किसी अन्य विषय पर अन्वेषण-कार्य करने को चित्त नहीं करता ।'

'' 'तो फिर 'ईट, ड्रिंक एण्ड बी मैरी' । देखो प्रमिला देवी, यह सैनिक-विभाग है । यहाँ तो सरकार की नीति से ही कार्य चलता है । आपको विदित होना चाहिए कि न केवल अनेक देशों अपितु अपने देश के नेताओं के कहने पर भी हमारी सरकार ने ऐटम बम बनाने का यत्न नहीं किया । यह आविष्कार तो ऐटम बम से भी अधिक भयंकर है । इस पर अन्वेषण-कार्य नहीं हो सकेगा ।'

'' 'तो मुझे वापस विश्वविद्यालय में भेज दिया जाए ।'

'' 'परन्तु वहाँ जाकर भी इस विषय पर कार्य तो दूर रहा, आप इस विषय

पर कोई लेख अथवा भाषण भी नहीं दे सकेंगी।'

"मैंने विचार करने के लिए अभी एक सप्ताह का अवकाश ले लिया है।"

"क्या विचार करना चाहती हो ? मैं समझता हूँ कि अपने अन्वेषण के लिए कोई अन्य विषय विचार कर लो।"

"मैं तो सरकारी तथा विश्वविद्यालय की नौकरी ही छोड़ देना चाहूँगी, परन्तु यह भी कर सकूँगी अथवा नहीं, कह नहीं सकती। मैं समझती हूँ कि नौकरी छोड़ते ही मुझे कैद कर दिया जाएगा।"

मिस्टर आयंगर परेशानी में मुख देखता रह गया।

एकाएक प्रमिला देवी ने कहा, "जी चाहता है कि भारत छोड़ जाऊँ और किसी अन्य देश में अपना अन्वेषण-कार्य जारी रखूँ। परन्तु बुद्धि कहती है कि यह देश-द्रोह होगा।"

आयंगर बोला, "देवीजी ! क्रोध मत करो। तनिक गम्भीरतापूर्वक विचार करो। मैं समझता हूँ कि आपको चुपचाप अपने काम पर उपस्थित होते रहना चाहिए। जब सरकार कहेगी तो आप अपना कार्य आगे चला लेना।"

प्रमिला स्वयं कुछ भी विचार नहीं कर सकी थी। इस कारण वह चुप रही। डॉक्टर आयंगर तो परीक्षा के पर्चे देखने में लग गया और प्रमिला अपने पलंग पर विचारमग्न लेटी रही।

उसी सायंकाल 'ईवनिंग न्यूज' में एक छोटा-सा समाचार छपा था। समाचार का शीर्षक था 'पदच्युत वायस-चान्सलर दिल्ली में।' इसके नीचे श्यामसुन्दर चक्रवर्ती का नयी दिल्ली इलैक्ट्रिक लेन में रहने का पता लिखा था और यह लिखा था कि डॉक्टर श्यामसुन्दर के मकान पर विद्यार्थियों की भीड़ लगी रहती है।

इससे प्रमिला देवी के मन में आया कि इसकी भाँति पदच्युत होने से लाभ नहीं। वह समझ रही थी कि डॉक्टर चक्रवर्ती उस व्यक्ति की भाँति है जिसके लिए किसी कवि ने लिखा है—unwept, unhonoured and unsung. (उसके लिए न कोई रोता है, न कोई मान करता है और न उसकी प्रशंसा में कोई गीत गाता है)।

उसकी दृष्टि में चक्रवर्ती का जीवन व्यर्थ है। अतः वह अपने विषय में यह विचार बना बैठी थी कि वह सात दिन के अवकाश का भोग कर पुनः अपने सैनिक कार्यालय में चली जाएगी और सन्तोष तथा धैर्य से प्रतीक्षा करेगी।

परन्तु इन सात दिनों में उसे एक अन्य बात का ज्ञान हो गया। वह गर्भ धारण कर चुकी थी। अवकाश के छः दिन व्यतीत हो चुके थे। वह अपने को दूसरे बच्चे की माँ होने के ज्ञान से प्रसन्न थी और अपने स्टडी-रूम में बैठ अपने अध्ययन का कार्यक्रम बना रही थी।

वह सैनिक अन्वेषण-विभाग में जाकर कार्य करने अथवा बेकार जीवन व्यतीत

करने का भी निश्चय कर चुकी थी। वह समझती थी कि यदि कोई अन्य रुचिकर विषय समझ में आया तो वह उसपर काम आरम्भ कर देगी। किसी अन्य विषय की खोज में ही उसने अध्ययन का एक विस्तृत कार्यक्रम बनाया था।

डॉक्टर आयंगर अपना कार्य समाप्त कर प्रमिला के स्टडी-रूप में ही आ गया। उसने वहाँ पहुँचते ही कहा, "आज विश्वविद्यालय के मैदान में विश्वविद्यालय तथा उससे सम्बद्ध सब कॉलेजों के विद्यार्थियों की रैली हुई थी। लगभग बीस सहस्र विद्यार्थी एकत्रित हुए थे और उसमें डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती का भाषण हुआ था। मैंने भी भाषण सुना है। भाषण अति ओजस्वी था और उसने आगामी ग्रीष्म ऋतु के अवकाश के दिनों में विद्यार्थियों को देहातों में घुसकर राजनीतिक प्रचार करने का आह्वान किया है।

"विद्यार्थी अपार उत्साह से भरे हुए हैं और उसने अपने-अपने कॉलेजों की यूनियनों के द्वारा इस प्रचार-कार्य में भरती होने का निमन्त्रण दिया है।"

"यह सब बकवास है।" प्रमिला का उत्तर था, "मैं उसे अब एक छूटी हुई गोली मानती हूँ। उसके किए से कुछ नहीं होगा।"

"एक बात मैं समझ गया हूँ कि यदि यह भारत में एक चक्कर लगा ले तो यह पूर्ण देश में आग फूँक देगा।"

"इससे क्या होता है?"

"होगा यह कि राज्य बदल जाएगा।"

प्रमिला ने वार्तालाप का विषय बदलते हुए कहा, "मुझे कुछ ऐसा अनुभव हो रहा है कि विश्वनाथ की कोई बहन अथवा भाई आ रहा है।"

इस सूचना पर तो डॉक्टर आयंगर मुख देखता रह गया। उसे परेशान देख प्रमिला ने कहा, "यह ठीक नहीं हुआ न?"

"ठीक-गलत की बात तो मैं जानता नहीं। मैं तो यह कह रहा हूँ कि तुम्हारी यह भविष्यवाणी, कि तुम पाँच बच्चों की माँ बनोगी, यदि ठीक सिद्ध हुई तो मेरे लिए कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी।"

"क्या कठिनाई उत्पन्न हो जाएगी?"

"मेरे वेतन में से बच्चों के पालन का व्यय कट जाया करेगा। 'चिल्ड्रन सोशल वेलफेयर' के कानून में संशोधन हो चुका है। उसमें यह संशोधन हुआ है कि तीन से अधिक बच्चों के माता-पिता के वेतन का दस प्रतिशत प्रति बच्चे के हिसाब से काटकर उसे बच्चों की भलाई के 'फण्ड' में जमा कर लिया जाए।"

"तो इसमें हानि क्या है?"

"हानि यह है कि मेरी और तुम्हारी मासिक आय में से पैंतीस सौ रुपया कटने लगेगा।"

"यह है तो बहुत अधिक, परन्तु इसमें दो बातें हैं। एक तो यह कि अभी बिना

टैक्स दो बच्चे और उत्पन्न कर सकते हैं। उसके उपरान्त विचार कर लेंगे। दूसरी बात यह कि सात सौ रुपया महीने में दो सुन्दर बच्चे सस्ते ही हैं।"

आयंगर हँस पड़ा। बोला, "जैसा मन में आए करो। मैं तो तुम्हारे हाथों में बिक चुका हूँ।"

प्रमिला प्रसन्न हो पति का आलिंगन करती हुई बोली, "अब ठीक है। आप मेरे विचार के अनुकूल हो गए हैं।"

एकाएक प्रमिला ने पुनः पति से पृथक् हो कहा, "मैंने यह निश्चय किया है कि कल मेरी छुट्टी समाप्त होगी और परसों मैं अपने सैनिक अन्वेषण-विभाग में उपस्थित हो वहाँ किसी नये विषय पर अन्वेषण के लिए अध्ययन आरम्भ कर दूंगी।"

"शाबाश ! ये सब शुभ निश्चय आज ही किये हैं ?"

"हाँ ! यह निश्चय इस आने वाले जीव ने ही कराया प्रतीत होता है।"

"क्या कहता है यह ?"

"इसने पेट में बैठे-बैठे फुसफुसाया है कि मुझे अपने प्रिय विषय पर कार्य करने के लिए सरकारी नीति के अनुकूल होने की प्रतीक्षा करनी चाहिए। यह काम मेरा नहीं कि राज्य की नीतियों के विषय में हठ करूँ।"

"यह बहुत शुभ विचार है। देखो प्रमिला, तुम्हारे विचार सुनकर मैं इतना प्रसन्न हूँ कि यदि तुम सात बच्चों की भी अब माँ बनना चाहो तो मैं मना नहीं करूँगा।"

बात यहीं समाप्त हो गई। तीसरे दिन प्रमिला अपनी प्रयोगशाला में पहुँच कैप्टन साहब के द्वार पर जा खड़ी हुई तो उसने पूछ लिया, "हैलो, प्रमिलाजी ! स्वास्थ्य कैसा है ?"

"धन्यवाद ! बहुत अच्छा है। मैं इन दिनों अवकाश पर रहती हुई अपने भावी कार्यक्रम पर विचार कर रही थी। वह कुछ-कुछ समझ में आया है और मैं उस विषय पर अध्ययन कर रही हूँ।"

"बहुत खूब !आप अपने निर्वाचित विषय और उस पर कार्य की प्रक्रिया लिख कर बताइएगा। अधिकारियों से निर्णय लेना होगा।"

"यह मैं समझ गई हूँ।"

"ठीक है।"

प्रमिला अपने कमरे में पहुँची। वहाँ अपना ब्रीफकेस रख वह प्रयोगशाला में गई। उसके अवकाश पर जाने से पूर्व वे सब यन्त्र जिनका प्रयोग वह विश्वविद्यालय की प्रयोगशाला में किया करती थी, वहाँ बिखरे पड़े थे। वापस आने पर उसने देखा कि वे सब वहाँ से हटा दिए गए थे। प्रयोगशाला खाली थी। उसने प्रयोगशाला के असिस्टैण्ट को बुलाकर पूछा, "वे सब यन्त्र कहाँ हैं ?"

"कैप्टन साहब की आज्ञा से उठवाकर गोदाम में रखवा दिए हैं।"

"परन्तु सब तो उठवाने वाले नहीं थे।"

"हुजूर ! जिनकी आवश्यकता होगी, वे निकलवा लिये जाएँगे।"

"ठीक है।"

लैबोरेटरी असिस्टैण्ट ने यह भी बताया, "यहाँ डॉक्टर फिरोज नौशेरवाँ अपना काम आरम्भ करवाने वाले हैं।"

प्रमिला ने विचार किया कि यह भी ठीक ही हुआ है। मुझे अपने काम के अनुसार स्थान मिल जावेगा। इतना विचार कर वह अपने कमरे में आ गई और अपने नये विषय के लिए पुस्तकों तथा जर्नल्स की सूची बनाने लगी।

उसने अपना दूसरा विषय चुन लिया था। वह था ईंधन। ईंधन का अभिप्राय है शक्ति का स्रोत। जैसे कोयले को जलाने से ताप निकलता है, डायनिमो को चलाने से विद्युत् निर्माण होती है। इसी प्रकार वह कोई ऐसा पदार्थ ढूँढ़ना चाहती थी जिसको कि शक्ति में बदला जा सके और एक किलोग्राम में से एक सहस्र टन कोयले के बराबर शक्ति उपलब्ध हो सके।

प्रमिला ने पुस्तकों की सूचियाँ मँगवाईं। उसके लिए नवीन पुस्तकों के लिए वह पुस्तकालय में चली गई।

दिन के उपरान्त दिन व्यतीत होने लगे और नवीन अन्वेषण-कार्य आरम्भ नहीं हो सका। वैसे अधिकारियों को भी इसकी चिन्ता नहीं थी कि एक योग्य अन्वेषणकर्त्ता के मस्तिष्क को जंग लग रहा है।

: ४ :

उक्त घटना को घटे बीस वर्ष व्यतीत हो चुके थे। भारत का चित्र बदल चुका था। सम्पूर्ण भारत की जनसंख्या एक अरब हो चुकी थी और दिल्ली की जनसंख्या नब्बे लाख हो गई थी।

सन् २००० चल रहा था। इस देश में वैज्ञानिक उन्नति भी बहुत द्रुत-गति से हुई थी। देश अन्तर्राष्ट्रीय ऋण से मुक्त हो चुका था और अन्तर्राष्ट्रीय मार्केट में भोग के कुछ-एक पदार्थों में एकाधिकार भी प्राप्त कर चुका था।

भूमण्डल के देशों में भारत का सैनिक और बौद्धिक स्तर भी सर्वश्रेष्ठ हो चुका था। अधिकांश देश नैतिकता में भारत को गुरु मानने लगे थे। भारत के आस-पास के छोटे-मोटे देश इसकी सैनिक-शक्ति की छत्रछाया में रहते हुए सुख का अनुभव करते थे। दान-दक्षिणा पाने में भी कोई निराश नहीं जाता था।

लोग सम्पन्न और सुखी थे। तो भी ईर्ष्या तथा द्वेष में रत लोगों की भी कमी नहीं थी। लोग मूर्ख, चुगलखोर और स्वार्थ-रत थे, परन्तु सरकार का प्रबन्ध ऐसा था कि इन लोगों की चलती नहीं थी।

तकनीकी उन्नति पराकाष्ठा पर पहुँच गई थी। इस उन्नति का रहस्य था अथाह शक्ति का भण्डार प्राप्त कर लेना।

बीस वर्ष पूर्व प्रमिला देवी इस शक्ति की खोज में लगी थी, परन्तु उसकी खोज अधूरी रह गई थी। उसका कारण था यह कि नयी सरकार ने उसे पुनः अपने पूर्व विषय (अति सूक्ष्म विद्युत् तरंगों) पर काम करने की स्वीकृति दे दी थी।

वह धीरे-धीरे इन किरणों में इस स्तर पर पहुँच गई थी कि वह किरणों को किसी दूर-से-दूर स्थान पर केन्द्रित कर सकती थी। जहाँ भी ये केन्द्रित होती थीं वहीं भीषण विस्फोट और अग्निकाण्ड होने लगते थे। विस्फोट तो इस कारण होते थे कि जिस पदार्थ पर यह तरंगें केन्द्रित होती थीं, वहाँ के अणु स्वतः फट जाते थे और उनके फटने से भीषण अग्नि प्रकट होने लगती थी।

दस वर्ष पूर्व विश्वविद्यालय के एक नये स्नातक सुधीर कुमार को प्रमिला देवी के साथ कार्य करने पर लगाया गया तो प्रमिला ने अपना छोड़ा हुआ अन्वेषण-कार्य (शक्ति के भण्डार की खोज) आरम्भ कर दिया। कई वर्ष की खोज के उपरान्त सुधीर पारद अणु के 'आयनन' (ionization) करने पर विमुक्त हुई शक्ति को पकड़ पाया।

एक बार पारद में से इस अपार शक्ति को निकालने में सफल हुए तो फिर औद्योगिक उन्नति बहुत सस्ती और सरलता से उपलब्ध होने लगी। वर्तमान भारत के समृद्ध होने का रहस्य इस शक्ति का भण्डार था। पारद का स्रोत था सीसा (Lead)। सीसा भारत में बहुत मात्रा में मिलता था। अतः भारत अतुल शक्ति का स्वामी हो गया।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अभी भी अमेरिका महान् देश माना जाता था। इसकी महानता में चीन से इसकी सन्धि कारण थी। चीन संयुक्त राष्ट्र का प्रभावी सदस्य था और प्रायः अमेरिका और चीन एक साथ रहते थे। भारत प्रायः रूस के साथ रहता था। ये दो महान् गुट अपने साथ अन्य छोटे-मोटे देश भी रखते थे।

इस पर भी राष्ट्रसंघ की महिमा कम हो रही थी। भारत तो इसकी सदा अवहेलना करता था। राष्ट्रसंघ के प्रेक्षक भारत में कुछ सीखने आते थे। चीन का राष्ट्रसंघ में प्रवासी का स्थान था। वहाँ का महासचिव चीनी था और वह चीनी-प्रथा के अनुसार भूमण्डल के सब राष्ट्रों की गतिविधियों पर राष्ट्रसंघ का नियन्त्रण चाहता था। परन्तु भारत, अमेरिका और अन्य स्वतन्त्र देश अपना व्यवहार स्वच्छन्द रखने में सफल हो रहे थे। यह इन राज्यों की शक्ति और सामर्थ्य के कारण ही था।

जनवरी सन् २००० को नयी दिल्ली के सप्रू हाउस में तीन दिन से भारत के गृह-निर्माण इंजीनियरों की एक सभा हो रही थी। इसमें तीन सौ के लगभग भारत के चोटी के इंजीनियर एकत्रित हो तीन दिन तक विचार-विनिमय करते रहे। इस सम्मेलन का अध्यक्ष भारत का गृह-निर्माण मन्त्री था।

सम्मेलन के उपसंहार के रूप में गृह-निर्माण मन्त्री ने सबका धन्यवाद किया

और अपने भाषण में कहा, "पिछले बीस वर्ष के निरन्तर समाजवादी विश्व के प्रयत्न पर और जनसंख्या को सीमित करने के लिए पद्मों रुपये व्यय करने पर भी जनसंख्या पहले से भी अधिक गति से बढ़ रही है।

"ऐसा क्यों हो रहा है, यह विचार करना मेरे विभाग का अथवा इस सम्मेलन का कार्य नहीं। हमारा कार्य तो यह है कि इस बढ़ी हुई जनसंख्या के लिए रहने को स्थान बनाए जाएँ। जनसंख्या में विस्फोटक वृद्धि तो इस शताब्दी का धर्म प्रतीत हो रहा है। इस धर्म-कार्य के लिए निवास-स्थान बनाना ही हमारा काम है।

"मैं प्रसन्न हूँ कि इस समस्या पर आप लोगों ने पूरा ध्यान दिया है और यह सम्मेलन इस निश्चय पर पहुँचा है कि नगरों का विस्तार अनुप्रस्थ(समानान्तर) न होकर उदग्र (ऊँचाई की ओर) होना चाहिए। वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य गगन के पार जाकर रहने की सुविधा प्राप्त कर ले। इसमें आप लोग ही सहायक हो सकते हैं।

"मैं इस सुझाव को स्वीकार कर लूँगा कि अपने विभाग में कुछ अन्तरिक्ष यात्रा का तकनीकी ज्ञान रखने वाले सम्मिलित कर लिये जाएँ।

"अभी मैं इस सम्मेलन की ओर से एक अन्तरिक्ष-निवास-निर्माण समिति के संगठन का स्वागत करता हूँ और उस समिति के खर्चे के लिए उचित धन-राशि स्वीकार कर ली जाएगी। मैं उसके किसी भी व्यावहारिक योजना का समर्थन करूँगा।"

हॉल में बैठे सभ्य गणों ने तालियाँ बजा निर्माण-मन्त्री के आश्वासन पर हर्ष प्रकट किया।

सम्मेलन में एक महिला इंजीनियर ने यह प्रस्ताव रखा था कि मनुष्य को अब अन्तरिक्ष निवास-गृह-विभाग खोलना चाहिए। इस प्रस्ताव के अनुकूल ही अन्तरिक्ष निवास-निर्माण समिति का संगठन बनाया गया था और उस महिला इंजीनियर को इस समिति का अध्यक्ष एवं संयोजक नियुक्त किया गया था। इस महिला इंजीनियर का नाम था जानकी देवी।

भारत में पहला पैंसठ मंजिल का निवास-गृह निर्माण करने का श्रेय जानकी देवी को प्राप्त हुआ था। यह मकान दिल्ली नगर के बाहर नरेला सड़क से एक ओर को तीन एकड़ भूमि पर निर्माण किया गया था। इस पूर्ण मकान के तीन सहस्र निवास-गृह में अट्ठारह सहस्र कमरे थे। इस मकान के विभिन्न तलों पर पहुँचने के लिए दो सौ लिफ्ट और भूम्यान्तर्गत तल पर डेढ़ सहस्र मोटर गाड़ियाँ रखने का प्रबन्ध था। मकान की छत पर पचास हेलीकॉप्टरों के उतरने और उड़ने के लिए स्थान था।

मकान में अपनी 'सुपर मार्केट', सफाई रखने का अपना प्रबन्ध, अपना जल, विद्युत् और वातानुकूल का प्रबन्ध था। इस प्रकार एक छोटा-सा नगर तीन एकड़

भूमि पर निर्माण कर दिया गया था। इसके प्रबन्ध के लिए एक पृथक् नगर-निगम था।

इस नयी योजना और निर्माण का विचार भी जानकी देवी का ही था और इसके पूर्ण करने में दो अरब रुपया लगने वाला था। इसके लिए एक लिमिटेड कम्पनी बनाने का विचार था और उसे ही पूँजी का प्रबन्ध करना था।

सम्मेलन के तुरन्त उपरान्त अन्तरिक्ष-निवास-निर्माण समिति की बैठक होने लगी। संयोजिका जानकी देवी सहित इसमें पाँच सदस्य थे। इन सदस्यों में एक अन्य महिला इंजीनियर भी थी। उसका नाम था वासन्ती मिश्र। वास्तव में इन दोनों महिलाओं के बलबूते पर ही यह समिति कार्य कर रही थी।

सरकार ने इस समिति के लिए अभी एक वर्ष के खर्चे के लिए पाँच लाख रुपया स्वीकार किया था। यह पाँच लाख रुपया तो केवल समिति के पाँच सदस्यों के भत्ते और वेतन में ही व्यय होने वाला था।

उक्त सम्मेलन की एक बैठक में जानकी देवी ने यह योजना प्रस्तुत की। उसने कहा, "वैज्ञानिकों की सम्मति से मैंने एक ऐसे अन्तरिक्ष यान की योजना बनाई है जो चालीस-पचास परिवारों के लिए होगा। वह पृथ्वी से ढाई सहस्र किलोमीटर की दूरी पर स्थित किया जा सकेगा। वह पृथ्वी के साथ-साथ ही घूमेगा और सदा नयी दिल्ली के ऊपर रहेगा। इस अन्तरिक्ष निवास-गृह तक पहुँचने के लिए एक अन्तरिक्ष बस सर्विस निर्माण करने की भी योजना तैयार की गई है। वह दिल्ली के कैलाश-भवन की छत से उड़कर ढाई सहस्र किलोमीटर की यात्रा पन्द्रह मिनट में पूरी करेगी।

"इसमें पचास परिवारों, अभिप्राय यह है कि एक सौ वयस्क मनुष्यों और एक सौ बच्चों के रहने का स्थान होगा।"

एक सदस्य ने पूछा, "इस मकान को चालू रखने और अन्तरिक्ष बस की सेवा करने का खर्च कितना बैठेगा?"

वासन्ती व्यापारिक लेखा-जोखा की विशेषज्ञा थी। उसने बताया, "अभी एक मोटा हिसाब बनाया गया है। इसका विवरण भी तैयार किया जा रहा है। यह अनुमान है कि एक ऐसे यान के निर्माण और इसके अन्तरिक्ष में स्थित करने में एक अरब रुपया व्यय होगा। इसको चलता रखने के लिए तो कुछ विशेष खर्च नहीं बैठेगा। हाँ, इसकी जन-सेवाओं के लिए एक करोड़ वार्षिक व्यय का अनुमान है। इस तक आने-जाने के लिए जो अन्तरिक्ष बस रखनी पड़ेगी, उसका खर्चा इस एक करोड़ में ही सम्मिलित है।"

"और वहाँ रहने वाले प्रत्येक परिवार को क्या देना होगा?" सैयद हसन का अगला प्रश्न था।

"पूंजी की अदायगी पचास वर्ष में होगी अर्थात् दो करोड़ प्रति वर्ष की घिसाई

होगी। इसमें एक करोड़ प्रति वर्ष का चालू खर्चा होगा। इस प्रकार तीन करोड़ प्रति वर्ष का खर्चा पचास परिवारों को सहन करना होगा। एक परिवार को छः लाख रुपया प्रति वर्ष वहाँ रहने के लिए देना होगा।''

''इतना भाड़ा देने वाले पचास परिवार मिल जाएँगे क्या ?''

''पृथ्वी तल पर कैलाश-भवन में एक निवास-स्थान का भाड़ा एक लाख रुपया प्रति वर्ष है और उस मकान के बनने से पहले ही सब निवास-स्थान भाड़े पर उठ गए थे।''

सैयद हसन विचार कर रहा था कि एक लाख और छः लाख में अन्तर है। सुदृढ़ भूमि से ढाई सहस्र किलोमीटर की दूरी पर जाकर रहना भी खतरे से खाली नहीं हो सकता। इस विचार पर उसने सिर हिलाते हुए कहा, ''मैं इस पूर्ण 'प्लान' को कुफ्र मानता हूँ और इसके व्यावहारिक होने में शक करता हूँ।''

''मगर शेख साहब ! इसमें कुफ्र क्या है ?''

''खुदा ने इन्सान को जमीन की सतह पर रहने के लिए बनाया है और जमीन से ढाई हजार किलोमीटर की दूरी पर निराधार उड़ना खुदाई हुक्म के बईद है।''

अन्य चारों सदस्य सैयद हसन साहब के विरोध को समझकर मुस्करा रहे थे। वास्तव में शेख साहब को इस समिति में रखा ही इस कारण था कि एक प्रतिपक्षी की विवेचना से योजना बनाने वाले और भी अधिक सावधानी से योजना पर विचार करेंगे।

जानकी देवी ने कुफ्र का उत्तर देते हुए कहा, ''देखिए, शेख साहब ! मेरे एक परिचित हिन्दू शास्त्रों के विद्वान् हैं। वे कहते थे कि परमात्मा की अपार शक्ति मानव आत्मा के प्रयोग के लिए ही है। इस जगत् का विधि-विधान यह है कि मानव आत्मा-परमात्मा की शक्ति का उपभोग कर सुख और आराम प्राप्त करे। इससे परमात्मा की शक्ति जो 'ऐटम' में संचित रखी थी, उसका प्रयोग कर ही हम भूतल से इतनी दूर आराम से उसका सत्व निकाल सकेंगे।''

''परन्तु जानकी देवी ! मैं इसकी कीमत भी इस तजवीज के न चल सकने में एक भारी वजह मानता हूँ।''

''जब से सरकार ने निवास-स्थानों के भाड़े को आयकर से मुक्त राशि घोषित की है तब से इसमें कठिनाई नहीं रही। यही वजह है कि कैलाश-भवन के दो सहस्र से ऊपर मकान उसके पूर्ण होने से पहले ही लग गए थे।

''एक व्यक्ति जिसकी आय दो लाख रुपये प्रति वर्ष है वह आयकर से मुक्त एक लाख व्यय कर सकता है। कारण यह कि उसको आय में से केवल पाँच सहस्र प्रति वर्ष ही तो देना पड़ेगा।

''इस प्रकार सात लाख रुपये प्रति वर्ष किराया देने वाले को अपने पास से तो केवल चौदह सहस्र प्रति वर्ष देना है। शेष तो सरकार का धन ही है।''

"इससे सरकार को बहुत ही घाटा होगा।"

इस पर वासन्ती मुस्कराकर बोली, "शेख साहब ! आप इस विधि-विधान के विषय में कुछ नहीं जानते। सरकार को कुछ घाटा तो होगा, परन्तु वह इतना नहीं जिससे कि सरकार का दिवाला निकल जाए।

"इस समय सरकार को आयकर प्राप्त करने में साठ से सत्तर प्रतिशत खर्चा बैठ जाता है। इस कारण सात लाख एक व्यक्ति के कर में से छूट देते हुए सरकार को केवल तीन लाख का घाटा होता है और यह तीन लाख सरकार कारोबार में भागीदार होने से प्राप्त कर सकती है। साथ ही वह पचास परिवारों के जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक सामान पर सामान्य-सी चुंगी लगाने से भी कुछ लाभ प्राप्त कर लेगी।

"निर्यात पर चुंगी तो है ही। उस सब सामान पर जिसे अन्तरिक्ष गृह-निवासी प्रयोग करेंगे, निर्यात चुंगी ली जाएगी तो यह घाटा पूरा हो जाएगा।"

"वाह ! यह खूब दलील है। इससे निवास-गृह में रहने वालों का जीवन तो महँगा ही होगा।"

"नहीं साहब ! वे लोग अनेक प्रकार के निगम के टैक्सों से भी तो बच जाएँगे। हमारी गणना के अनुसार कुल मिलाकर अन्तरिक्ष में रहना कुछ अधिक महँगा नहीं पड़ेगा।"

जानकी देवी ने एक समाचार देते हुए बताया, "शेख साहब ! अभी हमारी योजना के 'ब्ल्यू प्रिंट' तैयार नहीं हुए। इस पर भी मेरे पास एक प्रस्ताव आ गया है। वह यह कि प्रथम अन्तरिक्ष निवास-गृह एक अन्तर्राष्ट्रीय होटल हो सकता है। वे होटल वाले इसमें पूँजी लगाने के लिए तैयार हैं और जो वार्षिक भाड़े में से काट ली जाएगी। होटल वाले पहले बीस साल का ठेका करना चाहते हैं।"

"कौन हैं वह ?"

"यह मैं अभी बता नहीं सकती। उन्होंने यह सुझाव दिया है कि यदि उस अन्तरिक्ष निवास-गृह से अन्य मुख्य नगरों को भी बस भेजी जा सके तो यह होटल अत्यन्त सफल होगा।"

"और ऐसा हो सकेगा क्या ?"

"हाँ। केवल उन राज्यों से प्रबन्ध करना होगा जिन राज्यों के नगरों को अन्तरिक्ष बस जाने वाली होगी।"

सैयद हसन भौंचक्का हो मुख देखता रहा। जानकी देवी ने कहा, "सरकार की ओर से जो पाँच लाख रुपये की स्वीकृति इस समिति के लिए मिली थी, वह पूरे वर्ष का खर्चा निकाल नहीं सकेगी। इतने ही और रुपये की माँग के लिए हमें अभी से सरकार के वित्त-विभाग से एक प्रार्थना कर देनी चाहिए।"

"तो पाँच लाख रुपया खर्च हो गया है ?"

"नहीं शेख साहब ! हमारी कमेटी को बने अभी तीन महीने हुए हैं और हम तीन लाख व्यय कर चुके हैं।"

"तीन लाख ?"

"हाँ शेख साहब ! आप अकेले का सफर-खर्चा ही पचास हजार रुपया बना है। लगभग इतना ही अन्य सदस्यों का भी है। साथ ही हमने एक कार्यालय भी स्थापित किया है जिसमें तीस के लगभग कर्मचारी हैं। कैलाश-भवन में तीन फ्लैट भाड़े पर लेने पड़े हैं। तभी तो इस गति से काम हो रहा है। इस योजना का श्रेय भी तो हमको प्राप्त होगा।"

"लेकिन कैलाश-भवन की जगह नयी दिल्ली में कोई दूसरा मकान ले लिया जाता तो कुछ बचत तो हो ही जाती।"

सब सदस्य शेख साहब की युक्तियाँ सुन मुस्करा रहे थे।

जानकी देवी का इस भवन की पूँजी में पाँच प्रतिशत का भाग था। यह बात सब सदस्य जानते थे और वह भवन न केवल अन्तरिक्ष निवास-गृह को पृथ्वी के साथ जोड़ने वाला केन्द्र बनने वाला था, वरन् यदि जानकी की यह योजना सफल हुई तो अन्तरिक्ष में स्थित एक अन्तर्राष्ट्रीय होटल के साथ सम्बन्ध बनाने वाला स्थान भी होने वाला था।

शेख सैयद हसन के अतिरिक्त सब सदस्य यह भी जानते थे कि जानकी देवी अपनी योजना से अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी एक महान् भूमिका निभाने वाली है।

सैयद हसन साहब कुछ मोटी बुद्धि के व्यक्ति थे। उनके मस्तिष्क में कोई नयी बात सहज ही समा नहीं सकती थी। इस कारण वह प्रत्येक नये विचार पर आपत्ति करते थे, परन्तु युक्ति करने में भी दुर्बल होने के कारण जब दूसरे लोग बात समझाते तो उनकी बात का उत्तर न दे सकने पर वे मौन हो जाते थे।

: ५ :

योजना का विस्तृत विवरण सब सदस्यों को पहले ही भेज दिया जाता था और सब घर से विचार करके तैयार होकर आते थे। जहाँ सभी योजना में किसी-न-किसी प्रकार का सुधार का विचार उपस्थित करने आते थे, वहाँ सैयद हसन सदा योजना पर आपत्तियाँ विचार करके लाया करता था, परन्तु जब उन आपत्तियों के उत्तर सुनता था तो वह उनका प्रत्युत्तर विचार नहीं कर सकता था। इस कारण वह निरुत्तर चुप रह जाया करता था। इस पर भी उसको सन्तोष नहीं होता था और वह सदा ही सभा से असन्तुष्ट हो घर लौटा करता था।

आज भी उसके मन की यही दशा थी। वह कैलाश-भवन के चौबालीसवें तल से नीचे उतरने के लिए लिफ्ट की ओर जा रहा था कि जानकी देवी उसके साथ ही चल पड़ी। वह भी नीचे की मंजिल की ओर जा रही थी।

"शेख साहब ! किधर जा रहे हैं ?" जानकी देवी ने पूछा।

"आप हिन्दुओं की जबान में पाताल देश में।"

"अर्थात् नम्बर एक के तल पर?"

"नहीं जानकी जी! उसके भी नीचे।"

"मोटर खाने में?"

"नहीं। उससे भी नीचे। कारखाने में। मेरी मोटर वहाँ मरम्मत हो रही है।"

"क्या बिगड़ गया था?"

"इंजिन में खराबी हो गई थी।"

"अब तक बन गई होगी क्या?"

"कह नहीं सकता। पता करूँगा और यदि अभी तैयार न हुई और तैयार होने में देर हुई तो टैक्सी कर अपने हवाई पत्तन को चला जाऊँगा।"

"तो ऐसा करिए। आप मेरे फ्लैट में आइए। वहाँ से टेलीफोन करके पता कर लेंगे और यदि तैयार न हुई अथवा तैयार होने वाली ही हुई तो आप वहीं पर उसके तैयार होने का इन्तजार कर सकते हैं।"

"आप किस नम्बर पर रहती हैं?"

"दसवीं मंजिल पर बीस नम्बर में।"

"आप वहाँ किसके साथ रहती हैं?"

"अपने पति के साथ। वे डॉक्टर हैं। उन्होंने चिकित्सा-कार्य के लिए एक निवास-स्थान निचली मंजिल पर ले रखा है।"

"ओह! क्या वे आपके शादी-शुदा खाविन्द हैं?"

"क्या मतलब है आपका? शादी-शुदा और गैर शादी-शुदा में क्या फर्क समझते हैं आप?"

"मुस्तकिल और आरजी सम्बन्ध से ही मैं इसके मायने लेता हूँ।"

"आपने कैसा इन्तजाम कर रखा है?" जानकी देवी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"मेरी दो शादियाँ हैं। एक मुस्तकिल है और दूसरी आरजी। आरजी तो आरजी ही होती है। वह बदलती रहती है। मुस्तकिल मेरे बचपन की साथिन है।"

"मगर दो मुल्लाओं के बीच मुर्गी हराम नहीं हो रही है क्या?"

"हराम और हलाल होती रहती है। मगर मुझे इसका फिक्र नहीं होता। मैं अपनी जिन्दगी चला रहा हूँ। कभी-कभी ख्याल आता है कि दो पहियों पर गाड़ी भली-भाँति चलती है। एक पर तो लुढ़क जाने का डर मालूम होता है।"

"खैर, आपकी गाड़ी चल रही है, यह सन्तोष की बात है।"

इस समय लिफ्ट आ गया था। दोनों लिफ्ट में गए तो जानकी देवी ने दस नम्बर का बटन दबा दिया। लिफ्ट नीचे को चल पड़ा। दस नम्बर के तल पर दोनों लिफ्ट से बाहर निकल आए और जानकी देवी शेख साहब को लेकर एक ओर को चल

पड़ी। एकाएक जानकी देवी को स्मरण हो आया कि शेख साहब तो बम्बई में रहते हैं और वहीं से अपनी समिति की मीटिंग में आते हैं। इस बात के स्मरण आते ही जानकी देवी ने पूछ लिया, "आप तो बम्बई से आए हैं न ?"

"हाँ, मैं दस बजे घर से चला था। साढ़े दस बजे हवाई पत्तन पर पहुँचा और पौने ग्यारह बजे के जहाज में बैठ साढ़े-बारह बजे यहाँ पहुँच गया था। वहाँ से एक दोस्त के घर गया था। वहाँ खाना खाया और डेढ़ बजे आपकी मीटिंग में हाजिर हो गया।"

"और आपकी मोटर ?"

"वह तो उसी दोस्त की है जिसके यहाँ खाना खाया है। अब जाने का प्रोग्राम तो मोटर की मरम्मत मुकम्मल होने पर है।"

इस समय जानकी देवी अपने निवास-स्थान पर पहुँच गई। जानकी देवी ने द्वार पर लगी घण्टी का बटन दबाया तो एक लड़की ने द्वार खोला। जानकी देवी ने पूछा, "डॉक्टर साहब आए हैं क्या ?"

"हाँ ! आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"यह आपकी लड़की है ?" शेख साहब ने पूछ लिया।

जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कहा, "लड़की से क्या मतलब ?"

"आपकी 'डॉटर'।"

"आप क्या समझते हैं ? लड़की की और मेरी क्या उमर समझते हैं आप ?"

शेख साहब ने लड़की को सिर से पाँव तक देखकर कहा, "यह बीस साल की उमर की मालूम होती है।"

"थोड़ा ही गलत अन्दाज है। यह अठारह साल की है। आजकल मैडिकल कॉलेज में पढ़ती है। मैं स्वयं अभी पच्चीस वर्ष की हूँ।"

"ओह ! तब तो यह आपकी लड़की नहीं, बहन हो सकती है।"

"खैर, जल्दी ही आपकी समझ में आ गया है। यह मेरी छोटी बहन है। मेरे साथ यहीं रहती है।"

शेख साहब ने पुन. लड़की की ओर देखा। लड़की मुस्करा रही थी। तीनों ड्राइंग-रूम में पहुँचे तो वहाँ एक प्रौढ़ावस्था के व्यक्ति जिनकी कनपटियों पर सफेद बाल दिखाई देने लगे थे, बैठे थे।

जानकी देवी ने शेख साहब से उस व्यक्ति का परिचय करा दिया। उसने बताया, "यह मेरे पति डॉक्टर जीवाजी राव कुलकर्णी हैं।" और उसने अपने पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "ये हमारे अन्तरिक्ष-निवास-निर्माण समिति के सदस्य हैं शेख सैयद हसन। आप बम्बई पोर्ट ट्रस्ट के चीफ इंजीनियर हैं।"

डॉक्टर साहब ने शेख साहब से हाथ मिलाते हुए कहा, "बहुत खुशी हुई आपके दर्शन करके। आइए, चाय का वक्त है। बैठिए, आ ही रही है।"

डॉक्टर ने लड़की की ओर देखकर कह दिया, "नीति ! टेलीफोन पर कह देना कि चार आदमी के लिए चाय चाहिए।"

नीति ड्राइंग-रूम के बाहर टेलीफोन करने चली गई तो शेख साहब ने कुछ बात करने के लिए पूछ लिया, "डॉक्टर साहब ! आप किस बीमारी का इलाज करते हैं ?"

"नीम पागलपन का।"

"ओह !" शेख साहब को विस्मय हुआ। उन्होंने अपना विस्मय प्रकट करने के लिए पूछ लिया, "ऐसे मरीज आपको मिल जाते हैं क्या ?"

"इनसे फुरसत ही नहीं मिलती। आज ही अभी तक तीस नये रोगी देख चुका हूँ।"

"तो दिल्ली में यह रोग बहुत फैला हुआ है ?"

"हाँ। वैसे तो सब नगरों में इसमें वृद्धि हो रही है। मगर दिल्ली में कुछ ज्यादा ही है। पर मेरे पास तो रूस और अमेरिका से भी मरीज आ रहे हैं।"

"सच ! मगर दिल्ली में इनकी तादाद ज्यादा क्यों है ?"

"पागलपन पैदा करने वाली तकनीकी उन्नति तो सब नगरों के समान ही यहाँ भी है, परन्तु यहाँ अस्सी करोड़ आबादी वाले मुल्क की सियासत चलाने वाले भी तो हैं। दोनों ही बातें, तकनीकी तरक्की और सियासत इन्सान को पागल बनाने वाली हैं। यही वजह है कि हिन्दुस्तान के दूसरे शहरों से यहाँ पागलों की तादाद दुगुनी से भी ज्यादा है।"

"पर दूसरे मुल्कों में भी तो सियासत चलती है।"

"हाँ। वहाँ भी पागलपन है। इसीलिए वहाँ से भी रोगी यहाँ आते हैं। सबसे ज्यादा पागलों की तादाद पीकिंग में है। वहाँ दिल्ली से ज्यादा पागल हैं।"

"डॉक्टर साहब ! मुझे तो यहाँ देखने में एक भी पागल नहीं मिला।"

इस समय शेख साहब को अपनी मोटर की बात स्मरण आ गयी। उन्होंने जानकी देवी से कहा, "आप 'बेसमैंट' में वर्कशाप नम्बर तीन में टेलीफोन कर पता करें कि आर्डर नम्बर बयालीस कब तैयार होगा ?"

जानकी देवी बाहर टेलीफोन करने गयी तो शेख साहब ने जानकी देवी की बहन से पूछ लिया, "आप कौन-सी जमायत में पढ़ती हैं ?"

"मैडिकल कॉलेज की दूसरी जमायत में।"

"आप भी क्या पागलपन की बीमारी की 'स्पेशलिस्ट' बनना चाहती हैं ?"

"जी नहीं। मैं तो हमल गिराने में खास जानकारी हासिल करना चाहती हूँ।"

"यह क्यों ?"

"दुनिया के पचास फीसदी लोगों को हमल के डर से बचाने के लिए।"

"तो यह बहुत खतरनाक बीमारी है ?"

"मुझे तो तजुरबा नहीं। लेकिन किताबों में पढ़ने से और रोग से पीड़ित प्राणियों के कथनों से यही पता चला है कि इसके रोगियों को असह्य कष्ट होता है।"

"हाँ। और इस रोग में फँसने की मूर्खता करने वाली औरतों से धन बटोरना भी तो एक बहुत बड़े सवाब का काम होगा।"

"यह तो आनुषंगिक है। मुख्य वही है।"

इस समय जानकी देवी आ गई और बोली, "आपकी मोटर पिछले आधे घंटे से तैयार है और उसे वहाँ खड़े रखने का भाड़ा बीस रुपया प्रति घण्टा पड़ रहा है।"

"यह तो आप दिलवा ही देंगी। मैं सब बिल बा मय रसीदें दे दूँगा।"

"पर आप तो टैक्सी का भाड़ा वसूल किया करते हैं ?"

"ओह ! यह तो भूल ही गया था।"

इस पर डॉक्टर कुलकर्णी ने बता दिया, "आपको भी पागलपन का दौरा आरम्भ हो गया प्रतीत होता है।"

"पागलपन ? नहीं डॉक्टर साहब ! भूल जाना तो मेरी बचपन की आदत है।"

"इसका मतलब है कि यह रोग आपको बचपन से ही है। यह 'क्रौनिक' हो गया है। सामयिक कारण उपस्थित होने पर कभी भी यह बढ़कर पूर्ण मस्तिष्क में छा सकता है।"

"लेकिन डॉक्टर साहब ! मैंने इंजीनियरिंग का इम्तहान अव्वल दर्जे में पास किया था। यदि यह रोग होता तो उन दिनों, जब दिमाग पर बहुत बड़ा बोझा था तो मैं जरूर पागल हो गया होता।"

"घटनावश ही ऐसा नहीं हुआ। लेकिन कोई-कोई पागल किसी एक ही विषय में पागलपन का प्रदर्शन करता है और दूसरे विषयों में वह अपने प्रतिभावान् होने के लक्षण दिखाता है। आपके साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ प्रतीत होता है।"

"खैर, मेरा काम चल रहा है। मैंने अपने काम में विशेष योग्यता का प्रदर्शन किया है।"

"देखिए शेख साहब ! मैं आपको एक ओषधि बता सकता हूँ। यदि आप उसका सेवन करते रहेंगे तो आपके रोग की मस्तिष्क के अन्य भागों पर छा जाने की सम्भावना नहीं रहेगी।"

"बता दीजिए। लेकिन मैं आपको फीस नहीं दूँगा।"

"मैं अपने घर पर चिकित्सा का व्यवसाय नहीं करता। यहाँ मशवरा देने की फीस नहीं लूँगा।"

"हाँ, तो बता दीजिए।"

"मण्डल का सिरप फासफेट।"

"इसका प्रयोग तो मैं पहले भी किया करता हूँ।"

"तभी। अब मैं समझ गया हूँ कि अभी तक आप पागल क्यों नहीं हुए।"

इस समय इस तल के 'कौमन रैंस्टोरां' से नौकर चाय ले आया। इस कारण डॉक्टर साहब का चिकित्सा प्रवचन नहीं चल सका।

जानकी देवी ने बात बदलकर चाय बनाते हुए कह दिया, "पिताजी आ रहे हैं।"

"कब ?" डॉक्टर का प्रश्न था।

"कल हवाई जहाज से यहाँ आने वाले हैं। समय नहीं बताया। इसका अर्थ है कि स्वयं आ जाएँगे।"

शेख साहब ने एक टुकड़ा मिठाई का उठा मुख में डालते हुए कहा, "कहाँ से आने वाले हैं ?"

"हांग-कांग से।"

"वे वहाँ क्या करते हैं ?"

"मैराइन फूड विभाग में कार्य करते हैं।"

"मैराइन फूड का क्या मतलब ?"

"सागर से निकलने वाले खाने योग्य पदार्थों को चीन भेजते हैं। जब से चीन वालों से व्यापार खुला है, यह काम बहुत उन्नति कर रहा है। पिताजी को सागर से निकलने वाले घोंघे, कछुओं, मछलियों के 'पैसच्युराईश' कर पैकिंग करना होता है।"

'तो बहुत धन पैदा कर रहे हैं ?"

"हाँ। निर्वाह भली-भाँति हो जाता है।"

चाय पी जा रही थी। डॉक्टर कुलकर्णी ने पूछा, "आपकी अन्तरिक्ष निवास-गृह की योजना का क्या हुआ ?"

"योजना तो जानकी देवीजी की है। मुझे तो इस प्रकार जमीन से इतनी दूर बिना हवा-पानी के जाकर रहना बिल्कुल पसन्द नहीं। न जाने लोगों को क्या हो रहा है कि वहाँ पर रहने के लिए भी छः-सात लाख रुपया सालाना खर्च करने के लिए तैयार हो रहे हैं ?"

डॉक्टर साहब ने कहा, "मैं तो इसे अभी मनोरंजन का स्थान ही समझा हूँ। लोग अपनी कमाई से बचा धन वहाँ फूँकने के लिए जाया करेंगे। इस पर भी यह आजकल के एक पागल दिमाग की उपज है।"

"यह जानकी देवी के दिमाग की सूझ-बूझ है। जो कुछ भी योजना इन्होंने बनाई है वह लासानी प्रतीत हुई है। इस पर भी मैं इस योजना का विरोधी हूँ। मैं आकाश में हवा-पानी से खाली स्थान पर रहने के स्थान समुद्र तल पर मकान

बनाने के हक में था। वहाँ, कम-से-कम हम ठोस भूमि पर तो होंगे।"

"वहाँ तो, नवीन खोज के अनुसार, कीचड़ के तूफान आते हैं और कभी भी हमारे मकान उनके नीचे दबकर चकनाचूर भी हो सकते हैं। मैंने तो ऐसा स्थान तजवीज किया है जहाँ न कीचड़ के, न पानी के, न आँधी के, न धूल-मिट्टी के किसी प्रकार के भी तूफान नहीं आ सकते। वहाँ सबकुछ चारों ओर अँधेरा और शान्ति तथा नीरवता होगी।

"शेख साहब! यहाँ एक डॉक्टर प्रमिलाजी हैं। वह तीस वर्ष से 'अलट्रा माइक्रो वेव्ज'(अति सूक्ष्म विद्युत् तरंगों) पर कार्य कर रही हैं। हमने उनकी सेवाएँ प्राप्त कर ली हैं और वह बता रही हैं कि उस निवास-गृह पर प्रकाश, जल और भोजन पृथ्वी पर से बैठे-बैठे तैयार किया जा सकेगा।

"यहाँ इस भवन की छत पर वह एक यन्त्र लगवा देंगी जिसमें से विद्युत्-तरंगें उस निवास-गृह पर जाया करेंगी और वहाँ प्रकाश, जल, वायु और सब प्रकार के पकवान बन जाया करेंगे। एक ही व्यक्ति दो-तीन सौ व्यक्तियों को सब प्रकार की सुख-सुविधा उपलब्ध कर दिया करेगा। केवल बटन दबाने की आवश्यकता हुआ करेगी और पृथ्वी पर से भेजी शक्ति-तरंगों से सब कार्य होने लगेगा।"

"तब तो वहाँ रहना भूमि पर रहने से सस्ता भी होना चाहिए।"

डॉक्टर कुलकर्णी हँस पड़ा। बोला, "सस्ता का अभिप्राय समझना चाहिए। सस्ता होगा इस दृष्टि से कि मानव-परिश्रम बच जाएगा, परन्तु उस मानव-परिश्रम के बचाने के लिए जो मशीन का परिश्रम मोल लेना पड़ेगा उस मोल को उपलब्ध करने के लिए तो कई गुणा अधिक परिश्रम करना पड़ेगा।"

शेख साहब समझे नहीं। परन्तु उन्हें एक बात स्मरण आ गई कि उनकी मोटर नीचे मोटरखाने में खड़ी है और वहाँ बीस रुपया प्रति घण्टा की दर से भाड़ा पड़ रहा है। इतना तो उनके टैक्सी में आने के बिल के दाम से भी अधिक हो जाएगा। इस कारण वह उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ डॉक्टर साहब से बोला, "मेरे हवाई जहाज के जाने का समय हो रहा है। फिर कभी आपसे मिलकर महँगाई के अर्थ समझने की कोशिश करूँगा।"

यह कह वह लपककर कमरे से निकल गया।

डॉक्टर ने अपनी पत्नी को कहा, "यह शीघ्र ही 'मैण्टल' रोगी बनने वाला है।"

: ६ :

राष्ट्रसंघ की साख जब राजनीतिक क्षेत्र में कम होने लगी तो इसने अन्य क्षेत्रों में अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया।

डॉक्टर तिन युत सेन उन विद्वानों में एक था जिसे राष्ट्रसंघ ने उन्नतिशील देशों की सहायता के लिए तथा भिन्न-भिन्न देशों की सरकारों में तकनीकी ताल-

मेल बैठाने के लिए नियुक्त किया हुआ था। डॉक्टर भारत भी कई बार आ चुका था और अपनी सम्मति से भारत सरकार को उपकृत करता रहता था।

भारत सरकार ने एक समिति बना रखी थी और जब भी वह भारत में आता था वह समिति उससे भारत की समस्याओं पर विचार-विनिमय किया करती थी। भारत के पाँच वैज्ञानिकों का एक आयोग इस काम के लिए नियुक्त था। इस आयोग का संयोजक डॉक्टर कैलाशनाथ था। वह भारत के अन्वेषण विभाग का अध्यक्ष रह चुका था।

इन दिनों डॉक्टर तिन भारत में आया हुआ था और भारत की जनसंख्या पर विचार हो रहा था। कनाट प्लेस में भारत राष्ट्रीय योजना आयोग के भवन में भारतीय वैज्ञानिकों की समिति डॉक्टर तिन से वार्त्तालाप कर रही थी। भारतीय समिति में पंडित निरंजन चतुर्वेदी थे। वह शिक्षा-विभाग की ओर से इस समिति में कार्य करते थे। चतुर्वेदी ने आज आते ही कहा था, "हम इस देश के विद्वान् इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि दुनिया के वर्तमान संकट का केवल एक बात से ही निवारण हो सकता है।"

"किस बात से?"

"भूमण्डल की जनसंख्या कम करने से।"

"कैसे कम की जाए?" डॉक्टर तिन ने पूछा, "हम अपने देश में पिछले बीस वर्ष से विशाल स्तर पर सन्तान निरोध के उपाय प्रयोग में ला रहे हैं। पहले तो जनसंख्या की वृद्धि में एक प्रतिशत वृद्धि की कमी हुई थी, परन्तु तुरन्त ही फिर बढ़ने लगी थी।"

चतुर्वेदी का कहना था, "इसको हम सब जानते हैं। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि मानव-प्रकृति कृत्रिम उपायों से नियन्त्रण में नहीं रखी जा सकती। इस कारण सन्तान निरोध असफल हुआ है।"

"परन्तु आप इस समस्या का क्या सुझाव बताते हैं?" तिन ने पूछा।

"हमारा विचार कुछ ऐसा बन रहा है कि पृथ्वी पर या तो कोई प्राकृतिक दुर्घटना हो जाए जिससे अधिकांश जनसंख्या विनष्ट हो जाए और पुनः सृष्टि-निर्माण के लिए कुछ थोड़े-से मानव शेष रह जाएँ। अन्यथा हम बुद्धिशील व्यक्ति कुछ ऐसा आयोजन करें कि कोटि-कोटि मनुष्य एक स्थान पर एकत्रित होकर परस्पर लड़ मरें।

"यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो प्रकृति इस प्रकार की चाबुक चलाएगी कि स्वतः ही यह कार्य हो जाएगा।"

"पण्डित चतुर्वेदी! कोई भी शुद्ध विचार-शक्ति वाला व्यक्ति आपकी बात को पागलपन समझेगा। इस समय भूमण्डल की जनसंख्या चार अरब से ऊपर हो रही है। यदि इस योजना इत्यादि से कृत्रिम उपाय द्वारा उत्पत्ति न बढ़ाई गई तो

प्रकृति तो यहाँ केवल एक अरब मनुष्यों के लिए ही उत्पन्न करती है। शेष तीन अरब की हत्या कौन पसन्द करेगा और साथ ही किस प्रकार इतनी हत्याएं हो सकेंगी ?"

"हो तो सकेंगी।" डॉक्टर कैलाशनाथ ने कहा, "परन्तु प्रश्न यह है कि कौन इसे करना पसन्द करेगा ?"

डॉक्टर भूतलिंगम कहने लगे, "इस समय केवल भारतवासियों के लिए प्रति वर्ष दो अरब से ऊपर सागर के जानवर पकड़कर भूने और पकाये जाते हैं। तब पूर्ण भूमण्डल में एक वर्ष में दो अरब मनुष्य मार, भून-पकाकर खा जाने में क्या कठिनाई हो सकती है ?"

"डॉक्टर भूतलिंगम ! आप जानवर और मनुष्य में कुछ अन्तर ही नहीं मानते ?"

"मानता हूँ ! परन्तु जहाँ तक हत्या का प्रश्न है वहाँ समानता ही है। हत्या हत्या ही है। मनुष्य की करो अथवा इतर जीव-जन्तु की करो।"

डॉक्टर कैलाशनाथ ने पूछा, "पण्डितजी ! आप तो यह मानते हैं कि जीवात्मा माता अथवा पिता उत्पन्न नहीं करते। तो यह अरबों मनुष्यों की आत्माएँ कहाँ से आ गयीं ?"

"मुझे तो यह प्रतीत हो रहा है कि जीवात्माओं की संख्या तो स्थिर है। केवल निम्न योनियों में वे कम हो रही हैं और मानव योनि में बढ़ रही हैं।"

"अर्थात् आत्माएँ उन्नति कर रही हैं ?"

"उन्नति के लक्षण तो दिखाई नहीं देते। हाँ, निम्न कोटि के जन्तुओं के लक्षण मनुष्यों में आ रहे हैं।"

"वे क्या लक्षण हैं ?" डॉक्टर तिन का प्रश्न था।

"मानवता के लक्षण हैं बुद्धि को विकसित कर उसका प्रयोग करना। निम्न कोटि के जन्तु ऐसा नहीं कर सकते। मानव-समाज में भी यही बात उत्पन्न हो रही है। बुद्धि का प्रयोग कम हो रहा है। हम अधिकांश कार्य संस्कारों के अधीन कर रहे हैं। यही पशुपन है।"

डॉक्टर तिन हँस पड़ा। वह पूछने लगा, "तो हम यहाँ बुद्धि का प्रयोग नहीं कर रहे ? वाह, पण्डितजी ! आप तो अपने को ही पशु समझने लगे हैं।"

पण्डित तुरन्त ही सतर्क हो बोला, "मैं कुछ-एक कोटि के मनुष्यों की बात नहीं कह रहा। मैं जन-साधारण की बात करता हूँ। समाजवाद और प्रजातन्त्रवाद को मानने वालों के लिए ही यह बात कर रहा हूँ।

"देखिए डॉक्टर साहब !" पण्डितजी ने अपनी बात समझाने के लिए कहा, "समाजवाद का अभिप्राय है कि पूर्ण मानव-समाज के कार्यों का उत्तरदायित्व राज्य पर छोड़ दिया जाए और प्रजातन्त्र में राज्य का अर्थ मन्त्रिमण्डल और उसमें भी

प्रधानमन्त्री है। शेष जनता तो दिन-भर काम करे और भोग-विलास करे। इसी को तो पशुपन कहते हैं।

"यदि जन-साधारण के साथ बहुत रियायत करें तो यह कहा जा सकता है कि मानव एक पालतू पशु की भाँति हो गया है।

"इस पर विशेषता यह है कि इन पशु-तुल्य मानवों को सरकार गठित करने का अधिकार भी दिया गया है। इससे ये मानव उसको अपना मालिक बना सकते हैं, जो इसे हरी-हरी घास दिखाकर अपनी ओर आकर्षित कर सके। अथवा उसको अपना मालिक स्वीकार करते हैं जो धन, बल और स्त्री-प्रलोभन से हाँककर अपनी दिशा में ले जा सकता है।"

तिन ने कहा, "मगर इस प्रकार के बढ़िया मकान, सवारी के लिए मोटर-गाड़ियाँ, खाने को केक, पेस्टरियाँ, पहनने को बढ़िया वस्त्र भी तो मिल रहे हैं। ये सब समाजवाद और प्रजातन्त्र का ही परिणाम है न ?"

"डॉक्टर ! यह इसी प्रकार है जैसे किसी मालिक ने अपने पशुओं के लिए बढ़िया तबेला बना रखा हो, अपने पशुओं को सजाने के लिए उसपर रंग-रोगन कर रखा हो अथवा उसे खाने में बढ़िया खली और चना दे रहा हो।

"प्रश्न इन उपलब्धियों का नहीं है। वैसे इनके निर्वाचन में पशु की योग्यता और अधिकार है। इस पर भी आज का नागरिक किसी दूध देने वाली गाय-भैंस से अधिक नहीं।"

कैलाशनाथ ने कहा, "मान लिया जाए कि आपका विश्लेषण ठीक है तो आप क्या उपाय बताते हैं ?"

"मेरा उपाय तो यह है कि राष्ट्रसंघ यह घोषणा करे कि आगामी वर्ष में समाजवाद वापस कर लिया जाएगा। धीरे-धीरे सबको काम देना, सबके पालन-पोषण का उत्तरदायित्व, और सबके सुख-सुविधा के प्रबन्ध करना राज्य का कार्य नहीं रह जाएगा। सब अपने लिए उपार्जन करने के लिए स्वतन्त्र होंगे और अपने उपार्जन से जीवन चलाने में स्वतन्त्र होंगे।

"राज्य का काम यह देखना होगा कि कोई नागरिक किसी दूसरे के अधिकारों पर छापा न मार ले।"

इस पर तो तिन ने कह दिया, "तब तो धनी, बलशाली और संसार की सुन्दर स्त्रियाँ सबको लूटकर खा जाएँगी ?"

चतुर्वेदी ने हँसते हुए कहा, "यह तो आज भी हो रहा है। अन्तर केवल यह है कि इन सब बातों को राज्य कर रहा है और उसे कोई पकड़कर दण्ड नहीं दे सकता। कारण यह कि चोर और न्यायकर्त्ता एक ही हैं।

"मैं चाहता हूँ कि प्रजा को स्वतन्त्रता दे दी जाए कि वह स्वेच्छा से बनाए और खाए। राज्य केवल न्यायकर्त्ता ही रहे। यह स्वयं न कमाई करने में और न ही

खाने-खिलाने में हस्तक्षेप करे।

"हमने भारत में कुछ सीमा तक ऐसा किया है और हमें इसका लाभ प्रतीत हुआ है।"

"परन्तु इससे हमारी विचाराधीन समस्या कैसे सुलझेगी ?" डॉक्टर तिन का प्रश्न था।

"इस योजना से कामचोर, अयोग्य और निर्बुद्धि एक ओर कर दिए जाएंगे और वे संसार को छोड़ने पर विवश हो जाएँगे तथा योग्य, सबल और बुद्धिमानों के लिए स्थान रिक्त हो जाएगा। यह सब बिना मार-काट किए हो जाएगा।"

"आज भूमण्डल की कोई सरकार ऐसा नहीं कर सकेगी।" डॉक्टर तिन की भविष्यवाणी थी।

"कर तो सकती है। हमने एक सीमा तक किया है, परन्तु अन्य राज्य यह करना नहीं चाहते। कारण यह कि ऐसा करने से उसके अपने अधिकार क्षीण होते हैं। कोई राज्य राज्याधिकार कम करना नहीं चाहता।"

"तब प्रकृति का दण्ड चलेगा। प्रकृति का ताण्डव चलेगा और दो अरब मानवों के रक्त से इस पृथ्वी की भूमि में खाद मिलेगी। इससे भावी सृष्टि निर्माण करने वालों को सहायता मिलेगी।"

डॉक्टर तिन भौंचक्का हो मुख ताकता रह गया। वह एक समय स्वयं इसी विचार का था। उसके जन्म-स्थान में वहाँ की सरकार ने ऐसा ही करने का यत्न भी किया था, परन्तु कुछ लाख की हत्या करके सरकार ऊब गई थी और पुनः सृष्टि में वृद्धि होने लगी थी। उसे एक बात स्मरण आ गई। उसने कहा, "राष्ट्रसंघ ने इस बात की जाँच करवाई थी कि सन्तान निरोध के विश्व-व्यापी आयोजन के होने पर भी जनसंख्या कम क्यों नहीं हुई। उस जाँच का परिणाम यह हुआ है कि जहाँ बुद्धिशील स्त्रियाँ सन्तान निरोध कर रही हैं, वहाँ प्रकृति उनके द्वारा जो इस योजना में भाग नहीं ले रहीं अथवा जो भूल से गर्भधारण करती हैं, एक से अधिक सन्तान उत्पन्न करने लगी है। आँकड़ों से यह सिद्ध हुआ है कि एक वर्ष में दस के लगभग स्त्रियाँ हैं जिन्होंने एक ही प्रसव में सात से अधिक बच्चे उत्पन्न किए हैं। कई सहस्र ऐसी हैं जिन्होंने तीन से पाँच तक बच्चे एक ही प्रसव से उत्पन्न किए हैं। प्रसव करने वाली स्त्रियों में बीस प्रतिशत हैं जिन्होंने दो बच्चे उत्पन्न किए हैं। ऐसे बच्चे उत्पन्न करने वालों की संख्या चीन, ब्राजील और दक्षिणी अमेरिका के कुछ देशों में सर्वाधिक है।

"अब संयुक्त राष्ट्रसंघ यह प्रचार करने लगा है कि जिसके एक से अधिक बच्चे हों उसके एक स्वस्थ, सबल बच्चे को छोड़कर अन्य सबको विद्युत् से समाप्त कर दिया जाए।"

चतुर्वेदी ने वार्त्तालाप का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "यह तो वही बात

होगी जो मैं कह रहा हूँ। परन्तु जहाँ मेरा उपाय न्यायोचित है वहाँ आप वाला उपाय सबको एक ही भट्टी में झोंकने वाला है। इसीलिए यह मूर्खतापूर्ण है। मेरे उपाय से तो केवल दुर्बल, अयोग्य, बुद्धिविहीन मरेंगे और संयुक्त राष्ट्रसंघ की योजना में परीक्षा से पहले ही मारने का उपाय है।

"डॉक्टर साहब! आप लोग तो मूर्खता-पर-मूर्खता कर रहे हैं। पहले आपने सन्तान निरोध के उपाय का प्रयोग किया। जब सन्तान निरोध के उपाय प्रभावी न हो सके तो आपने गर्भपात की स्वीकृति दे दी। इससे भी जब कुछ नहीं बना तो आप अब उत्पन्न हुओं की हत्या पर आ गए हैं। इससे भी जब आप प्रकृति के प्रवाह को रोक नहीं सकेंगे तो फिर बूढ़ों की हत्या की व्यवस्था देंगे और बाद में युवकों की भी हत्या करने पर तैयार हो जाएँगे।"

"आप यह स्वीकार क्यों नहीं करते कि समाजवाद को वापस ले लिया जाए?" कैलाशनाथ ने सुझाव दे दिया।

डॉक्टर तिन ने कहा, "आप बुद्धिमान लोग पहले अपनी सरकार को यह सम्मति दें। फिर संयुक्त राष्ट्रसंघ इस पर विचार कर लेगा।"

डॉक्टर कैलाशनाथ ने कहा, "हमने सम्मति दी है, परन्तु हमारी सरकार ने इसे उस सीमा तक माना है जिस सीमा तक वह स्वयं प्रबन्ध करने में असमर्थ हुई।

"देखिए, आर्थिक विषयों में हम बहुत सीमा तक समाजवाद से मुक्त हो गए हैं। आज से बीस वर्ष पूर्व हमारी सरकार ने यह निर्णय लिया था कि सरकारी बड़े-बड़े कारखानों के स्थान पर छोटे-छोटे कारखाने लगाए जाएँ। तदनन्तर यह निश्चय हुआ कि वह छोटे-छोटे कारखाने निजी क्षेत्र को दे दिए जाएँ। फिर यह निश्चय किया गया कि शेष बड़े कारखानों में भी निजी लोगों को रुपया लगाने की स्वीकृति दी जाए। अब सरकार यह विचार कर रही है कि आधी पूँजी सरकार की हो, परन्तु नियन्त्रण जनता का हो। यह देखा गया है कि यदि पूँजी लगाने वाले का नियन्त्रण न हो तो उत्पादन पर्याप्त नहीं हो सकता और महँगा भी होता है। सरकार की पूँजी सरकारी अधिकारी की नहीं होती।

"उदाहरण के रूप में हमारे गृह-निर्माण विभाग की एक योजना है कि अन्तरिक्ष में एक होटल चालू किया जाए। यदि यह सफल हुआ तो अन्तरिक्ष में नगर भी बसाए जा सकेंगे। सरकार ने योजना तैयार कराई और फिर जनता को हिस्से लेने का निमन्त्रण दिया है।

"जनता ने आवश्यकता से अधिक हिस्सों के लिए याचिकाएँ दी हैं। अब सरकार की स्वीकृति से जानकी देवी ने एक अन्तरिक्ष गृह-निर्माण निगम लिमिटेड का संगठन करना आरम्भ कर दिया है।"

"जानकी देवी कौन हैं?"

"हमारे देश की एक प्रतिभाशाली महिला है। वह योग्यता से इंजीनियर है

और अद्वितीय व्यापारिक बुद्धि रखती है। एक बार सरकार ने उसे नौकर रखने का यत्न किया था, परन्तु उसने इन्कार कर दिया। अब सरकार इसको रुपया देती है और जब यह कोई योजना तैयार कर लेती है तो सरकार उस योजना को या तो स्वयं प्रयोग में लाती है अथवा वह उसे पूँजी लगाने वालों के पास बेच देती है। जानकी देवी इसे भी पसन्द नहीं करती, परन्तु उसकी योजनाएँ इतनी युक्तियुक्त एवं आकर्षक होती हैं कि सरकार विवश हो जाती है और फिर उसकी सम्मति से काम करती है।''

''तो समाजवाद का क्या हुआ ?''

''यह केवल उन लोगों पर कार्य कर रहा है जो भोक्ता श्रेणी में हैं। भोक्ताओं को समाज संरक्षण प्रदान करता है। कर्मचारियों को भी सरकार का संरक्षण प्राप्त है। इन दोनों श्रेणियों में अधिकांश प्रजा आ जाती है। परन्तु जो प्रबन्धक और उद्योग-धन्धों में संचालनकर्त्ता हैं, वे संख्या में कम हैं। किन्तु इनके बिना सरकार चल नहीं सकती। ये समाज के विचारशील अंग हैं।''

: ७ :

इस बार डॉक्टर तिन भारत की राजनीतिक गतिविधियों पर भी विचार-विमर्श करने आया था। अतः वह प्रधानमन्त्री और मन्त्रिमण्डल के चार अन्य प्रमुख मन्त्रियों से विचार-विमर्श करने के लिए राष्ट्रपति भवन में जा पहुँचा। उसके पहुँचते ही विचार-विमर्श आरम्भ हो गया।

प्रधानमन्त्री ने पूछा, ''डॉक्टर तिन ! आप क्या कहना चाह रहे हैं ?''

''मैं इस बार कुछ कहने नहीं आया, वरन् मैं कुछ सुनने के लिए आया हूँ।''

''यह तो आपको विदित ही है कि राष्ट्रसंघ के सदस्य दो गुटों में विभक्त हैं। एक समाजवादी गुट और दूसरा पूँजीवादी गुट।''

प्रधानमन्त्री ने कहा, ''विभाजन का यह ढंग गलत है। समाजवाद और पूँजी-वाद दो परस्पर विरोधी पक्ष नहीं। हम समाजवाद का विरोधी गुट पूँजीवाद नहीं वरन् व्यक्तिवाद मानते हैं।

''सभी समाजवादी राज्य स्वयं पूँजीपति हैं और उनमें आज से पचास वर्ष पूर्व के पूँजीपतियों के सब दुर्गुण विद्यमान हैं। वे अपनी प्रजा के परिश्रम को ऐसे ही आत्मसात् करते रहते हैं जैसे कि उस काल के एक उद्योगपति अपने कर्मचारियों के परिश्रम को अपने पास रख लेता था। उस काल के उद्योगपति अपने संचित धन से अपने उद्योगों का जाल बिछाता जाता था और मुकाबले में आने वाले उद्योगपतियों की पीठ में छुरा घोंप देता था अथवा उसके पाँव घसीट लेता था। वर्तमान समाज-वादी देश यही कर रहे हैं। वे अन्य देशों और राज्यों को आर्थिक दृष्टि से हीन करने में लगे हुए हैं। ठीक वैसे ही जैसे कि एक उद्योगपति दूसरे उद्योगपति से किया करता था। इस संघर्ष में दुर्बल वर्ग पिस जाते हैं और मजदूर वर्ग को कुछ लाभ

नहीं होता। वस्तुओं की कीमत भी बढ़ रही है।

"अतः हमने पूँजीवाद को वर्जित मान लिया है।"

"यह कैसे ?"

"हम किसी भी व्यक्ति को एक लाख रुपये से अधिक पूंजी का न तो कोई व्यवसाय करने देते हैं और न ही कोई उद्योग चलाने देते हैं। इससे बड़े व्यवसाय अथवा उद्योग या तो सहकारी समितियाँ करती हैं अथवा लिमिटेड कम्पनियाँ करती हैं। सरकार उनमें इक्यावन प्रतिशत अपने हिस्से रखती है। शेष उद्योग-पतियों को दे देती है।

"सरकार अपनी शक्ति का प्रयोग कम्पनी को मर्यादा में रखने के लिए अथवा दूसरों से प्रतिस्पर्धा करते हुए अपनी अथवा दूसरों की हानि करने से रोकने में करती है।"

राष्ट्रसंघ के महासचिव के लिए यह विचित्र समस्या थी। वह यह नहीं समझ सका कि इस अर्थव्यवस्था में वह भारत को किस श्रेणी में रखे ?

प्रधानमंत्री ने फिर कहा, "इस प्रकार की सरकारी आय का हम लोक-कल्याण के कार्यों में प्रयोग करते हैं। हम निःशुल्क चिकित्सालय, शिक्षणालय, अपाहिज-गृह, विश्राम-गृह, मनोरंजन-गृह इत्यादि चलाते हैं जो सब लोगों के प्रयोग में आते हैं।"

"इसे आप समाजवाद समझते हैं ?"

"नहीं, कल्याणवाद। हमने उत्पादन करना व्यवसायपतियों तथा उद्योग-पतियों का कर्तव्य बना दिया है। उनचास प्रतिशत लाभ तो हम उनको उनके अपने कार्य में प्रोत्साहन के लिए दे देते हैं और इक्यावन प्रतिशत से हम लोक-कल्याण के कार्य चलाते हैं।

"परन्तु डॉक्टर तिन ! यहाँ एक जानकी देवी है। वह अपने भाग के लाभ से अधिक लोक-कल्याण का कार्य कर रही है।"

डॉक्टर तिन के कान खड़े हो गए। वह एक अन्य स्थान पर भी जानकी देवी की व्यावसायिक प्रतिभा की बात सुनकर आया था। उसने इस स्त्री के विषय में और अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए पूछा, "यह महिला बहुत धनी है क्या ?"

"इस विषय में हम कुछ नहीं जानते। हम यह जानते हैं कि इस स्त्री का पति एक बहुत बड़ा शिक्षणालय खोले हुए है। उसमें सैकड़ों व्यक्तियों को विज्ञान, तक-नीकी और व्यवसाय के विषयों पर शिक्षा दी जाती है। शिक्षा निःशुल्क होती है और अपने देश के विचार से श्रेष्ठतम होती है। इस शिक्षणालय में शिक्षित स्नातकों की देश-भर में चर्चा है और वहाँ से शिक्षा प्राप्त कोई भी व्यक्ति बेकार नहीं देखा गया।"

"कितने स्नातक प्रति-वर्ष निकलते हैं इस शिक्षणालय से ?"

"जितने इसमें भर्ती होते हैं। भरती होने के समय बहुत ही कठोर प्रवेश परीक्षा ली जाती है। विद्यार्थियों के प्रवेश के लिए भाषा और प्रारम्भिक ज्ञान-विज्ञान की परीक्षा होती है। उसके साथ विद्यार्थी की मानसिक और बौद्धिक गुणों की भी परीक्षा की जाती है।

"इसके अतिरिक्त यह स्त्री दस-बारह व्यवसाय चला रही है और उन व्यवसायों से सरकार को अपने भाग की पूँजी पर सत्तर-अस्सी करोड़ रुपये लाभ का मिल रहा है और लगभग इतना ही लाभ अन्य भागीदारों का होता है। उस पर सोलह करोड़ के लगभग आय-कर मिलता है।

"यह स्त्री विवाहिता है ?"

"हाँ। इसके पति चिकित्सक एवं मस्तिष्क-रोग विशेषज्ञ भी हैं।"

"उनकी कोई सन्तान भी है ?"

"हाँ। दो सन्तान हैं। अभी दोनों पढ़ते हैं। दोनों लड़के हैं।"

"वे कहाँ रहती हैं ? मैं ऐसी विदुषी से मिलना चाहूँगा।"

"उसका पता आप किसी भी सरकारी कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।"

"आप इस स्त्री को सरकारी कर्मचारी क्यों नहीं बना लेते ?"

"जब वह स्वतन्त्र रहती हुई सरकार को इतना लाभ पहुँचा रही है तो उसे सरकारी नौकर रखने से और अधिक क्या लाभ हो सकेगा ?

"आजकल वह एक अन्तरिक्ष-निवास-गृह का निर्माण कर रही है। उस निवास-गृह पर एक अरब रुपया लागत आएगी। उसमें भी सरकार इक्यावन प्रतिशत की भागीदार है।"

"अन्तरिक्ष गृह-निर्माण की सूचना तो हमारे कार्यालय को भी है, किन्तु आपने संयुक्त राष्ट्रसंघ से इसकी स्वीकृति प्राप्त नहीं की, वह स्वीकृति लेना आवश्यक है।"

"क्यों ?"

"यह एक प्रकार से राजनीतिक कार्य है। आपका देश अपनी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है।"

"हम किसी अन्य देश की सीमाओं का अतिक्रमण नहीं कर रहे।"

"परन्तु कोई अन्य राज्य इस पर आपत्ति कर सकता है और वह उस गृह को राकेट छोड़कर विनष्ट भी कर सकता है।"

"इस प्रश्न पर हमने विचार-विनिमय किया है। यह उसकी अनधिकार चेष्टा होगी और हम इसका बदला लेने के लिए स्वतन्त्र होंगे।"

"क्या बदला लेंगे आप ?"

"उस राज्य के किसी बड़े नगर, सम्भवतः राजधानी का अस्तित्व ही समाप्त

कर देंगे ।"

"आपकी इतनी सामर्थ्य है ?"

"हाँ । हम दिल्ली से भूमण्डल की किसी भी राजधानी पर राकेट छोड़ सकते हैं और एक राकेट तीन-चार करोड़ की जनसंख्या वाले नगर को भस्म कर देने की सामर्थ्य रखता है ।"

"परन्तु महात्मा गांधी के देश में रहने वाले ऐसा क्यों करेंगे ?"

"हमने महात्मा गांधी की धारणाओं और कार्य-शैली में संशोधन कर दिया है ।"

"क्या संशोधन कर दिया है ?"

"भूख-हड़ताल और अन्य प्रकार के सत्याग्रह वर्जित कर दिए हैं । ऐसा करने की घोषणा करने वाले को हम तुरन्त बन्दी बना लेते हैं । घोषणा के बिना इस प्रकार के कृत्य करने वालों को गोली से उड़ा दिया जाता है । हम किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं करते और हमारी सीमाओं पर राडार लगे हैं जो विदेशियों की गतिविधियों का निरीक्षण करते रहते हैं । यहाँ राजधानी में बैठे हुए हम अपने देश की सीमाओं पर हो रहे कार्यों का चित्र देखते रहते हैं और यहाँ बैठे ही हम विरोधी कार्यों का उत्तर देने की क्षमता रखते हैं । एक बार पाकिस्तान ने रात के समय छापामारों को इधर भेजने का यत्न किया था । कश्मीर की पहाड़ियों में से एक-एक, दो-दो करके लोग आने लगे तो हमें पता चल गया । अगले ही क्षण वे लोग अस्तित्व-हीन हो गए थे । तब से पाकिस्तान ने यह हरकत नहीं की । एक बार पीकिंग से कलकत्ता पर एक राकेट छोड़ा गया था । राकेट के छूटने और उसके विनष्ट होने में कुछ सैकिण्ड ही लगे थे ।

"हमने गांधीजी की शान्ति की नीति के स्थान पर यथा-योग्य नीति को ग्रहण कर लिया है ।"

"परन्तु आपने चीन अथवा पाकिस्तान के इन कार्यों की सूचना संयुक्त राष्ट्र-संघ को नहीं दी ?"

"याचिकाएँ वे लोग करते हैं जो दीन और दुखी हों । एक समय था जब भारत ने यह नीति अपनायी थी, परन्तु राष्ट्रसंघ ने हमारी याचिकाओं को रद्दी की टोकरी में फेंकना अपना परम कर्तव्य मान रखा था । उस समय हमारे विद्वान् इस अव-हेलना के कई कारण बताया करते थे । परन्तु हमारे देश के एक विद्वान् ने इसका एक दूसरा कारण बताया था । उसकी बात को मानकर भारत ने अपनी सुरक्षा और आक्रमण की सामर्थ्य को अन्य देशों से अधिक कर रखा है और हम यत्न कर रहे हैं कि कभी मूर्ख संसार सम्मिलित रूपेण भी हमपर एकाएक आक्रमण करे तो हम उन सबको पछाड़ सकें ।"

"आप तो बहुत भयंकर जीव हैं । देखिए, रूस ने अपनी पूर्ण शक्ति शस्त्रास्त्र

निर्माण पर लगा दी तो अमेरिका ने सदा उससे अधिक शक्ति बनाए रखी। आखिर दोनों देश थक गए और उन्होंने धीरे-धीरे शान्ति-पथ को स्वीकार कर लिया।"

"परन्तु हम तो पहले ही शान्ति-पथ के अनुगामी हैं। जबसे भारत में भारतीयों का राज्य हुआ है, हमने किसी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया। पहले हम दुर्बल थे और हमारे पड़ोसी पाकिस्तानी और चीनी हमें कष्ट देने लगे थे। हम संयुक्त राष्ट्रसंघ, रूस, अमेरिका और ब्रिटेन के सामने गिड़गिड़ाते रहे। जब किसीने हमारी नहीं सुनी तो हमने निश्चय कर लिया कि हम सर्वाधिक शक्ति के स्वामी बनेंगे।

"हमने अन्य सब उन्नत देशों से आगे निकल जाने में सबसे पहले जनता को बुद्धि की स्वतन्त्रता दी। साथ ही स्वतन्त्रता के बाधक बाहरी और भीतरी दोनों प्रकार के बन्धन विनष्ट कर दिए।

"बाहरी बन्धन विनष्ट करने अति सुगम थे, परन्तु मनुष्य के भीतरी बन्धन तोड़ने अति कठिन थे। उन्हें तोड़ने में हमें दस वर्ष लगे। ज्यों ही जनता इन बन्धनों से मुक्त हुई, हमारी जनता उन्नति की ओर बढ़ती गई, हम बहुत ऊँचाई पर पहुँच जाने पर भी अभी सर्वोच्च शिखर पर नहीं पहुँचे। उसके लिए हम यत्नशील हैं।"

डॉक्टर तिन इस सब कथन को सुन स्तब्ध रह गया। आखिर उसने पूछा, "अब आप क्या करना चाहते हैं?"

"हमारा किसीसे झगड़ा नहीं और हम किसीका अपने साथ झगड़ा सहन नहीं कर सकते।"

भेंट समाप्त करने के लिए डॉक्टर तिन ने कहा, "मैं आज के वार्तालाप पर एक वक्तव्य तैयार करूँगा और यदि उस पर कुछ सन्देह रह गया तो पुनः आपसे मिलने और सन्देह निवारण करने का यत्न करूँगा।"

इस प्रकार मन्त्रिमण्डल की समिति ने यह भेंट समाप्त कर दी। डॉक्टर तिन विदा हुआ तो इस समिति के सदस्यों ने अपनी-अपनी कमीज की जेब से एक-एक माचिस की डिबिया के आकार-विस्तार के यन्त्र निकाले और उनको एक क्लर्क को देकर कहा, "इनके रिकार्ड को लिपि-बद्ध कर लो और आधे घण्टे बाद होने वाली मन्त्रिमण्डल की बैठक में उपस्थित कर दो।"

ये टेपरिकार्डर और टेलीविजन सैट थे। इनमें पूर्ण वार्त्तालाप और डॉक्टर तिन के प्रत्येक हाव-भाव अंकित हो गए थे।

आधे घण्टे में मन्त्रिमण्डल की बैठक हुई और उसमें सूचना विभाग के मन्त्री ने यह सूचना दी, "डॉक्टर तिन युत सेन जानकी देवी और प्रमिला देवी से मिला है और उनको डॉक्टर ने किसी विदेश की सेवा स्वीकार करने का प्रस्ताव किया है। यह सूचना है कि दोनों स्त्रियों ने इसे अस्वीकार कर दिया है।

"इसके उपरान्त डॉक्टर तिन वहाँ से चलकर यमुना तट पर एक सामान्य मकान में गए हैं और अब वहीं पर हैं। मकान के भीतर की बात तो हम जानते

नहीं, परन्तु उस मकान को मैंने अपने जासूसों की देख-रेख में कर दिया है। यह मकान आचार्य विश्वेश्वर का शिक्षणालय है।''

इस पर विचार हुआ कि इस व्यक्ति को आधे घण्टे के भीतर भारत छोड़ देने की आज्ञा दे दी जाए और भारत के प्रतिनिधि को आदेश दिया जाए कि वह राष्ट्र-संघ के महासचिव को इसका कारण समझा दे।

: ८ :

डॉक्टर तिन यमुना बाजार में एक सामान्य पाँच तल के मकान के सामने अपनी मोटर गाड़ी से उतरा और मकान को बाहर से देख तथा पहचान भीतर चला गया। एक व्यक्ति जो तिलक-छाप लगाए, धोती बाँधे हाथ में एक प्लास्टिक की थाली में फूल लिये भीतर से बाहर को आ रहा था, उसका मार्ग रोक पूछने लगा, ''किससे मिलने आए हैं ?''

''आचार्य विश्वेश्वरजी से।''

''भीतर बैठे हैं। चले जाइए।''

उस व्यक्ति ने डॉक्टर का मार्ग छोड़ दिया। डॉक्टर आगे चलता गया। एक गली-सी थी जिसके दोनों ओर कमरे थे। डॉक्टर उस गली में जा रहा था। गली एक बड़े-से कमरे में खुली और उसमें एक अधेड़ आयु का व्यक्ति कुर्ता, पायजामा पहने सामने भूमि पर बैठा था। उसके सामने एक थाली में फूल, धूप और चन्दन पड़ा था। डॉक्टर तिन हाथ जोड़ प्रणाम कर सामने खड़ा हो गया।

आचार्य ने कहा, ''आप तिन युत सेन हैं ?''

''हाँ, महाराज !''

''ठीक है। बैठो।''

डॉक्टर बैठा तो आचार्य ने पूछा, ''कैसे आए हैं ?''

''मैं आजकल संयुक्त राष्ट्रसंघ की सेवा में हूँ।''

''यह मैं जानता हूँ। यहाँ किस प्रयोजन से आए हैं ?''

''अपनी सरकार इस बात को जानने के लिए उत्सुक है कि आपने समाचार भेजने क्यों बन्द कर दिए हैं ?''

''मैंने तुम्हारी सरकार को समाचार कब भेजा है ?''

''हमारी सरकार को तो नहीं भेजा। परन्तु राष्ट्रसंघ को तो भेजते थे। पिछले वर्ष महासचिव ने आपके पास एक प्रश्न-पत्र भेजा था। उसका उत्तर नहीं आया।''

''उत्तर इस कारण नहीं भेजा कि राष्ट्रसंघ कार्यालय में कोई तुम्हारे देश का भेदिया रहता है जो वहाँ के समाचार चुराता रहता है।''

''चुराता है कहना ठीक नहीं। वहाँ कुछ भी चोरी करने को नहीं है।''

''देखो डॉक्टर ! जब मैं पीकिंग में था तो वहाँ मेरे मन में यह बात बैठा दी गई थी कि भारत चोरी, ठगी, दुराचारी और सब प्रकार के अपराधों से भरा हुआ

है और बाहर के देश इस पतित देश के उद्धार का यत्न कर रहे हैं। मैं वहाँ अन्तर्-राष्ट्रीय जासूसी-कर्म पर लगा था और जब चीनी महासचिव नियुक्त हुआ तो मुझे भारत पर जासूसी करने भेज दिया गया।

"मैं यहाँ सुधार की योजनाएँ बनाता हुआ आया था। दो वर्ष तक मैं यहाँ का समाचार संयुक्त राष्ट्रसंघ को भेजता रहा, परन्तु दो वर्ष के जासूसी कार्य में यहाँ की कुछ बातों का ऐसा ज्ञान हुआ है कि मुझे यहाँ पर जासूसी करना पाप और परिश्रम का अपव्यय प्रतीत होने लगा है।

"दो वर्ष से मैंने न तो अपना वेतन ही माँगा है और न किसी प्रकार का समाचार ही भेजा।"

"क्या पता लगा है आपको?"

"यही कि यहाँ कुछ-एक सैनिक-कार्यों के अतिरिक्त किसी बात को छुपाकर नहीं रखा जाता। साथ ही यहाँ प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्रता से जीविकोपार्जन करने की स्वीकृति और सुविधा है।

"अतः मैंने भी यहाँ स्वतन्त्रता से जीविकोपार्जन का उपाय किया है और मैं मजे से निर्वाह कर रहा हूँ।"

"क्या व्यवसाय कर रहे हो?"

"मैंने भाषाएँ सिखाने का एक स्कूल खोल रखा है।"

"आप कौन-कौन-सी भाषाएँ सिखाते हैं?"

"चीनी, रूसी, जापानी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, लेटिन, ग्रीक और संस्कृत।"

"कितने विद्यार्थी सीखने आते हैं?"

"सबसे अधिक संस्कृत और रूसी भाषा के विद्यार्थी हैं। इनसे कम चीनी सीखने आ रहे हैं।"

"आप अकेले ही पढ़ाते हैं?"

"मैं सात श्रेणियाँ चला रहा हूँ। प्रत्येक श्रेणी में दस विद्यार्थी लेता हूँ। बीस रुपये प्रति विद्यार्थी शुल्क लेता हूँ।"

"परन्तु यह तो उससे एक-तिहाई से भी कम है जो तुमको राष्ट्रसंघ से मिलता था।"

"हाँ। उतनी बचत मैंने अपने जीवन को सादा और सरल बनाकर कर ली है।

"यहाँ इतना प्रतिमास एक सामान्य इंजीनियर का वेतन है। यहाँ मकान सरकारी हैं। वह मुझे तब ही मिल गया था जब मैं राष्ट्रसंघ की सेवा में था। शेष रह गया वस्त्र, भोजन और आने-जाने के लिए गाड़ी-भाड़ा। इतनी आय में से यह मुझे सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं।

"भाषा की श्रेणियाँ मैं नित्य नहीं पढ़ाता। एक दिन छोड़कर एक श्रेणी पढ़ाता

हूँ। इस प्रकार सप्ताह में तीन बार एक श्रेणी पढ़ानी होती है। प्रत्येक श्रेणी को दो घण्टे-भर पढ़ाता हूँ। इस प्रकार छः घण्टे नित्य और एक दिन आठ घण्टे काम करना पड़ता है।

"शेष समय मैं लोक-सेवा-कार्य में व्यय कर रहा हूँ।"

"क्या लोक-सेवा-कार्य कर रहे हैं?"

"मैं यहाँ एक मन्दिर में पुजारी का काम करता हूँ। एक घण्टा प्रातः और एक घण्टा सायंकाल कार्य करना होता है।"

"मन्दिर में कार्य होता है?"

"यहाँ की जनता को नैतिकता, जिसे लोग यहाँ धर्म कहते हैं, उसकी शिक्षा देता हूँ।"

"ओह! मैंने समझा था कि महात्मा बुद्ध, महावीर अथवा ईसा की पूजा कराते हैं।"

"नहीं। मेरा मन्दिर मूर्ति-रहित है। वहाँ मैं मनुष्य-शरीर की क्रिया का ज्ञान कराता हूँ। इसके साथ मन, बुद्धि और प्राण के कार्य का भी ज्ञान दिया जाता है। पूर्ण धर्म इन्हीं में आ जाता है। तदनन्तर संसार में इसके प्रयोग का ढंग बताता हूँ।"

"और इसमें से कितनी आय होती है?"

"यह पुष्प-माला।" आचार्य ने गले में पड़ी पुष्प-माला की ओर संकेत कर दिया।

"और यह जो प्लेट में आपके सामने रखा है?"

"यह मेरी पत्नी ने तैयार किया है। मन्दिर में मेरा प्रवचन सुनने जो आते हैं, उनको मैं इस चन्दन से तिलक देता हूँ। उनको फूल प्रसाद के रूप में देता हूँ।"

"तो आपने विवाह कर लिया है?"

"हाँ। वह भी वेद विद्यालय में दिन में दो घण्टे पढ़ाने जाती है।"

"वह वहाँ से वेतन पाती है?"

"वह विद्यालय सहकारी योजना से चल रहा है और उसकी आय सब शिक्षक और कर्मचारी अपने-अपने कार्य के अनुरूप बाँट लेते हैं।"

"उसे कितना मिल जाता है?"

"उसने मुझे कभी कुछ दिया नहीं। इस कारण मैं जानता नहीं। मुझे इतना ज्ञात है कि वह मुझसे अच्छा खाती है, अच्छा पहनती है और उसको मुझसे अच्छा मकान मिला है।"

"और कोई सन्तान भी है?"

"हाँ। विवाह हुए चार वर्ष हुए हैं और दो वर्ष की एक कन्या है।"

"मैं इस सबकी आशा नहीं करता था। जब पिछले दो वर्ष में आपकी कोई रिपोर्ट नहीं आई और वेतन का बिल भी नहीं आया तो मुझे पता करने भेजा गया

है कि आप जीवित भी हैं अथवा नहीं। आप पहले 'डिप्लोमैटिक इनक्लेव' में रहते थे। मैं वहाँ गया तो पता चला कि आप यहाँ इस प्रकार के मकान में रहते हैं। अतः ढूँढ़ता हुआ यहाँ आ गया हूँ।"

"तो देख लिया है कि मैं क्या करता हूँ?"

"हाँ। और......।" वह कुछ कहने ही वाला था कि एक स्त्री कुर्ता और चुस्त पायजामा पहने हुए, सिर से नंगी, हाथ में एक बैग लिये हुए कमरे में आयी। वह आते ही बोली, "मैं विद्यालय जा रही हूँ।"

"अच्छा, कुछ और काम है?"

"यदि आप मध्याह्न एक बजे कॉलेज के बाहर आ जाते तो मैं आपको अपने साथ ले चलती।"

"कहाँ?"

उस स्त्री ने प्रश्न-भरी दृष्टि में डॉक्टर की ओर देखा। इसपर आचार्य ने कहा, "यह मित्र हैं।"

"मैं।" स्त्री ने झिझकते हुए बता दिया, "कन्याकुमारी जाना चाहती हूँ और आपको साथ ले जाने का विचार है। कल मंगल का दिन है और आपको अवकाश होगा। आज चार बजे यहाँ से चलेंगे। सायं साढ़े-छः बजे पहुँच जाएँगे।"

"ठीक है। मैं पहुँच जाऊँगा।"

स्त्री ने हाथ जोड़ प्रणाम कर विदा माँगी। जब वह चली गई तो आचार्य ने स्वतः ही बता दिया, "यह मेरी धर्म-पत्नी कमला है। यहाँ की एक विख्यात वैज्ञानिक की छोटी बहन।"

कमला गई ही थी कि बाहर से घण्टी की ध्वनि सुनाई दी। आचार्य ने कहा, "कोई ऐसा व्यक्ति आया है, जो यहाँ के नियमों से अपरिचित है। वह बाहर से घण्टी बजा रहा है।"

आचार्य ने समीप रखे एक टेलीफोन का चोंगा उठाया। टेलीफोन पर लगा एक बटन दबा कह दिया, "आ जाओ।"

इस समय बाहर 'कौरीडोर' में चार-पाँच व्यक्तियों का पदचाप सुनाई दिया। दोनों उधर को देखने लगे। पाँच पुलिस के अधिकारी थे। उनके बड़े कमरे में आने पर आचार्य ने पूछा, "क्या काम है?"

पुलिस अधिकारी ने डॉक्टर की ओर अँगुली कर कह दिया, "इनके वारण्ट हैं।"

डॉक्टर तिन विस्मय में पुलिस अधिकारी का मुख देखने लगा। पुलिस अधिकारी ने कहा, "आप चले आइए, अन्यथा मुझे बल-प्रयोग करना पड़ेगा।"

डॉक्टर उठ खड़ा हुआ और आचार्य की ओर देखकर बोला, "इस विषय में आप मेरी कुछ सहायता करेंगे?"

"इस समय तो आप जाइए। मैं आपके विषय में पूर्ण आरोप जानकर आपको छुड़ाने का यत्न करूँगा।"

पुलिस अधिकारी ने और अधिक बात नहीं होने दी। उसने डॉक्टर की बाँह पकड़कर कहा, "चलिए।"

: ६ :

आचार्य विश्वेश्वर का जन्म भारत में ही हुआ था। वह नन्दिनी फ्रांसिस नाम की कुल्लू की एक सुन्दर ईसाई लड़की का एक अंग्रेज पादरी द्वारा उत्पन्न पुत्र था। अविवाहित संयोग से बालक हो गया था। लड़की ने तो पादरी को पति के रूप में वरा था, परन्तु पादरी ने उससे मनोरंजन ही किया था। इस कारण बच्चे के जन्म पर जब बच्चे की माँ ने विवाह का आग्रह किया तो पादरी ने अपनी वहाँ से बदली करा ली और अलमोड़ा की पहाड़ियों में कार्य करने चला गया। लड़की, जो अब माँ बन चुकी थी, अपने माता-पिता के घर में ही रह गई। माता-पिता ईसाई थे और लड़की को किसी अन्य से विवाह के लिए कहने लगे। लड़की ने इन्कार कर दिया और वह लोक-दृष्टि में अविवाहित माँ बनी रह गई।

लड़की को अपने मनोनीत पति के व्यवहार से दुःख और विस्मय हुआ। इन दो भावनाओं के परिणामस्वरूप उसने ईसाई समाज का निरीक्षण किया और उस निरीक्षण का परिणाम उस समाज से अरुचि में प्रकट हुआ तो एक से अरुचि किसी अन्य से रुचि में परिणत हो गई। वह कुल्लू में एक स्कूल मास्टर के सम्पर्क में आई जो उसमें रुचि लेने लगा। उसने नन्दिनी से विवाह का प्रस्ताव किया तो नन्दिनी ने अपने मन की भावना बता दी। उसने कहा, "मैं अपने पुत्र के मन में इस बात के सन्देह उत्पन्न होने का अवसर नहीं देना चाहती कि वह अनियमित संयोग का परिणाम है। इससे उसके मन में अपनी माँ के लिए आदर और भक्ति नहीं रह पावेगी।"

मास्टर ने उस भावना का आदर करते हुए उसे अपनी पत्नी बनाने की अपेक्षा बहन बनाना उपयुक्त समझा।

विश्वेश्वर इस मास्टर की देख-रेख में पला। शिक्षा प्राप्त कर लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रतिभाशाली स्नातक बन उत्तीर्ण हुआ।

इस समय तक मास्टर के सद्व्यवहार और सहयोग से प्रभावित नन्दिनी पुनः हिन्दू-धर्म को समझ उसका पालन करने लगी थी। उसके नाम से फ्रांसिस का प्रत्यय मिटकर मास्टर का गोत्र लग गया था। वह नन्दिनी गर्ग हो चुकी थी। विश्वेश्वर को भाषाओं के ज्ञान में अत्यधिक रुचि थी। इस कारण उसने भिन्न-भिन्न भाषाओं का तुलनात्मक ज्ञान और फिर उनके प्रयोग का अभ्यास प्राप्त किया।

अकस्मात् नन्दिनी का देहान्त हुआ तो विश्वेश्वर गर्ग अपने भाषा-ज्ञान के कारण एक अमेरिकन पर्यटक के साथ हांगकांग जा पहुँचा। वहाँ उसका सम्पर्क

राष्ट्रसंघ के एक कर्मचारी से हुआ तो वह भी विश्वेश्वर के भाषाओं के ज्ञान पर मुग्ध होकर उसे राष्ट्रसंघ के गुप्तचर-विभाग में ले गया।

गुप्तचर-विभाग में विश्वेश्वर का प्रयोग भिन्न-भिन्न देशों की आभ्यन्तरिक गतिविधियों के जानने के लिए किया गया। उस समय राष्ट्रसंघ का महासचिव नारवे का एक राजनयिक था। राष्ट्रसंघ की सेवा में आए विश्वेश्वर को चार-पाँच वर्ष हुए थे कि राष्ट्रसंघ के महासचिव पद पर एक चीनी नियुक्त हो गया। उसने इसे भारत भेज दिया और वह डॉक्टर तिन के द्वारा भारत की सूचनाएँ पीकिंग भेजने लगा।

भारत में विश्वेश्वर भाषाओं के शिक्षक के रूप में कार्य करने लगा। इसी कार्य के द्वारा उसका सम्बन्ध डॉक्टर प्रमिला की बहन कमला से बना तो दोनों में दैवी कारणों से सम्बन्ध घनिष्ठ होने लगा। एक सीमा तक तो सम्बन्ध चलते गए। लोक भाषा में उन सम्बन्धों को मित्रता का नाम दिया जाता है, परन्तु जब सम्बन्ध सीमा पार करने लगे तो कमला ने कह दिया, "आचार्यवर! विवाह कर लो, अन्यथा मैं आपसे मिलना बन्द कर दूँगी।"

"मैं तो अपने जीवन में कई स्त्रियों से सम्बन्ध बना चुका हूँ।"

"जैसे मेरे साथ बनाने लगे थे, सबसे इस प्रकार सम्बन्ध बनाते रहे हैं?"

"दूसरी लड़कियों से सम्बन्ध बनाने में इतनी देर नहीं लगी।"

"अर्थात् आप पक्के आचारहीन व्यक्ति हैं?"

"तो आचारयुक्त कैसे हो सकता था?"

"हमारे समाज में यौन-सम्बन्ध विवाहित पति से ही होता है। अन्य प्रकार से हम संसार में अनेक व्यक्तियों के सम्पर्क में आते हैं। उनसे सहयोग, मित्रता अथवा विग्रह और विद्वेष होता रहता है।

"आपको मैं मित्र के भाव से देखने लगी थी, परन्तु अब यह समझ में आने लगा है कि आपके साथ पत्नी रूप में भी रहने की इच्छा हो रही है। इसी कारण आपसे यह चर्चा कर रही हूँ।"

"वैसे तो···मैंने विवाह न करने का निश्चय किया हुआ था, परन्तु अब मैं अपने निश्चय को बदलने में ही कल्याण समझता हूँ।"

"तब ठीक है। परन्तु मैं विवाहित जीवन में यौवन-सम्बन्ध को अति पवित्र मानती हूँ। इससे सन्तान उत्पन्न होती है और इस विषय में हमारा विज्ञान यह बताता है कि माता-पिता की भावनाओं का गर्भस्थ सन्तान पर गम्भीर प्रभाव उत्पन्न होता है। इस कारण इस जीवन में यौन-सम्बन्धों में ढीलापन हम स्वीकार नहीं कर सकते।"

कदाचित् विश्वेश्वर के मन में अपनी माँ नन्दिनी की स्मृति उभर आई थी अथवा यह कमला की युक्ति और आनुवंशिकता की ओर संकेत था कि वह कमला

से वचन-बद्ध हो गया।

दोनों का विवाह हुआ तो कमला अपने माता-पिता का घर छोड़ विश्वेश्वर के पास आकर रहने लगी। एक वर्ष के सहवास का परिणाम यह हुआ कि विश्वेश्वर के मस्तिष्क से विदेशी विचारों की धूल झड़ने लगी।

विश्वेश्वर को पहले तो राष्ट्रसंघ की सेवा नीरस प्रतीत होने लगी और बाद में घृणास्पद लगने लगी। तदनन्तर उसने अपने को गुप्तचर-विभाग से पृथक् कर लिया।

कमला के घर लड़की हुई और उसका पालन-पोषण सरकारी शिशु-गृह में होने लगा। विश्वेश्वर के विचार-परिवर्तन में भारत में हो रहे परिवर्तनों का भारी प्रभाव हुआ था।

कई वर्ष पूर्व की बात है कि एक स्त्री भारत की प्रधानमन्त्री बनी थी। मन से 'मैकाविली' के सिद्धान्तों को मानने वाली, स्वार्थ की धुरी पर राजनीति की गाड़ी चलाते हुए वह भयंकर ठोकर खा गई।

वह आर्थिक सुविधाओं का प्रलोभन देती हुई राज्य चलाने लगी, परन्तु अर्थ का सम्बन्ध स्वेच्छा से किए जाने वाले परिश्रम से रखने के कारण वह पदच्युत कर दी गई। देश के सौभाग्य से उसके उत्तराधिकारी प्रधानमन्त्री और मन्त्रिमण्डल ने अर्थ-व्यवस्था बदल दी। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को महत्त्व मिला। लाभ और भोग का सम्बन्ध स्वतन्त्र एवं बुद्धि-युक्त परिश्रम की धुरी पर निर्माण होने लगा। सरकार का कार्य केवल धर्म और न्याय-व्यवस्था के साथ रख दिया गया। इन दोनों की स्थापना के लिए राज्य-नियन्त्रण और राज्य का सहयोग होने लगा।

राज्य के बढ़ रहे खर्चे के लिए सरकार ने पूँजी लगानी आरम्भ कर दी, परन्तु पूँजी का संचालन व्यक्तिगत बुद्धि, योग्यता और सामर्थ्य पर छोड़ दिया गया।

कार्य की धुरी बदलने मात्र से देश में सब प्रकार से और सब दिशाओं में उन्नति होने लगी।

लोक सेवाएँ चला सकने में सरकार की असमर्थता के कारण समाजवाद का मोह टूटा। न तो सरकार उद्योग-धन्धे चला सकी और न ही सामान्य सेवाएँ। उद्योग-धन्धों में न्यून अथवा शून्य लाभ के कारण सेवाओं के लिए धन नहीं रहा। धनोपार्जन का दूसरा उपाय कर-वृद्धि का आश्रय लेना पड़ा। कर-वृद्धि से वस्तुओं की महँगाई में वृद्धि हुई तो कर्मचारियों के वेतन में वृद्धि करनी पड़ी। इससे वस्तुओं के दाम और भी बढ़े और इस दौड़ में समाजवाद को देश से निर्वासित करना पड़ा।

परन्तु यह सब विचार-परिवर्तन विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की अपार वृद्धि के कारण हुआ। अधिकांश विद्यार्थी अयोग्य होने से अनुत्तीर्ण होने लगे। इससे बेकारी बढ़ने लगी और शिक्षा की मान-प्रतिष्ठा कम होने लगी। कुछ योग्य परिश्रमी

विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय से बाहर उच्च शिक्षा का प्रबन्ध करने का प्रयास किया। विद्यार्थी जब विश्वविद्यालयों की चौखट से बाहर शिक्षा पाने लगे तो उन्होंने अपने लिए जीविकोपार्जन के उपाय ढूँढ़ने आरम्भ कर दिए।

इसका देश की अर्थ-व्यवस्था पर प्रभाव हुआ। साथ ही निजी शिक्षा में, विद्यार्थियों की मानसिक और बौद्धिक विकास में धर्म, न्याय और युक्ति-युक्त व्यवहार का चलन हुआ।

एक बार गाड़ी का मुख धर्म की ओर घूमा तो देश में शासन-व्यवस्था सुगम होने लगी। इस प्रकार के आचार-व्यवहार को वर्तमान दिशा तक लाने में बीस वर्ष लगे। उसका परिणाम यह हुआ कि देश प्रथम श्रेणी के राष्ट्रों में स्थान पा गया। समाजवादी देशों को भारत से ईर्ष्या होने लगी और पड़ोसी समाजवादी देश चीन तो इससे बहुत अधिक ईर्ष्या करने लगा। उसने राष्ट्रसंघ के द्वारा भूमण्डल के सब देशों में अपना जाल फैलाना आरम्भ कर दिया।

आचार्य विश्वेश्वर का भारत में आना इसी षड्यन्त्र का परिणाम था, परन्तु यहाँ की सुखद, स्वच्छ, स्वच्छन्द वायु ने उसे राष्ट्रसंघ और चीन के विषम घेरे से निकलने पर विवश कर दिया।

डॉक्टर तिन विश्वेश्वर के सामने बैठा विचार कर रहा था कि वह किस प्रकार इस बागी को पकड़कर चीन में पहुँचा, वहाँ अपराधियों के कैम्प में ठूँसे। परन्तु विश्वेश्वर डॉक्टर तिन से सज्जनता का व्यवहार कर रहा था। ठीक इसी समय पुलिस डॉक्टर को पकड़ने पहुँच गई।

आचार्यजी के घर से निकल पुलिस अधिकारी ने डॉक्टर को पुलिस वैन में बिठाया और सीधा हवाई पत्तन पर ले जाकर न्यूयार्क के हवाई जहाज में बैठा दिया। उसके साथ कलकत्ता तक एक भारतीय पुलिस अधिकारी गया। वहाँ उसने उसे जहाज की पुलिस के हवाले कर दिया।

: १० :

पुलिस तो केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के आदेश पर आई थी। मन्त्रिमण्डल का आदेश पुलिस के लिए यह था कि आचार्य विश्वेश्वर के मकान में बैठे डॉक्टर तिन को पकड़ हवाई जहाज में बिठा देश से बाहर कर दो।

दिल्ली से अमेरिका जाने वाले हवाई जहाज में डॉक्टर तिन को सिंगापुर ले जाकर जहाज से उतर जाने के लिए कहा गया तो उसने कहा, "मैं न्यूयार्क जाना चाहता हूँ।"

"आगे का भाड़ा दे दीजिए और टिकट बनवा लीजिए।"

"मुझे बिना सूचना के पकड़कर यहाँ लाया गया है। मेरा सामान दिल्ली के एक होटल में रखा है। मेरा रुपया भी वहीं है।"

"तो आप यहाँ उतर जाइए और भारत सरकार से अपना सामान यहाँ पर भेज

देने के लिए लिख दीजिए।"

डॉक्टर तिन को विवश हो सिंगापुर ठहरना पड़ा। डॉक्टर ने दिल्ली की सरकार को लिखने के स्थान न्यूयार्क राष्ट्रसंघ को टेलीफोन द्वारा सूचित कर दिया कि उसे पकड़कर भारत से बाहर कर दिया गया है।

मुख्य सचिव ने टेलीफोन से कहा, "तुम्हारा दिल्ली होटल का सामान यहाँ आ रहा है। तुम न्यूयार्क लौट आओ।"

डॉक्टर तिन समझ गया कि भारत किसी भी अन्य देश से कम सतर्क और सावधान नहीं अपितु कुछ अधिक ही है। अतः उसने न्यूयार्क का टिकट खरीदा और चल पड़ा।

वास्तव में उसका पर्स उसके पास था। यह केवल बहाना मात्र था कि उसका धन भी सामान के साथ होटल में रखा है। अगले दिन वह न्यूयार्क पहुँचा और राष्ट्रसंघ के मुख्य सचिव के सामने उपस्थित हुआ तो उसे पता चला कि उसे किस अपराध के कारण देश से बाहर निकाला गया है। उसकी जानकी देवी के साथ बात और प्रमिला देवी को फुसलाने के प्रयास की सूचना महासचिव के पास पहुँच चुकी थी। उसका सामान भी उसके वहाँ पहुँचने से पहले पहुँच गया था।

महासचिव ने डॉक्टर तिन युत सेन को वह वार्त्तालाप सुनाया जो उसका उन स्त्रियों से हुआ था तो डॉक्टर ने बताया, "उनके कमरे में इन स्त्रियों के कहने के अनुसार यन्त्र लगे थे जो वहाँ पर होने वाले पूर्ण वार्त्तालाप और कार्य की सूचना सरकारी सूचना-विभाग के पास पहुँचाता रहा था।"

"तो यह वार्त्तालाप सत्य है?" महासचिव ने पूछा।

"मैं इससे इन्कार नहीं कर सकता।"

"तुमने एक बात ऐसी की है जिसके तुम अधिकारी नहीं थे।"

"मैंने उन्हें पीकिंग की सेवा स्वीकार करने के लिए कहा था।"

"अभिप्राय यह है कि तुम राष्ट्रसंघ को भी एक ओर रखकर सीधा पीकिंग सरकार का कार्य करना चाहते थे?"

डॉक्टर तिन समझ गया कि यह अनियमित कार्य था। इस कारण उसने कहा, "मुझसे भूल हो गई है।"

"अब तुमको जासूसी के अयोग्य मान तुम्हें अपने कार्यालय में काम दिया जाता है।"

डॉक्टर मुख देखता रह गया। महासचिव ने कहा, "तुम राष्ट्रसंघ कार्यालय के मुख्य कार्याध्यक्ष के पास चले जाओ। तुम्हारे विषय में उसे आज्ञा हो चुकी है।"

डॉक्टर तिन भीगी बिल्ली की भाँति गर्दन झुकाए हुए वहाँ से उठा और कार्याध्यक्ष के पास जा पहुँचा।

डॉक्टर के जाने के उपरान्त महासचिव ने अपनी मेज पर लगी घण्टी का बटन

दबाया। कमरे के बाहर घण्टी बजी और एक व्यक्ति भीतर आया।

यह महासचिव का प्राइवेट सैक्रेटरी था। महासचिव ने उसको कहा, "जॉनसन! अपने जासूसी विभाग के कृष्ण स्वामी नाडार को यहाँ बुलाओ।"

पन्द्रह मिनट में एक भारतीय नागरिक, परन्तु यूरोपियन ढंग का पहरावा पहने सामने आया। महासचिव ने पूछा, "आजकल क्या काम कर रहे हो?"

"मुझे रूस में विद्यमान हिन्दुस्तानियों में किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिए कहा गया था जो वहाँ हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के विषय में व्याख्या-सहित सूचना दे सके। मैं इस कार्य को सम्पन्न करके यहाँ आया हूँ।"

"अभी यहाँ खाली हो?"

"जी।"

"तुम्हें भारत भेजा जा रहा है। वहाँ तुम्हें यह पता करना है कि भारत अपने पड़ोसी देशों के विरोध में क्या-क्या कार्य कर रहा है।"

कृष्ण स्वामी नाडार ने व्याख्या के रूप में पूछ लिया, "पड़ोसियों से आपका क्या अभिप्राय है? जो देश आज से बीस वर्ष पूर्व दूरस्थ समझे जाते थे, वे आज अति समीप प्रतीत होने लगे हैं।

"दिल्ली से न्यूयार्क बारह घण्टे में पहुँचा जाता था। माइक्रोवेव्ज और ट्रान्स-मिटिंग अन्तरिक्ष स्टेशन लग जाने से हम टेलीफोन नम्बर घुमाने पर भूमण्डल के किसी भी देश से ऐसे बात कर सकते हैं, जैसे कि सामने बैठे व्यक्ति से बात की जाती है।"

"मिस्टर नाडार!" महासचिव ने कहा, "मेरा पड़ोस से अभिप्राय इस भूमण्डल के सब देशों से है। चाँद, मंगल से नहीं। वहाँ तो अभी किसीका भी राज्य नहीं है।"

"ठीक है, मुझे कब जाना होगा?"

"तुरन्त। और देखो, तुम्हारा काम गुप्त है। वह पता नहीं लगना चाहिए कि तुम उनका रहस्योद्घाटन करने यहाँ से भेजे गए हो अथवा तुम स्वयं ही कुछ ऐसा काम कर रहे हो जो वहाँ की सरकार को रुचिकर नहीं।

"तुमको वहाँ का नागरिक बनकर रहना होगा और प्रत्यक्ष रूप में वहाँ जीविका सम्बन्धी कोई कार्य करना होगा।"

कृष्ण स्वामी नाडार उसी दिन सायं दिल्ली जा पहुँचा। उसके पास भारत का पासपोर्ट था। वहाँ उसने अपने योग्य काम ढूँढ़ना आरम्भ कर दिया।

उसे विश्वविद्यालय के अन्वेषण-विभाग की प्रयोगशाला में चपरासी का काम मिल गया। काम पाने के समय उसे प्रयोगशाला के कार्यालय में लिखाना पड़ा कि वह कहाँ का रहने वाला है। कृष्ण स्वामी ने बताया कि वह तामिलनाडु राज्य में तिरुचिरापल्ली के रंगनाथन के मन्दिर के पुजारी का सम्बन्धी है।

प्रमिला देवी उसी प्रयोगशाला में काम करती थी जिसमें कृष्ण स्वामी चपरासी का काम करता था।

तिरुचिरापल्ली से जाँच करने पर पता चला कि कृष्ण स्वामी त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय का स्नातक है। वह राष्ट्रसंघ के किसी विभाग में कार्य करता था। उसके घर वालों को ज्ञात नहीं कि वह भारत लौट आया है।

इस सूचना के साथ अन्वेषण-विभाग के अध्यक्ष को बता दिया गया कि यह नाडार विश्वसनीय व्यक्ति नहीं। इसे विश्वास योग्य काम नहीं देना चाहिए।

उसके नियुक्त होने के एक सप्ताह उपरान्त यह देखा गया कि नाडार डॉक्टर प्रमिला से हेल-मेल बढ़ाने लगा है। इसके उपरान्त एक दिन उसके प्रमिला की मेज के दराज की तलाशी लेने के चित्र सूचना-विभाग से उस विभाग के अध्यक्ष के पास आ गए।

अध्यक्ष डॉक्टर लोकनाथ ने प्रमिला देवी से पूछा, "प्रमिलाजी! नाडार का काम कैसा है?"

"बहुत ठीक है। वह अपने काम से अधिक योग्य प्रतीत होता है।"

"हाँ। यह त्रिवेन्द्रम विश्वविद्यालय का स्नातक है।"

"ओह! तो उसे किसी अधिक उपयुक्त कार्य पर लगा दिया जाए।"

"परन्तु सूचना विभाग ने यह सूचना भेजी है कि वह आपके दराज की तलाशी लेता रहता है।"

"सत्य?"

"हाँ, ऐसा करते हुए उसके फोटोग्राफ मेरे पास भेजे गए हैं।"

इतना कह डॉक्टर लोकनाथ ने अपनी मेज के दराज का ताला खोला और उसमें से तीन फोटोग्राफ निकालकर प्रमिला को दिखाए। यह देख वह स्तब्ध रह गई। तदनन्तर अध्यक्ष ने कुछ सोचकर कहा, "यह देखना चाहिए कि वह क्या ढूँढ़ रहा है।"

"पता करूँगी। मैं आज दराज में उसके सामने एक लिफाफा रख दूँगी। उसमें झूठी वैज्ञानिक खोज के विषय में कुछ लेख अपनी कोड भाषा में लिखकर रख दूँगी। यह सम्भव है कि वह अपने मन की प्रेरणा से उस लिफाफे को खोल, उन कागजों को देखे और उनका अर्थ न समझ उनके फोटोग्राफ लेने का प्रयत्न करे। ऐसा करते हुए उसका फोटोग्राफ सूचना-विभाग के पास पहुँच जाएगा। तब हम उसको दण्ड दिलवा सकेंगे।"

ऐसा ही किया गया और अगले दिन सूचना-विभाग ने मिस्टर नाडार का केस पुलिस के हवाले कर दिया और वह पकड़ लिया गया।

उसी दिन सायंकाल प्रमिला देवी और डॉक्टर लोकनाथ को न्यायालय की ओर से बुलावा मिला कि तीसरे दिन ग्यारह बजे तिमारपुर कोर्ट में कृष्ण स्वामी नाडार

के विषय में पूर्ण जानकारी देने के लिए तैयार होकर आएँ। तिरुचिरापल्ली में उसके सम्बन्धियों को भी आज्ञा हुई कि कृष्ण स्वामी के विषय में अपनी जानकारी न्यायालय में उस दिन उपस्थित करें। राष्ट्रसंघ के महासचिव को सूचना भेजी गई कि वह भी उसी दिन कृष्ण स्वामी की सर्विस फाईल कोर्ट में उपस्थित करे।

इसी प्रकार कृष्ण स्वामी को कहा गया कि यदि उसे अपनी सफाई में कुछ कहना अथवा किसी से कहलवाना है तो, लिखित अथवा व्यक्तिगत, सब साक्षी न्यायालय में उपस्थित कर दे।

तीसरे दिन न्यायाधीश ने केवल एक ही अभियोग जाँच के लिए नियत किया था और ठीक ग्यारह बजे कार्य आरम्भ हुआ। दो बजे मध्याह्न तक सब साक्षी और कागजात उपस्थित हो गये और न्यायाधीश ने बता दिया कि सायं चार बजे निर्णय दे दिया जाएगा।

कृष्णस्वामी ने कहा, "जो साक्षियाँ भारत सरकार की ओर से उपस्थित की गई हैं, उनके अध्ययन और उनका उत्तर तैयार करने के लिए मुझे अवसर मिलना चाहिए।"

"इसके लिए आपको सैशन कोर्ट में यह सब उपस्थित करने का अवसर मिलेगा।"

राष्ट्रसंघ के महासचिव की ओर से किसी प्रकार का उत्तर नहीं पहुँचा था। तिरुचिरापल्ली से भी किसी प्रकार का उत्तर नहीं आया। इस पर भी भारत सरकार ने कृष्णस्वामी के सम्बन्धियों का प्रथम पत्र न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित कर दिया।

सायं चार बजे निर्णय सुना दिया गया। उसमें कहा गया, "कृष्णस्वामी नाडार भारत का नागरिक है और इसी रूप में उसे विश्वविद्यालय के अन्वेषण-विभाग में एक 'पियन' के रूप में नौकरी दी गई। इसने अपने कार्य में सरकारी रहस्यों को ढूँढ़कर विदेश भेजने का यत्न किया था।

"इस बात के प्रमाण मिल गए हैं। इसने कुछ कागज-पत्रों को चोरी से निकाल उनके फोटोग्राफ लेकर डाक द्वारा अपने कलकत्ता-स्थित कार्यालय को भेजने का यत्न किया था। कलकत्ता में राष्ट्रसंघ के गुप्तचरों का एक कार्यालय है। ये फोटोग्राफ उस कार्यालय को भेजे जाते हुए मार्ग में डाक रोककर प्राप्त हुए हैं।

"इन सब प्रमाणों के आधार पर कृष्णस्वामी नाडार को सात वर्ष की कठोर कैद का दण्ड दिया जाता है।"

अन्त में न्यायाधीश ने कहा, "मैं नाडार को पाँच दिन के भीतर सैशन कोर्ट में इस निर्णय के विरुद्ध आपत्ति करने का अवसर देता हूँ।"

: ११ :

कृष्णस्वामी के लिए राष्ट्रसंघ के महासचिव का एक आदेश भारत सरकार को

आया। उसमें लिखा था, "कृष्णस्वामी राष्ट्रसंघ के गुप्तचर-विभाग का व्यक्ति है और यह राष्ट्रसंघ के निर्णयानुसार भूमण्डल के सब राज्यों पर देख-रेख के सम्बन्ध में दिल्ली में कार्य कर रहा था। इस कारण कृष्णस्वामी का कुछ भी दोष नहीं। उसने वही कुछ किया है जिसके लिए उसकी नियुक्ति थी।

"भारत सरकार को यदि किसी प्रकार की शिकायत है तो वह राष्ट्रसंघ के विरुद्ध होनी चाहिए। उसके लिए भारत सरकार राष्ट्रसंघ में याचिका कर सकता है।"

भारत सरकार ने कृष्णस्वामी को तो छोड़ा नहीं, हाँ, महासचिव के आदेश का उत्तर दे दिया। भारत सरकार का उत्तर था—

"भारत सरकार इस गुप्तचर-विभाग के कार्य को अनियमित समझती है। राष्ट्रसंघ का निर्णय यह था कि राष्ट्रसंघ यह देख-रेख करे कि कोई राज्य किसी दूसरे राज्य के विरुद्ध युद्ध की तैयारी तो नहीं कर रहा।

"इसके लिए भारत सरकार यही समझी थी कि राष्ट्रसंघ अपने महासचिव द्वारा और उसके किसी प्रतिनिधि द्वारा भारत सरकार से बातचीत करेगा। इस प्रकार गुप्तचर और चोरी-चोरी सूचना एकत्रित करने का राष्ट्रसंघ अथवा किसी का भी अधिकार भारत सरकार स्वीकार नहीं करती।

"कृष्णस्वामी एक भारतीय नागरिक के रूप में पकड़ा गया है और उस अधिकार से उसे अवसर मिला है कि वह अपनी रक्षा के लिए उच्च न्यायालय में याचिका करे अथवा राष्ट्रसंघ अपनी माँग करे।

"रही बात गुप्तचर की। उस विषय में राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् में, तदनन्तर राष्ट्रसंघ की महासभा में बात होगी। भारत अपने कार्य की सफाई वहीं देगा।"

राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् की बैठक बुलाई गई। परन्तु उस बैठक के होने से पूर्व उच्च-न्यायालय का निर्णय कृष्णस्वामी के विषय में घोषित हो गया और उसका दण्ड सात वर्ष अनुपयुक्त मान इसके स्थान पर उसे आजीवन कारावास का दण्ड दे दिया गया।

इस पर भी राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् की बैठक हुई। सुरक्षा-परिषद् में चीन, रूस और सुडान तो इस पक्ष में थे कि देख-रेख बिना गुप्तचर-विभाग के हो नहीं सकती। राज्यों की सरकारें धोखा देती देखी गई हैं। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रांस इसके विपरीत विचार रखते थे। उनका कहना था कि गुप्तचर-विभाग की आवश्यकता नहीं। राष्ट्रसंघ का सम्बन्ध राज्यों के साथ ही है। राज्यों को एक ओर कर उनकी प्रजा की देख-रेख नहीं कर सकते।

यद्यपि सुरक्षा-परिषद् में बहुमत गुप्तचर-विभाग के विपरीत मत वालों का था, इस पर भी महासचिव ने गुप्तचर-विभाग भंग करने के स्थान इस विभाग की

आवश्यकता के विषय में अपना मत राष्ट्रसंघ की साधारण सभा में भेज दिया।

जब तक यह सैद्धान्तिक विषय राष्ट्रसंघ की साधारण सभा में उपस्थित हुआ तब तक कृष्णस्वामी के दण्ड की सर्वोच्च न्यायालय में पुष्टि हो गई। कृष्णस्वामी को आजीवन कैद का दण्ड भोगने के लिए किसी अज्ञात बन्दीगृह में भेज दिया गया। इस सबमें बीस दिन लगे।

राष्ट्रसंघ की साधारण सभा में इस विषय पर विचार कृष्णस्वामी के दण्ड का सर्वोच्च न्यायालय में निर्णय होने के दो मास उपरान्त हुआ। दो दिन तक गरमा-गरम विवाद हुआ। ऐसे सदस्यों की संख्या अधिक थी जो गुप्तचर-विभाग को समाप्त करना चाहते थे। इसलिए इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिए एक उपसमिति बना दी गई। इस प्रकार महासचिव की शिकायत की अव-हेलना-सी हो गई।

जब से एक चीनी राष्ट्रसंघ के महासचिव पद पर नियुक्त हुआ था तब से यह गुप्तचर विभाग खुला था। सुरक्षा-परिषद् में इसकी स्वीकृति एक राज्य के बहुमत से मिली थी। उस समय अमेरिका इत्यादि राज्यों ने इसे इतना गम्भीर विषय नहीं समझा था, परन्तु जब गुप्तचर-विभाग कार्य करने लगा तो वे देश जहाँ प्रायः सब कार्य सर्वसाधारण के ज्ञान में होते हैं, जहाँ संसदीय शासन-पद्धति पर कार्य होता है और जहाँ समाचार-पत्रों को स्वतन्त्रता है, गुप्तचर-विभाग को व्यर्थ समझा जाने लगा था। मैक्सिको में भी एक इसी प्रकार की घटना हुई थी जैसी भारत में हुई थी। परन्तु वहाँ मुकद्दमा करने की पुरानी शैली होने के कारण मुकद्दमा दो वर्ष से चल रहा था और अपराधी जमानत पर छूटा हुआ मुकद्दमे को लम्बा करने के उपाय बरत रहा था।

भारत में मुकद्दमा करने की नयी शैली चालू हो चुकी थी और एक सप्ताह के भीतर निर्णय ले लिया जाता था। इसी कारण राष्ट्रसंघ के गुप्तचर-विभाग का प्रश्न राष्ट्रसंघ की साधारण सभा के सम्मुख आ गया।

ऐसा होने से भारत को इस विषय की विषमता को प्रकट करने का अवसर मिल गया और बहुमत से भारत के पक्ष में निर्णय हो गया। परिणामस्वरूप महा-सचिव ने त्यागपत्र दे दिया और चीन तथा रूस ने राष्ट्रसंघ छोड़ने की धमकी दे दी।

महासचिव का त्यागपत्र साधारण सभा में उपस्थित हुआ। भारत ने खुलकर भाग लिया। भारत का कहना था कि महासचिव संघ का कर्मचारी होने के नाते से किसी राजनीतिक विचार का पोषक नहीं हो सकता। महासचिव अपने निजी विचारों के लिए आग्रह कर रहा है, अतः उसका त्यागपत्र स्वीकार कर लेना चाहिए।

इस दुर्घटना का परिणाम यह हुआ कि जब साधारण सभा में महासचिव के

त्यागपत्र पर निर्णय लिया जाने लगा तो समाजवादी दल ने इस बात पर गम्भीरता-पूर्वक विचार करने के लिए एक उपसमिति नियुक्त करा दी।

राष्ट्रसंघ का गुप्तचर-विभाग बना तो रहा, परन्तु सर्वथा निष्क्रिय हो गया। इसका अभिप्राय यह हुआ कि चीन को अब दूसरे साधन ढूँढ़ने पड़े जिनसे वह भूमण्डल के अन्य प्रमुख राज्यों के आन्तरिक मामलों की जानकारी प्राप्त कर सके। वहाँ अब अन्य उपायों पर विचार और योजना बनने लगी। राष्ट्रसंघ का माध्यम बेकार हो गया।

प्राय: सब राज्यों में सैनिक-सामग्री निर्माण के कारखाने और उनके भण्डार तथा उनके प्रयोग के कार्यालय भूम्यान्तर्गत थे। साथ ही उनके ऊपर सीसे की चादरें बिछा रखी थीं जिससे 'रेडियो वेव' भी उनमें घुसकर उनका रहस्योद्घाटन न कर सकें।

इन शस्त्रास्त्रों के प्रारम्भिक परीक्षण भी भूमि अथवा समुद्र के तल पर किए जाते थे। इससे वे राज्य सदा चिन्तित रहते थे जो सदा दूसरे देशों पर आक्रमण की बात करते रहते थे।

भारत की स्थिति न समझ आने योग्य थी। कारण यह कि यह राज्य समाज-वादी नहीं था और न ही यह पूँजीवादी था। यहाँ व्यक्ति को पूँजी रखने की स्वीकृति थी। साथ ही व्यक्ति से अधिक पूँजी राज्य की ओर से उद्योग-धन्धों में लगाई जाती थी। जिससे व्यक्ति पर उचित नियन्त्रण रखा जा सके।

डॉक्टर तिन युत को यह पता चला था कि 'अल्ट्रा माईक्रो वेव्ज' के द्वारा भारत ने तीव्र गति से समाचार-संचार और कार्य-संचार की विधियाँ खोज ली हैं। इस पर भी वह यह नहीं समझ सका था कि यह कोई कमप्यूटर है जो समाचार पर कार्य का आदेश देता है अथवा मानव-कुशलता ही इसमें कार्य करती है।

महासचिव को ज्ञात था कि एक बार चीन ने तिब्बत में ल्हासा के समीप से एक प्रक्षेपणास्त्र कलकत्ता की ओर फेंका था जिसे कलकत्ता तक पहुँचने में पाँच मिनट लगने थे, परन्तु उसको अपने स्थान से उठने के उपरान्त एक मिनट भी नहीं हुआ था कि यह तिब्बत में ही, हिमालय के उत्तर में आकाश में जल गया था। तब चीन की सरकार ने यह समझा था कि प्रक्षेपणास्त्र स्वयमेव किसी दोष के कारण जल गया है, परन्तु डॉक्टर तिन युत के रहस्योद्घाटन से यह बात स्पष्ट हो गई थी कि वह प्रक्षेपणास्त्र भारत की 'अल्ट्रा माईक्रो वेव्ज' से विनष्ट किया गया था।

विस्मय करने की बात तो यह थी कि एक मिनट में प्रक्षेपणास्त्र के चलने का ज्ञान उसकी सूचना का अति सूक्ष्म विद्युत् तरंगों के केन्द्र स्थान पर पहुँचना और वहाँ से उन किरणों को ठीक स्थान पर पहुँचकर प्रक्षेपणास्त्र को अपनी लपेट में ले आना कैसे सम्भव हुआ?

इसी भेद को जानने के लिए महासचिव ने कृष्णस्वामी नाडार को भेजा था और वह भद्दे ढंग से चोरी करता पकड़ा गया और आजीवन कैद का दण्ड भोगने लगा।

द्वितीय परिच्छेद

भारत की यह विडम्बना थी कि,

स्नेह करे जो इससे है गद्दार कहलाता।
मान हरण-कारी ऊँची पदवी पाता।।

यह रीति उस समय चली थी जब देश पर विदेशी शासन था। दुर्भाग्य से ऐसा शासन कई शताब्दियों तक चला और परिणामस्वरूप देशद्रोही तो देशप्रेमी समझे जाने लगे और इसके हित में सर्वस्व न्योछावर करने वाला देश का शत्रु समझा जाने लगा।

भूल से एक साधु-स्वभाव का व्यक्ति परन्तु बुद्धिशील, राजस्थान के विश्वविद्यालय का उप-कुलपति नियुक्त हो गया। यह महानुभाव ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का स्नातक था। वह कुछ काल तक मास्को में संस्कृत के प्राध्यापक और कान्सास (अमेरिका) विश्वविद्यालय में भारतीय दर्शनशास्त्र का अध्यापक रह चुका था। इन गुणों के साथ जब वह भारत लौटा तो भारत के राष्ट्रपति ने उसको एक भारतीय विश्वविद्यालय का उप-कुलपति नियुक्त कर दिया। इसका नाम था श्यामसुन्दर चक्रवर्ती।

चक्रवर्ती मध्य प्रदेश के एक गाँव का रहने वाला था। पिता वहाँ की आर्य-समाज का मन्त्री था। श्यामसुन्दर पिता की सामान्य आर्थिक स्थिति के कष्टों और आदर्शवादिता में पलता हुआ बड़ा हुआ, परन्तु प्रतिभा ने विजय पाई और मध्य-वर्ग के बन्धनों को तोड़ श्यामसुन्दर समाज-रूपी सागर की एक उच्चतम तरंग के शिखर पर पहुँच गया।

भाग्य इसे ऑक्सफोर्ड में पढ़ने के लिए ले गया। यह उन दिनों की बात है जब द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ था। श्यामसुन्दर युद्ध में भरती हो तुरन्त लैफ्टिनेण्ट की पदवी पा गया। युद्ध में भी श्यामसुन्दर की बहुविध प्रतिभा ने अपना प्रभाव दिखाया और वह युद्ध समाप्त होने तक ब्रिगेडियर की उपाधि तक पहुँच गया।

युद्ध समाप्त होते ही वह पुनः अपनी पढ़ाई में लीन हो गया। इन दिनों इसे एक साथिन मिल गई। दोनों में अविवाहित सम्बन्ध बन गया। ऐलिस सिल्ब्रो फ्रांस की रहने वाली थी। वह अंग्रेज महिला से एक किसान की सन्तान थी।

जब फ्रांस हिटलर के अधिकार में था, उस समय ऐलिस सोलह-सत्रह वर्ष की कुमारी थी। वह फ्रांस की मुक्ति सेना में सम्मिलित हो गई और गुप्त रूप से फ्रांस

पर से जर्मन अधिकार को निःशेष करने में जीवन की बाजी लगा बैठी।

जिस रात अमेरिकन और अंग्रेज सेनाएँ बरगण्डी के सागर तट पर उतरीं तो ऐलिस तट के समीप ही एक जर्मन सैनिक कैम्प को डिनामाईट से उड़ाने में सफल हुई थी। जर्मन पहरेदार डिनामाईट के पलीते को आग लगा ऐलिस को भागते देख गोलियाँ चलाते हुए उसको पकड़ने भागे थे, परन्तु इस समय तटवर्ती जर्मन सुरक्षा सेना ने एस० ओ० एस० के संकेत भेजने आरम्भ कर दिए थे। ऐलिस की टाँग में गोली लगी तो वह लुढ़ककर एक खन्दक में गिर गई। सैनिक तो खतरे का सायरन बजते ही वापस हो गए। इस समय तट पर घमासान युद्ध हो रहा था। तट पर एकाएक हवाई जहाजों और सागर-पोतों से आक्रमण हुआ था।

श्यामसुन्दर छाता-सैनिकों का कैप्टन था। वह योजना-बद्ध अपने प्लाटून के साथ तट से कुछ दूर तट की सुरक्षा सेना के पीछे उतरा था। उतरते ही वह अपने साथियों को इकट्ठे कर एक जर्मन चौकी पर अधिकार करने चल पड़ा। ये अभी चौकी से कुछ अन्तर पर ही थे कि चौकी डिनामाईट के फटने से उड़ गई।

यह अप्रत्याशित था, परन्तु तब इस बात पर विचार करने का भी अवसर नहीं था कि यह किसने उड़ाई है? उसे यह आदेश था कि इस चौकी पर अधिकार कर तटवर्त्ती सुरक्षा सेना तक आने वाले तीन पुलों को उड़ा दे। जिससे तटवर्त्ती सेना को सैनिक-सहायता न मिल सके।

श्यामसुन्दर अपने कार्य को समाप्त कर उस चौकी के स्थान पर खड़ा युद्ध की प्रगति देख रहा था। अब तक जर्मन हवाई जहाजों का अंग्रेज और अमेरिकन हवाई जहाजों से बारूदी युद्ध होने लगा था।

दिन निकलने तक मित्र राष्ट्रों की सेना के पाँव तट पर जम गए थे और हवाई जहाजों की रक्षा में लाखों की संख्या में सैनिक फ्रांस के तट पर उतर गए थे।

श्यामसुन्दर के सिपाही रात के युद्ध में अपने खो गए सैनिकों को ढूँढ़ते हुए निकले तो उन्होंने ऐलिस को एक खन्दक में घायलावस्था में पड़ी पाया। वे उसे भी कैम्प में ले आए। घायल अंग्रेज सिपाहियों की भाँति ऐलिस की भी 'फर्स्ट एड' की गई और उसे जाँच के लिए किसी मुख्य कैम्प में भेजने के लिए वहीं रहने दिया गया। ऐलिस रात को अपने ही डिनामाईट के धमाके से जर्जर बैरक में पड़ी विचार कर रही थी कि यदि इस समय वह उठकर खड़ी भी हो सकती तो बन्दूक ले मित्र राष्ट्रों की सेना में सम्मिलित हो अपने देश को स्वतन्त्र करने में योगदान देती, परन्तु वह तो हिल-डुल भी नहीं सकती थी। गोली तो जाँघ को पार करके निकल गई थी, परन्तु रात-भर बहते रहे रक्त से और घाव की पीड़ा से वह अत्यन्त शिथिल हो चुकी थी।

मध्याह्न के समय जब श्यामसुन्दर के साथियों की मरहमपट्टी हो चुकी तो वह इस घायल लड़की को देखने आया। स्वास्थ्य समाचार के उपरान्त श्यामसुन्दर

ने लड़की के घायल होने का कारण पूछा तो उसने उसी चौकी को डिनामाईट से उड़ा देने के अपने प्रयास की कथा सुना दी। अपने कथन के प्रमाण में उसने अपना फ्रांसीसी मुक्ति सेना का तमगा दिखाया। इस सूचना पर तो श्यामसुन्दर समझ गया कि उसके कार्य को इस लड़की ने बहुत ही सुगम बनाया है।

मध्याह्न तक मित्र राष्ट्रों की सेना तट से दस मील फ्रांस के भीतर जा पहुँची थी और आक्रमण में सहस्रों घायलों के लिए हस्पताल खुल चुके थे। ऐलिस को भी एक हस्पताल में भेज दिया गया।

युद्ध समाप्त होने पर जब श्यामसुन्दर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था तो उसका ऐलिस से सामना हो गया। वह एक सड़क पर किसी काम से जा रहा था कि सामने मार्ग रोके खड़ी लड़की को देख उसको पहचानने का यत्न करने लगा। लड़की मुस्करा रही थी। उसने पूछा, "पहचाना नहीं?"

"कुछ-कुछ। तुम वह लड़की तो नहीं जो बरगण्डी में घायल एक खन्दक में पाई गई थीं?"

"हाँ। मुझे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है। आप हिन्दुस्तानी प्रतीत होते हैं।"

"हाँ। तुम यहाँ क्या करती हो?"

"युद्ध के समय मेरे माता-पिता जर्मनों द्वारा अत्यन्त कष्ट दे-देकर मारे गए थे। मैं किसी प्रकार भागकर बच गई। फिर मैं छापामार मुक्ति सेना में भरती हो गई थी। तभी आपके दर्शन हुए थे।

"यहाँ मैं अपनी नानी के पास रहती हूँ। मेरी माँ अंग्रेज थी।"

इस भेंट के उपरान्त दोनों में मेल-मुलाकात होने लगी। लड़की कम्युनिस्ट कार्ड-होल्डर थी। वह अपने मित्र को लेकर रूस में जा पहुँची। वहाँ मास्को विश्व-विद्यालय में संस्कृत पढ़ाते हुए दोनों पति-पत्नी के रूप में रहते रहे। यहीं श्याम-सुन्दर ने डॉक्टरेट किया।

पाँच वर्ष वहाँ कार्य कर रूसी सरकार की स्वीकृति से मिस्टर चक्रवर्ती अमेरिका में भारतीय दर्शनशास्त्रों को पढ़ाने के लिए कान्सास में जा पहुँचा। ऐलिस अब तक तीन बच्चों की माँ बन चुकी थी। वह भी उसके साथ थी।

कान्सास में डॉक्टर चक्रवर्ती के विचारों में परिवर्तन आरम्भ हुआ। कुछ तो ऐलिस से रूस और अमेरिका के जीवन पर वाद-विवाद से और कुछ भारतीय दर्शनशास्त्रों के गम्भीर अध्ययन से।

जीवन के दस वर्ष जो कान्सास में व्यतीत हुए, वे क्रान्ति उत्पन्न करने वाले सिद्ध हुए। यहाँ से डॉक्टर चक्रवर्ती भारत लौट आया। चक्रवर्ती और उसकी स्त्री के कम्युनिस्टों से सम्पर्क के कारण उसकी उपकुलपति के पद पर नियुक्ति हो गई।

[illegible]ल था जब भारत में समाजवाद की धूम थी। सरकार समाजवाद का

नाम ले-लेकर ही लोकसभा में पूर्ण बहुमत पा रही थी।

इस बहुमत के रहस्य पर चक्रवर्ती गम्भीर विचार में पड़ गया। वह समाजवाद का नग्न स्वरूप रूस में देख आया था। अमेरिका में प्रजातन्त्रवाद के ताण्डव को भी वह देख आया था। अब अपने देश में दोनों शासन-पद्धतियों के दोषों को एक स्थान पर एकत्रित देख वह गम्भीर विचार में निमग्न हो गया।

उसने ऐलिस से अपने मन की द्विविधा का वर्णन किया तो उसने अपने मन में शेष बचे कम्युनिज्म के प्रभाव से कह दिया, "तो क्रान्ति करा दीजिए।"

"मैं क्रान्ति करा दूँ?"

"हाँ। कितने विद्यार्थी पढ़ते हैं इस विश्वविद्यालय में?"

"सब मिल-मिलाकर पन्द्रह सहस्र हैं।"

"इतना दारू-बारूद अपने पास रखते हुए आप देश का तख्ता पलट सकते हैं।"

यह सुझाव उसके मन के संशयों को डिनामाईट से उड़ा देने की भाँति छिन्न-भिन्न करने वाला सिद्ध हुआ। वह समझने लगा कि यह परिवर्तनकाल है। यदि कुछ भी प्रयत्न किया जाए तो देश में क्रान्ति लाने में सफलता मिल सकती है। उसने विद्यार्थियों से सीधा सम्पर्क करना आरम्भ कर दिया। विश्वविद्यालय का एक तो अपना कालेज था और बीस सम्बन्धित कालेज थे।

उन दिनों कालेजों के प्रबन्धक बोर्डों में विद्यार्थियों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित कर लिये गए थे। चक्रवर्ती ने इक्कीस कालेजों के तिरेसठ विद्यार्थी प्रतिनिधियों को अपने जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में आमन्त्रित किया। उनको पूरे एक दिन के लिए अपना मेहमान रखा और प्रत्येक प्रतिनिधि से पृथक्-पृथक् में बात की। उनमें से इक्कीस विद्यार्थी चुन लिये और उनको देश के नाम पर आह्वान कर विद्यार्थियों का एक संगठन बना लिया।

उसने विद्यार्थियों को देश में सरकार की त्रुटियों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए आह्वान किया। ग्रीष्मऋतु की छुट्टियों के पहले उसने विद्यार्थियों की एक विशाल रैली में प्रचार-कार्य के लिए आग्रह किया और दस सहस्र से अधिक विद्यार्थी इस काम के लिए उद्यत हो गए।

प्रचार की रूपरेखा पर उसने एक पुस्तिका प्रकाशित करवा कर बँटवा दी। उसका स्पष्ट कहना था कि हमें ऐसी सरकार का गठन करना है जो शिक्षा को स्वतन्त्रता दे सके।

सब विश्वविद्यालय सरकार से स्वतन्त्र शिक्षणालय होने चाहिएँ। विश्वविद्यालयों में शिक्षा होनी चाहिए; परीक्षाएँ नहीं। परीक्षाएँ तो उनको लेनी चाहिएँ जिन्हें परीक्षार्थियों को काम देना है।

सामान्य शिक्षा, उसकी विधि और उसकी उपलब्धियाँ विद्यालयों और विश्व-

विद्यालयों के अपने-अपने विचार की बात है। काम देने वालों को तो किसी एक-आध विषय की योग्यता के कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। अतः उन विषयों में उसे प्रत्याशियों की परीक्षा ले लेनी चाहिए। परन्तु शिक्षणालय तो विद्यार्थी की सर्वांगीण उन्नति के लिए स्थापित हैं। सर्वांगीण उन्नति के विषय में प्रत्येक विद्यालय को अपने विचारानुसार शिक्षा का स्वरूप निश्चय करने की स्वीकृति होनी चाहिए।

विद्यालय और विश्वविद्यालय शिक्षा-पद्धति में स्वतन्त्र हों। इस धुरी पर देश-भर में दस सहस्र विद्यार्थी फैल गए और तीन मास में क्रान्ति सम्पन्न हो गई।

: २ :

इस क्रांति की सफलता में सरकार ने एक भूल यह कर दी थी कि उसने श्यामसुन्दर चक्रवर्ती को त्यागपत्र देने के लिए कह दिया था। चक्रवर्ती ने त्यागपत्र नहीं दिया तो उसे पद से हटा दिया। इससे विद्यार्थियों में आग लग गई।

इसी समय पिछले लोकसभा के निर्वाचनों में हुई धाँधली के रहस्योद्घाटन होने लगे। निर्वाचन-सम्बन्धी सैकड़ों याचिकाओं में जब चुनावों में चुनाव-अधिकारियों द्वारा किए गए घोटाले का अनावरण हुआ तो सर्वोच्च न्यायालय ने सात न्यायाधीशों का एक आयोग निर्वाचन आयोग की गतिविधियों की जाँच के लिए नियुक्त कर दिया।

सरकार ने इसमें सहयोग देने से इन्कार कर दिया, अतः इस आयोग ने अपना निर्णय दे दिया और देश में हो रही क्रान्ति में यह बात सहायक हो गई। जब जनता को यह पता चला कि सरकार ने छलना एवं अनियमित बातों से लोकसभा में बहुमत प्राप्त किया है तो श्यामसुन्दर चक्रवर्ती ने देशव्यापी क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

वह सरकार जो अब तक बलशालियों के सम्मुख झुकना ही नहीं सीखी थी, नये निर्वाचन कराने के लिए राजी हो गई।

शिक्षा को स्वतन्त्र कराने वाले दल में देश-भर के लाखों विद्यार्थी सम्मिलित हो गए। श्यामसुन्दर चक्रवर्ती, इस दल का नेता हो गया। देश-भर में गूँज थी कि देशोन्नति के लिए शिक्षा स्वतन्त्र हो। इसके पाँव से राजनीतिक बेड़ियाँ तोड़ दो।

यह आन्दोलन फल लाया और संस्कृत भाषा का विद्वान् एवं दर्शनशास्त्रों का ज्ञाता देश का प्रधानमन्त्री बन गया।

प्रधानमन्त्री पद पा जाने के उपरान्त और मन्त्रिमण्डल निर्माण के पूर्व पुष्प-मालाओं से लदा हुआ चक्रवर्ती जब अपने घर पहुँचा तो ऐलिस घर के द्वार पर प्रसन्नता से देदीप्यमान उसके स्वागत के लिए खड़ी थी।

चक्रवर्ती ने समाचार-पत्रों में घोषणा की थी कि वह अपने मन्त्रिमण्डल की

घोषणा कल दस बजे करेगा, और सायंकाल पाँच बजे पत्र-प्रतिनिधियों से अपने देश में आने वाली क्रान्ति की रूपरेखा का वर्णन करेगा।

यह सूचना आकाशवाणी ने प्रसारित कर दी थी और ऐलिस घर बैठी इसे सुन नवक्रान्ति की उषा के दर्शन से प्रसन्न हो पति के घर लौटने की राह जोह रही थी।

जब पति नयी दिल्ली इलेक्ट्रिक लेन के अपने क्वार्टर के द्वार पर पहुँचा तो पत्नी को अलौकिक प्रसन्नता की आभा से युक्त मुख से द्वार पर खड़ी देख कहने लगा, "लो···।"

पत्नी ने वहीं द्वार पर उससे आलिंगन करते हुए कहा, "बहुत-बहुत बधाई हो।"

"इस बधाई का बँटवारा क्या यहाँ द्वार पर खड़े-खड़े ही तुम्हारे साथ करना होगा?"

"ओह! मैं भूल ही गई थी कि ये लोग हमें देख रहे हैं।" निर्वाचित प्रधानमन्त्री को आते देख बीसियों ही आते-जाते लोग वहाँ खड़े हो गए थे। चक्रवर्ती के साथ भी तीन अन्य व्यक्ति थे। यह भी पति-पत्नी की प्रसन्नता का दर्शन कर रहे थे। सचेत करने पर पत्नी झेंपी और पति की बाँह-में-बाँह डाल उसे भीतर ले गई।

प्रोफेसर चक्रवर्ती ने अपने साथियों को भी भीतर आने का संकेत किया और जब सब भीतर जाकर बैठ गए तो चक्रवर्ती ने कहा, "जब भी कोई राज्य शासन प्राप्त कर लेता है तो वह समझने लगता है कि यह उसने अपने प्रयत्न से प्राप्त किया है। वास्तव में वह होता है परमात्मा की योजना से। मनुष्य सफलता के उफान में भूल जाता है कि वह एक साधन-मात्र है और वास्तविक कर्त्ता-धर्त्ता तो कोई इस नाटक के सूत्रधार की भाँति पर्दे के पीछे बैठा चला रहा है।

"मैंने देश के सुधार का निश्चय किया है और वह सुधार वहीं से आरम्भ करूँगा जहाँ से बिगाड़ आरम्भ हुआ है।

"मैं समझता हूँ कि शिक्षा उन्नति का केन्द्र है। अंग्रेज ने शिक्षा को राज्याधीन कर देश की गाड़ी का मुख पीछे को कर दिया था। अब मैं इसका मुख पुनः आगे को करने के लिए इसे राजनीति से स्वतन्त्र करने का यत्न करूँगा।

"ऐलिस को मैंने लोकसभा के सदस्यों के निर्वाचित गुण-दोष जानने के लिए नियुक्त किया था। यह आज बताएगी कि प्रगतिशील मन्त्रिमण्डल में किस-किसको लिया जाए।"

ऐलिस जो निर्वाचित सदस्यों के अध्ययन में पिछले पाँच दिन से लगी हुई थी, अपनी जेब से एक कागज निकालकर नाम पढ़ने लगी। उसने पन्द्रह नाम पढ़े और बोली, "अभी इतने पर्याप्त हैं। शेष बाद में देख लीजिएगा।"

नामों को सुन शिवकुमार बोल उठा, "इसमें दस व्यक्ति ही हमारे दल के हैं।

पाँच तो विरोधी दलों के हैं।''

उत्तर में ऐलिस ने कहा, ''ये पाँच अपने दल वालों से भी अधिक स्वतन्त्र शिक्षा के पक्ष में हैं। और ये शिक्षा-शास्त्री भी हैं। जब क्रान्ति का श्रीगणेश शिक्षा से ही करना है तो इनको साथ लेना आवश्यक हो जाएगा।''

''और अपने दल वालों की नाराजगी का क्या होगा।''

''मैं उनको समझा दूंगा।'' चक्रवर्ती ने कहा, ''यदि नहीं मानेंगे तो मैं नेता-पद से त्याग-पत्र दे दूँगा। अभी मेरे सामने शिक्षा को स्वतन्त्र करना ही एक कार्य है। राजनीति तो शिक्षा के पीछे लगने के लिए है, न कि शिक्षा का नेतृत्व करने के लिए।''

शिवकुमार चुप हो गया। पुनः एक-एक नाम पर विचार होने लगा। जब नामावली का निश्चय हो चुका तो चक्रवर्ती ने शिवकुमार को कहा, ''शिव! विद्यार्थियों की 'रैली' नयी दिल्ली तालकटोरा गार्डन में होगी। लाखों विद्यार्थियों के लिए काम निकालना है। मैं समझता हूँ कि इन आन्दोलन-कर्त्ताओं में एक भी ऐसा नहीं होना चाहिए जो अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के अवसर से वंचित हो जाए। मैं समझता हूँ जो लक्ष्य गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार निश्चय किया जाए वह प्राप्त होता ही है।

''मैं समझता हूँ कि सब विश्वविद्यालयों के बुद्धिशील विद्यार्थियों के एक प्रतिनिधि मण्डल की बैठक यहाँ बुलानी चाहिए। इन प्रतिनिधियों की संख्या एक सहस्र से कम नहीं होनी चाहिए। ये यहाँ से योजना लेकर अपने-अपने क्षेत्रों में जाएँगे और वहाँ यह कार्य करेंगे। ये लाखों युवक जिन्होंने इस क्रान्ति में योगदान दिया है, देश के भावी निर्माण में लग जाने चाहिए।

''देखो शिव! धन के विषय में तुम सायंकाल तक बताना कि इस 'रैली' के लिए कितना आवश्यक होगा। मैं तुम्हें बताऊँगा कि इसे कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है।''

शिवकुमार काम मिल जाने से सन्तुष्ट हो वहाँ से विदा हो अपने निवास-स्थान को चला गया। वह अपने निर्वाचन-क्षेत्र से निर्वाचित लोकसभा के सदस्य के साथ एक होटल में ठहरा हुआ था। अभी नवीन सदस्यों को सरकारी क्वार्टर नहीं मिले थे।

जब शिवकुमार चला गया तो चक्रवर्ती ने कहा, ''मैं एक घण्टा-भर विश्राम करूँगा। तदनन्तर दल की कार्य-कारिणी के निर्वाचन के लिए बैठक होगी। उसके उपरान्त मुझे पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मेलन में भावी कार्यक्रम की घोषणा और उसके लागू करने में क्रम का वर्णन करना है।

''तदनन्तर मुझे दल के बाहर उन लोगों की स्वीकृति लेनी होगी जिनको मन्त्रि-मण्डल में लेना है। मैं समझता हूँ कि तब तक तुम मनोरमा को कहो कि इन नामों

की पचास-साठ प्रतियाँ साईक्लोस्टाइल कर ले। साथ ही शिक्षा के सुधार-कार्य पर एक वक्तव्य की एक सौ प्रतियाँ तैयार कर दे।

"ऐलिस डियर! एक बात का ध्यान रखना कि देश के संविधान को मैं अभी बदलने की आवश्यकता नहीं समझता। इसी के चौखट के भीतर रहकर ही कार्य होगा।

"हाँ, उस वक्तव्य में समाजवाद के विषय में एक-दो शब्द अवश्य आने चाहिए। यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि समाजवाद का शब्द राज्य की तानाशाही चलाने वालों ने समाज-कल्याण के स्थान पर छलना खेलने के लिए रख दिया है। हाँ, राज्य समाज-कल्याण के सब कार्य जनता द्वारा करवाने में पूरा यत्न करेगा।"

इतना कह चक्रवर्ती अपने सोने के कमरे में चला गया। पति के आराम करने के लिए जाते ही ऐलिस ने अपनी लड़की मनोरमा को सामने बैठा प्रेस कान्फ्रेंस में देने के लिए वक्तव्य लिखा दिया। साथ ही मन्त्रिमण्डल के प्रस्तावित नाम की सूची दे कहा कि यह सब एक घण्टे में साइक्लोस्टाइल करवा लो। निरंजन को अपनी सहायता के लिए साथ ले लो।

चक्रवर्ती इस समय चव्वन वर्ष का था। ऐलिस उनचास वर्ष में जा रही थी। दोनों अपने में शक्ति और बुद्धि को ठीक प्रकार कार्य करते हुए पाते थे। तीनों बच्चे भी अब सज्ञान हो काम-काज में लगे हुए थे। मनोरमा का विवाह हो चुका था और वह अमेरिका में एक जन्म से भारतीय युवक से विवाह कर एक पुत्र को जन्म दे चुकी थी और निरंजन की आयु इस समय बाईस वर्ष की थी। वह न्यूजर्सी कॉलेज का स्नातक था।

जब चक्रवर्ती राजनीति में कूदा तो उसने अपने बच्चों को अपने पास बुला लिया था और घर के लोग ही उसका अपना निजी सचिवालय चलाते थे।

: ३ :

पार्टी की कार्यकारिणी में मन्त्रिमण्डल के प्रस्ताव पर कुछ गरमागरमी हुई, परन्तु चक्रवर्ती ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, "मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ। मैं तो शिक्षक हूँ। इस कारण मेरी दृष्टि में अपने साथियों को ढूँढ़ने में राजनीति, पथ-प्रदर्शक नहीं जितनी कि उद्देश्य की पूर्ति के लिए उपयुक्त साधनों की।

"मैं समझता हूँ कि देश की वर्तमान अधःपतन की अवस्था मिथ्या शिक्षा के कारण है। हमारे अधिकांश नेता मिथ्या शिक्षा प्राप्त व्यक्ति ही रहे हैं। मैं इस प्रथा को तोड़ना चाहता हूँ। इसी कारण पूर्ण लोकसभा को देश का प्रतिनिधि मण्डल मान उसमें से अपने कार्य पूर्ण करने की योग्यता वाले व्यक्तियों को ले रहा हूँ।

"अभी तो मैंने ये नाम विचार किए हैं। उनसे बात करनी होगी, यदि वे भी

अपने दल की राजनीति की दलदल को छोड़ देश को रोग-मुक्त करने के लिए तैयार हो गए तो मैं इन पाँच वर्षों में देश को सुख, शान्ति, शक्ति और सम्पन्नता की ओर अभिमुख कर सकूँगा।

"मित्रवर्ग ! यह स्मरण रखो कि शिक्षा उन्नति की धुरी है। यह ठीक होगी तो देश भी उन्नति पथ पर चल पड़ेगा।"

यह एक नवीन परीक्षण था। कार्यकारिणी को इसके सफल होने में सन्देह था, परन्तु चक्रवर्ती के आत्मविश्वास ने सबके पाँव उखाड़ दिए।

मध्याह्नोत्तर चाय के समय एक सौ से अधिक पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मेलन में चक्रवर्ती ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा, "मैं देश के पूर्ण कार्य को तीन भागों में बाँटता हूँ। एक शिक्षा, दूसरा शासन और तीसरा धर्म-व्यवस्था। राजनीति केवल शासन-व्यवस्था में काम आती है। धर्म-व्यवस्था और शासन दोनों शिक्षा के अनुगामी होने चाहिए। धर्म-व्यवस्था, जिसे देश के विधि-विधान बनाने का कार्य कहना चाहिए, शिक्षा के अनुसार ही कार्य करती है।

"वर्तमान युग में राजनीति का कार्य कानून विधि-विधान बनाना बन गया है। यह घोड़े के आगे गाड़ी को लगाने की बात है। मैं स्वाभाविक क्रम चालू करना चाहता हूँ। देश की अन्य किसी बात को न बदलते हुए सर्वप्रथम शिक्षा में सुधार पर पूरा ध्यान देना चाहता हूँ।

"एक बार हमारे शिक्षणालय ठीक प्रकार से कार्य करने लगे कि बस देश उन्नति-पथ पर आरूढ़ हो जाएगा। विद्वान् लोग राजनीति के घोड़े पर सवार हो जाएँगे। घोड़ा विद्वानों के सिर पर नहीं बैठ सकेगा।

"शासन और विधि में सुधार तो शिक्षा सुधार के अनन्तर ही सम्भव है। परन्तु मैं देश को आश्वासन देना चाहता हूँ कि इसको बहुत काल नहीं लगेगा। पाँच वर्ष में शिक्षा इस स्तर पर पहुँच जाएगी कि पूर्ण देश आगे बढ़ने लगेगा।

"एक बात की इन निर्वाचनों में बहुत चर्चा हो रही है। वह है समाजवाद बनाम पूँजीवाद। मैं पूँजीवाद का पक्षपाती नहीं हूँ, न ही मैं समाजवाद का समर्थक हूँ। क्योंकि समाजवाद तो पूँजीवाद का समर्थक है। उसका प्रतिस्पर्धी नहीं।

"पूँजी का जमाव न राज्य के पास होना चाहिए और न किसी व्यक्ति के पास। पूँजी को निर्मूल नहीं किया जा सकता। इसके बिना काम नहीं चल सकता। यह श्रम के फल को अनेक गुणा बढ़ाने की सामर्थ्य रखती है। इस कारण पूँजी तो रहेगी, परन्तु पूँजीपति नहीं होंगे। न सरकार न व्यक्ति। इसके लिए लोकसभा में व्याख्या सहित योजना बनेगी। इतना निश्चय है कि सरकार व्यापार नहीं करेगी, वह व्यापार पर नियन्त्रण करेगी। सरकार उद्योग-धन्धे नहीं चलाएगी, वह उद्योग-धन्धे पर नियन्त्रण रखेगी।

"आज से हमारा सभाघोष होगा समाज-कल्याण; समाजवाद नहीं। समाज-

वाद में सरकार का पूँजीपति होना अनिवार्य है। पूँजीपति स्वयं पूँजी पर नियन्त्रण नहीं रख सकता। रखेगा तो अनर्थ होगा। समाजवाद में पूँजीपति राज्य है और राज्य का ही उस पर नियन्त्रण है।"

इस वक्तव्य को बाँट दिया गया और चाय पी जाने लगी। चाय पीते हुए पत्र-प्रतिनिधियों ने प्रश्न पूछने आरम्भ कर दिए।

"क्या संविधान में संशोधन होगा?"

"मैं इसकी आवश्यकता नहीं समझता। इसमें पर्याप्त लचक है। मैं समझता हूँ कि हमारा उद्देश्य, इसके अन्तर्गत रहते हुए भी पूर्ण हो जाएगा।"

"आपकी विदेश-नीति क्या होगी?"

"भूमण्डल के भले राज्यों से सहयोग और उनकी प्रत्येक प्रकार से सहायता।"

"आप किसको भले राज्य समझते हैं?"

"यह तो तब ही बताया जा सकेगा जब एक राज्य दूसरों से विचार-विनिमय करके नीति-निर्माण करेगा। हम सबको भला मानकर ही अपनी विदेश-नीति को चालना देंगे।"

"क्या आप पूँजीपति-व्यवस्था वाले राज्यों को भी भला समझ सकते हैं?"

"भला और बुरा होना पूँजी के साथ सम्बन्ध नहीं रखता। इसका सम्बन्ध मानसिक अवस्था पर है। इसकी परीक्षा करनी होगी।"

"क्या कार्य से कारण का ज्ञान नहीं होता? क्या पूँजी रखना कार्य नहीं?"

"नहीं। पूँजी का प्रयोग कार्य है। पूँजी स्वतः निर्जीव वस्तु है। इसके प्रयोग करने वाले पर ही इससे उपलब्ध फल का ज्ञान हो सकता है।

"राज्यों की मनःस्थिति वहाँ की शिक्षा-प्रणाली से ही समझी जा सकती है। इसमें अध्ययन की आवश्यकता है।"

"आपने मन्त्रिमण्डल का निर्वाचन किया है अथवा नहीं?"

"मन्त्रिमण्डल के निर्वाचन में नीति का निश्चय हो गया है। नामों का निश्चय उन लोगों से सम्मति कर निश्चय होगा जिनको हम मन्त्रिमण्डल में लेना चाहते हैं।"

"क्या हम उस नीति के विषय में पूछ सकते हैं जिसके आधार पर आप मन्त्रि-मण्डल की नियुक्ति करना चाहते हैं?"

"निस्सन्देह। पूछ सकते हैं।"

"किस आधार पर आपका मन्त्रिमण्डल बनने वाला है?"

"हमारे दल ने आगामी दो वर्ष के लिए सुधार का कार्यक्रम बनाया है। उस कार्यक्रम को चलाने में लोकसभा के योग्य व्यक्तियों को मन्त्रिमण्डल में आमन्त्रित करना चाहता हूँ। यह तो उन आमन्त्रित व्यक्तियों को देखना होगा कि वे हमारे कार्यक्रम में सहायता करना चाहते हैं अथवा नहीं?

"मन्त्रिमण्डल लोकसभा का प्रातिनिध्य करेगा, दल का नहीं। दल का तो कार्यक्रम होगा।"

पत्र-प्रतिनिधि सम्मेलन समाप्त हुआ। अधिकांश पत्र-प्रतिनिधि सन्देहात्मक स्थिति में विदा हुए। उन्हें सन्देह था कि इस नवीन दल की सरकार चल भी सकेगी अथवा नहीं? सब समझते थे कि चक्रवर्ती आदर्शवादी मूर्ख है।

रात को उन पाँच व्यक्तियों को बुलाया गया जिनको दल के बाहर से मन्त्रि-मण्डल में लेने का विचार था। प्रधानमन्त्री ने अपनी शिक्षा में सुधार सम्बन्धी योजना पर विचार-विनिमय किया। आमन्त्रित सदस्यों में से चार तैयार हो गए। पाँचवें ने कहा कि वह अपने दल वालों से सम्मति करके ही स्वीकृति दे सकता है। उसे प्रातः आठ बजे तक का समय दिया गया।

: ४ :

देश में यह घोषणा की गई कि मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्य शपथ लेते ही अपने-अपने दलों से त्याग-पत्र दे देंगे। मन्त्रिमण्डल उस नीति और कार्यक्रम का पाबन्द होगा जो कार्यक्रम वहु-संख्यक दल एक अथवा दो वर्ष के लिए निश्चय करेगा। नियत अवधि के पूर्ण होने पर दल को अधिकार होगा कि मन्त्रिमण्डल के कार्य का निरीक्षण करे और यदि कार्य सन्तोषजनक और ठीक दिशा में न हुआ तो दल मन्त्रि-मण्डल को बदल सकता है। निश्चित कार्यक्रम के अतिरिक्त विषयों पर मन्त्रीगण सम्मति देने में स्वतन्त्र होंगे। इस घोषणा पर देश में हर्ष की लहर दौड़ गई। यह एक नवीन कार्य-विधि थी।

मन्त्रिमण्डल के शपथ लेते ही शिक्षा-सम्बन्धी नीति पर विचार होने लगा और निश्चय लिये जाने लगे। निश्चय होते ही उनको कार्य-रूप दिया जाने लगा।

एक-दो दिन में ही यह निश्चय हो गया कि कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक किसी भी स्थान पर प्राइमरी स्कूल खोल सकता है। उसे किसी विद्यार्थी अथवा उसके सम्बन्धी से फीस नहीं लेनी होगी। जो भी अध्यापक शिक्षा का मूल्य प्राप्त करेगा, वह दण्ड का भागी हो जाएगा। यह दण्ड दो मास की कैद से एक सहस्र रुपया जुर्माना तक अथवा दोनों ही हो सकते हैं।

जो अध्यापक प्राइमरी के छात्रों को शिक्षा देने का कार्य करेंगे, उनको सरकार की ओर से पाँच रुपये प्रति छात्र प्रति मास भत्ते के रूप में मिलेगा। एक अध्यापक पचास से अधिक छात्रों को भरती नहीं कर सकेगा।

तीन वर्ष की पढ़ाई के उपरान्त छात्र को विश्वविद्यालयों द्वारा निर्धारित प्राइमरी बोर्ड की परीक्षा पास करनी होगी। परीक्षा का पाठ्यक्रम बोर्ड प्रसारित कर देगा। जिसके छात्रों के उत्तीर्ण होने वालों की संख्या पचास प्रतिशत से कम होगी, उनसे अध्यापक का लाइसेंस वापस ले लिया जाएगा।

जो स्कूल पहले से प्रचलित हैं अथवा जिनमें एक से अधिक अध्यापक कार्य कर

रहे हैं वे भी शिक्षा-कार्य कर सकते है। परन्तु उनको सरकारी 'ग्राण्ट' तब ही मिलेगी जब वह विश्वविद्यालय के बोर्डों के पाठ्यक्रम के अनुसार पढ़ाई कराएँगे।

जहाँ एक से अधिक अध्यापक मिलकर कार्य कर रहे होंगे, उनके प्रबन्ध का निरीक्षण विश्वविद्यालय का निरीक्षण बोर्ड किया करेगा।

इस प्रकार शिक्षा के मूल स्थान से सुधार आरम्भ किया गया। एक मास में विश्वविद्यालयों में प्राइमरी शिक्षा के बोर्ड, माध्यमिक शिक्षा के बोर्ड और उच्च विद्यालयों की शिक्षा के बोर्ड बनकर कार्य करने लगे।

शिक्षा में केवल एक प्रतिबन्ध था। वह था राष्ट्र-विरोधी भावना उत्पन्न करने का। दूसरी बात यह थी कि तीन वर्ष की शिक्षा के उपरान्त प्राइमरी बोर्ड की; तदनन्तर तीन वर्ष के उपरान्त माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की और फिर तीन वर्ष की और अधिक शिक्षा के उपरान्त उच्च विद्यालय के शिक्षा बोर्ड की परीक्षा पास करने पर ही ऊपर की शिक्षा में प्रवेश प्राप्त कर ऊँची परीक्षा के योग्य समझा जा सकता था।

महाविद्यालयों का ढाँचा अभी नहीं बदला गया। केवल यह कर दिया गया कि पाठ्यक्रम तीन वर्ष में ऐसा बनाना होगा जो उच्च विद्यालय के पाठ्यक्रम के आगे होगा। महाविद्यालय के अन्तिम दो वर्ष में अधीत विशेष विषय अथवा उसके सहयोगी विषय का विशेष ज्ञान का पाठ्यक्रम होगा।

विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त अन्वेषण-केन्द्र होंगे। इनमें प्रवेश के लिए प्रत्येक केन्द्र का परीक्षा बोर्ड होगा और वह अपने लिए उपयुक्त अन्वेषण-कर्त्ता लेगा। प्रत्येक केन्द्र में अपने-अपने विषय के विशेषज्ञ विषय में अन्वेषण के अध्यक्ष होंगे। उनके साथ सहायक होंगे और अन्वेषण-कर्त्ता भी होंगे।

प्रत्येक निजी अथवा सरकारी कार्यालय, व्यापार तथा उद्योग-केन्द्र सेवक भरती करने के लिए अपनी-अपनी आवश्यकता के अनुसार परीक्षा के विषयों की घोषणा और प्रति वर्ष सेवकों की संख्या की घोषणा कर दिया करेंगे और उसमें प्रत्याशी परीक्षा उतीर्ण कर सेवा प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षा का यह ढाँचा तैयार करने में छः मास लगे। और ज्यों-ज्यों यह बनता गया, उसके अनुसार कार्य होता गया। परिणाम यह हुआ कि ढाँचा तैयार होते ही इस पर कार्य होने लगा।

प्रथम छः मास में ही नवीन प्राथमिक शिक्षणालय की संख्या चालीस हजार के लगभग हो गई। माध्यमिक शिक्षा के नवीन केन्द्र भी खुले, परन्तु कुछ सहस्र ही।

इसके उपरान्त मन्त्रिमण्डल ने उद्योग और व्यापार की ओर ध्यान दिया। सबसे प्रथम बात यह की गई कि करों का बोझ कम हो। आयकर में से करदाता जिस मकान में रहता हो, उसका भाड़ा अथवा उस पर लगी पूँजी पर छः प्रतिशत ब्याज आय में छूट दे दी गई। भोजन में आधार-भूत पदार्थों पर उत्पादन-कर हटा

दिया। इसमें चीनी, अनाज, दूध, कपड़ा, लोहा, सीमेंट, चाय इत्यादि सामान्य आवश्यकताओं के पदार्थ थे।

संसद् की एक धर्म-समिति बना दी गई जो कि नये और पुराने कानूनों की उपयुक्तता एवं अनुपयुक्तता पर विचार करती रहती थी। मन्त्रिमण्डल के बनते ही सर्वोच्च न्यायालय के पाँच न्यायाधीशों की एक समिति इस बात के लिए गठित कर दी गई कि न्याय को सुगम, सस्ता और कम काल में दिलाने के लिए उपाय विचार करें।

विदेश मन्त्रालय की सहायता के लिए संसद् की एक सर्वदलीय समिति नियुक्त कर दी गई। इस समिति की प्रत्येक समिति में विपक्षी दल के सदस्यों के सहयोग ने विरोध को कम कर दिया और संसद् में कम समय में अधिक काम होने लगा। बहुमत और अल्प-मत का सम्बन्ध मुख्य नीति के साथ ही रहा। कार्य में दोनों मत समन्वय से काम करने लगे।

प्रथम वर्ष में प्रत्यक्ष रूप में किसी प्रकार का परिवर्तन दिखाई नहीं दिया, परन्तु पूर्ण देश में हलचल मच गई और शिक्षा, उद्योग तथा व्यावसायिक सम्बन्धी कई सार्वजनिक सभाएँ और समितियाँ बन गईं। इनसे सरकार का सम्पर्क भी होने लगा।

: ५ :

नव सरकार का मन्त्रिमण्डल बने एक वर्ष से कुछ ही अधिक समय की बात है कि एक दिन श्यामसुन्दर चक्रवर्ती अपनी कोठी में अपने कार्यालय के भीतर बैठा कार्य कर रहा था। नित्य की भाँति उसके कार्य में उसकी पत्नी ऐलिस उसकी सहायता कर रही थी। वह उसकी घर पर काम में 'स्टेनो' और परामर्शदाता रहती थी। घर पर चपरासी को आज्ञा थी कि मिलने के लिए आने वालों का समय नौ से दस बजे तक है। इससे पहले मन्त्री महोदय से कोई नहीं मिल सकता। प्रधानमन्त्री और उनकी पत्नी प्रातः चार बजे से अपने कार्यालय में आ बैठते थे। इस दिन अपने कार्य से साढ़े-आठ बजे उठते हुए पति ने कहा, "मैं समझता हूँ कि हमारी योजना कार्य करने लगी है।"

"हाँ। आज मिस्टर श्रीवास्तव ने अन्तरिक्ष-यात्रा अन्वेषण विभाग की निजी योजना प्रस्तुत की है।"

"मैं तो पहले ही जानता था कि जिस समय भी भारतीय मस्तिष्क को स्वतन्त्रता से कार्य करने की स्वीकृति दी गई तो यह गगन से ऊपर उड़ने की अभिलाषा करने लगेगा। भारतीय मस्तिष्क को इन्द्र, वरुण और विष्णु के काल की स्मृति हरी-भरी होने लगेगी।"

"हाँ। परन्तु श्रीवास्तव साहब की योजना का विशेषज्ञों की समिति द्वारा निरीक्षण तो करवाना ही होगा।"

"हो जाएगा। मुझे इस बात पर प्रसन्नता है कि विधि समिति की रिपोर्ट संसद् में पारित हो गई है और उसके अनुसार न्यायालयों में काम होने लगा है। परिणाम यह होगा कि किसी भी विवाद के निश्चय करने में प्रथम न्यायालय में एक सप्ताह से अधिक नहीं लगेगा और अन्तिम न्यायालय को पार करने में तीन मास से अधिक नहीं लगेंगे। पिछले मास कुछ विवादों पर इस प्रक्रिया की परीक्षा ली गई है और इसे सफल पाया गया है।"

पति-पत्नी दोनों बातें करते हुए भोजनालय में जा पहुँचे थे। वहाँ उनका लड़का, पुत्रवधू, लड़की और दामाद बैठे थे। वे भी अब राज्य-सभा के सदस्य बन चुके थे और प्रधानमन्त्री के कार्य में सहायक हो रहे थे।

इस समय चपरासी कागज की एक चिट लेकर आया। 'चिट' ऐलिस ने पढ़ी। उसमें लिखा था—'शशिभूषण विद्यालंकार, सुकेत, हिमाचल प्रदेश।' उद्देश्य के सम्बन्ध में लिखा था—'विद्यालय में धर्म-शिक्षा।'

ऐलिस ने पाचक को कहा, "मेज पर एक प्लेट और रख दो और साथ ही चपरासी को कहो कि पण्डितजी को यहाँ बुला लाओ।"

शशिभूषण को जब भोजनालय में बुलाया गया तो वह झिझकता हुआ द्वार पर ही खड़ा रह गया। ऐलिस ने ही पण्डितजी को आमन्त्रित किया, "पण्डितजी ! आ जाइए। बाहर भेंट के कमरे में भेंट करने वालों की भीड़ होगी। इस कारण आपके विषय का महत्त्व समझकर आपको यहीं सबसे पृथक् बुला लिया है।"

पाचक को आज्ञा दी गई और वह पण्डितजी के लिए चाय और मिठाई ले आया। जब पाचक गया तो चक्रवर्ती ने पूछ लिया, "आप क्या करते हैं?"

"मैं गुरुकुल कांगड़ी का स्नातक हूँ। स्नातक होने के उपरान्त नौकरी कहीं नहीं की और पढ़ाई का कार्य बिना नौकरी के मिलता नहीं था। अतः घर पर बच्चों को हिन्दी पढ़ाने का कार्य आरम्भ कर दिया।

"पिछले वर्ष आकाशवाणी द्वारा जब सरकारी योजना को सुना तो मैंने अपने नगर में एक उच्च विद्यालय खोल दिया। मेरे पास लगभग तीस विद्यार्थी पढ़ते हैं। लगभग का अभिप्राय है कि उपस्थिति में एक-दो की कमी अथवा आधिक्य होता रहता है।

"मैं मातृभाषा हिन्दी के साथ राष्ट्रभाषा संस्कृत पढ़ाता हूँ। गणित इत्यादि भी मैं ही पढ़ाता हूँ। अभी लड़कों की परीक्षा का अवसर नहीं आया। इस पर भी मेरे अपने अनुमान से मेरे विद्यार्थी किसी अन्य विद्यालय से कम प्रतिष्ठित नहीं होंगे।

"परन्तु मैं इस समय दो बातों के विषय में आपसे परामर्श करने आया हूँ। प्रथम यह है कि एक वर्ष से मैंने वह धनराशि सरकारी कोष से नहीं निकाली जो पढ़ाने के उपलक्ष्य में सरकार की ओर से चैकों के द्वारा मुझे मिलती रही है। अब

मुझे यह सूचना मिली है कि यदि मैंने यह रुपया न निकाला तो रुपया सरकारी कोष में वापस चला जाएगा और उससे यह समझा जाएगा कि मेरा विद्यालय चल नहीं सका और वह बन्द हो गया है। साथ ही इसका यह परिणाम होगा कि मेरे विद्यालय के विद्यार्थी परीक्षा में नहीं बैठ सकेंगे।

"मैं इस विषय में कुछ निवेदन करने आया हूँ।"

"हाँ, कहिए ?"

"मैं इस समय पैंतालीस वर्ष की वयस का व्यक्ति हूँ। मुझे स्नातक की उपाधि प्राप्त किए तेईस वर्ष हो चुके हैं। इतने लम्बे काल तक मैं बिना किसी प्रकार का पारिश्रमिक लिये शिक्षण-कार्य करता रहा हूँ। मैं अब भी लेना नहीं चाहता, परन्तु मैं इससे यह नहीं चाहता कि मैं जो शिक्षा दे रहा हूँ, उससे कुछ कुमार मेरे इस श्रेष्ठ विचार के कारण शिक्षा से वंचित कर दिए जाएँ।"

"आपका निर्वाह कैसे होता है ?"

"हमारी बीस बीघा भूमि है और उससे निर्वाह योग्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त मैं पुरोहित का कार्य करता हूँ और उससे भी कुछ मिल जाता है।"

"आज ऐसे अध्यापक मिलने कठिन हो रहे हैं जो आपकी भाँति स्वतन्त्र रूप से निर्वाह करने के योग्य हैं। इस कारण उनको मिलने वाली धनराशि उनके काम के अनुसार नियत की गई है। परन्तु ऐसी कोई बात नहीं कि जो अध्यापक यह शुल्क नहीं लेंगे, उनके विद्यार्थी परीक्षा में बैठने नहीं दिए जाएँगे।

"मैं समझता हूँ कि किसी अधिकारी ने गलत सूचना दी है। शर्त केवल यह है कि आपको किसी विद्यार्थी अथवा उनके संरक्षकों से कुछ भी नहीं लेना होगा। परीक्षा के समय कोई भी विद्यार्थी चाहे वह किसी विद्यालय में पढ़ा हो अथवा स्वतः ही शिक्षा प्राप्त हो, परीक्षा का प्रवेश-पत्र दे सकेगा।

"परीक्षा उत्तीर्ण करने में कौन छात्र विद्यालय से पढ़ा है अथवा कौन निजी रूप में शिक्षा प्राप्त किए हुए है, इसमें भेदभाव नहीं किया जाएगा।

"हाँ, यदि आपके विद्यार्थियों ने शिक्षा में किसी प्रकार की विशेषता दिखाई तो उनको और आपके विद्यालय को भी पुरस्कार तो मिलेगा ही, और मैं समझता हूँ कि उससे आपको इन्कार नहीं करना चाहिए।"

"पुरस्कार एक भिन्न वस्तु है। भेंटस्वरूप तो पुरोहिताई अब भी स्वीकार करता हूँ। पुरस्कार भेंट से भिन्न होते हुए भी अस्वीकार योग्य नहीं है। मैं इसे वेतन नहीं मानता। वेतन तो कार्य में आलस्य और प्रमाद उत्पन्न करता है। पुरस्कार कार्य में लग जाने को प्रोत्साहन देता है।"

"यह ठीक है। हम ऐसा ही समझते हैं, परन्तु वेतन इस युग का धर्म है। यह विदेशी समाज-व्यवस्था का परिणाम है। हमारी भारतीय पद्धति में तो घर के नाई, भंगी, चमार से लेकर घर के पुरोहित अथवा राज्य के मन्त्री तक के वेतन पाने की

प्रथा नहीं थी। परन्तु वर्तमान युग में तो काम और भी बिगड़ चुका है। कर्मचारी न केवल वेतन पाकर प्रसन्न होते हैं, वरन् वे वेतन पाकर कर्म न करना भी अपना अधिकार मानते हैं। पिछले पच्चीस-छब्बीस वर्ष के समाजवाद के नारे से यह मनोवृत्ति उत्पन्न कर दी है।

"इस पर भी आज सरकारी योजना में आप जैसे निष्ठावान ब्राह्मणों के लिए स्थान है। यह ठीक है कि सरकारी रजिस्टर से आपके विद्यालय के अध्यापक और विद्यालय का नाम हटा दिया जाएगा। रजिस्टर में नाम तो दिए जाने वाले धन का हिसाब रखने के लिए लिखा जाता है, परन्तु जहाँ तक परीक्षा का सम्बन्ध है, कोई भी विद्यार्थी आपका प्रमाण-पत्र देकर भी परीक्षा में बैठ सकेगा। इसमें यह भी शर्त नहीं कि उसने प्राथमिक अथवा माध्यमिक बोर्ड की परीक्षा उत्तीर्ण की है अथवा नहीं।"

"इस विषय में पुनः अधिकारियों को सूचित कर देना चाहिए।"

चक्रवर्ती ने अपने दामाद को संकेत कर दिया कि इस विषय की विज्ञप्ति स्मरणार्थ निकाल देनी चाहिए। प्रधानमन्त्री का दामाद गिरिवरलाल शिक्षा-विभाग का काम देखता था। उसने पाचक को कहा, "मेरे कार्यालय से मेरी डायरी और कलम उठा लाओ।" जब यह आई तो गिरिवरलाल ने इस विषय में संकेत लिख लिया।

पण्डित शशिभूषण ने कहा, "मैं एक विशेष ढंग से धर्म-शिक्षा दे रहा हूँ। मैं तो यह चाहता हूँ कि यही ढंग देश-भर में चालू हो जाए, परन्तु इतना तो अवश्य चाहता हूँ कि मेरे विद्यालय में इस पर प्रतिबन्ध न लगाया जाए।"

चक्रवर्ती के कान खड़े हो गए। उसने खाने की प्लेट से मुख ऊपर उठा पूछ लिया, "आप किस धर्म की और किस प्रकार की शिक्षा देते हैं?"

"मैं मजहब को विद्यार्थियों के मस्तिष्क से निकाल रहा हूँ। मजहब से मेरा आशय समाज के रीति-रिवाज और मानव के समुदायों के चिह्नों से है।"

"उदाहरण देकर समझाइए।"

"उदाहरण के रूप में शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक शिशु और कुमार के लिए अनिवार्य है, परन्तु यज्ञोपवीत संस्कार तथा इसका पहनना शिक्षा से सम्बन्ध नहीं रखता और इसको मैं त्याज्य घोषित कर रहा हूँ। इसी प्रकार मैं यह कहता हूँ कि विवाह संस्कार तथा विवाह सम्बन्धी विधि-विधान अनावश्यक हैं। इसमें जो कुछ आवश्यक है; वह आय, साधन, सामर्थ्य का रखना है। इसके लिए न्यायालय में घोषणा पर्याप्त मानता हूँ। इस प्रकार हिन्दू होने में तिलक, चोटी अथवा धोती-कुर्ता इत्यादि लक्षणों को व्यर्थ मान त्याज्य समझता हूँ और हिन्दू होने के लिए वर्णाश्रम के नियत धर्मों का पालन मात्र पर्याप्त मानता हूँ......।"

चक्रवर्ती ने बात बीच में ही रोककर कहा, "यह विवाह-सम्बन्धी बात समझ

में नहीं आई। यदि पति-पत्नी में विवाद उत्पन्न हो जाए। एक कहे कि वह पत्नी है और दूसरा कहे कि वह पति नहीं है तो निर्णय कैसे होगा?"

"यह तो बताया है कि न्यायालय में पति-पत्नी होने की घोषणा पर्याप्त है।"

"परन्तु न्यायालय में ही क्यों? घर के तथा मौहल्ले-टोले के दस-बीस व्यक्तियों के सम्मुख क्यों नहीं?"

"मौहल्ले-बिरादरी के लोगों से न्यायाधीश अधिक विश्वस्त है।"

"न्यायाधीश का निर्णय भी तो साक्षियों के आश्रय होता है। इससे आप साक्षी को गौण कैसे कह सकते हैं?"

पण्डित शशिभूषण अपनी योजना में त्रुटि समझ गया। उसने कह दिया, "यह भी हो सकता है।"

"हम समझते हैं कि साक्षी होना अधिक आवश्यक है। न्यायाधीश का रजिस्टर तो गौण प्रमाण है।"

शशिभूषण समझ गया कि उसकी योजना में कहीं छिद्र है। प्रधानमन्त्री ने कहा, "इसी प्रकार किसी के आभ्यन्तरिक गुणों के लिए बाह्य लक्षण भी हो जाएँ तो क्या हानि है?"

शशिभूषण ने अपनी योजना का उद्देश्य बता दिया। उसने कहा, "यह मानव-मन का दोष है कि यह वास्तव से आडम्बर को अधिक पसन्द करता है। इस कारण वास्तव की भूल आडम्बर अर्थात् मजहब को वरीयता देने लगता है।"

"परन्तु पण्डितवर, इस रोग का निवारण मन की कामनाओं को कुण्ठित करना नहीं, वरन् इनका उचित एवं सीमित प्रयोग करना है।"

चक्रवर्ती ने बात समाप्त करते हुए कहा, "अब मेरी इस सम्मति के प्रकाश में आप अपने विद्यालय में धर्म-शिक्षा पर एक निबन्ध लिखकर भेज दें। हमारा शिक्षा-विभाग उसका अध्ययन करेगा और उस पर अपनी टिप्पणी लिखकर सब अध्यापकों के लिए वितरण कर देगा। परन्तु उसको स्वीकार करना अथवा पूर्ण या आंशिक रूप में अस्वीकार करना अध्यापकों के अपने विचार का विषय है।

"हम इस विषय में आज्ञा नहीं कर सकते।"

: ६ :

इस प्रकार शिक्षा की राजनीति से मुक्ति सम्पन्न की गई। इस स्वतन्त्र शिक्षा से स्वतन्त्र आर्थिक व्यवस्था का प्रादुर्भाव होने लगा। धर्म का भी निर्मल स्वरूप सबके सामने आने लगा।

भारत कल्पनाशील प्राणियों का देश है। हिन्दू-समाज के सब शास्त्र कल्पना को प्रोत्साहन देने वाले हैं, परन्तु कल्पना को सत्यता की कसौटी बुद्धि और अनुभव पर बल दिया जाने लगा। इस कसौटी से कल्पना दो भागों में बँटने लगी। मिथ्या अर्थात् कृत्रिम कल्पना तथा आधार-युक्त कल्पना। यह दूसरी प्रकार की कल्पना

अनुमान प्रमाण होने से सत्य सिद्धान्त की सूचक बनने लगी। इससे समाज में चतुर्विध उन्नति होने लगी।

श्यामसुन्दर चक्रवर्ती के मन्त्रित्व काल के पाँच वर्ष व्यतीत हो रहे थे। लोक-सभा के नवीन निर्वाचन होने जा रहे थे। प्रश्न उपस्थित हुआ कि चक्रवर्ती आगामी चुनावों में प्रत्याशी हो अथवा न हो ?

ऐलिस चाहती थी कि निर्वाचन तो लड़ना चाहिए, परन्तु प्रधानमन्त्री पद किसी अन्य को दे देना चाहिए।

चक्रवर्ती का कहना था, "परन्तु एक बार चुनावों में निर्वाचित हुआ तो दल के सदस्य पुनः प्रधान बनने पर आग्रह करेंगे। तब उनके आग्रह को अस्वीकार करना कठिन हो जाएगा।"

"आपकी आयु अभी अट्ठावन वर्ष के लगभग है। मैं समझती हूँ कि अभी आपके जीवन-कार्य से निवृत्त होने का समय नहीं आया। यदि दल के लोग आग्रह करेंगे तो अस्वीकार करने का कोई कारण नहीं है।"

"मैं तो पचास वर्ष की आयु में वानप्रस्थ ग्रहण करने वाला था। अब तो अट्ठावन वर्ष का हो रहा हूँ।"

"वानप्रस्थी तो आप अब भी हैं। गृहस्थ आश्रम का कौन-सा काम आप करते हैं ?

"यह ठीक है कि सरकारी कोठी में रहते हैं और नित्य धुले श्वेत वस्त्र धारण करते हैं। आपने भगवे नहीं पहने, परन्तु ये बाहरी चिह्न तो गौण हैं, मुख्य तो आपका जीवन-कार्य है। आप इस समय अनुभव लाभ कर रहे हैं। अभी कुछ काल तक और अधिक अनुभव संचय करिए। तब जीवन-कार्य से उन्मुक्त होने का समय आ जाएगा।"

इस प्रकार ऐलिस की प्रेरणा से श्यामसुन्दर ने निर्वाचन लड़ा और बिना विरोध के निर्वाचित हो गया। पुनः उसका दल विशाल बहुमत से सफल हुआ। और जब पुनः श्यामसुन्दर को नेता चुना गया तो वह मौन रहा। वास्तव में उसके जीवन में व्यावहारिकता ऐलिस ने ही उत्पन्न की थी। वह स्वभाव से क्षत्रिय था, परन्तु उस पर नियन्त्रण ऐलिस का था।

कभी श्यामसुन्दर जब कार्य से रिक्त हो अन्तर्मन में चिन्तन करने लगता था तो विचार किया करता था कि फ्रांस की विपत्ति के समय मुक्ति सेना की सेनानी ऐलिस कैसे उसकी जीवन-नौका को खेने वाली बन गई है और सफलतापूर्वक खेती हुई ले भी जा रही है ?

वह ऐलिस के जीवन पर चिन्तन करता तो उसे प्रतीत होता कि ऐलिस में एक गुण है। वह वस्तुस्थिति का विश्लेषण दूसरे की अपेक्षा शीघ्र और ठीक करती है। इसका कारण तो स्पष्ट ही था कि वह पूर्वजन्म के कर्मों के आधार पर निर्मल और

तीक्ष्ण बुद्धि वाली थी। वह अपने को उस गति से चलते हुए नहीं पाता था जिससे वह चल सकती थी।

वह विचार करने लगा था कि ऐलिस अवश्य पूर्वजन्म में किसी भारतीय हिन्दू की सन्तान रही है और उसने उस जन्म में योग, ध्यान और समाधि अभ्यास किया है जिससे उसे इस प्रकार की निर्मल बुद्धि मिली है।

ऐलिस की बुद्धि में विद्युत् की भाँति सत्य चमक उठता था और उस क्षणिक चमक में ही वह अपना मार्ग देख लेती है तथा उस मार्ग पर चल पड़ती है। अनेक बार उसकी इस सूझ-बूझ पर कार्य करके वह लाभ प्राप्त कर चुका था।

अतः वह ऐलिस की सम्मति से ही दोबारा और फिर तीसरी बार निर्वाचन लड़ा था। तीनों बार वह देशवासियों के अपार समर्थन से निर्वाचित हो प्रधानमंत्री बना था।

पन्द्रह वर्ष के उसके प्रधानमन्त्रित्व-काल में भारत का कायाकल्प हो गया। इसे पुनः नवीन जन्म मिला। नया शरीर निर्माण हुआ, परन्तु आत्मा वही रही जो लाखों वर्ष से इस शरीर में थी।

अब के नव-निर्वाचनों से पहले परिवार एकत्रित हुआ। ऐलिस के पोते, पोतियाँ और दोहते, दोहतियाँ हो चुके थे। सबसे छोटी लड़की पद्मा का भी विवाह होकर उसके दो बच्चे थे। रात के भोजन के समय श्यामसुन्दर ने घोषणा की, "आज भोजनोपरान्त शीघ्र सो जाना। कारण यह कि कल घर में यज्ञ होगा। उस यज्ञ के लिए सबको प्रातः पाँच बजे स्नानादि से निवृत्त हो यज्ञशाला में आना है।"

पद्मा की छोटी लड़की नीटू ने पूछ लिया, "बाबा! मैं भी?"

"हाँ। तुम मेरी बेटी जो हो।"

नीटू इस समय चार वर्ष की थी। बाबा की बात सुन वह अपनी माँ पद्मा का मुख देखने लगी। क्योंकि वह तो अपने को अपनी माँ की लड़की मानती थी।

पद्मा ने उसके मन के भाव को समझ कह दिया, "हाँ, नीटू! ये बाबा हैं न। बाबा तो माँ से बड़े होते हैं। इससे तुम, तुम्हारे पिता और माता तुम्हारी बड़ी बहन सब बाबा के बेटे-बेटियाँ ही हैं।"

निश्चयानुसार अगले दिन पाँच बजे कोठी के उस कमरे में जहाँ पूजा-पाठ किया जाता था, सारा परिवार एकत्रित हो गया। ऐलिस हवन-कुण्ड में लकड़ियाँ बीन रही थी। पद्मा सामग्री में घी मिला रही थी। गिरिवरलाल अगरबत्तियाँ जला रहा था। अन्य परिवार के सदस्य बैठे यज्ञारम्भ की प्रतीक्षा कर रहे थे।

श्यामसुन्दर ठीक पाँच बजे यज्ञशाला में आया और हवन आरम्भ हो गया। तदनन्तर सन्ध्योपासना हुई और जब यज्ञ का प्रसाद बाँटा जाने लगा तो श्यामसुन्दर ने घोषणा कर दी, "मैं इस बार निर्वाचन नहीं लड़ रहा। परिणामस्वरूप आज से

दो मास उपरान्त मैं देश का प्रधानमन्त्री नहीं रहूँगा और आप सबको यह कोठी खाली करनी होगी।"

प्रधानमन्त्री के लड़के ने पूछ लिया, "क्या माताजी भी इस विचार से सहमत हैं ?"

ऐलिस ने उत्तर स्वयं देना उचित समझा। उसने कहा, "नहीं। यह तुम्हारे पिताजी का निश्चय है। रात हम इस व्यवहार पर विचार करते रहे हैं। हममें इस पर युक्ति-प्रतियुक्ति हुई हैं। यद्यपि युक्ति में मैं पराजित हो गई हूँ, परन्तु मेरा मन अभी माना नहीं कि तुम्हारे पिता का कार्य समाप्त हो गया है।"

"तो पिताजी !" पद्मा ने कहा, "माताजी की बात मान जाइए।"

"तुमने सुना है न कि तुम्हारी माताजी युक्ति से मुझे समझा नहीं सकीं। और मैंने अपनी बात भली-भाँति स्पष्ट कर दी है कि मुझे अब राज्य-कार्य छोड़कर अपने विषय में भी विचार करना चाहिए।"

ऐलिस ने पुनः बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "देखो, पद्मा ! हमारा मतभेद इस विषय पर नहीं कि कार्य में परिवर्तन होना चाहिए अथवा नहीं। हम दोनों इस बात पर सहमत हैं कि यह परिवर्तन होना चाहिए। मतभेद इसकी तिथि के विषय में है। मैं इस बात को समझा नहीं सकी कि इस परिवर्तन को पाँच वर्ष तक स्थगित करने से क्या लाभ होगा।"

वैसे परिवार के बहुसंख्यक सदस्य इस बात से प्रसन्न थे कि परिवार के जीवन में परिवर्तन आ रहा है।

श्यामसुन्दर इस बार निर्वाचनों में प्रत्याशी नहीं था। इस पर भी उसके दल ने यह घोषित किया था कि आधारभूत नीति चक्रवर्ती महोदय की ही चलेगी।

परिणाम यह हुआ कि भारत की उन्नति चालू रही। भारत अब अणु बम क्लब में सम्मिलित था। कुछ अन्य देश भी इस क्षेत्र में आ चुके थे। भारत तकनीकी उन्नति के क्षेत्र में उन्नत राज्यों से अधिक नहीं तो उनके बराबर कुशलता प्राप्त कर चुका था।

इस समय सुकेत के पण्डित शशिभूषण भारत के शिक्षा-मन्त्री थे और वह देश में युवकों और प्रौढ़ व्यक्तियों की शिक्षा को दिशा दे रहे थे।

पाँच वर्ष और व्यतीत हो चुके थे। श्यामसुन्दर अब दिल्ली छोड़ उत्तराखण्ड की पहाड़ियों में किसी निर्जन स्थान पर कुटिया बनाकर रहता था। उसके साथ उसकी पत्नी ऐलिस रहती थी। शेष परिवार के सदस्य भारत के विभिन्न नगरों में स्थित हो अपने-अपने परिवार चलाने में सक्रिय थे।

जानकी और नीति श्यामसुन्दर की पोतियाँ थीं। वे देश में सार्वजनिक सुख-सुविधा प्रसार के लिए कार्यरत थीं।

: ७ :

यह सब शिक्षा में परिवर्तन का प्रताप था। भारत को स्वाधीन हुए बावन वर्ष हो चुके थे। इन बावन वर्षों में प्रथम पच्चीस-तीस वर्ष तो देश में समाजवाद लाने में नष्ट किए गए। परिणामस्वरूप समाज के प्रत्येक घटक की महत्त्वाकांक्षाएँ तो गगन पार कर गईं, परन्तु उनकी पूर्ति के साधन रसातल में चले गए।

देश में कुछ तकनीकी उन्नति हुई, परन्तु अपार ऋण एवं भीख के आश्रय। इस तकनीकी उन्नति से हुई समृद्धता का लाभ आनन्द और प्रसन्नता में नहीं हुआ। देश में बेकारी बढ़ी, जेबों में नोटों की संख्या बढ़ी; परन्तु नोटों की क्रयशक्ति कम हुई। किसी आपात्कालिक स्थिति में जी सकने की क्षमता कम हुई और पूर्ण जाति पर भय और भय-जन्य जड़ता में अपार वृद्धि हुई।

इस समय शिक्षा में क्रान्ति आरम्भ हुई। आचार्य श्यामसुन्दर के वृहत् प्रयत्न से शिक्षा के बन्धन राजनीति और भोगवाद समाप्त हुए। पण्डित शशिभूषण के एकाकी प्रयत्न से शिक्षा में आस्तिकवाद का समावेश हुआ। इस प्रकार यह क्रान्ति सम्पन्न हो गई। जानकी देवी की योजना कि पैंसठ तल का एक मकान निर्माण किया जाए जिसमें तीन हजार से ऊपर व्यक्ति रह सकें, कार्यान्वित हो गई। उन्नति और आधुनिक सुख-साधनों से सम्पन्न एक गाँव एक ही मकान में निर्माण कर दिया गया।

जानकी देवी टाटा निर्माण शिक्षा-संस्थान से इंजीनियर बन निकली थी और वह इस मकान का निर्माण कर मानव-समाज के उत्क्रमण के लिए मार्ग का विस्तार करने की योजना बना रही थी, जब उसका सम्पर्क डॉक्टर जीवाजी राव कुलकर्णी से हुआ।

अपनी मकान की योजना सरकार के निर्माण विभाग से स्वीकार करवा कर जानकी देवी मकान निर्माण के लिए एक मर्यादित संस्था बनाने के लिए विज्ञापन देने लगी। इसी विज्ञापन को पढ़कर कुलकर्णी जो उस समय भी पागलपन की चिकित्सा में विशेष ज्ञान प्राप्त करने में संलग्न था, समझा कि एक और पागल इस संसार में टपक पड़ा है। उसने टेलीफोन द्वारा जानकी देवी से सम्पर्क करने का यत्न किया और शाम को पाँच बजे मिलने का समय निश्चित हो गया।

डॉक्टर समझा था कि यह जानकी देवी भी एक पागल है और देश के पाँच-छः सहस्र व्यक्तियों के जीवन को तथा देश के एक अरब रुपये को नाली में बहा देने के लिए योजना बना रही है। अतः इस विचार से कि उसकी योजना को और आगे चलाने से रोकने के लिए उसे एक यत्न करना चाहिए, ठीक पाँच बजने में पाँच मिनट रहते वह जानकी देवी के निवास-स्थान पर जा पहुँचा।

डॉक्टर ने द्वार पर लगा घण्टी का बटन दबाया तो एक पन्द्रह-सोलह वर्ष की कुमारी ने द्वार खोला और पूछ लिया, "आपका शुभ नाम?"

"डॉक्टर जीवाजी राव।"

लड़की ने कलाई पर बँधी घड़ी देख कहा, "आइए !"

कुछ ही सैकेण्ड में वह जानकी देवी के सामने उपस्थित कर दिया गया। जानकी देवी ने उठकर डॉक्टर से हाथ मिलाया और उसे अपने समीप सोफे पर बिठा लिया और नीति को चाय बनाने को कह दिया।

सामने रखी तिपाई पर चाय के बर्तन और कुछ मिठाई खाने को रखी थी। नीति ने चाय के विषय में डॉक्टर से पूछा, "एक प्याले में कितनी चीनी लेते हैं ?"

"एक चम्मच।"

नीति प्याले में चीनी डालने लगी तो जानकी देवी ने कह दिया, "बहुत कम चीनी लेते हैं ?"

"हाँ। डाक्टर हूँ न।"

"खैर, छोड़िए। यह मेरा विषय नहीं है। आप कब से यहाँ चिकित्सा कर रहे हैं ?"

"मुझे चिकित्सा-शास्त्र की परीक्षा पास किए दो वर्ष हो चुके हैं। मैं एक विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करने में लगा हूँ। इस कारण मैं उसीके रोगी लेता हूँ।

"मेरा विचार है कि अन्तरिक्ष में उड़ने की जो होड़ लग गई है, वह उन्माद के स्तर पर पहुँच रही है और जिस रोग में वृद्धि हो रही हो उसकी चिकित्सा ही करनी चाहिए। मुझे अपनी योजना में सफलता मिल रही है। अभी भी बम्बई के चोटी के धनी परिवारों में से दस के लगभग उन्माद के रोगी मिल चुके हैं। मैं प्रत्येक रोगी से दस सहस्र रुपया फीस लेता हूँ और शर्तियाँ उनके रोग का निवारण करता हूँ।"

"मुझे आपकी धनवान होने की योजना ठीक प्रतीत हुई है। यह मदात्य रोग धनियों में अधिक है और उनके चिकित्सक बनने से शीघ्र ही धनवान बना जा सकेगा।

"आपका क्लिनिक कहाँ है ?" जानकी देवी ने पूछा।

"यही बताने का विचार कर रहा हूँ। आप भी किसी धनवान की बेटी प्रतीत होती हैं।"

"हाँ। परन्तु आर्थिक सम्पन्नता से अधिक बुद्धि की सम्पन्नता ही अपने में दिखाई दे रही है।

"देखो, डॉक्टर साहब ! मैंने एक अरब रुपये की योजना बनाई है। इसका वृत्तान्त तीन सौ पृष्ठ की बड़े आकार की पुस्तक में लिख डाला है। यह योजना सरकार के निर्माण विभाग से स्वीकार हो चुकी है और बुद्धिमत्ता की प्रथम परीक्षा तो उसी विभाग के विशेषज्ञों ने की है। योजवा बिना किसी संशोधन के स्वीकार कर ली गई है।

"इस योजना की दूसरी परीक्षा इसके लिए धन उपलब्ध करना था। पिछले तीन दिन के विज्ञापन से पैंतालीस करोड़ की पूंजी के प्रस्ताव आ चुके हैं। क्या आप भी इसमें रुचि रखते हैं?"

"हाँ। रुचि तो रखता हूँ, परन्तु इस योजना का विरोध करने में।"

"ओह!" जानकी देवी ने मुख को चाय का प्याला लगाते-लगाते रुककर कहा, "तब तो आपकी बात बहुत ध्यान से सुननी चाहिए।"

"हाँ। मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। इसी कारण आपके निमन्त्रण को स्वीकार कर यहाँ चला आया हूँ।"

"हाँ, तो किस आधार पर आप इस योजना को पसन्द नहीं करते? क्या आपने मेरी योजना की पुस्तक पढ़ी है?"

"वह पुस्तक आपने प्रकाशित करवा दी है?"

"हाँ। एक सहस्र प्रतियाँ प्रकाशित करवाई थीं जिसमें से नौ सौ से अधिक बिक चुकी हैं।"

"मैं तो इसके नैतिक पक्ष पर ही बात करना चाहता हूँ।"

"परन्तु डॉक्टर साहब! इसके नैतिक पक्ष पर भी मैंने उस पुस्तक में ही अपने विचार विस्तारपूर्वक लिखे हैं।"

डॉक्टर समझ गया कि वह किसी अति चतुर व्यापारी से बात कर रहा है। उसने जानकी देवी के सम्बन्ध में और अधिक जानने के लिए पूछ लिया, "आपके पिताजी कहाँ के रहने वाले हैं? आप न तो मराठिन प्रतीत होती हैं और न ही गुजरातिन।"

"मैं वैसे तो एक पंजाबी परिवार में उत्पन्न हुई हूँ, परन्तु मेरे प्रपितामह पंजाब से मध्य प्रदेश में आ गए थे। मेरे बाबा आचार्य श्यामसुन्दर चक्रवर्ती के एक फ्रांसीसी लड़की से मेरे पिता का जन्म हुआ था। उनका नाम पण्डित निरंजन देव है। वह इस समय हांग-कांग में व्यापार करते हैं। मैं अपनी इस छोटी बहन के साथ यहाँ रहती हूँ।"

डॉक्टर कुलकर्णी परिवार का परिचय प्राप्त कर भौंचक्का रह गया। आचार्य श्यामसुन्दर वर्तमान भारत का बीजारोपण करने वाला माना जाता था। और आचार्य के इकलौते पुत्र के विषय में भी वह सुन चुका था। वह हांग-कांग के चार-पाँच धनी-मानियों में एक था।

डॉक्टर कुलकर्णी ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तो आपकी योजना को एक पागल के मस्तिष्क की उपज मानकर घर से चला था, परन्तु आपके परिवार का परिचय प्राप्त कर तो मेरे विचार को धक्का पहुँचा है।"

"तो ऐसा करिए, पहले मेरी पुस्तक पढ़ लीजिए। बाद में इस विषय पर बात सुन लूँगी।

"यदि इस योजना में आप भागीदार बनने का विचार रखते हों तो आप प्रस्ताव-पत्र अभी भरकर दे जाइए। बाद में बनना चाहेंगे तो इसमें स्थान न रहने पर निराश होना पड़ेगा।"

डॉक्टर ने जेब से अपना पर्स निकाल पचहत्तर रुपये के नोट गिन जानकी देवी की प्लेट के पास रखकर कहा, "बिना पढ़े तो मैं इस योजना में भागीदार बनना पागलपन का आरम्भ समझता हूँ।"

"ठीक है। आप पढ़िए और यदि तब तक इस बस में आपके लिए स्थान रहा तो मिल जाएगा, अन्यथा आपको अगली बस की प्रतीक्षा करनी होगी।"

जानकी देवी चाय समाप्त कर चुकी थी। वह उठी और दीवार में बनी एक अलमारी खोल उसमें से एक बड़ा-सा ग्रन्थ निकालकर ले आई। ग्रन्थ पर प्रस्तावित गृह के मॉडल का चित्र बना था।

चित्र अत्यन्त आकर्षक दिखाई देता था। जानकी देवी ने ग्रन्थ सामने रख रुपये अपनी बहन नीति को देकर कहा, "एक रसीद काट दो।"

नीति उठ रसीद काटने गई तो डॉक्टर ने पूछ लिया, "आप बात तो इस प्रकार करती हैं कि मानो आप पचास वर्ष की प्रौढ़ा अनुभवी स्त्री हो। परन्तु शरीर और आँखों की चमक से आप पच्चीस वर्ष से कम वयस की प्रतीत होती हैं।"

"अपनी बातों में प्रौढ़ता का भास तो मुझे होता नहीं। हाँ, अपने यौवनावस्था की सतर्कता, स्फूर्ति और दूर-दृष्टि तो अनुभव हो रही है।"

इस समय टेलीफोन की घण्टी बजी। जानकी देवी ने चोंगा उठाया और पूछा, "कौन?" इसका उत्तर सुन जानकी देवी ने कह दिया—

"ध्रुव जी! मैं चाय पी चुकी हूँ। आज यहाँ डॉक्टर कुलकर्णी आए हैं और कह रहे हैं कि मुझमें पागलपन के लक्षण दृष्टिगत हो रहे हैं। मैं समझती हूँ कि आप उनसे मिल लीजिए। वह मेरे विषय में आपको बहुत कुछ बता सकेंगे।"

जानकी देवी ने चोंगा टेलीफोन पर रखा तो डॉक्टर ने कह दिया, "मैंने आपको वैसी कोई बात नहीं कही जो आप इस व्यक्ति को कह रही थीं।"

"डॉक्टर! सत्य बताइए, आपके मन में यह बात थी अथवा नहीं?"

डॉक्टर गम्भीर भाव में कहने लगा, "हाँ। जब मैं घर से चला था तो मैं अपने लिए एक पागल रोगी प्राप्त करने की आशा से ही चला था। यहाँ पहुँचकर मेरा विचार विलीन हो गया। आपके परिवार का परिचय प्राप्त कर तो पागलपन के स्थान विशेषता दृष्टिगत होने लगी है।

"यद्यपि अभी भी मैं आपकी योजना की सफलता के विषय में विश्वास नहीं कर सका कि यह सफल होगी, परन्तु आपकी योजना की सफलता के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। इनके साथ ही अपने लिए एक रोगी पाने की आशा विलीन होने लगी है।"

जानकी देवी हँस पड़ी और बोली, "इस पर भी आपकी भेंट सफल भी हो सकती है। इसके विषय में बहुत कुछ भाग्य पर निर्भर है।"

"तो आप भाग्य को मानती हैं?"

"मैं प्राणी में जीवात्मा को मानती हूँ। उसको कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परतन्त्र मानती हूँ। यह फल ही जब पूर्वजन्म के कर्म का हो तो भाग्य कहलाता है।"

"परन्तु यह दिखाई नहीं देता।"

"इस कारण कि आपके चक्षु मुँदे हुए हैं।"

"जी नहीं। यदि यह होता तो मैं बम्बई नगर के भीड़-भड़क्के में गाड़ी चलाता हुआ कैसे आ सकता था?"

"परन्तु भाग्य देखने वाली आँखें दूसरी होती हैं। आपकी वे आँखें बन्द प्रतीत होती हैं।"

"और आपकी वे आँखें खुली हैं?"

"मैं ऐसा ही समझती हूँ। परन्तु अब मेरा एक अन्य से मिलने का समय हो गया है। आपके फिर कब दर्शन होंगे?"

"आप अपना दिल्ली का टेलीफोन नम्बर बता दीजिए। मैं दो-तीन दिन में आपको टेलीफोन करने का यत्न करूँगा।"

"वह टेलीफोन नम्बर इस पुस्तक में लिखा है।"

नीति हाथ में रसीद लिये आ गई थी। उसने पचहत्तर रुपए की नकद दाम वसूली की रसीद दी तो जानकी देवी उठ पड़ी और डॉक्टर से हाथ मिला, उसे विदा करने लगी।

जानकी देवी मुस्करा रही थी। डॉक्टर गम्भीर भाव में था। वह पुस्तक बगल में दबाए नीति देवी के साथ ड्राइंग-रूम से बाहर जाते हुए पूछने लगा, "आप भी बहन के साथ जा रही हैं?"

"जी नहीं। मैं तो यहीं रहूँगी।"

"मैं आपसे मिलना चाहूँगा।"

"ठीक है। समय निश्चय करके आइएगा। मैं कॉलेज में पढ़ती हूँ।"

"ओह! किस कॉलेज में पढ़ती हैं?"

"रवि शंकर विद्यालय में। चिकित्सा-शास्त्र पढ़ रही हूँ।"

डॉक्टर ने नीति से हाथ मिलाया और लिफ्ट की ओर चल पड़ा।

: ८ :

इसके तीन दिन उपरान्त की बात है कि नीति अपनी बहन जानकी देवी से टेलीफोन पर बात कर रही थी। जानकी देवी नयी दिल्ली में पृथिवीराज रोड पर एक फ्लैट में ठहरी हुई थी। नीति ने बताया कि इन तीन दिनों में डॉक्टर कुलकर्णी

उसके विषय में बहुत कुछ पूछ चुका है और वह जानकी से विवाह करने की अभिलाषा रखता है। जानकी से सीधे वह उसकी अस्वीकृति के भय से बात नहीं कर पा रहा है। वह दिल्ली आना चाह रहा है।

सारी बात ध्यान से सुन जानकी ने कह दिया कि उसे आने दे। परिणामस्वरूप डॉक्टर कुलकर्णी उससे मिलने नयी दिल्ली जा पहुँचा।

डॉक्टर कुलकर्णी जिस समय जानकी देवी के पास पहुँचा उस समय वह ठेकेदारों से भवन-निर्माण के विषय में बात कर रही थी। इस कारण डॉक्टर को अपने 'विजिटिंग कार्ड' भीतर भेजने के उपरान्त आधा घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ी। जब जानकी देवी बाहर आई तो उसने कहा, "डॉक्टर साहब ! आप बिना समय निश्चय किये आए हैं, इस कारण आपको प्रतीक्षा करनी पड़ी है। मेरा यह समय किसी अन्य से भेंट के लिए नियत था।"

"मैं सुन चुका हूँ कि आप व्यस्त थीं, परन्तु मैं इस प्रतीक्षा की सम्भावना लेकर ही आया था।"

"खैर, अब तो मैं एक घण्टे के लिए रिक्त हूँ। आज्ञा करिए, क्या चाहते हैं आप ?"

"आपकी बहन ने मुझे बताया है कि मेरा प्रस्ताव आपके पास पहुँच चुका है और उस प्रस्ताव के स्वीकार किये जाने में केवल इतनी देर है कि मेरी 'रिंग' आपकी उँगली पर ठीक आनी चाहिए।"

"हाँ। परन्तु 'रिंग' तो संकेत है न किसी अन्य बात का। अतः रिंग के ठीक होने का आशय ही यह है कि आपकी अपनी पत्नी के विषय में क्या धारणा है ?"

"मेरा विचार है कि वह मेरी पत्नी होनी चाहिए, मेरे बच्चों की माँ होनी चाहिए, मेरे गृह की गृहिणी होनी चाहिए और मेरे सब भले कामों में भागीदार होनी चाहिए।"

जानकी देवी समझ गई कि डॉक्टर के विषय का विश्लेषण ठीक दिशा में है। इस कारण उसने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "परन्तु मेरे स्वभाव में व्यावसायिकता है। उसे आप किस प्रकार स्वीकार करेंगे ?"

"यह तो मैं देख रहा हूँ। उसको देखते हुए ही मैं प्रस्ताव कर रहा हूँ। साथ ही आप भी देख रही हैं कि मैं भी एक व्यवसाय में रुचि रखता हूँ और उसको करते हुए ही मैं विवाह का प्रस्ताव कर रहा हूँ। आज भारत में यह प्रथा है कि दिन में आठ घण्टे सब नर-नारी जीविकोपार्जन का कार्य करें। वह प्रथा भंग करने की मैं आवश्यकता नहीं समझता। उसका कारण यह है कि उन आठ घण्टों के अतिरिक्त सोलह घण्टे अन्य हैं। उनमें से कुछ समय ही मैं अपनी संगति के लिए माँग रहा हूँ।"

"आपने अभी कहा है कि आपकी पत्नी आपके भले कार्यों में भागीदार होनी

चाहिए। इस कारण उन भले कामों की सूची की झलक भी मिल जाए तो मेरे निश्चय करने में सहायता मिलेगी।"

"अभी तक तो उन कामों का एक अस्पष्ट-सा चित्र मेरे मस्तिष्क में है। परन्तु भले काम मैं उनको मानता हूँ जो मानव-कल्याण के लिए हों। मानव-कल्याण मेरे मस्तिष्क में स्पष्ट है। मनुष्य की इतर जीव-जन्तुओं से विशेषता को अधिकाधिक विशेषता प्रदान करना।"

"मनुष्य की पशुओं से विशेषता तो धर्म-कर्म की ही है। परन्तु धर्म तो सर्वत्र और सदैव निश्चय करने की बात है। उस निश्चय में मतभेद भी तो हो सकता है।"

"हाँ। परन्तु उस मतभेद को सुलझाने का भी तो हम मनुष्यों ने एक उपाय विचार कर रखा है। वह बुद्धि का प्रयोग है और बुद्धि का सर्वश्रेष्ठ प्रयोग तब होता है जब उसको निर्णय करने में स्वतन्त्रता दी जाए।

"देखिए जानकी देवीजी! मेरी मनुष्य के सम्बन्ध में धारणा यह है कि यह बुद्धिशील प्राणी है। इसको करणीय कर्म के विषय में स्वतन्त्रता दी जाए और पति-पत्नी के साँझी रुचि की बातों में परस्पर सामंजस्य निर्माण किया जाए।

"मैंने जो कुछ अधिकारों के अतिरिक्त बताया है वह मानव-कर्तव्यों के विषय में बताया है। कर्तव्यों में सामंजस्य और अधिकारों में स्वतन्त्रता।"

"मैं समझती हूँ कि विवाह हो सकता है, परन्तु उसके लिए आपको हांग-कांग की यात्रा करनी पड़ेगी। पिताजी की स्वीकृति यद्यपि निश्चय ही है; इस पर भी लेनी तो होगी ही।"

"आप मुझे पत्र दे दें। मैं आज ही उनकी सेवा में रवाना हो जाऊँगा।"

जानकी देवी एक क्षण की भी देर किए बिना उठी और अपने 'स्टडी-रूम' में जा पत्र लिख लाई। पत्र खुला था और उसमें लिखा था—

'पूज्य पिताजी! पत्रवाहक डॉक्टर जीवाजी राव कुलकर्णी एक सज्जन व्यक्ति प्रतीत हुए हैं और आपसे एक काम लेना चाहते हैं।

'मेरा आग्रह है कि आप इनकी बात सुन लें और यथासम्भव उस कार्य को करने की कृपा करें। यदि वह कार्य आपके बस का न हो तो इनको बता दें जिससे यह अपने काम को सिद्ध करने के लिए कोई अन्य द्वार खटखटा सकें।

स्नेह-भाजन पुत्री—
जानकी।'

इस प्रकार पत्र लिखने में एक मिनट ही लगा था और डॉक्टर उसे 'स्टडी-रूम' से एक मिनट में ही बाहर आते देख उसकी कार्य में तत्परता तथा कुशलता पर चकित था।

एक घण्टे के अवकाश में अभी बीस मिनट और थे। अतः घड़ी में समय देख

जानकी देवी ने पूछा, "हमारा कार्य समाप्त हो गया है। अतः आप चाय पीजिएगा अथवा कॉफी?"

"मैं तो कॉफी पसन्द करता हूँ।"

जानकी देवी ने घण्टी बजाकर नौकर को बुला लिया और उसे कॉफी तथा खाने को कुछ लाने की आज्ञा दे दी।

कॉफी पीते हुए डॉक्टर ने कहा, "मुझे आशा थी कि 'रिंग' का नाप-तोल हांगकांग में होगा। इस कारण मैं वहाँ जाने के लिए तैयार होकर आया हूँ।

"यदि आप स्वीकृति दें तो मैं यहाँ से ही हवाई कार्यालय पर टेलीफोन कर पता कर लूँ कि किस समय जाने को स्थान मिल सकता है।"

टेलीफोन करने पर यह पता चला कि एक घण्टे में यदि टिकट क्रय कर लिया जाए तो अगले दिन प्रातः छः बजे हवाई जहाज मिल जाएगा।

अतः डॉक्टर ने कॉफी पी और कनाट सरकस में हवाई कार्यालय पर जाकर टिकट खरीद लिया। वहीं एक होटल में वह ठहरा हुआ था।

तीसरे दिन डॉक्टर जानकी देवी के पिता निरंजनदेव चक्रवर्ती के साथ दिल्ली चला आया। सब सम्बन्धी दिल्ली में एकत्रित हो गए और विवाह हो गया।

: ६ :

जितना तेज भागने वाला यान हो, उसके चालक को उतना ही अधिक निश्चयात्मक-बुद्धि होना चाहिए। अन्यथा यान की टक्कर हो जानी अधिक सम्भव है।

यही रहस्य था वर्तमान तकनीकी युग में मनुष्य के जीवित रहने का। इस रहस्य को भारत की सरकार और विद्वान् लोग समझ गए थे। अतः अन्तरिक्ष के नक्षत्रादि की गति से चलने वाले संसार में यदि न्यूनातिन्यून दुर्घटनाएँ होती थीं तो वह तकनीकी उन्नति के साथ-साथ मनुष्य के मन एवं बुद्धि के भी तीव्र गति से निश्चय लेने के स्वभाव से था।

जानकी देवी ने विवाह का निश्चय करने में एक ही मिनट लिया था। जिस समय नीति का इस विषय में प्रथम टेलीफोन आया था उसी समय टेलीफोन सुनते-सुनते ही जानकी देवी ने निश्चय कर लिया था कि यदि अन्य बातें सुगम हुईं तो विवाह हो सकता है।

जिस दिन कुलकर्णी जानकी देवी से मिलने आया था तब केवल आधे घण्टे की बात से जीवन का सम्बन्ध बन गया। निरंजनदेव चक्रवर्ती को भी निश्चय करने में इतनी देर नहीं लगी जितना काम को समेटकर दिल्ली के लिए रवाना होने में लगी थी।

एक सप्ताह में डॉक्टर अपनी नव-विवाहिता पत्नी के साथ बैठा जीवन का कार्यक्रम बना रहा था।

विवाह की रीति आर्यसमाज मन्दिर में पूरी की गई थी। वहाँ के पुरोहित ने संस्कार पढ़ा और पति-पत्नी ने प्रथम सम्मिलित हवन-यज्ञ किया और सब एकत्रित सम्बन्धियों ने बधाई दे दी। वहाँ से पति-पत्नी पृथिवीराज रोड वाले फ्लैट में आ गए थे। निरंजनदेव अपने सम्बन्धियों को लेकर आर्यसमाज मन्दिर से जनपथ होटल में ठहरने चला गया था। उसी दिन रात के साढ़े-नौ बजे जनपथ होटल के रिसैप्शन-रूम में विवाह के उपलक्ष्य में भोज था।

जानकी देवी पति को लेकर अपने निवास-स्थान पर आ गई। वहाँ ड्राइंग-रूम में बैठते ही जानकी देवी ने पूछ लिया, "हाँ, तो अब क्या होगा?"

डॉक्टर का उत्तर था, "जीवन के साँझे कार्यों के विषय में विचार होगा।"

"किस कार्य से विचार आरम्भ किया जाए?"

"आप पत्नी-पद तो पा गई हैं। अतः पति-पत्नी के साँझे कामों में से एक सम्पन्न हो गया है। अब अगला कार्य है सन्तानोत्पत्ति का।"

"इसके लिए अभी अवकाश नहीं।"

"क्या मतलब है? सन्तानोत्पति के लिए अवकाश नहीं अथवा इस विषय पर विचार करने के लिए भी समय नहीं?"

"इसमें कुछ अधिक विचार की बात नहीं। यह विचार का विषय भी नहीं। विचारहीन पशु भी इसे करते ही हैं। सो हम भी इसे कर लेंगे। मेरा अभिप्राय इसके लिए समय और स्थान निश्चय करने का था।"

"तो यह भी हो जाएगा। इसके विचार में भी कुछ अधिक काल लगने की बात नहीं। इस समय तो इस पर विचार स्थगित कर अगले विषय पर विचार करें।"

"अगला विषय है," डॉक्टर ने मन मसोसकर कह दिया, "गृहिणी बनाने का।"

"हाँ! यह विषय है विचार करने का। गृह कहाँ होगा जहाँ कि आप मुझे गृहिणी बनाना चाहेंगे? मेरा काम आगामी दो वर्ष तक के लिए दिल्ली में निश्चय हो चुका है। यह पैंसठ तल का मकान निर्माण करना है। इसके विषय में योजना तो बनकर छपवा दी गई है। अब उस छपी योजना के अनुसार निर्माण-कार्य मेरी देख-रेख में होने जा रहा है। इस कारण मैं इन दो वर्षों के लिए दिल्ली से बाहर नहीं जा सकती।"

डॉक्टर ने कह दिया, "मैं भी अब दिल्ली में रहने की योजना बना रहा हूँ। यदि जीवन-भर के लिए स्थायी रहने का निर्णय करते हैं तो मुझे यहाँ अपने क्लिनिक और निवास-स्थान के लिए कनाट सरकस में स्थान मिल रहा है। वह मैं आपसे सम्मति करके ले सकता हूँ।"

"तब तो ठीक है। आप इसके लिए अभी अस्थायी रूप में प्रबन्ध करिए। हमारा

कैलाश-भवन जब तैयार होगा तो उस पर ही ग्राउण्ड फ्लोर में एक 'फ्लैट' आपकी आवश्यकताओं के अनुसार निर्माण करवा दूँगी।"

"यह प्रबन्ध एक-आध दिन में हो जाएगा। अतः अब कार्यक्रम के अगले विषय पर विचार करना चाहिए। वह सुकृतों के विषय में है।

"मैं समझता हूँ कि मैं आपको अपनी योजना बता देता हूँ। उसमें आपका सहयोग और सहकार्य क्या हो सकेगा, यह आप विचार कर लें।

"मैं समझता हूँ कि वर्तमान युग का पागलपन है तकनीकी कुशलता से गति में अधिकाधिक तीव्रता लाना। इसके कारण संसार में फैल रहे उन्माद को मैं कम करने का यत्न करता चाहता हूँ।

"मैं चाहता हूँ कि गति की तीव्रता को सीमित कर दिया जाए और कार्य में सम्पन्नता लाई जाए। जल्दी में जीवन का वह रस नहीं जितना कि सम्पन्नता में जीवन व्यतीत करने में है।"

"परन्तु यह पागलपन तो मानव-जाति का स्वभाव बन गया है।"

"हाँ। स्वभाव एक प्राप्त की हुई स्थिति का नाम ही है। जब हम किसी एक कार्य को बार-बार करते हैं तो वह स्वभाव बन जाता है। वर्तमान युग में यह स्वभाव बन गया है कि प्रत्येक कार्य में अधिक-से-अधिक गति प्राप्त की जाए।

"मैं इस स्वभाव को बदलकर कार्य में अधिक-से-अधिक सुख-सम्पन्नता निर्माण का स्वभाव बनाना चाहता हूँ। इसके लिए शिक्षा में परिवर्तन की आवश्यकता होगी, अतः मैं तकनीकी योग्यता की दिशा बदलने के लिए एक शिक्षणालय खोलना चाहता हूँ।"

"तो यह स्वभाव बदल देगा क्या?"

"हाँ। एक पीढ़ी में पूर्णतया तो नहीं बदला जा सकता। इसके लिए दो-तीन पीढ़ियाँ लगेंगी। मैं एक शिक्षणालय इस कार्य के लिए इस समय खोल दूँ। पचास वर्ष बाद बदले स्वभाव के मानव उत्पन्न होने लगेंगे। तब तक मैं आशा करता हूँ कि मनुष्य, जीवन की गहराइयों में जाने का स्वभाव बना लेगा और तीव्र गति के स्थान पर गति में सुस्थिरता आ जाएगी। फूहड़पन कम होगा।

"तकनीकी शिक्षण-संस्था के लिए मैं प्रारम्भिक व्यय दो करोड़ रुपया करूँगा और शेष के लिए सरकार से सहायता पाने की आशा रखता हूँ।

"आपके बाबा उप-कुलपति चक्रवर्ती के इतिहास से मैं एक बात समझा हूँ। वह है समस्या के मूल को समझना चाहिए और सुधार उस मूल में ही होना चाहिए। पेड़ के पत्तों पर जल डालने से पेड़ बढ़ता नहीं, वरन् सूख जाता है। मूल में दिया जल ही पेड़ की वृद्धि में सहायक हो सकता है।

"एक बात मैंने आपसे सीखी है। वह यह कि योजना स्वप्नवत् विचार की जाती है। स्वप्न को साकार करने से पूर्व उसको लिखकर युक्ति से सफलता का

स्वरूप देना चाहिए। तब कार्य द्वारा उस स्वरूप को साकार करना चाहिए।

"अतः मैंने आज के काल के रोग के मूल को जानने का यत्न किया है। मानव स्वभाव को बदलना मेरा लक्ष्य है। उसका मूल है शिक्षा। यूरोप में मशीन युग ने स्वभाव में गति के लिए भ्रम उत्पन्न किया है और धीरे-धीरे कार्य को तीव्र-से-तीव्र गति से करने का स्वभाव बन गया और वह स्वभाव अब पागलपन के स्तर तक जा पहुँचा है। मैं इस गति में प्रगति के स्थान इसमें गम्भीरता उत्पन्न करना चाहता हूँ। कार्य में परिष्कृतता लाने का यत्न करना चाहता हूँ। इससे मानव-स्वभाव से पागलपन दूर हो, इसमें कार्य की गहराई तक चिन्तन करने का स्वभाव पड़ेगा।

"मैं अपनी इस योजना पर एक निबन्ध लिख रहा हूँ। मैं समझता हूँ कि कुछ महीने में ही अपने स्वप्न के स्वरूप को युक्ति-युक्त ढंग से लिख दूँगा और तब इसे कार्य-रूप दे सकूँगा।"

"मैं इस कार्य में आपकी सहायता इस शर्त के साथ कर सकूँगी कि गति को बनाए रखकर गम्भीरता उत्पन्न की जाए और जब गति पर कार्य में परिष्कृतता प्राप्त हो जाए तो पुनः गति में अधिक तीव्रता उत्पन्न की जाए। मेरा अभिप्राय यह है कि कार्य में तीव्रता लाने का अर्थ है जीवन को लम्बा करना। जो काम पहले दस वर्ष में हो सकता था वह काम अब एक वर्ष में सम्पन्न हो सकता है। अर्थात् मानव-जीवन सौ वर्ष की अपेक्षा सहस्र वर्ष हो गया है। परन्तु गति की ओर ध्यान रखते हुए चलने से मनुष्य का यह स्वभाव बन गया है कि वह कार्य के परिणामों का चिन्तन न करते हुए गति में विचरने का ही स्वभाव बना बैठा है।"

"यह तो उचित ही है कि कुछ काल तक गति की ओर ध्यान न देते हुए वर्तमान गति में ही सुख-सुविधा में वृद्धि की ओर ध्यान दिया जाए। परन्तु गति तो यह रहेगी और समय पाकर बढ़ेगी भी, परन्तु उसकी वृद्धि के साथ जीवन की सम्पन्नता भी गहरी और गहरी होती जाए। यही लक्ष्य हो तो मैं आपके कार्य को आगे को धक्का लगाने में जोर लगा दूँगी।"

निश्चय हुआ कि कुलकर्णी साहब योजना को लिखें और अपनी पत्नी को दिखाते जाएँ। इस प्रकार दो मस्तिष्कों से परिष्कृत योजना बन जाए तो फिर उसे कार्य-रूप में लाने का प्रयास आरम्भ हो।

डॉक्टर कुलकर्णी की पैतृक सम्पत्ति और उसमें डॉक्टर को अपनी ओर से वृद्धि डालकर करोड़ रुपये से अधिक हो गई थी। शेष जानकी देवी ने अपने भाग का धन प्रस्तुत करने का विचार प्रकट कर दिया और दो करोड़ के प्रारम्भिक खर्चे से एक तकनीकी शिक्षणालय चलाने की योजना लिखने का विचार बन गया।

इस महान् सुकृत के विषय में विचार करते-करते रात के आठ बज गए। तब

दोनों उठे और भोज के लिए उपयुक्त वस्त्र पहन वहाँ जाने की तैयारी करने लगे ।

: १० :

भोज में परिचित, मित्र और परिवार के लगभग पचास सदस्य आमन्त्रित थे । इनमें दोनों परिवारों के समीप के सदस्य, जानकी देवी और डॉक्टर कुलकर्णी के घनिष्ट मित्र और जानकी देवी के व्यवसाय में सहायक तथा परिचित थे । डॉक्टर का परिचित दिल्ली में कोई ऐसा नहीं था जिसे वह अपने विवाह सम्बन्धी भोज में आमन्त्रित करता ।

जानकी देवी की एक परम सखी थी जो उसके साथ इंजीनियरिंग कॉलेज में पढ़ी थी और इस समय महाराष्ट्र सरकार में नौकरी पा गई थी। नाम था सीतामणि ।

नागपुर से वह विवाह के लिए ही आयी थी और एक होटल में ठहरी थी । जब जानकी पति के साथ जीवन के भावी कार्यक्रम पर चार घण्टे के परामर्श के उपरान्त भोज से दस मिनट पूर्व ही जनपथ होटल में पहुँची तो सब अभ्यागत वहाँ रिसैप्शन के कमरे में पहले ही उपस्थित थे ।

डॉक्टर और जानकी देवी ने कमरे में प्रवेश किया तो मित्र और परिवार के सदस्य आगे बढ़ दोनों का स्वागत करने लगे । सीतामणि जानकी देवी की माँ के समीप खड़ी थी । ये दोनों देख रही थीं कि दम्पती अन्य अभ्यागतों से मिल लें तो पीछे वे उससे उसके पति का समाचार पाने की इच्छा रखती थीं ।

आखिर सब भोज के लिए बैठे तो सीतामणि जानकी देवी के बाईं ओर बैठ गई । डॉक्टर जानकी देवी के दाहिने ओर बैठा था । उसके आगे जानकी देवी की माता बैठी थी । सीतामणि ने बैठते हुए पूछा, "पति का स्वाद मिला है ?"

जानकी देवी प्रश्न के आशय को समझती हुई, परन्तु उत्तर देने में रुचि न रखती हुई बोली, "सीता ! कब जा रही हो बम्बई ?"

"नीति कह रही है कि वह शीघ्रातिशीघ्र बम्बई जाना चाहती है। उसकी पढ़ाई में बाधा पड़ रही है । परन्तु मैंने क्या पूछा है !"

"क्या पूछा है ?" जानकी ने अभी भी उत्तर से बचने के लिए प्रश्न न सुनने की बात की ।

सीतामणि ने प्रश्न दोहरा दिया तो जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कह दिया, "आंशिक रूप में ।"

"पति के किस अंश का स्वाद आया है ?"

"उनकी बुद्धि का । मैं उनको इतना बुद्धिमान और दूरदर्शी नहीं समझती थी जितना आज पता चला है ।"

"क्या दूरदर्शिता की बात की है उन्होंने ?"

"वह आज से बीस-पच्चीस वर्ष उपरान्त की बात के सम्बन्ध में मुझसे विचार कर रहे थे।"

"जानकी ! मैं तो यह नहीं पूछ रही।"

"तो क्या पूछ रही हो ?"

"मैं बताती हूँ। मेरे विवाह के उपरान्त मेरी माँ ने हम दोनों के लिए एक पृथक् कमरा नियुक्त कर रखा था। विवाह-वेदी से उतरते ही हम दोनों उस कमरे में गए तो तुम्हारे जीजाजी भूखे बाघ की भाँति मुझपर लपके और अपनी सुध-बुध भूलकर मुझे चाटने लगे।"

"जैसे गाय अपने नवजात बछड़े को चाटती है ?"

सीतामणि हँस पड़ी और बोली, "बहुत बातें सीख गई हो। अच्छा, फिर किसी समय पूछूँगी। देखो, डॉक्टर साहब हमारी ओर कान लगाए, किन्तु मुख दूसरी ओर किए हुए हैं।"

"बहुत चतुर हैं। क्यों जी ?" जानकी ने पति की ओर देखकर कहा, "मेरी सखी सीता कह रही है कि आप हमारी बातें सुनने के लिए इधर कान कर मुख दूसरी ओर किए हुए थे ?"

"हाँ, सीताजी ! भूल हो गई है। मुझे मुख भी इधर करना चाहिए था। हाँ, अब मैंने मुख भी इधर कर लिया है। आप अब बात करिए। मेरा मुख और कान दोनों इस ओर हैं।"

सीता ने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं आपकी निन्दा कर रही थी। इस पर यह कहने लगी कि आप सुन रहे हैं। मैंने भी देखा कि आपके कान तो हमारी ओर थे और मुख दूसरी ओर था।"

"और सीता बहन ! क्या निन्दा कर रही थीं ?"

"यही कि जीजाजी ने हमारी बहन जानकी का उचित आदर नहीं किया प्रतीत होता।"

"किया तो है।"

"अभी इसमें उस आदर की गंध नहीं आई।"

"मैं समझता हूँ कि आदर-सत्कार करने के लिए बहुत कम समय मिला है। कुछ समय और व्यतीत होने दो, फिर तुम्हारी सखी में भी वही आदर की गंध आने लगेगी जो तुममें अपने पति के आदर की आती है।"

भोज में औपचारिक बातों के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं हुआ। बीच-बीच में डॉक्टर सीतामणि से चुटकी लेता रहा। वह भी समझ गया था कि वह समझ गई है कि दोनों चार घण्टे घर पर एकान्त में रहकर भी अभी कोरे-के-कोरे लौटे हैं। यद्यपि वह मन से असन्तुष्ट नहीं था। उसने वह समय व्यर्थ नहीं गँवाया था और वह समझता था कि उसने जानकी देवी का वास्तविक परिचय प्राप्त करने में वह

समय व्यतीत किया है।

भोज के उपरान्त जानकी देवी की माता भगवती और उसके पिता निरंजन देव इस विचार से कि पति-पत्नी में प्रथम भेंट हो गई है, दामाद को होटल में अपने कमरे में ले गए और वहाँ परिचय बढ़ाने लगे। डॉक्टर के माता-पिता भी वहाँ उपस्थित थे।

निरंजन देव ने पूछ लिया, "डॉक्टर साहब ! जानकी देवी तो अपनी मकान की योजना चलाने के लिए दिल्ली में रहने का विचार रखती है। आप इसे प्रेरणा देकर बम्बई क्यों नहीं ले जाते ?"

"मैंने इनकी मकान सम्बन्धी पुस्तक आद्योपान्त पढ़ी है।" डॉक्टर ने उत्तर में कहा, "मैं इससे यह समझा हूँ कि मकान का बनना दिल्ली में ही ठीक रहेगा। इस कारण मैंने यह निश्चय किया है कि मैं भी दिल्ली में ही आकर अपना काम आरम्भ करूँगा।"

"परन्तु यहाँ काम जमाने में पुनः यत्न करना पड़ेगा।"

"हाँ। कुछ तो कठिनाई होगी, परन्तु मैंने देखा है कि बम्बई से यहाँ रोगी अधिक हैं। यहाँ रोग-ग्रस्त होने की सम्भावना भी अधिक है। अतः यहाँ काम शीघ्र ही चल निकलेगा और बम्बई से अधिक चलेगा।"

"मैं समझा था कि एक व्यापारी नगर में पागल अधिक होते हैं और आप उल्टी बात कर रहे हैं।"

"नहीं पण्डितजी ! पागलों की संख्या राजनीतिक केन्द्र में अधिक होती है। राजनीति अधिक लोगों को और अधिक तीव्र उन्माद उत्पन्न करने वाली है। यह सब राजनीतिक क्षेत्र ही है।"

"परन्तु हमारे पिताजी ने तो यह बताया था कि उन्होंने भारत की राजनीति को ऐसी दिशा दी है कि भारत में पागलों की संख्या अधिक हो ही नहीं सकती।"

"यह ठीक है। रूस, अमेरिका, चीन और इंग्लैण्ड भी ऐसे देश हैं जहाँ पागल-पन भारत से कहीं अधिक है, परन्तु जहाँ तक भारत की बात है; बम्बई से दिल्ली में अधिक पागलपन है।"

निरंजन समझ रहा था कि दिल्ली में पागल कम हैं अथवा अधिक हैं, इस पर विवाद करने की आवश्यकता नहीं। वास्तविक बात तो कुलकर्णी और जानकी देवी के इकट्ठे रहने की है। इससे वह और उसकी पत्नी भगवती प्रसन्न थे।

भोज के समय ही देश की राजनीति पर वार्त्तालाप आरम्भ हुआ तो किसी ने जानकी के पिता से प्रश्न कर दिया, "परन्तु यह चमत्कार कैसे सम्पन्न हुआ कि गांधी और गोखलेजी की कांग्रेस और नेहरूजी से स्थापित दल के पाँव एक ही वर्ष में उखाड़ फेंके थे ?"

"हाँ। यह चमत्कार ही हुआ है। पिताजी इसे भाग्य का खेल बताते थे। उनका

कहना था कि, 'हिन्दू समाज ने घोर पाप किए थे जिसके कारण एक सहस्र वर्ष तक वह विदेशियों और विधर्मियों के पाँव-तले रौंदा जाता रहा था। इस समाज के पाप इतने भयंकर थे कि अपने लोगों को राज्य मिल जाने पर भी जाति की दुर्दशा बढ़ती ही गई।'

"उनका कहना था कि, 'पापकर्मों का फल निःशेष हुआ तो इस समाज पर अत्याचार करने वालों ने भूल-पर-भूल करनी आरम्भ कर दी और फिर यह सोई हुई जाति नींद से जागी और उसने अपना वास्तविक स्वरूप स्वीकार कर लिया।'

"पिताजी उस समय की बात बताया करते थे। मैं तो उस समय फ्रांस में पैरिस विश्वविद्यालय में पढ़ रहा था। पिताजी ने बताया था कि हमारी माताजी ने उनको देश की अवस्था पर दुखी देख कह दिया, 'आप विद्यार्थियों में इतने प्रिय हैं तो आप देश की अवस्था एक क्षण में सुधार सकते हैं।'

" 'कैसे ?' पिताजी ने पूछा।

"इस पर हमारी माताजी ने पूछ लिया, 'विश्वविद्यालय में कितने छात्र पढ़ते हैं ?'

"उन्होंने बताया, 'सोलह-सत्रह सहस्र हैं।'

" 'इनमें समाजवादी और कम्युनिस्ट कितने हैं ?'

"पिताजी ने अनुमान से बताया कि, 'एक सहस्र से अधिक नहीं हो सकते, परन्तु वे कम संख्या में होते हुए भी संगठित हैं और उपद्रव मचा रहे हैं। सरकार उनको प्रोत्साहन देती है।'

"इस पर हमारी माताजी कहने लगीं, 'तो क्या आप-जैसे लोकप्रिय उप-कुलपति उन पन्द्रह सहस्र का संगठन नहीं कर सकते ?'

"पिताजी ने विचार किया कि नौकरी जाएगी, परन्तु उनके लिए नौकरी प्रलोभन नहीं थी। उन्होंने एक महीने में ही विश्वविद्यालय के भले विद्यार्थियों के संगठन का बिगुल बजा दिया। एक महीना ही संगठन निर्माण करने में लगा। इसमें भाग्य भी सहायक हो गया।

"संगठन पूर्ण होते-होते उन्हें उप-कुलपति पद से मुक्त कर दिया गया। विश्व-विद्यालय में हड़ताल हो गई। तब पिताजी ने उन पन्द्रह सहस्र विद्यार्थियों को देश के कोने-कोने में सरकार के विरुद्ध प्रचार करने के लिए भेज दिया। तीन महीने में देश में आग लग गई। सरकार समझी कि उन्हें अपदस्थ कर उसने भूल की है, अतः वह उनसे बातचीत करने को उद्यत हुई।

"परन्तु तब तक देश क्रान्ति के कगार पर पहुँच गया था। काल की गति है, परन्तु यह गति भले और बुरे लोगों के चलाने से ही चलती है। कांग्रेस के कारनामे जब जनता के समक्ष आए और उसके परिणामस्वरूप देश की हानि का दर्शन हुआ

तो लोकसभा के पाँच सौ सदस्यों का जीवन भय में पड़ गया। प्रायः सबके घरों को फूँक देने की धमकी दी गई तो उन मूर्ख, स्वार्थी राजनीतिज्ञों ने लोकसभा से त्याग-पत्र दे दिए। लोकसभा भंग हुई तो नये निर्वाचन हुए, परन्तु पन्द्रह सहस्र पढ़े-लिखे युवक सरकार का तख्ता उलटने पर लगे थे और निर्वाचन में एक नया दल निर्माण हुआ और उसकी अप्रत्याशित विजय हुई। पाँच सौ बीस स्थानों में इस दल को चार सौ स्थान मिले।

"पिताजी बिना निर्वाचित हुए ही प्रधानमन्त्री बन गए। बाद में उन्हें राज्य-सभा का सदस्य बना लिया गया।

"पिताजी का कहना था कि उनको यह ईश्वरीय योजना ही प्रतीत हुई थी। वे अनुभव कर रहे थे कि इस योजना को चलाने के लिए प्रधानमन्त्री बनाए गए और उन्होंने अपनी पूरी सामर्थ्य, बुद्धि और कुशलता से परमात्मा की इस योजना को पूर्ण करने का यत्न किया है।

"उन्होंने बताया था कि यह कुछ न हो पाता, यदि हमारी माताजी उनके साथ न होतीं। यदि अधिक नहीं तो इस सब कार्य में, क्रान्ति लाने में और इसे पूर्ण करने में पचहत्तर प्रतिशत उनके प्रयास का हाथ है।"

डॉक्टर कुलकर्णी डॉक्टर श्यामसुन्दर चक्रवर्ती की कथा में सब-कुछ भूल गया था।

निरंजन देव को अपने कुल का परिचय देते रात के बारह बजे तो एकाएक भगवती उठ पड़ी। उसे जानकी की आँखों से व्यग्रता दिखाई देने लगी थी। उसने पति को वार्त्ता बन्द करने के लिए कहा, "मैं अत्यन्त थक गई हूँ। अब हमें सोने का विचार करना चाहिए।"

डॉक्टर की माँ ने कह दिया, "हम तो कल हवाई जहाज से अहमदाबाद जा रहे हैं और आपसे मिल नहीं सकेंगे।"

निरंजन देव ने कहा, "हम भी तो कल हांग-कांग चल देंगे। उस पर भी हम आशा करते हैं कि डॉक्टर साहब अपने लड़के के जन्म पर बुलाएँगे तो हम बालक को आशीर्वाद देने आएँगे।"

: ११ :

जब जानकी देवी पृथिवीराज रोड पर पहुँची तो उसने कह दिया, "सायंकाल तो आपकी व्याकुलता उन्माद के स्तर पर थी और वहाँ जाकर आपका उन्माद अस्त हो गया प्रतीत होने लगा था।"

"हाँ।" डॉक्टर ने कह दिया, "आपके माता-पिता ने 'ट्रैन्क्यूलाईजर' दे रखा था। परन्तु जानकी! अब उसका प्रभाव विलीन हो गया है।"

जानकी ने प्रेम-भरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो दोनों परस्पर भुजापाश में बँध गए।

प्रातः सात बजे अहमदाबाद को हवाई जहाज जाता था। अतः नव-दम्पती यत्न करके उठे और भाग-दौड़ करते हुए हवाई पत्तन पर साढ़े-छः बजे पहुँच पाए थे। उसी समय एक अन्य हवाई जहाज से नीति और सीतामणि बम्बई जाने के लिए वहाँ पहुँच गईं। जब जानकी और सीतामणि पृथक् मिलीं तो सीता ने कह दिया, "अब तो तुम्हारी आँखों में पति का प्यार भरा दिखाई देता है।"

"हाँ।" जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कहा, "वह मुझे भी छलकता प्रतीत होता है।"

जानकी देवी ने एक सोफा पर बैठ सीतामणि के गले में बाँह डाल कहा, "मैं बहुत प्रसन्न हूँ।"

"मुख से कहने की आवश्यकता नहीं। वह तो तुम्हारा अंग-अंग प्रकट कर रहा है।"

जब परिवार के सब लोग विदा हो गए तो डॉक्टर ने जानकी देवी को घर छोड़ा और स्वयं अपने क्लिनिक के लिए स्थान ढूंढ़ने कनाट प्लेस में जा पहुँचा।

कुछ ही दिनों में डॉक्टर कुलकर्णी मानसिक रोगों के विशेषज्ञ के रूप में दिल्ली के धनी-मानी समुदाय में विख्यात होने लगा और जानकी देवी का कैलाश-भवन भी बनने लगा।

ज्योंही भवन की नींव रखी गई कि इसके छः सौ से अधिक निवास-स्थान, पचास दुकानें, बीस रैंस्टोराँ और तीन मोटर मरम्मत करने के गैराज तथा मोटर पार्किंग करने वाले स्थान भाड़े पर चढ़ने लगे। रुपया धड़ाधड़ आने लगा और दूसरी ओर कैलाश-भवन एक छोटा-सा नगर, आकाश की ओर उठने लगा।

तृतीय परिच्छेद

न्यूयॉर्क में यू० एन० ओ० भवन में एक कार्यालय के भीतर तीन व्यक्ति बात-चीत कर रहे थे। कमरे के द्वार भीतर से बन्द थे। बात करने वालों में एक था राष्ट्रसंघ का महासचिव डॉक्टर मिन्हा। यह दक्षिण चीन के एक कस्बे कैनटन का रहने वाला था। दूसरा व्यक्ति था राष्ट्रसंघ में चीन का प्रतिनिधि शाई-ताँग-को और तीसरा चीन के गुप्तचर-विभाग का अध्यक्ष पिन्ह-त्सो-पिंग था।

शाई-तांग-को ने जब महासचिव से पूछा, "अपने पार्टी के नेता ने पता किया है कि अब दुनिया की स्थिति क्या है?"

महासचिव ने पूछा, "तुम किस विषय में दुनिया की स्थिति जानना चाहते हो?"

"भूमण्डल के मुख्य देशों का चीन के प्रति व्यवहार।"

"पहले से अधिक अनुकूल है।"

"अन्तरिक्ष में भारत के निवास-स्थान के बन जाने पर चीन सरकार चिन्ता व्यक्त कर रही है।"

महासचिव ने कहा, "यह ठीक है कि यह अन्तरिक्ष निवास-गृह भारत की सम्पत्ति है, परन्तु इस समय वह एक होटल बना है। वहाँ सभी देशों के लोग आते-जाते हैं। भू-मण्डल के राज्यों को वह अन्तरिक्ष होटल एक अत्यन्त सुविधा-जनक स्थान प्रतीत हुआ है। वहाँ पर बैठा व्यक्ति भू-मण्डल की किसी भी प्रमुख राजधानी में पन्द्रह से बीस मिनट में पहुँच सकता है। अन्तरिक्ष-गृह वालों ने वहाँ के रहने वालों के लिए तीन बसों का प्रबन्ध किया है। एक जो दिन में तीन बार दिल्ली जाती-आती है। एक दिन में दो बार वाशिंगटन और एक लन्दन जाती है।

"इसके अतिरिक्त वहाँ पाँच दो-सीटर खटोले बने हैं। जब भी कोई होटल का मेहमान चाहे तो उन्हें तीनों स्थानों में से कहीं के लिए भी भाड़े पर कर सकता है। इतना सुभीता होने पर अधिकांश देश इसे एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्पत्ति मानते हैं।

"भारत एक ऐसा ही अन्य निवास-गृह बम्बई में भी बना रहा है। यू० एस० ए० भी एक ऐसे ही अन्तरिक्ष निवास के लिए योजना बना रहा है। भारत की एक महिला इंजीनियर जानकी देवी आजकल न्यूयॉर्क में है और अमेरिका की योजना में सहायक हो रही है। अमेरिका और रूस ईंधन की समस्या को सुलझा नहीं सके। छ: सौ प्राणियों के मकान को भू-आकर्षण के विपरीत उड़ाकर भू-आकर्षण से बाहर

करने के लिए पाँच मिलियन हॉर्स पावर प्रति सैकेण्ड से अधिक शक्ति चाहिए। इसके लिए ईंधन का प्रबन्ध नहीं था। एक ईंधन का आविष्कार एक भारतीय वैज्ञानिक ने किया है और यह आयोजन सफल हो गया। वह ईंधन एक-एक किलोग्राम के कैप्सूल में भारत बेचने के लिए तैयार हो गया है। वह कैप्सूल जब धकेलने वाले इंजन में रख दिया जाएगा तो वह इस निवास-गृह को लेकर तीन हजार किलोमीटर ऊपर उड़ जाता है। वही कैप्सूल इसी निवास-गृह को पुनः वापस पृथ्वी पर ला सकता है। एक कैप्सूल की कीमत सरकार की ओर से एक सहस्र डालर नियत की गई है।

''अमेरिका ने ऐसे दस कैप्सूल खरीदे हैं। भारत सरकार ने उनको तैयार करके देने का वचन दिया है। इस वचन के उपरान्त अमेरिका ने अन्तरिक्ष निवास-गृह बनाने के लिए हिन्दुस्तानी इंजीनियर को बुलाया है और वह अमेरिका के इंजीनियरों से बातचीत कर रही है।''

राष्ट्रसंघ के महासचिव से यह सब वृत्तान्त सुनकर चीन के प्रतिनिधि ने कहा, ''इस अन्तरिक्ष में निवास-गृह को हमारा राज्य एक भय का कारण मानता है। अतः वह चाहता है कि राष्ट्रसंघ सुरक्षा-परिषद् में एक प्रस्ताव रखे जिसका आशय यह हो कि ऐसे निवास-गृह राष्ट्रसंघ की देख-रेख में हों।''

''अब तो चीन सुरक्षा-परिषद् में आ गया है और इस विषय पर वह प्रस्ताव ला सकता है।''

''हम प्रस्ताव लाएँगे तो रूस हमारा विरोध करेगा। इस कारण हमारे राज्य का विचार है कि आप ही इस प्रश्न को उठाइए।''

''परिणाम यह होगा कि रूस और अमेरिका मेरे विरुद्ध हो जाएँगे और मेरा महासचिव पद पर रहना कठिन हो जाएगा।

''परिणाम यह होगा कि जो कुछ सहायता मैं अपने देश की इस पद पर रहते हुए कर रहा हूँ, वह नहीं कर सकूँगा। ऐसा प्रस्ताव अपने लिए घाटे का सौदा रहेगा।''

राष्ट्रसंघ में चीन का प्रतिनिधि इस समस्या पर गम्भीर भाव में विचार करने लगा। एकाएक उसके मन में एक विचार आया। उसने महासचिव से पूछ लिया, ''जानकी देवी कहाँ रहती हैं?''

''इस समय न्यूयार्क 'मैट्रोपॉलिटन इण्टरनेशनल होटल' के कमरा नम्बर ३३३ में ठहरी है।''

''उसका कोई फोटोग्राफ है?''

''हाँ। अपने कार्यालय में है।''

''एक प्रति मेरे पास भिजवा दो।''

शाई-तांग-को महासचिव का मुख देखने लगा। महासचिव ने सिर हिलाते हुए कहा, ''मिस्टर तांग! वह बहुत चतुर स्त्री है। यह नवीन भारत की नींव रखने

वाले की 'ग्राण्ड डॉटर' है। यह स्त्री अपने बाबा से कम बुद्धिमान नहीं है। वह वीर, साहसी व्यक्ति था। यह वीरांगना और साहसी होने के साथ लोमड़ी की भाँति चतुर और छली भी है।''

''चीन में उसके मुकाबले का व्यक्ति ढूँढ़ा जाएगा।''

महासचिव चुप रहा। इस पर डॉक्टर शाई-तांग-को ने पूछा, ''आप भी कोई अन्तरिक्ष-गृह उड़ाना चाहते हैं तो उसके लिए यत्न किया जा सकता है। अमेरिका भी इस निवास-गृह के विषय में सब बातचीत राष्ट्रसंघ की सहायता से ही कर पाया है।''

''परन्तु हमें पता चला है कि रूस इसमें असफल रहा है।''

''वह इस कारण कि रूस ने भारत से गुप्त वार्त्तालाप करना चाहा था। वह अपने भाव-ताव में न तो राष्ट्रसंघ को सम्मिलित करना चाहता था और न ही अमेरिका को बताना चाहता था।''

''हम चकित हैं कि भारत ने विज्ञान में तथा तकनीकी विद्या में इतनी उन्नति कैसे कर ली है?''

''इसका रहस्य आप लोग नहीं जान सकते।''

''हम लोग? क्या मतलब?''

''चीन, रूस तथा अन्य कम्युनिस्ट देश।''

''क्यों नहीं जान सकते?''

''इस कारण कि आपकी जीवन-मीमांसा में मनुष्य को पशु बना दिया जाता है और पशु का अर्थ ही यह है कि बुद्धि-विहीन। भारत ने बुद्धि नाम के पदार्थ के विकास के लिए पूर्ण स्वतन्त्रता दे रखी है। वहाँ विज्ञान और तकनीकी प्रयोग-शालाएँ व्यक्तिगत मनुष्य की सम्पत्ति है और प्रत्येक वैज्ञानिक तथा कुशल टैक्नी-शियन अपने कार्य को चलाने में स्वतन्त्र है। परन्तु उसके धन की सहायता और उसकी सुरक्षा का प्रबन्ध सरकार करती है।

''इस समय देश में कई सौ अनुसंधान केन्द्र हैं। सब किसी-न-किसी विद्वान् की निजी सम्पत्ति और उसके अपने प्रयास का फल है। सरकार इनको धन देती है और फिर इनकी खोजों की मण्डी भी है।''

''इससे कार्य में पुनरावृत्ति तथा कई लोगों के एक ही कार्य करने से परिश्रम और धन व्यर्थ नहीं जाता?''

''जाता है। परन्तु इस अपव्यय से कहीं अधिक लाभ हो जाता है बुद्धि को स्फूर्ति मिलने से। बुद्धि एक व्यक्तिगत यन्त्र है और जब इसे दूसरे के साथ बाँध दिया जाए तो यह पंगु हो जाता है।

''अभ्यास से तीन टाँग की दौड़ की भाँति काम तो चलाया जा सकता है, परन्तु तीन टाँग वाले जोड़े कभी भी उस गति से नहीं भाग सकते जिस गति से अकेला-

अकेला व्यक्ति। और यदि दौड़ में कई-कई व्यक्तियों को परस्पर बाँध दिया जाए तो वह अति मन्द गति से ही चल सकेंगे।"

चीन देश का प्रतिनिधि उठ खड़ा हुआ और महासचिव की ओर देखकर बोला, "मैं यह सब वार्त्तालाप पीकिंग भेज रहा हूँ और वहाँ से जो भी आदेश आया, वह आपको बताऊँगा।"

महासचिव ने उठकर कमरे का द्वार खोल दिया और चीनी राज्य के प्रतिनिधि को निकल जाने दिया। जब महासचिव वापस आकर अपनी मेज पर बैठा तो डॉक्टर पिह्न-त्सो-पिंग ने कहा, "भारत का वर्तमान प्रधानमन्त्री मिस्टर सिंह कह रहा था कि हमारा उद्देश्य तो यह है कि हम तकनीकी विकास को और आगे बढ़ने से रोकें, परन्तु इस भूमण्डल के धूर्त राज्यों में जीवित रहने के लिए हमें सदा अपने को उनसे आगे रखना पड़ता है।"

"प्रधानमन्त्री मिस्टर सिंह ने एक बात यह भी कही थी कि भूमण्डल में धूर्त्तता इस कारण व्यापक हो रही है कि वहाँ शिक्षा को राजनीति का वाहन बना रखा है। होना यह चाहिए कि राजनीति शिक्षा, ज्ञान और विज्ञान का वाहन हो।"

"देखो डॉक्टर !" महासचिव ने गम्भीर भाव बनाकर कहा, "मैं समझता हूँ कि मुझे अपने देश का यह आदेश आने वाला है कि मैं इस राष्ट्रसंघ की सेवा से त्याग-पत्र देकर पीकिंग लौट जाऊँ। परन्तु वहाँ का वातावरण इतना दम घुटने वाला है कि मैं वहाँ जीवित ही मृत समान हो जाऊँगा।"

"विचार तो मैं भी यही करता हूँ। मैं तो कभी-कभी यह विचार किया करता हूँ कि मैं भारत में क्यों पैदा नहीं हुआ ? वहाँ इतनी स्वतन्त्रता है कि कदाचित् अमेरिका में भी नहीं।

"भारत में एक अन्य वैज्ञानिक है प्रमिला देवी। उनसे मेरा मोह हो गया है, परन्तु इस मोह की मधुरता में हम यौन-सम्बन्ध नहीं बना सके। उसका पति इतना उदार है कि उसने एक दिन मेरे सम्मुख ही अपनी पत्नी से कह दिया था, 'देखो प्रिय ! यदि तुम डॉक्टर पिह्न से अपना सम्बन्ध बनाना चाहो तो बना सकती हो। मैं तुम्हारा मालिक नहीं हूँ। तुम इतनी ही स्वतन्त्र हो जितना कि मैं अपने को सदैव रखना चाहता हूँ।"

"प्रमिला ने कह दिया, 'आपके इस आश्वासन और प्रोत्साहन की आवश्यकता नहीं। मैंने कभी अपने को आपकी दासी नहीं समझा। मैं स्वेच्छा से ही आपको पति माने हुए हूँ।'

"इस प्रकार बात होने के उपरान्त मैंने उसे अपनी पत्नी बनाने का यत्न किया तो वह बोली, 'यही तो आप में विशेषता है कि आपके चित्त की सरलता मूर्खता को छूती रहती है। मैं प्रोफेसर साहब के दो बच्चों की माँ हूँ और यह मैं स्वेच्छा से हूँ। मैं तो अभी दो-तीन बच्चे उन जैसे सुन्दर और मेधावी उन्हीं से और चाहती हूँ।

" 'परन्तु डॉक्टर पिङ्ग-त्सो-पिंग ! आपके गुण दूसरे हैं । वे मैं अपने बच्चों में नहीं चाहती । इस कारण आपको डॉक्टर, अपने पति का स्थानापन्न नहीं बना सकती ।'

"मैंने अनेक युक्ति-प्रतियुक्तियाँ कीं, परन्तु वह मुझे निरुत्तर करती रही और मैं प्रमिला देवी का परम मित्र हूँ । परन्तु न तो मैं उसके पति का स्थान ले सका हूँ और न ही मैं अपने राज्य को उसके राज्य के स्थान पर बैठा सका हूँ । वह अपने पति और देश की निष्ठावान भक्त है ।"

: २ :

इस वार्त्तालाप के कुछ ही घण्टे उपरान्त यह समाचार रेडियो पर प्रसारित हुआ कि राष्ट्रसंघ में चीनी प्रतिनिधि डॉक्टर शाई-तांग-को लापता है । यह विचार किया जा रहा है कि उसे चीनी सरकार ने ही बन्दी बनाकर किसी 'लेबर कैम्प' में भेज दिया है । वह भारत के एक वैज्ञानिक के साथ बातचीत में चीन राज्य के रहस्य बताने का अपराधी समझा जा रहा है ।

इस सूचना के एक घण्टा उपरान्त दिल्ली से यह समाचार प्रसारित किया गया कि राष्ट्रसंघ में चीनी प्रतिनिधि डॉक्टर शाई-तांग-को भारत देश में अन्तर्राष्ट्रीय अपराधों का अपराधी मान पकड़ लिया गया है और उसे अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सम्मुख उपस्थित किया जाएगा ।

भूमण्डल के राजनीतिज्ञ इस द्रुत गति से हुई घोषणाओं को सुन चकित थे । सबका विचार था कि चीन और भारत में युद्ध होगा और सम्भव है कि यह युद्ध अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुंच जाए ।

भारत की घोषणा के उपरान्त राष्ट्रसंघ के महासचिव ने सुरक्षा-परिषद् की आपात् सभा बुला ली । इससे तो सब बड़े-बड़े राज्यों ने अपने प्रक्षेपणास्त्रों और उनका विरोध करने वाले अस्त्रों को सतर्क कर दिया ।

चीन ने भारत के विरुद्ध न तो युद्ध की घोषणा की और न ही डॉक्टर शाई-तांग-को के आरोपों के विषय में कुछ कहा । चीन ने एक बात यह की कि राष्ट्रसंघ के द्वारा डॉक्टर शाई-तांग-को को भारत से छोड़ने की माँग कर दी ।

अगले दिन सुरक्षा-परिषद् की बैठक हुई और उसमें भारत ने डॉक्टर शाई-तांग-को के विरुद्ध आरोप-पत्र उपस्थित कर दिया । इसमें पाँच आरोप थे—

(१) चीन अपने राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि द्वारा अन्तरिक्ष निवास-गृह को विनष्ट करने की योजना कर रहा है ।

(२) राष्ट्रसंघ में चीन के प्रतिनिधि ने एक भारतीय वैज्ञानिक को रिश्वत दे किसी प्रकार के सरकारी वैज्ञानिक रहस्य के जानने का यत्न किया ।

(३) रहस्य न बताने के अपराध में उस वैज्ञानिक को अपहरण की धमकी दी ।

(४) भारतीय वैज्ञानिक के धमकी में न आने पर उसे धोखे से कोई मादक

पदार्थ पिलाकर उसका अपहरण किया गया।

(५) डॉक्टर शाई-ताँग-को ने पीकिंग सरकार को सम्मति दी कि भारत पर बिना अन्तमेत्थम् के आक्रमण कर दिया जाए।

इन पाँच आरोपों की जाँच के लिए यह मुकद्दमा अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में भेजा जाएगा।

महासचिव ने भारत से कहा, "सुरक्षा-परिषद् के सम्मुख सब तथ्य रखे जाने चाहिए।"

"यह मामला नैतिक अपराधों से सम्बन्ध रखता है और सुरक्षा-परिषद् राजनीतिक संस्था होने से इस विषय पर विचार करने के लिए उपयुक्त नहीं है।"

इस उत्तर पर चीन के नवीन प्रतिनिधि ने कहा, "भारत ने भूमण्डल की महासभा का अपमान किया है। इसे राष्ट्रसंघ से बाहर निकाल दिया जाए।"

इस प्रस्ताव को सुरक्षा-परिषद् ने अन्य सदस्यों के विरोध पर अस्वीकार कर दिया।

तब चीन के प्रतिनिधि ने कह दिया, "यदि मेरी सरकार की माँग स्वीकार न की गई तो चीन राष्ट्रसंघ से पृथक् हो जाएगा।"

अमेरिका के प्रतिनिधि का प्रश्न था, "न्यायालय के निर्णय की क्यों न प्रतीक्षा की जाए?"

"इस प्रकार के सामाजिक मामलों में हम कानूनी जाल में फँसने से अपने को बचाना चाहते हैं।"

"सामाजिक और राजनीतिक में क्या अन्तर है?"

"दोनों एक ही हैं।"

"और राजनीतिक तथा नैतिक में भी अन्तर मानते हैं अथवा नहीं?"

"नैतिक नाम की कोई वस्तु संसार में नहीं। समाज और राजनीति ही मुख्य हैं और ये दोनों एक ही हैं।"

"तब तो अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय अर्थहीन है।"

"हाँ। हम उसके पाबन्द नहीं हैं।"

अमेरिकन सदस्य मौन हो गया, परन्तु रूसी सदस्य को इतनी बातचीत से सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछ लिया, "जब दो राष्ट्रों में किसी विषय पर मतभेद हो तो क्या किया जाए?"

"युद्ध।"

"युद्ध से सत्य और झूठ का निर्णय हो जाएगा?"

"युद्ध से जीने और मरने के योग्य का निर्णय होता है। जो संघर्ष कर नहीं सकता, वह मर जाएगा और जो संघर्ष में विजयी होना जानता है, वह ही जीने का अधिकारी है।"

"अर्थात् यदि भारत चीन को पराजित कर दे तो चीन की मृत्यु हो ही जानी चाहिए।"

"यह कैसे हो सकता है? एक अरब से ऊपर लोगों को मार डालने के लिए भारत में सामर्थ्य और साहस नहीं। हमें यह ज्ञात है कि अभी भी गांधी और बुद्ध के शिष्य वहाँ भारी संख्या में विद्यमान हैं। जो एक कीट-पतंग को मारने में भी संकोच करते हैं, वे एक अरब मनुष्यों की हत्या करने के लिए उद्यत नहीं हो सकते।"

"परन्तु चीन को यह भी तो समझ लेना चाहिए कि वही एक अरब चीनी अपने शासकों की हत्या करने में समर्थ हो सकते हैं।"

"हम जन-सामान्य की मानसिक अवस्था को जानते हैं। उनके लिए सत्य और झूठ का भी मूल्य नहीं होता। उनके लिए तो मन की भावना ही सर्वोपरि होती है। हम उस भावना को उभारने का ढंग जानते हैं।"

सुरक्षा-परिषद् का सदस्य भी परेशानी अनुभव करने लगा था। वह युद्ध के लक्षण स्पष्ट देख रहा था और युद्ध में कौन-कौन राष्ट्र विनष्ट होगा अथवा कौन जीवित रहेगा, कहना कठिन था।

एक बार लगभग तीस वर्ष पूर्व एक पाकिस्तानी सैनिक-अधिकारी ने अपने देश के एक भाग में से लाखों की संख्या में लोग मार-मारकर बाहर निकाल दिए थे। यह बात अब एक ऐतिहासिक तथ्य है कि संसार के प्रायः सब राष्ट्र उस सैनिक-अधिकारी का पृष्ठ-पोषण कर रहे थे। इस पर वे लाखों लोग जो घरों से बेघर हुए थे, दस वर्ष में एक-दूसरे देश के नागरिक बन गए। वे वहीं रहने लगे थे, परन्तु वह सैनिक-अधिकारी अपने ही देश के अन्य नेताओं द्वारा पकड़कर कैद में डाल दिया गया था। भूमण्डल के कुछ राज्यों ने उसे कैद से तो छुड़ा दिया, परन्तु वह अपने देश में पुनः शासक नहीं बन सका।

कुछ इसी प्रकार की बात वह चीन में होने की सम्भावना समझ रहे थे। जब सुरक्षा-परिषद् के अन्य सदस्य न तो चीन के व्यवहार की निन्दा कर सके और न ही उसे किसी प्रकार की सम्मति दे सके तो भारत के प्रतिनिधि ने कह दिया, "मेरे राज्य ने मुझे यह घोषणा करने की स्वीकृति दी है कि मैं इस महान् राष्ट्रसंघ की महान् अधिकारयुक्त समिति के सामने अपनी सरकार का यह विनम्र निवेदन उपस्थित कर दूँ।"

इतना कह भारत के प्रतिनिधि ने एक कागज अपने ब्रीफकेस से निकाला और पढ़ दिया। उसमें लिखा था—

'हम किसी भी देश पर आक्रमण नहीं करेंगे। अपने विवादों को किसी भी निष्पक्ष समिति के समक्ष उपस्थित करने के लिए उद्यत रहेंगे।

'परन्तु यदि किसी ने हमारे राज्य पर आक्रमण किया तो तीन आक्रमण हम

क्षमा कर सकेंगे, परन्तु चौथे आक्रमण के साथ ही उस देश में हरी घास का एक-एक तिनका तक भी जले बिना नहीं रहेगा।

'हम भारतवासी विश्वास करते है कि हम मरते नहीं। यदि हमारे कुछ कर्म-फल शेष हैं तो उनके भोगने के लिए हमें अवसर मिलेगा। इस पृथ्वी पर नहीं तो किसी भी अन्य नक्षत्र पर जहाँ मानव शरीर जीवित रह सकता है पुनः जन्म लेंगे।

'परन्तु वे जो आत्मा नाम की वस्तु को मानते नहीं, उनके लिए नरक के द्वार खुल जाएँगे। उन्होंने स्वयं ही इसमें घुसने का सामान पैदा किया है।

'लोग इस बात का भय दिखाते हैं कि पृथ्वी-भर से मानव-सभ्यता विनष्ट हो जाएगी, किन्तु जब मानव मानव ही नहीं रहा तो इसके विनष्ट होने पर चिन्ता किस बात की ?

'यदि मनुष्य को भी पशु ही बने रहना है तो मानव-सभ्यता का ढोंग व्यर्थ है।'

वक्तव्य समाप्त हुआ तो भारतीय प्रतिनिधि ने सुरक्षा-परिषद् के सदस्यों से कहा, "मैं आपसे अब विदा लेता हूँ और अपनी सरकार की यह घोषणा मैं समाचार-पत्रों में दे रहा हूँ।

"गुड बाई फ्रेंड्स।" इतना कह प्रतिनिधि अपना ब्रीफकेस ले बाहर आ गया।

बाहर पत्र-प्रतिनिधि महासचिव से यह जानने के लिए बैठे थे कि सुरक्षा-परिषद् ने डॉक्टर शाई-तांग-को के विषय में क्या निर्णय लिया है ?

भारत के प्रतिनिधि को अकेले बाहर आते देख सब उसको घेरकर खड़े हो गए। उसने कहा, "मैं आपको अपना एक वक्तव्य और उसके साथ अपनी सरकार का अन्तमेथम् जो मैंने राष्ट्रसंघ को दिया वह देना चाहता हूँ, क्योंकि सुरक्षा-परिषद् चीन के एक अरब से अधिक प्राणियों के कोप से डरती है। इस कारण उसको अन्याय-युक्त व्यवहार से रोकने में अपने को असमर्थ पाती है। अतः भारत सरकार के कहने पर मैंने यह वक्तव्य सुरक्षा-परिषद् को सुना दिया है।" यह कह-कर उसने वक्तव्य की प्रतियाँ बाँट दीं।

: ३ :

भारत के प्रतिनिधि के चले जाने पर चीन के प्रतिनिधि ने कहा, "भारत ने राष्ट्रसंघ का अपमान किया है। इसे राष्ट्रसंघ से निकाल दिया जाए।"

"निकाल देने से क्या होगा ?" इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि ने पूछ लिया।

"तब उसके राष्ट्रसंघ के किसी सदस्य के देश पर आक्रमण करने से पूर्ण राष्ट्र-संघ उसके विरुद्ध युद्ध करेगा।"

"और यदि वह आक्रमण न करे और राष्ट्रसंघ का कोई सदस्य उस पर आक्रमण करे, तब क्या होगा ?"

"अपने राष्ट्रसंघ के सदस्य तो अपने हैं। इस कारण अपने ही सदस्यों के विरुद्ध कोई क्यों होगा ?"

इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि ने प्रस्ताव कर दिया, "यह सुरक्षा-परिषद् राष्ट्र महासभा से यह आग्रह करती है कि चीन विश्व को अणु-युद्ध में झोंकना चाहता है; इस कारण उसे इस संघ की सदस्यता से वंचित कर दिया जाए।

"हम भारत के इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं कि डॉक्टर शाई-तांग-को का मामला अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में न्याय के लिए भेज दिया जाए।"

इस पर चीन के प्रतिनिधि ने भी उठते हुए कहा, "मैं इसे अपने राष्ट्र का अपमान समझता हूँ। मैं इसे अपनी सरकार को सूचित कर रहा हूँ और अपने भावी व्यवहार को सरकार के आदेश आने तक स्थगित करता हूँ।"

इस पर सब सदस्य एक-दूसरे का मुख देखते रहे। अब अमेरिका ने सुरक्षा-परिषद् की बैठक अगले दिन के लिए स्थगित करने का प्रस्ताव कर दिया।

उसी सायंकाल सूचना आई कि चीन ने अपना एक प्रक्षेपणास्त्र अन्तरिक्ष निवास-गृह पर फेंका है, परन्तु वह वहाँ तक पहुंचने से पूर्व ही विनष्ट कर दिया गया है। अन्तरिक्ष निवास-गृह से ही उस अस्त्र को विनष्ट करने का आयोजन किया गया था। इस समाचार के आते ही समाचार-पत्रों के प्रतिनिधि अन्तरिक्ष निवास-गृह पर जा पहुँचे। न्यूयार्क से एक विशेष बस का वहाँ तक जाने का प्रबन्ध किया गया और अन्तरिक्ष स्थित होटल के मैनेजर से उक्त समाचार के विषय में पूछताछ करने लगे। होटल के मैनेजर अश्विनी कुमार ने वक्तव्य दिया और उसे प्रतिनिधियों के प्रश्नोत्तरों के साथ प्रकाशित कर दिया गया।

इस समाचार का शीर्षक भूमण्डल के प्रायः समाचार-पत्रों ने इस प्रकार दिया, 'भारत-चीन में युद्ध की सम्भावना बढ़ी।'

समाचार इस प्रकार था—

'भूमण्डल के प्रेस क्लब की ओर से अन्तरिक्ष होटल के मैनेजर से उस समाचार के विषय में पूछा गया जिसमें यह बात थी कि अन्तरिक्ष होटल पर चीनी प्रक्षेपणास्त्र से आक्रमण किया गया और प्रक्षेपणास्त्र अपने लक्ष्य तक पहुँचने से पहले ही विनष्ट कर दिया गया है।

'इस अन्तरिक्ष-गृह में एक अति तीव्र-दृष्टि वाला राडार लगा है और कल मध्याह्नोत्तर उस राडार ने संकेत दिया कि कोई वस्तु अति वेग से इस गृह की ओर आ रही है। अतः वहाँ पहुँचने से पहले ही वह सुरक्षा-प्रबन्ध से विनष्ट कर दी गई। बाद में ज्ञात हुआ है कि इस गृह को फोड़ डालने के लिए वह प्रक्षेपणास्त्र था। उसके विनष्ट होने पर उसमें अणु बम फटने के-से लक्षण प्रकट हुए थे।'

एक पत्रकार का प्रश्न था, "आपके पास इस गृह पर आई० बी० एम० है?"

"हमारे पास क्या है और क्या नहीं है, यह न मैं जानता हूँ और न ही बताने का अधिकार रखता हूँ। यह हमारे सुरक्षा-विभाग की बात है। इतना मैं बता सकता हूँ कि कल सायंकाल की घटना से इस होटल में रहने वालों का मनोबल बढ़

गया है और हमारे कमरों की 'बुकिंग' (आरक्षण) पन्द्रह दिन तक की पूर्ण हो चुकी है।"

एक अन्य पत्रकार ने पूछा, "क्या इसमें सच्चाई है कि आपने यह अन्तमेत्थम् दिया है कि तीन ऐसे आक्रमण आप क्षमा करेंगे, परन्तु चौथे आक्रमण पर पीकिंग भस्म कर दिया जाएगा ?"

"यह भारत सरकार की घोषणा है, अन्तरिक्ष निवास-गृह की नहीं। अतः निवास-गृह पर आक्रमण का प्रश्न नहीं, वरन् भारत पर आक्रमण का प्रश्न है। यह निवास-गृह भारत की सीमा में घोषित किया गया है, अतः इस पर आक्रमण की भी गणना होगी।"

इसके उपरान्त वहीं के डाकघर से संवाद-दाताओं को अपने-अपने देश में समाचार भेजने की सुविधा दे दी गई।

इन समाचारों ने विश्व के सब देशों के मानवों के कान खड़े कर दिए। देवता-स्वभाव के लोग इससे प्रसन्न थे। वे आशा करने लगे थे कि अब भारत के नेतृत्व में देवताओं का संगठन बन जाएगा। असुर भयभीत थे। वे उस अस्त्र का ज्ञान प्राप्त करना चाहते थे जिससे उनका प्रक्षपणास्त्र विनष्ट कर दिया गया था।

उसी रात सभी पत्रकार अन्तरिक्ष होटल का आतिथ्य स्वीकार कर रहे थे। रात के दस बजे कई प्रक्षेपणास्त्र इस निवास-गृह की ओर और भारत की राजधानी दिल्ली की ओर जाते राडार द्वारा देखे गए। अन्तरिक्ष-गृह में लोग सोने की तैयारी में लगे थे कि खतरे की घण्टी बज गई। सब लोग कोई अपने दिन के कपड़ों में और कोई रात को पहनने के वस्त्रों में होटल के रिसैप्शन-रूम में चले आए। सबको अन्तरिक्ष निवास-गृह की खिड़कियों में से पृथ्वी की ओर देखने का संकेत किया गया। सब लोग खिड़कियों में से देखने लगे। सामान्य दृष्टि से तो कुछ दिखाई नहीं दिया। प्रवक्ता भी कुछ कह नहीं रहा था। कुछ ही क्षण उपरान्त पृथ्वी की ओर का आकाश ऐसे प्रज्वलित हो उठा कि मानो कई तारक एकाएक टूटकर भूमि की ओर गिर रहे हैं।

यह सब दस से पन्द्रह सैकिण्ड में समाप्त हो गया। उसके बाद होटल के राडार विभाग से घोषणा की गई कि सब ठीक है, सब अस्त्र विनष्ट हो गए हैं। होटल के निवासियों ने प्रसन्नता में नाचना आरम्भ कर दिया। भारत सरकार के आदेश से होटल में मद्य का सेवन वर्जित था। इस कारण कॉफी और चाय पी जाने लगी।

बाद में यह घोषणा की गई कि, "राडार-विभाग ने बीस प्रक्षेपणास्त्रों को विनष्ट होते हुए देखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि चीन ने अपना प्रक्षेपणास्त्रों का पूर्ण भण्डार ही इस आक्रमण में लगा दिया है।

"सामान्य रूप में एक प्रक्षेपणास्त्र को चीन से भारत तक पहुँचने में अथवा इस अन्तरिक्ष-गृह तक पहुँचने में दस से पन्द्रह मिनट तक लगते हैं। यह समय बहुत

लम्बा होता है। इस काल में उनको विनष्ट करने का प्रबन्ध हमारे पास है। हमारे विरोधी अस्त्र तो प्रकाश की गति से चलते हैं, इस कारण आक्रामकों का मार्ग रोकने के लिए आधे सैकिण्ड में वे वहाँ पहुँच गए थे।"

प्रातःकाल विश्व-भर के देशों में चीन के भारत पर आक्रमण की सूचना फैल गई थी। जब तक पत्रकारों का प्रतिनिधि-मण्डल दिल्ली, न्यूयॉर्क अथवा लन्दन में वापस पहुँचा, तब तक इस आक्रमण तथा उसके प्रतिरोध के विषय में भारत सरकार की विज्ञप्ति प्रकाशित हो चुकी थी। भारत सरकार ने आक्रमण की व्याख्या सहित सूचना देकर उसके दो मिनट में विनष्ट करने का समाचार प्रकाशित कर दिया। साथ ही यह कह दिया, "भारत सरकार यह कहती है कि यह दूसरा आक्रमण है। भारत सरकार अभी एक अन्य आक्रमण क्षमा कर सकती है, परन्तु उसके उपरान्त यह निश्चय है कि पीकिंग अपने स्थान पर राख के ढेर के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं रहेगा। हम भूमण्डल के भले लोगों को सचेत करना चाहते हैं कि यदि वे लाखों की संख्या में नरहत्या के पाप से बचना चाहते हैं तो चीन को अपने कुकृत्य से रोकें। हम अपने सब विवादास्पद विषयों को किसी निष्पक्ष न्यायालय के सम्मुख उपस्थित करने के लिए तैयार हैं।"

चीन के दुष्कृत्यों से भयभीत अथवा भारत की तकनीकी सामर्थ्य का अनुमान लगा विश्व के राज्यों की आत्मा एक बार तो जाग उठी और उस दिन प्रातःकाल ही राष्ट्रसंघ की सुरक्षा-परिषद् की बैठक बुलायी गई। चीन तो परिषद् का सदस्य था। भारत को विशेष निमन्त्रण था। चीन का सदस्य उपस्थित हुआ तो उसने कह दिया, "जो कुछ समाचार-पत्रों में छपा है, उससे अधिक मैं कुछ नहीं जानता। न तो मुझे यह ज्ञात है कि क्या हुआ है और न ही यह कि भविष्य में मेरा देश क्या करने वाला है।"

भारत के प्रतिनिधि से पूछा गया तो उसने बताया, "मुझे कल मध्याह्नोत्तर ही इस बात की सूचना थी कि भारत सब प्रकार की सम्भावनाओं के लिए तैयार है। भारत सरकार यह आशा करती थी कि चीन अपने प्रथम अन्तरिक्ष-निवास-गृह पर फेंके प्रक्षेपणास्त्र के विफल हो जाने से समझ जाएगा कि बल से काम नहीं चल सकता। बल-प्रयोग दूसरे भी कर सकते हैं।

"परन्तु कल जब यहाँ दिन था और भारत तथा चीन में रात के दस बजे थे तब चीन का दूसरा आक्रमण आरम्भ हुआ। बीस प्रक्षेपणास्त्र एक साथ फेंके गए थे। इतने अधिक प्रक्षेपणास्त्रों को एक साथ भेजने का प्रयोजन यह प्रतीत होता था कि यदि इनमें से एक भी लक्ष्य बींध सकता तो महाविनाशकारी प्रभाव उत्पन्न हो सकता था।

"एक प्रक्षेपणास्त्र की जलती हुई राख नेपाल के एक पहाड़ी क्षेत्र पर पड़ी थी और वह सब विनष्ट हो गया है। उसमें वहाँ की सरकार का अनुमान है कि पाँच

सहस्र व्यक्ति जल मरे हैं।''

इस वक्तव्य पर सब उत्सुकता से पूछना चाहते थे कि भारत सरकार की चीन के इस कुकृत्य पर प्रतिक्रिया क्या है?

''मुझे यह आदेश है कि मैं अपनी सरकार की घोषणा को दोहरा दूँ। मेरी सरकार एक अन्य अवसर संसार के राज्यों को देना चाहती है। यदि उन्होंने चीन को न रोका तो हम निस्सन्देह पीकिंग को सर्वथा विनष्ट कर देंगे।''

''आप क्या यह बता सकते हैं कि आपके पास कौन-सा ऐसा अस्त्र है जो बीस प्रक्षेपणास्त्रों को एक ही साथ विनष्ट कर सकता है?''

''मैं वैज्ञानिक नहीं हूँ। इस पर भी यदि राष्ट्रसंघ चाहे तो भारत अपने अस्त्र का प्रदर्शन और परीक्षण सब राष्ट्रों के वैज्ञानिकों के समक्ष कर सकता है।''

''हमारे गुप्तचर-विभाग के एक व्यक्ति ने यह विदित किया है कि यह एक प्रकार की विद्युत् तरंग है जो ऐसा कर सकती है।'' महासचिव ने सूचना देते हुए बताया।

इस पर भारत के प्रतिनिधि ने मुस्कराते हुए कहा, ''डाक्टर ल्यू ने बताया होगा? हमारे वैज्ञानिकों का मत है कि वह झूठमूठ का वैज्ञानिक है। उसे विज्ञान का अ-आ-इ-ई भी नहीं आता। उसको डॉक्टर की उपाधि राजनीतिक कार्य-सिद्धि के लिए दी हुई है।''

महासचिव ने कहा, ''आप सदा किसी-न-किसी का अपमान करने यहाँ आते हैं।''

''मेरी यह चुनौती है कि अमेरिका के पाँच शिक्षा-विशेषज्ञों द्वारा उसकी योग्यता की परीक्षा ली जाए तो पता चलेगा कि वह इतना भी विज्ञान नहीं जानता जितना कि हमारे कालेज की प्रथम श्रेणी के विद्यार्थी जानते हैं।''

इस पर भारत के प्रतिनिधि को कह दिया गया, ''आपकी आवश्यकता होगी तो फिर बताएँगे।''

इसका अभिप्राय था कि वह अब जा सकता है। वह बाहर निकल गया।

: ४ :

चीन के नाम सुरक्षा-परिषद् का आग्रह छाप दिया गया। उसमें लिखा था, ''सुरक्षा-परिषद् यह निश्चय कर चुकी है कि डॉक्टर शाई-तांग-को का प्रश्न और अन्य विवाद भी अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के निर्णय के लिए सौंप दिए जाएँ। अतः चीन से आग्रह किया जाता है कि वह अपने आक्रामक कार्यों को रोक दे और विवाद को शान्तिपूर्वक निपटाना स्वीकार करे। यदि चीन की ओर से किसी प्रकार का संकेत इस दिशा में नहीं मिला तो भूमण्डल के सब राज्य चीन का विरोध करेंगे।''

इस विज्ञप्ति के उपरान्त दिन-पर-दिन व्यतीत होने लगे और चीन की ओर से किसी प्रकार का उत्तर नहीं दिया गया। न ही चीन ने किसी प्रकार का आक्रामक

कार्य करने का साहस किया।

भूमण्डल के प्रतिनिधियों ने चीन के सरकारी प्रतिनिधि से मिलने और उससे चीन के भावी योजना के विषय में जानने का यत्न किया, परन्तु चीन ने अपने प्रतिनिधि को सुरक्षा-परिषद् से वापस बुला लिया था।

अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-प्रतिनिधि क्लब में भारत के प्रवक्ता को आमन्त्रित किया गया तो उससे भारत-चीन के सम्बन्धों के विषय में प्रश्न पूछा गया। भारत सरकार के प्रवक्ता का कहना था, "भारत और चीन में आजकल अघोषित युद्ध की स्थिति है। चीन ने दो बार प्रक्षेपणास्त्रों से भारत पर आक्रमण किया है। हमने उसके आक्रमण को दोनों बार विनष्ट कर दिया है। हमारी वैज्ञानिक एवं तकनीकी सामर्थ्य इतनी है कि हम प्रत्येक प्रकार से आक्रमण का सफल विरोध करने की क्षमता रखते हैं।"

"यदि पुनः आक्रमण हुआ तो भारत सरकार का क्या इरादा है?"

"एक समय भारत सरकार ने तीन आक्रमणों की छूट दी थी। यह भारत की उदारता का प्रतीक ही था। परन्तु उस उदारता का दुरुपयोग किया जा रहा है। चीन की ओर से हमारी सरकार के, प्रजा के और मानव-अधिकारों के प्रति उदार होने का मिथ्या अर्थ लिया जा रहा है। चीन के जासूसों द्वारा तीन प्रयत्न हो चुके हैं कि वह हमारे प्रक्षेपणास्त्रों के विरोधी यन्त्रों का रहस्य जानें। अभी तक भारत सरकार इस सम्बन्ध में मौन है। हमने पाँच ख्याति-प्राप्त चीनी वैज्ञानिक-बन्दी बनाए हैं जो भारत के शस्त्रागार में घुसने का यत्न कर रहे थे। उन पर भी मुकद्दमा उस न्यायालय में प्रस्तुत किया जाएगा जिसमें डॉक्टर शाई-तांग-को के विरुद्ध कार्यवाही होगी।"

"क्या कार्यवाही करने का विचार हो रहा है?"

"अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में एक ही पक्ष नहीं जा सकता। जब तक दोनों पक्ष अपना विवाद वहाँ ले जाने के लिए तैयार न हों तब तक वह न्यायालय किसी विषय को अपने हाथ में नहीं लेता। अतः हम उस न्यायालय का द्वार तब ही खटखटाएँगे, जब चीन भी इसके लिए तैयार हो। भारत सरकार ने इस विषय पर चीन को लिखा है। मेरी सूचना के अनुसार अभी तक चीन की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई।

"अतः वर्तमान स्थिति में भारत सरकार की तीसरे आक्रमण को भी क्षमा करने की नीति अव्यावहारिक हो गई है। हमारे अस्त्र चीन के बीस मुख्य-मुख्य नगरों को विनष्ट करने के लिए तैयार खड़े हैं। भारत सरकार का संकेत मिलते ही दो सैकेण्ड में चीन के नगरों में मृत्यु का ताण्डव आरम्भ हो जाएगा।"

एक प्रतिनिधि का प्रश्न था, "भारत जैसा आध्यात्मवादी देश क्या इतनी नरहत्या करने के लिए तैयार है? क्या भारत ने महात्मा गांधी और महात्मा बुद्ध के सिद्धान्तों को घोलकर पी लिया है?"

भारत सरकार के प्रवक्ता ने इस प्रश्न पर एक क्षण तक विस्मय में प्रश्न-कर्त्ता की ओर देखा और तब उत्तर दिया, "भारत तो महात्मा गांधी और महात्मा बुद्ध के शान्तिमय मार्गों का अवलम्बन कर रहा है। अपने में चीन को दो सैकेण्ड में विनष्ट करने की सामर्थ्य रखते हुए भी और चीन की ओर से घोर उत्तेजक कारणों के होते हुए भी हमने प्रतिकार लेने का यत्न नहीं किया। परन्तु जब विपक्षी इन महात्माओं के उपदेशों को नहीं मानता तो उसके ऐसा करने का दण्ड भी तो होगा।"

"परन्तु महात्मा बुद्ध का आदेश तो यह है कि किसी भी स्थिति में प्रतिकार की भावना भी मन में लाना पाप है।

"हाँ।" प्रवक्ता का कहना था, "जहाँ तक मेरी सूचना है कि महात्मा बुद्ध की आत्मा ने भारत के प्रधानमन्त्री को यह कहना भेजा है कि वह सम्मति भूल थी। उसने मानव-मन के इतने घोर पतन की सम्भावना पर विचार नहीं किया था जितना कि चीन वालों ने प्रकट किया है। इस कारण वह अपनी सम्मति को वापस लेते हैं। उनकी नयी सम्मति यह है कि दया के पात्रों पर ही दया करनी चाहिए।"

"यह तो कुछ न हुआ।" एक अन्य ने मुस्कराते हुए कहा।

"हमारे विचार में यह पहले से कुछ अधिक हो गया है। यह अधिक व्याव-हारिक है।"

एक मास की प्रतीक्षा के उपरान्त भारत सरकार ने अपने देश के ही न्यायालय में डॉक्टर शाई-तांग-को के विरुद्ध मुकद्दमा उपस्थित कर दिया। इस मुकद्दमे में वादी जानकी देवी थी।

जानकी देवी ने यह याचिका की थी—

"पन्द्रह फरवरी को एक चीनी महानुभाव जिसे मैं नहीं जानती थी, मुझे न्यूयार्क के मैट्रोपोलिटन होटल में मिलने आया। उसने आते ही मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा करनी आरम्भ कर दी। मैं अपनी प्रशंसा अपने पति के मुख से सुनने की अभ्यस्त थी। इस कारण मैंने उसे कह दिया कि जो कुछ वह कह रहा है, वह मुझे पहले ही ज्ञात थे। मेरे पति ने मेरे मस्तिष्क में यह बात बैठा रखी है कि मैं संसार की सुन्दर स्त्रियों में एक हूँ। यह उसने कुछ नयी बात नहीं कही। अतः बिना समय व्यर्थ गंवाये यदि उसे कुछ नयी बात कहनी है तो कहे।

"तब डॉक्टर शाई-तांग-को ने अपना परिचय दिया और कहा कि उसने मेरे पति का स्थान लेने की इच्छा की है। मेरा तो यह कहना था कि वह मेरे पति के बराबर सुन्दर नहीं है। इस कारण मैं उसे उसका स्थानापन्न नहीं मान सकती।

"मिस्टर शाई-तांग-को ने कहा, 'तनिक ध्यान से देखें। मैं डॉक्टर कुलकर्णी से अधिक शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक आकर्षण रखता हूँ।'

"मेरा कहना था, 'मैं इस विषय में आपसे मतभेद रखती हूँ। अतः आप यहाँ

सें चले जाइए, अन्यथा मैं आपको इस धृष्टता का दण्ड दिलवा सकती हूँ ।'

" 'परन्तु मेरा आने का प्रयोजन तो कुछ अन्य है । मैं आपकी अन्तरिक्ष निवास-गृह के विषय में सेवाएँ लेने आया हूँ ।'

"मैंने इसके उत्तर में कहा, 'मैंने अपनी सेवाएँ भारत सरकार को दे रखी हैं। आप इस विषय पर भारत सरकार से बातचीत करें ।'

" 'वह भी हो जाएगा । आप यदि स्वीकृति दें तो मैं अभी आपको भारत के प्रतिनिधि के पास ले चलूँगा । वहाँ से यदि आवश्यकता अनुभव हुई तो हम दिल्ली को चल देंगे ।'

"मेरा उतर था, 'मैंने पाँच वर्ष तक अपनी सेवाएँ भारत सरकार को दे रखी हैं । यदि भारत सरकार मेरी सेवाएँ चीन सरकार को भाड़े पर देना चाहेगी तो मैं तैयार हो जाऊँगी । परन्तु इस समय मुझे काम है । मैं नहीं जा सकती ।'

" 'आप तो यहाँ खाली बैठी हैं । कहाँ काम है आपको ?'

" 'मैं इस समय अमेरिका सरकार के चीफ इंजीनियर सें कुछ बातचीत करने जा रही हूँ ।'

" 'आइए, मैं भी वहीं जा रहा हूँ । वहाँ से भारत सरकार के राष्ट्रसंघ में प्रतिनिधि से बातचीत करेंगे ।'

"मैं तैयार हो गयी । मैं विचार कर रही थी कि मैं टैक्सी में जा रही हूँ; इस कारण यह भी साथ चल सकता है । मैं होटल सें नीचे उतर उसके साथ चलने के लिए तैयार हो गयी । मिस्टर शाई-तांग-को ने टैक्सी बुलाई और मेरे साथ बैठ बातें करने लगा । मैंने सुना था कि इसने टैक्सी ड्राईवर को चीफ इंजीनियर का पता बताया है । इस कारण निश्चिन्त हो बातें करने लगी । परन्तु जब टैक्सी न्यूयॉर्क के हवाई पत्तन पर पहुँची तो मुझे विस्मय हुआ । उसने मेरा विस्मय विलीन करने का यत्न किया । उसने कहा, 'अभी यहाँ से हम इंजीनियर साहब के कार्यालय को ही चल रहे हैं ।' अब मैं सतर्क हो गई । मैंने वहाँ कोलाहल करने के स्थान उसके कथन को सत्य मान लेने का बहाना किया और हम वहाँ 'वेटिंग-रूम' में चले गए । वहाँ वह एक पब्लिक टेनीफोन बूथ में चला गया । मुझे एकाएक विचार आया कि मैं भी अपने राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि से सम्पर्क बनाऊँ । जब मैंने उसे टेलीफोन से अपनी स्थिति बताई तो वह कहने लगा, 'दाल में कुछ काला प्रतीत होता है । मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ ।'

"मैं टेलीफोन बूथ से जब बाहर आयी तो शाई-तांग-को तब तक आ गया था । वह मेरे पास मेरे लिए एक कॉफी का प्याला लेकर आया । मैं इस समय कुछ चिन्ता और कुछ भय अनुभव कर रही थी । इस कारण मैंने कॉफी ले ली और पीते हुए कहा, 'मुझे जल्दी इंजीनियर साहब से मिलना है ।'

"इसने कहा, 'एक-दो मिनट का काम यहाँ और है । बस चलते ही हैं ।'

"मैं ज्यों-ज्यों कॉफी पीती जाती थी, मेरे अंग शिथिल होते जाते थे। मेरी बोलने की शक्ति समाप्त हो गई थी और मस्तिष्क में बादल उठते दिखाई देने लगे थे।

"तदनन्तर इसने मेरी बाँह पकड़ आश्रय देते हुए उठाया और कहा, 'चलो चलें।'

"यह मुझे एक चीनी हवाई जहाज पर ले गया। उसमें दस-बारह चीनी पहले बैठे थे। मुझे उसमें बैठा दिया गया और जहाज चल पड़ा।

"इसके लगभग एक घण्टा उपरान्त मेरी चेतना लौटने लगी। ज्यों ही मैं बोल सकी, मैंने शाई-तांग-को से कहा, 'आप मेरा अपहरण कर रहे हैं। यह ठीक नहीं।'

"इस पर यह पुनः मेरे सौन्दर्य की प्रशंसा करने लगा और मुझे धन-दौलत, मान और सब प्रकार का सुख देने की बात कहने लगा।

"मैं विवशता अनुभव कर रही थी। इस समय हम एटलाण्टिक सागर पर पूर्व की ओर उड़ते जा रहे थे।

"दो घण्टे और व्यतीत हुए। हमारे लिए चाय आई। मैं डर रही थी कि उसमें भी किसी प्रकार की अचेत करने की ओषधि होगी। परन्तु शाई-तांग-को ने मुझे आश्वासन दिया कि इसमें किसी प्रकार की नशे की वस्तु नहीं है। उसी पौट में से जो मेरे लिए आया था, उसने अपने लिए चाय बनाई और फिर मेरे लिए बनाई। उसने चाय पी तो मैंने भी एक प्याला पी लिया।

"अभी हम चाय पी ही रहे थे कि हवाई जहाज का एक पायलट हमारे सामने आकर बैठ गया और चीनी भाषा में शाई-तांग-को से कुछ कहने लगा। इस पर शाई-तांग-को के मुख पर चिन्ता की रेखाएँ बनने लगीं। एकाएक वह मेरी ओर घूमकर कहने लगा, 'हमारा हवाई जहाज नियन्त्रण से बाहर हो गया है।'

"इस पर मैंने भी चिन्ता अनुभव करते हुए पूछा, 'तब ?'

" 'समझ में नहीं आता कि क्या किया जाए।'

" 'परन्तु यह उड़ तो रहा है ?' मैंने पूछा।

" 'हाँ। परन्तु हमारे नियन्त्रण के बिना।'

" 'तब क्या होगा ?' इसका अर्थ मैं यह समझी थी कि हवाई जहाज विनष्ट हो जाएगा। यात्रियों को सूचना दे दी गई कि सब पेटियाँ पहन लें।

"सबने पेटियाँ पहन लीं। मैं परेशान थी और समझ रही थी कि अन्न के साथ घुन भी पिसने वाला है।

"परन्तु मिनट के उपरान्त मिनट व्यतीत होने लगे और फिर एक घण्टे के उपरान्त एक अधिकारी आया और शाई-तांग-को को कुछ बता गया।

"इस पर शाई-तांग-को ने मुझे बताया कि हमारा हवाई जहाज किसी शक्ति से भारत की ओर उड़ा जा रहा है। पायलट उसकी दिशा बदलना चाहता है, परन्तु

वह बदलती ही नहीं ।

"मैं कुछ-कुछ समझी । इस पर मैंने कहा, 'कदाचित् हम सब भारत सरकार के कैदी हो गए हैं ।'

" 'कैसे ?'

" 'यह तो मैं नहीं जानती । मैं आपके कहने पर ही अपना अनुमान बता रही हूँ ।'

"दो घण्टे और व्यतीत हुए तो हम अफ्रीका के ऊपर उड़ने लगे थे । एक घण्टा और व्यतीत हुआ और हम अरब सागर पर थे । प्रत्येक पन्द्रह मिनट पर कोई-न-कोई पायलट आता था और जहाज की स्थिति बता जाता था ।

"इस प्रकार सूर्य के विचार से जिस समय हम न्यूयार्क से चले थे तो उसी समय दिल्ली पालम हवाई पत्तन पर उतर पड़े थे । हम लगभग उसी गति से पूर्व की ओर उड़ते हुए आए थे जिस गति से पृथ्वी पूर्व की ओर घूम रही थी । हम चार बजे मध्याह्नोत्तर न्यूयार्क से चले थे और सवा चार बजे मध्याह्नोत्तर दिल्ली के हवाई पत्तन की पट्टी पर जा ठहरे थे ।

"हवाई जहाज के वहाँ पहुँचते ही भारतीय सेना ने उसे घेर लिया और उसमें सैनिक घुस आए । डॉक्टर शाई-तांग-को को पकड़ लिया गया और मुझे हवाई जहाज से उतार लिया गया । इसके उपरान्त हवाई जहाज को उड़ जाने की स्वीकृति दे दी गई ।"

इसके उपरान्त भारत के सरकारी गुप्तचर-विभाग के व्यक्ति ने अपने वक्तव्य में कहा—"घटना के दिन लगभग चार बजे न्यूयार्क से सन्देश आया कि हवाई जहाज 'पीकिंग ८०२' में जानकी देवी का न्यूयार्क से अपहरण कर लिया गया है । इस पर हमने अपने संचार-यन्त्रों को सतर्क किया कि वह इस नम्बर के हवाई जहाज को ढूँढे । लगभग एक घण्टे की खोज पर पता चला कि हवाई जहाज एटलाण्टिक सागर पर उड़ता हुआ पूर्व की ओर जा रहा है । इस पर पन्द्रह-बीस मिनट में हमारी सरकार की आज्ञा आई कि हवाई जहाज को दिल्ली ले आया जाए । जब हवाई जहाज अनदेखी शक्ति से खिंचा हुआ दिल्ली हवाई पत्तन पर पहुँचा तो हमने सेना की सहायता से इसे घेर लिया । उसमें से शाई-तांग-को को पकड़ लिया और मजिस्ट्रेट के सम्मुख जानकी देवी के बयान हो गए ।

"अब वही बयान न्यायालय के सम्मुख उपस्थित कर रहे हैं ।"

न्यायालय ने चीन सरकार को सूचना भेज दी कि उसके राष्ट्रसंघ के प्रतिनिधि शाई-तांग-को के विरुद्ध दिल्ली के न्यायालय में मुकद्दमा उपस्थित हुआ है । अतः इसकी सूचना दी जा रही है जिससे कि यदि वह चाहे तो उस अभियुक्त की रक्षा के लिए अवसर दिया जा सकता है ।

उन दिनों चीन का दूतावास दिल्ली से उठा लिया गया था ।

: ५ :

चीन ने भारत सरकार को सूचना का उत्तर यह दिया कि भारत सरकार ने डॉक्टर शाई-तांग-को का 'पीकिंग ८०२' हवाई जहाज पर से अपहरण किया है। भारत सरकार ने 'पीकिंग ८०२' पर साढ़े-तीन घण्टे का अनुचित अधिकार कर अन्तर्राष्ट्रीय कानून को भंग किया है। अतः भारत सरकार डॉक्टर शाई-तांग-को को तुरन्त छोड़ दे और हवाई जहाज को बलपूर्वक साढ़े-तीन घण्टे तक अपने अधिकार में रखने का जो अपराध किया है उसके लिए दस लाख डालर की हानि की पूर्ति करे।

यह उत्तर भारत सरकार के न्यायालय में उपस्थित कर दिया गया। इस उत्तर की जब अवहेलना की गई तो एक दिन अन्तरिक्ष निवास-गृह से भारत का सम्पर्क टूट गया।

अन्तरिक्ष निवास-गृह का कार्यालय कैलाश-भवन में था। एकाएक सम्पर्क टूटा तो भारत सरकार को सूचित किया गया और राडार से इस निवास-गृह की स्थिति को जानने का यत्न किया गया। यह निवास-गृह अपने स्थान पर नहीं था। अन्तरिक्ष में खोज की जाने लगी। इसका कुछ पता नहीं चला। प्रशान्त महासागर में एक तिनके को ढूँढने से भी अधिक कठिन समस्या थी।

कई दिन की खोज के उपरान्त यह अनुमान लगाया गया कि किसी प्रकार की निवास-गृह के नियन्त्रण में खराबी आ जाने से यह अन्तरिक्ष में किसी दिशा में उड़ गया है। अपार एवं अज्ञात अन्तरिक्ष में इसे ढूँढ़ निकालने में असफलता हुई है।

एक संकेत अमेरिका संचार संस्थान को मिला कि एक काले बिन्दु की-सी वस्तु अति वेग से आकाश गंगा के बाहर की ओर उड़ती हुई दिखाई दे रही है। सम्भवतः यह भारत का अन्तरिक्ष निवास-गृह है।

इस निवास-गृह पर उस समय तीन सौ पचास व्यक्ति उपस्थित थे। सबके नामों की सूची घोषित की गई। इस निवास-गृह में रहने वालों में पाँच देशों के व्यक्ति थे। भारत, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कैनाडा और इंग्लैण्ड।

इस निवास-गृह के लापता हो जाने पर सब देशों से शोक एवं संवेदना के समाचार और सन्देश आए। परन्तु चीन मौन था। यद्यपि यह नहीं कहा जा सकता कि चीन इस दुर्घटना से प्रसन्न है अथवा रुष्ट; इस पर भी यह कानों-कान कहा जाने लगा था कि इसमें चीन ने किसी प्रकार का षड्यन्त्र किया है।

दिन-पर-दिन और मास-पर-मास व्यतीत होने लगे। शाई-तांग-को को आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया। इस दण्ड पर किसी प्रकार की उच्च न्यायालय में याचिका नहीं की गई।

अन्तरिक्ष निवास-गृह के लापता होने के साढ़े-तीन मास के उपरान्त रूस की एक अन्तरिक्ष की दूरबीन ने यह सूचना दी कि आकाश गंगा के किनारे की ओर से

लगभग पाँच दिन के प्रकाश अन्तर पर एक नयी वस्तुएँ देखने में मिली है। यह वहाँ के किसी सूर्य से प्रकाशित हो रही है। उसके विषय में अध्ययन किया जा रहा है।

इसके दो दिन उपरान्त यह घोषणा की गई कि ऐसा प्रतीत होता है कि वह वस्तु सौर-मण्डल की परिधि में है। एकाएक एक दिन यह घोषित किया गया कि वह वस्तु सम्भवतः खोया हुआ भारत का अन्तरिक्ष निवास-गृह है।

इस सम्भावना पर तो पूर्ण भू-मण्डल के देशों में आशा, उत्साह और हर्ष की लहर दौड़ गई। अब तो भारत ने भी यत्न किया कि उस अपरिचित नवीन वस्तु को देखे और पहचानने का यत्न किया जाए। लगभग दो मास के उपरान्त भारत अन्तरिक्ष अनुसंधान विभाग की यह विज्ञप्ति निकल गई कि वह वस्तु जिसका संकेत रूसी और अमरीकी दूरबीनों को मिला था; वह भारत ने देख ली है और उसका अनुमान है कि वह वस्तु पृथ्वी नक्षत्र की ओर बढ़ रही है। सम्भवतः वह भारत का खोया हुआ अन्तरिक्ष निवास-गृह ही है। परन्तु अन्तर बहुत दूर का होने के कारण और असीम अन्तरिक्ष के अनुपात में वस्तु अति सूक्ष्म होने के कारण अभी विश्वास से कुछ नहीं कहा जा सकता। इतना मात्र ही निश्चय से कहा जा सकता है कि वह एक नगण्य बिन्दुमात्र पृथ्वी की ओर अग्रसर हो रहा है।

अब यह प्रश्न होने लगा कि उस पर इतने दिन जीवन के साधन शेष हो रहे होंगे अथवा नहीं ? इस पर इस निवास-गृह के कार्यालय से यह विज्ञप्ति निकाली गई—

'यह निश्चय से कहना अभी सम्भव नहीं कि यह वस्तु अन्तरिक्ष निवास-गृह ही है। परन्तु इतना कहा जा सकता है कि यदि इस गृह के यन्त्रादिक कार्य करते हैं तो जीवन के लिए आवश्यक सामग्री वहाँ निर्माण करने के साधन हैं। अन्तरिक्ष निवास-गृह के इंजीनियरों का ऐसा प्रबन्ध कि बिना बाहर से किसी प्रकार की और किसी वस्तु के न पहुँचने पर भी अन्तरिक्ष-गृह का जीवन कई वर्ष तक चल सकता है।'

इस विज्ञप्ति से लापता हुए व्यक्तियों के सम्बन्धियों की पूछताछ करने वालों का इस निवास-गृह के कार्यालय पर ताँता लग गया।

एक मास की दम घुटने वाली प्रतीक्षा पर पहली विज्ञप्ति कैलाश भवन से जारी की गई, 'यह अब निश्चय से कहा जा सकता है कि पृथ्वी पर यन्त्रों से खोज निकाली गई कि वह वस्तु जो सूर्य-मण्डल के किनारे पर जा पहुँची थी, भारत का निवास-गृह ही है। यह भी निश्चय से कहा जा सकता है कि निवास-गृह पृथ्वी की ओर आ रहा है। इस बात के संकेत मिले हैं कि उस निवास-गृह पर जीवन के लक्षण हैं। हम जीवन के लक्षण इस कारण मानते हैं कि वहाँ कार्य की दिशा, काल और स्थान निश्चय करने वाला कोई है। इसके लक्षण उस वस्तु में दिखाई दिए हैं। वह गृह सूर्य से अपना उचित अन्तर रखता हुआ और अन्य ग्रहों के गुरुत्वाकर्षण

से बाहर रहने का यत्न कर रहा है। इससे यह अनुमान लगाया जा रहा है कि उस भवन में जीवन अर्थात् चेतना के लक्षण हैं।

निवास-गृह से संचार क्षेत्रों से सम्पर्क स्थापित करने का यत्न किया जाने लगा और निवास-गृह के लापता होने से ठीक साढ़े-सात मास उपरान्त प्रथम बार सम्पर्क स्थापित हो पाया।

इस समय तक भूमण्डल के वैज्ञानिकों का एक प्रतिनिधि-मण्डल स्थायी रूप में कैलाश-भवन में रहने के लिए आ गया था और वह दिनानुदिन की सूचनाओं और विज्ञप्तियों पर विचार-विनिमय कर रहा था।

प्रथम सम्पर्क में यह समाचार मिला, 'निवास-गृह पर जीवन सामान्य है। इस काल में इस गृह पर तीन मृत्यु हुई हैं। एक विष खाकर मर गया है। वह चीनी सरकार का भेदिया कहा जाता है, उसके विषय में यह सन्देह है कि वह इस निवास-गृह को विनष्ट करने के लिए आया था। दो अन्य लोगों की मृत्यु हो गई है। उनकी मृत्यु का कारण उनके हृदय की गति बन्द हो जाने से हुई है। उनके शव अभी तक 'कोल्ड स्टोरेज' में सुरक्षित हैं। शेष प्राणी ज्यों-ज्यों पृथ्वी के समीप होते जाते हैं, उत्साहित तथा प्रफुल्लित होते जाते हैं।

'वापस लौटने में हमें भारी कठिनाई हुई है। इसमें सबसे बड़ी कठिनाई तो अपने नक्षत्र को ढूँढने में हुई है। तदनन्तर उस तक पहुँचने का मार्ग निश्चय करने में हुई है। हमारे पास निवास-गृह के संचालन के लिए ईंधन की पर्याप्त मात्रा है और उसीके भरोसे अभी तक हम जीवित हैं।

'हम दो सप्ताह में पृथ्वी के समीप पहुँच सकेंगे।'

अब कैलाश-भवन के अति सूक्ष्म तरंग प्रसारण यन्त्र से इस गृह की ओर शक्ति भेजने का यत्न होने लगा।

जिस दिन यह निवास-गृह पृथ्वी के ऊपर चक्कर काटता हुआ अपना स्थान दिल्ली के ऊपर लेने का यत्न करने लगा तो मनुष्य की प्रकृति पर इस नयी विजय के उपलक्ष्य में पृथ्वी पर के सब देशों में एक दिन का अवकाश घोषित कर दिया गया। भूमण्डल के सब देशों के दूर-दृष्टि यन्त्र इस निवास-गृह को देखने लगे और इसकी प्रत्येक गतिविधि की रिपोर्ट देने लगे।

पृथ्वी के कई चक्कर काटने पर निवास-गृह अन्तरिक्ष में अपने पूर्व-निश्चित स्थान पर आ पृथ्वी की गति के साथ-साथ चलने लगा तो कैलाश-गृह से अन्तरिक्ष बस उस निवास-गृह के लिए गई और वहाँ के रहने वालों का प्रथम दल दिल्ली में आया। इसके उपरान्त तीन अन्तरिक्ष बसें तब तक चक्कर लगाती रहीं, जब तक उस गृह के सब वासी पृथ्वी पर नहीं आ गए।

इस दुर्घटना की अन्तर्राष्ट्रीय जाँच आरम्भ हुई। राष्ट्रसंघ ने हेग अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के तीन न्यायाधीशों का आयोग नियुक्त करा दिया और इस दुर्घटना के

विषय में जाँच होने लगी।

: ६ :

एक अति भयंकर दुर्घटना होते-होते बच गई। यह तो कदाचित् कुछ अधिक चिन्ता का विषय न होता, यदि केवल तीन सौ पचास मानवों के मर जाने और लगभग एक अरब रुपये की लागत के यन्त्र के विनष्ट हो जाने की बात होती। बात थी प्रकृति पर मानव के विजय का पराजय में बदल जाना और भावी विजय-यात्रा में बाधा उपस्थित होना।

वर्तमान युग की वैज्ञानिक उन्नति का रहस्य ही यह है कि वैज्ञानिक प्रकृति के रहस्यमय स्थानों में घुस जाते हैं और उस अज्ञात स्थान में भटक जाने का भय मोल ले लेते हैं। इस भटकने पर वह उस रहस्यमय स्थान का ज्ञान प्राप्त करते हैं। जब तक वह ज्ञान प्राप्त कर उस रहस्यमय स्थान को पूर्णतः अपने अधिकार में नहीं कर लेते, तब तक वे निरन्तर भय मोल लेते रहते हैं और प्रकृति बेचारी पराजित हो अपने पूर्ण गुह्य स्थानों को मनुष्य के भोग के लिए अर्पण करने पर विवश हो जाती है।

इस अन्तरिक्ष निवास-स्थान के निर्माण करने, इसके अन्तरिक्ष में स्थापित करने और फिर इस स्थान पर सैकड़ों लोगों का जाकर रहना बहुत ही जोखिम का काम था। वैज्ञानिकों ने वह भी किया। साहसी लोगों ने इस जोखिम को सिर पर लिया।

इस विषय में भी मानव-बुद्धि, प्रयास और ज्ञान की विजय हुई। इस विजय की कहानी हेग कोर्ट में एकत्रित होने लगी। जब पूर्ण कहानी की कड़ियाँ क्रमबद्ध हो गईं तो उस रिपोर्ट को प्रकाशित कर दिया गया।

दुर्घटना के होते-होते बच जाने की कहानी का आरम्भ पीकिंग में हुआ था। वहाँ इस शैतानी कार्य का श्रीगणेश एक असुर के मन में उत्पन्न हुआ था।

पीकिंग के विशाल भवन के अति सुसज्जित आगार में तीन व्यक्ति विचार-विनिमय कर रहे थे। एक देश का प्रधानमन्त्री था। दूसरा सर्वोच्च सेनाध्यक्ष और तीसरा गुप्तचर-विभाग का सर्वोच्च अधिकारी।

यह उस दिन की बात थी जब भारत का अन्तरिक्ष निवास-गृह अपने कक्ष में स्थिर हो पृथ्वी के साथ ऐसे घूमने लगा था जैसे कि सदा वह दिल्ली के ऊपर ही रहता था।

इस पर भी पृथ्वी-तल से ढाई हजार किलोमीटर दूर होने के कारण वह पृथ्वी के उस पूर्ण गोलार्द्ध पर ऐसे दृष्टि रख सकता था जैसे कि किसी आगार के एक कोने में खड़ा व्यक्ति पूर्ण आगार पर निगहबानी रख सकता है।

साधु के पास तो कुछ छुपाने को होता नहीं। उसकी गुदड़ी में कौड़ियाँ हैं अथवा रत्न, वे सबके समक्ष प्रकट रूप में ही होते हैं। परन्तु चोर के पास तो सब-कुछ छुपाने के लिए ही होता है। उसकी एक-एक संचित कौड़ी दूसरे से छीनी-झपटी

ही होती है और वह उसे छुपाकर रखने के लिए परेशान रहता है।

यही अवस्था उनकी थी जो इस सुसज्जित आगार में बैठ विचार-विनिमय कर रहे थे।

प्रधानमन्त्री कह रहा था, "मैंने आप दोनों महानुभावों को आज भारत के इस अन्तरिक्ष स्थित निवास-गृह से उत्पन्न स्थिति पर विचार करने के लिए बुलाया है।

"अब स्थिति वही है जो किसी ऐसे गाँव में होती है, जहाँ सब एक-मंजिले मकान हों और जब पाँच मंजिल वाली हवेली बन जाए तब आसपास के सब घरों के रहस्यमय कार्य नग्न होने लगते हैं। भारत ने अपनी हवेली इतनी ऊँची बना ली है कि गगन के पार तक जा पहुँची है और हम लोग तो अभी एक-मंजिले मकानों में ही रहते हैं।"

"परन्तु भारत ने अपने ज्ञान के बल पर यह गगन-भेदी परियोजना तैयार की है। हम उसे इस स्थिति से वंचित कैसे कर सकते हैं ?" सेनाध्यक्ष ने कहा।

"वैसे ही जैसे किसी धनी व्यापारी अथवा उद्योगपति का धन-सम्पदा जब्त कर लेने से करते हैं।"

"परन्तु यह हम वहीं कर सकते हैं जहाँ हमारे शासन का हाथ पहुँच सकता है।"

"परन्तु हम अपने जासूस भेजकर सीमावर्ती देशों में भी हस्तक्षेप करते रहते हैं।"

"हाँ, पर यह नैतिक दृष्टि से भी अनुचित ही प्रतीत होता है। आज भारत की रूप-रेखा अन्य यूरोप और अमेरिकन देशों से विलक्षण निकल रही है। वे अपने रहस्य किसीसे छुपाकर नहीं रखते और किसी दूसरे के राज्य में हस्तक्षेप नहीं करते।"

"इसमें कुछ भ्रम है। भारत भी अपनी छुपाकर रखने योग्य बातों को छुपा कर रखता है और वहाँ किसी भी देश के जासूस को घुसने नहीं देता।"

"क्या रहस्य उन्होंने छुपाकर रखा है ?" सेनाध्यक्ष का अगला प्रश्न था।

"उन्होंने सस्ती और सुगमता से प्राप्त अतुल शक्ति के भण्डार को पिछले दस वर्ष से गुप्त रखा हुआ है। शक्ति के इस भण्डार के आश्रय दिन-दुगुनी, रात-चौगुनी उन्नति कर रहा है। यह सर्वथा वैसे ही है जैसे कि कोई धनी-मानी अपने धन-दौलत को पूँजी में परिवर्तित कर ले और फिर कर्मचारियों का शोषण आरम्भ कर दे।"

"परन्तु श्रीमान् ! क्या अपने ज्ञान से भारत ने किसी का शोषण किया है ? जब-जब भी इस दिशा में हुए आविष्कारों का लाभ भारतवासियों को होने लगता है, तब वही लाभ वे मानव-समाज के लिए प्रस्तुत कर देते हैं।

"उदाहरण के रूप में उन्होंने अपनी शिक्षा-प्रणाली को राजतन्त्र से स्वतन्त्र किया। दस वर्ष तक इसे स्वतन्त्र रखने पर जो कुछ लाभ-हानि भारत की जनता को हुई, वह उन्होंने बिना एक राई-भर भी छुपाए राष्ट्रसंघ के सामने रख दी। राष्ट्रसंघ ने वह प्रकाशित कर दी। परन्तु यह बात भूमण्डल के अन्य देशों को पसन्द नहीं आई। किसी भी देश का शासन अपने देशवासियों के मस्तिष्क से बँधी डोर को ढीला करने के लिए तैयार नहीं हुआ। स्वार्थी शासक अपने निहित हितों को त्यागने के लिए तैयार नहीं होते।"

एक कम्युनिस्ट देश का प्रधानमन्त्री एक गैर-कम्युनिस्ट देश की शिक्षा-नीति की प्रशंसा सुन और सब देशों के शासकों में अपने को भी धूर्त एवं स्वार्थी कहा जाता सुन, क्रोध से लाल सेनाध्यक्ष का मुख देखने लगा।

एकाएक उसने कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखकर कह दिया, "मेरे एक अन्य कार्य पर जाने का समय हो गया है; इस कारण हम इसी स्थान पर यह विचार कल इसी समय आरम्भ करेंगे।"

गोष्ठी समाप्त हुई। इसके पाँच मिनट उपरान्त गुप्तचर-विभाग के सर्वोच्च अधिकारी को पुनः प्रधानमन्त्री ने बुलवाया।

अधिकारी के आ जाने पर प्रधानमन्त्री ने कहा, "हमारे सेनाध्यक्ष को भारत से आई स्वतन्त्रता की प्लेग की छूत लग गई है। इस रोग का एक ही इलाज है कि रोगी को जीवित जला दिया जाए, जिससे प्लेग के कीटाणु रोगी के साथ ही जल जाएँ और रोग वहीं दबा दिया जाए।"

गुप्तचर-विभाग के सर्वोच्च अधिकारी को भी सेनाध्यक्ष की बात सुन विस्मय तो हुआ था, परन्तु उसे बिन बुलाए सम्मति देना उचित नहीं प्रतीत हुआ था। अब उसके मन की बात हुई तो उसने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "यह समाज-हित का कार्य किस प्रकार किया जाए?"

"सेनाध्यक्ष की हृदय-गति रुक जाने से हुई मृत्यु पर देश-भर को शोक मनाने का अवसर दिया जाएगा।"

"परन्तु यह सेना का अतिप्रिय अधिकारी है। सेना विद्रोह भी कर सकती है।"

"यह काम तुम मुझ पर छोड़ो। तुम अपना कार्य ऐसी सफाई से करो कि मृत्यु के कारण पर सन्देह न बना रहे। उस अवस्था में हम जनता का सहयोग प्राप्त कर लेंगे।"

यद्यपि गुप्तचर अधिकारी को अभी सन्तोष नहीं हुआ था, परन्तु वह अपने मन में भी यही योजना बना रहा था जो प्रधानमन्त्री ने बताई थी। इस कारण वह प्रधानमन्त्री की बात मान गया। उसने कहा, "आपको कल सेनाध्यक्ष की अर्थी के साथ चलने के लिए अपने को रिक्त रखना चाहिए।"

यह पहला सेनाध्यक्ष नहीं था जिसको प्रधानमन्त्री ने अपने मार्ग से हटाने की

योजना बनाई थी। पहले भी कई बार ऐसा हो चुका था। चोटी के अधिकारी को भला कौन मना करने की क्षमता रख सकता है? इस कारण उसको जीवन-क्षेत्र से बाहर करना ही एक उपाय रह जाता है। इसमें जो अधिक धूर्त्त होता है वही सफल होता है। भला और सरल-चित्त व्यक्ति घाटे में रहता है।

अतः अगले दिन प्रातःकाल सेनाध्यक्ष के भवन से सूचना प्रसारित हो गई कि सेनाध्यक्ष रात भोजनोपरान्त अति प्रसन्न और उत्साह से भरे हुए अपनी पत्नी के कमरे में गए थे। परन्तु प्रातः उन्हें मृत पाया गया। शव की अन्तिम परीक्षा हो रही है। अभी उनकी पत्नी को पुलिस ने पकड़ लिया है और सेनाध्यक्ष के निजी-जीवन के कई रहस्यों का उद्‌घाटन हो रहा प्रतीत होता है।

मध्याह्न के समय कुछ नगरों में सेना ने विद्रोह किया और जनता ने सेना का विरोध किया, परन्तु सेना के शस्त्रास्त्र अपार जन-समूह की हत्या करते-करते जब कुण्ठित हो गए तो सेना को पराजित होना पड़ा।

तीन दिन के इस संघर्ष में सामान्य प्रजा के पाँच लाख प्राणी मर गए और सेना के दस सहस्र व्यक्ति मारे गए। विद्रोह शान्त हुआ और सेनाध्यक्ष की पत्नी पर गुप्त रूप में न्यायालय में अभियोग चला और उसे अपने पति की हत्या का अपराधी घोषित कर मृत्यु-दण्ड सुना दिया गया।

परन्तु उस भली स्त्री को फाँसी पर लटकाने की आवश्यकता नहीं पड़ी। फाँसी के तख्ते तक जाते-जाते जनता ने ईंट-पत्थर मारकर ही उसकी हत्या कर दी।

इसका परिणाम यह हुआ कि वही गोष्ठी तीन सप्ताह तक स्थगित रखी गई और नये सेनाध्यक्ष की नियुक्ति के उपरान्त पुनः आरम्भ हुई।

नवीन सेनाध्यक्ष को कानों-कान संकेत मिल चुका था कि प्रधानमन्त्री को रुष्ट करने के परिणाम-स्वरूप ही भूतपूर्व सेनाध्यक्ष की मृत्यु हुई है।

अतः इस बार गोष्ठी में बात सरलता से निश्चय हो गई। प्रधानमन्त्री ने कहा, "हमें इस अन्तरिक्ष निवास-गृह को विनष्ट कर देना चाहिए। एक साम्यवादी देश किसी भी पूँजीवादी देश को अपने देश पर शासक बना हुआ नहीं देख सकता।"

अतः उचित अवसर पर एक रात चीनी सेना ने अपने एक प्रक्षेपणास्त्र को इस अन्तरिक्ष निवास-गृह पर छोड़ दिया। ढाई सहस्र किलोमीटर का मार्ग बीस मिनट में तय हो सकता था, परन्तु प्रक्षेपणास्त्र चीन की भूमि पर ही विचर रहा था कि फट गया और उसकी राख कई चीनी गाँवों पर पड़ी और उससे सहस्रों चीनी मारे गए।

बाद में भारत सरकार की घोषणा से पता चला कि प्रक्षेपणास्त्र भारत ने विनष्ट किया था। इस पर तो घायल साँप की भाँति चीनी शासन उत्तेजित होने लगा। अगली रात बीस प्रक्षेपणास्त्र भारत के भिन्न-भिन्न नगरों और अन्तरिक्ष

निवास-गृह पर एक साथ छोड़े गए। परन्तु वे आकाश में से ऐसे बाहर कर दिए गए जैसे कि खिड़की में से कूड़ा-कर्कट बाहर कर दिया जाता है।

इस घटना पर तो बहुत हल्ला हुआ, परन्तु सुरक्षा परिषद् चीन पर कोई कार्यवाही करने के लिए सहमत नहीं हो सकी। इस समय भारत ने चीन को चेतावनी दे दी कि यदि उसने पुनः ऐसी हरकत की तो उसके देश के बीसियों बड़े नगर भस्म कर डाले जाएँगे।

अन्तरिक्ष निवास-गृह की निर्माता जानकी देवी के अपहरण का षड्यन्त्र किया गया। जानकी देवी वैसे ही एक-दो अन्तरिक्ष निवास-गृह की योजना बनाने के लिए न्यूयार्क में गई हुई थीं। न्यूयार्क के एक होटल से उसका अपहरण किया गया। परन्तु चीन के इस कुकृत्य को भी विफल कर दिया गया। भारत ने उस हवाई जहाज का ही अपहरण कर लिया, जिसमें जानकी देवी पीकिंग ले जाई जा रही थीं।

चीन के अधिकारी बातचीत से विवाद निपटाने के स्थान पर बलपूर्वक अपने मन की बात करने की योजना बनाते रहे। जब डॉक्टर शाई-तांग को आजन्म कैद का दण्ड हुआ तो उसके प्रतिकार में अन्तरिक्ष निवास-गृह को विनष्ट करने का षड्यन्त्र परिपक्व हो गया था।

एक गुप्तचर हांगकांग के एक सौदागर के नाम से अंतरिक्ष स्थित होटल में एक कमरा बुक कराकर रहने जा पहुँचा। वह तीन दिन तक वहाँ रहा और इन दिनों अन्तरिक्ष बस द्वारा भारत आता-जाता रहा। तीसरी रात वह किसी प्रकार अंतरिक्ष निवास-गृह के शक्ति-भण्डार वाले आगार में पहुँचने में सफल हो गया। वह उसे विनष्ट कर देना चाहता था। यह निश्चय ही था कि शक्ति विखण्डित होते ही निवास-गृह में जीवन दूभर हो जाएगा। सब-के-सब प्राणी दम घुटकर मर जाएँगे। उस आगार में सब कुछ बन्द डिब्बों में रखा था। डिब्बे परस्पर सम्बन्धित थे। केवल जानकार व्यक्ति ही उनकी शक्ति के संचालन का ढंग जानता था। वह यान में एक ही व्यक्ति था। मैनेजर एक बात जानता था कि किस प्रकार पृथ्वी से सम्पर्क रखते हुए वह किसी कठिनाई के समय सहायता प्राप्त कर सकता है।

शक्ति-भण्डार का संरक्षण एवं शक्ति-संचालक जब भण्डार के बगल के कमरे में सो रहा था, तब चीनी गुप्तचर भण्डार में घुसने में सफल हो गया। परन्तु वहाँ पहुँच वह समझ नहीं पाया कि किस यन्त्र को क्या करने से क्या परिणाम होगा?

उसके मन में विचार आया कि भण्डार के संरक्षक को फुसलाकर उस आगार के रहस्यों को जानकर कुछ किया जा सकता है। क्या जाने वह कहीं इधर-उधर हाथ चला दे और पूर्ण निवास-गृह में सचेत करने की घण्टी बज जाए और वह बिना किसी प्रकार का विनाशकारी कार्य किए पकड़ लिया जाए।

इतना विचारकर वह आगार से बाहर निकल इसके संरक्षक से मित्रता उत्पन्न

कर इस निवास-गृह के संचालन का ढंग जानने का यत्न करना चाहता था। परन्तु जब वह बाहर निकलने लगा तो वह आगार को भीतर से खोल नहीं सका। भीतर से निकलने का ढंग तो भण्डार का संरक्षक ही जानता था।

इस प्रकार चीनी गुप्तचर बिना कुछ किए भण्डार में फँस गया। उसने बिना विचार किए और बिना किसी प्रकार के ज्ञान के शक्ति-भण्डार में इधर-उधर हाथ मारने आरम्भ कर दिए। आगार की दीवार के साथ कई स्विच और हैण्डल लगे थे। वह उनको इधर-उधर करने लगा।

एक हैण्डल को दबाने से पूर्ण निवास-गृह को एक हल्का-सा झटका लगा और फिर कार्य शान्ति से चलने लगा। जब प्रायः सब स्विच दबाने तथा हैंडलों को नीचे-ऊपर करते-करते उस आगार में कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ तो हताश हो वह उसी आगार में रखी एक कुर्सी पर बैठ गया।

: ७ :

अन्तरिक्ष निवास-गृह में किसी अनियमित बात का ज्ञान तो एक घण्टा उपरान्त पता चला। मैनेजर को किसी सूचना के लिए पृथ्वी पर सम्पर्क करने की आवश्यकता पड़ी तो उसे पता चला कि सम्पर्क नहीं हो रहा है। उसने 'राडार' से पृथ्वी पर देखा तो वह दृष्टि से ओझल थी। इससे वह घबरा गया और उसने अपने अधीन इंजीनियर को बुलाया और स्थिति का वर्णन किया। वह भी मैनेजर के कमरे में लगे यन्त्रों से देखने लगा। जब उसकी समझ में भी कुछ नहीं आया तो उसने बताया कि उनका निवास-गृह बहुत ही तीव्र गति से सूर्य मण्डल के किनारे की ओर जा रहा है।

इस पर शक्ति-भण्डार वाले आगार में आ उसके संरक्षक को जगाया गया। वह उठा तो उसे पता चला कि शक्ति-भण्डार की चाबी लापता है। वह उस आगार की ओर भागकर गया, परन्तु उसका द्वार भीतर से बन्द था।

जब स्थिति का वर्णन किया गया तो शक्ति-भण्डार का द्वार तोड़कर खोला गया और उसमें उपस्थित चीनी गुप्तचर को पकड़ लिया गया। परन्तु जाँच-पड़ताल से वे इस परिणाम पर पहुँचे कि वह पृथ्वी से ओझल हो गए हैं और नहीं जानते कि किस दिशा में जा रहे हैं।

यान पर साढ़े-तीन सौ यात्रियों को भय से सूचित कर दिया गया और अधिकारी असीम अन्तरिक्ष में अपनी स्थिति को जानने का यत्न करने लगे।

शक्ति-भण्डार के अध्यक्ष ने सब यात्रियों को होटल के रिसैप्शन हॉल में एकत्रित कर वस्तु-स्थिति का वर्णन करते हुए कहा—

'नियन्त्रण-आगार में यह व्यक्ति वहाँ की चाबी की चोरी कर घुस गया था और इसने वहाँ से बाहर निकलने के लिए इधर-उधर हाथ मार कर इसके ईंधन वाले स्विच को दबा दिया है और उससे यह यान एक ओर को चल पड़ा है।''

"परमात्मा को धन्यवाद है कि इसने शक्ति-भण्डार को विनष्ट नहीं किया तथा यान को अन्य किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई। इस कारण यदि किसी नक्षत्र से हमारी टक्कर न हुई तो हम कई वर्ष तक अपना जीवन चला सकेंगे।

"हमने इस यान की गति को भी नियंत्रण में कर लिया है। परन्तु यह न जानते हुए कि इस विशाल अन्तरिक्ष में हम कहाँ पर स्थित हैं, यह जाने बिना हम पृथ्वी को और फिर वहाँ जाने के मार्ग को नहीं पा सकते।

"हम यह भी नहीं जानते कि हम पृथ्वी से किस ओर और कितनी दूर हैं। बिना इस बात को भली प्रकार जाने हम पृथ्वी पर वापस लौटने में सफल नहीं हो सकते।

"हम इस विषय में यत्न कर रहे हैं और इसको जानते ही हम वापस चल पड़ेंगे।"

वस्तुस्थिति यह थी कि वह निवास-गृह अन्तरिक्ष में ऐसे खो गया था जैसे कि प्रशान्त महासागर में एक छोटी-सी नौका। सागर से तो जाने-बूझे नक्षत्रों को देख-कर दिशा और स्थान का निश्चय किया जा सकता है, परन्तु इस अन्तरिक्ष में तो कुछ भी जाना-बूझा नहीं था। और वे यह भी नहीं जानते थे कि यान किस स्थान पर पहुँच गया है तथा किस ओर जा रहा है।

यान के भीतर से ईंधन को बन्द कर दिया गया था, परन्तु अभी तक प्राप्त संवेग से वे किसी ओर तीव्र गति से भागे जा रहे थे। एक समय तो यह भी विचार आया कि वह कदाचित् सूर्य की ओर ही जा रहे हों। इस पर अधिकारी वर्ग काँप उठा। उस अवस्था में उनकी गति वही होती, जो एक पतंगे की होती है जब वह किसी प्रकाश शिखा से आकर्षित ज्वाला में जलकर भस्म हो जाता है।

कई दिन की खोज के उपरान्त वे इस बात को जान पाए कि वे अभी सूर्य-मण्डल में ही हैं। यद्यपि उसकी परिधि के समीप पहुँच गए हैं।

वहाँ से पृथ्वी की दिशा और फिर उस दिशा में जाने के लिए किसी बड़े नक्षत्र के भू-आकर्षण की लपेट से बचते हुए पृथ्वी की ओर जाने का मार्ग विचार किया गया। वहाँ आते हुए तो वे भगवान्-भरोसे ही थे, परन्तु यह जानना अब सुगम नहीं था कि वे किस प्रकार बचते हुए चले आ रहे हैं। हाँ, अब लौटने के लिए वह अपना मार्ग विचार करने लगे तो मार्ग में एक सौ एक विघ्न दिखाई दिए।

यह भी जान लिया गया था कि वे किसी सूर्य-मण्डल से बाहरी शक्ति से खिंचे हुए उधर को जा रहे हैं। अतः पहले तो उस शक्ति का विरोध किया गया।

लौटते हुए छः मास से अधिक लग गए। जिस दिन यान पर यह घोषणा की गई कि पृथ्वी से सम्पर्क बन गया है उस दिन के हर्षोल्लास में दो वृद्ध व्यक्तियों के हृदय की गति रुक गई और चीनी अपराधी को बन्दी की अवस्था में मृत पाया गया। यह अनुमान लगाया गया कि उसके पास किसी प्रकार का विष रहा होगा

जिसे खाकर उसने आत्म-हत्या कर ली है।

यान में रहने वालों को साढ़े छः मास पूर्व जब बताया गया कि उनका यान अपने कक्ष को छोड़ किसी ओर को चल पड़ा है और वे नहीं जान सके कि वे सब कहाँ हैं और किधर जा रहे हैं तो सबको अपनी मृत्यु समक्ष दिखाई देने लगी। इसका परिणाम कुछ पर तो यह हुआ कि वे अपने-अपने भगवान् का स्मरण करने लगे। कुछ पृथ्वी पर अपने प्रिय-जनों को स्मरण कर रोने लगे। कुछ ऐसे भी थे जो जीवन की कुछ घड़ियाँ शेष समझ सब प्रकार की उच्छृङ्खलता और प्रत्येक प्रकार के इन्द्रिय-सुखों को प्राप्त करने लगे।

उन दिनों यान पर कई बलात्कार के अपराध हुए। कई चोरी और डाके के भी उदाहरण मिले। इस पर भी प्रबन्धक ने बहुत ही नरमी से व्यवहार किया। घोर-से-घोर अपराध के लिए भी सामान्य-सी ताड़ना पर छोड़ दिया गया।

जिस दिन यान के अधिकारी यह समझ गए कि वे कहाँ हैं और उनको वापस पृथ्वी पर जाने के लिए कौन-सा मार्ग अपनाना पड़ेगा तो प्रबन्धक उन लोगों की सूची बनाने लगे जिन्होंने नियम-भंग किया था। पाँच स्त्रियों ने बलपूर्वक शीलभंग का आरोप दर्ज कराया था। अधिकारियों ने उस समय तो अपराधियों को सामान्य ताड़ना देकर बात समाप्त कर दी थी। अब उन स्त्रियों से कहा गया है कि वे अपने आरोप लिखकर दें और अपराधी का नाम बता दें।

अधिकारियों को विस्मय हुआ जब उन पाँचों-की-पाँचों स्त्रियों ने अपना आरोप वापस ले लिया। अधिकारी ने विस्मय में पूछा, "परन्तु आपने तो यह आरोप लगाया था। यह यहाँ के रिपोर्ट लिखाने के रजिस्टर में दर्ज है।"

"परन्तु उस समय के उपरान्त तो मेरा उस बलात्कार करने वाले से सम्बन्ध बना रहा है और अब मैं यदि पृथ्वी पर पहुँच सकी तो उस व्यक्ति से विवाह कर लूँगी।"

"और अपने पहले पति को ?"

"वह जीवित है अथवा मर गया है, मैं नहीं जानती। परन्तु मैंने उससे प्रेम करना छोड़ दिया है।"

"ओह !" अधिकारी ने दूसरी स्त्री से पूछा, "तुम अपना आरोप किसलिए वापस ले रही हो ?"

"मैं समझती हूँ कि वह एक विशेष स्थिति थी। उस समय किसी विशेष व्यवहार के लिए मैंने अपराधी को क्षमा कर दिया है।"

तीसरी स्त्री से पता किया गया तो उसने कहा, "इस प्रकार सम्बन्ध बनाने में मेरी कोई हानि नहीं हुई, वरन् मेरी वह दुःख की घड़ी सहज ही व्यतीत हो गई है। मैं अपने से प्रेम करने वाले की कृतज्ञ हूँ कि उसने उस अति दुःख और संकट के समय मेरा मनोरंजन किया था।"

अधिकारियों ने वे सब आरोप फाड़ डाले। इसके अतिरिक्त उस समय के चोरी और डाके के आरोपों को भी अधिकारियों ने रद्द कर देने की घोषणा कर दी कि यदि वह सब धन और वस्तुएँ कार्यालय में दे दी जाएँ जो उस संकट के समय चोरी की गई हैं अथवा छीनी-झपटी गई हैं वे वस्तुएँ उसके असली मालिक को लौटा दी जाएँगी और यदि किसी प्रकार की चोरी इत्यादि का आरोप शेष न रहा तो इस आरोप-पत्र को भी फाड़ डाला जाएगा।

इस दिशा में भी परिणाम लगभग वैसे ही हुए जो बलात्कारों के विषय में हुए थे। अनधिकृत रूप में प्राप्त सामान वापस हो गया था। इस पर भी कुछ वस्तुएँ न मिल सकीं। जिन लोगों ने उन वस्तुओं के विषय में रिपोर्ट की थी, जब उनसे पूछा गया कि क्या वे चाहते हैं कि उनके चोरी हुए सामान को पाने के लिए सबकी तलाशी ली जाए, तो प्रायः सबने कह दिया कि वह अपनी शिकायत वापस लेना चाहते हैं। उनको खो गई वस्तुओं का शोक नहीं। वे जीवित बच रहे हैं, इसकी उनको बेहद खुशी है।

एक व्यक्ति की हीरे की अँगूठी किसी दूसरे ने कई लोगों के सामने झपट ली थी। वह अँगूठी नहीं लौटाई गई। इस पर हीरे की अँगूठी के मालिक से पूछा गया कि क्या वह इसके लिए सबकी तलाशी लेने की माँग करता है?

अँगूठी के मालिक ने कह दिया, "नहीं, मैंने अपने बच जाने की प्रसन्नता में वह अँगूठी छीनने वाले को भेंट में दे दी है।"

इस प्रकार से अन्तरिक्ष निवास-गृह के निवासी अपने बच जाने की आशा पर प्रसन्नता प्रकट करते रहे।

जिस दिन पृथ्वी दिखाई दी और निवास-गृह अपने कक्ष में स्थित हो काम करने लगा तो सब लोग परस्पर गले मिल-मिलकर पृथ्वी पर उतरने की तैयारी करने लगे।

उस चीनी के शव की अन्त्य-परीक्षा की गई और यह पाया गया कि उसने साइनाईड के किसी योग को खाकर प्राणान्त कर लिया है। उसके पास से यह वक्तव्य मिला—

"मेरा नाम सर्वयोरास्किन है। मैं साईबेरिया की ऐस्कीमो जाति का एक युवक हूँ। मेरी शिक्षा-दीक्षा चीन के एक नगर कैनटन में हुई है और मैं चीन के गुप्तचर विभाग में पिछले पाँच वर्ष से काम कर रहा हूँ। मुझे इस अन्तरिक्ष निवास-गृह को विनष्ट करने की आज्ञा हुई थी, इसी उद्देश्य से मैंने इस गृह में तीन-चार बार पहले भी निवास किया है। इस बार भी मैं इसमें तीन दिन तक रहा हूँ। इन सब आवासों में मैं इसके शक्ति-भण्डार के और नियन्त्रण के अधिकारी से मेलजोल बढ़ाता रहा था। मेरे इस गृह पर स्वतन्त्रतापूर्वक रहने के अन्तिम दिवस मुझे इस आगार की चाबी मिल गई। मैं इस अधिकारी के कमरे में अपनी ऐस्कीमो जाति

की विवाह सम्बन्धी प्रथाओं को बताते हुए चाय पी रहा था कि मुझे भण्डार के आगार की चाबी दिखाई दे गई। मैं उसे उठा लाया और अवसर पाते ही उसके भीतर घुस गया।

'आगार का द्वार मैंने भींचा ही था कि वह स्वयमेव बन्द हो उसका ताला लग गया। मैं इसके लिए तैयार नहीं था। मैंने बाहर निकलने का बहुत यत्न किया। जब नहीं निकल सका और हताश हो गया तो मैं वहाँ लगे स्विच और हैण्डल इधर-उधर घुमाने लगा। एक हैण्डल दबाया तो एक हल्का-सा झटका लगा। परन्तु वह शीघ्र शान्त हो गया।

'इसके एक घण्टे उपरान्त मुझे बाहर से द्वार तोड़ निकाला गया और मुझे बन्दी बना लिया गया।

'जब मुझे पता चला कि वह अन्तरिक्ष-गृह किसी अज्ञात स्थान पर पहुँच गया है और अज्ञात दिशा में भागा जा रहा है तो मैं प्रसन्न था। मेरा विचार था कि यह स्वयं ही किसी नक्षत्र के साथ टकराकर नष्ट हो जाएगा अथवा सूर्य की ओर आकर्षित हो उसकी अग्नि में भस्म हो जाएगा।

'परन्तु जिस दिन मुझे यह ज्ञात हुआ कि यह गृह बच गया है तो मैंने समझा कि मुझे कई प्रकार की यन्त्रणाएँ देकर बयान लिया जाएगा और यदि मुझे छोड़ भी दिया गया तो अपने असफल कार्य के लिए चीन सरकार द्वारा मुझे मृत्यु-दण्ड दिया जाएगा। इस कारण मैंने स्वतः ही अपना जीवन समाप्त कर लेने का निश्चय कर लिया।

'मैंने मरने से पूर्व यह वक्तव्य इस कारण दे दिया है कि मैं तो स्वयं ही किसी घोर अन्याय का शिकार हो रहा हूँ।'

: ८ :

यह हेग कोर्ट की जाँच का परिणाम था। कोर्ट का यह कहना था, "यद्यपि मृत गुप्तचर के वक्तव्य से चीन देश का शासन एक घोर अपराध का अपराधी सिद्ध होता है, परन्तु वह तो एक-पक्षीय वृत्तान्त है। इतने पर हम चीन राज्य को दोषी घोषित नहीं कर सकते।

"हमने चीन सरकार को आह्वान किया है कि वह अपने पर लगे इस व्यक्ति के लांछन का उत्तर दे। परन्तु चीनी शासकों का यह उत्तर आया है कि वे इसे इतनी घृणित बात समझते हैं कि इसकी सफाई देने के लिए भी न्यायालय के सामने उपस्थित होना अपना अपमान मानते हैं।"

इस स्थिति में भारत चीन के विरुद्ध कुछ भी कार्य नहीं कर सका। साथ ही भू-मण्डल में सर्वत्र प्रसन्नता का कारण यह नहीं था कि किसीने अपराध किया था और वह सफल नहीं हो सका। प्रसन्नता का कारण केवल यह था कि एक वैज्ञानिक उपलब्धि हुई थी। मानव कई मास तक विशाल अन्तरिक्ष में भ्रमण करता हुआ भी

बचकर चला आया है।

जब अन्तरिक्ष निवास-गृह लापता हुआ था तो अमेरिका में बन रहे ऐसे निवास गृहों का काम रुक गया था। वहाँ की सरकारें इस प्रकार के कार्य को भारी भय मोल लेने वाला समझती थीं।

जानकी देवी वापस भारत में आ गई और पति के पास आने से वह पुनः सन्तान निर्माण में लग गई थी। डॉक्टर कुलकर्णी जानकी के इस तीसरे बच्चे के निर्माण को अति शुभ मानता था। दो लड़के पहले थे और इस बार जब पत्नी ने पति को बताया कि वह पुनः माँ बनने वाली है तो डॉक्टर प्रसन्नता से फड़क उठा और पूछने लगा, ''इस बार क्या होगा ? लड़का अथवा लड़की ?''

''मेरी तो इच्छा लड़की के लिए है। परन्तु अभी कुछ कह नहीं सकती।''

जानकी देवी का प्रथम लड़का इस समय सात वर्ष का था। दूसरा चार वर्ष का। प्रथम अविनाशचन्द्र तो विद्यालय के निवास-गृह में रहता था। वह मास में एक बार मिलने आया करता था। कभी माता-पिता उसके स्कूल में उससे मिलने जाया करते थे। स्कूल तो बहुत पुराना था। पहले इसका नाम मॉडल स्कूल हुआ करता था। जब से शिक्षा स्वतन्त्र हुई थी तो इसका प्रबन्ध 'नव शिक्षा प्रसारिणी समिति' ने अपने हाथ में ले लिया था। इस समिति में एक शिक्षा-विशेषज्ञ था पण्डित भूदेव। वह सर्वथा प्राचीन पद्धति पर शिक्षा चला रहा था। समिति में कुछ तो भूदेव के अपने शिष्य थे जो उसके साथ ही विद्यालय में शिक्षण-कार्य करते थे। कुछ-एक कुशल प्रबन्धक और धनी व्यक्ति थे। इस नव शिक्षा केन्द्र में जिसे नव शिक्षा कहा जाता था वह वास्तव में प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली ही थी।

दूसरा लड़का प्रकाश इसी विद्यालय के शिशु-मन्दिर में शिक्षा पाता था। वह नित्य घर आता था। शिक्षा-मन्दिर की दाई बच्चों को शिक्षा-मन्दिर से घर पहुँचा जाया करती थी।

जब से अन्तरिक्ष निवास-गृह अपने कक्ष में आकर स्थित हो गया था तब से अमेरिका में वैसे गृह-निर्माण की योजना पर विचार होने लगा था। वहाँ के सरकारी निर्माण विभाग से जानकी देवी को न्यूयॉर्क में आने का निमन्त्रण मिल रहा था।

इस निमन्त्रण की बात डॉक्टर कुलकर्णी से हुई तो उसने कहा,''बहुत भाग-दौड़ करने से अब कष्ट भी हो सकता है।''

''हाँ। मैं यह जानती हूँ और यत्न करूँगी कि किसी प्रकार की दुर्घटना न हो जाए। परन्तु मैं तो अभी वहाँ जाने को इस कारण टाल रही हूँ कि मुझे अपने उस पूर्ण प्रयास की विफलता का भान हो रहा है।

''जब तक हम मानव इस पृथ्वी पर शान्ति से रहना नहीं सीखते, तब तक बाहर अधिक स्थान पर अधिकार जमाने से लाभ क्या है ?

"मेरे मन में बार-बार यह विचार उठ रहा है कि मैं और अन्य वैज्ञानिक एवं कुशल कलाकार, तकनीकी क्षेत्र में अपने अयोग्य, अनधिकारी मानव-समाज को अधिकाधिक शक्ति प्रदान कर रहे हैं।"

"परमात्मा ने अत्यन्त कृपा कर हमें अपनी अपार माया में से अधिकाधिक भाग का स्वामी बनाना स्वीकार किया है और हम वैज्ञानिक उस महान् शक्ति को, जिसका रहस्य परमात्मा ने हमें देने की कृपा की है, मानव के लिए उपलब्ध करा रहे हैं। परन्तु मानव उसका दुरुपयोग करने पर तुला हुआ है।

"इस कारण चित्त नहीं चाहता कि मैं अपनी नवीनतम खोज को इस मूर्ख समाज को सौंप दूँ।"

"परन्तु प्रत्येक वैज्ञानिक के आविष्कार का जब तक विस्तृत प्रयोग नहीं किया जाता, तब तक हमें और अधिक जानने का अवसर ही नहीं मिलता।"

"यह तो मैं जानती हूँ और अनुभव भी करती हूँ, परन्तु देखिए न, भू-मण्डल में डेढ़ सौ के लगभग राष्ट्र हैं और एक दुष्ट राज्य हमारी खोज में बाधक बन रहा है। परन्तु सब राष्ट्र मुख देख रहे हैं और उस राष्ट्र को सन्मार्ग नहीं दिखा सकते।

"पिछली बार जब मैं अमेरिकन राज्याधिकारियों से चीन के कुकृत्यों पर बात कर रही थी तो वह कहने लगे, 'चीन के एक अरब से ऊपर लोग जब तक चीन के शासकों का समर्थन कर रहे हैं, तब तक हम सब मिलकर भी कुछ नहीं कर सकते।

"मैं इसका यह अभिप्राय समझी हूँ कि भू-मण्डल के सब श्रेष्ठ व्यक्ति मिलकर भी कुछ-एक दुष्ट व्यक्तियों को अपना व्यवहार ठीक करने पर बाध्य नहीं कर सकते।

"हमारे अन्तरिक्ष निवास-गृह पर भी कुछ अनुसंधान का कार्य हो रहा है। उसमें कुछ-एक आवश्यक कार्य भी हैं। मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि यदि मैं अन्तरिक्ष में फैली हुई अपार शक्ति का बहाव मानव-समाज के हित में ला सकी तो मानव भी देव-पद पर स्थिर हो सकेगा।"

"परन्तु हमारा सब किया-कराया काम चीन के कुछ स्वार्थी और लोभी शासक विनष्ट करने वाले थे। उन दुष्ट प्रवृत्ति के मनुष्यों पर रोष करने का मैं कोई कारण नहीं मानती। मुझे उन भले, परन्तु भीरु लोगों पर तो रोष है जो भूतल पर इन दुष्टों को सहन करते हैं।"

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु जानकी देवी, यदि अपनी गर्भावस्था में इस प्रकार चिन्ता करती रही तो निस्सन्देह उसकी होने वाली सन्तान विकृत मस्तिष्क वाली उत्पन्न होगी। एक पागलपन की चिकित्सा करने वाले डॉक्टर की सन्तान पागल हो गई तो बताओ, मानव-समाज अवनति की ओर नहीं चल पड़ेगा?"

"यदि दुर्बलात्मा, भीरु संसार में पागल पैदा नहीं होंगे तो क्या परमात्मा के शुद्ध, निर्मल, पवित्र स्थान पर पागल हुआ करेंगे ?"

"मैं समझता हूँ कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ उपाय करना चाहिए। मेरा विचार है कि अपनी सरकार से कहकर एक 'विश्व वैज्ञानिक सम्मेलन' बुलाया जाए। डेढ़ सौ राष्ट्रों में रहने वाले तीन सौ के लगभग विज्ञान-वेत्ताओं का सम्मेलन हो और उसमें इस प्रस्ताव पर विचार किया जाए कि विज्ञान का दुरुपयोग कैसे रोकें ?"

"मैंने इस विषय पर न्यूयार्क के कुछ वैज्ञानिकों से बातचीत की है। उनका कहना है कि हमारे देश और उनके देश की व्यवस्था में अन्तर है। भारत में वैज्ञानिक स्वतन्त्र हैं, परन्तु भू-मण्डल के प्रायः अन्य राष्ट्रों में वैज्ञानिक स्वतन्त्र नहीं हैं। वे राज्य-तन्त्र द्वारा डाले गए टुकड़ों पर जीवित हैं। इस कारण हम कुछ नहीं कह सकते।"

"जानकी देवी ! यही तो करने की बात है। इसी के लिए मैं वैज्ञानिकों का सम्मेलन बुलाने की बात कह रहा हूँ। यदि चोटी के अनुसंधानकर्त्ता कह दें कि अनुसंधान-कार्य तब तक नहीं किया जा सकता, जब तक उनकी अनुसंधान-शालाओं से और उनसे किए आविष्कारों के सदुपयोग की गारण्टी नहीं की जाती।"

"यही तो वहाँ के लोगों को कठिन प्रतीत होता है। राजनीतिक लोग जनता को मूर्ख बनाकर अपने पीछे लगा लेते हैं और इस प्रकार जन-शक्ति के स्वामी बन जाते हैं। वे हमारे द्वारा आविष्कृत साधनों के स्वामी बनकर हमें ही डरा-धमका देते हैं।"

"यही तो विडम्बना है जिसकी चिकित्सा ढूँढ़ने के लिए वैज्ञानिकों के सम्मेलन की आवश्यकता है। ऐसे सम्मेलन तो पहले भी होते रहे हैं। उनमें वैज्ञानिकों को अपने विज्ञान के उन्नति करने के उपायों पर विचार करने को कहा जाता रहा है, परन्तु उस उन्नत विज्ञान के प्रयोग पर वैज्ञानिकों को कुछ भी कहने का अवसर नहीं होता।

"मैं चाहता हूँ कि अब वैज्ञानिक यह भी विचार किया करें कि उन्हें अपने उन्नत विज्ञान और तकनीकी कुशलता का प्रयोग कहाँ और किस प्रकार करना है।"

"अर्थात् एक विद्वत्-सम्मेलन हो और यह विचार करे कि भावी भू-मण्डल की व्यवस्था में विद्वानों का क्या स्थान हो ?"

"बिल्कुल ठीक।" डॉक्टर कुलकर्णी ने कहा, "और मैं समझता हूँ कि यह भारत ही कर सकता है, क्योंकि यहाँ विद्वानों का राज्य है। मैं तो जब कभी चिन्तन करता हूँ तो यह विचार किया करता हूँ कि तुम्हारे बाबा श्यामसुन्दर चक्रवर्ती भगवान् का अवतार थे, जिन्होंने एक कलम की नोक से देश के ब्राह्मण वर्ग को स्वतन्त्र कर दिया था। कल ही मैं उनकी स्वरचित जीवनी पढ़ रहा था। उन्होंने

प्रधानमन्त्री बनते ही प्रथम कार्य यह किया था कि सरकारी शिक्षा-मन्त्रालय बन्द कर दिया। सब विश्वविद्यालयों के उप-कुलपति कुलपति हो गए; विश्वविद्यालय को विद्यार्थियों की संख्या और कार्य के अनुसार सरकार से अनुदान मिलने लगा तो छात्रों की शिक्षा का स्तर वृद्धि पाने लगा।

"मैं देख रहा हूँ कि तीस-बत्तीस वर्षों में हमारी शिक्षा, हमारा सुप्रबन्ध, हमारे राज्य की शक्ति और हमारा शस्त्रास्त्र-भण्डार सभी में, संसार के अन्य देशों से अधिक वृद्धि हुई है।

"यहाँ वास्तविक विद्वानों का राज्य हो गया है और हम ही भू-मण्डल का कल्याण करने में समर्थ हैं। अज्ञान के अन्धकार-रूपी सागर में डूबी पृथ्वी का वराह भगवान् बन हम ही उद्धार करने में समर्थ हैं।"

: ६ :

जानकी देवी में भी कुछ तो अपने बाबा की प्रतिभा की आनुवंशिकता विद्यमान थी। पृथ्वी-भर के मानव-समाज के उद्धार का अपने पति का सुझाव उसे उपयुक्त प्रतीत हुआ। उसने इस विषय में एक निर्णय पर पहुँचने के लिए प्रधानमन्त्री से सम्पर्क स्थापित किया। प्रधानमन्त्री एक पंडित त्रिभुवन कीर्ति न्यायशास्त्री थे। उन्होंने जानकी देवी की पूर्ण योजना सुनी और इसका औचित्य समझकर तुरन्त इसकी स्वीकृति दे दी और कहा कि इस विषय में योजना बनाकर कार्य आरम्भ कर दिया जाए।

जानकी देवी को काम मिल गया। उसने अपने पति को कह दिया, "लीजिए, आपकी योजना पर कार्य आरम्भ हो गया है। प्रधानमन्त्री ने योजना बनाने के लिए कह दिया है।"

"ठीक है। मैं समझता हूँ कि किसी योग्य लेखाकार को साथ ले लो जिससे योजना का आर्थिक पक्ष भी साथ-साथ बनता चला जाए। तुम्हारी बहन नीति इस कार्य में कुशल हो गई प्रतीत होती है। उसे ही यहाँ बुला लो।"

जानकी देवी इस प्रस्ताव से अपने पति के मुख पर देखने लगी। डॉक्टर ने पत्नी को मौन देख पूछ लिया, "क्यों, क्या विचार कर रही हो ?"

"नीति यहाँ नहीं आएगी।"

"क्यों ?"

"वह कहती है कि आप पागलों की चिकित्सा करते-करते स्वयं पागल हो रहे लगते हैं।"

"यह उसने कहा है ?"

"हाँ, पिछली बार जब मैं वहाँ गई थी तो मैंने उसे कुछ दिन दिल्ली आकर रहने का निमन्त्रण दिया था। उसने इन्कार करते हुए कहा था कि वह यहाँ नहीं

आएगी, क्योंकि यहाँ पागलों का एक डॉक्टर पागल जीजा रहता है। वह आपसे दूर रहती है।"

"मैं समझता हूँ कि यह विकार उसके मस्तिष्क में है। वह अपने पति के अभाव में अपने मन को निर्मल नहीं रख सकी। वह मलिन मस्तिष्क से यहाँ आई थी और वासनाभिभूत घूमती दिखाई दी थी।"

"मैं समझी हूँ कि आप दोनों के मस्तिष्क में खराबी आ गई है जो इस प्रकार एक-दूसरे पर दोषारोपण कर रहे हैं।"

बात इस प्रकार हुई थी कि नीति मैडिकल कॉलेज में पढ़ती हुई गर्भपात की विशेषज्ञ बन गई थी। बम्बई जैसे औद्योगिक नगर में उसका काम चला भी खूब था, परन्तु एक गर्भपात के केस में उसका अपने पति से झगड़ा हो गया और झगड़े के परिणामस्वरूप दोनों पृथक्-पृथक् रहने लगे थे।

एक दिन उसका पति जनार्दनचन्द्र अपने साथ एक लड़की को लेकर आया और कहने लगा कि इसका गर्भपात कर दो।

"यह कौन है ?" नीति का प्रश्न था।

"एक मित्र है।"

"आपका इससे क्या सम्बन्ध है ?"

जनार्दनचन्द्र ने कुछ देर मौन रहकर कहा, "यह गर्भ मुझसे है।"

"गर्भपात की स्वीकृति तो मैं उस अवस्था में उचित समझती हूँ जहाँ बच्चे के पालन-पोषण में आर्थिक असुविधा हो। आपको क्या असुविधा है ? दो-तीन लाख रुपया प्रति मास उपार्जन करने वाले के बच्चे की हत्या तो जातीय पाप हो जाएगा।"

"इसके सम्बन्धी यह पसन्द नहीं करेंगे।"

"तो गर्भपात इस कारण नहीं कराया जा रहा कि किसी प्रकार का आर्थिक कष्ट है, वरन् इस कारण कराना चाहते हैं कि यह एक अनुचित व्यक्ति से अनुचित स्थान पर स्थित हो गया है।

"दूसरे शब्दों में आपने सामाजिक पाप किया है और उस पर परदा डालने के लिए मेरी सहायता ले रहे हैं। वह मैं नहीं करूँगी। अपने देश में यह आर्थिक कष्ट की अवस्था में ही क्षम्य माना गया है। यह इस विचार से नहीं किया जा रहा।"

"देखो डॉक्टर !" जनार्दन ने कुछ अधिकार-युक्त भाव में कहा, "मेरा तुमसे कुछ सम्बन्ध है और उसी के नाते मैं कहता हूँ कि यह काम कर दो।"

"परन्तु क्या इस गर्भ-स्थिति के उपरान्त आपका मुझसे कुछ सम्बन्ध रहा भी है ? आपका किसी प्रकार का अधिकार मुझपर नहीं रहा। न प्रेम का, न सहचारिता का और न दाम्पत्य जीवन का। श्रीमान् जी, यह नहीं होगा।"

जनार्दनचन्द्र उस लड़की को लेकर किसी अन्य डॉक्टर के यहाँ गया। वह उसने

किया अथवा नहीं किया, किसी को पता नहीं चला । हाँ, जनार्दनचन्द्र पुनः अपने घर नहीं लौटा ।

उस समय नीति के एक लड़का हो चुका था । उसको इस घटना से इतना आघात लगा कि वह गर्भपात के काम से और साथ ही चिकित्सा-कार्य से भी घृणा करने लगी थी । उसने चिकित्सा-कार्य छोड़ लेखाकार का काम सीखा और फिर बड़ी-बड़ी व्यावसायिक कम्पनियों में ऑडिटर का काम करने लगी थी ।

ऑडिटर का काम करते हुए भी उसे चार वर्ष से अधिक हो चुके थे । नीति के इसी कार्य में सहायता लेने के लिए डॉक्टर कुलकर्णी ने नीति को दिल्ली में बुलाने के लिए कहा था ।

जानकी देवी नीति के मनोभावों को सुन चुकी थी । इससे उसे अपने पति के नीति को बुलाने के उद्देश्य में सन्देह उत्पन्न हुआ था । जब डॉक्टर ने इस बात का संकेत किया कि वह पति के अभाव में मलिन मन से वासनाभिभूत हुई घूम रही थी तो बड़ी बहन को छोटी बहन के लिए चिन्ता उत्पन्न हो गई । उसने तुरन्त ही टेलीफोन किया । दोनों में सम्पर्क बना तो जानकी देवी ने उसे कह दिया, "नीति ! कुछ दिन के लिए दिल्ली आ सकती हो अथवा नहीं ?"

"दीदी, क्या काम है ?"

"एक योजना का शीघ्रातिशीघ्र अनुमानित पत्रक बनवाना है ।"

"यह यहाँ बैठे नहीं हो सकता ?"

"नहीं । कुछ अन्य लोग भी होंगे । योजना बनेगी और साथ-साथ ही उस पर व्यय का व्यौरा बनाना पड़ेगा ।"

"मैं दिल्ली नहीं आ सकती ।"

"क्यों ?"

"दीदी ! बताया तो था कि वहाँ एक पागलों के डॉक्टर रहते हैं । उन्होंने एक बार दीदी को भी पागल बना दिया था और मुझे भी बनाने का यत्न करते थे । जब तक वह दिल्ली में हैं, मैं वहाँ नहीं आना चाहती ।"

जानकी देवी ने हँसते हुए कहा, "परन्तु वह तो भारत में रहते हैं । इस कारण भारत में भी नहीं रहना चाहिए । आखिर दिल्ली से बम्बई कितनी दूर है ? घण्टे-भर में वहाँ पहुँचा जा सकता है ।

"और नीति ! वह तो पृथ्वी पर रहते हैं। आज तो पृथ्वी भी एक नगर-सा ही बनकर रह गई है । चौबीस घण्टे में इसकी परिक्रमा की जा सकती है । बताओ, उनसे भागकर कहाँ जाओगी ?

"देखो ! यहाँ एक महान् सामाजिक कार्य करने की योजना बन रही है और मैं चाहती हूँ कि तुम यहाँ आ जाओ तो काम में गति आ जाएगी ।"

"मैं आऊँगी, परन्तु तुम्हारे घर पर नहीं ठहरूँगी ।"

"हाँ। तुम्हारे लिए कहो तो अन्तरिक्ष निवास-गृह में कमरा सुरक्षित करवा दूँ?"

नीति ने कुछ विचारकर कहा, "जहाँ तुम मुझसे परामर्श भी कर सको। मेरे साथ मेरा सैक्रेटरी भी आएगा।"

"मैं प्रबन्ध करके कल प्रातःकाल सूचित करूँगी। तुम आने के लिए तैयार रहना।"

दूरभाष का चोंगा रख जानकी देवी ने कहा, "वह आपसे भयभीत है। आएगी, परन्तु यहाँ इस घर में नहीं रहेगी।"

"तो कहाँ रहेगी ?"

"मैं उसके लिए अन्तरिक्ष निवास-गृह पर एक कमरा सुरक्षित करवा रही हूँ।"

"तो क्या मैं वहाँ नहीं पहुँच सकूँगा,?"

"हाँ। उन्माद के रोगी तो परमात्मा की मूँछ का बाल उखाड़ने भी चल पड़ते हैं।"

"यह तो हम सब वैज्ञानिक कर रहे हैं। परमात्मा की शक्ति से ही हम खेल रहे हैं।"

"परन्तु आप तो खेलते-खेलते उस शक्ति के अधीन ही धारा में बह गए थे। ऐसा नीति समझती है।"

"खैर, अब तो वह आ रही है। उससे तुम्हारे सामने ही बात होगी।"

जानकी देवी ने अगले दिन सायंकाल कैलाश-भवन के रिसैप्सन-हॉल में भारत के पचास वैज्ञानिकों का एक सम्मेलन बुला लिया। ठीक चार बजे कैलाश-भवन के दसवें तल पर रिसैप्शन-हॉल में सब-के-सब आमन्त्रित जन उपस्थित थे। इस सम्मेलन में एक सरकारी निरीक्षक भी उपस्थित था।

जानकी देवी ने सम्मेलन का उद्देश्य वर्णन कर दिया। उसने बताया, "विश्व में प्रायः सब देशों में क्षत्रियों ने शासन जमा रखा है और ये इतने उच्छृंखल और स्वार्थी हो गए हैं कि भूमण्डल पर मानवता, न्याय और साधुता की अर्थी उठाई जा चुकी है।

"उन सब देशों में जहाँ प्रजातन्त्र की डुग्गी पीटी जाती है वहाँ सबसे अधिक प्रजा के हितों की हत्या की जाती है। जहाँ लोक-कल्याण राज्य का समाघोष है वहाँ लोक-पतन का बोलबाला है। स्वतन्त्रता के नाम पर उच्छृंखलता का चलन व्यापक हो गया है।

"आप सब विद्वान् लोग यहाँ एकत्रित हुए हैं। आप लोगों ने अपना खून और पसीना एक करके नये-नये आविष्कार कर इन क्षत्रिय स्वभाव के शासकों के हाथ में दे दिए हैं। परिणाम यह हो रहा है कि उन आविष्कारों के बल पर ये शासक सत्य,

न्याय और सरलता का गला घोंट रहे हैं।

"हमने भारत में एक नयी प्रथा चलाई है। यहाँ का प्रजातन्त्र वास्तव में विद्युत्-मण्डल का तन्त्र हो गया है। हमने विद्या को राजसी शृंखलाओं से मुक्त किया तो यहाँ चहुँविध उन्नति होने लगी और तीस-बत्तीस वर्ष में हमने संसार के सबसे पिछड़े देशों में होने की स्थिति से उठाकर भारत को सब देशों से उन्नत स्थिति में ला खड़ा किया है।

"जहाँ हम ज्ञान-विज्ञान और कार्य-कुशलता में सबके अग्रणी बने हुए हैं, वहाँ हम चरित्र और व्यवहार में भी सर्वश्रेष्ठ पद पर आसीन हो रहे हैं।

"मेरा यह विचारित मत है कि भारत की वर्तमान श्रेष्ठ स्थिति इस कारण है कि यहाँ विद्वानों का राज्य है। यहाँ धर्म-व्यवस्था नगरों तथा ग्रामों की सड़कों और खेतों में निश्चय नहीं होती, वरन् विश्वविद्यालयों और मन्दिरों के प्रांगणों में निश्चय होती है। यहाँ की राजनीति क्लबों अथवा वेश्याओं की बैठकों में निर्माण नहीं होती, प्रत्युत साधु, सन्त और विरक्त महापुरुषों के आश्रमों में घड़ी जाती है।

"मैं समझती हूँ कि जिस महापुरुष ने यहाँ देश के विद्वानों को देश के कार्यों में उचित स्थान दिलवाया है; उसने न केवल देश का, वरन् पूर्ण मानव-समाज का कल्याण किया है।

"यह ठीक है कि अभी तक कार्य-पद्धति भारत में ही बदली है और इस परिवर्तित कार्य-पद्धति का प्रभाव भी यहीं प्रकट हुआ है। अन्य देश अभी भी अन्धकार में अन्धे की भाँति टटोलते हुए ठोकरें खा रहे हैं।

"परन्तु मैं समझती हूँ कि अब भारत ऐसी स्थिति में पहुँच गया है कि यह भूमण्डल के राज्यों का पथ-प्रदर्शन करे। उस पथ-प्रदर्शन के लिए ही मैंने और मेरे कुछ अन्य सहयोगियों ने यह आयोजन किया है कि भूमण्डल के वैज्ञानिकों का एक बृहत् सम्मेलन बुलाया जाए और उन विद्वानों को अपना स्वाभाविक नेतृत्व सँभालने की प्रेरणा दी जाए और उनका ऐसा करने में मार्ग-दर्शन किया जाए।"

इस प्रकार इस सम्मेलन का उद्देश्य जब समझाया गया तो फिर इस सम्मेलन की शक्ति और उपयोगिता के विषय में विचार हुआ। तीन घण्टे के विचार-विनिमय के उपरान्त यह निश्चय हुआ कि वैज्ञानिकों और कुशल टैक्नीशियनों का एक सम्मेलन बॉन में बुलाया जाए और उसमें ही पूर्ण समस्या पर विचार किया जाए।

समस्या थी कि भावी समाज की लगाम राजनीतिक नेताओं के हाथ में होगी अथवा सर्व दिशाओं के ज्ञाता विद्वानों के हाथ में। यदि विद्वान् लोग इस नेतृत्व को लेने में अपने को सक्षम पाएँ तो फिर कैसे इसे प्राप्त करें?

स्वतन्त्र जर्मनी की राजधानी बॉन में इस सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह निश्चय किया गया कि इसके खर्चे के लिए किसी राज्य से आर्थिक सहायता न

ली जाए। न ही किसी राज्य के प्रतिनिधि को यहाँ बुलाया जाए।

सम्मेलन का पूर्ण व्यय कैलाश-भवन के मालिकों ने करना स्वीकार किया। कैलाश-भवन के मालिकों में इक्यावन प्रतिशत की भागीदार भारत सरकार थी। इस प्रकार इस सम्मेलन का इक्यावन प्रतिशत व्यय भारत सरकार ने दिया और शेष कैलाश-भवन के व्यक्तिगत मालिकों का भाग था। पूर्ण सम्मेलन का खर्च पाँच लाख जर्मन मार्क आँका गया।

: १० :

जब नीति दिल्ली में आ बॉन में होने वाले सम्मेलन का अनुमानित व्यय का चिट्ठा बनाने लगी तो उसका साक्षात्कार डॉक्टर कुलकर्णी से भी हुआ और फिर दोनों में उस दिन की घटना पर विवेचना हो गई।

जानकी देवी ने ही दोनों में साक्षात्कार का आयोजन किया था। भारत में हुए वैज्ञानिक सम्मेलन की स्वागतकारिणी समिति के अधिवेशन में नीति आई थी। उसे कहा गया था कि वह इस सम्मेलन की सब कार्यवाही सुने। इससे उसे बॉन में होने वाले वृहत् सम्मेलन की रूप-रेखा का ज्ञान हो सकेगा और वह उसके अनुमानित व्यय का चिट्ठा बनाने में सहायक हो सकेगी।

सम्मेलन तो तीन घण्टे ही हुआ और बॉन के सम्मेलन के लिए पाँच विद्वानों की एक उप-समिति बना दी गई। इस समिति में जानकी देवी तो थीं ही, उसके साथ थे—भूदेव नव शिक्षा केन्द्र के अध्यक्ष, डॉक्टर प्रमिला 'अल्टा माईक्रो वेव्ज' की विशेषज्ञ, डॉक्टर सुधीर पारद शक्ति के आविष्कारक और सुधाकर मिश्र भारत की धर्म सभा के अध्यक्ष। इन विश्व ख्याति-प्राप्त लोगों की समिति की ओर से बॉन सम्मेलन की योजना और नियन्त्रण का प्रवन्ध होने लगा। इस समिति की संयोजिका नीति देवी थी। इसकी सहायता के लिए दस लेखाकारों का कार्यालय बना दिया गया।

नीति देवी तो अन्तरिक्ष निवास-गृह पर ठहरी हुई थी। वहीं उसका कार्यालय भी स्थापित कर दिया गया था। उसे अपने कार्यालय में कार्यारम्भ किए अभी एक सप्ताह भी नहीं हुआ था कि कैलाश-भवन से जानकी देवी का दूरभाष द्वारा सन्देश आया, "आज मैं और तुम्हारे जीजाजी तुम्हारे साथ मध्याह्नोत्तर की चाय पीने आएँगे।"

"परन्तु दीदी!"

"हाँ, क्या कहती हो?"

"यदि उन्हें कुछ वैसा ही प्रस्ताव करना है जैसा कि उन्होंने पिछली बार अपने घर के ड्राइंग-रूम में बैठे हुए किया था तो मैं इस चाय-पार्टी में सम्मिलित नहीं हूँगी।"

"मैं सामने रहूँगी। तब वैसी बात कैसे हो सकती है जैसी तब हुई थी? उस

दिन तो मैं न्यूयार्क में थी और तुम घर में उनके साथ अकेली थीं। देखो नीति, मैं बात को भावुकता के स्तर पर उठाकर बुद्धि के स्तर पर ले जाना चाहती हूँ। जब उस दिन की घटना का वृत्तान्त बुद्धि के निरीक्षण में आ जाएगा तो मैं समझती हूँ कि यह कटुता का विषय न रहकर हँसी का विषय बन जाएगा।''

''तो क्या वासना,'' नीति का प्रश्न था, ''भावुकता का विषय है ?''

''हाँ। भावुकता मन और इन्द्रियों की साँझी प्रक्रिया है। वासना भी यही है। दोनों में अन्तर केवल इतना है कि एक व्यापक अर्थ रखती है और दूसरी केवल मन और स्पर्श-इन्द्रिय का विषय है। वासना का क्षेत्र सीमित है और भावुकता का क्षेत्र विस्तृत है। दोनों का स्रोत मन है और कार्य-क्षेत्र इन्द्रियाँ हैं।''

''परन्तु दीदी ! इससे लाभ क्या होगा ?''

''लाभ यह होगा कि भविष्य में तुम किसी रूप में भी डॉक्टर साहब को देखोगी तो चित्त को शान्ति और सुरम्यता का अनुभव करोगी।''

''कितने बजे मैं आपकी प्रतीक्षा करूँ ?''

''हम ठीक साढ़े-चार बजे वहाँ तुम्हारे आगार में पहुँच जाएँगे।''

जानकी देवी ने डॉक्टर कुलकर्णी से उस दिन की घटना का पूर्ण वृत्तान्त सुना था। डॉक्टर ने बताया था, ''जानकी देवी ! तुम न्यूयार्क में थीं। तुम्हारी अनुपस्थिति में ही नीति अपने कार्यालय के किसी काम से यहाँ आई थी।

''मुझे नीति नित्य से अधिक सुन्दर प्रतीत होने लगी थी। इसका अर्थ मैं यह समझा था कि वह यौवन की पूर्णता प्राप्त कर रही है। यह एक सामान्य बात थी। मैं अपने पुरुष और स्त्री रोगियों में इस तथ्य को देखता रहता हूँ। उनमें यह वस्तुस्थिति उनके पागलपन उत्पन्न करने में कारण बनी होती है।

''उन दिनों एक रात भोजनोपरान्त नीति मुझसे बातें करती हुई देर तक बैठी रही और बातें पति-पत्नी के सम्बन्धों पर चल पड़ीं। मुझे कुछ ऐसा लगा कि वह यौन-तृषा से व्याकुल है। अतः मैंने इस तृषा को पागलपन में परिवर्तित होने से रोकने के लिए उसे इससे बचने में सहायता देने का यत्न किया तो वह एकाएक उठ अपने सोने के कमरे में चली गई। मैं उसके पीछे गया, परन्तु उसने कमरा भीतर से बन्द कर लिया और मैं अपने कमरे में जाकर सो गया।''

जानकी देवी ने यह पूर्ण वृत्तान्त सुनकर कहा था, ''इससे तो नीति का कथन अधिक सत्य प्रतीत होता है कि आपमें अपने रोगियों की अवस्था देख-देखकर पागलपन समाता जाता है। आपका निदान कुछ ऐसा ही था जैसे कि आँखों के विशेषज्ञ को सिर-पीड़ा हो अथवा गरदन में मोच हो, पेट में दर्द हो अथवा वृक्क में किसी प्रकार की खराबी हो; उसे सबका स्रोत आँख का कष्ट ही दिखाई देता है। इसी प्रकार आपको भी नीति का रोग पागलपन ही प्रतीत हुआ था और आप उसको पागलपन की ओषधि देने लगे थे। एक स्वस्थ मस्तिष्क वाले को पागलपन की

गोलियाँ हानि भी कर सकती हैं।"

"मुझे तो इसमें न दोष प्रतीत होता है और न ही कहीं भूल। साथ ही उसके मेरे पास से उठ अपने शयनागार में चले जाने को मैं ऐसे ही समझा था जैसे कोई रोगी मेरी चिकित्सा छोड़ किसी अनाड़ी डॉक्टर से चिकित्सा कराने चला जाए। मुझे इसपर कभी रोष नहीं होता।"

जानकी देवी ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु वह रोगी अपने को स्वस्थ समझता है और वह किसी भी अन्य चिकित्सक के पास नहीं गया। केवल वह आपको पागल समझता है। यदि आप एक श्रेष्ठ चिकित्सक की भाँति अपनी सफलता को विरक्त भाव में देख सकें तो मैं आप दोनों में भेंट करा सकती हूँ और आपको उसके मन में एक श्रेष्ठ बुद्धि और मन रखने वाला सिद्ध करने का अवसर उत्पन्न कर सकती हूँ।"

"मुझे इससे प्रसन्नता होगी।"

"मैंने उससे आज मध्याह्नोत्तर उसके साथ चाय का समय निश्चय किया है। आप भी चलिए।"

"मैं चलूँगा।"

ठीक समय पर जानकी देवी अन्तरिक्ष निवास-गृह पर नीति के कमरे में जा पहुँची। डॉक्टर कुलकर्णी उसके साथ था। नीति मुस्करा रही थी। डॉक्टर ने पहुँचते ही कहा, "मुझे प्रसन्नता है कि नीति देवी ने मुझसे मिल मेरे मनोभावों को समझने का अवसर दिया है। मैं उस स्थिति के विचार से जिसमें हम दोनों उस समय थे, किसी प्रकार से भी अपने व्यवहार को अस्वाभाविक तथा अनीति-युक्त नहीं मानता।"

"तो दोष मेरा था क्या?" नीति ने पूछ लिया।

"नहीं। दोष मेरा था। उस स्थिति का तत्कालीन किया गया विश्लेषण अब दोषपूर्ण प्रतीत हो रहा है। उस समय मैं तुम्हें वासना-रूपी रोग का रोगी समझ तुम्हारा रोग निवारण करने का उपाय करना उचित समझता था। अब देख रहा हूँ कि तुम अपने जीजा से आँख-मिचौली खेल रही थीं। इस बात को समझ मैं अपने को दोषी मान रहा हूँ। तुमको मुझे डाँट देना चाहिए था और कहना चाहिए था कि मेरे पास इन बच्चों का खेल खेलने को समय नहीं।"

जानकी देवी देख रही थी कि उसका पति अपनी सफाई देने में सफल हो रहा है। इससे वह प्रसन्न थी। उसकी यह प्रसन्नता स्थायी नहीं रही। इस समय नीति ने कहा, "तो आप समझते हैं कि मैं आपकी हँसी उड़ा रही थी?"

"हँसी नहीं। मुझे एक अज्ञ बालक समझ मुझसे खिलवाड़ कर रही थीं।"

"नहीं जीजाजी! ऐसी बात नहीं। मैं आपको न तो अज्ञ समझ रही थी और न ही बालक। आपको पैंतीस वर्ष का एक सबल, सज्ञान पुरुष मान ही भटक गई

थी। मेरे मन में विकार तो था, परन्तु एकाएक मुझे अपने लड़के सुरेन्द्र का विचार आ गया था। वह इस समय आठ वर्ष की वयस का है। वह जानता था कि उसका पिता मुझसे रूठकर लन्दन में रहता है। अतः मैंने विचार किया कि यदि कहीं उसके पिता की अनुपस्थिति में उसका भाई उत्पन्न हो गया तो वह मेरे विषय में क्या विचार करेगा ? इस विचार से मैं काँप उठी थी और आपके पास से भाग गई थी।"

"परन्तु तुम इसमें निरोध की गोलियों का प्रयोग कर सकती थीं।"

"आप नहीं समझे। जब उस रात के भोजन के उपरान्त मैं आपसे बातें करने लगी थी तब मेरे मन में आपसे कलोल करने का विचार नहीं था, परन्तु कुछ अपनी मूर्खता के कारण और कुछ आपके प्रोत्साहन से प्रेरित मैं आगे बढ़ती गई। परन्तु ठीक समय पर मुझे सुरेन्द्र की याद आ गई और मैं भाग गई। उस समय गोली खाने का अवकाश ही कहाँ था ? बाद में मुझे अपने कर्म पर बहुत पश्चात्ताप हुआ और मैं समझती हूँ कि अब ऐसी नौबत ही नहीं आएगी कि गोली खाने का अवसर उत्पन्न हो।"

अब जानकी ने दोनों को इस विषय पर बात करने से मना करने के लिए कह दिया, "मैं समझती हूँ कि सफाई हो गई। अब इस विषय पर चर्चा बन्द करनी चाहिए। इस प्रकार के विषयों को स्मरण करने से भी चित्त विचलित होता है और सुरेन्द्र की स्मृति सदा रक्षा के लिए नहीं आएगी।

"यदि नीति की इच्छा सन्तान के लिए होती तब तो उसका पूर्ण प्रयास क्षम्य हो सकता था। आज फिर काल की गति ऐसी आ गई है कि मन, बुद्धि और संस्कारों से श्रेष्ठ आत्माओं की आवश्यकता उत्पन्न हो गई है। समाज में इस अभाव की पूर्ति के लिए पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ सन्तान उत्पन्न करने के लिए यदि नियोग करने की इच्छा करें तो समाज को सहन कर लेना चाहिए, परन्तु जो कुछ आज अमेरिका और यूरोप में हो रहा है, वह तो भारत में और विशेष रूप में शिष्ट परिवारों में वर्जित होना चाहिए।

"वहाँ तो सन्तान-उत्पत्ति की ओर किसी का ध्यान ही नहीं जाता। वहाँ दौड़ लग पड़ी है वासना-तृप्ति की और इसे शरीर की एक स्वाभाविक माँग जान, इसके लिए 'बार' (दुकानें) खुल गए हैं। जैसे दूध, चाय और 'बीयर' पीने के लिए दुकानें खुली हैं वैसे ही वासना-तृप्ति के लिए भी दुकानें हैं।

"भूमण्डल में तकनीकी कला में अपार उन्नति होने से नगरों की अपार सृष्टि हुई है और उन नगरों के आकार-विस्तार में भी असीम वृद्धि हुई है। परिणाम यह हुआ कि पुराने काल के वेश्यागारों की पुनरावृत्ति हो गई है। पुराने से नवीन में अन्तर यह आया है कि पहले वासना-तृप्ति के लिए मूल्य देना अनिवार्य था। अब बिना मूल्य के ही यह सुविधा प्राप्त होती है। वे दुकान से बाहर भले ही कुछ ले-दे-लें, परन्तु दुकान में यह वर्जित है।

"यूरोप और अमेरिका की सरकारों को वासना-तृप्ति में रुपये का लेन-देन और वह भी प्रत्यक्ष में अपराध प्रतीत हो रहा है और वैसे उनको इसके अबाध चलन में दोष नहीं दिखाई देता।

"यही कारण प्रतीत होता है कि विदेशों में विज्ञान और कार्य-कुशलता जिसे हम योग भी कह सकते हैं, चरम सीमा पर पहुँच अब उन लोगों को ही विनष्ट करने की ओर अग्रसर हो रहा है।

"हमारे आचार्यों ने तकनीकी उन्नति के साथ-साथ जीवन के मूल्यों की अवहेलना स्वीकार नहीं की। जीवन के मूल्यों से मेरा अभिप्राय उन मानवी शक्तियों से है जिनसे लोक-कल्याण के कार्य हो सकते हैं। वे ही मानवी जीवन की मूल्यवान वस्तु हैं। इसको लोक-कल्याण के अतिरिक्त व्यय करना अथवा लोक-कल्याण के विरोध में प्रयोग करना मानव-समाज की शक्ति का केवल अपव्यय ही नहीं, वरन् समाज को विनष्ट करने वाला भी है।

"इन मानवी शक्तियों में प्राणी की सन्तानोत्पत्ति की सामर्थ्य सर्वोपरि है। यह सर्वश्रेष्ठ है। वैज्ञानिकों ने इसे प्रयोगशाला में निर्माण करने का यत्न किया है, परन्तु वे इसमें सफल नहीं हो सके। एक प्रकार के प्राणी जिसे 'वायरस' कहा जाता है, बनाने में एक सीमा तक ही सफलता मिली है। परन्तु वायरस प्राणी हैं भी अथवा नहीं, अभी निश्चय नहीं हुआ।

"यह कहा नहीं जा सकता कि नीति के सुरेन्द्र और डॉक्टर साहब के अविनाश और प्रकाश की भाँति के प्राणी किसी प्रयोगशाला में बन सकेंगे अथवा नहीं। मेरा मन कहता है जिस दिन यह सम्भव हुआ, उस दिन मनुष्य में यह सामर्थ्य क्षीण हो जाएगी। मनुष्यों में वासना नाम की कोई वस्तु रह नहीं जाएगी। तब यहाँ वैसी ही सृष्टि होने लगेगी जिसे हमारे प्राचीन इतिहास के ग्रन्थों में अमैथुनीय सृष्टि लिखा है। उस समय भी मैथुन को पशु-कर्म समझ त्याज्य माना जाता था। मनुष्य में इस कर्म के लिए रुचि और प्रवृत्ति तब उत्पन्न हुई थी जब प्रकृति में अमैथुनीय सृष्टि की शक्ति क्षीण हुई थी।

"इस कारण नीति से मैं यही कहूँगी कि अपनी इस सामर्थ्य का प्रयोग यदि उसे लोक-कल्याण के लिए करना है तो वह कर ले। केवल मनोरंजन के लिए अथवा तृषा की तृप्ति के लिए तो नियोग वर्जित है।"

"दीदी ! अब तृषा अनुभव नहीं कर रही।"

"इसको दमन करने के उपाय हैं। उनको सीखो और फिर उन पर अभ्यास करो। तब यह सामर्थ्य अन्य उपकारी दिशाओं में प्रयोग की जा सकेगी।"

चाय समाप्त हो चुकी थी। डॉक्टर ने उठते हुए कह दिया, "मैं समझता हूँ कि अब चलना चाहिए। मेरे चिकित्सालय पर रोगियों के आने का समय हो गया है।"

दोनों बहनें भी उठ खड़ी हुईं। कमरे से निकलते हुए जानकी देवी ने पूछ लिया, "आपके चिकित्सालय में क्या रोगियों की संख्या में कमी नहीं हुई?"

"संख्या में तो वृद्धि हुई है। हाँ, भारतीय रोगियों में भारी कमी हुई है। परंतु उस कमी को यूरोपियन और अमेरिकन रोगियों की वृद्धि ने पूरा कर दिया है।"

चतुर्थ परिच्छेद

बॉन में वैज्ञानिकों का सम्मेलन हुआ। पाँच सहस्र से अधिक वैज्ञानिक एकत्रित हुए। इनमें एक सहस्र के लगभग तो भिन्न-भिन्न देशों की वैज्ञानिक समितियों के प्रतिनिधि थे और शेष चार सहस्र के लगभग लोग दर्शक के रूप में थे।

सम्मेलन में एक ही प्रस्ताव था और उसी पर पाँच दिन तक विचार-विमर्श होता रहा। बीच में दो दिन तक प्रस्ताव की भाषा में संशोधन करने के लिए एक उप-समिति की बैठक रही। अन्तिम दिन प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

प्रस्ताव का आशय यह था, "विश्व के वैज्ञानिकों का यह सम्मेलन विश्व-भर के वैज्ञानिकों का ध्यान विज्ञान के दुरुपयोग की ओर आकर्षित करता है। मानव-समाज के श्रेष्ठतम मस्तिष्क और परिश्रम का उपयोग वे मनुष्य करते हैं जिनका इस श्रेष्ठ कार्य में किंचित् मात्र भी योगदान नहीं होता।

"जहाँ तक विज्ञान की उपलब्धियों के व्यक्तिगत प्रयोग का सम्बन्ध है, हम उनके दुरुपयोग को प्रेरणा से ही मना कर सकते हैं, परन्तु विज्ञान की उपलब्धियों का सरकारों द्वारा दुरुपयोग तो मानव-समाज को मूल से ही नष्ट करने वाला सिद्ध होगा।

"इस कारण यह सम्मेलन विज्ञान की उपलब्धियों के दुरुपयोग को रोकने के लिए वैज्ञानिकों का आह्वान करता है कि वे संगठित हों और इस दुरुपयोग को रोकने के लिए यत्नशील हों।"

अभी तक मजदूरों, क्लर्कों, बूढ़ों, बेकारों और उपभोक्ताओं के संगठन तो बनते और बिगड़ते थे, अब विश्व में एक नवीन प्रकार के प्राणियों के संगठन का आह्वान किया गया था, यह विद्वानों की ओर से अपनी विद्वत्ता के शोषण को रोकने के लिए था। जहाँ अन्य संगठनों में संगठन की उपयोगिता विख्यात कराने के लिए समय लगता था, इस बुद्धिजीवियों के संगठन के लिए समय नहीं लगा। एक वर्ष में ही इसका प्रभाव होने लगा था।

इस संगठन का उद्देश्य धन अथवा सुख-सुविधाओं से युक्त होना नहीं था। यह तो भूमण्डल की सरकारों के मुख में लगाम लगाने के उद्देश्य से था।

वर्ष समाप्त होने पर भूमण्डल की कुछ सरकारों को चिन्ता लगने लगी कि अभी तक वे जनता के सामने उत्तरदायी थे और अब वे एक अन्य समुदाय के सम्मुख जबावदेह बनाए जा रहे हैं।

सामान्य जनता को तो भावुकतापूर्ण समाघोषों से अपने पीछे लगाया जा सकता था, परन्तु विद्वत्-मण्डल को तो मूर्ख बनाना कठिन होगा। अतः इन सरकारों ने अपने गुह्य कार्यों को प्रकट न करने के लिए वैज्ञानिकों के इस आन्दोलन का विरोध करने का निश्चय किया और बॉन सम्मेलन को अपने-अपने देश में अवैध घोषित कर दिया। ये प्रायः वे देश थे जो साम्यवादी अथवा अर्द्ध-साम्यवादी थे। दूसरे देशों की सरकारों ने, जो साम्यवाद के सम्मोहन से मुक्त थीं, इस सम्मेलन को प्रोत्साहन देना ठीक समझा।

वर्ष समाप्त होने से पूर्व वैज्ञानिक सम्मेलन की दूसरी बैठक बुलाकर कुछ विचारों को कार्यान्वित करने का प्रस्ताव था। परन्तु इस बार पहले तो सम्मेलन के स्थान पर विवाद हो गया। वैज्ञानिकों ने इसे अमेरिका के किसी नगर में अथवा रूस के किसी नगर में करने का विवाद किया। बहुमत रूस के पक्ष में हुआ, परन्तु रूस ने इस सम्मेलन को अवैध घोषित कर रखा था।

जानकी देवी को लगा कि यह कम्युनिस्टों का ही प्रस्ताव है कि सम्मेलन का स्थान रूस हो। यह सम्मेलन को पंगु सिद्ध करने के लिए ही किया गया प्रतीत हुआ। इस पर भी रूस की सरकार से सम्मेलन करने की अस्वीकृति होने पर सम्मेलन न्यूयॉर्क में करने का विचार हो गया। न्यूयॉर्क स्टेट के गवर्नर ने राजधानी ऐलबनी में स्थान दिया। स्थान मिला और सम्मेलन की तैयारियाँ होने लगीं।

इस सम्मेलन में तीस प्रतिशत देशों के विद्वान् लोग नहीं आए। उन्हें इस सम्मेलन में सम्मिलित होने की सरकारी स्वीकृति नहीं मिली।

इस पर भी जो लोग आए, वे यह सूचना लाए कि भूमण्डल के देश दो धड़ों में विभक्त हो रहे हैं। एक धड़ा विद्वानों के सहयोग का इच्छुक है तथा दूसरा उन पर शासन का अभिलाषी है। इस बार यह निश्चय हो गया कि उन वैज्ञानिकों को राज्य-तन्त्रों से मुक्त करने के लिए स्वतन्त्र देशों की सरकारों से अनुरोध किया जाए।

अर्थात् विद्वानों को राज्य-तन्त्र की दासता से मुक्त करने के लिए और तद-नन्तर उन शासकों पर नियन्त्रण स्थापित करने के लिए प्रयास आरम्भ हो गया।

भारत में यह प्रथा-सी बना दी गई थी कि नयी लोकसभा के गठन होने पर मन्त्रिमण्डल में तीन-चौथाई सदस्य देश के अपने-अपने विषय के चरित्रवान विद्वान् लेने होते थे। ये लोकसभा में निर्वाचित होकर आए हैं अथवा नहीं, इस बात का विचार नहीं किया जाता था। जो लोकसभा से बाहर के लोग होते थे, उनको राष्ट्रपति से राज्यसभा के सदस्य नामांकित करा दिया जाता था। विद्वान् मन्त्रियों से व्यवस्था निर्माण करने का काम लिया जाता था और लोकसभा में निर्वाचित सदस्यों से शासकीय काम लिये जाते थे। विद्वान् लोग नीति निर्धारित करने में योगदान देते थे और निर्वाचित सदस्य उन नीतियों की चालना देने में।

इस दिशा में कार्य करने वाले प्रथम प्रधानमन्त्री श्यामसुन्दर चक्रवर्ती एक विश्वविद्यालय के उप-कुलपति थे। उन्होंने अपना पद त्यागने के पूर्व राजनीतिक सिद्धान्तों पर एक पुस्तक लिखी थी और उसमें दो प्रथाओं पर भारी बल दिया था। एक तो यह कि शासन तो जन-जन के प्रतिनिधियों के अधीन हो सकता है, परन्तु शासन के लिए धर्म-व्यवस्था का निर्धारण तो केवल विद्वान् ही कर सकते हैं।

इस कार्य के विभाजन के लिए प्रधानमन्त्री का निर्वाचन एक महत्त्वपूर्ण कार्य है। जहाँ प्रधानमन्त्री विद्वान् और चरित्रवान होगा, वहाँ विद्वानों को प्रभाव-युक्त स्थानों पर नियुक्त करेगा। प्रधानमन्त्री यदि स्वार्थी, मन्द-मति और चरित्रहीन होगा तो अपने जैसे ही व्यक्ति वह मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित कर लेगा।

पिछले बीस वर्ष से इसी दिशा में कार्य चल रहा था, परन्तु बुद्धिशील व्यक्ति सदा यह समझते थे कि राजनीति तने हुए रस्से पर नाचने के तुल्य है। इस पर चलता हुआ व्यक्ति किसी समय भी एक ओर अथवा दूसरी ओर लुढ़क सकता है। अतः वह इस विषय में बहुत चिन्तित रहते थे कि प्रजातन्त्र की यह एक दुर्बल कड़ी है जो किसी समय भी पाप की आँधी में टूटकर राष्ट्र की शृंखला को भंग कर सकती है।

यह समस्या और इसकी विवेचना 'राजनीतिक सिद्धान्त' पुस्तक में लिखी थी। लेखक का कहना था कि प्रधानमन्त्री हो अथवा राजा हो, यह तो समाज की उपज ही हो सकता है। जैसा समाज होगा उसी प्रकार का नेता उस समाज को मिल जाएगा।

अतः समस्या यह नहीं कि प्रधानमन्त्री अथवा राजा कैसा हो और किस प्रकार निर्वाचित हो? समस्या का वास्तविक रूप है कि समाज कैसा हो? समाज का निर्माण किस प्रकार के लेखकों, कलाकारों, पुरोहित और अध्यापकों के हाथ में हो? यह वर्ग यदि चाहे तो समाज को शुद्ध, पवित्र और कुन्दन की भाँति निर्मल बना सकते हैं और यदि यह स्वयं मलिन बुद्धि होगा, तो पूर्ण समाज को भी वैसा ही बना देगा। और फिर राजा तो इसको वैसा ही मिल जाएगा।

इसी कारण आचार्य श्यामसुन्दर चक्रवर्ती ने देश की शिक्षा को स्वतन्त्र किया। देश के विद्वानों में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर उन्हें श्रेष्ठ होने की प्रेरणा दी और अपनी योजनानुसार समाज को एक श्रेष्ठ, भव्य और सम्पन्न एवं सुन्दर रूप देने का आयोजन कर दिया।

विश्व के विद्वानों में भारत के विद्वान् नेता थे। उन्होंने स्वयं स्वतन्त्रता का रस चखा था और उसका रस वह विश्व को चखाना चाहते थे।

ऐसा विश्वास प्रचलित है कि पूर्वजों की आत्मा ही सन्तान में होती है। इसे आनुवंशिकता का सिद्धान्त माना जाता है। इस किंवदन्ति का अभिप्राय यह है कि श्रेष्ठ बुद्धि-जीवों की सन्तान भी श्रेष्ठ बुद्धि वाली होती है। बुद्धि शरीर का एक

भाग है और जैसे शरीर की रूप-रेखा माता-पिता से मिलती है वैसे ही बुद्धि भी माता-पिता की देन होती है। माता-पिता में बुद्धि की निर्मलता के स्तर में अन्तर होने से सन्तान में माता-पिता से अन्तर होता जाता है। इस पर भी माता-पिता की विशेषता आती ही है।

एक विश्व-व्यापी आन्दोलन चल पड़ा कि लेखक, कलाकार, अध्यापक और पुरोहित राज्यतन्त्र से स्वतन्त्र होने चाहिए।

: २ :

राज्यतन्त्र में बुद्धि की युक्ति का आन्दोलन जानकी देवी के कैलाश-भवन वाले मकान से आरम्भ हुआ। यह प्रवृत्ति तो उसे अपने पूर्वजों से प्राप्त हुई थी, परन्तु इसको कार्य में लाने का सुझाव उसके पति डॉक्टर कुलकर्णी का था।

बातों-ही-बातों में डॉक्टर साहब ने पत्नी को कहा था, "यदि समाज का मस्तिष्क ब्राह्मण हैं तो ब्राह्मण-वर्ग का संगठन होना चाहिए। समाज-रूपी शरीर तो स्वयमेव नियन्त्रण में हो जाएगा।"

"संगठन पशुओं का नहीं होता जिसके हाँकने वाला ग्वाला लाठी लिये खड़ा हो। संगठन शुद्ध-बुद्ध मानवों का स्वेच्छा से स्वीकार किया हो तो वह संगठन है, अन्यथा वह पशुओं का वृन्द मात्र है।"

इस दृष्टिकोण से स्वतन्त्र देशों की परिभाषा ही यह हो गई कि वहाँ की विद्या और विद्वान् स्वच्छन्द हों। विद्वत् मण्डली में से अविद्वान् छँटकर पृथक् हो जाएँ। इसके लिए विद्वानों की विद्या में प्रतिस्पर्धा की प्रथा आरम्भ की गई।

इसके परिणामस्वरूप भूमण्डल के देशों में एक तीव्र भावना का सृजन हुआ और उसने नियन्त्रित समाजवादी देशों में गम्भीर विक्षोभ उत्पन्न कर दिया।

विद्वानों के संगठन का कार्यालय अन्तरिक्ष निवास-गृह में था। नीति इस आन्दोलन की मुख्य सचिव थी। अतः नियन्त्रित समाज वाले देशों के शासकों की दृष्टि इस निवास-गृह पर पुनः जा लगी।

एक समय इस निवास-गृह को शासकगण अपने कुकृत्यों पर जासूसी का केन्द्र मानते थे और अब उनकी समझ में आ गया कि यह विश्व के मस्तिष्क में विक्षोभ उत्पन्न करने वाला बीज है। वे इसे विष बीज मानते थे और उनका विचार था कि इस विष बीज से पूर्ण विश्व की मानव-समाज के लिए विश्व-भर में काँटों के पेड़ उत्पन्न हो मानवों के दुःख और क्लेश में कारण होंगे।

जहाँ तक स्वतन्त्र देशों के विद्वान् खुले दरवाजों वाले भवन में बैठ विचार-विनिमय करते थे और वे चाहते थे कि वहाँ के विचार की ध्वनि-प्रतिध्वनि विश्व-भर में फैल जाए, वहाँ परतन्त्र देशों में इस ध्वनि को उन देशों में घुसने से रोकने के लिए न केवल अपने आगारों के द्वार बन्द कर बैठना चाहते थे, वरन् वे अपनी फुसफुसाहट को भूमण्डल के देशों की प्रथा बनाना चाहते थे।

एतदर्थ चीन और बल्गारिया, रूमानियाँ और पोलैण्ड में एक प्रकार का षड्-यन्त्र रचा गया और उस पर कार्य आरम्भ हो गया।

कुछ दिन से अन्तरिक्ष निवास-गृह में एक बहुत बढ़िया सूट पहने और अपने कोट के 'बटन-होल' में सदा लाल गुलाब का फूल लगाए चिकना-चुपड़ा व्यक्ति आता-जाता दिखाई देने लगा।

इस व्यक्ति का नीति से आमना-सामना इस निवास-गृह के रैस्टोराँ में हुआ। एक दिन नीति वहाँ मध्याह्न का भोजन कर रही थी कि यह महानुभाव अपनी मेज से उठ नीति की मेज के समीप रखी एक कुर्सी पर बैठते हुए पूछने लगे, "क्षमा करें। क्या आप ही नीति देवी हैं?"

प्रश्न अति सभ्य और विनीत भाषा में किया गया था। अतः नीति देवी ने अपनी स्वाभाविक मुस्कराहट में उत्तर दिया, "जी। और आप?"

"मैं यूगोस्लाविया के राज्य का रहने वाला प्रोफेसर फ्रैड्रिक वोरिस हूँ।"

"कभी नाम नहीं सुना।"

"यह स्वाभाविक ही है। मैं आपसे आज पहली बार ही मिला हूँ और मैंने आपके दर्शन पहली बार ही किए हैं। प्रत्येक कार्य का आरम्भ होता है और किसी को जानना भी एक कार्य ही है।"

"हाँ, और आरम्भ होने वाले प्रत्येक कार्य का अन्त भी होता है। अतः आरम्भ के समय अन्त का भी विचार कर लिया जाए तो सदा लाभप्रद होगा।"

"परन्तु आप भाग्य को नहीं मानतीं क्या?"

"हमारी जीवन-मीमांसा में भाग्य का नाम अदृष्ट माना है। यह अदृष्ट कार्यों का परिणाम होता है। इस कारण जो दृष्ट-अदृष्ट में विचरते समय सावधान रहता है, वह भाग्य पर शासन करता है।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह था कि केवल फ्रैड्रिक वोरिस से आपका पूर्ण परिचय नहीं मिला। इससे अधिक तो आपके इस फूल और सर्वथा स्वच्छ कालर से आपका परिचय मिला है।"

"भला इस बेजान और बेजबान वस्तुओं से आप क्या समझ पाई हैं?"

"यही कि आप किसी प्रकार भी बुद्धिशील व्यक्ति नहीं हैं। बुद्धिजीवी व्यक्ति के पास इतना बन-ठनकर रहने के लिए समय ही नहीं होता।"

"तो बुद्धिशील व्यक्ति वह है जो सदा दिमागी चक्की चलाता रहता है?"

"यह दिमागी चक्की हाथों से चलाने वाली चक्की से अधिक कठिन और व्यस्त रखने वाली वस्तु है। जो चलाते हैं, वे जानते हैं।"

"यह जानने की इच्छा रखता हूँ। इसी कारण तो आपसे परिचय प्राप्त करने की लालसा थी। सुना है कि विश्व-भर के मस्तिष्क में चलने वाली चक्की को आप घुमा रही हैं।"

"परन्तु आपके देश में तो चक्की चलाने वाले दूसरे हैं। इस कारण आपको परिश्रम करने की आवश्यकता क्यों पड़ गई? जब आपको चक्की चलानी ही नहीं तो इसकी प्रक्रिया को जानने से लाभ क्या होगा?"

"मैं उन चलाने वालों से ऊबकर ही वहाँ से चला आया हूँ। अभी तो यहाँ उनकी जानकारी में ही हूँ। परन्तु मैं यहाँ से लौटने का विचार नहीं रखता।

"अपने देश में रहते हुए मैंने सुना था कि एक जानकी देवी हैं जो विश्व के मस्तिष्क को दिशा देने का यत्न कर रही हैं। अतः उन देवीजी के पास गया था। उनसे बातचीत हुई है, परन्तु उन्होंने मेरे प्रश्न को सुन, समझ मुझे आपका नाम बता दिया।"

"यह तो ठीक है कि आप मेरा नाम जानकी देवीजी से जान आए हैं, परन्तु आपने यह कैसे जाना कि वह नीति मैं ही हूँ?"

"यह तो सहज ही था। यहाँ अकेले रहने वाले इस आहार-गृह में भोजन करते हैं। इस कारण मैं आपको ढूँढ़ता हुआ यहाँ आ गया था।"

"और आपको यह भी जानकी देवी ने बताया है कि मैं यहाँ अकेली रहती हूँ और इस आहार-गृह में भोजन करने आती हूँ?"

"उन्होंने तो नहीं बताया। हाँ, यह यहाँ के बैरों से पता चल गया है। वह नौकर जो मेरे कमरे में मेरी सेवा के लिए आता है, वह सब कुछ बता गया है।"

"आप तो बहुत ही योग्य और विचारशील व्यक्ति प्रतीत होते हैं, हमारी सूचना तो यह है कि आपके तथा आप जैसे राजतन्त्र में जकड़े हुए देशों में तो प्रोफेसर इतने प्रगतिशील नहीं होते जो किसी से मिलने के पूर्व उसका वृत्तान्त नौकरों से जानने का यत्न करें। यह तो आपने अपनी विशेष बुद्धि का परिचय दिया है।"

"परन्तु ऐसा तो सब स्थानों पर होता है। व्यक्ति के विषय में उसके सेवक मित्रों से अधिक जान जाते हैं।"

"हाँ। उसके शरीर और वस्त्रों के विषय में, परन्तु व्यक्ति के विचारों के विषय में तो कदाचित् मित्र ही अधिक जान सकता है।"

"कदाचित् का क्या अभिप्राय है?"

"कभी-कभी मित्र भी व्यक्ति के विचारों से अनभिज्ञ होता है। प्रायः ऐसा होता है कि मित्र भी व्यक्ति के आभ्यन्तरिक भावों को जान नहीं पाता। यह तो मित्र की बौद्धिक सामर्थ्य से ही हो सकता है।"

भोजन समाप्त हो चुका था। नीति उठते हुए बोली, "परिचय आरम्भ हो गया है और कार्य यदि भली-भाँति आरम्भ किया जाए तो आधा सम्पन्न समझ लिया जाता है। अतः आपका कार्य आधा तो हो गया समझा ही जा सकता है। अब आप भोजन करिए। मैंने तो कर लिया है।"

"ठीक है। आधा नहीं तो आधे के लगभग कार्य तो हो ही गया है। अब मैं आपसे कब और कहाँ मिल सकता हूँ?"

"यह आहार-गृह उपयुक्त स्थान है।"

"मैं यहाँ हुए परिचय से कुछ अधिक जानने की इच्छा रखता हूँ।"

"मैं अपने कमरे में किसी पुरुष से नहीं मिलती। अपने कार्यालय में कार्यालय के कार्य से अतिरिक्त कार्य अथवा बात नहीं करती। इन दोनों स्थानों के अतिरिक्त यह आहार-गृह ही है जिसमें आपसे मिल सकती हूँ।"

"तब तो मैं यहीं आपसे पुनः मिलने का यत्न करूँगा।"

"हाँ। मुझे आपसे मिलकर प्रसन्नता होगी।"

: ३ :

फ्रैड्रिक वोरिस कमरे में जाता हुआ अनुभव कर रहा था कि इस लड़की के वार्त्तालाप के ढंग और उसके अपने वार्त्तालाप में क्या अन्तर है? वह बात करती हुई अपने एक-एक शब्द के अर्थ और प्रभाव से परिचित प्रतीत होती थी और इधर अपने एक-एक शब्द को बोलते हुए उसे अपने अनुदेश का चिन्तन करना पड़ता था जो उसे अपने देश से चलते समय मिला था।

उसके कानों में नीति के ये शब्द गूँज रहे थे कि प्रत्येक आरम्भ किए कार्य का अन्त होगा और कार्य आरम्भ करते समय उसका अन्त भी विचार लिया जाए तो लाभप्रद होगा।

वह विचार कर रहा था कि उसका यहाँ क्या कार्य है? वह जानता नहीं था कि इस कार्य का अन्त कहाँ होगा? एक महान् अभियान चलाया गया था। उस अभियान की गड़गड़ाहट से ही उसे उसकी महानता का ज्ञान हुआ था। अभियान का आदि, अन्त और बीच का उसे ज्ञान नहीं था। उसे तो उस अभियान के एक छोटे-से अंश को सम्पन्न करने के लिए ही वहाँ भेजा गया था।

वह अपने को एक महान् यन्त्र में एक कील मात्र समझा था। यन्त्र में एक पेच को मालूम नहीं होता कि यन्त्र का क्या उद्देश्य है और किस प्रकार वह उद्देश्य पूर्ण होगा? वह तो अपने स्थान पर घूम रहा है और उस घूमने का ही उसे ज्ञान है।

इस कारण वह न आदि के विषय में कुछ जानता था और न ही अन्त के विषय में। प्रश्न था तो क्या यह नीति पाँच फीट चार इंच ऊँची लड़की जानती है कि वह क्या कर रही है? कम-से-कम उसके आश्वस्त भाव से तो यह अनुभव होता था कि वह जानती है कि वह कहाँ से चली थी और कहाँ जा रही है? वह यह भी समझ रही प्रतीत होती थी कि कहाँ पहुँच गई है?

पाँच मिनट के वार्त्तालाप से वह अपने को बहुत छोटा अनुभव करता हुआ लौटा था। उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब उसे कमरे में पहुँचते ही दूरभाष से सन्देश मिला कि दिल्ली में उसे मिलने वाला उसका देशवासी चार्ल्स पिनफोर

उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

इसने पूछ लिया, "क्या काम है?"

"गुप्त है।"

"तुम कौन हो?"

"तुम्हारा साथी। तुमसे योजना में समन्वय चाहता हूँ।"

"कहाँ मिलेंगे?"

"टाटा भवन के कमरा नम्बर ३४० में। पाँच बजे चाय के समय।"

"आ जाऊँगा।"

वोरिस ने चोंगा रखा तो विचार करने लगा कि यह कौन है? फिर यह विचार कर कि वह भी उसी की भाँति मशीन में एक अन्य कील हो सकता है, उसको भी क्या पता होगा कि मैं क्या और क्यों हूँ? उसके मन में उससे बात करते समय विचार आया था कि गुप्त संकेत माँगे, परन्तु यह बात दूरभाष में करने की न समझ वह मौन रहा।

चार बजे वह अपने कमरे से निकला तो उसके बगल वाले कमरे से एक व्यक्ति धोती, कुर्ता, चप्पल पहने निकला और उसके साथ चल पड़ा। वह व्यक्ति सिर से नंगा और पोटा-मोटा चश्मा लगाए हुए था।

वोरिस ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। वह गृह के नीचे के तल पर जहाँ अन्तरिक्ष बसें तैयार रहती थीं, वहाँ जा पहुँचा। बस ठीक चार बजे छूटने वाली थी और जाने वाले यात्री उसमें एकत्रित हो रहे थे। तीन यात्री पहले बैठे थे। दो ये जा पहुँचे। वोरिस और उसके बगल वाले कमरे का व्यक्ति। दोनों साथ-साथ की सीटों पर ही बैठे। प्रथम प्रश्न वोरिस ने ही किया, "आप कहाँ जा रहे हैं?"

"दिल्ली।"

"मैं परदेसी हूँ और मुझे टाटा भवन में जाना है। आप बता सकेंगे कि किस नम्बर की बस में जाना होगा?"

"तो आप टाटा भवन जा रहे हैं?"

"जी।"

"मैं भी वहीं जा रहा हूँ। वहाँ किस नम्बर में जा रहे हैं?"

वोरिस ने आँखें मूँद नम्बर स्मरण किया और बता दिया, "तीन-चार शून्य में।"

"ठीक है। मैं आपको वहाँ पहुँचा दूँगा। आप किस देश के रहने वाले हैं?"

"युगोस्लाविया का।"

"वहाँ क्या काम करते हैं?"

"मैं वहाँ विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हूँ।"

"तब ठीक है।"

"क्या ठीक है ?"

"मैं भी यहाँ एक विश्वविद्यालय का संचालक हूँ। मैं अपने को प्राध्यापक तो नहीं कहता। कारण यह कि मेरा काम पढ़ाना नहीं, वरन् प्रबन्ध करना है।"

अब प्रश्न पूछने की बारी वोरिस की थी, "क्या मैं आपका नाम जान सकता हूँ ?"

"हाँ, क्यों नहीं। परन्तु हमारे यहाँ प्रथा है कि नाम पूछने से पहले अपना नाम बताया जाता है। देखिए, यदि मैं आपके स्थान पर होता तो मैं कहता, "मैं पण्डित भूदेव शर्मा आचार्य नव शिक्षा केन्द्र हूँ। और आपका परिचय ?"

वोरिस को कहना पड़ा, "मैं फ्रैड्रिक वोरिस डी० लिट्० डायरेक्टर ऑफ एजुकेशन युगोस्लाविया हूँ। यहाँ ज्ञान-वृद्धि के लिए आया हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि आपकी मुझसे भेंट बहुत लाभकारी होगी। मैं आपको बहुत भलीभाँति यहाँ का ज्ञान लाभ करा सकूँगा।"

"सत्य ही यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।" वोरिस ने कहा।

दोनों में वार्ता होने लगी। वोरिस ने पूछ लिया, "इस अन्तरिक्ष यान में यद्यपि भू-आकर्षण की सीमा के पार ही हम स्थित हैं, मुझे अपने में भू-आकर्षण का अन्तर प्रतीत नहीं हुआ ?"

"यह इस कारण कि हम भू-आकर्षण के रहस्य को जान गए हैं। क्यों एक पदार्थ दूसरे पदार्थ को अपनी ओर आर्कषित करता है ? इस रहस्य को जान हम वही आकर्षण इस यान में उत्पन्न किए हुए हैं और वही शक्ति इस बस में भी निर्माण की जा रही है। अतः हम इस बस में अथवा अन्तरिक्ष-गृह में रहते हुए ऐसा ही अनुभव करते हैं कि हम पृथ्वी तल पर हैं।"

"भू-आकर्षण का क्या रहस्य है ?"

"इसे जानने के लिए आपको भारतीय दर्शन-शास्त्र का ज्ञान होना चाहिए। वहाँ इस भू-आकर्षण की एक भिन्न परिभाषा दी है। परन्तु उस परिभाषा के अनुसार हमारे वैज्ञानिक किस प्रकार उसका निर्माण कर रहे हैं, मैं नहीं बता सकता। हमारे यहाँ शुद्ध विज्ञान तो शास्त्रों में लिखा है, परन्तु उस विज्ञान के प्रयोग को, कार्य में कुशलता अर्थात् योग कहा है। हमारे योगी जिन्हें 'टैक्नीशियन' कहते हैं, बड़े-बड़े विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। मैं उसका विद्यार्थी नहीं रहा। इतना जानता हूँ कि जैसे प्रकृति की अन्य शक्तियों पर मनुष्य ने अधिकार प्राप्त किया है इसी प्रकार भू-आकर्षण का निर्माण अथवा इसका विरोध करने के उपाय भी प्रतीत कर लिए गए हैं।"

यद्यपि वोरिस का विषय इतिहास था। इस पर भी वह विज्ञान का प्रारम्भिक ज्ञान रखता था। उसको समझने में देर नहीं लगी कि भू-आकर्षण भी चुम्बक की भाँति की शक्ति की किरणें हैं और जैसे कृत्रिम चुम्बक निर्माण कर चुम्बकीय शक्ति

उत्पन्न की जा सकती है अथवा चुम्बकीय शक्ति का विरोध किया जा सकता है वैसा ही भारतीय वैज्ञानिकों ने भू-आकर्षण के विषय में किया है।

दोनों व्यक्ति कैलाश-भवन पर बस से उतरे और वहाँ से लिफ्ट द्वारा भू-तल पर पहुँचे। दोनों दिल्ली परिवहन संस्थान की बस में सवार हो टाटा भवन में जा पहुँचे। वोरिस को विस्मय हुआ कि दोनों एक ही कक्ष में गए हैं और एक ही नम्बर में।

"तो आप भी यहीं आ रहे थे?"

"जी। तभी तो मैंने कहा था कि मैं आपको यहाँ पहुँचा दूँगा।"

पण्डित भूदेव विद्वत् सम्मेलन की ओर से युगोस्लाविया के इस नए पक्षी को प्रेरणा देने के लिए नियुक्त हुआ था और इसके लिए उसे अन्तरिक्ष निवास-गृह पर वोरिस के साथ वाला कमरा दे दिया गया था। इस एक घण्टे के संक्षिप्त वार्त्तालाप ने अभी तो वोरिस को चकाचौंध ही किया था, परन्तु वोरिस को टाटा भवन में बुलाने वाला व्यक्ति इस विद्वत् परिषद् के दिल्ली कार्यालय में उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

: ४ :

ज्योंही ये वोरिस और भूदेव कमरे में प्रविष्ट हुए वहाँ बैठे एक व्यक्ति ने वोरिस से हाथ मिला उसका अभिवादन किया और पूछ लिया, "साथ में कौन हैं?"

"बस में आते-आते मित्र हो गए हैं। यह एक शिक्षा-केन्द्र के संचालक हैं।"

उस व्यक्ति ने पण्डित भूदेव की ओर देख पूछ लिया, "आपका यहाँ क्या काम है?"

"मैं पण्डित दयानिधि से मिलने आया हूँ।"

"ओह! आप इस कमरे में प्रतीक्षा करिए। पण्डित दयानिधि आने ही वाले हैं।"

भूदेव वहाँ बैठ गया और वही व्यक्ति जो वहाँ पहले उपस्थित था, वोरिस को लेकर बगल के कमरे में चला गया। आधा घण्टा दोनों वार्त्तालाप करते रहे। वार्त्तालाप के उपरान्त जब दोनों आगार के बाहर आए तो भूदेव एक अन्य व्यक्ति के साथ बातचीत कर रहा था। उसने वोरिस को आते देखा। वोरिस के मुख पर घबराहट, आँखों में चंचलता और उसके शरीर में शिथिलता प्रतीत हुई थी। जब वोरिस बिना भूदेव की ओर ध्यान दिए जाने लगा तो भूदेव ने उसे आवाज दे दी, "मिस्टर वोरिस! मैं भी चल रहा हूँ। मेरा काम भी समाप्त हो गया है।"

वोरिस कमरे के बीचों-बीच खड़ा हो गया और भूदेव की प्रतीक्षा करने लगा। भूदेव ने उस व्यक्ति से हाथ मिला विदा ली जिससे वह बातें कर रहा था। वह वोरिस के समीप आ पूछने लगा, "आपको क्या हुआ है?"

"क्या हुआ है?" वोरिस ने कंधों को झटका दे अपने को सावधान करते हुए

पूछ लिया।

"तो आप नहीं जानते ? आपके मुख का रंग काला पड़ गया है। आँखों में चंचलता बढ़ गई है, और आपके हाथ ऐसे लटक रहे हैं कि मानों वे आपके शरीर के साथ कोई जीवन-रहित अंग लटक रहे हैं।"

भूदेव के साथ-साथ कमरे में से निकलते हुए वोरिस ने कहा, "हाँ, कुछ बात हुई है। परन्तु मुझे आप पर भी सन्देह होने लगा है।"

भूदेव ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "किस बात का सन्देह हुआ है ?"

"यही कि आप भी गुप्तचर विभाग के एक घटक हैं।"

"नहीं। ऐसा नहीं है। परन्तु इस विषय में आपको सन्देह किस बात से हुआ है ?"

"मैं यह समझा हूँ कि इस भवन में कक्ष ३४० गुप्तचर-विभाग का अड्डा है।"

"किस बात से आपको सन्देह हुआ है ?"

"मुझसे कुछ बातें पूछी गई हैं, कुछ बताई गई हैं। इससे मैं यह समझ सका हूँ कि मैं गुप्तचर पुलिस के घेरे में पहुँच गया हूँ।"

"यह कार्यालय गुप्तचर-विभाग का नहीं। यदि किसी व्यक्ति ने आपके सामने कुछ इस प्रकार का दावा किया है तो यह एक बहुत बड़ा अपराध है।"

"यदि यह गुप्तचर-विभाग नहीं तो क्या है ? मुझे चार्ल्स पिनफोर नामक एक व्यक्ति ने दूरभाष से यहाँ बुलाया था। वह यहाँ मुझे मिला तो है, परन्तु वह स्वतन्त्र प्रतीत नहीं हुआ। वह कह रहा है कि उसका नाम जगदीश है। नाम भारतीय है, परन्तु हाव-भाव से यूरोपियन लगा है।"

"तो उसने आपसे ऐसा कुछ पूछा है जो उसे नहीं पूछना चाहिए था ?"

"नहीं। ऐसी कोई बात नहीं। यहाँ पूछने के स्थान बताने पर बहुत बल दिया गया है। इस पर भी मेरे सन्देह को समर्थन ही मिला है। मुझे इस जगदीश नाम के यूरोपियन ने वह बातें बताई हैं जो मेरी स्त्री के अतिरिक्त कोई नहीं जानता।"

"बहुत भयंकर जीव है यह जगदीश।"

"हाँ, प्रत्येक व्यक्ति का एक अंश मात्र ही प्रत्यक्ष प्रकट करने के लिए होता है। परन्तु जब अन्य कोई अप्रत्यक्ष की बातें जानकर बताने लगे तो उसे भयंकर व्यक्ति ही समझना चाहिए। यही कारण है कि इसे अति भयंकर व्यक्ति कहा जा सकता है। हमारे यहाँ जब कोई व्यक्ति किसी अप्रत्यक्ष बात को बताने लगे तो मैं समझता हूँ कि वह गुप्तचर-विभाग का ही व्यक्ति है।"

"इसमें गुप्तचर की बात कैसे आ गई ? आप कहते हैं कि आपको कुछ बताया गया है जो केवल आपकी पत्नी को ही ज्ञात है तो वह बात यहाँ के गुप्तचर-विभाग को कैसे पता चल गई ? या तो आपकी पत्नी से किसी का आपसे भी अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है तभी तो वह आपकी गुप्त बात को जान सका है। अन्यथा यह जगदीश

यह कोई योगी है जो इस संसार की भिन्न-भिन्न वस्तुओं अथवा घटनाओं का समन्वय करना जानता है। इससे भी कोई दूसरे के हृदय की गुह्य बातें जान जाता है।"

इस समय वे एक लिफ्ट द्वारा भू-तल पर आ खड़े हुए थे। भूदेव ने पूछा, "आप अब होटल को लौट रहे हैं अथवा यहाँ किसी काम से हैं?"

"मुझे यहाँ कुछ काम नहीं। मैं एकांत में बैठ अपनी अवस्था पर चिन्तन करना चाहता हूँ। इस मिस्टर जगदीश ने तो मेरे मन में हलचल मचा दी है।"

"यह एक ठीक ही प्रतिक्रिया है। सबको अपनी-अपनी बात के चिन्तन में कुछ समय नित्य व्यतीत करना चाहिए। नहीं तो मनुष्य ठोकर खा जाता है।"

"हाँ। आपके विषय में भी बात विचारणीय हो गई है।"

"मेरे विषय में तो विचार करने की इतनी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। मैं तो स्वयं ही आपको अपने विषय की सब बातें स्पष्ट शब्दों में कह देने के लिए तैयार हूँ। इसपर भी चिन्तन की तो तब भी आवश्यकता रहेगी।

"देखिए, मैं आपको बताता हूँ। मैं दिल्ली की विद्वत् सभा का सदस्य हूँ। हमारी विद्वत् सभा ने एक महान् अभियान चला रखा है। वह अभियान है भू-मण्डल के विद्वानों को राज्य-तन्त्रों की दासता से मुक्त कराना। मैं इस विद्वत् सभा का सक्रिय सदस्य हूँ और टाटा भवन ३४० हमारी सभा का कार्यालय है।

"मैं तो यह समझा हूँ कि आप-जैसे विद्वान् के साथ हमारी सभा ने सम्पर्क उत्पन्न करने का यत्न किया है।"

"तो यह जगदीश भी आपकी सभा का सदस्य है?"

"हो सकता है। मैं उसे नहीं जानता। यह एक कर्मचारी मात्र भी हो सकता है।"

"तो आप सभा के कार्य-संचालक नहीं हैं?"

"नहीं। उसके लिए वेतनधारी लोग हैं। मेरा जीविकोपार्जन का कार्य अन्यत्र है।"

"परन्तु इस जगदीश के बच्चे को यह कैसे पता चला है कि मेरी पत्नी एक रूसी स्त्री है और वह मेरी पत्नी होते हुए भी मुझसे पति का काम नहीं लेती?"

"उसको उससे अथवा उसके उस मित्र से पता चला होगा जो उससे पत्नी का कार्य लेता है। परन्तु हमारे देश में तो पति-पत्नी का कार्य सन्तानोत्पत्ति ही माना जाता है।"

"मेरा भी यही अभिप्राय है। वह मेरी विवाहिता है, परन्तु सन्तानोत्पत्ति वह एक रूसी सैनिक के सहयोग से कर रही है।"

"यह क्यों?"

"क्यों की बात तो मेरी पत्नी ही बता सकती है।"

"तो अवश्य उस रूसी सैनिक ने आपकी पत्नी के इस रहस्य को मद्य के नशे में किसी के सम्मुख बक दिया है और उससे जगदीश को पता चल गया है।"

इससे तो बोरिस चिन्तालीन हो गया। उसे इस सफाई पर विश्वास नहीं आया। परन्तु वह तो यह जानता था कि विश्व विद्वत् परिषद् का कार्यालय अन्तरिक्ष निवास-गृह में है और यह व्यक्ति बता रहा है कि यह भूतल पर टाटा भवन में ३४० पर है। वह नीति देवी से मिल भी चुका था और वह कह रही थी कि उसका कार्यालय वहीं है। इन परस्पर विरोधी बातों से वह कुछ ऐसा अनुभव करने लगा था कि उसके चारों ओर किसी प्रकार का जाल बिछा हुआ है। परन्तु वह चार्ल्स पिनफोर कौन था ? क्या वह छद्म नाम तो नहीं था ? अथवा जगदीश नाम भी छलना हो सकता है ? बस में कैलाश-भवन को लौटते हुए वह गम्भीर विचार में निमग्न था। भूदेव यद्यपि उसके समीप बैठा था, परन्तु उसने उसके विचारों में झाँकने का यत्न नहीं किया।

आधे घण्टे में बस कैलाश-भवन पर पहुँची। एकाएक इस भवन के लिफ्ट में चढ़ते हुए बोरिस ने पूछ लिया, "आपके यहाँ भूम्यान्तर्गत रेल नहीं हैं क्या ?"

"नहीं। हमने उसे यातायात का भद्दा साधन समझा है। हमने तीन प्रकार के यातायात के साधनों को प्रोत्साहन दिया है। एक तो व्यक्तिगत स्कूटर, टैक्सियाँ और मोटर-गाड़ियाँ हैं। दूसरे ये बसें हैं और तीसरे, हेलीकॉप्टर हैं। रेल से इन साधनों की आवश्यकता को निःशेष नहीं किया जा सकता। इससे हमने सड़क चौड़ी-चौड़ी कर दी हैं। सड़कों को पार करने के लिए उन पर सेतु बाँध दिये हैं। हमने नगरों में रहने के स्थान ऐसे ढंग से बनाए हैं कि जहाँ जिसका काम है वहीं उसके समीप ही निवास-गृह हो जाए। जैसे लोगों के सेवा-कार्य में बदली होती है वैसे ही उनके निवास-गृह भी बदल जाते हैं।

"देखिये, यदि हमको भूम्यान्तर्गत रेल से यहाँ आना होता तो पहले हम रेल के स्टेशन पर पहुँचते। वहाँ से भूमि में घुसते, वहाँ गाड़ी में सवार होने के लिए अपनी बारी की प्रतीक्षा करते और फिर इस कैलाश-गृह से अवश्य भूम्यान्तर्गत रेल का स्टेशन दूर होता। वहाँ से यहाँ तक आने में पुनः सवारी का प्रबन्ध करना पड़ता।

"हमारे नगरों का निर्माण करने वालों ने यह समझा है कि भूम्यान्तर्गत रेल बना-बनाकर अरबों और खरबों रुपये व्यय करके भी पूर्ण नगर को खोखला करना है, उससे सड़कें चौड़ी करने, पैदल चलने वालों के लिए सड़कें पार करने के पुल बनवाने में और नगर के प्रत्येक विभाग के निवास-गृहों की उपलब्धि में धन कम व्यय होता है। साथ ही इसमें नागरिकों को आने-जाने में सुभीता रहता है। वे अपने मकान से उद्दिष्ट मकान के नीचे जा पहुँचते हैं। हम लोग बसों के भी

कुछ अधिक शौकीन नहीं। ये कुछ-कुछ विशेष केन्द्रों को जोड़ने का काम ही देती हैं।''

ये कैलाश-भवन की छत पर पहुँच गए थे। वहाँ बस खड़ी थी। ये उसमें जा बैठे। बस चलने में अभी दस मिनट थे।

बोरिस ने पूछा, ''यह सब प्रबन्ध आपका नगर-निगम करता है अथवा केन्द्रीय शासन ?''

''दोनों ही नहीं। यहाँ सब काम लोग अपनी निजी पंजीकृत समितियों द्वारा करते हैं। निर्माण और प्रबन्ध भी ऐसी समितियाँ ही करती हैं। सरकार ने एक समन्वय-विभाग खोल रखा है। वह सब व्यक्तिगत कार्यों को एक-दूसरे की सहायता में प्रयुक्त करता रहता है।''

''हम तो इसे पसन्द नहीं करते। पहले व्यक्तियों को उच्छृंखलता करने की स्वीकृति दे दी जाए और फिर उनमें परस्पर ताल-मेल बिठाने का यत्न किया जाए।''

''हम समस्या को इस प्रकार समझते हैं कि सबको भागकर आगे निकल जाने की सुविधा रहनी चाहिए। शासन का काम यह देखना है कि लोग भागते-भागते परस्पर टकरा न जाएँ। इसके लिए उनके दौड़ लगाने के लिए मार्ग प्रशस्त बनाए हैं। दौड़ लगाने के नियमोपनियम बनाये हैं और फिर भी कोई टकरा जाए तो उसे उठाकर पुनः पाँव पर खड़ा करने के लिए सहकारी संस्थाएँ बनाई हैं।''

''तब तो सरकार को बहुत व्यय करना पड़ता होगा और वह भी बिना आय के ?''

''नहीं, ऐसा नहीं। प्रत्येक बड़े व्यवसाय अथवा उद्योग में सरकार इक्यावन प्रतिशत की भागीदार है और उस लाभ की राशि में से जन-कल्याण के सब कार्य चलते हैं।''

ये दोनों बातें ही कर रहे थे कि वे अन्तरिक्ष होटल पर जा पहुँचे और वहाँ से अपने कमरे को चल दिए।

बोरिस ने पूछ लिया, ''आप सदा इस होटल में रहते हैं ?''

''नहीं, मैं आजकल काम से अवकाश पर हूँ और यहाँ मनोरंजनार्थ कुछ दिन रहने के लिए चला आया हूँ।''

''आपको यह मनोरंजन की सुविधा आपके शिक्षा केन्द्र की ओर से मिलती है अथवा आप अपने पास से व्यय करते हैं ?''

''मैं अपनी जेब से व्यय करता हूँ।''

''तब तो यह मनोरंजन आपको बहुत महँगा पड़ेगा।''

''नहीं, कोई ऐसी बात नहीं। मैं इतना व्यय करने की सामर्थ्य रखता हूँ।''

: ५ :

बोरिस अपने कमरे में पहुँच आराम कुर्सी पर ढासना लगा, सामने रखी चौकी पर पाँव रख विचार-मग्न हो गया। जगदीश नामक व्यक्ति से हुआ वार्त्तालाप ही उसकी चिन्ता और विचार का विषय था।

टाटा भवन में उसे जब भूदेव से पृथक् किया गया तो उसे एक कमरे में ले जाकर एक गौरवर्णीय व्यक्ति के सम्मुख खड़ा कर कह दिया, "जगदीशजी! यह हैं मिस्टर फ्रैड्रिक बोरिस, जन्म से युगोस्लावियन, परन्तु इस समय रूस में गुप्तचर-विभाग के एक घटक। शेष यह स्वयं आपको बताएँगे।"

यह पहला आघात था जो बोरिस को भारत आने पर लगा था। उसे भारत में आए केवल तीन दिन हुए थे। इन तीन दिनों में वह अपने को वहाँ की बातों से परिचित ही कर रहा था। आने से पूर्व उसे बताया गया था कि अन्तरिक्ष निवास-गृह में नीति देवी रहती है। वह रूस के तथा अन्य साम्यवादी देशों के विरुद्ध एक महान् षड्यन्त्र चला रही है। फ्रैड्रिक को उससे मिलकर उसके कार्य की रूप-रेखा जाननी है और उस रूप-रेखा को रूसी दूतावास में बता देना है। बस इतना मात्र काम उसे करने को दिया गया था।

उसने उसी दिन अपना कार्यारम्भ किया था। उसने नीति देवी की दिनचर्या जान उससे सम्पर्क उत्पन्न किया और प्रारम्भिक परिचय कर लिया, परन्तु यह जगदीश तो उसके विषय में उसकी पत्नी से भी अधिक जानता प्रतीत होता था।

जब जगदीश से परिचय कराने वाला उसे वहाँ छोड़कर कमरे से बाहर निकल गया तो जगदीश ने बोरिस को बैठने के लिए कहा। बोरिस समीप रखी कुर्सी पर बैठा तो जगदीश ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "हमारे गुप्तचर-विभाग को यह पता चला है कि आप यहाँ जासूसी कार्य के लिए आए हैं। आपको एक विद्वान् और डी० लिट्० की उपाधि से विभूषित देख गुप्तचर-विभाग ने आपको हमारे पास भेज दिया है। मैं भी एक विश्वविद्यालय का प्राध्यापक रहा हूँ और आजकल भी शिक्षा-कार्य कर रहा हूँ। यह कार्य विश्वविद्यालय से बाहर है।

"आरम्भ में ही यह बता देना चाहता हूँ कि इस वर्तमान कार्य में जिसे सम्पन्न करने के लिए आपको मेरे पास भेजा गया है, मैं शिक्षा-कार्य ही कर रहा हूँ।

"शिक्षा के लिए यह आवश्यक होता है कि छात्र की व्यक्तिगत योग्यता का ज्ञान प्राप्त किया जाए। यही मैं आपके विषय में कर रहा हूँ।"

इस समय बोरिस को स्मरण आ गया कि वह तो किसी चार्ल्स पिनफोर के आह्वान पर यहाँ आया है। अतः उसने कह दिया, "मैं समझता हूँ कि मैं भूल से यहाँ आपके सामने उपस्थित कर दिया गया हूँ। मैं वह नहीं हूँ जिसके विषय में आप बता रहे हैं। मैं मिस्टर चार्ल्स पिनफोर से मिलने के लिए आया हूँ।"

इस पर जगदीश हँस पड़ा। उसने कहा, "ऐसा प्रतीत होता है कि आपको

यहाँ भू-तल पर उतारने के लिए ही आपके किसी परिचित का नाम बता दिया गया है। मैं तो 'कनेडियन' हूँ। परन्तु इस कार्य के लिए यहाँ नियुक्त हूँ।''

''पिनफोर मेरा कोई परिचित नहीं।''

''इस पर भी आप उसके कहने पर ढाई हजार किलोमीटर की यात्रा कर यहाँ पहुँच गए हैं। कुछ तो उसमें आपके लिए आकर्षण होगा जो आप उसका नाम सुनते ही चले आए हैं।''

यह उसके नाम का आकर्षण नहीं था, वरन् टेलीफोन में उसके काम की ओर संकेत किया गया था और उस काम से बँधा हुआ वह यहाँ पहुँचा था। परन्तु फ्रैड्रिक ने इस विषय पर बात आगे नहीं चलाई। उसने कह दिया, ''मैं पिनफोर को नहीं जानता।''

''कुछ भी हो,'' जगदीश ने बात बदलते हुए कहा, ''मुझे आपके पूर्ण जीवन-कार्य का परिचय करा दिया गया है। आप मास्को विश्वविद्यालय में इतिहास के प्राध्यापक थे। आप भारत देखने के इच्छुक थे। आपकी पत्नी को आपकी इच्छा का ज्ञान हुआ तो उसने अपने प्रेमी से कहकर आपको गुप्तचर-विभाग से यह काम दिलवा दिया है। इस प्रकार उसने एक पत्थर से दो पक्षी घायल किए हैं। स्वयं वह अपने प्रेमी के पास जाकर रहने के लिए अबाध अवसर पा गई है और आपको अपने से दूर कर वह आपसे स्वतन्त्र हो गई है।''

''आप मेरी पत्नी के विषय में क्या जानते हैं?''

''वह जार के जमाने के एक रईस की पोती है। आपसे उसका विवाह हुए दस वर्ष हो चुके हैं, परन्तु विवाह से पूर्व ही उसका सम्बन्ध अपने सैनिक प्रेमी से है। उसकी तीन सन्तान हैं। एक तो आपसे विवाह के छः मास उपरान्त उत्पन्न हुई थी और दो उसके उपरान्त। इसपर भी आपको वह अपने पास फटकने नहीं देती।

''आप दोनों एक ही मकान में रहते हैं। बच्चे आपका नाम लिए हुए हैं और आपके सब परिचित ऐसा ही जानते हैं। यह आपको तथा आपकी पत्नी को ज्ञात है कि आपका उनके निर्माण में कुछ भी सहयोग नहीं।''

बोरिस इस रहस्य की बात को जान सामने बैठे जगदीश को देखकर भयभीत हो गया था। वह समझ रहा था कि उससे उसके महकमे के विषय में पूछताछ की जाएगी और वह बताएगा नहीं तो उसपर तीसरे दर्जे के उपायों से प्रयोग कर उसे बहकाया जाएगा। परन्तु उससे पूछने के स्थान पर जगदीश ने उसे बताना ही ठीक समझा। उसने कहा, ''मैं तो यह समझता हूँ कि मुझमें एक जीवन-तत्त्व है। वह स्वतन्त्रता से विचरना चाहता है। यह शरीर उस जीवन-तत्त्व को बाँधे हुए है। हम यहाँ भारत में शरीर से जीवन-तत्त्व को मुक्त करने का यत्न करते रहते हैं। जब हम शरीर के अस्तित्त्व को गौण मानने लगते हैं तब हमारा जीवन-तत्त्व मुक्त हो जाता है। वह अपने कल्याण की बात सोचने लगता है और उसे समझ आने

लगता है कि उसका अपना कल्याण शरीर के सुख से सर्वथा पृथक् है।

"एक पढ़े-लिखे व्यक्ति को अपने जीवन-तत्त्व को समझने का यत्न करना चाहिए और उसे संसार से मुक्त करने का यत्न करना चाहिए।"

"मुझे तो शरीर से पृथक् कोई जीवन-तत्त्व दिखाई नहीं देता।"

"वह भी दिखाई दे जाएगा। आप मुझसे सम्पर्क रखिए। मैं आपको इस तत्त्व के दर्शन करा सकता हूँ।"

बस इतनी ही बात हुई थी और जगदीश उठ खड़ा हुआ। दोनों ने हाथ मिलाए और वोरिस वहाँ से उठ बाहर के कमरे में आ गया। वहाँ भूदेव बैठा किसी से बातें कर रहा था।

अपने कमरे में पहुँच फ्रैड्रिक वोरिस ने अपने अटैची केस से अपना संचार यंत्र निकाला और उससे रूसी दूतावास से सम्पर्क बनाने लगा।

दूतावास से वार्त्तालाप हुआ और उसको पता चला कि चार्ल्स पिनफोर के विषय में दूतावास में कोई सूचना नहीं। इस पर उसने अपने साथ हुई घटना का वर्णन कर दिया। दूतावास का कहना था, "हमारे दूतावास के दो गुप्तचर वापस मास्को भेज दिए गए हैं। उनके अपहरण का भय हो गया था।"

वोरिस इस घटना से भयभीत अपने कमरे से बाहर नहीं निकला। इस पर भी उसकी भेंट पण्डित भूदेव और नीति से होती रहती थी।

नीति देवी से तो वह केवल मध्याह्न और रात के भोजन के समय आहार-गृह में ही मिलता था। भूदेव उससे दिन में दो-तीन बार उसके कमरे में ही मिलने आ जाया करता था।

इन दो व्यक्तियों के सम्पर्क में फ्रैड्रिक वोरिस में परिवर्तन आने लगा था। एक सप्ताह में ही उसकी समझ में यह आ गया कि उसे गुप्तचर-विभाग का काम छोड़ देना चाहिए, परन्तु इस विभाग के काम करने के उपरान्त काम छोड़ने का अभिप्राय वह जानता था। इस विभाग को छोड़कर जाने वाले 'लेबर कैम्प्स' में ही जाते देखे गए थे और 'लेबर कैम्पों' से पाँच से दस प्रतिशत लोग ही वापस लौटते थे। लौटकर भी वे कोई उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य नहीं पा सकते थे।

इसी कारण वह किसी प्रकार इस कठिनाई से बचने का विचार कर रहा था। वोरिस के चिन्तन का यह परिणाम हुआ कि उसने निश्चय किया कि भारत की नागरिकता स्वीकार कर भारत में आश्रय पा जाना चाहिए। परन्तु यह काम सुगम नहीं था।

एक दिन वह बैठा अपने गुप्त संचार-यन्त्र से रूसी दूतावास को अपनी सूचना भेज रहा था कि वहाँ से एक कर्कश स्वर में चेतावनी मिली, "आपकी सूचनाएँ व्यर्थ और अधूरी होती हैं। ये सूचनाएँ व्याख्या सहित और साथ ही अर्थयुक्त होनी चाहिए। अन्यथा आपको वापस बुला लिया जाएगा।"

वोरिस ने कहा, "जितना कुछ पता चलता है उतना ही तो मैं बता सकता हूँ। अपने पास से कल्पना तो करके बता नहीं सकता।"

इस पर संचार-सम्बन्ध टूट गया। इससे वोरिस समझ गया कि उसे वापस मास्को बुलाया जा रहा है और वहाँ पहुँचते ही उसे साइबेरिया भेज दिया जाएगा।

वह एक बात और भी विचार कर रहा था कि मास्को से उसका क्या सम्बन्ध है? वह रहने वाला यूगोस्लाविया का है। काम मास्को में करता था, परन्तु वहाँ के जीवन से असन्तुष्ट हो उसके मन में किसी विदेश जाने की लालसा उत्पन्न हुई थी। इसमें उसकी पत्नी एक कारण थी।

अब उसे भारत की आभ्यन्तरिक दशा का ज्ञान हुआ तो उसका चित्त वापस जाने को नहीं था। परन्तु क्या वह यहाँ रह सकेगा?

इस दिशा में उसका ध्यान गया तो उसे भूदेव और नीति देवी ही आश्रय दिखाई दिए। उसने टेलीफोन उठा भूदेव के कमरे से सम्पर्क बनाया। भूदेव को दूसरे छोर पर बात करने का विश्वास कर उसने कहा, "मैं आपसे एक अत्यावश्यक विषय पर बात करना चाहता हूँ।"

"मैं आने ही वाला था, परन्तु यहाँ एक मजेदार पुस्तक पढ़ रहा था।"

"क्या पढ़ रहे थे?"

"कहो तो पुस्तक लेता आऊँ?"

"हाँ, आ जाइए।"

: ६ :

भूदेव आया तो वोरिस को बताने लगा, "हमारे एक ज्योतिषी ने यह भविष्य-वाणी की है कि इसी वर्ष पृथ्वी की मानव-संख्या एक अरब कम हो जाएगी। यों तो सब जातियों के लोग मरेंगे, परन्तु अधिकांश मरने वाले उन जातियों के लोग होंगे जिनमें लोग स्वतन्त्र आत्मा की स्वतन्त्र गतिविधियों में विश्वास नहीं रखते।"

"और जो आत्मा के अस्तित्व को ही नहीं मानते?"

"ये लोग भी उसी श्रेणी में आते हैं जिनमें आत्मा की स्वतन्त्र गतिविधि पर विश्वास नहीं है। जब आत्मा है ही नहीं तो उसकी स्वतन्त्रता की बातें ही नहीं रहतीं।"

"यह कब तक होने वाला है?"

"उसका तो कहना है कि इसी वर्ष में।"

"और बचेंगे कौन?"

"उसका कहना है कि मरते समय तो भले-बुरे सब मरेंगे, परन्तु जो बुरे लोग हैं; वे मानव-जीवन में लौटकर नहीं आएँगे।"

इस पर वोरिस को अपनी बात स्मरण आ गई। उसने कहा, "यह तो जब होगा तब होगा, परन्तु मैं कुछ ऐसा समझ रहा हूँ कि मैं तो पहले ही इस संसार से

विदा ले रहा हूँ।

"मेरे 'बॉस' को मेरे कामों में त्रुटियाँ दिखाई देने लगी हैं और मैं जानता हूँ कि इसकी क्या प्रतिक्रिया हो सकती है।"

"तो फिर?"

"मैं रूस अथवा यूगोस्लाविया लौटना नहीं चाहता।"

"तो यहीं रह जाइए।"

"यहाँ मेरी रक्षा कौन करेगा?"

"इसके लिए आपको विद्वत् परिषद् की सुरक्षा में चले जाना चाहिए।"

"परिषद् में इतना सामर्थ्य है कि वह मेरी रूस जैसे शक्तिशाली राज्य से रक्षा कर सके?"

"हम यत्न तो कर सकते हैं। साथ ही मैं कोई कारण नहीं देखता कि आपकी रक्षा न हो सके। परन्तु इसके लिए आपको नीति देवी से बात करनी पड़ेगी।"

"वह मैं मध्याह्न के भोजन के समय करूँगा। उन्होंने मुझे कह रखा है कि मैं उनके कार्यालय में न जाऊँ।"

"ठीक है। ऐसा ही करिए। यों तो मैं इस बात की आशा पिछले दस दिन से कर रहा था।"

उस दिन भूदेव और वोरिस इकट्ठे भोजन करने गए। वहाँ नीति देवी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"मुझे पण्डितजी को अपनी एक बात समझाते-समझाते कुछ देर हो गई है।" वोरिस ने क्षमा के भाव में कह दिया।

"आपका वापस रूस जाना तो ठीक नहीं होगा। वहाँ आपको 'लेबर कैम्प' में डालने की तैयारी पूर्ण हो चुकी है।"

इस सूचना से वोरिस मुख देखता रह गया। उसके विस्मय का कारण यह था कि नीति देवी को इस गुह्य बात का ज्ञान उससे भी पहले कैसे हो गया है?

खाना परसा जा रहा था और वोरिस गम्भीर विचार में निमग्न मौन अपने साथियों का मुख देख रहा था। भोजन परसा जा चुका तो नीति देवी ने खाना आरम्भ करते हुए कहा, "आपको मिस्टर जगदीश से मिलकर भारत की नागरिकता माँगनी चाहिए। जगदीश आपकी इस कार्य में सहायता कर सकता है। जब यह हो जाए तो आपको मेरे पास आना चाहिए। मैं आपकी रक्षा का प्रबन्ध करने का यत्न करूँगी।

"एक बात स्मरण रखनी चाहिए कि आपको सायंकाल से पूर्व नागरिकता बदल लेनी चाहिए। अन्यथा विलम्ब हो सकता है।"

वोरिस ने प्रश्न-भरी दृष्टि में भूदेव की ओर देखा। भूदेव ने सहज स्वभाव ही दिया, "खाना खाकर आप तैयार रहिए। मैं आपके जाने और वहाँ सब प्रकार

के कागज तैयार रखने के लिए कह दूंगा। हमें टाटा भवन जाना पड़ेगा। वहाँ न्यायाधीश के समक्ष शपथ लेनी पड़ेगी।''

जब से विद्वत् परिषद् बनी थी, तब से सब देशों के विद्वानों के हित-अहित का मामला भूमण्डल के विद्वानों की चिन्ता का विषय हो गया था।

रूसादि देशों में जहाँ राज्य सब विषयों के विद्वानों पर नियन्त्रण रखे हुए था, वहाँ विद्वानों की गुप्त सभाएँ बन गई थीं और वे सभाएँ स्वतन्त्र देशों की विद्वत् परिषद् से सहयोग कर रही थीं।

ये सभाएँ अपने-अपने देश के विद्वानों से सम्बन्ध रखने वाली गुप्त बातें विश्व परिषद् के कार्यालय में भेजा करती थीं। इन्हीं से नीति देवी को वोरिस के विषय में ऐसी सूचनाएँ मिलती रहती थीं जो वोरिस को भी नहीं होती थीं।

भोजन के उपरान्त पण्डित भूदेव ने टाटा भवन में दिल्ली विद्वत् परिषद् के कार्यालय से सम्पर्क बनाया और जब वहाँ से हरी झण्डी दिखाई गई तो वह फ्रैड्रिक वोरिस को लेकर टाटा भवन ३४० कक्ष में जा पहुँचा।

जगदीश मित्र उनकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। उसके पास एक न्यायाधीश बैठा था। इनके वहाँ पहुँचते ही जगदीश ने न्यायाधीश का परिचय कराया और कहा, ''आपको इनके समक्ष अपनी बात शपथपूर्वक कहनी पड़ेगी।''

''ठीक है, मैं इसके लिए तैयार हूँ।''

न्यायाधीश ने एक छपा फार्म वोरिस के सामने रख दिया और कहा, ''इसको पढ़ लें और इसपर हस्ताक्षर कर दें।''

फार्म पर भारत सरकार से नागरिकता प्रदान करने की और रूसी शासन से सुरक्षा की प्रार्थना की गई थी। उसमें हस्ताक्षर के साथ याचिका करने वाले का नाम-धाम इत्यादि लिखना था। इस याचिका में अपना देश छोड़ने का कारण नहीं लिखा था। यह न्यायाधीश के प्रश्न पूछने पर इस याचिका के नीचे लिखने के लिए रिक्त स्थान था। उस स्थान पर वोरिस ने इस विषय में लिखाया, ''मेरी पत्नी और उससे मेरे तीन बच्चे हैं। ये इस समय मास्को 'रूसी सोवियत स्टेट' में रहते हैं।

''मैं स्वेच्छा से भारत की नागरिकता के लिए प्रार्थी हूँ। इसमें कारण यह है कि मुझे भारत की नागरिकता में अधिक स्वतन्त्रता प्रतीत होती है। इस स्वतन्त्रता के लिए मैं अपने देश की नागरिकता छोड़कर भारतीय नागरिक बनना चाहता हूँ।

''इसकी स्वीकृति के मिल जाने पर मैं भारत में अथवा किसी अन्य स्वतन्त्र देश में जीविकोपार्जन करने की इच्छा रखता हूँ।

''भारत की नागरिकता मिल जाने पर मैं अपनी पत्नी को भारत आने की प्रेरणा दूंगा। यदि उसने रूस छोड़ना स्वीकार नहीं किया तो मैं उसे तलाक देने का विचार करता हूँ और बच्चों के पालन-पोषण का भार अपने ऊपर लेने के लिए तैयार हूँ।''

इस प्रकार शपथ के उपरान्त वोरिस को दूसरे कमरे में प्रतीक्षा करने के लिए कह दिया गया। भूदेव उसे लेकर भवन के उपाहार-गृह में चला गया।

आधे घण्टे में उसको नागरिकता का प्रमाण-पत्र मिल गया। तव वोरिस अन्तरिक्ष निवास-गृह पर जा वहाँ नीति देवी से अपनी रक्षा के लिए कहने लगा।

नीति देवी ने अपने कार्यालय में वोरिस से इस बात की याचिका ले ली कि उसे भय है कि रूसी शासन उसका अपहरण करेगा। इस कारण प्रार्थी की रक्षा की जाए। उस पर कार्य आरम्भ कर दिया।

एक घण्टे में भूमण्डल के सब देशों में यह समाचार प्रसारित हो गया कि रूस के गुप्तचर-विभाग के फ्रैड्रिक वोरिस ने भारत की नागरिकता के लिए याचिका की थी और यह स्वीकार हो गई है। अतः उसकी सुरक्षा के लिए विश्व विद्वत् परिषद् ने उत्तरदायित्व अपने ऊपर लिया है।

इस समाचार की प्रतिक्रिया यह हुई कि रूस में भारत के दूतावास के मास्को स्थित सदस्यों को उनकी अपनी इमारत में ही बन्दी बना दिया।

इसके प्रतिकार में दिल्ली में तथा भारत के अन्य नगरों में भी रूसी दूतावास से सम्बन्धित सब लोगों को अपने-अपने निवास-गृह के भीतर बन्दी बने रहने की आज्ञा हो गई और दूतावास के चारों ओर सैनिक पहरा बैठा दिया।

इस प्रकार संघर्ष का श्रीगणेश हो गया। भारत सरकार ने राष्ट्रसंघ को लिख दिया कि ये दोनों कार्य दोनों देशों में युद्ध आरम्भ कर सकते हैं। अतः हम राष्ट्रसंघ से आग्रह करते हैं कि वह समय पर बीच-बचाव कर ले अन्यथा युद्ध हो जाएगा। साथ ही यदि अणु बम और उससे युक्त प्रक्षेपणास्त्र रूस की ओर से प्रयोग किए गए तो भारत भी उत्तर में अपना प्रक्षेपणास्त्र प्रयोग करेगा।

पूर्व इसके कि राष्ट्रसंघ किसी प्रकार का आदेश प्रसारित करे, रूस ने ताशकन्द से भारत पर अपना प्रक्षेपणास्त्र छोड़ दिया। यह चीन के प्रक्षेपणास्त्र की भाँति मार्ग में ही अफगानिस्तान के आकाश में विनष्ट कर दिया गया। इस प्रक्षेपणास्त्र की राख अफगानिस्तान के कई गाँवों पर गिरी और उससे उन गाँवों को आग लग गई। समूचे गाँव जलकर समाप्त हो गए।

इस प्रकार अघोषित युद्ध आरम्भ हो गया। अफगानिस्तान ने भारत और रूस दोनों के विरुद्ध राष्ट्रसंघ में याचिका कर दी। उस रात को रूस ने दस से अधिक प्रक्षेपणास्त्र भारत के भिन्न-भिन्न नगरों पर फेंक दिए। इसमें से एक प्रक्षेपणास्त्र नेपाल पर भी गिरा। इसका प्रतिकार हुआ और दिन चढ़ने से पूर्व मास्को से समाचार आया कि उसका अधिकांश भाग जल रहा है जिसमें सरकारी कार्यालय भी हैं।

इस पर तो रूस की ओर से कुछ लेखकों ने अब अपने देश के शासकों और

भारत के शासकों से यह याचिका उपस्थित कर दी कि यह विनाशकारी युद्ध बन्द करें।

उसी समय चीन ने घोषणा कर दी कि राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद् की बैठक ने यह आदेश दिया है कि इस सब दुर्घटना में भारत दोषी है और उस पर स्थल मार्ग से आक्रमण कर भारत पर अधिकार कर लिया जाए। इस घोषणा के पूर्व ही चीन की स्थल सेना भारत सीमा पर आक्रमण करने लगी थी। परम्परागत तोपखाने से आक्रमण आरम्भ किया गया। इसका उत्तर तोपखाने से ही दिया जाने लगा।

अभी राष्ट्रसंघ की ओर से किसी प्रकार की विज्ञप्ति नहीं निकली थी। अब भूमण्डल के सब स्वतन्त्र देशों के विद्वत् मण्डलों से राष्ट्रसंघ और रूस को चेतावनी दे दी कि यदि आक्रामक कार्यवाही जारी रही तो विद्वानों की ओर से उन सब देशों के सरकारी कार्यों का बहिष्कार कर दिया जाएगा जो इस युद्धबन्दी के लिए यत्न नहीं करेंगे।

राष्ट्रसंघ के महासचिव ने यह घोषणा कर दी कि पीकिंग से जो युद्ध की घोषणा की गई है वह राष्ट्रसंघ की ओर से नहीं। भूमण्डल के लोगों को भ्रम में डालने के लिए राष्ट्रसंघ का नाम बीच में लाया गया है।

इस समय चीनी हवाई जहाजों ने भारत सीमा के भीतर बमवारी करनी चाही, परन्तु इसमें सफलता नहीं मिली।

रूस के लेखकों की एक घोषणा लेनिनग्राण्ड से प्रसारित की गई कि रूस में इस समय कोई व्यवस्थित शासन नहीं रहा। केन्द्र के सब कार्यालय विनष्ट हो चुके हैं। स्थानीय राज्य अपने-अपने राज्य में शान्ति-व्यवस्था स्थापित करने के लिए यत्न कर रहे हैं। कारण यह कि रूस के कई राज्यों में सेना ने शासन के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है।

राष्ट्रसंघ की ओर से युद्धबन्दी के लिए किसी प्रकार का आदेश अथवा प्रेरणा नहीं की गई। केवल इतनी घोषणा कर दी कि पीकिंग की युद्ध-घोषणा राष्ट्रसंघ की ओर से नहीं। सुरक्षा परिषद् राष्ट्रसंघ भवन में पिछले तीस घण्टे से बैठी विचार-विमर्श कर रही थी, परन्तु किसी प्रकार की युद्ध रोकने अथवा राष्ट्रसंघ की ओर से युद्ध संचालन की विज्ञप्ति नहीं निकाली जा सकी। परस्पर मतभेद अति तीव्र था।

राष्ट्रसंघ सुरक्षा परिषद् के स्थाई सदस्य इसके विषय में सहमत नहीं थे कि इस संघर्ष में राष्ट्रसंघ क्या भूमिका निभाए ? राष्ट्रसंघ का महासचिव एन० सी० मिन्हा चीन के कैनटन क्षेत्र का नागरिक था। इसका पिता पैंतीस वर्ष पूर्व चीनी गृह-युद्ध में पीकिंग के विरुद्ध लड़ता-लड़ता मारा गया था। अतः पीकिंग से समर्थित महासचिव चीन के ही विरुद्ध हो रहा था और यह उसके प्रयत्नों का ही फल था कि चीन के आक्रमण का उत्तरदायित्व राष्ट्रसंघ ने लेने से इन्कार कर दिया।

इस विज्ञप्ति पर विचार करते हुए चीन के प्रतिनिधि ने यह कहा कि उसने

राष्ट्रसंघ के बहु-संख्यक सदस्यों से यह मौखिक स्वीकृति ले ली थी कि यदि परम्परागत शस्त्रास्त्रों से युद्ध किया जाए तो राष्ट्रसंघ पीकिंग का समर्थन करेगा। इस वक्तव्य का सुरक्षा परिषद् में घोर विरोध किया गया। पाकिस्तान और अरब गणराज्य के अतिरिक्त सब देशों ने कहा कि परिषद् के बाहर वार्त्तालाप को परिषद् में उपस्थित नहीं किया जा सकता।

कई घण्टे तक सुरक्षा परिषद् में इसी बात पर वाद-विवाद होता रहा कि पीकिंग के प्रतिनिधि ने सुरक्षा परिषद् के अन्य सदस्यों से बातचीत की भी थी अथवा नहीं ? इस पर अमेरिका के प्रतिनिधि ने कहा, "अभी मास्को जला नहीं था कि रात के भोजनोपरान्त मद्य पीते हुए चीनी प्रतिनिधि ने कुछ परम्परागत शस्त्रास्त्रों से युद्ध के विषय में बात कही थी, परन्तु मैं उस रात कुछ अधिक पी गया था और मुझे अब स्मरण नहीं कि मैंने क्या उत्तर दिया था।

"यदि कुछ कहा था तो वह मेरी सरकार की सम्मति नहीं हो सकती। वह मेरी निजी सम्मति ही हो सकती है।"

पाकिस्तान और अरब गणराज्य के प्रतिनिधि मौन थे। जब कई घण्टे के इस व्यर्थ के वाद-विवाद का कुछ निष्कर्ष नहीं निकला तो विचारणीय विषय बदल दिया गया। प्रश्न महासचिव ने ही उपस्थित किया कि अब क्या किया जाए ?

इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि का कहना था, "पीकिंग को कहा जाए कि चीन युद्ध बन्द कर दें और भारत उसकी इस आक्रामक कार्यवाही का प्रतिकार न ले।"

चीन के प्रतिनिधि ने कहा, "भारत और चीन दोनों को ही कहा जाए।"

"परन्तु भारत ने तो युद्ध की घोषणा की नहीं।"

"वह युद्ध तो कर रहा है।"

"यह तो पीकिंग के आक्रमण के उत्तर में है।"

"उत्तर में हो अथवा प्रश्न में हो, युद्ध दोनों ओर से हो रहा है। अतः दोनों को आदेश जारी किया जाए।"

इस विवाद पर दस घण्टे तक वार्त्तालाप होता रहा। इस विवाद को अनिर्णीत छोड़ दिया गया। किसी ने फिर प्रश्न उपस्थित कर दिया, "भारत ने मास्को के दस लाख निर्दोष नागरिकों की हत्या कर दी है। इस कारण भारत से स्पष्टीकरण माँगा जाए।"

सुरक्षा परिषद् के एक अस्थायी सदस्य अर्जेण्टाइना के प्रतिनिधि ने कहा, "रूस ने जो दस से ऊपर प्रक्षेपणास्त्र भारत पर छोड़े थे, उसकी सफाई रूस से माँगनी चाहिए।"

"परन्तु रूस में तो कोई उत्तरदाई व्यक्ति है नहीं। इस कारण रूस में किससे क्या पूछें ?"

रूस के प्रतिनिधि ने बताया, "रूस के कई राज्यों में नागरिक तथा सैनिकों

में परस्पर गृह-युद्ध हो रहा है। इस कारण रूस में कोई सरकार नहीं है और किसी से उत्तर नहीं माँगा जा सकता।"

अर्जेण्टाइना के प्रतिनिधि का प्रश्न था, "तो यहाँ आप किसका प्रातिनिध्य कर रहे हैं?"

"मैं तो उस सरकार का प्रतिनिधि हूँ जो इस परिषद् की सदस्य थी। और सुरक्षा परिषद् ने मुझे उस सरकार का प्रतिनिधि मान यहाँ बैठने की स्वीकृति दी हुई है।"

"परन्तु जब तुम्हारी सरकार ही नहीं तो तुम उसके प्रतिनिधि भी नहीं हो सकते।"

तीन घण्टे के उपरान्त सुरक्षा-परिषद् बैठी तो महासचिव ने सूचना दी, "इस समय भारत-चीन की पूर्ण सीमा पर और भारत-पाकिस्तान की सीमा पर घोर युद्ध चल रहा है। पाकिस्तान, चीन मित्र राष्ट्र हैं और दोनों की तीन मिलियन सेना युद्ध-कार्य में संलग्न है। भारत की ओर से भी इतने ही सैनिक होने चाहिए, परन्तु क्योंकि भारत आगे नहीं बढ़ रहा; इस कारण उसके हताहतों की सूचना नहीं है और आक्रामक देशों के एक लाख से ऊपर हताहत हो चुके हैं।"

महासचिव के वक्तव्य को बन्द करते हुए इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि ने कहा, "मेरी सरकार ने यह आदेश भेजा है कि हमारे देश के डॉक्टरों, इंजीनियरों, वैज्ञानिकों और तकनीकी के विशेषज्ञों ने सरकारी कार्य बन्द कर दिया है और देश में सब प्रकार का कार्य ठप्प हो गया है। यद्यपि मजदूर वर्ग काम पर गए हैं, परन्तु उच्च श्रेणी के कर्मचारी किसी भी उद्योग अथवा व्यवसाय में उपस्थित न होने से कार्य व्यावहारिक रूप में बन्द है।

"ये बुद्धिजीवी लोग रूस पर आक्रमण की माँग कर रहे हैं। मेरी सरकार चाहती है कि युद्ध-बन्दी की आज्ञा तुरन्त कर दी जाए, अन्यथा इंग्लैण्ड राष्ट्रसंघ की सदस्यता से त्याग-पत्र पर विचार करेगा।"

इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि के इस वक्तव्य के उपरान्त रूस और चीन के अतिरिक्त अन्य सब स्थायी सदस्यों ने इंग्लैण्ड के वक्तव्य का समर्थन कर दिया। वास्तव में उन देशों में विद्वान् वर्ग ने या तो अपनी-अपनी सरकारों का बहिष्कार कर दिया था अथवा बहिष्कार करने की धमकी दे दी थी।

इस समय अर्जेण्टाइना के प्रतिनिधि ने प्रस्ताव कर दिया, "सुरक्षा-परिषद् रूस, चीन को यह आदेश देता है कि भारत से आक्रामक कार्यवाही रोक दी जाए। यदि ये देश राष्ट्रसंघ का कहा न मानें तो राष्ट्रसंघ अपने सदस्यों से आग्रह करता है कि चीन और रूस की सरकारों को भारत के विरुद्ध आक्रामक कार्यवाही को रोकने का भरसक यत्न करें।"

इस प्रस्ताव पर रूसी प्रतिनिधि ने चीन और भारत की चालीस वर्ष पूर्व के

विवाद की कहानी आरम्भ कर दी। आधे घण्टे के वक्तव्य पर रूस के प्रतिनिधि ने बात समाप्त नहीं की तो इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि ने उठकर कहा, "मैं अपनी सरकार को सूचित कर रहा हूँ कि सुरक्षा-परिषद् अपना कर्तव्यपालन करने में टाल-मटोल कर रही है।"

महासचिव का प्रश्न था, "इससे क्या होगा ?"

"होगा यह कि इंग्लैण्ड राष्ट्रसंघ से स्वतन्त्र हो अपने हितों की रक्षा का प्रबन्ध करेगा।"

"वे हित क्या हैं ?" महासचिव ने पूछ लिया।

इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि ने कहा, "यह मैं नहीं बता सकता। यह तो मेरी सरकार घोषित करेगी। मेरे कथन का केवल मात्र इतना अर्थ है कि राष्ट्रसंघ अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर रहा। इस कर्तव्यहीनता में इंग्लैण्ड सम्मिलित नहीं हो सकता।"

रूस का प्रतिनिधि अभी भी खड़ा अपने वक्तव्य को जारी रखने की इच्छा कर रहा था। इस समय अमेरिका और फ्रांस के प्रतिनिधि भी उठ खड़े हुए और सुरक्षा-परिषद् की बैठक भंग होने लगी तो महासचिव ने कहा, "मैं प्रस्ताव पर विचार का आदेश देता हूँ।"

रूस के प्रतिनिधि ने कहा, "मैं यही तो कर रहा हूँ। मेरा वक्तव्य अभी समाप्त नहीं हुआ। जो लोग इसको सुनना नहीं चाहते, वे चैम्बर के बाहर प्रतीक्षा कर सकते हैं।"

इस पर तीन प्रतिनिधियों के अतिरिक्त अन्य सब सदस्य उठकर कमरे से बाहर निकल गए।

तब महासचिव ने कहा, "अब 'कोरम' नहीं रहा। इस कारण सभा स्थगित की जाती है। सभा कल पुनः दिन के दस बजे होगी।"

रूस और चीन यही तो चाहते थे।

उसी दिन पेरिस में मित्र राष्ट्रसंघ का निर्माण किया गया। इसमें सब नाटो संधि के लोग और एशिया के प्रजातन्त्र देश सम्मिलित हो गए। इसमें रूस तथा चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा हो गई। परन्तु युद्ध भारत-चीन में एक ओर तथा भारत-पाकिस्तान में दूसरी ओर होता रहा। अन्य कोई देश युद्ध में सम्मिलित नहीं हुआ।

अगले दिन बहुत प्रातःकाल चीन की ओर से अन्तरिक्ष निवास-गृह की ओर एक प्रक्षेपणास्त्र फेंका गया और पूर्व की भाँति इसे चीन की भूमि पर ही विनष्ट कर दिया गया। भारत ने इसके प्रतिकार में चीन के दस नगरों को अपनी अति सूक्ष्म विद्युत् तरंगों द्वारा विनष्ट कर दिया। इससे लगभग दस करोड़ से ऊपर लोग पाँच मिनट में जल-भुनकर राख हो गए।

: ७ :

आणविक शस्त्रास्त्रों का प्रयोग बन्द हो गया तो युद्ध लम्बा होने लगा। प्रतिदिन सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक दोनों ओर के सैनिकों की हत्या होती रहती थी। सागर की तरंगों की भाँति चीनी सैनिक भारत की ओर बढ़ते थे और किसी सुदृढ़ चट्टान से टकरा कर सागर-तरंगों के छितरा जाने की भाँति सैनिकों के शवों के ढेर-के-ढेर सीमाओं पर लगने लगे थे। इतने अधिक शवों के एकत्रित हो जाने पर और उनके वहाँ से न उठाए जा सकने के कारण बदबू और रोगों के कीटाणु फैलने लगे।

इस भय की बात को देख भारत ने अपनी अति सूक्ष्म शक्ति-तरंगों से इनको आग लगा दी। यह आग भी अति भयंकर हो गई। चीन-पाकिस्तान की भारत से लगने वाली पूर्ण सीमा से मीलों ऊँची ऐसी लपटें उठने लगीं जो सौ-सौ मील के अन्तर पर दिखाई देने लगीं।

एक मास के युद्ध के उपरान्त सूचना आई, कि चीन के प्रधानमन्त्री की किसी ने हत्या कर दी है। इस समाचार पर सीमाओं पर युद्ध कर रहे सेनाध्यक्षों ने अपनी ओर से युद्ध-बन्दी की घोषणा कर दी।

इस पूर्ण प्रक्रिया में अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्-परिषद् ने एक मुख्य भूमिका निभाई थी। रूस से प्रथम आक्रामक कार्य मास्को स्थित भारतीय दूतावास के घटकों को बन्दी बनाने के दिन से ही नीति देवी जो अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत् परिषद् की महासचिव थी, का सम्पर्क भूमण्डल के सब देशों के विद्वानों से स्थापित हो गया था। स्वतन्त्र देशों के विद्वान् तो इस बात के लिए सहमत हो गए थे कि वे अपने-अपने देश की सरकार पर बल डालकर युद्ध में विद्वत् परिषद् का पक्ष लें अथवा कम-से-कम भारत का विरोध करना छोड़ दें। उन देशों के विद्वान् जहाँ नेताओं की और सैनिकों की तानाशाही प्रचलित थी, वहाँ के विद्वान् भी इस बात के लिए तैयार हो गए कि सैनिक तानाशाही के समाप्त होते ही वह राज्य की बागडोर अपने हाथ में ले लेंगे। उन्होंने ऐसा किया भी। रूस में युद्ध आरम्भ होने से मास्को जला तो लेखकों की सभा ने घोषित कर दिया कि रूस में जनता और सेना का परस्पर गृह-युद्ध छिड़ गया है। जनता का नेतृत्व लेखक और वैज्ञानिक कर रहे थे और सेना के पास शस्त्रास्त्र प्रचुर मात्रा में थे।

इस पर भी सैनिक-सामान बनाने वाले कारखानों में हड़ताल के कारण प्रजा का पक्ष प्रबल रहा। इसका एक लेखक सक्लारोव भागकर स्वीडन चला गया और वहाँ से हवाई जहाज में बॉन तथा वहाँ से अन्तरिक्ष बस द्वारा अन्तरिक्ष निवास-गृह में नीति से मिलने जा पहुँचा। उसने नीति देवी से कहा, "मैं लेनिनग्राण्ड के लेखकों की सभा का सदस्य हूँ। वहाँ से एक सन्देश लाया हूँ।"

नीति देवी ने वह सन्देश माँगा तो सक्लारोव ने अपनी जेब से रूसी भाषा में

लिखे एक पत्र को उसके सामने रख दिया ।

पत्र में लिखा था, "जनता शस्त्र-विहीन है । इसके लिए शस्त्र चाहिए ।"

नीति ने कहा, "समस्या शस्त्रास्त्र की नहीं । समस्या उनके सुरक्षित वहाँ पहुँचाने की है । वही शस्त्रास्त्र सैनिकों के हाथ लग गए तो नागरिकों की हत्या हो जाएगी ।"

"तो फिर क्या किया जाए ?"

"आपकी केन्द्रीय तानाशाही समाप्त हो गई है । इस कारण सब राज्यों में विद्रोही सरकारें बन जाएँ । तदनन्तर सैनिक उन राज्यों के अधीन हो जाएँगे । तब हम उन राज्यों की सहायता की बात कर सकेंगे ।"

इस वार्तालाप का ही फल हुआ कि इसके आधे से अधिक राज्य में राज्यों ने केन्द्रीय सरकार से सम्बन्ध-विच्छेद कर लिये । तदनन्तर उन राज्यों को जिनकी सीमा स्वीडन के साथ लगती थी, शस्त्रास्त्र पहुँचाए जाने लगे ।

पुनः सब राज्यों के प्रतिनिधि अन्तरिक्ष निवास-गृह में एकत्रित हुए और चीन में भी विद्रोह की योजना बन गई । इस विद्रोह का प्रथम प्रभाव था कि वहाँ का प्रधानमन्त्री मार डाला गया ।

अमेरिका ने सुरक्षा-परिषद् छोड़ी तो अन्तरिक्ष भवन को पृथ्वी पर जासूसी करने का केन्द्र बना लिया ।

इस समय रूसी लेखक मण्डल के प्रयास से रूस में केन्द्रीय सरकार बनाने का प्रयास आरम्भ हो गया । कीव में सोवियत संघ के नागरिकों की एक बैठक बुलाई गई । भारत ने युद्ध बन्द करने का प्रेरणात्मक प्रस्ताव कर दिया ।

वास्तव में पाकिस्तान तो भारत की हत्या हो जाने पर उसके शव की चीर-फाड़ की अभिलाषा रखता था । परन्तु ऐसा नहीं हुआ । साथ ही सीमा पर ही दो लाख से अधिक पाकिस्तानी सैनिकों के मारे जाने पर पाकिस्तान का युद्ध-सम्बन्धी ज्वार शान्त हो गया था और उसकी सीमा पर स्वयमेव युद्ध बन्द हो गया था ।

केवल चीन की सेना सागर की लहरों की भाँति भारत-सीमा की ओर बढ़ती रही और वहाँ टक्कर खा-खाकर शान्त होती रही । जब सीमा पर प्रधानमन्त्री की हत्या का समाचार पहुँचा, तो सेनाध्यक्षों ने सेना को वापस जाने की आज्ञा दे दी ।

इस प्रकार डेढ़ मास के घोर संग्राम के उपरान्त युद्ध बन्द हुआ तो युद्ध में सम्मिलित सब देश अपनी-अपनी हानि का अनुमान लगाने लगे । इस युद्ध में लाभ तो किसी को नहीं हुआ । किसी भी देश की एक इंच-भर भूमि भी इधर से उधर नहीं हुई । हाँ, पद्मों रुपयों की युद्ध-सामग्री विनष्ट हो गई । एक अरब से ऊपर लोग मारे गए और एक बार तो भूमण्डल पर भारी अव्यवस्था उत्पन्न हो गई । सब देशों के राज्यों की सामर्थ्य दुर्बल पड़ गई और चोर, डाकू, हत्यारे नगरों में दिन-दहाड़े

घूमने और उपद्रव मचाने लगे।

यद्यपि भारत में राज्य की व्यवस्था भूमण्डल के अन्य सब देशों से सुदृढ़ थी; इस पर भी पाकिस्तान और चीन से आवश्यकताओं से पीड़ित व्यक्ति भारत में घुस आते थे, उससे यहाँ पर चोरियाँ और डाके पड़ने लगते थे।

: ८ :

कलकत्ता में चितरंजन ऐवेन्यू में एक सात-मंजिले मकान पर कई सौ नक्सलियों ने सशस्त्र आक्रमण कर दिया। रात के दो बजे का समय था। मकार पर चारों ओर से गोली-वर्षा होने लगी। बम फटने लगे। मकान में रहने वाली ने नक्सलियों का विरोध किया और घमासान लड़ाई होने लगी। इस समय नीचे की मंजिल पर किसी ने अग्नि-बम फेंक कर आग लगा दी। मकान धू-धू कर जलने लगा।

मकान की सबसे ऊपर की मंजिल के एक सोने के कमरे में एक दम्पती नव-विवाह के रसास्वादन के उपरान्त गहरी नींद सोया हुआ था कि पतिदेव मकान के बाहर बम फटने के शब्द से जाग उठा और चीनी-चीनी कहता हुआ तथा बड़बड़ाता हुआ पलंग से उठ अवस्त्र ही कमरे से बाहर भागने लगा तो पत्नी ने जो सुखमय नींद लेकर जाग, सोए हुए पति के मुख पर देख-देख उल्लास अनुभव कर रही थी, अपने पति को इस प्रकार भागते देख बाँह से पकड़ रोकते हुए पूछने लगी, "किधर जा रहे हो?"

पति को अपनी अवस्त्र अवस्था का ज्ञान हुआ तो रुक गया और अपने चारों ओर सब शान्ति तथा प्रभात की मन्द-मन्द समीर कमरे की खिड़की में से आती अनुभव कर भौंचक्का हो पत्नी का मुख देखता रह गया। उसे अपनी सामान्य स्थिति को समझने में कुछ देर लगी। वह पलंग पर बैठ सिर को पकड़े सुध-बुध लौटने की प्रतीक्षा कर रहा था।

एकाएक उसने पत्नी की ओर देखकर कहा, "सर्वनाश! कुछ विनष्ट हो गया है।"

पत्नी समझ नहीं सकी कि पति महोदय क्या कह रहे हैं? उसने कहा, "विनष्ट तो कुछ नहीं हुआ। न ही होने वाला था। हाँ, आप इस अवस्था में बाहर जाते तो पड़ोसी आपको पागलखाने भेजने का प्रबन्ध करने लगते। भला हुआ था कि आप 'चीनी-चीनी' कहते हुए भाग खड़े हुए थे?"

पति था सतीन्द्र मोहन भट्टाचार्य। बंगला भाषा का विख्यात लेखक। वह पत्नी के प्रश्न पर विचार कर बोला, "सर्वनाश!"

"क्या हो गया है? यहाँ तो आप, मैं और यह सब-कुछ वैसा-का-वैसा ही उपस्थित है, जैसा रात सोने के समय था।"

"यह नहीं प्रिये! मेरा स्वप्न विनष्ट हो गया। स्वप्न में बना भवन धराशायी

हो गया है। गगन पार में विचरने वाले भवन विध्वंस हो गए हैं। टाँग पकड़कर स्वर्ग से नरक में लाकर पटक दिया गया हूँ।"

पत्नी सुमिता देवी लेखिका नहीं थी, परन्तु जानती थी कि उसके पतिदेव कुछ ख्याति प्राप्त लेखक हैं। वह मुस्कराई और कहने लगी, "आप वस्त्र पहन लीजिए और फिर अपने स्वप्न को साकार करने के लिए लेखनी और कागज ले, मेज पर बैठ जाइए। आपको इस अवस्था में देख तो मैं आपसे आलिंगन करने को आतुर हो रही हूँ।"

□□□

अन्तरिक्ष में

'भू-आकर्षण'

भू-आकर्षण रहित चैम्बर बन जाने पर मनुष्य उसमें बैठ पौराणिक देवताओं की भाँति चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्रों का भ्रमण करने लगेगा। इस प्रकार उसे भूमि के बन्दी-गृह से मुक्ति मिल जाएगी।

इस भू-आकर्षण रहित चैम्बर की विशेषता यह होगी कि यह अत्यन्त ही सरल तथा बनाने में सुगम होगा और साधारण मनुष्य भी इसे उसी प्रकार रख सकेगा जैसे स्कूटर, मोटर रखता है।

परन्तु तब······तब क्या होगा ??

प्रथम परिच्छेद

दिल्ली स्थित फ्रेण्ड्स-कॉलोनी की विशाल कोठी के ड्राइंग-रूम में प्रविष्ट होते हुए एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने वहाँ बैठी प्रौढ़ावस्था की महिला से पूछा, "बेटा ! क्या सोम का पिता आ गया है ?"

"नहीं पिताजी ! वे अभी नहीं आए हैं। हवाईपत्तन से उनका फोन आया है कि हवाई जहाज एक घण्टा विलम्ब से आ रहा है। उन्होंने कहा है कि वे सोम को लेकर ही आएंगे।"

वृद्ध वहाँ रखी एक कुर्सी पर बैठ गया और बोला, "तब तो काफी विलम्ब हो जाएगा। तुम मुझे अल्पाहार करा दो, मुझे भूख लग रही है।"

"हाँ, समय काफी हो गया है।" यह कहते हुए उस महिला ने अपने सोफे के बाईं ओर लगे बिजली के स्विच को दबाया तो दूर कहीं कोठी के किसी कोने में घण्टी की आवाज सुनाई दी। तभी उस ओर से एक स्वर सुनाई दिया जोकि ड्राइंग-रूम के द्वार पर लगे स्पीकर से आ रहा था, "जी, हाजिर हूँ।"

महिला ने भी उसी स्पीकर की ओर मुख किया और बोली, 'पिताजी के लिए नाश्ता भेज दो।"

"जी, अभी भेजता हूँ।" दूसरी ओर से उत्तर सुनाई दिया।

वृद्ध व्यक्ति मुस्कराता हुआ उस महिला की ओर देख रहा था। महिला को इसमें किसी प्रकार की विलक्षणता अनुभव नहीं हुई। वृद्ध पुरुष को इस प्रकार मुस्कराते देखने की वह अभ्यस्त हो गई थी। इसके उपरान्त वह महिला फिर उसी पुस्तक को पढ़ने में लीन हो गई, जिसे वह वृद्ध के वहाँ पहुँचने से पूर्व पढ़ रही थी।

अल्पाहार आने में अधिक विलम्ब नहीं हुआ। दो-तीन मिनट के भीतर ही बराबर वाली दीवार पर प्लास्टिक का तख्त खुला और उससे दीवार में एक खिड़की-सी बन गई। फिर उस खिड़की से लगभग आधा मीटर की तख्ती बाहर निकल आई। उस तख्ती पर ट्रे में एक प्याला कॉफी, दो टोस्ट तथा एक डली कलाकन्द की रखी हुई थी।

महिला ने पुस्तक को सामने रखे स्टूल पर रखा और उठकर अल्पाहार की ट्रे लाकर बाबा के सामने एक तिपाई पर रख दी। वृद्ध ने कॉफी में टोस्ट भिगो-भिगोकर अपना अल्पाहार आरम्भ किया। महिला पुनः पुस्तक पढ़ने में लीन हो

गई। एक-दो ग्रास टोस्ट के तथा एक-दो घूंट कॉफी के पीने के बाद वृद्ध ने फिर पूछा, "सोम की पत्नी भी आ रही है क्या ?"

"जी हाँ, सोम ने लिखा है कि उसके आग्रह पर ही उसको आना पड़ रहा है अन्यथा उसको तो अभी अवकाश ही नहीं था।"

"कब तक पहुँचने की सम्भावना है ?"

"सम्भवतया आधे घण्टे तक तो पहुँच ही जाना चाहिए।"

महिला जब वृद्ध से बात कर रही थी तो वृद्ध को यह अनुभव हो रहा था कि उसकी बातों से महिला की पढ़ाई में विघ्न-सा पड़ रहा है। वृद्ध जानना चाहता था कि वह ऐसी कौन-सी पुस्तक है जिस पर वह महिला तल्लीन होना चाह रही है। उसने पूछ ही लिया, "कौन-सी पुस्तक है ? लगता है बड़ी रोचक है।"

महिला ने इससे यही समझा कि वृद्ध को बात करने की समाई हुई है। इसलिए उसने, जिस पृष्ठ को वह पढ़ रही थी, उस पर बुकमार्क रखा और पुस्तक बन्द कर तिपाई पर रख दी। फिर कहने लगी, "हाँ, बाबा ! बहुत रोचक है। कल जब से इसे पढ़ना प्रारम्भ किया था, तब से अब तक इसको छोड़ने का मन ही नहीं कर रहा है।"

"कौन-सी पुस्तक है ?"

"विज्ञान की उपलब्धियाँ।"

"किसकी लिखी है ?"

"कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉक्टर एस० डी० गर्ग की लिखी हुई है।"

"अच्छा, यह बात है। अपने ही पुत्र की लिखी पुस्तक पढ़ रही हो ?"

"हाँ, बाबा ! बड़ी रोचक है।"

"किस विषय पर है ?"

"विषय तो उसने अनेक चुने हैं। किन्तु मैं उसके अपने विषय पर लिखे परिच्छेद को ही पढ़ रही थी।"

"उस पर क्या लिखा है उसने ?"

"उसका अपने अन्वेषण का विषय है 'भू-आकर्षण'। इस विषय पर उसने जो कार्य किया है, उसकी भूमिका पढ़ रही थी।"

"भू-आकर्षण पर क्या कार्य किया है उसने ?"

"उसने भू-आकर्षण रहित एक चैम्बर बनाया है।"

"उससे क्या होगा ?"

"उसका कहना है इससे मानव को भूमि के बन्दीगृह से मुक्ति मिल जाएगी।"

"किन्तु उससे भी क्या होगा ?"

"उसका कथन है कि तब मानव प्राचीनकाल के देवताओं का पद प्राप्त कर

लेगा। तब वह देवताओं की भाँति चन्द्रमा तथा अन्य नक्षत्रों का भ्रमण करने लगेगा।"

"प्रयास तो सराहनीय है। परन्तु यह सम्भव नहीं है। यदि देवताओं की ही भाँति उसने अपने अन्वेषण के रहस्य को गुप्त रखा तो तब तो कुछ काल के लिए यह सब चल जाएगा। किन्तु यदि वर्तमान युग की प्रथानुसार उसने अपने रहस्य को प्रकट कर दिया तो मानव प्राणी परस्पर लड़ पड़ेंगे और देवत्व के लिए तब तक जितना भी प्रयत्न किया गया होगा, युद्ध की ज्वाला उसको भस्मसात् कर देगी।"

"मैं भी कुछ इसी प्रकार सोच रही थी। मैंने सोम के पिता को भी अपने मन की यह बात बताई थी। परन्तु उनका विचार भिन्न था। वे कहने लगे कि ज्यों ही मनुष्य देवताओं की भाँति लोक-लोकान्तर का भ्रमण आरम्भ कर देगा, उसकी बुद्धि का अधिक विकास होगा और तब वह देवताओं की ही भाँति परस्पर सहयोगपूर्ण जीवन बिताने लगेगा।"

बाबा ने टोस्ट को मुख में डाला और कॉफी के घूँट से उसको गले के नीचे उतारकर कहने लगा, "यह बहुत कठिन है। कदाचित् असम्भव भी है। देवता ही क्या अपने उस विकास को स्थायी रख पाए थे? सब प्रकार का ज्ञान होते हुए भी वे अब कहाँ हैं इस संसार में? कहाँ गया उनका वह ज्ञान-विज्ञान। उनकी सन्तान तो मानवों से भी हीन हो गई है।"

"हाँ पिताजी! समझती तो मैं भी कुछ-कुछ ऐसा ही हूँ। परन्तु सोम के पिताजी कहते थे कि इसके लिए कुछ भौगोलिक परिस्थितियाँ कारण हैं। देवताओं का निवास कुछ ऐसे स्थान पर था कि प्रति छब्बीस हजार वर्ष में वहाँ पर एक बार प्रलय अवश्य आती है। तब उनके द्वारा आविष्कृत किया हुआ सब-कुछ ही नष्ट हो जाया करता है।"

"यह तो उसका कहना ठीक है। परन्तु प्रत्येक शीतकाल आने से पूर्व वे ध्रुव के समीप से चलकर भूमध्य रेखा की ओर प्रव्रजन कर लिया करते थे। किन्तु उस बार उन्होंने ऐसा नहीं किया तो उसका परिणाम यह हुआ कि उनके साथ ही उनकी विद्या भी विलुप्त हो गई।"

दोनों में इस प्रकार बात हो रही थी कि तभी बाहर मोटर का हॉर्न सुनाई दिया। महिला लपककर उठी और ड्राइंग-रूम के बाहर की ओर भागी। जाती-जाती कह गई, "वे आ गए प्रतीत होते हैं।"

वृद्ध ने भी अल्पाहार छोड़ दिया और खड़ा होकर द्वार की ओर देखने लगा। कुछ क्षणोपरान्त उसको चार व्यक्ति भीतर आते दिखाई दिए। आगे-आगे वह महिला थी, जिससे अभी तक वृद्ध बात कर रहा था। वह एक युवती को लिये हुए आ रही थी। उसका पहरावा अमेरिकन युवतियों का-सा था। सिर पर कुछ नहीं रखा था। उसके सिर के बाल कटे हुए थे। उसने स्कर्ट पहिना हुआ था। घुटनों के

नीचे नंगी और फिर सैंडल । उनके पीछे प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति एक युवक को लिये हुए ड्राइंग-रूम में प्रविष्ट हुआ ।

युवक ने बाबा के चरण स्पर्श किए तो बाबा ने उसको अपनी बाँहों में भरकर गले से लगाया । उसने युवक की पीठ थपथपाई और फिर पूछने लगा, "तो यह है तुम्हारी बहू ?"

"हाँ बाबा ! यह है लिसा गर्ग । यह एम० एस-सी० है । इस समय कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में प्राणि-शास्त्र की प्राध्यापिका है ।" युवक अर्थात् सोम ने यह परिचय अंग्रेजी में ही दिया था ।

अपना परिचय सुनकर लिसा भी सोम की ही भाँति बाबा के चरण स्पर्श करने के लिए झुकने लगी थी तो बाबा बोले, "इस कार्य के लिए तुम्हारी सास है । उसके चरण स्पर्श कर लो ।" फिर उसको आशीष देता हुआ बोला, "बेटी ! सौ वर्ष तक सौभाग्यवती रहकर धन-धान्य तथा पुत्र-पौत्रों का सुख भोगो ।"

युवती ने उत्तर में कहा, "बहुत धन्यवाद ।" उसका उत्तर विशुद्ध हिन्दी में था ।

उसकी हिन्दी सुन आश्चर्यचकित बाबा के मुख से निकला, "ओह ! तुम तो शुद्ध हिन्दी बोल रही हो !"

सोम कहने लगा, "बाबा ! यह हिन्दी की पण्डिता है ।"

"कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में हिन्दी भी पढ़ाई जाती है ?"

"विश्वविद्यालय में तो नहीं पढ़ाई जाती, इसने घर पर अध्यापक रखकर हिन्दी पढ़ी है ।"

"वहाँ हिन्दी पढ़ाने वाले अध्यापक मिल जाते हैं ?"

"हाँ, मिल जाते हैं । इसको जो अध्यापक मिला, वह कुशल था । दो वर्ष में ही उसने इसको रामचरितमानस का अध्ययन करा दिया था ।"

तब तक सब लोग ड्राइंग-रूम में रखे सोफों पर बैठ गए थे । सोम की पत्नी अपने श्वसुर मंगलानन्द और सास गार्गीदेवी के मध्य बैठी थी । सोम को बाबा ने अपने पास बैठा लिया था । बाबा ने उससे पूछा, "पहले स्नानादि करोगे अथवा कि अल्पाहार ?"

"बाबा ! स्नान तो हम कलकत्ता हवाईपत्तन पर कर आए थे, अब अल्पाहार करेंगे ।"

यह सुन सोम की माँ ने पुनः उस घण्टी को बजाया जिसे बजाकर उसने बाबा के लिए पहले अल्पाहार मँगाया था । स्पीकर की ओर से वही स्वर सुनाई दिया, "जी, हाजिर हूँ ।"

गार्गी ने स्पीकर की ओर मुख कर कह दिया, "अल्पाहार लगा दो ।"

"जी लगा दिया है ।" स्पीकर से स्वर सुनाई दिया ।

वे लोग ड्राइंग-रूम से उठकर डाइनिंग-रूम की ओर चल दिए।

डाइनिंग हॉल में दो व्यक्ति और बैठे थे। ये थे सोम के बड़े भाई और भाभी। वे वहाँ पहले ही पहुँचकर बैठ गए थे। उन्हें इस प्रकार बैठे देख बाबा के मुख से निकल गया, "तुम दोनों, यहाँ पर इसकी प्रतीक्षा कर रहे हो ?"

"बाबा ! हमें तो सोम के आने की कोई सूचना ही नहीं थी ?"

उसके पिता मंगलानन्द ने बैठते हुए कहा, "कल सायंकाल ही तो सूचना आई थी कि सोम बहू को लेकर आ रहा है। ये दोनों पति-पत्नी रात पिक्चर देखकर बहुत विलम्ब से लौटे थे और प्रातःकाल जब मैं सोम को लेने हवाईपत्तन को जा रहा था तब तक ये लोग गहरी नींद में सो रहे थे। इनको सूचना देता भी तो कब ?"

बड़े लड़के परमानन्द की पत्नी सावित्री बोली, "प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त हो हम जब अल्पाहार के लिए आए तो बैयरा ने बताया कि भैया और बहू आ रहे हैं। तब हमने यही उचित समझा कि अब उनकी प्रतीक्षा यहीं पर की जाए। मैं तो सोच रही थी कि कहीं इन लोगों का आना हमसे गुप्त न रखा गया हो। इस कारण हम खिन्न और रूठे हुए से यहाँ बैठे थे।"

यह सुन सबको हँसी आ गई। लिसा सावित्री की बगल में रखी कुर्सी पर बैठी। बैठते हुए बोली, "आपका रूठना उचित ही है। इसके लिए मैं आपके समीप बैठकर आपसे क्षमायाचना करने आई हूँ।"

"बहू ! तुमने तो आते ही अपने श्वसुर की ओर से बोलने का वकालतनामा हथिया लिया है ?" परमानन्द ने चुटकी लेते हुए कहा।

"पिताजी ! आते ही नहीं, उससे भी पूर्व। जब मेरे अपने पति के घर आने पर माताजी ने यहाँ से मेरे लिए लॉकेट भेजा था, यह अधिकार तो मैंने पहले ही हथिया लिया था।"

सावित्री के मुख से निकल गया, "ओह ! परन्तु बहू ! तुम तो बहुत ही शुद्ध हिन्दी बोलती हो।"

"जी, वह सब आपके देवर की कृपा का फल है। विवाहोपरान्त इन्होंने मेरे मस्तिष्क में यह बैठाने का यत्न किया कि हिन्दी भाषा और उसकी देवनागरी लिपि नितान्त वैज्ञानिक है। मैंने दोनों को सीखना आरम्भ कर दिया। दो वर्ष की अवधि में मैंने इस ओर अच्छी प्रगति की है। अब ये मुझे एक अन्य भाषा पढ़ा रहे हैं।"

अन्य भाषा का नाम सुनकर गार्गी को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, "वह कौन-सी भाषा है ?"

"वह है वेद की भाषा। इनका कहना है कि दो वर्ष की अवधि में उसको भी मैं भलीभाँति हृदयंगम कर लूँगी।"

"परन्तु सोम !" बाबा विश्वेश्वरानन्द ने बीच में ही कहा, "तुम तो अभी कह

रहे थे कि कोई अध्यापक रखा था ?"

"हाँ बाबा ! इसने इस कार्य के लिए मुझे ही उपयुक्त अध्यापक समझा था।"

"और वेद-भाषा भी तुम ही पढ़ाते हो ?"

"जी बाबा !"

"तुमने वह कब और कहाँ पढ़ी है ?"

"कहीं पढ़ी नहीं बाबा। अपने स्वाध्याय और कोषों की सहायता से सीखी है और अब हम दोनों परस्पर मिलकर उसको समझने का यत्न करते हैं।"

परमानन्द बोला, "तो तुम बाबा के यथार्थ में पौत्र बन रहे हो। मैं तो सीख नहीं पाया। यहाँ तक कि मैं पाँच वर्ष तक विद्यालय में पढ़ता भी रहा था। अन्त में असफल हो पढ़ना छोड़ दिया और काम-धन्धे में लग गया।"

बाबा बोले,"तुम किसी अविद्वान् के पल्ले पड़ गए थे। इसलिए वह तुम्हें सिखा नहीं पाया।"

परमानन्द का पिता मंगलानन्द बोला, "अविद्वान् सिखाने वाला नहीं अपितु सीखने वाला था। यह सप्ताह में तीन रात तो 'मूवी' देखने के लिए जाया करता था, दो दिन संगीत अकादमी में वायलन सीखने जाया करता था और दो रात क्लब में डांस करने। जो रात के बारह बजे सोता हो और प्रातःकाल आठ बजे उठता हो वह कोई विद्या किस प्रकार सीख सकता है ?"

"परन्तु पिताजी ! मैं धन कमाना तो सीख गया हूँ। दादा ! कल मैंने अपने एक वर्ष के हानि-लाभ के चिट्ठे को देखा है। मेरी फर्म को गत वर्ष में पाँच लाख पचास हजार का विशुद्ध लाभ हुआ है।"

मंगलानन्द ने कह दिया, "यह तो इस कारण हुआ कि भारत की अधिकांश जनता मूर्खों का झुण्डमात्र है। कामनाओं से आच्छादित व्यक्तियों की कामनाओं को तृप्त करने में तुम्हारा काम सहायक होता है और ऐसे व्यक्तियों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। मैं समझता हूँ कि इस दृष्टि से तो यह आय कुछ अधिक नहीं है।"

"भाईसाहब क्या व्यवसाय करते हैं ?" लिसा ने जिज्ञासा व्यक्त की।

सब हँसने लगे। किन्तु सोम और लिसा उसमें सम्मिलित नहीं थे। दोनों प्रश्न-भरी मुद्रा में परमानन्द का मुख देख रहे थे।

हँस तो परमानन्द भी रहा था। हँसते हुए उसने कहा, "इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि मैं काल की गति को पहचानता हूँ और उससे लाभ उठा रहा हूँ। मैंने यह देखा और समझा है कि कार्य वह करना चाहिए जिसके ग्राहक हों। ग्राहकों का निर्माण मैंने नहीं किया। मैं तो उन बुद्धिहीन ग्राहकों की मनोकामना पूर्ण करने के साधन ही प्रस्तुत करता हूँ। सब यही करते हैं। अन्न उपजाने वाले किसान से आरम्भ कर देश का राष्ट्रपति तक सब यही कार्य करते हैं। कोई किसी प्रकार

जनता की आवश्यकता की पूर्ति करता है, दूसरा किसी अन्य प्रकार से। किन्तु इस प्रकार सभी प्रभूत आय अर्जित करते हैं।''

इन बातों में कोई सार न देख, लिसा ने अपनी बात करते हुए कहा, ''मैं अपनी सासू जी की संगति का लाभ उठाने तथा देश-भर का भ्रमण करने की इच्छा से भी तेरह हजार मील की उड़ान भरकर यहाँ आई हूँ। इस कारण मेरी यह अभिलाषा है कि यदि माताजी भी हमारे साथ भ्रमण के लिए चलने की कृपा करें तो तब ही मेरी दोनों कामनाएँ पूर्ण हो सकती हैं।''

सास ने अपने पति की ओर देखकर पूछा, ''क्या विचार है? वैसे तो मैंने देश के दर्शन तीन बार किए हैं। दर्शन की लालसा तो अब मुझे रही नहीं है।''

मंगलानन्द कुछ उत्तर दे उससे पहले ही उसका पिता बोल पड़ा,, ''न सही देश-दर्शन की लालसा, घर में आए नये प्राणी की संगति का रस तो प्राप्त कर लो। यह तो नयी बात होगी ही।''

मंगलानन्द ने उसकी पुष्टि करते हुए कहा, ''हाँ, निर्जीव नदी, पर्वतों तथा पत्थरों की अपेक्षा सजीव की संगति का अनुभव तो उससे विलक्षण होगा। ये निर्जीव स्थल तो शताब्दियों से इसी प्रकार यथास्थान स्थिर हैं, उनमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता। उनके निर्माताओं के स्वरूप भी स्थिर हो चुके हैं। अब उनमें किसी प्रकार की नवीनता नहीं रही। परन्तु मनुष्य तो प्रतिक्षण बदलता रहता है। उसमें नवीनता का आविर्भाव भी होता रहता है।''

''आप लोग ठीक ही कह रहे हैं।'' गार्गी ने भी समर्थन कर दिया।

लिसा बोली, ''माताजी! पिताजी ने आज्ञा दे दी है। अब मैं आपको अपना वह कार्यक्रम बताती हूँ जो देश-भ्रमण के लिए हमने पहले से ही तैयार किया हुआ है।

''पतिदेव की इच्छा है कि हम तीन दिन तक अपने परिवार तथा पुरुखों के साथ रहें। उसके बाद हम उत्तराखण्ड के दर्शनीय स्थलों पर अपना भ्रमण आरम्भ करेंगे। दस दिन तक उत्तराखण्ड का भ्रमण होगा। तदनन्तर पाँच दिन पुनः नयी दिल्ली में रहकर फिर दस दिन के लिए राजस्थान और गुजरात के भ्रमण के लिए प्रस्थान किया जाय। वहाँ से लौटने पर पुनः पाँच दिन अपने परिजनों के साथ रहेंगे और उसके बाद पन्द्रह दिन के लिए उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल और आसाम का भ्रमण करेंगे। वहाँ से लौटकर पाँच दिन फिर अपने परिवार के साथ रहकर वापस अपने काम पर लौट जाएँगे।''

परमानन्द ने पूछा, ''तुम लोग वहाँ क्या काम करते हो?''

लिसा अपने पति की ओर देखने लगी। इसका अभिप्राय यह था कि वही उसके तथा अपने काम के विषय में बताए।

लिसा का अभिप्राय समझ सोमदेव कहने लगा, ''मैं फिजिक्स का प्राध्यापक

हूँ। सप्ताह में दो दिन में चार पीरियड पढ़ाना होता है और सप्ताह का शेष समय स्वाध्याय तथा अन्वेषण में व्यतीत होता है। लिसा और मेरा, दोनों का कार्यक्रम एक समान ही है। स्वाध्याय के लिए हम विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का आश्रय लेते हैं।

"मैं तो 'भू-आकर्षण' पर अन्वेषण कर रहा हूँ। चार अन्य प्रोफ़ेसर मेरे सहयोगी हैं। प्रति सप्ताह एक बार हम परस्पर मिलकर सप्ताह-भर के अपने-अपने कार्यक्रम पर विचार-विनिमय करते हैं और आगामी सप्ताह के कार्यक्रम का निर्धारण भी करते हैं। इस प्रकार हमारा कार्य चल रहा है।

"लिसा के अन्वेषण का विषय प्राणिशास्त्र है। यह अभी अपने विभाग के मुख्य प्राध्यापक की सहयोगिनी के रूप में कार्य करती है। इसे भी सप्ताह में चार पीरियड अध्यापन करना होता है। शेष समय में अन्वेषण और स्वाध्याय करती है।"

"वेद विद्या का अध्ययन कब होता है?" बाबा का प्रश्न था।

"प्रातःकाल, दो घण्टे अध्ययन करते हैं।"

परमानन्द बोला, "वहाँ क्लब, नाचघर, सिनेमा और सैर-सपाटे का कोई साधन नहीं है?"

"वह सब है। क्लब तो हम विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों का साँझा है। उसमें विज्ञान के अध्यापक और विद्यार्थी ही सम्मिलित हो सकते हैं। लिसा वहीं विचरती हुई मुझे मिली थी। उस क्लब में ही एक छोटा-सा सिनेमाहाल भी है। कभी-कभी किसी उच्च स्तर की पिक्चर दिखाने का प्रबन्ध क्लब की ओर से किया जाता है।

"हम लोग सामान्य जनता से पृथक् रहते हैं। वार्षिक अवकाश के समय ही बाहर के संसार से हमारा सम्पर्क जुड़ता है।"

गार्गी बोली, "इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि तुम लोग वहाँ रात-दिन व्यस्त ही रहते हो?"

परमानन्द बोला, "तभी तो पाँच वर्ष के वैवाहिक जीवन में तुम्हारे अभी तक कोई सन्तान नहीं हुई! होती भी कहाँ से, इसके लिए तो तुम्हें अवकाश ही नहीं?"

यह सुनकर सोम और उसकी पत्नी परस्पर एक-दूसरे का मुख देखने लगे। उनको हँसी आ रही थी।

बात को समाप्त करती हुई गार्गी बोली, "किन्तु परमानन्द! अपने सात वर्ष के वैवाहिक जीवन में तुमने कितने पिल्ले पैदा कर दिए हैं?"

सब गम्भीर हो परमानन्द और उसकी पत्नी की ओर देखने लगे। सावित्री चम्मच से प्लेट पर रेखाचित्र बना रही थी।

: २ :

अल्पाहार समाप्त हुआ। सब उठ गए। गार्गी ने लिसा की बाँह में बाँह डाली

और उसे अपने कमरे में ले गई । सोमदेव अपने बाबा विश्वेश्वरानन्द के साथ उसके कमरे में चल दिया । इससे किसी को किसी प्रकार का आश्चर्य नहीं हुआ । बाल्य-काल से ही सोम बाबा का प्रिय शिष्य भी कहा जाता था । संस्कृत और शास्त्रों का अध्ययन उसने अपने बाबा से ही किया था । यद्यपि वह दिल्ली विश्वविद्यालय का स्नातक था । वहीं से उसने पहले एम० एस-सी० और फिर डी० एस-सी० की थी । परन्तु घर के प्राणी यह जानते थे कि बाबा से उसने शास्त्रों का अध्ययन किया है ।

सोमदेव ने जब पाँचवीं कक्षा उत्तीर्ण की, उसके बाद ही अपने स्कूल तथा बाद में कॉलेज की पढ़ाई के अतिरिक्त अपने बाबा से संस्कृत भाषा और शास्त्रों की पढ़ाई करता था ।

एक समय तो सोमदेव के पिता को यह भी लगने लगा था कि शास्त्र विद्या में उसकी रुचि होने से कदाचित् वह कॉलेज की पढ़ाई में न पिछड़ जाय । किन्तु उसका यह सन्देह निराधार सिद्ध हुआ ।

सोमदेव ने एम० एस-सी० की परीक्षा में विश्वविद्यालय में प्रथम श्रेणी और प्रथम स्थान प्राप्त किया था । बाद में विश्वविद्यालय से छात्रवृत्ति प्राप्त कर वह जब शोधकार्य करने लगा तो उसका पिता समझ गया कि उसकी वास्तविक प्रतिभा उसको उन्नति के मार्ग पर बहाती हुई निरन्तर प्रगति-पथ पर ले जा रही है ।

अपनी डी०एस-सी० की उपाधि के लिए सोमदेव ने 'भू-आकर्षण' पर ही अन्वेषण करना चाहा था । किन्तु इस विषय पर भारत में बहुत कम साहित्य उपलब्ध था और इस कारण कोई 'गाइड' भी नहीं मिल पा रहा था । तब सोमदेव ने अपने अन्वेषण का विषय 'प्रकाश और शब्द' ले लिया । इस पर अन्वेषण कर उसने डॉक्टरेट की उपाधि अर्जित कर ली ।

अवसर पाकर उसने स्वयं ही शिकागो विश्वविद्यालय को अपने शोध-प्रबन्ध की प्रतिलिपि के साथ प्राध्यापक पद के लिए आवेदन-पत्र भेज दिया और जब उसको विश्वविद्यालय में नियुक्ति तथा शोधकार्य की स्वीकृति का पत्र मिल गया तो उसने सर्वप्रथम अपने बाबा और तदुपरान्त अपने माता-पिता को बताया था कि वह अमेरिका जा रहा है । उसके इस निर्णय को सुनकर उसके बाबा और माता को बहुत प्रसन्नता हुई थी किन्तु अन्य किसी को उसका यह कार्य पसन्द नहीं आया था ।

सोमदेव का पिता सर्वोच्च न्यायालय में वकील था । वह चाहता था कि वह दिल्ली विश्वविद्यालय में ही कार्य करे । घर में किसी प्रकार का धनाभाव भी नहीं था । अपने बड़े पुत्र के स्वभाव को और व्यवहार को देखकर वह चाहता था कि उसका योग्य पुत्र उसके समीप ही रहे तो उपयुक्त होगा । इसलिए जब सोमदेव ने उसको सूचना दी कि वह अमेरिका जा रहा है तो उसके पिता ने उससे सर्वप्रथम

प्रश्न किया, "किसलिए जा रहे हो ?"

"अपने मनोनुकूल विषय पर अन्वेषण करने के लिए ।"

"वह तो तुम यहाँ रहकर भी कर सकते हो ! मैंने उप-कुलपति से तुम्हारे विषय में चर्चा की है । उन्होंने आश्वासन दिया है कि तुम्हें दिल्ली विश्वविद्यालय में ही नियुक्ति मिल सकती है ।"

"पिताजी ! आपकी सिफारिश के बिना ही शिकागो में मुझे नियुक्ति मिल गई है । दूसरी बात यह है कि 'प्रकाश और शब्द' के सम्बन्ध में यहाँ गहन अध्ययन करने तथा उस विषय को प्रतिपादन करने में सफलता मिलने पर भी यहाँ सब यही समझते हैं कि मैंने अपने जीवन के दो वर्ष और विश्वविद्यालय का धन व्यर्थ ही व्यय किया है। इसके विपरीत वहाँ मैंने अपने शोध के विषय में ज्यों ही सूचना भेजी कि बिना किसी सिफारिश के उन्होंने मुझे नियुक्ति-पत्र भेज दिया है ।

"मैं आगामी मास जा रहा हूँ ।"

"तुम्हारा पासपोर्ट बन गया है ?"

"उसके लिए आवेदन किया हुआ है । आशा है यथावत् वह मिल जाएगा ।"

"तुमने अपनी माताजी से इस विषय में कुछ कहा है ? वे तो तुम्हारे विवाह की चिन्ता कर रही हैं ।"

"विवाह के विषय में तो मैंने माँ को उस दिन ही मना कर दिया था जिस दिन मैंने अमेरिका जाकर शोध-कार्य करने की इच्छा व्यक्त की थी ।"

"और बाबा से ?"

"हाँ, बाबा से भी बात हुई थी। बाबा का कहना था कि किसी प्रतिभावान् व्यक्ति को कम-से-कम दो सन्तान अवश्य उत्पन्न करनी चाहिए । जिससे कि उसकी प्रतिभा का सूत्र संसार में जीवित रहे ।

"मैंने उनको कहा था कि मैं इसकी आवश्यकता को समझता हूँ और समय पर यह कार्य भी करूँगा । तब उनका कहना था कि समय रहते ही यह कार्य हो जाना चाहिए । क्योंकि इसके लिए भी समय सीमित ही होता है ।"

"मैंने उनको आश्वस्त कर दिया था ।"

यह वार्तालाप आज से सात वर्ष पूर्व जब सोम अमेरिका जाने की तैयारी में लगा था, उस समय हुआ था। आज जब सात वर्ष के उपरान्त भी और पाँच वर्ष के वैवाहिक जीवन व्यतीत करने पर भी सोम निःसन्तान ही भारत लौटा तो बाबा ने उससे पूछा, "विवाह किए हुए कितना समय हो गया है ?"

"बाबा ! इसकी सूचना तो मैं पूर्व में ही आप लोगों को दे चुका था ।"

"हाँ-हाँ, मुझे स्मरण है। इस बात को पाँच वर्ष हो गए हैं किन्तु विवाह का फल तो कहीं दिखाई दे नहीं रहा है ?"

"बाबा ! अब यत्न करूँगा। अभी तक तो मैं भूमि तैयार कर रहा था । मैंने

भावी जीव के बीज के लिए भूमि तो लगभग तैयार कर दी है। लिसा अपने विषय में पण्डिता हो गई है और मैं समझता हूँ कि अब वह इस कार्य के लिए रुचि व्यक्त करने लगी है। हम दोनों की इच्छा थी कि बालक का बीजारोपण और जन्म दोनों ही भारत में हों।''

''तो उसको यहाँ छोड़कर जा रहे हो ?''

''जी नहीं, यदि आवश्यक हुआ तो प्रसव के लिए वह यहाँ आ जाएगी।''

''भारत से इतना प्रेम करने वाली, ऐसी लड़की तुम्हें कहाँ और किस प्रकार मिल गई ?''

''विश्वविद्यालय के लैक्चर हॉल में ही पहले-पहल यह दिखाई दी थी। देखने में तो यह तब ही शरीर से स्वस्थ और सुन्दर लगी थी और फिर तीन मास तक निरन्तर सम्पर्क के उपरान्त मुझे लगा कि आत्मा श्रेष्ठ है। विवाह से पूर्व ही मैंने उसको बताया था कि मैं सन्तान के लिए ही विवाह की इच्छा करता हूँ।

''उसने कहा था कि समय पर वह भी हो जाएगा। जब मैंने समय के सम्बन्ध में पूछा तो उसने कहा कि यह तो विवाह के उपरान्त विचार कर लिया जाएगा। अभी तो वह दिन-रात मेरी संगति में रहना चाहती है।

''तब मैंने उससे कहा था कि संगति का उद्देश्य तो यही होता है जो मैंने बताया है। उसने इसपर अपनी असहमति व्यक्त करते हुए कहा था—प्रथम स्थान तो ज्ञान-गोष्ठी का है, सन्तानोत्पत्ति का दूसरा स्थान है।

''मैंने उसकी बात को स्वीकार कर लिया। उस समय वह मेरी ही पूर्व युक्ति का मुझे भान करा रही थी। उसको मैंने कभी बताया था कि इस जगत् में उत्कृष्ट ज्ञान-प्राप्ति का स्थान मानव जगत् ही है। उसके बाद हमने अपने जीवन को इस रीति से चलाया है कि पाँच वर्ष का विवाहित जीवन बिना किसी संकट के सफलता-पूर्वक निकल गया। किंचित्मात्र सावधानी से ही हमने विवाहित जीवन के पाँच वर्ष व्यतीत कर दिए।

''सन्तान की इच्छा तो उस दिन हुई जिस दिन शिकागो जरनल में मेरा शोध-पत्र प्रकाशित हुआ था। उसके साथ ही मेरे कार्य का परिणाम भी प्रकाशित हुआ था। उसे पढ़कर लिसा आनन्दित हुई थी और तब उसको गर्व भी हुआ था। उस समय उसने कहा था कि अब वह सन्तान उत्पन्न करने की इच्छा करने लगी है। उसीने यह भी कहा था कि यदि यह शुभ कार्य भारत भूमि पर ही हो तो कैसा रहे ?

''उसकी इस इच्छा का सम्मान करके ही मैंने लम्बा अवकाश लिया और भारत आने की योजना बना ली। तदनुसार हम भारत पहुँच गए हैं, तदपि भविष्य तो ईश्वराधीन है।''

''मैं तुम्हारी मनोकामना-पूर्ति के लिए तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।''

पौत्र की पीठ थपथपाते हुए बाबा ने वार्तालाप का विषय बदलकर कहा, "तुम्हारे शोधकार्य के विषय में तो तुम्हारी माँ आज कुछ बता रही थी किन्तु तुम्हारी पत्नी क्या कर रही है ?"

"वह वहाँ किसी वैज्ञानिक के साथ कार्य कर रही है। इसका विषय है 'प्राणी शरीर में जीव का स्थान'। अभी भारत-यात्रा के अवसर पर इसने अपनी मण्डली के कार्य और उसके परिणाम के विषय में मुझे बताया है। इसने कुछ कठिनाइयों की ओर संकेत किया था, उस पर मैंने अपने सुझाव भी दिए हैं। अब उन सुझावों को यह अपनी शोध-मण्डली के समक्ष विचार के लिए प्रस्तुत करेगी।"

"तुमने उसको क्या सुझाव दिए हैं ?"

"मैंने उसका जब कार्य-विवरण सुना तो मुझे लगा कि कार्य तो ठीक दिशा में चल रहा है, यदि कहीं भ्रांति है तो वह है उसके उद्देश्य में। क्योंकि प्राणी के निर्माण में सर्वाधिक जिसका योगदान होता है, जब तक वे उसका सहयोग प्राप्त नहीं कर लेंगे तब तक उनके लिए प्राणी का निर्माण कर पाना सम्भव नहीं है। उस सर्वाधिक योगदानी के विषय में अपनी पत्नी को मैंने समझाया है। वह समझ गई है और अमेरिका लौटने पर वह 'प्रारम्भिक कारण' पर विचार-विनिमय करेगी।"

उधर गार्गी अपने कमरे में अपनी पुत्रवधू का परिचय प्राप्त करने का यत्न कर रही थी। उसने अपने कमरे में जाते ही लिसा से पूछा, "प्रातःकाल के अल्पा-हार में तुम लोग क्या खाते हो ?"

"प्रातःकाल का अल्पाहार हम घर पर ही करते हैं। टोस्ट, मक्खन और अण्डे तथा चाय या कॉफी। यह सब तैयार करने में दस मिनट लगते हैं, वह मैं कर लिया करती हूं।"

"इसके अतिरिक्त प्रातःकाल के समय तुम क्या करती थीं ?"

"प्रातः चार बजे उठकर आधा घण्टा तो शौच-स्नानादि में लग जाता है और उसके बाद आधा घण्टा हम लोग प्राणायाम तथा ध्यान आदि के लिए देते हैं। यात्रा में तो यह सब हो नहीं पाया। आशा है कि कल से यह कार्य नियमित होने लगेगा।"

"प्राणायाम और ध्यान आदि तुम सब सीख गई हो ?"

यह सुनकर एक बार तो लिसा हँस पड़ी। फिर बोली, "विवाह के उपरान्त पहले ही दिन जब आपके पुत्र पालथी मारकर, आँखें मूँदे भूमि पर बैठे थे तो उनको उस रूप में देखकर मेरी हँसी निकल गई थी। परन्तु जब नित्य ही वे उस प्रकार करने लगे तो दो-चार दिन बाद मैंने इनसे पूछ लिया कि यह सब ये क्या और क्यों करते हैं ?

"इन्होंने मुझसे सीधा प्रश्न किया कि मैंने कभी मिठाई खाई है ? मैंने कह दिया कि वह तो मैं रात्रि के भोजन के उपरान्त नित्य ही खाती हूँ। तब इन्होंने पूछा

कि उसका स्वाद कैसा होता है ? मैंने कह दिया कि मुझे बहुत स्वादिष्ट लगता है। तब ये बोले कि जिसने कभी मिठाई न खाई हो उसको किस प्रकार समझाओगी कि मिठाई कैसी लगती है ?"

"मैंने कह दिया, चीनी से उसकी तुलना करके। वे बोले कि चीनी भी तो मिठाई ही है। यदि पूछने वाले ने उसका भी स्वाद न चखा हो तो फिर कैसे बताओगी कि उसका स्वाद कैसा है ?

"मैं जब मिठाई के स्वाद की व्याख्या नहीं कर सकी तो इन्होंने कहा कि मिठाई खिलाकर ही उसका स्वाद समझाया जा सकता है, इसी प्रकार इसका स्वाद भी इसको करके ही ज्ञात हो सकता है।

"तब मेरी जिज्ञासा बढ़ी और मैंने सीखना आरम्भ कर दिया। एक सप्ताह के अभ्यास से ही मैं इसका आनन्द अनुभव करने लगी थी। अब नित्य ही आधा घण्टा इसका रसास्वादन करते हैं।"

"अब कैसा अनुभव होता है ?"

"जिस प्रकार किसी बन्द कमरे की खिड़की खुलने पर बाहर जब सुन्दर पुष्प-वाटिका दृष्टिगोचर होती है उस समय जैसा आनन्द आता है, उसी प्रकार इस प्राणायाम और ध्यान से मेरा मन पुलकित हो उठता है।"

"ओह, तो अब तुम नित्य ही पुष्प-वाटिका के दर्शन करने लगी हो ?"

"माताजी ! अब तो मैं इससे भी अधिक यह अनुभव करती हूँ कि मैं स्वयं ही उस पुष्प-वाटिका में बैठी आनन्द का आस्वादन कर रही हूँ।"

"परन्तु ध्यान रखना, पुष्प के साथ काँटे भी होते हैं।"

"जी, जो आँखें फूलों को देख रही हैं वे काँटों को भी देख सकती हैं। उनसे बचने का उपाय भी बुद्धि में समाने लगा है। इस कारण अब काँटों से डर नहीं लगता।"

चर्चा का विषय बदलते हुए गार्गी मे कहा, "तुमसे मिलकर और तुम्हारे विचार जानकर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। धारणा और ध्यान का अभ्यास तो मैं भी करती हूँ। परन्तु मेरी पहुँच उस पुष्प-वाटिका तक नहीं हुई। अब तुम्हारे कन्धे पर हाथ रखकर आगे चलने का यत्न करूँगी।"

"आप हमारे साथ अमेरिका चलिए, इससे हमें भी बहुत लाभ होगा।"

"अभी तो तुम आई हो। दो मास तक मैं तुम्हारे साथ रहूँगी। उसके बाद ही इस पर विचार करने का अवसर आएगा। फिर यहाँ मैंने एक जीवनसाथी भी बनाया हुआ है, उसकी संगति का स्वाद भी ले रही हूँ। जब मेरा विवाह हुआ था, उस समय मेरी आयु केवल सत्रह वर्ष की थी। मेरी पढ़ाई भी अधिक नहीं हुई है। केवल हाईस्कूल तक पढ़ी हूँ। परन्तु यहाँ आने पर बाबा के विद्यालय में अध्ययन करती हुई अपनी विद्या में कुछ वृद्धि करने का यत्न किया है। यत्न तो अभी भी

है। अपने पतिदेव के कारण ही तो यह सब सम्भव हो पाया है। उन्होंने कुछ अभ्यास करने का ढंग भी बताया है और समय-समय पर इस दिशा में उनकी सहायता भी मिलती रहती है। इस प्रकार यहाँ ये दो बन्धन हैं।

"सोम मुझे सबसे अधिक प्रिय रहा है। अभी भी मुझे वह विकसित और प्रफुल्लित पुष्प के समान ही दिखाई देता है। अब उसके साथ तुम्हारा परिचय भी सुखकारक हो रहा है। इस कारण इन बन्धनों में फँसा मेरा मन चलायमान हो गया है।

"वहाँ पर तुम दोनों का दैनिक कार्यक्रम क्या होता है?"

"पाँच बजे तक का कार्यक्रम तो मैंने आपको बता दिया है। उसके बाद हम एक प्याला चाय पीकर अपने शास्त्राध्ययन में लग जाते हैं। प्रथम दो वर्ष तो हिन्दी और तदनन्तर संस्कृत पढने में लग गए थे। अब दो-ढाई वर्ष से दर्शनशास्त्र का अध्ययन कर रही हूँ। ब्रह्मसूत्र, सांख्य और न्याय-दर्शन, इस प्रकार तीन शास्त्रों का अध्ययन पूर्ण कर चुकी हूँ। अब एक वर्ष से कुछ अधिक समय से मैंने वेदाध्ययन आरम्भ किया हुआ है। दर्शन पढ़े हुए होने के कारण वेद को समझने में सुगमता हो रही है। सुगमता के साथ ही उसमें रस भी आने लगा है। यह कार्य हम इकट्ठे करते हैं, हमारा स्वाध्याय साथ-साथ चलता है।

"इस प्रकार नौ बजे तक यह स्वाध्याय चलता है। चार घण्टे का स्वाध्याय करने के उपरान्त आधा घण्टा विश्राम, फिर पन्द्रह मिनट में अल्पाहार तैयार कर और उसे खा साढ़े दस बजे तक हम अपनी-अपनी कक्षाओं में पहुँच जाया करते हैं। सप्ताह में दो दिन ग्यारह बजे से एक बजे तक अध्यापन का कार्य होता है। उसके बाद हल्का-सा भोजन कर हम प्रयोगशाला में चले जाते हैं। जब अध्यापन नहीं करना होता है तब उस समय में हम अपने विषय पर विचार-विमर्श करते हैं। आरम्भ में तो इस विषय पर आपके सुपुत्र से ही विचार-विनिमय करती थी। किन्तु अब पूछने के अतिरिक्त मुझे कुछ बताना भी होता है। इस प्रकार सप्ताह में पाँच दिन यह कार्यक्रम रहता है।

"मध्याह्न भोजन के उपरान्त हम लोग आधा घण्टा अपने-अपने कमरे में विश्राम करते हैं और फिर उसके बाद प्रयोगशाला चले जाते हैं। इस प्रकार वहाँ कार्य करते हुए पाँच बज जाया करते हैं। तब हम किसी रेस्टोराँ में जाकर मध्याह्नोत्तर का अल्पाहार करते हैं और फिर अध्ययन के लिए पुस्तकालय चले जाते हैं। वहाँ अपने-अपने विषय के ग्रन्थ पढ़कर रात के नौ बजे वहाँ से बाहर निकलते हैं। फिर किसी रेस्टोराँ में जाकर हम रात का भोजन करते हैं और घर की ओर चल देते हैं। घर पर जाकर एक-एक प्याला कॉफी पीते हैं और सो जाते हैं।

"ईश्वर की कृपा से खूब गहरी नींद आती है।

"इस दैनिक कार्यक्रम में सप्ताह में एक दिन का अवकाश मिलता है, उस दिन

हम घूमने के लिए निकल जाया करते हैं।"

"और पति-पत्नी की शारीरिक प्रसन्नता ?" गार्गी ने मुस्कराते हुए पूछा।

लिसा को अपनी सास का यह व्यंग्य समझने में कुछ क्षण लगे। फिर उसने मुस्कराते हुए कहा, "माताजी ! यह तो शरीर का धर्म है। मास में प्रायः एक-दो दिन के लिए ही इच्छा होती है, तब हमारा रात्रि का कार्यक्रम बदल जाया करता है। उस रात हम विलम्ब से सोते हैं और तदनुसार ही प्रातः विलम्ब से उठते हैं। उस दिन शास्त्राध्ययन का अवसर नहीं मिल पाता है।

"परन्तु ज्यों-ज्यों शास्त्राध्ययन में रस आने लगा तो हमने शरीर की इस आवश्यकता की उपेक्षा करने का यत्न किया। आरम्भ में तो यह कुछ कठिन-सा लगा किन्तु शनैः-शनैः वह भी सुगम होता गया।"

"परन्तु जीवन में यह भी तो एक आवश्यक कार्य है। उसका कुछ उद्देश्य है और उसका सुफल भी प्राप्त होता है।"

"जी, फल का उपभोग तो हम कभी-कभी कर लिया करते हैं किन्तु उद्देश्य-पूर्ति से अब तक बचते रहे हैं। अब हमने सोचा है कि इस ओर भी ध्यान देना चाहिए। शरीर को तो हमने अपने अधीन किया हुआ है।

"मेरे विभाग में इसी विद्या का अध्ययन हो रहा है। वहाँ प्राणिशास्त्र पर अनुसंधान किया जा रहा है। आजकल तीन मण्डलियाँ तीन प्रकार का कार्य कर रही हैं। जिस मण्डली में मैं हूँ वह जीवन-तत्त्व का अन्वेषण कर रही है। अन्वेषण करते हुए हम प्राणी के शरीर का अध्ययन करते-करते इसके मूलबिन्दु तक पहुँच गए हैं। शरीर में जीवन की इकाई एक कोषाणु है। कोषाणु में न्यूक्लियस हैं। इसमें क्रोमोजोम्स तन्तुओं की भाँति के अंग हैं। एक क्रोमोजोम्स में जीन हैं। जीन में दो प्रकार की अमीनोएसिड्स हैं। यह तो किसी स्थूल प्राणी का अन्तिम सूक्ष्मतम स्रोत प्राप्त कर लिया गया है। अब हम यत्न कर रहे हैं कि एक जीन में 'अमीनोएसिड्स के मौलिक्यूल्ज' का क्रम जान सकें। इस दिशा में भी पर्याप्त सफलता हम लोगों को मिल गई है।

"अब हम इन मौलिक्यूल्ज के परस्पर सम्बन्ध का ज्ञान भी प्राप्त कर चुके हैं। असंख्य जन्तु हैं और सबमें यह क्रम भिन्न-भिन्न है। यहाँ पहुँचकर हम यह क्रम कृत्रिम अमीनो से एसिड्स मौलिक्यूल्ज को जोड़ रहे हैं। इस प्रकार हम अपनी प्रयोगशाला में कई प्रकार के शरीर बनाने में सफल हो गए हैं। परन्तु कृत्रिम शरीर और प्राकृतिक शरीर में समानता अभी नहीं आ पाई है।

"हमारी मण्डली के नेता तो अत्यधिक आशान्वित हैं कि वह अपने जीवनकाल में ही किसी प्रकार का जन्तु बनाने में सफल हो जाएँगे।

"परन्तु मैं, जिसकी एक आँख तो वर्तमान प्रयोगशाला है तथा दूसरी आँख वेद-शास्त्राध्ययन है, इसमें सन्देह करने लगी हूँ। तदपि अभी तक मुझमें वह साहस

नहीं आ पाया कि मैं अपने सन्देह की बात अपनी अन्वेषक-मण्डली के समक्ष प्रस्तुत कर उनका समाधान कर सकूँ। इसीलिए मैं अपना कार्य-विवरण पृथक् रूप से तैयार कर रही हूँ।

"पिछले वर्ष हमारी मण्डली और इसी विषय पर अन्य विश्वविद्यालय में अन्वेषण में कार्यरत दूसरी मण्डली वाले परस्पर मिले थे। तब सबने यही आशा व्यक्त की थी कि प्रकृति के विधि-विधानानुसार प्रयोगशाला में तैयार की गई एमनीज के संयोग से हम किसी प्राणी की सृष्टि करने में सफल हो जाएँगे।

"अपनी मण्डली की असफलताओं को देख-देखकर तो शास्त्र के विधि-विधान पर मेरा विश्वास बढ़ता जा रहा है।"

गार्गी ने यह तो स्वीकार कर लिया था कि अपनी पुत्रवधू के कथन का बहुत-सा भाग उसकी समझ में नहीं आया। तदपि उसका कहना था, "यह सब बड़ा अद्भुत और अति लुभायमान है। जिस दिन तुम अमोनिया और गन्धक से किसी प्राणी का निर्माण करने में सफल हो जाओगी उस दिन तुम मानव समाज को एक अत्यन्त रसयुक्त जीवन के अंग से विलग करने में जुट जाओगी। तब फिर मानव-जन्य और टैस्ट ट्यूब निर्मित प्राणियों में परस्पर युद्ध होगा, इससे तो भयंकर स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।"

सास और पुत्रवधू दोनों ही इस कथन पर हँस पड़ीं। अब पुनः विषय बदल-कर गार्गी ने पूछा, "इन दो मास में तुम लोग कहाँ-कहाँ जाना चाहते हो?"

"मैं तो इस विषय में कुछ भी नहीं जानती। यह सब तो आप लोग ही निश्चय करेंगे। मेरे पतिदेव कहते थे कि वे भी नहीं जानते, इसलिए अपने बाबा से परामर्श करने का उनका विचार था।"

गार्गी बोली, "इस कार्य के लिए बाबा से अधिक बाबा के पुत्र सहायक हो सकते हैं। मैंने तीन बार भारत-भ्रमण किया है और तीनों बार का कार्यक्रम उन्होंने ही बनाया था। हम नेपाल को भी भारत-दर्शन में ही सम्मिलित करते थे। वहाँ भी जाया जा सकता है।"

"हम उनसे भी पूछ लेंगे। अभी तो आज के अतिरिक्त दो दिन हमें दिल्ली में रहना है।"

सास-बहू को इस प्रकार बातें करते हुए ग्यारह बज गए थे। तब गार्गी बोली, "अब मेरे स्वाध्याय का समय हो गया है।"

इसका अभिप्राय था कि अब वार्तालाप बन्द। लिसा चाहे तो उठकर जा सकती है अथवा चुपचाप वहाँ बैठी भी रह सकती है। लिसा ने जाना ही उचित समझा। वह उठ खड़ी हुई। गार्गी उठी और बोली, "चलो, मैं तुम्हें सोम के कमरे में ले चलती हूँ।"

"आप अपना कार्य करिए, मैं स्वयं ही पहुँच जाऊँगी।"

"कैसे पहुँच जाओगी, इस कोठी का भूगोल तुम्हें ज्ञात नहीं है।"

"इस कोठी का भूगोल भले ही न जानती होऊँ, किन्तु अन्वेषण का मुझे अभ्यास है, इसलिए ढूँढ़ लूँगी।"

गार्गी हँस पड़ी। बोली, "ठीक है, अपनी बुद्धि का प्रयोग करोगी तो मार्ग पा जाना सहज है।"

गार्गी बैठ गई और लिसा वहाँ से निकल ड्राइंग-रूम में जा पहुँची। वहाँ उसने पिता-पुत्र को बात करते पाया। लिसा को भी इसी प्रकार की आशा थी। उसका विचार था कि ड्राइंग-रूम में घर का कोई-न-कोई प्राणी तो होगा ही, उससे ही वह कमरे के विषय में पूछ लेगी।

लिसा उधर गई तो सोमदेव ने उसे बुलाते हुए कहा, "आओ, लिसा बैठो। मैं पिताजी के परामर्श से अपने भारत-भ्रमण का कार्यक्रम बना रहा हूँ।"

सोम के पिता मंगलानन्द के हाथ में 'एयर लाइंज' की गाइड-बुक थी। उसमें से देख-देखकर वह एक कागज पर स्थानों के नाम लिख रहे थे। लिसा उन दोनों के सम्मुख जाकर बैठ गई। चार-पाँच मिनट बाद पिता ने उनके पन्द्रह दिन के भ्रमण का कार्यक्रम बना दिया। वह सोम को देते हुए मंगलानन्द ने कहा, "यह लो, यहाँ से हरिद्वार, ऋषिकेश, देवप्रयाग और बद्रीनारायण। वहाँ से लौटकर देहरादून से जम्मू, श्रीनगर, गुलमर्ग, वेरीनाग, अनन्तनाग तथा वहाँ से लौटकर श्रीनगर और फिर विश्राम के लिए दिल्ली। इस प्रकार यह सत्रह दिन का कार्यक्रम है।

"तुम तीन प्राणियों का रेल और हवाई जहाज का भाड़ा लगभग पन्द्रह हजार होगा तथा होटल तथा मोटर आदि का लगभग दस हजार। यह अनुमानित है। वहाँ से जब लौटकर दिल्ली आओगे और दो दिन रहोगे तो फिर आगे का कार्यक्रम बनाया जाएगा।

"मैं समझता हूँ कि मुख्य-मुख्य स्थानों पर तुम्हें गाइड का प्रबन्ध करना होगा जिससे कि वह वहाँ के दर्शनीय स्थल और उनका वृत्तान्त बता सके।"

"पिताजी! उसका भी प्रबन्ध कर दीजिए।"

"ठीक है, सायंकाल तक वह भी हो जाएगा।"

मंगलानन्द ने घड़ी में समय देखते हुए कहा, "मैं अब कोर्ट जा रहा हूँ। मध्याह्नोत्तर तीन बजे लौटूँगा।"

: ३ :

मंगलानन्द गया तो सोमदेव ने अपनी पत्नी को कहा, "माताजी ने कहा है कि मेरे लिए मेरा पुराना कमरा ही ठीक कर दिया गया है और वहाँ दोनों के आराम करने की व्यवस्था कर दी गई है।"

"ठीक है, मैं माताजी को यह कहकर आई थी कि मैं अपना स्थान स्वयं ही ढूँढ़ लूँगी।"

"वह किस प्रकार ?"

"जिस प्रकार धरती पर कुलबुल करने वाले जन्तुओं में 'जीवन तत्त्व' खोज रही हूँ।"

सोम हँस पड़ा। बोला, "जिस प्रकार उसे तुम नहीं खोज पाई हो, उसी प्रकार यहाँ का कमरा भी खोज पाना कठिन है।"

इस प्रकार बात करते हुए दोनों ही उठकर वहाँ से जाने लगे थे कि तभी सोम की भाभी सावित्री अपने साथ एक अन्य युवती को लेकर ड्राइंग-रूम में प्रविष्ट हुई। वे दोनों जाते-जाते रुक गए।

सावित्री ने कहा, "लिसा डियर ! यह तुमसे मिलने के लिए आई है।"

सोम बीच में ही बोल पड़ा, "दीदी ! बहुत अच्छा किया। अन्यथा मेरा विचार शाम की चाय आपके घर पर पीने का था।"

"वह तो तुम अब भी पी सकते हो। तुम्हारे जीजाजी ने कहा था कि वे अपनी मोटरगाड़ी में महेन्द्र को भी साथ लेकर आएँगे और फिर हम सबको लेकर अपने सिविल लाइन्ज वाले बंगले को चल देंगे। अन्तर केवल इतना ही होगा कि चाय यहाँ पी जाएगी किन्तु रात का भोजन वहाँ किया जाएगा।"

"ठीक है, जब जीजाजी आएँगे तब इस पर विचार कर लिया जाएगा।" फिर उसने अपनी पत्नी की ओर संकेत कर अपनी दीदी से कहा, "यह देखो पृथिवी के पाताल देश से इस घर में प्रवेश के लिए एक नया जीव मैं अपने साथ लाया हूँ।"

सोम ने पत्नी से अपनी बहिन का परिचय करा दिया। अपनी बहिन के विषय में सोमदेव ने अपनी पत्नी को पहले बताया हुआ था। लिसा ने पूछा, "जीजाजी क्यों नहीं आए ?"

अम्बा बोली, "आज हाई कोर्ट में उनके एक अत्यावश्यक मुकदमे की पेशी है। सायंकाल के चाय के समय से पहले ही वे यहाँ आ जाएँगे।"

"तब ठीक है। मुझे आपका नाम तो विदित था किन्तु यह विदित नहीं था कि आप भी कोई काम-धन्धा नहीं करतीं।"

अम्बा हँस पड़ी। बोली, "काम तो मैं करती हूँ किन्तु धन्धा नहीं करती।"

"अर्थात् ?"

"धन्धे से हमारे यहाँ अभिप्राय होता है कोई व्यापार अथवा किसी की नौकरी।"

"नौकरी तो सभी करते हैं। मेरा अभिप्राय तो केवल इतना ही था कि आप परिवार से बाहर भी कोई काम करती हैं क्या ?"

"घर का काम ही इतना अधिक होता है कि उससे ही अवकाश नहीं मिल पाता तो फिर बाहर के काम की बात कौन करे ?"

"यही मैंने माताजी से पूछा था। उनका भी यह कहना था कि घर पर इतना

काम है कि बाहर के किसी कार्य के लिए अवकाश ही नहीं मिलता। आप सब लोग यहाँ इतना क्या काम करती हैं ?"

"सब नहीं। इस समय हमारे देश में भी पचास प्रतिशत महिलाएँ ऐसी हैं कि जो बाहर का कार्य करती हैं। इस संख्या में अब निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। यह योरोपियन सभ्यता के प्रसार के परिणामस्वरूप है। बस, यही समझो कि यह बीमारी अभी इस घर में प्रविष्ट नहीं हुई है।" सावित्री ने समझाते हुए कहा।

अम्बा बोली, "माताजी का तो यह कहना है कि विवाह से पूर्व वे किसी कम्पनी में कार्य करती थीं। परन्तु विवाह से पूर्व यह शर्त रख दी गई थी कि विवाह होने पर उन्हें नौकरी छोड़नी होगी। और जब विवाह का निश्चय हो गया तो माताजी ने तुरन्त वह नौकरी छोड़ दी थी।

"पिताजी ने हमें सेवा-कार्य करने का न अवसर दिया और न उसके लिए प्रोत्साहित किया। मेरी पढ़ाई समाप्त होते ही उन्होंने मेरा विवाह कर दिया। इससे मैं सीधे उस स्तर पर पहुँच गई जिस स्तर पर माताजी दो वर्ष की सेवा के उपरान्त पहुँची थीं।"

लिसा कहने लगी, "हाँ, अमेरिका तो यूरोप की बेटी है। यूरोप की भाँति वहाँ भी सत्तर प्रतिशत से अधिक महिलाएँ किसी-न-किसी कार्य अथवा व्यवसाय में लगी हुई हैं। जो तीस प्रतिशत के लगभग महिलाएँ बचती हैं, ऐसा नहीं कि वे कोई कार्य करना नहीं चाहतीं, अपितु वे वृद्ध होने से नौकरी आदि करने में असमर्थ हैं।"

सावित्री ने कहा, "हमारे यहाँ तो वृद्धावस्था में अधिकांश महिलाएँ परमात्मा के भजन में मग्न रहने लगती हैं। उनमें से कुछ तो घर को भी छोड़कर किसी वान-प्रस्थ आश्रम में रहने लगती हैं।"

अब सोम ने बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए कहा, "वास्तव में आज मानव समाज की यह अवस्था हो गई है कि शत-प्रतिशत व्यक्ति सेवा में ही रहते हैं। सब या तो अपने शरीर की सेवा में रत रहते हैं या फिर किसी अन्य की सेवा में। इसका कारण यह है कि मनुष्य ज्ञान अब शरीर ज्ञान तक सीमित रह गया है। उससे बाहर निकलकर जाने की किसी को सूझती ही नहीं। इसलिए जिसका ज्ञान है उसकी प्राप्ति में ही लीन रहते हैं।

"और फिर शरीर की आवश्यकताएँ भी इतनी बढ़ गई हैं कि उनकी पूर्ति में ही सारा जीवन समाप्त हो जाता है।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि सरकारी रजिस्टरों में जो बेकारों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, ऐसा कहने वाले झूठ बोलते हैं ?"

"झूठ तो नहीं। यह तो शरीर साधनों के खोज का लक्षण है। शरीर की आव-श्यकताएँ नित्य बढ़ रही हैं। इस कारण बेकारी भी नित्य बढ़ती जा रही है। अब मेरी ही बात लीजिए। जब मैं अपने डी० एस-सी० के लिए यत्न कर रहा था तो

मुझे भी इस बात का अनुभव हुआ था कि मेरी आवश्यकताएँ मेरे साधनों से बढ़ गई हैं। पिताजी मेरा जेब खर्च माताजी को दे दिया करते थे और मैं उनसे माँग लिया करता था। एक मास मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैंने नित्य का निश्चित से कुछ अधिक प्राप्त कर लिया है। जब मैं गणना करने बैठा तो मुझे लगा कि मैं छः सौ से अधिक ले चुका था और तब मास की पच्चीस ही तारीख बीती थी। बस, मैंने उसी समय से काम ढूँढ़ने का यत्न आरम्भ कर दिया। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मैंने भी स्वयं को बेकारों की पंक्ति में खड़ा कर लिया। ये सब बेकार इसी प्रकार के हैं। कुछ ऐसे हैं जो इनमें अपना नाम नहीं भी लिखाते। तो भी वे स्वयं को आंशिक अथवा पूर्णरूपेण बेकार मानते अवश्य हैं। यह तो मेरा सौभाग्य था कि मुझे तुरन्त कार्य मिल गया था। अन्यथा मैं भी बहुत दिनों तक बेकारों की गिनती में ही रहता।

"जब मुझे केलिफोर्निया में कार्य मिल गया तो मैंने यत्न किया कि मैं अपनी आवश्यकताओं को न बढ़ाऊँ। इसी कारण मैं बेकारों की संख्या को नहीं बढ़ा रहा।

"ऐसे कुछ लोग इस देश में भी हैं जो अच्छा-खासा वेतन प्राप्त करते हैं। किन्तु वे भी उससे भी अधिक वेतन वाले स्थान की खोज में लगे रहते हैं। मैं उनको भी बेकारों की सूची में ही गिनता हूँ।

"मैं इस समय नौ सौ डालर स्वयं पर व्यय करता हूँ और मेरा यत्न रहता है कि यह व्यय इससे अधिक न बढ़े। इस प्रकार मैं प्रति मास एक सहस्र डालर की बचत कर लेता हूँ। अब मैं स्वयं को बेकार नहीं समझता क्योंकि अब मेरी आवश्यकताएँ मेरी आय से कम हैं।

"मेरा यह कहना है कि जिनकी आवश्यकताएँ उनके व्यय से अधिक हैं वे सब बेकार हैं। वे बेकार इसलिए हैं क्योंकि वे अपने शरीर की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त धन अर्जित नहीं कर सकते।"

अम्बा ने प्रश्न किया, "क्या शरीर की सेवा के अतिरिक्त भी कुछ है?"

"हाँ, क्यों नहीं। मैंने लिसा को इस सम्बन्ध में बताया था। यह भी नित्य आधा घण्टा वह कार्य करती है। उस पर व्यय तो कुछ भी नहीं होता। यदि कुछ होता भी है तो वह इतना तुच्छ है कि दिन-भर के कार्य के सम्मुख नगण्य है।"

सावित्री ने पूछा, "ऐसा क्या कार्य है वह?"

"हम नित्य प्रातःकाल आधा घण्टा अपने वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध में चिन्तन करने के लिए व्यय करते हैं।"

"पर भैया! इस पर भी तो कुछ-न-कुछ शक्ति का व्यय होता है।"

"भाभी! दिन-भर के कार्य की तुलना में तो यह नगण्य ही है। यही मैंने कहा भी था।"

लिसा ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "माताजी तो कहती थीं कि हमारा

दिन-भर का कार्य भी उसी श्रेणी का है, जिस श्रेणी का ध्यान और समाधि है ?"

अम्बा की समझ में यह विषय नहीं आ रहा था। उसने बी० ए० तक की शिक्षा पाई थी और उसमें भी इतिहास उसका मुख्य विषय था। उसने उठते हुए कहा, "मैं तनिक माताजी से मिलने के लिए जा रही हूँ। मैं सायंकाल तक तो यहीं हूँ, इस बीच आप लोगों से फिर बातें होंगी।"

अम्बा का उठना था कि एक प्रकार से गोष्ठी ही समाप्त हो गई। परन्तु सोमदेव की सेवा की मीमांसा ने सावित्री को सोचने के लिए विवश कर दिया। वह बड़ी गम्भीर स्थिति में अपने कमरे में गई।

सोम और लिसा भी अपने कमरे में विश्राम करने के लिए चले गए। सोम ने अपनी पत्नी से पूछा, "इसका अभिप्राय यह हुआ कि तुम माताजी से अपने अन्वेषण-कार्य के विषय पर विचार-विमर्श करती रही हो ?"

"हाँ, मुझे लगा कि वे मेरे कार्य को समझ रही हैं। उन्होंने मुझसे पूछा था कि मेरे शोध-कार्य में समस्या क्या है ? जब मैंने अपनी समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि ठीक है, फिर कहने लगीं कि मैं परमात्मा की उपासना भी करती हूँ अथवा नहीं।

"मैंने कहा, वह तो मैं नित्य प्रातःकाल किया करती हूँ। उन्होंने उसकी विधि पूछी तो मैंने उन्हें सबकुछ बताया। तब उन्होंने कहा था उनका दिन-भर का यहाँ का कार्य और मेरा वहाँ का कार्य सब एक समान ही है। यह भी परमात्मा की उपासना ही है और वह भी परमात्मा की भक्ति ही है।"

सोम ने कुछ क्षण तक आँखें मूँदकर विचार किया और फिर कहने लगा, "हाँ, वह ठीक कहती हैं। हमारे एक ग्रन्थ में लिखा है, 'जो सर्वत्र प्रसिद्ध है उसके ज्ञान से परमात्मा का ज्ञान प्राप्त होता है। और ज्ञान की प्राप्ति से आत्मा पर विवेक के संस्कार बनते हैं।' माताजी के कहने का अभिप्राय हुआ कि प्रातःकाल ध्यान प्राणायाम आदि कर हम अपनी बुद्धि को परिष्कृत करते हैं। परिष्कृत बुद्धि से हम प्रकृति के रहस्यों की खोज करते हैं और यह खोज एक दिन सत्य तक पहुँचने का साधन होगी। सत्य ही परमात्मा है।"

लिसा पति का मुख देखती रही। सोम ही आगे बोला, "जिस दिन मैंने और मेरे साथियों ने एक चैम्बर को भू-आकर्षण से रहित कर वैज्ञानिकों को दिखाया तब विश्वविद्यालय के चान्सलर अति प्रसन्न हुए और बोले, 'मिस्टर सोम ! तुमने तो परमात्मा की मूँछ का बाल उखाड़ लिया है।'

"तब मैंने पूछा था कि इस बाल उखाड़ने का लाभ क्या होगा ? कुलपति महोदय बोले, 'अभी तो इतना ही कह सकता हूँ कि इसके व्यावसायिक लाभ दृष्टिगोचर नहीं होते परन्तु इसमें बीज है। पृथ्वी अथवा परमात्मा ने हमें इस पृथ्वी पर दो बातों से कैद किया हुआ है। एक तो यह कि हमारा शरीर पृथ्वी से सदा आकर्षित

रहने से हम बन्दी की भाँति यहाँ बन्द हैं। दूसरे, हम वायु के बिना जीवित नहीं रह सकते।

" 'वैज्ञानिकों ने तरल ऑक्सीजन की थैली को वस्त्रों के नीचे रखकर वायु की विवशता से तो पार पा लिया है परन्तु भू-आकर्षण से पार पाने का अभी तक कोई सुगम उपाय उपलब्ध नहीं हो पाया है। भू-आकर्षण का वायु के दबाव से विरोध किया जा रहा है, परन्तु यह उपाय इतना व्ययसाध्य है कि सामान्य मनुष्य इसके प्रयोग का स्वप्न भी नहीं ले सकता।'

"उनका कहना था कि मैंने जो उपाय खोजा है वह भू-आकर्षण को सहज ही निःशेष कर देगा। इतना कहकर फिर वे गम्भीर से हो गए। मैंने इसका कारण पूछा तो कहने लगे कि अब तो तुम भारत जा रहे हो, जब वहाँ से लौटोगे तब बात करेंगे।"

इतना बताकर बड़ी गम्भीरता से सोमदेव ने अपनी पत्नी को कहा, "मैं समझता हूँ कि मेरे इस कार्य की सफलता से समस्त पृथ्वी पर एक प्रकार की क्रान्ति-सी आ जाएगी। इससे धनवान और निर्धन का अन्तर भी कम हो जाएगा।"

इस प्रकार वार्त्तालाप कर सोम और उसकी पत्नी विश्राम करने लगे। एक घण्टा विश्राम करने के उपरान्त वे बाहर ड्राइंगरूम में आकर बैठे और वहाँ रखे रेडियो को ऑन कर समाचार सुनने लगे।

समाचार आरम्भ ही हुए थे। समाचार वाचक बोल रहा था, 'अमेरिका के केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की एक टीम ने एक 'भाररहित चैम्बर' का आविष्कार किया है। उसमें रखी वस्तुएँ भाररहित होने से चैम्बर के साथ ही उठ गईं तथा चैम्बर परीक्षण के कमरे की छत से जा टकराया। इस वैज्ञानिक टीम का नेता एक भारतीय प्रोफेसर है। अमेरिका में इस आविष्कार की पर्याप्त चर्चा है।'

तदुपरान्त अगला समाचार आरम्भ हो गया।

समाचार सुनकर सोमदेव ने रेडियो बन्द कर दिया तो उसकी पत्नी कहने लगी, "अम्बा बहिन हमारी बातों को समझ नहीं पा रही थीं, इसी कारण उन्होंने उठकर माताजी के पास जाने की बात की। मैं समझती हूँ कि हर किसी के सम्मुख हमें अपने वैज्ञानिक प्रयोगों-परीक्षणों की बात नहीं करनी चाहिए, वह हरेक के समझने की बात नहीं है।"

सोमदेव भी यही समझता था।

सोमदेव के पिता तो दोपहर का भोजन सर्वोच्च न्यायालय की कैण्टीन से मँगाकर कर लिया करते थे। बाबा अपने कमरे में भोजन करते थे और परमानन्द भी बाहर ही होता था। इस कारण महिलाएँ ही घर पर होती थीं और वह पृथक् अपना भोजन कर लिया करती थीं। आज भी जब भोजन का समय हुआ तो वे

भोजनालय की ओर बढ़ीं तो सोम का बाबा सोम को अपने कमरे की ओर ले चला। उसने कहा, "तुम मेरे साथ भोजन करोगे।"

"बाबा ! अब यह प्रथा प्रचलित है ?"

"हाँ, जब से घर में परमानन्द की पत्नी आई है, तब से हम प्रातः और सायंकाल की चाय तो ड्राइंगरूम में पीते हैं। रात का खाना ड्राईनिंग हॉल में होता है। दोपहर का भोजन मैं अकेले ही किया करता हूँ। महिलाएँ अपनी बातें करती हैं, जो मुझे रुचिकर नहीं।"

सोम हँस पड़ा। बोला, "ठीक है बाबा ! अब हम बैठकर वह बातें करेंगे, जो महिलाओं को रुचिकर नहीं।"

बाबा भी हँस पड़ा। दोनों कमरे में गए तो उनके लिए प्लेटें रखी हुई थीं और सामने पुलाव और दही रखा था। सोम कहने लगा, "बाबा ! वैसे तो अमेरिका में भी हम मध्याह्न का भोजन अलग-अलग ही करते है क्योंकि हम दोनों की प्रयोग-शाखाएँ दूर-दूर हैं। अपने-अपने विश्राम के कमरे में ही हम चाय-टोस्ट आदि मँगवा कर खा-पी लेते हैं।"

"तब तो ठीक है। तुम्हें भी इसका अभ्यास है।"

दोनों भोजन के लिए बैठे तो बाबा ने ही बात आरम्भ करते हुए कहा, "प्रातः-काल जो कुछ तुमने मुझे बताया था, मैंने उसपर बहुत विचार किया है। उससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि उसके द्वारा तुमने आकाश में विचरने का सुगम उपाय ढूँढ़ निकाला है। जितना तुमने मुझे बताया है उतने मात्र से तो कुछ व्यवहार में आने वाला है नहीं। तदपि इसके गर्भ में बहुत कुछ है।

"मेरे एक बुजुर्गवार बताते थे कि उनके गुरु स्वामी नित्यानन्दजी जब समाधि में बैठते थे तो वे अनायास ही भूमि से दो गज ऊपर उठ जाया करते थे। मैं समझता हूँ कि तुमने भी कुछ ऐसा ही किया है। स्वामीजी अपनी समाधि से अपने चारों ओर के स्थान को भू-आकर्षणरहित कर लिया करते थे। वही तुमने अपने 'एण्टीना' के माध्यम से करने का यत्न किया है।"

"बाबा आप ठीक समझे हैं। समाधि में जब मन एकाग्र होता है तो उसमें से रश्मियाँ निकलने लगती होंगी। हमारे एण्टीना में तो यही होता है। इन शक्ति की रश्मियों से आसपास का स्थान एक प्रकार से तनावमय हो जाता है। यह तनाव उस तनाव से विपरीत होता है जो प्रकृति के 'एटॉमिक पार्टिकल' अपनी गति से करते हैं।

"पर बाबा ! हमारा एण्टीना अभी इतना शक्तिशाली नहीं बना कि वह अपने चारों ओर दस-बारह सेंटीमीटर से अधिक दूर तक प्रभाव स्थापित कर सकें। इस कारण दो घनमीटर स्थान को तनावरहित करने के लिए हमें सैकड़ों एण्टीना लगाने पड़े हैं। मैं अपने एण्टीना की शक्ति को बढ़ाने का यत्न कर रहा हूँ। मेरा लक्ष्य यह

है कि एक एण्टीना ऐसा बना सकूँ कि जिसका प्रभाव तीन घनमीटर तक हो सके। तब मैं एक ऐसा बैलून बना लूँगा कि उसमें रखी वस्तुएँ भाररहित हो जाएँगी। फिर वह बैलून स्वच्छन्दरूपेण आकाश में विचरण करने लगेगा। शेष तो उसको दिशा-दर्शन यन्त्र लगाने रह जाएँगे। वह हम सुगमता से कर लेंगे।"

इस प्रकार दोनों में वार्तालाप चल रहा था। बाबा अपने मन में उत्पन्न हुए प्रकाश का वर्णन कर रहा था। बाबा की बात सुन सोम ने कहा, "बाबा! कम-से-कम मैं यह कह सकता हूँ कि हमारे ऋषियों को, विशेष रूप में 'वैशेषिक दर्शन' के रचयिता को यह सिद्धान्त विदित था। उसके आधार पर ही मैं यह समझ पाया हूँ और फिर मैंने उसके विपरीत प्रभाव उत्पन्न करने का प्रबन्ध किया है। मैं अब यह भी विचार करने लगा हूँ कि अब इस प्रकार के वस्त्र निर्माण होने लगेंगे जिन्हें धारण कर मनुष्य हल्का-फुल्का होकर बिना संकट के मीलों उड़ सकेगा।

"अपने अन्वेषण का कार्य आरम्भ करने से पूर्व ही मैं यह समझ गया था कि मनुष्य भूमि से ऊपर उठकर चलने लगेगा, तब उसको चलने में अधिक कुछ कष्ट नहीं करना होगा। वैज्ञानिक ऐसी नौका का निर्माण करने में तो सफल हो गए हैं जो कि जल और भूमि से ऊपर उठकर जल और स्थल पर चल सकती है। परन्तु वहाँ भू-आकर्षण के बचाव के लिए वायु का प्रयोग किया जाता है। किन्तु जो उपाय मैं निकाल रहा हूँ उसके आधार पर बिना हवा के दबाव का प्रयोग किए ही मनुष्य हल्का होकर इच्छानुसार उड़ने में सफल होगा।"

इस सम्भावना का विचार करते ही बाबा ने मौन धारण कर लिया। वह सोचता था कि क्या यह उसके ही जीवनकाल में हो पाएगा।

भोजन समाप्त होने पर बाबा ने अपने पोते से कहा कि वह अब चार बजे तक विश्राम करेगा।

इसका अभिप्राय था कि सोम अब जा सकता है। सोम बाबा के कमरे से निकल कर ड्राइंगरूम में आया तो वहाँ उसने किसी अपरिचित व्यक्ति को बैठे देखा। सोमदेव उसकी ओर देखने लगा। उसे आया देख वह व्यक्ति उठ खड़ा हुआ और बोला, "आप सोमदेवजी हैं?"

"जी हाँ, बोलिए।"

"अभी कुछ देर पूर्व मैंने रेडियो पर समाचार सुना था कि भारतीय वैज्ञानिक ने एक महत्त्वपूर्ण अन्वेषण किया है। मैं जब समाचार सुन रहा था तो मिस्टर परमानन्द मेरे पास ही बैठे थे। उन्होंने कहा कि वह वैज्ञानिक प्रोफेसर उनके छोटे भाई हैं। उन्होंने यह भी बताया कि वे आज ही भारत आए हैं। यह सुनकर मैं यहाँ इस विषय में जानकारी प्राप्त करने के लिए आ गया हूँ।

"मैं इस घर में आता रहा हूँ। इसलिए जब मैंने चौकीदार से कहा कि मुझे अमेरिका से आए प्रोफेसर साहब से मिलना है तो वह यह कहकर यहाँ बैठा गया कि

वे अभी भोजन कर रहे हैं। इसके उपरान्त इधर आएँगे, तब तुम मिल लेना।"

"हाँ, बोलिए! आप क्या जानना चाहते हैं?"

"मुझे जानना कुछ नहीं है, केवल आपके दर्शन करने के लिए आया था। महापुरुषों के दर्शन करना मेरा जीवन-कार्य है और फिर उनसे...।"

सोम हँस पड़ा। उसने पूछा, "इससे आपको क्या मिलता है?"

"मानसिक सन्तोष। साथ ही...।"

"तब तो ठीक है। यदि आप अमेरिका में होते तो मैं आपसे इस प्रसन्नता की फीस माँग लेता अर्थात् आपकी प्रसन्नता का मूल्य माँग लेता। परन्तु भारत में तो इसका कुछ मूल्य ही नहीं है। इसलिए आप जी भरकर दर्शन कर सकते हैं, मैं अभी खाली हूँ।"

"आप अमेरिका कब गए थे और कब वहाँ से आए हैं?"

"परन्तु यह तो दर्शन के अतिरिक्त है। जबतक इस ज्ञान का उद्देश्य विदित नहीं होगा मैं आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दूँगा।"

आगन्तुक व्यक्ति भी हँस पड़ा। उसने कहा, "मैं आपके भाई परमानन्दजी का साझीदार हूँ। इस कारण आपका परिचय प्राप्त करने का मेरा कुछ तो अधिकार है?"

"परिचय तो आप प्राप्त कर चुके। दर्शन भी कर लिये। अब तो आप उससे कुछ अधिक की बात कर रहे हैं।"

"हाँ, यह तो आप ठीक कह रहे हैं। परन्तु आपने मेरा तो परिचय पूछा ही नहीं!"

"मुझे उसकी आवश्यकता अनुभव नहीं हुई। क्योंकि दिल्ली में अधिक रहने का मेरा विचार नहीं। यदि रहता तो सोच सकता था कि कदाचित् उस परिचय से कुछ लाभ उठा सकूँ।"

"तब भी ज्ञानवर्द्धन का लाभ तो होगा ही।"

"मेरे मस्तिष्क में विज्ञान इतना भरा पड़ा है कि उसमें अब कुछ अतिरिक्त के लिए स्थान रहा ही नहीं है। इसीसे इच्छा नहीं हुई। जैसे पेट भर जाने पर अधिक खाने की अरुचि हो जाती है।"

"अच्छी बात है। मैं आपको कुछ बताने का यत्न नहीं करूँगा। परन्तु यहाँ बैठ तो सकता हूँ न? वास्तव में मैं आपकी माताजी से मिलने के लिए ठहरा हुआ हूँ।"

"हाँ, क्यों नहीं। माताजी अभी भोजन कर रही हैं। भोजन के उपरान्त आएँगी, तब आप मिल लीजिए।"

इतना कहकर सोम ने सोफे की साइड पर लगे बटन को दबाया तो स्पीकर से आवाज सुनाई दी, "जी।" सोम ने उस ओर मुख करके कहा, "कोई सज्जन माताजी से मिलने के लिए यहाँ बैठे हैं। उनको इसकी सूचना दे देना।"

"माताजी को सूचना दे दी गई है। उनको अभी आने में कुछ समय लगेगा। आगन्तुक महोदय के लिए शीघ्र ही कॉफी का प्याला भेजा जा रहा है।"

सोम ने समझा कि यह व्यक्ति घर का ही कोई प्राणी है। इससे वह सतर्क हो बोला, "माताजी आपको कॉफी भिजवा रही हैं, आप आराम से बैठिए।"

सोम भी बैठ गया। फिर बोला, "मुझे विदित नहीं था कि आप इस घर के परिचित व्यक्ति हैं। मैं तो आज सात वर्ष बाद लौटकर आया हूँ।"

वह व्यक्ति मुस्कराया और बोला, "मेरा नाम अविनाश चन्द्र है और मैं आपके भाई परमानन्द के साथ व्यापार में साझीदार हूँ। योजना मेरी है, और पूँजी उनकी है, इस प्रकार हम पर्याप्त लाभ अर्जित कर रहे हैं।"

अब सोम को स्मरण हो आया कि उसका भाई कोई व्यवसाय करता है जिसको सारे परिवार वाले हास्यास्पद समझते हैं। तदपि सोम को उस व्यवसाय के विषय में जानने की रुचि नहीं थी।

वह अभी कुछ सोच नहीं पाया था कि तबतक दो व्यक्तियों के लिए दो प्याला कॉफी आ गई।

: ४ :

भोजन के समय अम्बा ने लिसा से उसके परिवार का परिचय जानना चाहा। अम्बा ने कहा, "भाभी! तुम बहुत सुन्दर होने के साथ-साथ प्रतिभाशालिनी भी लगती हो। आपने डॉक्टरेट किया और फिर हमारी भाषा को भी सीखा-समझा है। यह हम सबका सौभाग्य ही है। परन्तु यह अद्वितीय पुष्प खिला किस वाटिका में, मैं यह जानने की लालसा कर रही हूँ?"

भोजन के लिए चावल का पुलाव बना था। उसमें बादाम, पिस्ता, किसमिस आदि भी डाले गए थे। केसरी रंग था। मीठा और घी से तर-बतर था। उसके साथ दही था। लिसा को यह भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट लगा। तदपि खाते हुए उसे संकोच हो रहा था। उसको सन्देह था कि इतना घी कहीं उसके आमाशय को ही न बिगाड़ दे। इस कारण जब उससे प्रश्न पूछा गया तो वह खाने का बहाना मात्र कर अपना इतिहास बताने में व्यस्त हो गई। उसने कहा, "मेरे पिता का सम्बन्ध यूनान के किसी धनी परिवार से है। परिवार के मुखिया, जो मेरे पिता के ताऊ थे, उस समय राज्य में चांसलर के पद पर प्रतिष्ठित थे। मेरे पिता का नाम 'रीगन' था। वे वहाँ कोई काम नहीं करते थे। अतः उनको चांसलर का अंगरक्षक नियुक्त कर दिया गया।

"आज से लगभग तीस वर्ष पूर्व चांसलर महोदय पोप के दर्शनों के लिए रोम गए तो मेरे पिताजी भी उनके साथ रोम गए थे। यात्रा में मेरे पिताजी चांसलर महोदय के पर्स बियरर भी थे।

"जब वे दोनों सेंट पोल गिरजाघर में, जहाँ कि पोप महोदय के दर्शन किए

जाने थे, जा रहे थे तो उसी समय फ्रांस के प्रीमियर अपनी पत्नी और पुत्री के साथ पोप के दर्शन और उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर निकलते दिखाई दिए।

"मेरी माताजी ने मुझे बताया कि जब उन्होंने मेरे पिताजी को देखा तो किसी अज्ञात आकर्षण से वह चलती-चलती रुक गईं। उन्होंने देखा कि सामने से यूनान के चांसलर और उनके अंगरक्षक पोप के दर्शनों के लिए प्रविष्ट हो रहे हैं। मेरी माता जी ने देखा कि चांसलर का अंगरक्षक भी उन्हीं की भाँति किसी अज्ञात आकर्षण से रुक गया और चांसलर से पीछे हो गया। उन दोनों के साथी इस प्रकार आगे निकल गए थे। चांसलर तो गिरजाघर के भीतर प्रविष्ट हो गए और मेरी माता के माता-पिता गिरजाघर के द्वार से बाहर।

"इस प्रकार एक युवक और एक युवती एक-दूसरे को देखते हुए मौन खड़े रहे। माताजी का कहना है कि तब सहसा मेरे पिताजी ने कहा, 'जरा सुनिए, इधर आइए।'

"मुख्य मार्ग के एक ओर से दूसरी ओर को एक गलियारा जैसा था। पिताजी उस ओर को चल दिए थे। जिस प्रकार लोहा चुम्बक की ओर खिंचा चला जाता है उसी प्रकार मेरी माताजी उस ओर को चल दीं जिधर पिताजी जा रहे थे। दोनों गिरजाघर से निकल उसके पिछले द्वार से बाहर आ गए थे। पिताजी ने वहाँ खड़ी टैक्सी को संकेत किया और उसमें सवार होकर दोनों एयरोड्रम की ओर चल दिए। पिताजी ने पेरिस के दो टिकिट खरीदे और दो घण्टे में ही वे रोम से पेरिस जा पहुँचे।

"पेरिस में एक होटल में रहने की व्यवस्था की और फिर वहाँ की प्रथानुसार दोनों ने विवाह कर लिया। माताजी का कहना था कि उसी समय मेरा बीजारोपण हुआ था। दो दिन पेरिस में रहकर फ्रांस से वे लोग पति-पत्नी के रूप में न्यूयार्क जा पहुँचे। वहाँ मेरे पिताजी किसी फर्म में कार्य करने लग गए।

"न्यूयार्क पहुँचने के नौ मास बाद मेरा जन्म हुआ। जब मैं तीन वर्ष की थी कि एक दिन सहसा मेरे पिताजी की हृदय की गति रुक गई और उनका प्राणान्त हो गया।

"माताजी मुझे लेकर वहाँ से सान फ्रांसिसको आ गईं। सौभाग्य से उनको वहाँ के विश्वविद्यालय में फ्रेंच पढ़ाने का कार्य मिल गया। मेरा पालन-पोषण शिकागो में हुआ है। इस प्रकार मैं वहाँ के विश्वविद्यालय की प्राध्यापिका की कन्या हूँ।

"मैंने बीस वर्ष की आयु में एम०एस-सी० की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद मैंने वहाँ के बायलॉजी के एक प्राध्यापक के अधीन शोधकार्य आरम्भ कर दिया। वह कार्य अभी चल रहा है।

"हमारे शोध का विषय है 'जीवनतत्त्व का स्रोत'। इस विषय पर अन्वेषण करते हुए हमें छः वर्ष हो गए हैं। आज से पाँच वर्ष पूर्व आपके भाई विश्वविद्यालय

की 'साइंटीफिक सोसाइटी' में व्याख्यान दे रहे थे। मैं इनपर रीझ गई। व्याख्यान के उपरान्त वहीं, उसी हॉल में मैं इनसे मिली और इनका परिचय प्राप्त किया। तब इन्होंने बताया था कि ये भारतीय हैं और दो वर्ष से उस विश्वविद्यालय के 'फिजिक्स' विभाग में अध्यापन कर रहे हैं। उसके साथ ही एक विषय पर अनुसन्धान भी कर रहे हैं। मैंने भी अपना परिचय दिया और कह दिया कि मैं उनसे विवाह करना चाहती हूँ।

"इन्होंने कहा कि मैं सुन्दर हूँ और पढ़ी-लिखी भी हूँ। किन्तु विवाह के लिए तो इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ चाहिए।

"मैंने पूछा, क्या ? तो ये बोले, 'यहाँ खड़े-खड़े तो बताना सम्भव नहीं। किसी समय निवास स्थान पर आओ अथवा मुझे अपने निवास स्थान पर आमन्त्रित करो तो विस्तार से बात की जा सकती है।'

"मैंने कह दिया कि यदि इस समय उनको अवकाश हो तो वे हमारे घर चलें। मैंने बता दिया कि मैं अपनी माताजी के साथ रहती हूँ। मेरी माताजी इसी विश्व-विद्यालय में फ्रेंच की अध्यापिका हैं।

"ये बोले हाँ, खाली तो हूँ। तब मैंने कहा फिर चलिए। मेरे पास मोटर है, मैं उसमें आपको ले चलती हूँ।

"ये कहने लगे कि मोटर तो मेरे पास भी है। तब ऐसा करिए कि आप अपनी गाड़ी आगे-आगे ले चलिए, मैं आपके पीछे-पीछे आता हूँ।

"हमने यही किया। वास्तव में हम दोनों माँ-बेटी अपने मन की कर गुजरने के स्वभाव वाली हैं।

"मेरी माताजी को विश्वविद्यालय के आउट हाउस में स्थान मिला हुआ था। मैं वहीं उनके साथ रहती थी।

"जिस समय हम दोनों की मोटरें आगे-पीछे वहाँ पहुँचीं तो माताजी उस समय कहीं जाने के लिए घर से बाहर निकल रही थीं। मैंने संकेत से उनको रोका और गाड़ी से उतरकर उनसे पूछा कि वे किधर जा रही हैं।

"माताजी ने बताया कि वे बाग में टहलने के लिए जा रही हैं।

"मैंने कह दिया कि मैं एक सज्जन को उनसे मिलाने के लिए लाई हूँ।

"मेरी बात सुनकर वे मुस्करा दीं और बोलीं, ठीक है मैं टहलने नहीं जाऊँगी।

"तब तक ये भी अपनी गाड़ी खड़ी कर हमारे समीप पहुँच गए थे। इन्होंने पहुँचते ही मुझसे कहा, मैं समझता हूँ कि कदाचित् ये आपकी माताजी हैं। आप दोनों की सूरत बहुत मिलती-जुलती है।

"उत्तर माताजी ने दिया। बोलीं, 'हाँ, यह मेरी इकलौती पुत्री है। चलिए भीतर चलिए। मैं अब बाहर नहीं जाऊँगी।'

"भीतर पहुँचकर ड्राइंगरूम में बैठे तो माताजी ने कहा कि यह समय तो सॉफ्ट ड्रिंक्स का है, बोलिए आप क्या लेंगे ?

"इन्होंने कहा, कुछ लेने की इच्छा नहीं है। फिर मेरी ओर संकेत कर बोले कि यह कुछ कहना चाहती हैं, मैं समझता हूँ कि यह आपके सामने ही कहें तो और अधिक उपयुक्त होगा।

"कुछ क्षण मौन छाया रहा। फिर ये ही कहने लगे कि आपकी लड़की ने मेरे साथ विवाह करने की इच्छा व्यक्त की है। वैसे तो ये सज्ञान हैं। फिर मेरे साथ यह क्यों विवाह करना चाहती हैं और वह भी आपका परामर्श लिये बिना…?

"मैंने कहा, मैं सज्ञान हूँ और माताजी को बताए बिना भी विवाह करने का अधिकार मुझे है। इसी कारण मैंने आपके सामने अपनी इच्छा व्यक्त की थी। मैं इस सम्बन्ध में किसी अन्य से राय करने की आवश्यकता नहीं समझती।

"इन्होंने कहा कि यही तो मैं कह रहा हूँ कि क्यों, और विवाह मुझसे ही क्यों ?

"मैंने कह दिया कि यह मैं नहीं जानती। आपका व्याख्यान सुनते-सुनते मेरे मन में यह विचार आया है कि आप अनन्य जीवन-साथी सिद्ध होंगे। इसलिए तुरन्त ही आपसे मिलकर अपना प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया था।

"ये कहने लगे कि मेरे कथनानुसार मैं विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका हूँ, इससे पढ़ी-लिखी तो हूँ। किन्तु जिस प्रकार सहसा यह विवाह करने का विचार बना है उसी प्रकार यह विचार विलुप्त भी हो सकता है। मैं भारतीय हूँ और भारतीय होने के नाते मैं यह सब नहीं कर सकता। जीवनपर्यन्त के सम्बन्ध का विश्वास हो तो उस पर विचार कर सकता हूँ।

"तब मेरी माताजी कहने लगीं, 'लव एट फर्स्ट साइट' हमारे परिवार की नस-नस में है। मैं स्वयं भी इसी भावना की शिकार हूँ। और मैं समझती हूँ कि उसी अन्तःप्रेरणा से यह भी ऐसा करने पर विवश है। तदपि आपके विचार को मैं गलत नहीं मानती। विवाह जीवन का सम्बन्ध है। इसलिए मेरी भी यही सम्मति है कि प्रथम आप दोनों परस्पर मेल-जोल स्थापित करिए और यदि आज से दो-तीन मास के उपरान्त भी दोनों में वही भावना रहे तो फिर विवाह किया जा सकता है।

"मुझे माँ के सुझाव से प्रसन्नता हुई तो मैंने इनसे पूछा कि वे इस विषय में क्या कहते हैं तो इन्होंने माताजी से पूछा कि क्या इससे पहले भी मैं कभी किसी व्यक्ति को इस प्रकार मिलाने के लिए लाई थी ? माताजी ने बताया कि यहाँ इसकी आवश्यकता ही नहीं है। लड़की की आयु अब तेईस वर्ष की है। इस विषय में यह स्वतन्त्र है।

"ये कुछ गम्भीर हो गए और कहने लगे कि तब तो यह प्रश्न मैं इन्हीं से पूछूँगा। माँ ने बीच में ही बात रोककर मुझसे कॉफी बनाकर लाने के लिए कहा।"

लिसा आगे की बात बता ही रही थी कि अम्बा ने कहा, "शेष तो सोम से ही पूछ लूँगी, किन्तु तुम इतना बताओ कि तुम लोग कितने वर्ष से विवाहित जीवन व्यतीत कर रहे हो ?"

"हमारा विवाह सन् १९८० में हुआ था। तब से हमारा मकान साझा है। उससे पूर्व मैं माँ के साथ रहती थी। व्यय का हमने परस्पर बँटवारा कर लिया है। कुछ ये देते हैं और कुछ मैं। इस प्रकार हमारा निर्वाह चल रहा है।"

गार्गी ने पूछा, "शराब का व्यय कौन देता है ?"

"विवाह के पूर्व तो यह सब माँ के जिम्मे था। किन्तु विवाह के उपरान्त मैं भी इनकी भाँति 'टी-टोटलर' हो गई हूँ। हम दोनों शराब का स्पर्श तक नहीं करते।"

"इससे तो तुम्हें बड़ा कष्ट हुआ होगा ?"

"ऐसी तो कोई बात नहीं है। हाँ, आरम्भ कुछ अटपटा-सा अवश्य लगा था किन्तु अब तो अभ्यस्त हो जाने से इसमें अधिक आनन्द आता है।"

"अब तक तुम्हारे कोई सन्तान क्यों नहीं हुई ?"

"मैं पिल्ज का प्रयोग करती हूँ। उसके सेवन से पुरुष-संगति की इच्छा नहीं रहती। तदपि ये मेरी संगति का रस लेते रहते हैं।"

"तो क्या सोम भी सन्तान की इच्छा नहीं करता ?"

"मैं जो कुछ भी करती हूँ उनकी सहमति और परामर्श से ही करती हूँ। उनका कहना था कि विदेश में सन्तान उत्पन्न कर वह विदेशी हो जाएगी। उनका विचार है कि यह पुण्य कार्य इस पुण्य भूमि पर ही होना चाहिए।"

अम्बा लिसा पर रीझ गई। उसने उसको अपने समीप खींचा और उसका चुम्बन लेती हुई बोली, "तो क्या तुम एक वर्ष तक यहाँ रहोगी ?"

"नहीं, एक वर्ष तक तो नहीं, यदि आप लोगों की शुभकामनाएँ सफल सिद्ध हुई तो प्रसव के समय यहाँ आ जाऊँगी।"

तभी वेयरा ने स्पीकर से बताया, "माताजी ! बाहर ड्राइंग-रूम में अविनाश जी आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"ओह !" गार्गी के मुख से निकल गया। भोजन समाप्त हुए तो आधा घण्टा हो गया था। वह उठ खड़ी हुई। अम्बा और सावित्री को भी लिसा की बातों में रस आ रहा था।

गार्गी के जाने पर सावित्री ने लिसा की बाँह में बाँह डाली और उसको अपने कमरे की ओर ले गई। कोठी के पाँच मुख्य भाग थे। एक में तो बाबा और उनके पुत्र मंगलानन्द रहते थे। इस कक्ष में चार कमरे थे। एक कमरा बाबा के पास था और दो मंगलानन्द के पास। जिनमें से एक में तो उसका पुस्तकालय और स्टडी-रूम था तथा दूसरा अपने ग्राहकों से मिलने का स्थान था। उसी में मुंशी बैठता था। तीसरा कमरा सोने के लिए था। वही गार्गी के पढ़ने-लिखने का कमरा भी

था। चौथा कमरा पुत्र को मिल गया था।

कोठी का दूसरा कक्ष, जो परमानन्द के अधिकार में था, उसमें भी चार कमरे थे। एक सोने का कमरा, एक परमानन्द से मिलने आने वालों का कमरा, यह घर के ड्राइंगरूम से अतिरिक्त था। अतिथिगृह पृथक् था और महिलाओं के लिए अलग कमरा था।

कोठी का एक तीसरा कक्ष भी था। उसमें भी चार ही कमरे थे। जब घर की लड़की अथवा दामाद आते थे तो उनको वहाँ ठहरा दिया जाता था। इसी में मंगलानन्द अथवा गार्गी के सम्बन्धी भी आकर ठहरते थे।

इसके अतिरिक्त तीन-तीन कमरों के दो सैट और थे। वे सदा सजे-सजाए रहते थे। उनमें कभी मंगलानन्द अथवा परमानन्द के बाहर से आने वाले ग्राहकों को ठहराया जाता था।

सोमदेव को अविनाशचन्द्र के कारोबार में किसी भी प्रकार की रुचि नहीं थी। परन्तु उसको भी वहाँ बैठकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। अविनाश यदि गार्गीदेवी की प्रतीक्षा में था तो सोमदेव को अपनी पत्नी की प्रतीक्षा थी। वह उसको लेकर बाजार घूमने के लिए जाना चाहता था। तब जब किसी प्रकार भी समय बिताना कठिन हो गया तो सोमदेव ने पूछा, "आप यहाँ क्या काम करते हैं?"

अविनाश हँस पड़ा, बोला, "यही बताने के लिए तो मैं यहाँ आया था। मैं आपके भाई के साथ एक व्यवसाय करता हूँ। उस व्यवसाय की योजना तो मेरी है परन्तु धन आपके परिवार का लगा है। हमारी प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी है। उसमें सात व्यक्ति भागीदार हैं। उनमें से एक तो मैं हूँ और पाँच व्यक्ति परमानन्द के परिवार के हैं। इस कारण मैंने कहा है कि योजना तो मेरी है परन्तु धन परमानन्द के परिवार का है।

"हमारी कम्पनी फॉरवर्ड व्यापार करती है। इसमें कुछ विशेषता भी है। हमारी जैसी दूसरी कम्पनियाँ तो केवल वस्तुओं का व्यापार करती हैं। हम मनुष्य की प्रत्येक आवश्यकता के विषय में पेशगी सौदा करते हैं। उदाहरणार्थ यदि किसी महिला के बच्चा होने वाला है तो हम उसका बीमा करते हैं। अर्थात् लड़का होगा अथवा लड़की। हम अपने विचार से लड़का और लड़की होने पर लेन-देन की बात कर लेते हैं।"

"आप इसमें क्या करते हैं?"

"हम अनुमान लगाते हैं और शर्त लगा देते हैं कि लड़का होगा तो माता-पिता को हमें अमुक राशि देनी होगी और यदि लड़की हुई तो हम अमुक राशि देंगे।"

"यह तो एक प्रकार का जुआ हुआ।"

"नहीं, यह जुआ नहीं है। यह तो बस कुछ गणना की बात है। परन्तु यह तो मानव की दुर्बलता का एक रूप है। अन्य एक-सौ-एक बातें हैं।"

सोमदेव को इस वृत्तान्त में रुचि नहीं थी। परन्तु पत्नी की प्रतीक्षा में वहाँ बैठा वह अपने भाई के साझीदार की बात सुनता रहा। उसने पूछा, "आपके चैम्बर के कितने सदस्य हैं?"

"हमारे यहाँ सदस्यता भी दो प्रकार की है। एक तो चैम्बर के पत्तीदार हैं और दूसरे चैम्बर द्वारा व्यापार करने वाले। चैम्बर की हानि-लाभ के उत्तरदायी सात सदस्य हैं। उनमें से मैं एक हूँ। हम प्रत्येक ट्रांजेक्शन पर अपना कमीशन लेते हैं। जो हमारे क्लाइंट हैं वे चैम्बर में नाम लिखवाते हैं। इसके लिए एक सहस्र रुपया प्रवेश शुल्क है। हमारे चैम्बर के बाहरी सदस्यों की संख्या लगभग ५ हजार है। इनमें ३ हजार के लगभग तो भारत के ही हैं, शेष विदेशी हैं। सबसे अधिक अमेरिका में हैं।

"उनके डिपोजिट पर हम केवल तीन प्रतिशत व्याज देते हैं।"

इस प्रकार अविनाश ने अपने व्यवसाय के विषय में सब-कुछ बताकर कहा, "सोम! परन्तु मैं तो आपके कार्य के विषय में जानने के लिए आया था।"

"मेरे कार्य में तो अभी एक 'ले-मैन' के लिए कुछ भी नहीं है। केवल इतना कि आविष्कार करने वाला भारतीय है। दूसरे यह कि इस अनुसन्धान को कुछ लोग भविष्य के लिए अत्यन्त लाभकारी समझने लगे हैं। मैं समझता हूँ कि उन्होंने ही अमेरिका के समाचार-पत्रों में इसका प्रसार किया है और वहाँ प्रकाशित समाचार को आकाशवाणी ने सुना दिया है।"

"हम समझते हैं कि आपके अनुसन्धान-कार्य के सम्बन्ध में, भविष्य की सम्भावनाओं पर, हम एक खाता खोल दें तो उसके हिस्से बिकने लगेंगे। शर्त यह है कि हमारी इस कम्पनी में आप अपने अनुसन्धान-कार्य को बेचने की अनुमति दें। जिस प्रकार सोना, चाँदी, पेट्रोल आदि पर फॉरवर्ड व्यापार हो रहा है उसी प्रकार आपके अनुसन्धान पर भी होने लगेगा।"

"जी नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता। उसका एक कारण तो यह है कि इस कार्य को मैं अकेला नहीं अपितु कुछ वैज्ञानिकों का दल कर रहा है। इसका जितना भी श्रेय है उस दल को सम्मिलित रूपेण है, किसी एक व्यक्ति को नहीं। इससे यदि किसी को किसी प्रकार का कोई आर्थिक लाभ होता है तो हमारा विश्वविद्यालय उसमें से दस प्रतिशत का भागीदार भी है। इस कारण वहाँ के चान्सलर की स्वीकृति भी आवश्यक है।"

"यह सब हम आपके वकील साहब बनकर कर देंगे।"

"जी नहीं, अपने साथियों से परामर्श किए बिना यह कार्य नहीं किया जा सकता है।"

तभी गार्गी आ गई। अविनाश ने उठकर उसका स्वागत किया। बोला, "मैं तो सोम जी से मिलने के लिए आया था। इनको अपनी कम्पनी के अधीन एक

'डील' करने का परामर्श दिया है। मैं जानता था कि हमारे व्यापार के विषय में ये कुछ नहीं जानते होंगे, अतः मेरी बात को स्वीकार नहीं करेंगे। इस कारण मैं आपकी सिफारिश की आशा कर रहा हूँ।"

"मैं इस विषय में इसके पिताजी से विचार-विमर्श कर फिर इससे बात करूँगी। वे ही सोम से इस विषय में बात करेंगे। तुम परमानन्द से कहना कि वह अपने पिताजी से बात करे।"

अविनाश ने उठते हुए कहा, "हाँ, आपका कहना ठीक है। मैं समझता हूँ कि अमेरिका के व्यापारियों का मण्डल अब इनसे मिलने के लिए आने लगेगा। इसलिए मैं चाहता था कि प्रथम अवसर हमको मिलना चाहिए।"

"ठीक है, सोम के पिता इनसे बात करेंगे।"

"माताजी! मैं आशा करता हूँ कि इस विषय पर जो कुछ भी होगा, उसका प्रथम अवसर हमको ही मिलेगा।"

इस प्रकार अविनाशचन्द्र से वार्त्तालाप समाप्त हुआ और वह चला गया।

: ५ :

मध्याह्नोत्तर की चाय के समय सोम का पिता और जीजा दोनों ही आ गए थे। मध्याह्न के भोजन के विपरीत इस समय पूर्ण परिवार एक स्थान पर एकत्रित होकर चाय पीने के लिए बैठा हुआ था। जीजा और पिता के मध्य सोम बैठा था। अम्बा तथा माताजी के मध्य में लिसा थी। परमानन्द और मंगलानन्द के मध्य में बाबा विश्वेश्वरानन्द बैठे थे। परमानन्द की पत्नी सावित्री गार्गी के समीप बैठी थी। अम्बा का छः वर्षीय पुत्र महेन्द्र भी उपस्थित था।

परमानन्द अपने पिता को समझा रहा था कि उसके व्यवसाय का साझीदार अविनाश सोम के आविष्कार को क्रय करना चाहता है। उसका विचार है कि उस अन्वेषण में बहुत धन है।

पिता ने कहा, "इस सम्बन्ध में उसे सोम से बात करनी चाहिए थी। बार-रूम में भी इसकी चर्चा हो रही थी। मेरी तो विज्ञान विषय पर कोई रुचि नहीं है। इसलिए तुम जानो और तुम्हारा भाई जाने।"

"सोम का तो कहना है कि अपनी कार्य करने वाली मण्डली के परामर्श के बिना वह कुछ नहीं करेगा और माताजी ने कहा है कि आप सोम से हमारी सिफारिश कर देंगे।"

"परमानन्द! तुम अपने जीजाजी से बात करो। इनकी रुचि वैज्ञानिक विषयों में है। वे तुम दोनों के हितों का ही विचार कर अपनी राय बताएँगे।"

"हमारे पास केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष के कार्य का लाभ उठाने का अधिकार है। दो सहस्र डालर की अग्रिम राशि देकर हमने उसका अनुबन्ध कर लिया था।"

"परन्तु वहाँ तो सोम की पत्नी कार्य कर रही है ?"

"तो उसको विदित होना चाहिए ।"

"लिसा !" मंगलानन्द ने पुत्रवधू को सम्बोधन किया । लिसा ने उसकी ओर देखा तो वह बोला, "परमानन्द कह रहा है कि इनकी कम्पनी ने केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्राणिशास्त्र विभाग के अध्यक्ष से किसी आविष्कार के विषय में किसी प्रकार का कोई अनुबन्ध किया हुआ है, तुम्हें इस विषय में कुछ ज्ञान है क्या ?"

लिसा ने कुछ सोचा और फिर पूछने लगी, "युनिवर्सल सिण्डीकेट फॉर फॉरवर्ड बिजनिस नामक कम्पनी इन भाई साहब की है ?"

"हाँ ।"

"हमारी टीम को उस सिण्डीकेट की ओर से दो सहस्र डालर की राशि अग्रिम रूप में प्राप्त हुई है । इसका तो मुझे ज्ञान है । क्योंकि उस धन से हमने एक 'इले-क्ट्रोनिक माइक्रोस्कोप' खरीदकर अपने विश्वविद्यालय को भेंट कर दिया है ।"

अब बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए परमानन्द ने कहा, "उस अनुबन्ध में यह है कि यदि इनके आविष्कार से कुछ लाभ की आशा हुई तो वह लाभ हमारी फर्म के द्वारा होगा । हम उसमें से अपना कमीशन लेंगे । हमारे मन में यह है कि इनकी टीम उस विषय में कुछ ऐसा करने वाली है कि जो हमारे मन में है । इनके आविष्कार पर नोबल पुरस्कार मिल सकता है । उस पुरस्कार पर और उससे इनके आविष्कारों पर लिखी गई पुस्तक पर हम अपनी रॉयल्टी लेंगे ।"

"परन्तु उसमें एक बात यह भी है कि जब हम किसी प्रकार का आर्थिक लाभ करेंगे तो उसमें हमें इनका कमीशन देना पड़ेगा ।

"अभी तक हमारी किसी की भी यह इच्छा नहीं है कि अपने आविष्कार से हम किसी प्रकार का लाभ प्राप्त करें ।

"इससे भी बढ़कर समस्या यह है कि जब तक उस आविष्कार पर किसी प्रकार के आर्थिक लाभ का प्रश्न उपस्थित होगा, उससे पहले ही हमारी टीम भंग हो जाएगी । यदि टीम ही भंग हो गई तो वह अनुबन्ध भी स्वाभाविक ही समाप्त हो जाएगा ।"

मंगलानन्द और मोहनलाल को यह सुनकर हँसी आने लगी । मंगलानन्द ने परमानन्द से पूछा, "इस पर तुम्हारा कितना कमीशन तय हुआ है ?"

"दो प्रतिशत कमीशन तय हुआ है । हमें आशा है कि यदि इनके आविष्कार द्वारा किसी निर्जीव नारी से किसी जीव की सृष्टि हो गई तो उससे करोड़ों डालर की आय होगी । उस समय यदि हम इनका प्रचार कर सके तो हम भी मालामाल हो जाएँगे । अन्यथा कम-से-कम दो प्रतिशत कमीशन तो मिलेगा ही ।

"हमारा अनुमान है कि इस एक जन्तु से ही हम करोड़पति बनने वाले हैं ।"

लिसा मुस्कराती हुई यह सब सुन रही थी। परमानन्द की बात समाप्त होने पर वह कहने लगी, "अब, जब मुझे विदित हो गया है कि इस डील में भाई साहब की सिण्डीकेट है तो फिर मैं यत्न करूँगी कि टीम भंग न हो, तदपि जो कुछ होगा वह होगा तो सर्वसम्मति से ही।"

परमानन्द बोला, "परन्तु सोम के आविष्कार का मूल्य अधिक है। मैं उसके लिए डील करने को उत्सुक हूँ।"

आखिर सोमदेव को बोलना ही पड़ा। उसने कहा, "मैं अपने आविष्कार से अधिक लाभ की आशा करता हूँ। क्योंकि इसका प्रयोग मनुष्य की सुख-सुविधा के लिए किया जाएगा।"

मोहनलाल ने पूछा, "कितने लाभ की आशा करते हो?"

"मैं आशा कर रहा हूँ कि हम हवाई जहाज के भीतर भू-आकर्षण की शक्ति में कमी करने में सफल हो जाएँगे। इससे हवाई जहाज को कम शक्ति लगानी होगी, उससे ईंधन की बचत होगी। पुराणों में वर्णित कथाएँ कि देवतागण सहज ही आकाशमण्डल में विचरण किया करते थे, उसी प्रकार हम भी आकाश में स्वेच्छा से विचर सकेंगे। इससे हमें बहुत लाभ होगा।"

"तो फिर सोम," परमानन्द प्रफुल्लित होता हुआ कहने लगा, "हम प्रथम व्यक्ति हैं जो तुमसे इस विषय पर मिलकर प्रस्ताव करने वाले हैं। इस कारण हमारा अधिकार प्रथम होना चाहिए।"

"हाँ, यह तो है। किन्तु भाई साहब! यह बात तो अमेरिका में ही हो सकती है, यहाँ भारत में बैठकर नहीं। सबसे पहले तो मुझे अपनी टीम से तुमसे डील करने का अधिकार प्राप्त करना होगा।"

इस प्रकार बातें चलती रहीं और अल्पाहार भी। चायपान समाप्त हुआ तो सोमदेव के बहनोई मोहनलाल ने सोमदेव को अपनी मोटर में बैठाया और उसको घुमाने के लिए ले गया। मोहनलाल और सोमदेव पिछली सीट पर बैठे थे, आराम से बातें कर रहे थे। मोटर चलाने के लिए ड्राइवर था। मोहनलाल समझना चाहता था कि सोमदेव जो आविष्कार कर रहा है उसका क्या प्रभाव होने वाला है अथवा क्या-क्या हो सकता है।

सोमदेव ने अपने बहनोई को समझाते हुए कहा, "जिस प्रकार जल में लकड़ी अथवा हवा के बुलबुले को छोड़ा जाए तो वे ऊपर को उठने लगते हैं, उसी प्रकार जिस किसी वस्तु के भीतर हम भू-आकर्षण का तनाव कम कर देंगे, वह इस वायु-मण्डल में उसी बुलबुले की भाँति ऊपर को उठना आरम्भ कर देगी।"

मोहनलाल चुपचाप सुनता रहा।

सोमदेव आगे बोला, "मैंने इसी के एक और उपाय का आविष्कार किया है। उस आविष्कार में मैं अथवा कोई अन्य व्यक्ति सफल हो गया तो वह मनुष्य को

बहुत बड़ी जटिल समस्या से मुक्त करने वाला सिद्ध होगा ।

"फिर तो मनुष्य देव-पद ही प्राप्त कर लेगा ।"

मोहनलाल पाराशर की दृष्टि में भी यह असम्भव नहीं था । इसलिए उसने कहा, "मैं यह कल्पना कर रहा हूँ कि मनुष्य के लिए अब ऐसे वस्त्रों का निर्माण सम्भव हो जाएगा जिनको पहनकर वह हाथ में छड़ी लिये भूमि से सौ गज ऊपर घूम-फिर सकेगा ।"

अब तो दोनों ही विस्मय में एक-दूसरे का मुख देखने लगे । मोहनलाल ने आगे कहा, "परमात्मा ने हमें पृथ्वी पर बन्दी बनाया हुआ है । हम उसके बन्दीगृह से छूट जाएँगे ।"

"परन्तु जीजाजी ! वर्तमान ज्ञान से तो हम इस स्वतन्त्रता को प्राप्त कर लेने पर भी इसका प्रयोग नहीं कर पाएँगे ।"

"इस अन्तरिक्ष में हमारी स्थिति ऐसी हो जाएगी जैसे रेल, मोटर, हवाई जहाज बनने से पहले थी ।"

इन बातों में ही उनका भ्रमण समाप्त हो गया ।

: ६ :

अम्बा लिसा को लेकर अपनी सिविल लाइन्स वाली कोठी पर चली गई । सोमदेव और मोहनलाल पूर्व निश्चयानुसार रात्रि को भोजन के समय वहाँ पहुँच गए ।

जब सब लोग भोजन करने बैठे तो लिसा ने अपने पति से कहा, "मैं एक बात का विचार कर रही हूँ ।"

"क्या ?"

अम्बा उनके वार्त्तालाप को सुनकर मुस्कराने लगी थी । मोहनलाल इस नाटक को उत्सुकता से देखने को लालायित-सा दीखता था । वह विस्मय में अपनी पत्नी की ओर देख रहा था ।

लिसा ने रहस्य को प्रकट करते हुए कहा, "जब तक मैं भारतवर्ष में हूँ तब तक मेरा नाम लिसा नहीं अपितु 'सरस्वती' होगा ।"

"ऐसा क्यों भला ?"

"बात यह है कि जिस भाषा का मैं यहाँ पर प्रयोग कर रही हूँ उसमें मेरा वर्तमान नाम उपयुक्त नहीं है । बहिन अम्बा कह रही थीं कि भारत की भाषा में इस शब्द का अर्थ कुछ अच्छा नहीं है ।"

मोहनलाल ने पूछा, "क्या अंग्रेजी भाषा में इसका कोई अर्थ है ?"

"एक दिन मैंने अपनी माताजी से अपने नाम के अर्थ के विषय में चर्चा की थी । तब उन्होंने बताया था अंग्रेजी शब्द 'लिसोम' जिसका अर्थ होता है 'फुर्तीली' अथवा 'लचकदार' का अपभ्रंश 'लिसा' बन गया है ।"

सोम बोला, "परन्तु डियर ! यह नाम तुम्हारी प्रकृति के सर्वथा अनुकूल ही तो है। तुम शत-प्रतिशत लचकदार अथवा फुर्तीली ही तो हो। तभी तो तीन देशों की मिट्टी से बनी चौथे देश के रहन-सहन को ग्रहण कर रही हो।"

"आप जो कुछ भी कहिए अथवा समझिए। जब तक मैं सान फ्रान्सिसको के हवाईपत्तन पर नहीं उतरती, तब तक मैं सरस्वती ही रहूँगी।

"अब मैं लचकदार भी नहीं रहना चाहती। मेरी रीढ़ की हड्डी अब पर्याप्त कठोर हो गई है।"

अम्बा कहने लगी, "परन्तु भाभी ! अपने विशेष गुणों से विहीन 'सरस्वती' तो शोभा नहीं पा सकेगी।"

"सरस्वती के विशेष गुण क्या हैं ? मैं तो समझती थी कि सरस्वती वाणी का नाम है और मैं तीन भाषाओं को जानती हूँ तथा चौथी भाषा को सीखने का यत्न कर रही हूँ।"

"हाँ, है तो यह भाषाओं की ही देवी। परन्तु भाषा तो वाणी का स्वरूप ही है। वाणी की यह देवी उस भाषा में लालित्य भरती है। यही उसका दैवत्व है। अपनी वीणा से देवी सरस्वती वाणी में लालित्य भरती है। सरस्वती को अपनी वीणा बहुत प्रिय है। सर्वत्र हम उसको इसी रूप में देखते हैं।"

"कहाँ देखते हैं ?"

"चित्रों अथवा मूर्तियों में।"

"मैंने तो देखी नहीं।"

"भोजन कर लो फिर मैं तुमको अपने पूजागृह में ले चलूँगी, वहाँ उसकी मूर्ति को देख लेना।"

लिसा मौन हो गई। वह विचार करने लगी कि अम्बा बहिन के घर पर भी पूजागृह है। पूजागृह में क्या होता है, यह जानने की उसकी उत्सुकता बढ़ने लगी। इसी उत्सुकता में वह भोजन-समाप्ति की प्रतीक्षा करने लगी।

भोजन समाप्त कर सब लोग ड्राइंगरूम में जा बैठे। कॉफी वहीं बैठकर पी जाती थी। वे लोग कॉफी पी रहे थे कि लिसा ने अम्बा से पूछा, "बहिनजी ! आप पूजागृह में कब जाएँगी ?"

अम्बा इसका अभिप्राय समझ गई थी। वह कॉफी का प्याला हाथ में लिये ही उठ खड़ी हुई। उसी प्रकार लिसा ने उसका अनुसरण किया।

दोनों युवतियाँ उठकर साइड-रूम में चली गईं। उस कमरे में मेज-कुर्सियाँ नहीं लगी थीं। फर्श पर नारियल का टाट बिछा हुआ था। सामने दीवार के साथ एक हाथी-दाँत की चौकी पर हाथी-दाँत में ही सरस्वती की वीणा बजाती हुई, जो लगभग एक फुट ऊँची होगी, मूर्ति रखी थी।

लिसा ने मूर्ति को देखा तो बोल उठी, "यह तो एक प्रकार का 'गिटार' है ।"

"हाँ, परन्तु यह कोई सामान्य गिटार नहीं है। इसके स्वर बहुत मीठे और भावोत्पादक होते हैं ।"

"मुझे कभी वीणा सुनने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ। अम्बा बहिन ! आप बजा लेती हैं वीणा ?"

"नहीं, अभी तो मैं सीखती ही हूँ ।"

"तो कृपा कर एक बार बजाकर तो दिखाइए ।" लिसा ने आग्रह किया।

"मेरा वीणा का ज्ञान और अभ्यास अभी ऐसा नहीं है कि उसे सुनकर तुम किसी प्रकार का भी अनुमान लगा सको । हाँ, यदि आप चाहें तो मैं एक टेप आपको सुना सकती हूँ जो वीणा के प्रख्यात वादक का है ।"

"चलिए, टेप ही सुना दीजिए । उससे भी कुछ-न-कुछ तो ज्ञान हो ही जाएगा ।"

"परन्तु भैया बाहर बैठे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे होंगे ।"

"यदि कुछ सुनने योग्य हुआ तो वे भी यहीं आ जाएँगे ।"

अम्बा ने कॉफी समाप्त की और प्याला रखकर आलमारी खोल उसमें से 'टेप-रिकॉर्डर' निकाला । उसे ऑन कर मूर्ति के सामने वाली चौकी पर रख दिया और लिसा को लेकर वह सामने बिछे गद्दे पर बैठ गई । वीणा बजना आरम्भ हुआ ।

प्रारम्भ से ही वह लिसा को बहुत ही मधुर और आकर्षक लगी । इसलिए वह दत्तचित्त होकर सुनने लगी । ज्यों-ज्यों स्वर का विस्तार होता जाता था त्यों-त्यों उसका आकर्षण बढ़ता जा रहा था । लिसा स्वयं को भूलकर उन स्वरों में खो गई थी । उसने आँखें मूँद ली थीं ।

बाहर ड्राइंगरूम में बैठे मोहनलाल और सोमदेव ने वीणा का स्वर सुना तो वे भी पूजागृह में आ गए । दोनों युवतियाँ आँखें मूँदे दत्तचित्त होकर वीणावादन सुन रही थीं । दोनों ही रस-विभोर थीं ।

मोहनलाल ने सोमदेव की ओर देखा, मानो पूछ रहा हो क्या विचार है ? सोमदेव ने संकेत किया "बैठिए ।" इस प्रकार वे दोनों भी गद्दियाँ लेकर उनके समीप ही चुपचाप बैठकर सुनने लगे ।

यह विख्यात वीणावादक पण्डित महेश्वरानन्द के सवा घण्टे के कार्यक्रम की रिकार्डिंग थी । सोम तो सुनते-सुनते ऊँघने लगा था । किन्तु वह अपनी पत्नी का बहुत मान करता था । इस कारण चुपचाप बैठा रहा । मोहनलाल वीणा के मधुर स्वरों का रसास्वादन करता हुआ आँखें मूँदे बैठा था ।

सवा घण्टे-भर के रसमय स्वरों के संग्रह को सुनाकर जब टेप-रिकार्डर ने 'खट' का शब्द किया तो लिसा की आँख खुलीं । अम्बा रिकार्डर पर से टेप को निकाल रही थी । दोनों पुरुष उनके पीछे बैठे-बैठे आधे लेटकर सो रहे थे ।

उन्हें उस दशा में देखकर लिसा अपनी हँसी नहीं रोक सकी। उसके मुख से निकल गया, "शायद इसी प्रकार के लोगों के लिए अंग्रेजी में एक कहावत है 'प्लेइंग द फ्लूट इनफ्रंट ऑफ डंकीज' ।"

यह सुनकर तो अम्बा भी अपनी हँसी नहीं रोक सकी। दोनों के जोर-से हँसने पर सोमदेव और मोहनलाल की नींद खुल गई। दोनों युवतियों को हँसते देख अपनी झेंप मिटाने के लिए वे भी हँसने का बहाना करने लगे।

लिसा बोली, "बहिनजी ! अब तो मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि अब मेरा नाम तो सरस्वती ही होगा। न केवल भारत के लिए अपितु सदा, सर्वदा और सर्वत्र के लिए। इसके साथ ही मैं यत्न करूँगी कि देवी के इस गुण को मैं अपने जीवन में भी उतार सकूँ। मेरा यह यत्न शीघ्र ही आरम्भ हो जाएगा और आजीवन चलता रहेगा।"

सोम ने पूछा, "बहुत पसन्द आया है ?"

"आप नहीं समझ पाएँगे, पुरुष हैं न इसलिए।"

मोहनलाल ने सोमदेव की सहायता करते हुए कहा, "परन्तु भाभी ! यह जिसकी आप रिकार्डिंग सुन रही थीं, वह तो पुरुष ही है।"

"होगा। किन्तु मेरा विश्वास है कि पूर्वजन्म में वह अवश्य ही नारी रहा होगा।"

यह सुन तीनों हँसने लगे और लिसा ने भी उनके स्वर में स्वर मिला दिया।

पूजागृह से निकलते हुए लिसा ने फिर कहा, "बस, आज से मेरा नाम सरस्वती होगा और मैं आजीवन वीणा का अभ्यास करूँगी। मुझे विश्वास है कि मैं इस कला में निपुण हो जाऊँगी।"

सोमदेव बोला, "श्रीमतीजी ! अब रात के ग्यारह बज चुके हैं, अब हमें सोना चाहिए।"

इस प्रकार सब सोने के लिए चल दिए।

दूसरे दिन प्रातः जब लिसा और सोमदेव की नींद खुली तो उस समय काफी दिन निकल आया था। नींद खुलने पर दोनों एक-दूसरे का मुख देखने लगे। लिसा बोली, "रात का अनुभव तो पहले से बहुत ही विलक्षण था।"

"हाँ, विलक्षण ही था। मैं समझता हूँ कि यह रात जो तुमने वीणा सुनी थी उससे उत्पन्न उल्लास का परिणाम था। कल रात तुम बहुत ही प्रसन्न थीं।"

"रात मैंने 'पिल्ज' भी नहीं ली थीं।"

"उसका रस तो तुमको आया ही होगा। तुम जब पिल्ज लेती हो उसका प्रभाव तो तुम्हारे शरीर पर पड़ता होगा। रात तुम्हारा व्यवहार बहुत ही उन्मादक और प्रेममय था।"

"तो अब मैं दो बातों की ओर ध्यान दूँगी। एक तो मैं आपको बता ही चुकी

हूँ कि अब मेरा नाम सरस्वती होगा तथा मैं अपने नाम को सार्थक सिद्ध करने के लिए वीणावादन सीखना आरम्भ कर दूँगी। दूसरे यह कि अब मैं 'पिल्ज' का प्रयोग बन्द कर दूँगी।"

यह सुनकर सोम की हँसी छूट गई। हँसकर बोला, "तब तो मुझे लगभग एक दर्जन बच्चों के पालन-पोषण की चिन्ता करनी पड़ जाएगी।"

"नहीं, ऐसा क्यों? यदि हम पशु नहीं बने तो मैं समझती हूँ कि तीन से अधिक बच्चे नहीं होंगे।"

"परन्तु अमेरिका में तो वीणा सीखी नहीं जा सकेगी।"

"तो मैं अमेरिका छोड़ दूँगी।"

"और तुम्हारा वह अनुसन्धान-कार्य ?"

"वह अब मुझे जल मथने के समान लगने लगा है।"

"परन्तु मेरा कार्य तो जल मथने के समान नहीं है।"

"हाँ, यह विचारणीय है। दोनों बातों का समन्वय ढूँढ़ना होगा। कोई-न-कोई मार्ग निकल ही आएगा।"

"जिस प्रकार अपना विवाह का साथी ढूँढ़ निकाला है ?"

लिसा हँस पड़ी। बोली, "विवाह की तो समस्या ही नहीं थी। वह तो कोई व्यक्ति पति बनने योग्य दिखाई नहीं दे रहा था। विवाह से पूर्व एक दिन की बात है। मेरी माँ ने मुझसे पूछा, 'तुमने यह अपना पति कहाँ पाया है ?'

"मेरा कहना था, 'माँ ! मुझे यह उसी प्रकार मिल गया है जिस प्रकार तुमको मेरे पिताजी मिल गए थे।' माँ का इससे समाधान हो गया। परन्तु मैं तो आज अब अनुभव कर रही हूँ कि मैंने पति पाया है। आज समझ पाई हूँ कि मेरे और पति के बीच कमबख्त ये गोलियाँ दीवार बनकर खड़ी थीं। अब मैं इनको अपने तथा पति के बीच कभी नहीं आने दूँगी।"

"मैं समझता हूँ कि हमारे जीवन का काँटा बदल रहा है। कदाचित् हमारी गति की दिशा बदलने लगी है, वह अमेरिका से लौटने की ओर मुड़ती दिखाई दे रही है। अब तुम तो संगीत अकादमी में जाकर वीणावादन सीखोगी और मैं बाबा के कमरे में बैठ उनसे वाद-विवाद और अध्यात्मचिन्तन किया करूँगा।"

लिसा ने बात बदलकर कहा, "बहुत समय हो गया है। हमें स्नान आदि कर लेना चाहिए।"

सोम ने अपनी कलाई पर बँधी घड़ी में समय देखा और लपककर उठ कपड़े पहनने लगा। सोम और उसकी पत्नी अभी स्नान ही कर रहे थे कि वकील साहब के डाइनिंग हाल में घण्टी बजने लगी। सोम बोला, "लिसा डियर ! जल्दी करो, यह घण्टी हमारे लिए बज रही है।"

"हाँ, परन्तु डियर ! अब मैं लिसा नहीं हूँ।"

दोनों ने शीघ्रता में स्नान किया और वस्त्र पहनकर बाहर को भागे। डाइनिंग हाल में पहुँचकर देखा कि उनके बहिन-बहनोई तथा उनके पुत्र उनकी प्रतीक्षा में बैठे हैं।

उनको आया देख अम्बा बोली, "भैया! जल्दी करो। अभी-अभी पिताजी का फोन आया था कि हमारे प्रधानमन्त्री आपसे मिलना चाहते हैं। वे आपके उत्तर की प्रतीक्षा में हैं।"

यह सुनकर तो सोम कुछ परेशानी अनुभव करने लगा। उसे परेशान-सा देख मोहनलाल ने पूछा, "क्यों, क्या बात है, बहुत परेशान दिखाई देते हो?"

"मुझे डर है कि कहीं लिसा के भ्रमण के कार्यक्रम में किसी प्रकार की बाधा न आ खड़ी हो। इसका सम्बन्ध मेरे अनुसन्धान-कार्य से है।"

"तभी तो परमानन्द कह रहा था कि तुम उसकी सिण्डीकेट से अनुबन्ध कर लो, तब तुम्हारे कार्यक्रम में किसी प्रकार का विघ्न पड़ने की सम्भावना नहीं रह जाएगी।"

"हाँ, कुछ तो करना ही पड़ेगा।"

तभी टेलीफोन की घण्टी बजी। सोम उठकर बाहर ड्राइंगरूम में जाकर फोन सुनने लगा। उसके जाने पर लिसा बोली, "जीजाजी! रात की वीणा सुनने के बाद तो मेरा जीवन-दर्शन ही बदलने लगा है। मेरा मार्ग बदल गया है। मैं इस वाद्य-यन्त्र को सीखने के लिए कृत संकल्प हूँ। यह अमेरिका में हो नहीं सकता। इसलिए मुझे तो भारत में ही रहना होगा।"

"जो अनुसन्धान-कार्य तुम इस समय कर रही हो, यह उससे भी आवश्यक लगने लगा है?"

"आवश्यक अथवा अनावश्यक की बात तो मैं जानती नहीं। मुझे उसकी अपेक्षा यह अधिक रसमय लगने लगा है। अब तो मुझे अपने अनुसन्धान का विषय केवल जल-मन्थन जैसा ही दिखाई देता है। मैं अब लिसा नहीं रही, मुझमें आमूलचूल परिवर्तन हो गया है। मैं सरस्वती हो गई हूँ और अपना जीवन कलात्मक तथा रसमय बनाने के लिए लालायित हो रही हूँ।"

वे लोग कुछ उत्तर दें इससे पूर्व सोमदेव फोन सुनकर वापस आ गया। वह आकर कुर्सी पर बैठा और बोला, "लिसा डियर!"

इससे आगे वह कहता-कहता रुक गया। उसकी पत्नी ने उसको बीच में ही रोक दिया था। वह बोली, "लिसा नहीं, सरस्वती।"

सोम को हँसी आ गई। कहने लगा, "क्षमा करना, अभ्यास छूटने में समय लगेगा।"

उसके बाद उसने बताया, "पिताजी का फोन था। वे बोले कि मैं तुरन्त कोठी पर पहुँच जाऊँ। कोई बहुत बड़ा व्यक्ति मेरी प्रतीक्षा में बैठा है।"

मोहनलाल बोला, "ठीक है, वह तो प्रतीक्षा कर ही रहा है। हम अब अल्पाहार की मेज पर बैठे हैं और अल्पाहार भी तैयार है। इसलिए अल्पाहार करके ही जाना चाहिए।"

इधर अल्पाहार आरम्भ हुआ उधर मोहनलाल ने अपने चपरासी को टैक्सी लाने के लिए भेज दिया।

जब तक टैक्सी आई सोम और सरस्वती जाने के लिए तैयार खड़े थे। तुरन्त टैक्सी में बैठे और पिताजी की कोठी पर पहुँच गए।

सोम के टैक्सी से उतरते, चपरासी द्वार खोलने आया और सोम से कहने लगा, "भैया ! भीतर बड़ी उत्सुकता से आपकी प्रतीक्षा हो रही है।"

टैक्सी से उतरकर लिसा तो भीतर अपनी सास के कमरे में चली गई और सोम ड्राइंगरूम में चला गया।

ड्राइंगरूम में पहुँच सोम ने देखा कि पिता पण्डित मंगलानन्द किसी गौर वर्णीय सुन्दर व्यक्ति से बातें कर रहा है। सोम के वहाँ पहुँचते ही वकील साहब बोले, "ये मिस्टर किसिंजर हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के भारत में राजदूत। तुमसे कुछ बात करने के लिए आए हैं।"

इतना परिचय कराकर वकील साहब तो अपने स्टडी-रूम में चले गए। सोम ने किसिंजर से हाथ मिलाया और पूछा, "चाय-कॉफी कुछ लीजिएगा ?"

"वकील साहब ने पिला दी है। आपकी प्रतीक्षा करते हुए पैंतालीस मिनट से अधिक समय हो गया है।"

"क्षमा कीजिए। भेंट का समय पूर्व निर्धारित न होने से...।"

"उसके लिए समय ही नहीं था। साढ़े आठ बजे ही वाशिंगटन से फोन आया कि मैं आपसे तुरन्त मिलकर आपके अनुसन्धान के विषय में बात करूँ।"

सोमदेव चुपचाप सुनता रहा। तब सहसा किसिंजर ने पूछ लिया "आपकी पत्नी कहाँ है ?"

"वे अपनी सास के पास बैठी हैं।"

"उन्हें बुला लीजिए। वे भी हमारी बात में सहायक हो सकती हैं।"

सोम ने घण्टी का बटन दबाया तो स्पीकर से आवाज आई, "हाजिर हूँ।" सोम ने स्पीकर की ओर मुख कर कहा, "लिसा को भेज दो।"

"जी, उनको कहने जा रहा हूँ।"

लिसा आई तो उसका परिचय राजदूत से करा दिया गया। राजदूत ने बात आरम्भ करते हुए कहा, "मुझे अपने देश के विदेशमन्त्री की आज्ञा हुई है कि आप भी हमारी बातचीत में सहायक हो सकती हैं। इस कारण आपको कष्ट दिया गया है।"

सरस्वती सुनती रही।

किसिंजर बोला, ''डॉक्टर सोमदेव ने जो आविष्कार किया है वह हमारी सरकार ने 'फ्रीज' कर लिया है। अब आप उसे किसी के पास बेच नहीं सकते।''

पिछले दिन जब अविनाशचन्द्र ने कुछ इस प्रकार की बात की थी तो तभी सोम समझ गया था कि उसके आविष्कार से बहुत धन मिलने की सम्भावना है। इस कारण उसने कहा, ''परन्तु इसकी बात तो पहले ही एक पार्टी से हो चुकी है।''

''किससे ?''

''यूनिवर्सल सिंडीकेट फॉर फॉरवडिंग बिजनिस।''

''ओह, आपका अभिप्राय आपके बड़े भाई साहब की फर्म से।''

''जी हाँ, उस सिंडीकेट के मैनेजर का अनुमान है कि यह आविष्कार हण्डरेड मिलियन डॉलर का है।''

राजदूत मुस्कराया और बोला, ''आपके भाई साहब से हम बात कर लेंगे। परन्तु आपको किसी और से बात नहीं करनी होगी, विशेषतया किसी सरकार से।''

सोम ने मुस्कराते हुए कहा, ''मेरा कहना तो यह है कि यदि किसी को बात करनी है तो वह इस सिंडीकेट से ही बात करे। मेरा अभिप्राय आप भी उनसे ही बात कीजिए।''

''ठीक है, आप उनको बुला लीजिए। वे घर पर ही तो होंगे?''

''पूछता हूँ।''

यह कहकर सोमदेव ने फिर घण्टी का बटन दबाया। स्पीकर से जब उत्तर मिला तो सोम ने कह दिया कि यदि परमानन्दजी घर पर हों तो उनको ड्राइंगरूम में भेज दिया जाए, यहाँ कोई सज्जन उनसे मिलना चाहते हैं।

''देखता हूँ।''

दो-तीन मिनट बाद परमानन्द वहाँ उपस्थित हो गया। इस बीच किसिंजर लिसा से बात कर रहा था। उसने कहा, ''हमारे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट को आपकी माताजी से ही यहाँ का पता मिला है। आप अपने देश में क्या काम करती हैं?''

''अभी तक तो मैं वहाँ बायॉलॉजी की प्राध्यापिका थी। परन्तु मैंने अब निश्चय कर लिया है कि वहाँ का कार्य छोड़कर मैं स्थायी रूप से भारत में रहने लगूँगी।''

''क्यों, ऐसा क्यों?''

''क्योंकि मेरा विचार यहाँ रहकर कुछ सीखने का है।''

''क्या सीखेंगी?''

''यह मेरी प्राइवेट बात है।'' यह कहकर वह मुस्करा दी।

''परन्तु हम तो आपके पति महोदय को वहाँ अमेरिका में कार्य देने का विचार कर रहे हैं।''

''हम दोनों अपने निजी विषयों में स्वतन्त्र हैं।''

"तो इनसे तलाक भी हो सकता है ?"

"यह आवश्यक नहीं।"

तभी परमानन्द आ गया। किसिंजर ने उससे बात करना बन्द कर परमानन्द से कहा, "हमारी सरकार ने मिस्टर सोमदेव के आविष्कार को 'फ्रीज' कर लिया है।"

"हम इसके विरुद्ध वहाँ के सर्वोच्च न्यायालय में याचिका प्रस्तुत कर देंगे।" परमानन्द ने तुरन्त कह दिया।

"मिस्टर सोमदेव कहते हैं कि इनकी आपसे बातचीत हो चुकी है।"

"जी हाँ, लिखत-पढ़त के सारे कागज-पत्र सान फ्रांसिसको भेजे जा चुके हैं, वहाँ वे रजिस्टर होने वाले ही हैं।"

"तो हम उनको रोक देंगे।"

सोमदेव बोला, "श्रीमान् जी ! यह लिखत-पढ़त तो दूसरों को दिखाने के लिए होती है। हममें परस्पर वचन तो हो चुका है। हम उसका पालन करने के लिए बाध्य हैं।"

"व्यावहारिक रूप में मौखिक वचन का कोई भी मूल्य नहीं होता। बात तो तब ही पक्की समझी जाती है, जब अदालत में उसकी रजिस्ट्री हो जाती है।"

"नहीं श्रीमान् ! यह अमेरिकन व्यवहार की बात हो सकती है। मैं तो भारतीय हूँ। मैं वचन को मूलरूप में मौखिक ही मानता हूँ। लिखत-पढ़त तो उसकी व्याख्या को स्मरण करने के लिए की जाती है और हमारे वचन की व्याख्या हम अभी इतनी जल्दी भूले नहीं हैं।"

"क्या वचन हुआ है आप लोगों में ?"

परमानन्द ने बताते हुए कहा, "उसमें यह व्यवस्था है कि किसी भी तीसरी पार्टी से यदि बात करनी हो तो हम दोनों मिलकर ही करेंगे।"

"हम अर्थात् कौन-कौन ?"

"हमारी सिण्डीकेट की ओर से मुख्य निदेशक श्री अविनाशचन्द्र और अनु-सन्धाता टीम की ओर से श्री सोमदेव।"

"ठीक है, हम दोनों से बात करेंगे और दोनों को अपनी सरकार के प्रतिबन्ध का आदेश देंगे।"

"आप कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र हैं।"

बातों का सूत्र अपने हाथ में लेते हुए सोम ने कहा, "जब आपकी सरकार की आज्ञा मिलेगी तो तब हम परस्पर विचार-विमर्श कर लेंगे कि अब हमको क्या करना है।"

तब राजदूत ने अपना ब्रीफकेस खोला और उसमें से एक कागज निकाल उसको खोलकर उस पर सोमदेव के साथ यूनिवर्सल सिण्डीकेट का नाम भी लिखकर उस

नोटिस को परमानन्द के सम्मुख कर दिया। उसके साथ ही उस आदेश की प्राप्ति स्वीकृति की रसीद भी रख दी। उसने उन दोनों से उस रसीद पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा।

परमानन्द ने सोम से पूछा तो सोम ने कह दिया, "ठीक है कर दो, इसमें भी कोई हानि नहीं है।"

किसिंजर ने रसीद को सम्हालकर रखा और उठते हुए कहने लगा, "मैं आप दोनों का धन्यवाद करता हूँ।"

जाते-जाते उसने कहा, "मैं आपको व आपकी पत्नी श्रीमती लिसा को आज रात के भोजन के लिए अपने घर आमन्त्रित करता हूँ।"

सोम ने अपनी पत्नी की ओर देखा। वह समीप खड़ी यह सब देख और सुन रही थी। उसने कह दिया, "अभी तक तो आज रात के भोजन के लिए कहीं अन्यत्र से निमन्त्रण नहीं है। हमें स्वीकार कर लेना चाहिए।"

किसिंजर ने दोनों को धन्यवाद किया और ब्रीफकेस लेकर चलता बना।

: ७ :

सोमदेव और परमानन्द दोनों ही राजदूत को छोड़ने के लिए बाहर आए थे। जब वह अपनी कार में बैठ चला गया और उसकी कार दृष्टि से ओझल हुई तो परमानन्द सोमदेव की बाँह-में-बाँह डाल उसको बैठक की ओर ले जाते हुए कहने लगा, "क्यों भैया! ठीक हो रहा है न?"

"हाँ भैया! रात ही जीजाजी ने मुझे बताया था कि मुझे आप लोगों के साथ बातचीत पक्की कर लेनी चाहिए। इससे मुझे बहुत-से झंझटों से मुक्ति मिल जाएगी। इसलिए जब इसने राजकीय आज्ञा की बात कही तो मैंने इसको बता दिया कि मेरा आप लोगों से वचन हो चुका है। मैं समझता हूँ कि जीजाजी की बात सत्य सिद्ध हो रही है कि इसमें हमें बहुत से झंझटों से मुक्ति मिल जाएगी।"

इस समय जब वे बैठकघर में आए तो तब तक परिवार के सभी सदस्य वहाँ एकत्रित हो गए थे। जब दोनों भाई अपने-अपने स्थान पर बैठ गए तो बाबा ने पूछा, "सोम! क्या बात हुई है?"

उत्तर देने की अपेक्षा परमानन्द ने वह आज्ञा-पत्र जो राजदूत दे गया था, बाबा के सामने रख दिया।

बाबा ने उसे उच्च स्वर में पढ़ दिया जिससे कि हर किसी को वह न देखना पड़े। भाषा बहुत ही संक्षिप्त थी। उसमें लिखा था, "मैं आर० एन० किसिंजर, भारत में अमरीकी राजदूत अपने राष्ट्रपति की आज्ञा से आपको आदेश देता हूँ कि आपने जो 'ग्रैविटी नलीफिकेशन' का आविष्कार किया है उसकी खोज का पूर्ण विवरण तथा अन्य सब व्याख्या के कागजात बिना संयुक्त राज्य की अनुमति के किसी को न दिखाए जाएँ।"

पत्र समाप्त कर बाबा ने प्रश्नभरी दृष्टि से सोम की ओर देखा। सोम बोला, "बाबा ! इसकी कानूनी कीमत तो वकील लोग लगाएँगे। परन्तु एक बात इससे यह हो गई है कि यह अब एक गुप्त लेख है। इसके द्वारा हमारे पूर्ण अनुसंधान का कार्य गुप्त हो गया है। मैं इससे प्रसन्न हूँ।"

बाबा ने कहा, "परन्तु मैं समझता हूँ कि यह तो 'मच एडो अबाउट नथिंग' है।"

परमानन्द बोला, "बाबा ! 'अबाउट नथिंग' नहीं। इसमें हण्ड्रेड मिलियन डालर दबा पड़ा है। अब हम इसको खोदकर निकाल लेंगे।"

"मैं धन की बात नहीं कर रहा था। मैं तो इस राजनीतिक 'एजेंसी' के इस बीच में कूदने के विषय में कह रहा था।"

सोम कहने लगा, "नहीं बाबा ! बात इस प्रकार नहीं है। आज की राजनीति का आधार भी तो धन ही है। देखिए, किसी 'मिसाइल' को ऊपर उठाने और उसको भगाने में प्रति मील के हिसाब से व्यय का अनुमान लगाया जाए और वह व्यय शून्य के बराबर हो जाए तो संसार की राजनीति पर ऐसा प्रभाव पड़ेगा कि जो अभूतपूर्व होगा।"

"सोम ठीक कह रहा है।" मंगलानन्द का कहना था। "इसका यह प्रभाव भी हो सकता है कि भावी विश्वयुद्ध शीघ्र हो जाए और वह युद्ध सार्वभौमिक हो तथा समस्त मानव जाति का विनाश करने वाला हो। अथवा यह भी हो सकता है कि परस्पर विरोध की नीति की अपेक्षा मैत्री की नीति आरम्भ हो जाए।

"सन् १९८० से आरम्भ युद्ध की गड़गड़ाहट अब कहीं १९९६ में जाकर समाप्त होती-सी दिखाई देती है। प्रश्न केवल यह रह जाता है कि समाप्ति पृथ्वी पर से प्राणियों को निःशेष करने के उपरान्त होगी अथवा कि उससे कुछ पहले ही हो जाएगी।"

मंगलानन्द की यह भविष्यवाणी सुनकर तो सब स्तब्ध से उसका मुख देखने लगे। कुछ क्षण स्तब्धता छाई रही। इसको भंग किया सोम ने। उसने कहा, "हमें आज रात राजदूत के यहाँ भोजन का निमन्त्रण है।"

"तुमने स्वीकृति दे दी है?" बाबा ने प्रश्न किया।

"लिसा···ओह नहीं, सरस्वती की जन्मभूमि के राजदूत का निमन्त्रण किस प्रकार अस्वीकार किया जा सकता था?"

बात को सरस्वती ने स्पष्ट किया। वह बोली, "नहीं श्रीमान् ! मेरी जन्मभूमि नहीं, अपितु उसे इस प्रकार कहना होगा कि विश्व-भर के राज्यों में अति प्रवल एक गुट के नेताराज्य के राजदूत का निमन्त्रण अस्वीकार नहीं किया जा सकता था।"

मंगलानन्द बोला, "लिसा का कहना ठीक है।"

"परन्तु पिताजी ! एक बात ध्यान रखिए, न तो मैं अब लिसा हूँ और न ही संयुक्त राज्य अमेरिका की नागरिक हूँ। मैं भूमण्डल की बेटी हूँ और सरस्वती मेरा नाम है, लिसा नहीं ।"

सब हँस पड़े। अब तक लिसा का नाम बदलने की घटना का ज्ञान सबको हो चुका था। अब उसके नाम सम्बन्धी विरोध पर सबको हँसी आ गई थी।

बाबा बोले, "अब यह लड़की यथार्थ में हिन्दू हो गई है।"

"बाबा ! हिन्दू क्या होता है ?"

"किसी समय अवकाश में बताऊँगा। बस अभी तो तुम यही समझो कि तुम विश्व की नागरिक हो। मैं इसके लिए तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ।"

मंगलानन्द के कोर्ट जाने का समय होने लगा था। उसने एक प्याला कॉफी की इच्छा व्यक्त की।

बाबा वहाँ से उठे तो सोम और उसकी पत्नी को अपने साथ ही अपने कमरे में ले गए।

जब कमरे में पहुँचकर वे लोग आराम से बैठ गए तो बाबा ने कहा, "सोम ! यह सब तुम्हारी बुद्धि का चमत्कार है और बुद्धि परमात्मा की देन है। इसलिए इसकी उपज को परमात्मा के ही अर्पण करना चाहिए।"

सरस्वती कहने लगी, "यह व्यवहार किसी भी समय मानवताविहीन हो सकता है। बाबा ! मैं समझती हूँ कि यह देश दुर्बल होने के कारण भीगी बिल्ली बना हुआ था। किसी भी समय यह हमारी अथवा किसी भी अन्य वैज्ञानिक की सहायता पाकर पुनः शेर बनकर गर्जन करने लग सकता है।"

बाबा के मुख पर मुस्कराहट खेल गई। सोम और सरस्वती उसको मुस्कराता हुआ देख रहे थे। बाबा ने पूछा, "केवल गर्जन मात्र से ही किसी को शेर अथवा शेर का कार्य करने वाला माना जा सकता है ? अभी तक तो यू० एस० एस० आर० गर्जन करने वाला रहा है, परन्तु उसने भी तो युद्ध की घोषणा नहीं की। इससे तो यही समझ में आने लगा कि वास्तव में वह भी लोमड़ी ही है।"

"इन प्रजातन्त्रवादी राज्यों के व्यवहार और कथन शायद ही कभी समान रहे हों।"

"तो फिर हमको भविष्य में क्या करना चाहिए ? कम-से-कम मैं तो अपने साथियों में यह व्यवहार रखना चाहता हूँ कि हमारे आविष्कार का दुरुपयोग मानव के अहित में नहीं किया जाना चाहिए।"

बाबा ने कुछ विचारकर कहा, "इसमें दो बातें हो सकती हैं। दोनों पर व्यवहार हो चुका है। एक व्यवहार देवताओं का था। वह यह कि प्रकृति के रहस्यों को किसी को न बताया जाए। इन रहस्यों के फल ही केवल योग्य जनों को दान अथवा उपहार में दिया जाए। किन्तु यह व्यवहार युद्ध रोकने में सफल नहीं हुआ।

"एक बार देवताओं ने अपने सुदर्शन चक्र से प्रायः सभी दैत्यों का नाश कर दिया था। तो भी दैत्यों ने अपना सिर उठाया और दीन-हीन जनों को कष्ट देने लगे। यह दुष्कार्य दैत्यों की सन्तान, माल्यवान्, माली और सुमाली ने करना आरम्भ किया था। जब इनका अत्याचार सीमातीत हो गया तो विष्णु को पुनः सुदर्शन चक्र का प्रयोग करना पड़ा। भगवान् विष्णु ने दैत्य-सन्तान राक्षसों को मार-मारकर पाताल देश में भगा दिया था। परन्तु कुछ ही वर्षों में उन्होंने फिर अपना सिर उठाना आरम्भ कर दिया तब देवताओं ने अपने दिव्य अस्त्र राम को दिए और उन्होंने रावण को निस्तेज किया।

"अब न तो देवता रहे हैं और न ही उनका ज्ञान-विज्ञान रहा। किन्तु आसुरी प्रवृत्ति ने पुनः सिर उठाया है और पुनः दिव्य अस्त्र का आविष्कार किया जा रहा है।

"दूसरा व्यवहार मनुष्यों का रहा है। मनुष्यों से मेरा अभिप्राय मनु की सन्तान से है। मानवों ने कभी दिव्य अस्त्र बनाए ही नहीं। कभी-कभी देवताओं से माँग लिये अथवा दान-दक्षिणा में मिले दिव्य अस्त्रों का यह प्रयोग करते रहे हैं। एक बार अयोध्या नरेश देवता से प्राप्त दिव्यास्त्र लेकर देवासुर संग्राम में देवता की ओर से युद्ध करने के लिए गया था। फिर राम तो राक्षसों को परास्त करने के लिए इन्द्र द्वारा प्रदत्त दिव्यास्त्रों का प्रयोग करते रहे थे। परन्तु मानवों ने स्वयं कभी दिव्यास्त्र नहीं बनाए। आज भी जान-बूझकर अथवा अनजाने में ही भारत ऐसा ही करना चाह रहा है। परन्तु इस बार होने वाले देवासुर संग्राम में क्या होगा। स्थिति कुछ ऐसी हो रही है कि देवों और असुरों दोनों ही के पास प्रभूत मात्रा में दिव्यास्त्र विद्यमान हैं। इसके साथ ही एक विशेषता यह भी है कि दैवी पक्ष वाले भी कभी-कभी आसुरी व्यवहार करने लगते हैं और असुर दैवी व्यवहार करने लगते हैं। तब जो सरल चित्त जाति होती है वह यह समझ नहीं पाती कि उसको किसका पक्ष लेना चाहिए अथवा किसका विरोध करना चाहिए।

"ऐसी परिस्थिति एक बार पहले भी आ चुकी है। यह उस काल की बात है जब देवताओं ने कुमार को अपना नेता बनाया था। उस समय तो ब्रह्मा की नीति सफल हो गई थी। उस समय ब्रह्मा ने दोनों पक्षों से वचन ले लिया था कि कोई भी दिव्यास्त्र का प्रयोग नहीं करेंगे।

"परन्तु सोम! इस बार यह होना सम्भव नहीं है। देवता हो चाहे असुर, दोनों ही वचन देने पर उसका पालन नहीं करेंगे।"

बाबा द्वारा प्रस्तुत वस्तुस्थिति का विश्लेषण सुनकर सोम और उसकी पत्नी दोनों ही चकित थे। सरस्वती यद्यपि प्राचीन पौराणिक इतिहास से अनभिज्ञ थी तदपि जो बात समझने की थी उसको वह समझ रही थी। इस कारण उसने ही बाबा से पूछा, "तो बाबा! हमें क्या करना चाहिए?"

"जब युद्ध होने लगेगा और तुम्हारा आविष्कार तुम्हारी इच्छा के विपरीत प्रयुक्त होने लगेगा तब ऐसी परिस्थिति में कदाचित् तुम लोग कुछ भी करने की स्थिति में नहीं होगे। परन्तु इस समय तुम लोग क्या कर रहे हो, यह विचार किया जा सकता है।

"मैं समझता हूँ कि आज रात के भोजन के समय यह राजदूत तुम्हारे सम्मुख कुछ प्रलोभन प्रस्तुत करेगा। उन सबको ध्यान से सुनना और उस पर विचार करने के लिए समय माँग लेना। उसको किसी प्रकार का वचन नहीं देना। उसके प्रस्ताव पर अपने पिता और बहनोई से विचार-विनिमय कर लेना। वकील होने के नाते दोनों ही राजनीति के दाँव-पेंच समझते हैं। उनकी बात सुनकर फिर स्वयं विचार करना और परमात्मा का नाम लेकर किसी निर्णय पर पहुँचने का यत्न करना।"

बाबा के कथन में बहुत कुछ विचार करने के लिए था। सोम और उसकी पत्नी एकटक बाबा का मुख देखते रह गए।

एकाएक बाबा ने बात बदलकर कहा, "बेटी सरस्वती ! तुम बताओ इस नाम और नागरिकता बदलने का क्या कारण है ? जिस बात की पिछले पाँच वर्ष में आवश्यकता अनुभव नहीं हुई उसकी यहाँ आकर चौबीस घण्टों के भीतर ही क्या आवश्यकता अनुभव होने लगी ?"

सरस्वती को इसकी अपेक्षा नहीं थी। परन्तु अब जब बाबा ने पूछ ही लिया तो उसको अपने मन की बात बतानी पड़ी। वह बोली, "बाबा ! यह मानसिक परिवर्तन सहसा नहीं हुआ। आज से सात-आठ वर्ष पूर्व भी इसका धीमा-सा प्रकाश मेरे मन पर हुआ था।

"मेरी माता का नाम मार्टिनी है। मैंने उससे तब पूछा था, 'माँ, तुम अपना नाम बदल क्यों नहीं लेतीं ?' तब उन्होंने कहा था, 'यह फ्रांसीसी भाषा का नाम है और मैं अपने रक्त में फ्रांस की गन्ध पाती हूँ। इस कारण न तो यूनानी अर्थात् तुम्हारे पिता की भाषा में नाम रखने को मन करता है और न अंग्रेजी में ही। मुझे अंग्रेजी से घृणा है।'

"उस समय तो मैं आगे कुछ नहीं बोली। परन्तु उसके बाद जब-जब मुझे समय मिलता रहा है, इस समस्या पर विचार करती रही हूँ।

"एक बार इनसे भी इस विषय पर विचार-विनिमय हुआ था। तब इन्होंने कहा था कि नित्य प्रयोग में जिस भाषा को हम लाते हैं उसी भाषा का नाम हो तो अच्छा रहता है। तब मैं विचार करने लगी कि मेरी भाषा कौन-सी है। हिन्दी सीखने के उपरान्त जब मैं संस्कृत सीखने लगी तो मैंने संस्कृत भाषा का कोई नाम रखने का विचार किया था। परन्तु फिर सोचती कि वह नाम ही क्या हुआ जिसको बोलने वाला कोई न हो।

"जब मैं भारत आ गई तो यहाँ आने पर मुझे वातावरण अनुकूल प्रतीत होने

लगा। कल दिल्ली पहुँचते ही मैं अपने लिए कोई उपयुक्त नाम का विचार करने लगी थी। एकाएक कल बहिन अम्बा का नाम सुना तो मैंने उसका अर्थ पूछ लिया। उन अर्थों से मेरे मन में सरस्वती नाम प्रस्फुरित होने लगा। मैंने विचार किया कि अम्बा बहिन यदि जगन्माता हैं तो मैं जगत् का ज्ञान बन सकती हूँ। बस, मैंने तब से अपना नाम सरस्वती रखने का निश्चय कर लिया।

''उस समय तो यही विचार किया था कि जब तक भारतवर्ष में हूँ तब तक यही नाम रहेगा। किन्तु रात जब बहिन अम्बा ने कहा कि सरस्वती के कुछ विशेष गुण भी तो ग्रहण करने चाहिए। वे स्वयं अम्बा तो हैं। कम-से-कम महेन्द्र की तो माता हैं ही। जब मैंने सरस्वती की विशेषता पूछी तो उन्होंने कहा, ज्ञान में लालित्य और लावण्य उत्पन्न करना ही सरस्वती की विशेषता है। फिर उन्होंने एक टेप बजाकर देवी सरस्वती की एक अन्य विशेषता भी बता दी। वह था किसी प्रख्यात कलाकार का वीणा-वादन।

''बाबा ! वह वीणा-वादन मेरे रोम में समा गया था। तभी मैंने वीणा बजाना सीखने का निश्चय कर लिया। इस कारण मैं अब सरस्वती बन गई हूँ। क्योंकि मुझे उसके विशेष गुण ग्रहण करने हैं इसके लिए मुझे भारत में ही रहना पड़ेगा।''

मन-परिवर्तन की यह प्रक्रिया सुनकर विश्वेश्वरानन्द चकित रह गया। एकाएक उसने पूछ लिया, ''तब तुम्हारे अनुसंधान का विषय 'प्राणी में चेतना-स्रोत' का क्या होगा ?''

''वह तो बाबा अब मुझे मिथ्या दौड़ लगने लगी है।''

सोम ने कहा, ''वह दौड़ तो यहाँ रहते हुए भी लगाई जा सकती है।''

''वाह, वह कैसे ? आपके इस कथन ने तो मेरे मन में गुदगुदी उत्पन्न कर दी है।''

सोमदेव ने कुछ देर तक आँखें मूँदकर विचार किया और फिर बोला—

''मुझे अपने जीवन में भी एक महान् परिवर्तन दिखाई देने लगा है। सम्भवतया मैं भी यहीं भारत में रहकर अपना अनुसंधान-कार्य चालू रखने की बात सोचूँ ?''

''सत्य ?'' सरस्वती ने प्रफुल्लित मन से पूछा।

''अभी निश्चयपूर्वक तो नहीं कह सकता। हाँ, लक्षण कुछ ऐसे ही दिखाई दे रहे हैं।''

तभी बाबा के कमरे में लगे स्पीकर पर सुनाई दिया, ''डॉक्टर साहब के लिए टेलीफोन है, कहिए तो आपके कमरे से सम्पर्क जोड़ दूँ।''

उत्तर में बाबा ने कहा, ''हाँ, जोड़ दो।''

सोम उठकर कोने में रखे फोन के पास गया। सरस्वती भी उधर ध्यान देकर

सुन रही थी। सोम ने उधर से प्रश्न के उत्तर में इधर से कहा, "मैं आधे घण्टे में उपस्थित हो सकता हूँ।"

इसके बाद फिर कुछ दूसरी ओर से कहा गया और वह सुनकर सोम ने फोन का रिसीवर रख दिया।

उसने कहा, "मुझे प्रधानमन्त्री से मिलने के लिए जाना है। प्रातःकाल भी इनका सन्देश आया था। तब पिताजी ने कहा था कि वह दस-साढ़े दस बजे फोन करके पूछ लें। वहाँ से अब फोन आया है कि मेरी वहाँ अब प्रतीक्षा की जा रही है।"

इतना कहकर सोम बाबा के कमरे से निकल गया। सरस्वती वहीं बैठी थी। इस कारण बाबा ने कहा, "एक बार तो अमेरिका जाना ही पड़ेगा।"

"जी, मैंने सोचा है कि अपनी छुट्टियाँ बिताकर एक बार मैं वहाँ जाऊँगी। मेरी इच्छा है कि मेरी माताजी भी मेरे साथ यहीं आ जाएँ। देखिए, उनका क्या विचार बनता है।"

"मेरी शुभकामना तुम्हारे साथ है। केवल इतना ही होगा कि तुम्हारी माताजी को यहाँ कार्य मिलना कदाचित् कठिन हो।"

"मैं समझती हूँ कि अब उन्हें किसी प्रकार का कार्य करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। उनका बैंक-बैलेंस पर्याप्त है। उससे उनका शेष जीवन सुख-सुविधा से बीत सकता है।"

"तब ठीक है। यहाँ रहते हुए ईश्वर की कृपा से तुम्हें किसी प्रकार के धनार्जन की चिन्ता नहीं करनी पड़ेगी।"

इस समय पुनः टेलीफोन खड़का। बाबा ने उठकर सुना और कहा, "सरस्वती बेटा! यह तुम्हारे लिए है।"

सरस्वती ने बाबा से चोंगा लेकर बात सुनी और फिर बोली, "अम्बा बहिन मिलने के लिए आ रही हैं। उनको उस विषय में जानने की उत्सुकता है कि प्रातः उसने मिलने कौन आया था और किस विषय पर बात हुई है। मैं तो फोन पर ही उनको बताने लगी थी किन्तु उन्होंने यहाँ आने की इच्छा व्यक्त की।"

सरस्वती ने फोन का चोंगा रखा ही था कि पुनः फोन की घंटी टनटना उठी। सरस्वती समीप ही खड़ी थी, उसने चोंगा उठाया तो पता चला कि माताजी ने फोन किया है। उसने कहा, "मुझे माताजी ने बुलाया है।"

सरस्वती चली गई। बाबा ने अपने सैल्फ में से एक पुस्तक निकाली और उसे पढ़ने लगे।

मध्याह्न के भोजन से पूर्व ही सोमदेव लौटकर आ गया था। घर पर उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा हो रही थी। उसके आने की सूचना मिलते ही सभी लोग ड्राइंग-रूम में एकत्रित हो गए। तब तक अम्बा भी पहुँच गई थी।

जब सब लोग एकत्रित हो गए तो सोमदेव ने कहा, "मुझे भारतीय सेना के अन्तर्गत सैनिक साइण्टिफिक विभाग के निदेशक का पद ग्रहण करने के लिए आग्रह किया जा रहा है।"

यह सुन बाबा ने कहा, "तुमने क्या उत्तर दिया है?"

"मैंने कहा कि मुझे तो इसमें प्रसन्नता ही होगी किन्तु अभी कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से बहुत कुछ तय करना होगा। वहाँ से अन्तिम निर्णय होने के बाद ही मेरा यहाँ आना सम्भव हो सकेगा। मैंने उस विश्वविद्यालय से अपने अनुबन्ध की बात भी बता दी है। इसके साथ नवीन अनुसन्धान और आविष्कार में जो अड़चन तथा उलझन सामने आ रही है उसका भी उल्लेख कर दिया है। आज किसिंजर जो नोटिस दे गया है, उसके विषय में भी मैंने बता दिया है।

"तदपि मैं यह वचन दे आया हूँ कि कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से निश्चय हो जाने पर कहीं अन्यत्र कार्य करने से पूर्व मैं भारत आकर इस विषय में बात अवश्य करूँगा।

"इस वार्तालाप के समय प्रोफेसर सिन्हा, जो मेरे पढ़ते समय दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे, वे भी उपस्थित थे। मैंने उन्हें स्मरण कराया कि सर्वप्रथम मैंने अपना यह विषय आपके विश्वविद्यालय के सम्मुख प्रस्तुत किया था किन्तु तब इस विषय को उपयुक्त विषय नहीं समझा गया था।"

वार्तालाप का सार सुनकर एक प्रकार से सभी सन्तुष्ट-से थे। महिलाएँ उठकर भोजन के कमरे में चली गईं और सोम को बाबा अपने कमरे में ले गए।

डाइनिंग हॉल में पहुँचकर सबसे पहले अम्बा बोली। उसने सरस्वती को प्यार से अपने साथ चिपटाते हुए कहा, "मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि अब तुम्हें वीणा सीखने के लिए अवकाश भी मिल जाएगा और अवसर भी।"

सावित्री को इसमें कुछ सन्देह था। उसने कहा, "सरस्वती बहिन का देश हमारे डॉक्टर को यहाँ रहने ही नहीं देगा। प्रातःकाल जो नोटिस मिला है, उससे तो मेरी समझ में ऐसा ही कुछ आ रहा है। हमारे पतिदेव भी ऑफिस जाते समय इसी प्रकार की सम्भावना व्यक्त कर रहे थे। उनका कहना था कि इनके अनुसंधान का इतना बड़ा महत्त्व है कि अमेरिका सरकार इसमें किसी अन्य को साझीदार बनने ही नहीं देगी। अणुबम बनाने के उपाय को तो वे लोग छिपाकर नहीं रख पाये थे, किन्तु उस भूल की अब वह पुनरावृत्ति नहीं करेगा।"

सरस्वती अबतक के विवरण से जो समझ पाई थी उसका वर्णन करते हुए कहने लगी, "मेरा मन तो कहता है कि हमको अब भारत में ही रहने का अवसर मिल जाएगा। मैं यत्न करूँगी कि यहाँ रहते हुए ही कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से अवकाश ग्रहण कर लिया जाय, उसके लिए वहाँ जाने की आवश्यकता ही न पड़े। मैं चाहूँगी भारत सरकार से अनुबन्ध कर लिया जाय।"

अम्बा बोली, "तुम्हारा कहना तो ठीक है, परन्तु कहते हैं न 'देयर आर मेनी ए स्लिप्स बिटवीन दि कप एण्ड लिप्स'। फिर भी यदि यह हो जाता है तो अच्छा ही है।"

भोजन परोसा जा चुका था। सब भोजन करने बैठे तो सरस्वती ने आज भी हलुए को घी से तर देखा तो कहने लगी, "आप लोग इतनी चिकनाहट किस प्रकार पचा लेते हैं?"

सबको हँसी आ गई। अम्बा बोली, "हमारे महेन्द्र के पिताजी का तो कहना है कि हमारी माताजी इतनी कंजूस हैं कि वे सरकारी घी का प्रयोग करती हैं उसके खाने से गला सूखा ही रह जाता है।

"हम अपने घर में सरकारी घी का प्रयोग नहीं करते। रात को भोजन कर लेने पर प्रातःकाल उठने के बाद मुख ओर पेट से उस घी की सुगन्ध आती रहती है।"

सावित्री ने हँसते हुए पूछ लिया, "आपके घर पर किस फैक्टरी का घी आता है?"

"भाभी ! फैक्टरी से नहीं, हमने घर पर गाय पाली हुई है। गाय के दूध से घी बनता है।"

इस प्रकार हँसी-मजाक के वातावरण में भोजन समाप्त हुआ।

सोमदेव ने भी भोजन किया तो वह विश्राम करने के लिए अपने कमरे में आ गया। कुछ देर बाद सरस्वती भी विश्राम करने के लिए अपने कमरे में आ गई। उसने सोमदेव से पूछा, "हाँ जी, कहिए, अब क्या होने वाला है?"

"एक बात का तो मैंने अपने मन में निश्चय कर लिया है।" सोमदेव ने गम्भीर मुद्रा में सूचना दी।

"किस बात का निश्चय कर लिया है?"

"यही कि मैं अपने अनुसन्धान और आविष्कार का मुख 'सर्व हिताय' की ओर मोड़ दूँगा।"

"इसका क्या अभिप्राय हुआ?"

"मेरा कहने का अभिप्राय यह है कि इसके रहस्य को तब तक मैं प्रकाशित ही नहीं करूँगा जबतक कि मैं इसको इस योग्य न बना दूँ कि कोई भी सामान्य जन इसका उपयोग कर सके। तब यह किसी भी राज्य की बपौती नहीं रह जाएगी और न ही इससे किसी राज्य विशेष की प्रभुता बढ़ने में सहयोग ही मिल पाएगा।"

"किन्तु यह होगा किस प्रकार?"

"यह भी अनुसन्धान का ही विषय है। जब एक व्यक्ति अपने ही सामर्थ्य से यह स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेगा तब इस रहस्य का प्रयोग किसी भी शासन को जमाने में नहीं हो पाएगा।"

इस नये विचार और उसकी सम्भावनाओं पर विचार करती हुई सरस्वती अपने पलंग पर लेटी तो उसको तुरन्त नींद भी आ गई ।

: ८ :

सोम अपनी मध्याह्न की नींद से जगकर उसकी सुस्ती निकाल ही रहा था कि उसके कमरे में घण्टी बजी ।

सोम ने स्पीकर की ओर मुख करके पूछा, "कौन है ?"

"प्रेस के कुछ लोग डॉक्टर साहब से मिलने के लिए आए हैं ।"

सरस्वती भी जग गई थी । स्पीकर से आने वाली आवाज को उसने भी सुना । तब उसके मुख से सहसा निकल गया, "यह भी अजीब मुसीबत है । जी चाहता है कि हम अज्ञातवास ले लें ।"

यह सुनकर सोम को हँसी आ गई । उसने कहा, "यह हमें अपनी ख्याति का मूल्य चुकाना पड़ रहा है ।"

"मुझे यह सब नहीं चाहिए ।"

"ख्याति की लालसा तो मैंने भी नहीं की थी । मेरे अनुसन्धान का विषय तो मानव के पैर में पड़ी बेड़ी को तोड़ना ही था । किन्तु उसका परिणाम यह हो रहा है कि उन श्रृंखलाओं को तोड़ने-तोड़ते हम स्वयं बन्धनों में बँधने लगे हैं ।"

सोम को जब सूचना दी गई कि बाहर प्रेस वाले उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं तो उसने कुछ क्षण विचार करने के उपरान्त उत्तर दे दिया कि वह आ रहा है । इस-लिए अब उठकर प्रेस वालों के सम्मुख जाने योग्य वस्त्र पहनने लगा था ।

वस्त्र पहनकर सोम बाहर निकला तो उसने देखा कि ड्राइंगरूम में दस-बारह व्यक्ति विराजमान हैं ।

सोमदेव के ड्राइंगरूम में पहुँचते ही सब उसके स्वागत के लिए उठकर खड़े हो गए । एक व्यक्ति आगे बढ़ा और उसने सोमदेव से हाथ मिलाते हुए कहा, "नमस्कार । मेरा नाम चटर्जी है। मैं पी० टी० आई० का प्रतिनिधि हूँ । ये सब मेरे साथी लोग प्रेस-क्लब के सदस्य हैं । हम आपसे भेंट करने के लिए आए हैं । आधा घण्टा पूर्व हमने यहाँ फोन करके पता किया था कि आप अभी मिल सकेंगे अथवा नहीं । यहाँ से हमें बताया गया कि आप तब खाना खाकर विश्राम कर रहे हैं । यह भी हमें विदित हुआ था कि विश्राम के उपरान्त आप चाय पीएँगे । इस कारण हम लोग भी आपके साथ चाय-पान करने के उद्देश्य से यहाँ एकत्रित हो गए हैं । हमें आशा है कि आप हमें निराश नहीं करेंगे ।"

चटर्जी के इस कथन पर सबको हँसी आ गई । आगे फिर उसी ने कहा, "वैसे आपकी माताजी ने बेयरा को आज्ञा दे दी है कि वह हमें एक-एक कप कॉफी पिला दे ।"

"यह तो मेरा सौभाग्य है । आपके आश्रय मुझे भी कॉफी मिल जाएगी ।

देखिए आप जिस प्रकार मेहमान बनकर आए हैं, उस प्रकार मैं भी इस घर में मेहमान ही हूँ। अन्तर इतना है कि आप अभी आए हैं, मैं जरा कल आ गया था। आप थोड़ा समय रहकर चले जाएँगे, मैं कुछ अधिक समय रहकर चला जाऊँगा।

"आइए, बैठिए।"

इतना कहकर उसने सबको बैठने के लिए कहा। इस हँसी के वातावरण में सब सोफों पर बैठ गए।

बैठते ही वार्तालाप आरम्भ हो गया।

चटर्जी, सोमदेव के निकट ही बैठा था। उसीने बात आरम्भ करते हुए कहा, "आप कितने वर्ष से अमेरिका में हैं?"

"मुझें वहाँ गए छः वर्ष से अधिक हो गए हैं। मैं इन छः वर्षों में निरन्तर वहीं बिना किसी अवकाश के सप्ताह में छः दिन और एक दिन में नित्य सात घण्टे कार्य करता रहा हूँ, उसका ही यह यत्किंचित् परिणाम है।"

सामने के सोफे पर बैठा एक युवक बोला, "यह यत्किंचित् नहीं है साहब! इसने तो बड़े-बड़े राज्यों की जड़ों को हिला दिया है।"

"हाँ, हमारे विश्वविद्यालय के उपकुलपति भी कह रहे थे कि मैंने परमात्मा की मूँछ का एक बाल अवश्य नोच लिया है।"

"तब तो निश्चय ही आपके वे उपकुलपति यहूदी होंगे। केवल 'सिमेटिक' जातियों के परमात्मा की दाढ़ी-मूँछ है, हम पूर्वी लोगों के परमात्मा तो 'क्लीन शेव्ड' होते हैं।"

यह सुनकर सब हँस पड़े। सोमदेव बोला, "मेरी कल्पना के तो अंग-प्रत्यंग ही नहीं हैं। जब उसकी ठुड्डी और गाल नहीं तो फिर दाढी-मूँछ कहाँ उगेगी? खैर छोड़िए इसको। मैंने उनसे भी इस विषय में कुछ नहीं कहा।

"उस समय मुझे तो यही प्रसन्नता थी कि पढ़े-लिखे मनुष्यों में वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मेरी योजना को सम्भव बताया था और उसमें अपनी रुचि प्रकट की थी। उससे पूर्व तो जिस किसी भी पठित व्यक्ति को मैं अपनी योजना सुनाता, वह मेरी खिल्ली उड़ाने के लिए उद्यत रहता था।

"अमेरिका जाने से पूर्व मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी योजना प्रस्तुत की थी। तब मुझसे कह दिया गया था कि यह तो पत्थर को स्वयं हाथ में लेकर अपना माथा फोड़ने जैसा होगा। मुझसे कह दिया कि कोई अन्य सुगम विषय चुन लो। तब मैंने अपने डी० एस-सी० के लिए वह विषय चुना जिसका कुछ भी महत्त्व नहीं था।"

एक अन्य सज्जन कहने लगे, "क्या सरल सुबोध भाषा में अपने कार्य की रूप-रेखा हम लोगों को बताने का कष्ट करेंगे कि यह क्या है, इससे क्या लाभ होंगे आदि-आदि?"

"हाँ, यदि सरल भाषा में कहना हो तो यही कहा जाएगा कि परमात्मा अथवा प्रकृति ने इस धरती पर विद्यमान सब पदार्थों को एक प्रकार से बन्दी बनाकर रखा हुआ है। किसी प्रबल शक्ति के साथ हमको पृथ्वी से बाँध रखा है। और जब से मनुष्य का जन्म हुआ है, तबसे ही वह इस बन्धन से मुक्ति पाने का उपाय कर रहा है। अंजील में बेबल की मीनार की बात भी मानव-मन की इस अभिलाषा का ही प्रदर्शन है। फिर ऊँचे-ऊँचे मीनार बनाना और पतंग उड़ाना, उसके बाद बेलून बनाकर उड़ाना और अब अन्तरिक्ष की सैर करने के प्रयास, सब मनुष्यों की इस भू-आकर्षण के बन्धन का उल्लंघन करने का ही प्रयास है। मनुष्य यह तो बहुत काल से समझा हुआ था कि पृथ्वी में एक आकर्षण है, जो हमारे सब प्रयासों का विरोध कर रहा है। वह विरोध इतना प्रबल है कि हमारा पृथ्वी से कुछ भी ऊपर उठने के लिए भारी मूल्य चुकाना पड़ता है।

"मैंने भू-आकर्षण के रहस्य को जान लिया है। भारतीय दर्शन शास्त्रों में इसका उल्लेख पाया जाता है। ज्यों ही मैं उसका अर्थ समझ पाया कि मैंने उसका निराकरण करने का उपाय ढूँढ़ निकाला है। जैसे भू-आकर्षण बिना कुछ अधिक व्यय किए बना हुआ है, उसी प्रकार मेरा इसके निराकरण का उपाय भी बहुत ही अल्प व्यय का होगा।

"वैसे तो हवाई जहाजों में भी ऊपर उठने का प्रबन्ध होता है। उसमें भी भू-आकर्षण के निवारण का उपाय तो है, परन्तु वह उस आकर्षणकर्ता के रहस्य को जाने बिना उसके साथ मल्ल-युद्ध करने के समान ही है। मैंने बन्धन बनाने वाले के रहस्य को जानकर उसका निराकरण करने का उपाय निकाला है।"

"सुना है किसी बड़ी राज्य शक्ति ने आपके इस रहस्य के लिए अभी से आपसे बात करनी आरम्भ कर दी है ?"

"नहीं, अभी तो इस विषय में कोई बातचीत नहीं हुई है।"

"क्या आप किसी से बातचीत करने के लिए उत्सुक हैं ?"

"मुझे अभी किसी ऐसी वस्तु की जानकारी ही नहीं है जिसके विषय में मैं स्वयं को बात करने के योग्य समझ सकूँ।"

"योरोपियन समाचार-पत्रों में आपके इस अनुसन्धान की पर्याप्त चर्चा है ?"

"मुझे इसका ज्ञान नहीं है।"

तभी बेयरा आया और कॉफी के प्याले लगाने लगा। इस समय वार्तालाप का विषय बदल गया।

कॉफी आरम्भ हुई तो मिस्टर चटर्जी ने कहा, "भारतवासियों को आप पर बड़ा गर्व है।"

"मुझे तो अपने मनुष्य होने पर गर्व है। अंजील में कहा है कि परमात्मा ने अपनी नकल पर मनुष्य को बनाया है। और मैं समझ रहा हूँ कि उस परमात्मा की

नकल न रहकर मैं असल बनने का प्रयत्न कर रहा हूँ।"

"क्या इसका यह अभिप्राय नहीं हो सकता कि न तो असल है और न नकल ही ? दोनों ही समान हैं। केवल मिट्टी का ढेला एक ओर से दूसरी ओर को जा रहा है।"

"तब तो मिट्टी परमात्मा हो गई। यह मैं इसका कारण कहता हूँ क्योंकि मिट्टी में गति माननी पड़ेगी। और गति ही जीवन है। मिट्टी में गति नहीं होती। वह निर्जीव है।"

प्रश्नकर्ता इसका अर्थ नहीं समझ पाया।

किसी ने पूछा, "आप 'लाइफ एलिमेंट' को मानते हैं कि नहीं ?"

"मैं इतना तो कह ही सकता हूँ कि मैं मात्र मिट्टी का ढेला नहीं हूँ, उससे कुछ बढ़कर ही हूँ।"

"क्या आप ईश्वर नहीं हैं ? हमारे शास्त्रों में कहा है 'एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति' अथवा 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या', 'जीवो ब्रह्मेव नापरः' आदि।"

सोम ने मुस्कराते हुए कहा, "मैं तो हूँ, मैं मिथ्या नहीं हूँ। मिथ्या होता तो इस रहस्य का उद्घाटन न कर सकता। जो स्वयं को छिपाकर बैठा हुआ है, भला वह स्वयं ही किस प्रकार और क्यों स्वयं को जानने का यत्न करेगा और फिर किस प्रकार जान पाएगा। ज्ञान और ज्ञाता दो तो हैं ही।"

यह बात भी किसी की समझ में नहीं समाई। सब एक प्रकार से खिसियाने से मुस्करा रहे थे।

इस समय सोम के अन्तःकरण में उसके बाबा की शिक्षा प्रस्फुटित हो रही थी। उसने कहा, "वास्तव में हम इस संसार में परस्पर दो विपरीत गुणों वाली वस्तुएं देखते हैं। उनमें से एक गतिशील है तो दूसरी सर्वथा निश्चल। गतिशील निश्चल में अथवा निश्चल गतिशील में स्वयमेव परिवर्तित नहीं हो सकती। यह कार्य कोई तीसरा ही कर सकता है। निश्चल वस्तु स्वयमेव गतिज में नहीं आ सकती जब तक कि कोई तीसरी वस्तु उसमें गति उत्पन्न न कर दे।"

एक युवक बोल पड़ा, "यह सिद्धान्त किसी मूर्ख का लगता है ?"

सोम मुस्करा पड़ा। उसने कहा, "क्या मैं बुद्धिमान प्रश्नकर्ता का नाम जान सकता हूँ।"

वह युवक बोला, "श्रीमान् ! विवाद का विषय मैं तो नहीं हूँ।"

"परन्तु आपका लांछन तो विवादास्पद है। इस प्रकार विवादास्पद बात करने वाला विवाद का विषय बनता ही है।"

एक प्रौढ़ावस्था के संवाददाता ने कहा, "लगता है इनको स्वयं अपना परिचय देने में लज्जा का आभास हो रहा है। मैं आपको बताता हूँ। ये 'न्यू एज' के संवाददाता हैं। इनका नाम है विश्वासमोहन।"

"बस, मेरा इतने से ही प्रयोजन था।" सोम ने तुरन्त कहा। फिर उसने उस युवक की ओर मुख करके कहा, "मैं आशा करता हूँ कि बुद्धिमान संवाददाता महोदय अपने ज्ञानवानों के समाचार-पत्र में मेरा उत्तर प्रकाशित करवा दें। मैं आपको बता दूँ कि यह कथन विश्वविख्यात वैज्ञानिक 'न्यूटन' का कथन है। उसने गति के नियमों की चर्चा करते हुए प्रथम नियम ही यह बताया है कि प्रकृति में कोई भी कण यदि ठहरा हुआ हो तो वह स्वयमेव चल नहीं पाएगा और यदि कोई चल रहा होगा तो उसकी गति की दिशा अथवा गति को तब तक बदला नहीं जा सकता जब तक कोई बाहरी शक्ति उस पर प्रभाव न डाले। श्रीमान्, इसी सिद्धान्त को हमारे एक बहुत प्राचीन ग्रन्थ में भी कहा है। वह ग्रन्थ है ब्रह्मसूत्र। उसमें कहा है कि प्रकृति की अवस्था स्वयं नहीं बदल सकती।"

अब फिर वही संवाददाता बोला, "परन्तु न्यूटन तो नास्तिक था?"

"उसने अपने विषय में स्वयं इस प्रकार कभी कहीं कहा हो, मुझे इसका ज्ञान नहीं है। परन्तु ऐसे बहुत-से लोगों को मैं जानता हूँ, जो मूर्ख होते हुए भी स्वयं को बुद्धिमान मानते हैं। बहुत-से इसके विपरीत मानने वाले भी हैं।"

यह सुनकर सबको हँसी आ गई।

कॉफी कभी की समाप्त हो गई थी।

चटर्जी उठा तो अन्य सब भी उठ पड़े। सोमदेव भी उठ गया। चटर्जी ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। आज हमें बहुत-सी नयी बातों का ज्ञान हुआ है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप समय-समय पर प्रेस को अपनी गतिविधियों से अवगत कराते रहेंगे।"

इस प्रकार भेंट समाप्त हुई। तबतक सोम के पिता मंगलानन्द भी कोर्ट से लौट कर आ गए थे। ड्राइंगरूम के एक कोने में खड़े हो वे यह सब गतिविधियाँ देख-सुन रहे थे।

जब सब संवाददाता चले गए तो उन्होंने अपने पुत्र की पीठ थपथपाते हुए कहा, "बहुत सुन्दर! तुम्हारी हाजिरजवाबी देखकर मेरा चित्त प्रसन्न हो गया है। मैं समझता हूँ कि जहाँ तुममें बाबा के ज्ञान का अंश आया है, वहाँ मेरा तर्क का अंश भी आया है।"

"क्यों क्या बाबा तर्कहीन बातें करते हैं?"

"मेरा अभिप्राय सतर्कता, हाजिरजवाबी से था। वह मेरा है। न्यूटन के संबंध में जो तुमने उस संवाददाता पर चोट की है वह बहुत ही उपयुक्त और मजेदार थी। न्यूटन को बहुत-से लोग नास्तिक कहते हैं। ऐसा कहने वाले अधिकांशतया पादरी लोग ही हैं। वास्तव में वे स्वयं नास्तिक होते हैं।"

"पिताजी! एक अंग्रेज फिलोसफर का कहना है कि विज्ञान और तर्क परस्पर हाथ और दस्ताने की भाँति हैं। हमारे बाबा भी इसी सिद्धान्त के मानने वाले हैं।

उनका मत तो यह है कि वेद विज्ञान के ग्रन्थ हैं। मैंने इस सच्चाई का अनुभव किया है। इस विषय में मेरे अनेक व्याख्यान हमारे विश्वविद्यालय की साइंटिफिक सोसाइटी के समक्ष हो चुके हैं। ऐसे ही एक व्याख्यान के अवसर पर मेरी प्रथम भेंट लिसा से हुई थी।''

तभी पीछे से सुनाई दिया, ''परन्तु अब यह सरस्वती बन चुकी है।''

दोनों पिता-पुत्र चौंककर पीछे देखने लगे। सोम ने प्रश्न किया, ''तुम भी यहीं हो ?''

''जी, और आपके चतुराईपूर्ण उत्तरों को मैं भी सुन रही थी।''

पूर्व इसके कि सोम फिर कुछ कहे सरस्वती ने कह दिया, ''मैं अम्बा बहिन के साथ संगीत अकादमी जा रही हूँ। वह अपना साप्ताहिक पाठ पढ़ने जा रही हैं और मैं वहाँ की कार्य-विधि देखने-जानने के लिए जा रही हूँ।''

तभी मंगलानन्द ने बताया, ''मैंने अभी तुम लोगों की यात्रा की बुकिंग नहीं कराई है।''

''क्यों पिताजी ?'' सरस्वती ने पूछा।

''संगीत अकादमी हो आओ, लौटने पर बता दूंगा।''

इस प्रकार अम्बा और सरस्वती वहाँ से चली गईं।

प्रेस के संवाददाताओं के जाने के बाद घर के सभी व्यक्ति ड्राइंगरूम में आ गए थे। उनमें सावित्री और परमानन्द भी थे। परमानन्द का साझीदार अविनाशचन्द्र भी आया हुआ था। पुनः चाय का प्रबन्ध किया जा रहा था।

बैठने पर अविनाश ने कहा, ''पिताजी को मैंने ही अभी आप लोगों के भ्रमण के कार्यक्रम को स्थगित करने के लिए कहा था। मैं मध्याह्न के समय पिताजी से मिला था और इनको बताया कि सान फ्रांसिसको में बैठे हमारे प्रतिनिधि का केवल आने से पूर्व आप लोगों का दिल्ली से बाहर का कार्यक्रम न बनाया जाए। उसको आशा है कि सोमजी के अन्य साथी भी, जो इनके अनुसन्धान में साझीदार हैं, यहीं एकत्रित हो रहे हैं।''

''वहाँ से क्या सूचना आई है ?''

''वहाँ की अभी तक की सूचना तो केवल यही है कि अमेरिका की सरकार उन सभी अनुसन्धानकर्त्ताओं को विश्वविद्यालय में एकत्रित होने के लिए कह रही है। हमारे प्रतिनिधि का अनुमान है कि सब वैज्ञानिक जब एकत्रित हो जाएँगे तो उनको कुछ करने के लिए कहा जाएगा। तब वे अपने नेता डॉक्टर सोमदेवजी से राय करने की बात करेंगे। ऐसी स्थिति में सम्भव है उनको यहाँ लाया जाए।

''इसी सूचना के आधार पर मैंने पिताजी को कहा है कि आप लोगों को अभी दिल्ली से बाहर न भेजा जाए। इसके साथ ही एक सूचना और मिली है। वह यह कि आपके सब 'ऐपरेटस' विश्वविद्यालय के कमरे में सीलबन्द कर दिए गए हैं।''

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि अनिश्चित काल के लिए दिल्ली में बन्दी बना लिया गया हूँ।"

मंगलानन्द ने उसको सान्त्वना देते हुए कहा, "ऐसी कोई बात नहीं है। किन्तु मैंने भी यही उचित समझा है कि भ्रमण का कार्यक्रम अभी कुछ दिनों के लिए स्थगित रखने में ही लाभ है।"

अविनाश बोला, "मैं कुछ ऐसा अनुमान लगा रहा हूँ कि सोमजी की सारी टीम की बैठक का प्रबन्ध यहाँ दिल्ली में ही किया जाएगा। इसलिए यही उचित होगा कि आप अभी यहीं रहें।"

"मुझे तो कुछ ऐसा लगता है 'बहुत शोर सुना है पहलू में दिल का, मगर चीरे पर तो एक कतरा खून भी नहीं होगा'।"

"न सही," मंगलानन्द का कहना था, "भले ही इस भाग-दौड़ में कुछ न हो परन्तु व्यर्थ की भाग-दौड़ में परेशानी तो है ही।" फिर उसने सोम को कहा, "तुम बाबा के पास बैठकर ज्ञान-गोष्ठियाँ किया करो।"

गार्गी बोली, "सोम पर लगे प्रतिबन्ध से मुझे तो प्रसन्नता ही हो रही है। इस अवधि में मुझे इसकी पत्नी के गम्भीर हृदय में और अधिक डुबकी लगाने का अवसर मिल जाएगा।"

अम्बा और सरस्वती संगीत अकादमी से वापस लौटते हुए अम्बा के पति पाराशर तथा पुत्र महेन्द्र को भी साथ लेकर सायं सात बजे कोठी पर पहुँचीं। वास्तव में पाराशर स्वयं अम्बा को लेने अपनी गाड़ी लेकर संगीत अकादमी पहुँचे थे। जब भी अम्बा संगीत अकादमी जाती थी, उस दिन उसका पति कचहरी से लौटने के बाद अपने घर पहुँच कर चाय पीने के बाद उसको लेने के लिए संगीत अकादमी पहुँचता था। वह द्वार पर ही उसकी प्रतीक्षा किया करता था।

किन्तु उस दिन अम्बा निश्चित समय पर बाहर नहीं निकली। उसका कारण यह था कि उस दिन उसके साथ सरस्वती थी और जब अम्बा का पाठ समाप्त हुआ तो सरस्वती ने अम्बा से आग्रह किया था कि उस पर कृपा कर वह थोड़ा-सा अपना वीणा-वादन उसको सुनाए। विलम्ब होता देख पाराशर भीतर चला गया था। वहाँ वीणा-वादन चल रहा था, इसलिए उसको बैठना पड़ा और वह भी उसका रसास्वादन करता रहा।

उसके बाद सरस्वती ने स्वयं वीणा सीखने की इच्छा व्यक्त की। इस बातचीत में भी कुछ समय लग गया। इस प्रकार उस दिन विलम्ब पर विलम्ब होता गया। इस प्रकार मोहनलाल पाराशर उन दोनों महिलाओं तथा अपने पुत्र को लेकर अपनी ससुराल पहुँच गया।

जिस समय ये लोग पहुँचे सोम उस समय अपने बाबा के साथ बैठा हुआ अपने दिल्ली प्रवास का कार्यक्रम बना रहा था। सरस्वती और मोहनलाल सीधे बाबा के

कमरे में ही आ गए थे। परिवर्तित कार्यक्रम के विषय में जानने की दोनों को ही उत्सुकता थी।

सोम ने जब मोहनलाल को इस परिवर्तन के लिए अविनाशचन्द्र वाली बात बताई तो मोहनलाल ने कहा, "किन्तु मैं समझता हूँ कि उसके आधार पर आपको अपना कार्यक्रम स्थगित करने की आवश्यकता नहीं थी।"

"यह स्थगन तो पिताजी की इच्छा पर हुआ है। उनका कहना था कि कुछ नयी बात होती दिखाई दे रही है। इसलिए जो कुछ होना है वह हमारे रहते ही हो जाए तो अच्छा है। यदि उस समय हम अपनी यात्रा पर हुए तो व्यर्थ ही बीच में कार्यक्रम छोड़कर अथवा बदलकर आना पड़ सकता है।"

"अर्थात् पिताजी इसमें किसी प्रकार के झगड़े की सम्भावना समझते हैं?"

"उनकी बात से तो ऐसा ही लगता है।"

सरस्वती ने विषय बदलते हुए कहा, "मैं तो संगीत अकादमी में वीणा-वादन सीखने की बात कर आई हूँ।"

"क्या किया है?"

"अभी तो केवल इतना निश्चित हुआ है कि वहाँ के अध्यापक मुझे वीणा सिखाने के लिए उद्यत हैं। सप्ताह में दो बार एक-एक घण्टा यह प्रशिक्षण होगा। इसके लिए मुझे वहाँ जाना होगा। इसका शुल्क दो सौ रुपया मासिक है।"

"कब से आरम्भ करने का विचार है और कब तक सीखती रहोगी?"

"इसका मैंने अभी निश्चय नहीं किया है। इसका निश्चय तो तभी होगा जब मेरा यहाँ स्थायी रूप में रहने का निश्चय हो जाएगा।"

"तब तो ठीक है। अन्यथा मुझे तो सन्देह होने लगा था कि जिस प्रकार एक बार पलक झपकने की भाँति अपना नाम तुरन्त बदल लिया था उसी प्रकार यहाँ रहने का निश्चय भी तो नहीं कर लिया है?"

अपने पति के व्यंग्य को सुनकर सरस्वती मुस्करा दी। फिर बोली, "परन्तु श्रीमान्‌जी! मेरे इस प्रकार सहसा किए हुए निश्चय कभी विपरीत और हानिकर तो सिद्ध नहीं हुए हैं। उनका फल सदैव ही शुभ होता रहा है। इसका श्रेय मैं अपनी बुद्धि को ही देती हूँ।"

"हाँ, कभी विपरीत फलदायक तो नहीं हुआ। कम-से-कम तुम्हारा मेरे साथ विवाह का निश्चय तो शुभ फलकारक ही हुआ है।"

"उसी प्रकार नाम बदलने का निश्चय भी फलदायक सिद्ध होने लगा है।"

"इससे मेरा भारत में रहने का कार्यक्रम अधिकाधिक निश्चित होता जा रहा है और मेरा मन कहता है कि अब तो यह लगभग निश्चय-सा ही है। मेरी अनुपस्थिति में जो कुछ भी हुआ है उसका संकेत इसी दिशा की ओर है।"

सोमदेव भी कुछ-कुछ समझ तो ऐसा ही रहा था। अविनाशचन्द्र की बातें इसी

दिशा की सूचक थीं।

सोम को अपनी पत्नी की भविष्यवाणी में अधिकाधिक विश्वास होता गया। वह अब इस दिशा में सोचने लग गया था कि उसकी पत्नी उसके जीवन में क्रान्ति लाने वाली सिद्ध हो रही है। यद्यपि उसकी पत्नी के कार्य से और उसके अपने जीवन से प्रत्यक्षरूपेण किसी प्रकार का कोई सम्बन्ध नहीं दिखाई दे रहा था, तदपि वस्तुस्थिति यही थी कि वह उसके लिए क्रान्तिकारिणी सिद्ध हो रही थी।

सोमदेव ने अमेरिका में जब से अपने अनुसन्धान-कार्य के सम्बन्ध में हलचल सुनी थी तबसे ही उसके मन में यह आ रहा था कि मानव बुद्धि की प्राकृतिक नियमों पर इस विजय को मूर्ख राजनीतिक नेता अपने कुत्सित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग करने की दिशा में हाथ-पैर मारने लग गए हैं।

वह अपने मन में विचार करने लगा कि क्या यह ठीक हो रहा है? यदि यह ठीक नहीं हो रहा है तो उसको किस प्रकार रोका जा सकता है?

: ६ :

सोमदेव अपनी पत्नी सरस्वती को लेकर जब उस दिन रात के भोजन के लिए भारत में अमेरिका के राजदूत के निवास-स्थान पर पहुँचा तो श्रीमती तथा श्री किसिंजर उनके स्वागत के लिए द्वार पर खड़े थे। उनको वहाँ खड़ा देख सोम के मन में उठने वाले संशयों का निवारण हो गया। श्रीमती किसिंजर ने सरस्वती की बाँह-में-बाँह डाली और सोमदेव को आगे चलने के लिए कहकर उनको भीतर ले गई। श्री किसिंजर सोमदेव के साथ चल रहे थे।

चलते-चलते किसिंजर ने पूछा "आपके विश्वविद्यालय से किसी प्रकार की कोई सूचना आई है?"

"क्या किसी प्रकार की कोई सूचना आने की सम्भावना थी?"

"हाँ, मेरी सरकार ने कुछ मुझे इस प्रकार का संकेत किया है। अभी एक घटा पूर्व मुझे वहाँ से सन्देश मिला है कि मैं आपको कुछ दिन दिल्ली में ही रहने की राय दूँ।"

"परन्तु मेरी पत्नी तो भारत-भ्रमण का कार्यक्रम बना रही है।"

"तो क्या हुआ? वे जा सकती हैं। उनके विषय में किसी प्रकार की कोई सूचना नहीं है। क्योंकि उनका आपके काम से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है, इस लिए उनको रोकने का कोई अर्थ नहीं।"

"वह अकेली तो भ्रमण के लिए जा नहीं सकती, जाना तो मुझे भी उसके साथ ही है।"

तब श्रीमती किसिंजर बोली, "परन्तु लिसा की माताजी भी तो भारत आ रही हैं?"

इस आकस्मिक और अप्रत्याशित सूचना से तो सरस्वती चलती-चलती रुक

गई और वह खड़ी होकर श्रीमती किसिंजर का मुख देखने लगी।

श्रीमती किसिंजर बोली, ''आपको आश्चर्य क्यों हो रहा है? सम्भवतया वे भी अपने दामाद की ख्याति का रस लेना चाह रही हों।''

चलते-चलते सरस्वती ने कहा, ''श्रीमती किसिंजर! मैं आपको यह बताना चाह रही हूँ कि मेरा नाम अब लिसा नहीं, सरस्वती है। मैंने अपना नाम बदल लिया है।''

''क्यों, ऐसा क्यों?''

''क्योंकि भारत में रहते हुए मैं पूर्णतया भारतीय बनकर रहना चाहती हूँ।''

''तो क्या अपने अमेरिकनपने को धो डालना चाहती हैं?''

''कम-से-कम यहाँ रहते हुए तो कुछ ऐसा ही है। मेरे पतिदेव के सम्बन्धी मेरे लिसा नाम पर मुस्करा उठते हैं। वे इसे अपनी भाषा के किसी भद्दे शब्द का अपभ्रंश मानती हैं। इसलिए मैंने आज से अपना नाम 'सरस्वती' स्वीकार कर लिया है।''

श्री किसिंजर ने बात बदलते हुए कहा, ''मैंने यह भोज केवल फैमिली अफेयर ही बनाया है।''

तब तक ये लोग डाइनिंग हॉल में पहुँच गए थे। केवल चार व्यक्तियों के लिए चार ही कुर्सियाँ देखकर सोमदेव को प्रसन्नता हुई थी। वह समझ रहा था कि यदि अधिक लोग हुए तो निश्चिन्तता से वार्तालाप नहीं हो पाएगा। अब तो अतिथि ने बात भी स्पष्ट कर दी थी।

किसिंजर सरस्वती की ओर देखकर पूछने लगा, ''मैंने सुना है कि आपकी माताजी स्वयं फ्रेंच हैं और उन्होंने यूनानी पुरुष के साथ विवाह किया था?''

''जी, आपने ठीक ही सुना है, यही कारण है कि मैं स्वयं को खानाबदोश मानती हूँ। क्योंकि न तो मैं फ्रेंच हूँ और न यूनानी ही। अमेरिकन भी मैं नहीं हो सकती क्योंकि मेरा स्वभाव वहाँ की लड़कियों से सर्वथा भिन्न है। अभी तक तो मैं भारतीय भी नहीं थी, क्योंकि यहाँ की महिलाओं के साथ भी मेरा मेल कम ही था। न वस्त्र भारतीय और न शिक्षा-दीक्षा ही भारतीय। जब मैंने भारतीय बनने का निश्चय किया तो सबसे पहले अपना नाम भारतीय महिला के रूप में रख लिया। शेष रहा पहरावा, उसके लिए मैं कल बाजार जाकर भारतीय वस्त्र खरीदकर ले आऊँगी।''

''तो क्या इतने मात्र से आप भारतीय बन जाएँगी?'' किसिंजर का प्रश्न था।

किसिंजर के इस प्रश्न से सोमदेव को हँसी आ गई। उसने कहा, ''ये तो सब बाहरी चिह्न हैं जिनको सरस्वती ग्रहण कर रही है। परन्तु मैंने तो आज से पाँच वर्ष पूर्व ही इसको भीतर से भारतीय बनाने का यत्न आरम्भ कर दिया था। और मैं समझता हूँ कि अधिक नहीं तो पचहत्तर प्रतिशत तो यह भारतीय बन ही चुकी

है। इसके बाहर को तो वहाँ अमेरिका में रहते हुए बदलने का यत्न मैंने किया ही नहीं। इसे यह यहाँ की देखा-देखी स्वयं ही बदलने का यत्न कर रही है।"

यह सुनकर श्रीमती किसिंजर पूछने लगी,"मनुष्य का भीतरी रूप किस प्रकार बदला जा सकता है?"

"उसके लिए मन-मस्तिष्क पर भारतीयता की छाप अंकित करनी पड़ती है।"

तबतक भोजन लग गया था। श्रीमती किसिंजर ने अतिथियों से भोजन का आग्रह किया और इस प्रकार भोजन आरम्भ हुआ। भोजन अमेरिकी प्रकार का ही था। पर्याप्त भारी खाना था।

बात जारी रखते हुए श्रीमती किसिंजर ने पूछा,"मन-मस्तिष्क पर भारतीयता की छाप वाली प्रक्रिया से तो श्रीमती गर्ग को पर्याप्त कष्ट हुआ होगा?"

इसका उत्तर सोम की अपेक्षा सरस्वती ने स्वयं दिया। वह बोली, "जी नहीं, मुझे किसी प्रकार का किंचित् भी कष्ट नहीं हुआ। विपरीत इसके मुझे मानसिक शान्ति प्राप्त होती रही है। यद्यपि ये कहते हैं कि मुझमें पचहत्तर प्रतिशत परिवर्तन हुआ है, भारतीय होने के नाते उसकी मात्रा के विषय में तो आधिकारिक रूप से यही ठीक वता सकते हैं; किन्तु मैं अपनी बात जानती हूँ। मैं तो प्रथम दिन से ही स्वयं को भारतीय मानने लगी थी।"

"और वह पहला दिन विवाह के कितने दिन बाद आया था?" श्रीमती किसिंजर ने मुस्कराते हुए पूछा।

सरस्वती बोली, "विवाह के दूसरे दिन से ही श्रीमान् प्रातःकाल उठकर चार बजे ही स्नानादि कर हमारे सिटिंग रूम में भूमि पर आलथी-पालथी मारकर बैठे और आँखें मूँदकर कुछ बुड़बुड़ाते रहे। एक-दो दिन तक तो मैं इनका यह नाटक देखती रही, फिर एक दिन मैंने पूछ ही लिया कि यह क्या है?

"इनका उत्तर बड़ा विचित्र था। इन्होंने कहा कि जो वस्तु चखी न हो उसका स्वाद तो उस वस्तु को खिलाकर ही बताया जा सकता है क्योंकि इस प्रकार के अपने अनुभवों का शब्दों में वर्णन करना कठिन है। अतः उसका स्वाद जानने के लिए अगले दिन से मैं भी उसी प्रकार बैठने लगी जिस प्रकार ये महाशय बैठते थे। हाँ, प्रक्रिया का थोड़ा ज्ञान मैंने इनसे पूछकर सीख लिया था। इस प्रकार मैंने दो-तीन दिन ही किया होगा कि मुझे स्वयं में परिवर्तन दिखाई देने लगा। वह परिवर्तन बड़ा ही सुखकारक अनुभव हो रहा था। इसलिए मैं कह सकती हूँ कि विवाहित जीवन के आरम्भ से ही मैं स्वयं को भारतीय अनुभव करती रही हूँ। अपने इस भारतीय होने का सम्बन्ध मैं इनके अनुसन्धान-कार्य से भी मानती हूँ।"

"वाह! यह किस प्रकार भला?" ऐमिली ने पूछा।

"इन्होंने जो कुछ भी वैज्ञानिक अनुसन्धान किया है वह भारतीय विज्ञान से सम्बन्धित है। यूरोपियन अथवा अमेरिकी विज्ञान की पहुँच अभी वहाँ तक है ही

नहीं। इस प्रकार भारतीय विद्वान् अथवा वैज्ञानिक की पत्नी होने के नाते भी मैं भारतीय ही हूँ।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि आप जातीयता को जन्मस्थान से सम्बन्धित नहीं मानतीं ?"

"जी नहीं। जन्म से तो सब मनुष्य ही होते हैं। इसमें देश का सम्बन्ध क्या कर सकता है ? देश से तो राष्ट्रीयता का सम्वन्ध होता है। सभी मनुष्यों और सभी राष्ट्रों में भले-बुरे कर्मों के आधार पर श्रेष्ठ अथवा नीच मनुष्य अर्थात् जातियाँ होती हैं। मैं स्वयं को मनुष्य जाति की मानती हुई, भारतीय मनुष्यों में अपनी गणना करती हूँ। इसी को मैं भारतीय जाति मानती हूँ।"

सरस्वती की यह युक्ति न किसिंजर के गले उतरी और न एमिली के ही। वे दोनों उसका मुख देखते रहे। सोम इस सारी बात में रस लेता रहा। उनको द्विविधा में देखकर वह मुस्करा तो दिया किन्तु उसने यह उचित नहीं समझा कि अपनी पत्नी की बात में हस्तक्षेप करे।

आखिर किसिंजर ने सोम से ही पूछा, "डॉक्टर ! इस भोली-भाली लड़की के मस्तिष्क में आपने यह क्या कूड़ा-करकट भर दिया है ?"

"सरस्वती की बात ठीक ही है। इस बात को तो अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि हम दोनों मनुष्य होने के नाते एक ही जाति के प्राणी हैं। प्राणी होने से ही जाति बनती है। हम एक ही जाति के हैं। आगे तो यह मनुष्य-मनुष्य में भेद की बात कर रही है। ये भेद कई प्रकार से किए जा सकते हैं। कर्मों के विचार से भी मनुष्य-मनुष्य में विभेद किया जा सकता है। हमारी भाषा में अच्छे गुण वाले व्यक्तियों को देव कहा जाता है और दुष्ट जनों को दानव।

"एक अन्य प्रकार भी मनुष्यों में विभेद किया जा सकता है, वह ज्ञानवान और अज्ञानी के रूप में। ज्ञानवान वह कहलाता है जिसे प्रकृति के रहस्यों का ज्ञान हो। विज्ञान में भारतीय विशेष प्रतिभाशाली होते हैं। इसी कारण ज्ञानी और भारतीय पर्यायवाचक बन गए हैं। अधिकांश भारतीय विज्ञान के ग्रन्थ अर्थात् वेद को अपना पथ-प्रदर्शक मानते हैं। इसका परिणाम यह है कि वेद, विज्ञान और भारतीय पर्याय-वाचक बन गए हैं।

"मेरे अनुसन्धान में वेद-विज्ञान का विशेष हाथ है। इसी कारण मेरी पत्नी भी स्वयं को उससे सम्बन्धित मानती है। यही कारण है कि भारतीय वैज्ञानिक की पत्नी होने से स्वयं को भारतीय मानती है।

"अमेरिका से तो इसका राष्ट्रीयता का सम्बन्ध है, वह भी इस कारण क्योंकि यह वहाँ की नागरिक है।"

"ओह ! तो यह बात है।" कुछ सन्तुष्टि का-सा अनुभव करती हुई एमिली बोली, "मैं अब समझ गई हूँ। यह लड़की नागरिकता के विचार से तो अमेरिकन

है, विज्ञान की दृष्टि से यह स्वयं को भारतीय समझती है और जन्म से यह मनुष्य है।"

यह सुनकर सभी हँस पड़े। किसिंजर ने पूछा, "परन्तु यह स्वयं भी तो अनुसन्धान में लगी हुई है, उसके विचार से यह क्या है?"

इसका उत्तर सोम ने देना उचित नहीं समझा, वह सरस्वती की ओर देखने लगा। सरस्वती उसका अभिप्राय समझ गई थी। उसने कहा, "मैं शरीर में आत्मा की खोज कर रही हूँ। भारतीय भाषा में 'ऐनिमेट ऑर्गनिज्म' को शारीरः कहते हैं। मैं ऐसे पदार्थ में 'लाइफ एलिमेंट' की खोज कर रही हूँ। हमारी टीम पाश्चात्य विज्ञान के ढंग से खोज कर रही है। किन्तु पिछले तीन वर्ष में हम अपने लक्ष्य की ओर एक सेंटीमीटर भी नहीं खिसक पाए हैं। अपने पति के भारतीय विज्ञान से एक समस्या सुलझती देखकर मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हो रहा है कि इस विषय में कदाचित् पाश्चात्य विज्ञान तो असमर्थ ही है। इसीलिए इस विषय में भी मैं भारतीय बनने का विचार कर रही हूँ। और जब यह अनुसन्धान-कार्य आरम्भ कर दूँगी तो उस विषय में भी मैं भारतीय बन जाऊँगी। और यदि भारतीय विज्ञान के आधार पर मैंने 'आत्मा' को खोज लिया तो फिर मैं स्वयं को इस विषय की विद्वान् मानने लगूँगी।"

"परन्तु जब कोई लाइफ एलिमेंट है ही नहीं तो वह मिलेगा कहाँ से?"

"यदि यह निश्चय होता तो फिर इस विषय में अन्वेषण की आवश्यकता ही कहाँ रह गई थी? हमारी टीम यदि अन्वेषण कर रही है तो केवल इसी आधार पर कि इसका निश्चय नहीं है। और वह उसको खोजने का यत्न कर रही है। यदि आशा न होती अथवा विश्वास होता कि ऐसा कोई ऐलिमेंट है ही नहीं तो हम किसी अन्य विषय पर खोज करते।"

"इसमें आप लोगों को सफलता मिलेगी?" किंजिसर ने पूछा।

"इस बात पर भी हमने गम्भीरता से विचार किया है। कार्य आरम्भ करने से पूर्व हमारी टीम ने इस विषय पर कई दिन तक विचार-विमर्श किया। तब सब का यही मत था कि यद्यपि अभी तक यह आत्म-तत्त्व किसी के द्वारा पकड़ा नहीं जा सका है तदपि जीवित और निर्जीव में अन्तर का कारण भी तो किसी को विदित नहीं हो सका है। केवल यह कह देने से ही 'यह मिल नहीं रहा है' हमें सन्तोष नहीं हुआ।

"तदपि अभी तक की खोज से हम इसको पा नहीं सके हैं। इससे ही मेरे मन में विचार आया है कि भू-आकर्षण की भाँति इसकी खोज भी हम मिथ्या रीति से तो नहीं कर रहे हैं। अपना विचार मैं अपने साथियों के समक्ष रखने वाली हूँ। वहाँ निश्चय किया जाएगा कि हमें इस विषय पर खोज जारी रखनी चाहिए अथवा

नहीं। और यदि जारी रखनी है तो उसके लिए भारतीय उपाय उपयुक्त है अथवा नहीं।"

किसिंजर और उसकी पत्नी, दोनों ही, डॉक्टर सोमदेव और उसकी पत्नी को इस प्रकार युक्ति करते देखकर दंग रह गए। भोजन तो कभी का समाप्त हो चुका था किन्तु बातों में लीन रहने के कारण किसी को समय का भान ही नहीं रहा था। तभी कहीं से घण्टी का स्वर सुनाई दिया। किसिंजर ने हाथ में बँधी घड़ी की ओर देखा और बोला, "ओह ! मैंने तो किसी को समय दिया हुआ था।"

यों कहता हुआ वह उठ पड़ा। उसने सोम और उसकी पत्नी से हाथ मिलाया और अपनी पत्नी से बोला, "डियर ! इनको एम्बैसी की कार द्वारा घर पहुँचवा देना।"

इस प्रकार अपनी पत्नी को निर्देश देकर किसिंजर वहाँ से भागता-सा निकल गया।

सोम अपनी पत्नी के साथ जब घर पहुँचा तो उस समय ग्यारह बज गए थे। सोम का पिता मंगलानन्द ड्राइंग-रूम में ही बैठा हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। उनको आया देख उसने सुख का साँस लिया और कहने लगा, "मैं तो तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। मैं जानना चाहता था कि वहाँ तुम्हारे 'टूअर' के विषय में कुछ बात हुई अथवा कि नहीं।"

"बात तो हुई है किन्तु कुछ विशेष नहीं। आधा घण्टे पहले तक हम भोजन की मेज पर बैठे ही बात कर रहे थे तब सहसा घंटी बजी और किसिंजर यह कहकर उठ गया कि यह समय उसने किसी और से बात करने के लिए निर्धारित किया हुआ था।"

मंगलानन्द ने कहा, "एक घण्टा पूर्व अविनाशचन्द्र का फोन आया था। वह कह रहा था कि तुम्हारे अनुसंधान दल के अवशिष्ट चार वैज्ञानिकों को हवाई जहाज में बैठा दिया गया है, वे दिल्ली पहुँचने वाले हैं। वे सब सरकारी व्यय पर लाए जा रहे हैं। सम्भवतया कल मध्याह्न तक वे पहुँच जाएँगे।"

फिर कुछ विचारकर मंगलानन्द ने ही कहा, "शायद कुछ और भी बात होगी जिसे उसने फोन पर बताना उचित नहीं समझा। क्योंकि उसने कहा कि वह कल प्रातःकाल आएगा और शेष बातें उसी समय प्रत्यक्ष में ही करेगा। हाँ, उसने इतना अवश्य कहा कि वहाँ की सरकार की अपेक्षा उसकी कम्पनी के सूचना प्राप्त करने के साधन श्रेष्ठतर हैं।"

"पिताजी ! सरस्वती की तो यही धारणा है कि अब हम अमेरिका नहीं जा रहे हैं?"

"तो क्या इसका भी वहाँ अपना कोई पृथक् सूचना विभाग है?"

यह सुन तीनों हँस पड़े। सरस्वती ने कहा, "पिताजी ! हमारा अभ्यास है कि

सोने से पूर्व हम एक प्याला कॉफी पिया करते हैं ।''

''वह आपके शयनकक्ष में पहुँच जाएगा ।''

सोने से पूर्व सरस्वती ने सोम से कहा, ''मैं आज आपसे पृथक् सोना चाहती हूँ ।''

''क्यों ?''

''मैं कल रात के समागम का परिणाम जानना चाहती हूँ ।''

''उसका निर्णयात्मक ज्ञान तो एक मास बाद ही पता चल सकता है, उससे पूर्व कैसे लगेगा ?''

''मैं तबतक संयम से रहना चाहती हूँ ।''

''सोच लो कि इस जानकारी के लिए क्या कुछ करना पड़ रहा है ?''

''कुछ अधिक तो नहीं । अब आप सो जाइए । मुझे ऐसा आभास हो रहा है कि आगामी कुछ दिन आपके लिए बहुत परिश्रम के दिन होंगे ।''

सोम ने फिर कोई बात नहीं की और चुपचाप अपने पलंग पर जाकर लेट गया । दो-चार मिनट बाद सरस्वती भी अपने बिस्तर पर जाकर सो रही ।

अगले दिन से पति-पत्नी की दिनचर्या पूर्ववत् नियमानुसार चलने लगी । प्रातः नित्य-कर्म से निवृत्त हो स्नानादि कर वे अपने ध्यान, धारणा और समाधि में लग गए । साढ़े पाँच बजे सोम ने सरस्वती को विद्याध्ययन कराना आरम्भ कर दिया ।

सोम ने पिछले सन्दर्भ में पढ़ाते हुए कहा, ''मैंने पिछले पाठ में तुमको ऋग्वेद का १-९८-२ मन्त्र पढ़ाया था । उसमें दो शब्दों का अर्थ विशेष रूप से समझना आवश्यक है । एक शब्द है 'वैश्वानर' इसका अर्थ है विश्व का नर । विश्व का अभिप्राय पूर्ण व्योम से है । उसके भीतर प्रचलित यह संसार है । नर का अर्थ होता है नेता । जो इस चलायमान जगत् का पथप्रदर्शक है । इस जगत् का मार्गदर्शक परमात्मा का ओज ही है । वह इस रूप में वैश्वानर अग्नि कहलाती है ।''

सरस्वती ने पूछा, ''एक ही अग्नि के भिन्न-भिन्न नाम क्यों हैं ?''

''वैदिक भाषा की यह विशेषता है कि उसमें कर्म से नाम दिया जाता है । परमात्मा की शक्ति कार्य करती है इसलिए उसके नाम भी अनेक हैं । वैश्वानर अग्नि के उस रूप का नाम है जिसमें वह इस कार्य जगत् का मार्गदर्शन करता है । वास्तव में यह वही शक्ति है जिसे सृष्टि-रचना के समय अर्वा अथवा अश्वाग्नि कहा था ।

''यही अग्नि जीव-जन्तुओं में कार्य करती है ।''

''इसका तो अभिप्राय यह हुआ कि मानव इस पृथ्वी पर न केवल भू-आकर्षण का बन्दी है अपितु वह वैश्वानर अग्नि का भी दास है ?''

''बहुत सीमा तक मानव दास ही है । तदपि मनुष्य को अन्य जीव-जन्तुओं की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्रता है । इसका कारण है मनुष्य के मन का बलवान होना और

उसकी बुद्धि का तीक्ष्ण होना। मैंने एक दिशा में प्रकृति की इस बाधा को पार करने का यत्न किया है।"

"वैश्वानर का कार्य कबतक रहेगा?"

"जब तक इस जगत् के बने रहने की अवधि है। अभिप्राय यह कि प्रलयकाल में परमात्मा अपनी इस वैश्वानर अग्नि को समेट लेगा। तब सब कुछ पुनः परमाणु-भूत हो जाएगा। उसे प्रलय कहते हैं। अर्थात् यह सब निर्मित संसार अपने कारण में विलय हो जाएगा।"

सरस्वती का इससे समाधान नहीं हुआ। उसने पूछा, "यह कैसे विदित हुआ कि इस जगत् के विद्यमान रहने की अभी अवधि शेष है?"

"यह बताना मेरे लिए कठिन है। खगोलविदों का कहना है कि अभी दो अरब पैंतीस करोड़ वर्ष तक यह सृष्टि और चलेगी। उनकी गणना का आधार क्या है यह बताना मेरे लिए सम्भव नहीं है। न तो यह मेरा विषय है और न ही मेरे बाबा का यह विषय था, उनसे ही मैंने यह विद्या पढ़ी है।

"हाँ, अथर्ववेद में पूर्ण कल्प की अवधि बताई है। अर्थात् जब यह अग्नि परमाणु पर आरूढ़ हुई तबसे आरम्भ कर जबतक यह आरूढ़ रहेगी तब तक की अवधि का वर्णन है। उसमें बताया गया है कि यह पूर्ण काल चार अरब बत्तीस करोड़ सौर वर्ष का है।

"इसमें एक बात निश्चित है कि इस काल में न तो पृथ्वी पर वनस्पतियाँ तथा जीव-जन्तु थे और न ही पूर्ण अवधि समाप्त होने तक रहेंगे।

"पहले परमाणु असाम्यावस्था में हुए, फिर इनसे आपः बने और फिर उनसे चराचर जगत् बना। इसमें यह पृथ्वी भी बनी। जिस समय यह बनी थी उस समय यह बहुत ही ऊष्ण थी। धीरे-धीरे यह ठण्डी हुई तब फिर इस पर पहले वनस्पतियाँ और फिर जीव-जन्तु उत्पन्न हुए। मनुष्य की उत्पत्ति सबसे बाद में हुई। यह अनुमान है कि मनुष्य को उत्पन्न हुए पैंतीस और चालीस लाख के भीतर वर्ष हुए हैं। पाश्चात्य वैज्ञानिकों का अनुमान है कि मनुष्य का आविर्भाव हुए बीस सहस्र वर्ष के लगभग हुए हैं। दोनों के अपने-अपने कथन के विषय में अपनी-अपनी युक्तियाँ हैं।"

"तो क्या समझा जाए?"

"कुछ भी समझ लिया जाए। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। अन्तर तो केवल इस पर पड़ता है कि पहले हम यह स्वीकार करें कि मनुष्य पूर्वापेक्षा उन्नति कर रहा है अथवा अवनति और उस उन्नति अथवा अवनति का कारण क्या है? यदि उन्नति कर रहा है तो जिस दिशा में वह उन्नति कर रहा है उस दिशा में ही चलता चला जाए और यदि अवनति हो रही है तो उसका कारण जानकर उसको रोका जाए।"

इस प्रकार अध्ययन करते हुए आठ बज गए थे। पति-पत्नी दोनों उठे और वस्त्र पहनकर बाहर आ गए।

: १० :

ड्राइंग-रूम में आकर उन्होंने देखा कि अविनाश और परमानन्द दोनों व्यक्ति सोम के पिता मंगलानन्द से बातचीत कर रहे थे। अविनाश को देखते ही सोम समझ गया कि वह रात फोन पर हुई अधूरी बात को पूरा करने के लिए आया है।

सोमदेव ने उनके पास पहुँच सबको नमस्कार किया और वह भी उनके समीप ही बैठ गया। सरस्वती गार्गी के कमरे की ओर चली गई।

सोम के बैठने पर बात को पुनः चालू करते हुए मंगलानन्द ने कहा, "अविनाश का कहना है कि तुम्हारे साथ इनकी कम्पनी का अनुबन्ध अभी हो जाना चाहिए।"

"परन्तु अपने साथियों से राय किये बिना मैं किसी प्रकार का अनुबन्ध करना उपयुक्त नहीं समझता।"

"ठीक है, पहले तुम अपना मत बना लो। फिर जो अनुबन्ध ये करना चाहते हैं उसकी शर्त को भली प्रकार समझ लो जिससे कि इनसे अनुबन्ध करने से होने वाले लाभ के विषय में तुम अपने साथियों को समझा सको।"

"हाँ, यह ठीक है। भाई साहब! आप अनुबन्ध का प्रारूप दे दीजिए। इस विषय पर अपने साथियों से बात करने से पूर्व मैं उसको भली-भाँति पढ़ लूँगा और यदि किसी बात पर संशय हुआ तो उसका निराकरण आपसे करवा लूँगा।"

यह सुनकर परमानन्द ने पास में रखे अपने ब्रीफकेस को उठाया। उसे खोल उसमें से एक कागज निकालकर सोम को दे दिया।

जब परमानन्द कागज दे चुका तो अविनाश बोला, "मध्याह्न दो बजे के लगभग आपके साथियों के प्लेन की यहाँ पहुँचने की आशा की जा रही है। एक बात मैं कहना चाहता हूँ। वह यह कि उनसे परामर्श करने का स्थान अमेरिकन दूतावास न होकर कोई अन्य स्थान होना चाहिए।"

सोमदेव बोला, "मैं यत्न करूँगा कि यह विचार-विनिमय हमारी इस कोठी में हो। परन्तु यह विचारणीय है कि वे अमेरिकी सरकार के मेहमान बनकर आ रहे हैं। इस कारण वहत कुछ उनकी इच्छा जानकर और उनको भेजने के उनकी सरकार के उद्देश्य को जानकर ही निश्चय किया जा सकता है।

"वैसे अमेरिका के लोग सरकार के उतने भक्त नहीं होते जितने कि भारत के लोग बनने का यत्न करते हैं।"

सोमदेव को अनुबन्ध का प्रारूप दे तथा उससे यह आश्वासन पाकर कि वार्तालाप यथासम्भव अमेरिकी दूतावास पर नहीं होगा, परमानन्द और अविनाशचन्द्र अपने कार्य पर चले गए।

उसके जाने पर सोम के पिता ने कहा, "मैंने इस अनुबन्ध को पढ़ लिया है।

वास्तव में इसे तैयार ही मैंने किया है। इस पर भी तुम पहले इसको पढ़ लो और उसके बाद मुझसे परामर्श करोगे तो उपयुक्त होगा।"

अपने पिता की बात सुनकर सोमदेव ने इस विषय पर जो विचार किया हुआ था, वह बताते हुए अपने पिता को कहा, "मैं समझता हूँ कि इस प्रकार की लेनदेन की बातें स्वयं न कर अपने किसी प्रतिनिधि द्वारा ही करानी चाहिए। काम करने वालों को लेन-देन की बातों से पृथक् ही रहना चाहिए। परन्तु इस विषय में मेरे अमेरिकन साथी किस प्रकार सोचेंगे यह कहना कठिन है।

"एक बात मेरे मन में है। वह यह कि विज्ञान के किसी भी आविष्कार को जन-जन के व्यवहार में लाने योग्य बना देना चाहिए। यदि हमने प्रकृति के रहस्य का ज्ञान प्राप्त किया है तो उसका लाभ धनी और निर्धन सबको समान रूप में पहुँचना चाहिए। इस प्रकार हमारा आविष्कार किसी प्रकार भी धनी-मानियों के 'एकाधिकार' का विषय नहीं होना चाहिए।"

"ठीक है। बिना किसी सूचना के तुमको अपने साथियों का स्वागत करने के लिए पालम जाने की आवश्यकता नहीं है।"

बात समाप्त हो गई। मंगलानन्द तो अपने कार्यालय को चल दिया और सोम अपने बाबा के कमरे में चला गया।

सोम को आया देख बाबा ने पूछा, "रात तुम्हारे अमेरिका जाने के विषय में कोई बातचीत हुई है?"

"रात तो कोई बात नहीं हुई। फिर भी मैं समझता हूँ कि मेरे वहाँ जाने, न जाने के विषय में सोचना अथवा चाहना अमेरिका की सरकार का अधिकार नहीं है। यह वहाँ के विश्वविद्यालय का कार्य है। सरकार की यदि इस दिशा में कुछ भी इच्छा हुई तो वह विश्वविद्यालय के अधिकारियों द्वारा ही होनी चाहिए।

"जहाँ तक पता चला है, वह यही है कि मेरे अनुसन्धानकर्ता साथी आज दिल्ली पहुँचने वाले हैं।"

"इस बात का तो मुझको ज्ञान है। रात जब अविनाश का फोन आया था तो मैं वहीं था। इसीलिए तो मैंने तुमसे पूछा है। मेरा तो यही विचार है कि कार्य वहीं की प्रयोगशाला में होना चाहिए। हाँ, वह सरकारी नियन्त्रण में नहीं होना चाहिए। किसी सरकारी प्रयोगशाला में होने पर भी उस पर सरकार का अधिकार मान लिया जाएगा।"

"इसके अतिरिक्त मैं समझता हूँ कि किसी ऐसे विधि-विधान की खोज होनी चाहिए जिसके आधार पर हमारे कार्य का लाभ निर्धन-से-निर्धन व्यक्ति को भी प्राप्त हो सके। मेरी अभिलाषा तो यही है कि प्रकृति के इस रहस्य का अनावरण जन-जन के लाभ के लिए हो।"

"ठीक है, इसके लिए यत्न करो।"

कुछ देर मौन रहने पर बाबा ने ही कहा, "अब तक की बातचीत से मैं यह समझ पाया हूँ कि तुम्हारी पत्नी की इच्छा भारत में ही रहने की है। यह किस प्रकार सम्भव होगा, इस पर भी विचार करो।"

"जी हाँ, उसने भारत में रहने की इच्छा व्यक्त की है। परन्तु इसमें बहुत-सी बाधाएँ हैं। उनको पार करना सुगम नहीं है। एक सुखद समाचार है। वह यह कि सरस्वती की मातीजी भी भारत आने वाली हैं, ऐसा समाचार मिला है। कब आने वाली हैं, इसकी अभी सूचना नहीं है। यदि वे आएँगी तो उनकी कन्या के विषय में निर्णय करना और भी सुगम हो जाएगा।"

इस प्रकार बाबा के साथ कुछ इधर-उधर की बात करने के उपरान्त सोमदेव अपने पिता के स्टडीरूम में चला गया। वहाँ एकान्त में बैठकर अपने भाई के दिए हुए अनुबन्ध के प्रारूप को पढ़ने लगा।

साढ़े नौ बजे प्रातःकाल का अल्पाहार किया गया और फिर सरस्वती तो अपनी सास को साथ लेकर अपने लिए भारतीय वस्त्र खरीदने के लिए चली गई। सोमदेव अपने स्टडीरूम में जाकर कोई पुस्तक पढ़ने लगा।

मध्याह्नोत्तर चार बजे होटल इण्टरनेशनल से फोन आया। यह फोन सोम के साथी, भौतिकी के प्राध्यापक मेकार्थर का था। सोम ने जब उसका नाम सुना तो बोला, "आपने यदि अपने पहुँचने की सूचना दी होती तो मैं आपका स्वागत करने के लिए हवाईपत्तन पर पहुँच जाता।"

"डॉक्टर साहब ! क्या बताएँ। वहाँ से हमें इस हड़बड़ी में भेजा गया कि हम किसी को किसी प्रकार की सूचना दे ही नहीं सके। यहाँ तक कि मेरी पत्नी न्यूयार्क में थी। मैं उसको भी नहीं बता पाया। यहाँ आकर मैंने केबल किया है। उसे देखकर उसको आश्चर्य हो रहा होगा।"

"तो ऐसा करिए, जिस प्रकार अमेरिका से भारत पहुंच गए हैं उसी प्रकार मेरे मकान पर पहुँच जाइए।"

"मैं अकेला नहीं हूँ। अपनी पूरी टीम है और साथ में विश्वविद्यालय का एक क्लर्क भी है।"

"तो क्या हुआ ? आप सभी आ जाइए। मुझे तो इस बात पर प्रसन्नता होती यदि तुम सब लोग मेरे पिता के 'अतिथि' होते।"

"उसके लिए धन्यवाद। हमारे लिए यहाँ पन्द्रह दिन के लिए तो कमरे बुक हो ही चुके हैं। अभी-अभी हमारे भारत भ्रमण के 'टुअर' का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। मैंने तो आपको फोन इस कारण किया है कि आज सायं की चाय आप हमारे साथ बैठकर पीजिए। इसे हम अपना सौभाग्य समझेंगे।"

"आपका आग्रह टालने का सामर्थ्य मुझमें कहाँ ? मैं आधे घण्टे तक वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

यथासमय सोमदेव होटल इण्टरनेशनल पहुँच गया। उसने होटल के द्वार पर ही अविनाशचन्द्र को खड़ा पाया। सोम को आया देख वह बोला, "तो आप आ गए हैं ?"

"और आप मेरी प्रतीक्षा में खड़े हैं ?"

"जी नहीं, मैं तो यहाँ किसी अन्य व्यक्ति से मिलने के लिए आया हूँ। मुझे उसका पत्र मिला है और मैंने वह पत्र भीतर भेजा है, अब उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

"वह भी हमारे काम के सम्बन्ध में ही है ?"

"है तो सही। पर उसमें आपके करने का कुछ भी नहीं है।"

सोम ने द्वार पर खड़े चपरासी से कहा, "मैं कमरा नम्बर तीस में जाना चाहता हूँ।"

"आप डॉक्टर सोमदेव हैं ?"

"हाँ।"

चपरासी झुककर सलाम करता हुआ बोला, "आइए, मैं आप की ही प्रतीक्षा में खड़ा था।"

उसके साथ लिफ्ट में चढ़कर सोमदेव चौथी मंजिल पर पहुँच गया। जब चपरासी सोम को लेकर कमरा नम्बर तीस के समीप पहुंचा तो विश्वविद्यालय का क्लर्क वहाँ पर खड़ा था। उसके हाथ में एक पत्र था, जिसे वह पढ़ रहा था। उसके पास एक अन्य चपरासी खड़ा था। क्लर्क ने सोम को देखा तो पत्र को लपेटकर अपनी जेब में डाल लिया और फिर चपरासी से कहने लगा, "इस पत्र देने वाले को कहो कि दो घण्टे बाद वह मुझे रिसेप्शन हॉल में मिले। मैं तब वहीं मिलूंगा।"

इस वार्तालाप को सुनकर सोमदेव ने सहज ही अनुमान लगा लिया कि यह अविनाश के विषय में ही बात हो रही है। तदपि उसने यही भाव व्यक्त किया कि उसका उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है। जब वह चपरासी हैडक्लर्क का सन्देश लेकर चला गया तो सोमदेव ने उसकी ओर मुख करके कहा, "मैं भी आपसे मिलने के लिए आया हूँ।"

इससे हैडक्लर्क का ध्यान भंग हुआ। उसने सोमदेव को पहचाना और फिर बोला, "ओह, डॉक्टर सोमदेव ! आइए, आइए, आपकी तो बड़े जोरों से प्रतीक्षा हो रही है।"

उसको लेकर वह क्लर्क उस कमरे में गया जहाँ उसके चारों साथी बैठे थे। सोम को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उन चारों के साथ पाँचवीं उसकी अपनी सास भी बैठी है।

अपनी सास को बैठी देख उसने पहले उसका ही अभिवादन किया और फिर बोला, "आपको तो सीधे लिसा के पते पर जाना चाहिए था। वहाँ आपकी प्रतीक्षा

की जा रही है।''

''परन्तु डॉक्टर सोम ! आपको किसने बताया कि मैं भारत आ रही हूँ ?''

''मुझे आप सबके आने का समाचार तो मिल गया था, किन्तु यह पता नहीं चल पाया था कि आप लोग किस फ्लाइट से आ रहे हैं।''

''चाहती तो मैं भी यही थी कि एयरो ड्राम से सीधे आपके घर पर पहुँचूं। परन्तु इन्होंने कहा कि होटल में पहुँचकर लिसा को सूचित कर दिया जाएगा। क्योंकि मेरे आने और रहने का सारा व्यय सरकार की ओर से हो रहा है, इसलिए मुझे व्यर्थ का कष्ट नहीं झेलना चाहिए।''

''ठीक है, फिर भी मैं चाहूँगा कि आप मेरे साथ लिसा से मिलने चलिए। यहाँ सरकारी प्रबन्ध भी रहेगा और वहाँ मेरे पिताजी का प्रबन्ध भी होगा। दोनों को देखकर आपकी रुचि जहाँ रहने की हो फिर वहाँ रह लीजिएगा।''

श्रीमती रीगन ने इस विषय पर फिर कुछ नहीं कहा। इसका यही अभिप्राय था कि उसे सोमदेव का प्रस्ताव स्वीकार है।

उसके बाद सोम ने अपने साथियों से हाथ मिलाया और फिर सब एक मेज के चारों ओर लगी कुर्सियों पर बैठ गए।

उनके बैठते ही चाय लगा दी गई। मेकार्थर बोला, ''डाक्टर साहब, मैं बाहर गया हुआ था। वहीं उपकुलपति महोदय ने अपना एक व्यक्ति भेजा और कहलवाया कि मैं उसके साथ ही तुरन्त वापस लौटकर आ जाऊँ। विवश मुझे तुरन्त वापस लौटना पड़ा। वहाँ से दो घण्टे बाद जब मैं सान फ्रांसिसको एयरोड्रॉम पर पहुँचा कि वहीं ये सब लोग भी मिल गए। वहीं से हम लोग यहाँ के लिए चल पड़े।

''आज मध्याह्न दो बजे हम यहाँ एयरो ड्रॉम कर पहुँचे तो वहाँ से कारों में बैठाकर हमको दूतावास ले जाया गया। हमें यहाँ लाने का अभिप्राय बताया गया। मैंने जब वह सब सुन लिया तो फिर पूछा कि यह सब तो ठीक है, परन्तु श्रीमान् ! मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि हम किसी एजेन्सी के बन्दी हैं अथवा कि स्वतन्त्र अमेरिकन नागरिक ?''

''हमारी बात सुनकर हमारे राजदूत किसिंजर महोदय कहने लगे, 'आप संयुक्त राज्य अमेरिका के स्वतन्त्र नागरिक हैं। परन्तु एक मिशन पर कार्य कर रहे हैं।'

''इतना कहकर उन्होंने हमें एक सरकारी पत्र दिया और कहा कि हम लोग आपसे मिलकर इस पर विचार-विमर्श करें तथा एक-दो दिन में अपना मत व्यक्त कर दें।

''पत्र देखकर मैंने फिर प्रश्न किया, 'श्रीमन् ! एक व्यक्ति को कष्ट देने की अपेक्षा आपने पाँच व्यक्तियों को कष्ट दिया है, यह तो किसी प्रकार की कार्यकुशलता नहीं है।'

''मिस्टर किसिंजर कहने लगे, 'यहाँ से ऐसे ही एक व्यक्ति को पकड़कर ले

जाने का अभिप्राय आप नहीं समझ सकेंगे। हम यहाँ विदेशी हैं, यह करना हमारे लिए सम्भव नहीं था। यहाँ तो अपनी सरकार का शासन नहीं चलता।'

"इस प्रकार हमें यहाँ इस होटल में लाकर ठहरा दिया गया है। यहाँ आते-आते चार बज गए थे। यहाँ पहुँचते ही मैंने आपको फोन कर दिया।"

"किन्तु श्रीमती रीगन को यहाँ किस निमित्त पकड़कर लाया गया है?"

इसका उत्तर स्वयं लिसा की माँ ने देते हुए कहा, "मिस्टर किसिंजर से मेरी पृथक् में बात हुई है। क्योंकि वह बात इन सबसे पृथक् हुई है, इसलिए मैं भी उस बात को पृथक् में ही करूँगी।"

सोमदेव हँस पड़ा। तदपि उसने अपने हँसने का कारण नहीं बताया।

जब चाय समाप्त हुई तो पाँचों पुरुष वहाँ से उठकर बराबर वाले कमरे में पहुँच गए। कमरा भीतर से बन्द कर लिया गया और फिर वे राजदूत द्वारा प्रदत्त पत्र को पढ़ने लगे।

पत्र में लिखा था, "हमारे सैनिक विभाग ने हमें सूचित किया है कि आपके अन्वेषण-कार्य से भविष्य में युद्ध-नीति में भारी परिवर्तन होने की सम्भावना है। इसलिए हम आपसे तथा देश-जाति के भक्तों से यह प्रार्थना करते हैं कि आप निम्न प्रस्तावों पर विचार कीजिए :

१. आपका अनुसन्धान और आविष्कार का कार्य सैनिक अन्वेषण विभाग में किया जा सकता है। उसका सारा व्यय अमेरिका की सरकार वहन करेगी। विश्वविद्यालय से मिलने वाले वेतन के अतिरिक्त आपको वे सब भत्ते आदि भी मिलेंगे जो सरकारी नियमों के अधीन नियत हैं और कार्य के किसी परिणाम पर पहुँचने पर सरकार की ओर से विशेष पुरस्कार और जीवनभर के लिए पैंशन भी दी जाएगी।

२. यदि आप विश्वविद्यालय की ही प्रयोगशाला में कार्य करना चाहते हों तो भी उस प्रयोगशाला पर उसी प्रकार सुरक्षा का प्रबन्ध होगा जैसाकि सैनिक प्रयोगशाला में होता है।

"दोनों स्थानों पर अन्तर यह होगा कि सरकारी काम पर डेपुटेशन पर काम करने का भत्ता नहीं मिलेगा; साथ ही कार्य के सफलतापूर्वक समाप्त होने पर जो पुरस्कार और पैंशन मिलने की बात है वह भी नहीं मिलेगा। इस दूसरी अवस्था में हानि-लाभ विश्वविद्यालय का होगा तदपि नियन्त्रण सरकार का होगा।

"दोनों ही अवस्था में आविष्कार सरकार के नियन्त्रण में रहेगा। आप और विश्वविद्यालय वचनबद्ध होंगे कि किसी को भी आप आविष्कार का रहस्य नहीं बताएंगे।"

पत्र सुनकर सोमदेव बोला, "मेरे मन में कुछ इसी प्रकार की आशंका थी। जिस दिन से अमेरिका के समाचार-पत्रों में हमारे अन्वेषण की चर्चा आरम्भ हुई है

उसी दिन से मुझे कुछ इसी प्रकार की आशंका अनुभव हो रही थी।

"तदपि मैं आप लोगों से यह जानने की इच्छा व्यक्त कर रहा हूँ कि क्या इस प्रकार का भयंकर आविष्कार, जिसके परिणामस्वरूप अमेरिका सरकार भयभीत हो उठी है, आप लोग जारी रखना चाहते हैं?"

सोम का प्रश्न सुनकर उसके साथी टुकर-टुकर उसका मुख देखते रह गए। सहसा कोई समझ ही नहीं सका कि डॉक्टर सोम कह क्या रहे हैं। उनको इस प्रकार चुप और अपना मुख निहारते देख डॉक्टर सोमदेव ने कहा, "मुझे लगता है कि आप मेरे कहने का अभिप्राय नहीं समझ पाए हैं। मैं अपनी बात स्पष्ट करता हूँ। मैं कोई प्रोफेशनल साइंसदां नहीं हूँ। यह मेरे लिए किसी प्रकार की विवशता भी नहीं है कि मैं अन्वेषण-कार्य करूँ। मैंने जब विज्ञान पढ़ा था तो उस समय मेरे मन में यह था कि इसके द्वारा मैं प्रकृति के व्यापक नियमों को जान सकूँगा। उस ज्ञान से मेरा भावी जन्म सुधरेगा। भारतीय जीवन-मीमांसा के अनुसार उस ज्ञान के आधार पर मुझे मुक्ति मिलेगी।

"अपने इस कल्याण के उद्देश्य से ही मैंने विज्ञान को पढ़ा है और प्रकृति के रहस्यों को जानने का यत्न कर रहा हूँ। इस कार्य से मुझे इस संसार में कुछ भी पाने की लालसा नहीं है। अतः इस पृष्ठभूमि में आप देखेंगे तो जिस प्रकार यू० एस० ए० सरकार द्वारा लगाए गए प्रतिबन्ध मुझे स्वीकार नहीं हैं, उसे आप भी स्वीकार करेंगे? उन प्रतिबन्धों के आधार पर तो हम सरकार के वेतनभोगी बड़े-बड़े अधिकारियों की ही भाँति उसके क्रीतदास बन जाएँगे। इसलिए इन शर्तों के अधीन मैं काम करना नहीं चाहूँगा। अब आप लोग अपने विचार बताइए। मैं समझता हूँ कि आप मेरा आशय भली-भाँति समझ गए होंगे।"

"पर हमारा कार्य तो अमेरिकन सरकार की सहायता पर ही चल रहा है?" एक ने प्रश्न किया।

"हाँ, चल तो रहा है। पर अभी तक किसी प्रकार की शर्त नहीं रखी गई थी। हम वैज्ञानिक लोग क्लर्क की श्रेणी के कर्मचारी नहीं हैं। हम विश्वविद्यालय से जिस कार्य का वेतन लेते हैं उसमें अन्वेषण करना अथवा न करना सम्मिलित नहीं है। आपको स्मरण होगा कि जब मैं अपने इस विषय पर अन्वेषण आरम्भ करने लगा था तो विश्वविद्यालय के चांसलर महोदय की स्वीकृति लेनी पड़ी थी। उस समय भी चांसलर महोदय ने किसी प्रकार की शर्त नहीं रखी थी।

"किन्तु अब जो शर्तें की जा रही हैं वे तो ऐसी हैं जैसे किसी अफरीका के देश में ठेके पर काम करने वालों के साथ की जाती हैं। इसीलिए मैं आप लोगों की सम्मति जानना चाहता हूँ कि इन शर्तों के साथ आप अन्वेषण-कार्य जारी रखना चाहेंगे अथवा नहीं?"

मेकार्थर सबसे पहले बोला, "मान लीजिए कि हम किसी प्रकार की शर्त

स्वीकार नहीं करते। तब दो मार्ग होंगे। एक तो यह कि हम इस कार्य को यहीं बन्द कर दें। किन्तु जो काम अभी तक किया गया है उसके आधार पर कोई आगे का कार्य कर सकेगा, यह सम्भव नहीं है। जो कुछ हम जानने की आशा कर रहे थे, उसका वह अंश भी जान पाएगा, इसमें हमें सन्देह है। तब उससे सरकार को भी किसी प्रकार का लाभ होने की सम्भावना नहीं है।

"ऐसी स्थिति में यह वैसा ही होगा जैसाकि हम कर रहे हैं। हम भी तो किसी पूर्व ज्ञान के आधार पर उसके कन्धे पर चढ़कर अगली सीढ़ी पर चढ़ने का यत्न कर रहे हैं। उस आधार पर हम वर्तमान ऊँचाई पर पहुँच गए हैं और अब अधिक ऊँचाई पर चढ़ने का यत्न कर रहे हैं। इसी प्रकार भविष्य में भी कोई कर सकता है। परन्तु तब उनकी जानकारी का दुरुपयोग होगा अथवा सदुपयोग, का उत्तर-दायित्व हम पर नहीं होगा। हम उस पाप में लिप्त नहीं होंगे।"

मेकार्थर की बात सुनकर प्रोफेसर रेम्जे रोनाल्ड बोला, "डॉक्टर! इससे एक बात तो होगी ही कि हमको जो मिलने वाला है हम उससे वंचित रह जाएँगे। हमारे किए-कराए का लाभ कोई अन्य उठा ले जाएगा।"

"ठीक है, आप लोग अपना हानि-लाभ देखिए। मैंने अपना हानि-लाभ अथवा जो कुछ भी देखना था वह देख लिया है। वैसे तो पहले दिन ही जब मिस्टर किसिंजर मुझे मिला था, मैं अपना विचार बता देना चाहता था परन्तु मैं आप लोगों से परामर्श करने के बाद ही उसको अपना अन्तिम उत्तर देना चाहता था।"

रोनाल्ड फिर बोला, "डॉक्टर! यदि हम आपकी राय के विपरीत अपना मत व्यक्त करें तो फिर आपका क्या निश्चय होगा?"

"तब मैं इस टीम को भंग कर स्वयं को आप लोगों से पृथक् कर लूँगा। अब तक के अपने कार्य की रिपोर्ट चांसलर को देकर टीम को भंग कर दूंगा।"

मेकार्थर ने कहा, "डॉक्टर! आप बताइए कि आप इस विषय में क्या चाहते हैं?"

"मैं सत्य हृदय से कार्य करना चाहता हूँ। मेरे विज्ञान पढ़ने का उद्देश्य और अन्वेषण-कार्य करने का उद्देश्य अपना और जन-जन का कल्याण करना है। मैं अपने अन्वेषण-कार्य को गुप्त भी रखना नहीं चाहता। मैं इस कार्य को उन व्यक्तियों के हाथ में देना चाहता हूँ जो इसको जन-जन के लाभ के लिए प्रयुक्त कर सकें। यह उस सामान्य ओषधि के अनुसन्धान अथवा आविष्कार के तुल्य हो जाय जैसे मलेरिया की कोई ओषधि हो गई, उससे समस्त संसार का आज कल्याण हो रहा है।"

"संसार की वर्तमान अवस्था में तो यह सम्भव हो नहीं पाएगा।" रोनाल्ड ने फिर कहा।

"तो न हो। मैं इसके पाप से अथवा पुण्य से सम्बद्ध नहीं हूँगा।"

"हम रात को पृथक् में बैठकर विचार करेंगे।"

"ठीक है। मैं भी यही चाहता हूँ। इसके साथ ही मैं आप लोगों के सम्मुख एक अन्य प्रस्ताव भी रख रहा हूँ। वह है...।"

इतना कहकर उसने वह शर्तनामा जो उसको परमानन्द ने दिया था, पकड़ा दिया। मेकार्थर ने उसे पकड़ा। वह पत्र देकर सोमदेव कुर्सी पर से उठता हुआ बोला, "आप लोग इसको भी पढ़ लीजिए। यदि आप लोगों की इच्छा इस अनुबन्ध के विषय में कुछ और जानने की हो अथवा इसमें कुछ परिवर्तन-परिवर्द्धन करना चाहें तो उस पर बातचीत हो सकती है।"

"यह किसकी ओर से है? क्या भारत सरकार की ओर से है?"

"यह कोई निजी व्यापार करने वाली कम्पनी है, कोई सरकार नहीं।"

"क्या हम इसको मिस्टर किसिंजर को दिखा सकते हैं?"

"जब आप यह निश्चय कर लेंगे कि आप यू० एस० ए० सरकार से बात नहीं करेंगे तो फिर आप यह मिस्टर किसिंजर को दिखा सकते हैं। यह किसी प्रकार का गोपनीय दस्तावेज नहीं है अपितु सब-कुछ 'अबव दि टेबिल' है।

"इस अनुबन्ध पर भी मैं एक-दो परिवर्तन की बात कहूँगा। परन्तु उस पर अपना मस्तिष्क तभी लगाऊँगा जब आप अमेरिकन सरकार से इस विषय का सम्बन्ध-विच्छेद कर लेने की मुझे सूचना देंगे।"

चारों अमेरिकन डॉक्टर सोमदेव का मुँह देखते रह गए। सोमदेव ने सबसे हाथ मिलाया और कहा, "मैं आप सब लोगों को कल प्रातःकाल अपने घर पर अल्पाहार के लिए आमन्त्रित करता हूँ। यदि आप लोग स्वीकार करें तो मैं आपको ले जाने के लिए अपनी गाड़ी यहाँ भिजवा दूँगा।"

मेकार्थर ने सोम से हाथ मिलाते हुए कहा,"हम आपके निमन्त्रण के लिए कृतज्ञ अनुभव करते हैं। अन्वेषण-कार्य की शेष बात भी कल उसी समय हो जाएगी।"

सोम बाहर निकल आया। सिटिंग-रूम में उसकी सास बैठी थी। सोम उसके पास पहुँचा और बोला, "मम्मी! चलिए।"

"चलती हूँ। परन्तु रात के भोजन के पूर्व मैं यहाँ लौट आना चाहूँगी।"

"यह आप वहाँ चलकर लिसा से मिलकर तय कर लीजिए।"

इस प्रकार सोमदेव अपनी सास को लेकर होटल इण्टरनेशनल से लौट आया।

: १२ :

अपने घर पर पहुँचते ही सोम ने अपनी सास को तो पत्नी के पास पहुँचा दिया और स्वयं वह बाबा के पास चला गया। उसके वहाँ पहुँचते ही उसका पिता मंगलानन्द भी वहीं आ गया। पिता ने पुत्र को होटल से लौटकर आया हुआ देख लिया था किन्तु उस समय वह अपने किसी ग्राहक से बात कर रहा था। उसने तुरंत बात समाप्त की और वह सोम के पीछे-पीछे ही उस कमरे में प्रविष्ट हो गया।

वहाँ पहुँचकर सोम ने सारा वार्तालाप सुना दिया जो वह अपनी टीम के साथियों से करके आया था। उसकी बात सुनकर मंगलानन्द तो गम्भीर-सा बना उसकी बात को सोचता रहा और उसका पिता अर्थात् सोम का बाबा अपनी कुर्सी पर से उठा और उसने सोम की पीठ थपथपा दी। फिर उसने सोम से कहा, "सोम ! तुमने मेरा जीवन कृतकृत्य कर दिया है। मैं समझता हूँ कि मेरे जीवन का कार्य सफल हो गया है।"

अपने पिता की बात सुनकर मंगलानन्द ने कहा, "पर पिताजी ! इसके कथन का बहुत बड़ा परिणाम भी तो हो सकता है ? कोई भी राजनीतिक दीवाना व्यक्ति प्रेजिडेंट कैनेडी की भाँति इसको भी तो गोली मारकर समाप्त कर सकता है।"

"देखो मंगल ! कोई इसलिए नहीं मरता-जीता कि किसी के हाथ में बन्दूक आदि शस्त्रास्त्र हैं। मरना-जीना तो कर्मफल के अधीन है। जिसके कर्मफल समाप्त हो गए, वह किसी भी बहाने यहाँ से चलता बनेगा। इस कारण जो मूर्ख होते हैं वे ही मरने से डरते हैं। डरने की बात तो अशुद्ध कर्म हैं।"

"तो भी बाबा ! परमात्मा ने बुद्धि दी है। उसके आधार पर विचार कर अपना कार्य निर्धारित करने के लिए तो वह दी गई है।"

"पिताजी ! वही तो मैं कर रहा हूँ। अपना उद्देश्य निश्चय कर उसकी प्राप्ति के लिए यत्न कर आया हूँ।"

मंगलानन्द ने अपने पुत्र से पूछा, "तुम्हारा वह उद्देश्य क्या है ?"

इस समय तक बाबा पुनः अपने स्थान पर आकर बैठ गया था। पिता का प्रश्न सुन सोम मुस्करा दिया। फिर बोला, "अपना उद्देश्य तो पिताजी ! मैंने यहाँ से अमेरिका जाने से पूर्व ही निश्चय कर लिया था। उस निश्चय में बाबा का मुख्य हाथ था। अपने साथियों को वह मैंने आज बताया है। आज से पूर्व उनको बताने का अवसर भी नहीं आया था। मैं तो कदाचित् आज भी न बताता, यदि उसकी पूर्ति में मुझे बाधा उपस्थित होती न दीखती।"

"वही तो मैं पूछ रहा हूँ कि वह उद्देश्य क्या है ?"

"पिताजी ! मैं पढ़-लिखकर ज्ञान यज्ञ करने का विचार करता था। अब मुझे इस यज्ञ में बाधा उपस्थित होती-सी दिखाई दी है।"

"तुम किस प्रकार यह यज्ञ करना चाहते थे ?"

"पिताजी ! मैं अपने ज्ञान का फल सर्वहिताय व्यय करना चाहता हूँ। जिस समय मैं यज्ञ करता हूँ तब उसकी सुगन्धि तथा उसका पुष्टिकारक परिणाम बिना किसी भेदभाव के सबके लिए होता है। उसी प्रकार मैं अपने इस ज्ञान यज्ञ का फल बिना किसी भेदभाव के सबके लिए चाहता हूँ, किन्तु अमेरिका की सरकार मेरे ज्ञान को सैनिक उपयोग की वस्तु समझ रही है। इस कारण वह मेरे ज्ञान पर एकाधिकार चाहती है। मैं स्वयं को इस व्यापार से पृथक् रखना चाहता हूँ।"

"क्या तुम स्वयं को उससे पृथक् रख सकोगे ?"

"मैं तो इसको सुरक्षित रखना ही नहीं चाहता। मेरा यदि बस चले तो जब भी कुछ बताने योग्य होगा मैं वह सबको बता दूँगा। अथवा ऐसी कुछ व्यवस्था कर दूँगा कि उसका लाभ सब उठा सकें।"

"परन्तु सोम ! इस अथवा ऐसी किसी भी बात का एकाधिकार कोई सरकार नहीं कर सकेगी। तुम जानते हो कि यथासामर्थ्य यत्न करने पर भी कोई भी सरकार 'अणु बम' की जानकारी को गुप्त नहीं रख पाई। यदि जन-जन अणु बम का निर्माण नहीं कर सकता तो वह इस कारण नहीं कि वह उस विषय में जानता नहीं अपितु इस कारण कि उसके निर्माण में जो व्यय होता है उसका सामर्थ्य किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ व्यक्तियों के समूह के वश में नहीं है। इसके न निर्माण कर सकने का कारण न कोई वैज्ञानिक है और न कोई सरकार ही। बस, अर्थाभाव ही इसका कारण है।"

"पिताजी ! इसमें और एटम बम में थोड़ा अन्तर है। तो भी मैं तो इस युक्ति का मूल्य इतना कम कर देना चाहता हूँ कि एक निर्धन किसान के भी यह वश में हो जाय कि वह इसका लाभ उठा सके।"

मंगलानन्द ने पूछा, "परन्तु तुमको उससे क्या मिलेगा ?"

"यश और कीर्ति।"

मगलानन्द निरुत्तर तो हो गया परन्तु इससे न उसका समाधान हुआ और न उसकी सन्तुष्टि ही हुई। वह वहाँ से उठा और अपने कार्यालय में चला गया।

उधर होटल इण्टरनेशनल में बैठे वह वैज्ञानिक भी विचार कर रहे थे कि डॉक्टर सोमदेव द्वारा यू० एस० ए० सरकार के प्रस्ताव को अस्वीकार करने का कारण क्या हो सकता है। भिन्न-भिन्न व्यक्ति विभिन्न विचार व्यक्त कर रहे थे। आखिर मेकार्थर ने कहा, "पहले इस प्रलेख को तो पढ़कर देख लिया जाय।"

रेम्जे रोनाल्ड ने वह लेख पढ़ना आरम्भ किया :

१. हमारी सिण्टीकेट आपका प्रातिनिध्य करेगी। बाहर के लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में हम लिंक होंगे। हमारे द्वारा ही बाहर के लोग आपके कार्य तक पहुँच पाएँगे।

२. आपके कार्य में हम आर्थिक सहायता का प्रबन्ध करेंगे और सामान्य बैंक रेट पर आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति करेंगे। ब्याज की दर ६ प्रतिशत से अधिक नहीं होगी।

३. यह धन देने का उत्तरदायित्व आपकी टीम के किसी भी व्यक्ति पर नहीं होगा, इसका भार आपके कार्य पर ही होगा।

४. आपके अन्वेषण का व्यावसायिक रूप हम आपकी सहायता से निर्धारित करेंगे और उस व्यावसायिक रूप से जो कुछ भी प्राप्त होगा उसमें से ऋण

की अदायगी करने के उपरान्त जो शेष होगा तथा जो कुछ आपको पुरस्कारादि तथा प्रकाशन आदि पर व्यय होगा और उससे भी जो कुछ आय होगी इस सबका पारिश्रमिक हम २० प्रतिशत लेंगे और अपने अस्सी प्रतिशत विश्वविद्यालय के देय देकर आप स्वयं परस्पर उसका वितरण कर लेंगे। हम उसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

५. अपने अन्वेषण का व्यावसायिक रूप आप निर्धारित करेंगे। हम आपके आदेश का पालन करेंगे।

इस प्रलेख को पढ़कर चारों विद्वान् विचार करने लगे। इस विचार-विनिमय के मध्य अमेरिकन दूतावास से मिला पत्र भी पुनः पढ़ा गया। तब दोनों पर तुलनात्मक विचार होने लगा।

मेकार्थर ने कहा, "गोपनीयता दोनों में है। अन्तर केवल इतना है कि इस गोपनीयता का संरक्षक कौन होगा ? मैं समझता हूँ कि हमारी सरकार की अपेक्षा इस 'सिण्डीकेट' का प्रलेख हमारे अधिकार को अधिक सुरक्षित करता है।"

तब रेनाल्ड बोला, "परन्तु हम अपने राष्ट्र का विरोध तो नहीं कर सकते।"

"तो क्या हम राष्ट्र का हित करते हुए मानवता का अहित नहीं कर रहे हैं ? मानवता ऊपर है अथवा राष्ट्रीयता ?" मेकार्थर ने पूछा।

अब नौयल बार्कर बोला, "हम लोग रात का भोजन दूतावास में कर रहे हैं। उसी समय हम मिस्टर किसिंजर से राय भी कर लेंगे।"

मेकार्थर ने कहा, "हमारे विश्वविद्यालय का हैड-क्लर्क तो कह रहा था कि रात का भोजन इसी होटल में है। यदि हम चाहेंगे तो हमारी बात का परिणाम जानने के लिए राजदूत का सचिव यहीं आ जाएगा।"

"तब तो ठीक है। हैड-क्लर्क मिस्टर स्टोवेल को कह दिया जाय कि वह किसिंजर के सचिव को रात के साढ़े नौ बजे यहाँ आने के लिए कह दे। उसी समय बात हो जाएगी।"

अगले दिन प्रातःकाल का अल्पाहार करने के लिए यह टीम सोम के पिताजी की कोठी पर जा पहुँची।

अल्पाहार के समय तो परिवार के अन्य प्राणी बैठे थे, इस कारण उस समय अनुसन्धान सम्बन्धी कोई बात नहीं हुई। अल्पाहार के उपरान्त सोमदेव उनको अपने पिता के स्टडीरूम में ले गया। वहाँ किसी अन्य को नहीं आने दिया गया। बैठने पर मेकार्थर ने कहा, "अल्पाहार के समय श्रीमती रीगन नहीं दिखाई दीं, वे कहाँ थीं ?"

"उनका अल्पाहार आज अमेरिकन दूतावास में था। रात को वे दोनों माँ-पुत्री एकान्त में सोए थे। उनकी बातें भी हमारे कार्य से ही सम्बन्धित हैं। मेरी पत्नी ने मेरे विचार अपनी माता को बता दिए हैं। किन्तु उसकी माता ने उसको

अभी कुछ नहीं बताया है। वह स्वयं विस्मय कर रही है कि उसको इतनी दूर की यह यात्रा क्यों कराई गई है? अब जब प्रातःकाल के अल्पाहार के लिए उनको आमन्त्रित किया गया है तो कुछ-कुछ समझ में आने लगा है कि उन्हें किस कार्य के लिए यहाँ लाया अथवा भेजा गया है।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि उनके माध्यम से आप पर दबाव डालने की हमारी सरकार की योजना है।"

"मैं भी कुछ-कुछ ऐसा ही समझ रहा हूँ।"

रात राजदूत का सचिव इन लोगों से होटल में मिला था। मेकार्थर ने उसके साथ हुए वार्तालाप का विवरण सुनाते हुए बताया, "आपका दिया हुआ प्रलेख हमने उसको दिखा दिया है। वह स्वयं तो उसपर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी नहीं कर सकता था। उसने कहा कि वह आज मध्याह्न के भोजन के समय मिस्टर किसिंजर की प्रतिक्रिया के विषय में बताने में समर्थ होंगे। उससे पूर्व नहीं।"

सोम ने पूछा, "आप लोगों की क्या प्रतिक्रिया है?"

"हमारी प्रतिक्रिया सर्वसम्मत नहीं है। हममें से दो तो उसके पक्ष में हैं और दो विपक्ष में। परन्तु वे भी एकमत नहीं हैं। एक तो उसको पूर्णतया अस्वीकार कर रहे हैं और एक देश और राष्ट्रीयता के विचार से और दूसरे किसी प्राइवेट फर्म से अनुबन्ध के विरोधी होने के नाते उसे अस्वीकार करते हैं। इसपर भी वे चाहते हैं कि यदि यही शर्तनामा यू०एस०ए० सरकार की ओर से हो तो उन्हें स्वीकार्य होगा।"

"तो फिर?"

"यह कि आज मध्याह्न का भोजन आप हमारे साथ हमारे होटल में करिए। उस समय आपको हमारी सरकार का दृष्टिकोण विदित हो जाएगा।"

उस समय इससे अधिक बात नहीं हुई। सोमदेव ने दोपहर के भोजन का उनका निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

इस प्रकार यह सभा विसर्जित हुई।

सोम जब मध्याह्न के भोजन के लिए होटल पहुँचा तो उसे यह देखकर विस्मय हुआ कि उसकी सास उस समय वहाँ विद्यमान थी। उसने कहा, "मम्मी! लिसा तो वहाँ आपकी प्रतीक्षा कर रही है।"

"यहाँ के भोजन के उपरान्त मैं तुम्हारे साथ वहीं चलूँगी।"

सोम के आते ही भोजन आरम्भ हो गया था। सात व्यक्ति भोजन कर रहे थे। सोम को जैसा बताया गया था तदनुसार दूतावास का कोई व्यक्ति वहाँ उपस्थित नहीं था केवल उनकी टीम के अतिरिक्त स्टोवेल और उसकी सास वहाँ थे।

सोम ने पूछा, "बताइए, क्या निश्चय हो पाया है?"

स्टोवेल ने कहा, "कुछ नहीं। दूतावास से सन्देश आया है कि कल हमारी पार्टी पाँच दिन के लिए भारत के टूअर पर जा रही है। वहाँ से लौटने पर ही

हमारी सरकार अपने विचार बताएगी। राजदूत महोदय ने आप वाला प्रस्ताव भी वाशिंगटन भेज दिया है।"

इसके बाद कुछ भी कहने-सुनने को नहीं था।

सोमदेव ने अपनी सास से पूछा, "आप भी इस टूअर पर जा रही हैं?"

"नहीं, मैं लिसा के साथ जाना चाहती हूँ।"

"यह अच्छा रहेगा। मेरी माताजी भी साथ जा रही हैं।"

"यही तो प्रलोभन है।"

मेकार्थर ने सोम से पूछा, "आप हमारे साथ नहीं चलेंगे?"

"मैं तो इस समय अवकाश पर हूँ। मैं इस समय स्वतन्त्र हूँ।"

दूसरे दिन मिसेज रीगन को साथ लिये बिना ही यह मण्डली दक्षिण भारत के लिए चल दी।

सोम आदि उत्तराखण्ड की यात्रा पर चल दिए थे।

द्वितीय परिच्छेद

सोम के साथी वैज्ञानिक केवल पाँच दिन बाद ही दक्षिण भारत की यात्रा से लौट आए थे। सोम उत्तराखण्ड की यात्रा पर गया था। उसके साथ उसकी सास भी गई थी। उनके दक्षिण भारत से लौटने पर परमानन्द ने समाचार दिया था कि वे लोग शीघ्र ही वापस अमेरिका लौट रहे हैं। यह बात परमानन्द को विश्वविद्यालय के हैड क्लर्क स्टोवेल ने बताई थी। परमानन्द ने यह भी बताया कि सोम के साथियों में से मेकार्थर अभी भारत में ही रहना चाह रहा है। उसका विचार भारत के अन्य भागों में भी भ्रमण करने का है। उसकी इच्छा के विपरीत राजदूत किंसिजर चाहता है कि मेकार्थर भी अपने अन्य साथियों के साथ ही सरकारी व्यय पर वापस लौट जाय। परन्तु उसका कहना है कि वह अमेरिका सरकार का बन्दी नहीं है। उसका विचार है कि विश्वविद्यालय के अवकाश के दिन वह यहीं भारत में व्यतीत करे।

मंगलानन्द ने पूछा, "उसके यहाँ रहने का प्रयोजन मात्र भ्रमण है अथवा कि कुछ और भी?"

परमानन्द बोला, "मुझे तो सन्देह है किन्तु स्टोवेल का कहना है कि उसने अपना उद्देश्य केवल भारत-भ्रमण ही बताया है। यद्यपि सन्देह स्टोवेल को भी है। अपनी पत्नी को भी उसने न्यूयार्क से यहाँ बुलवाया है।"

"अमेरिका सरकार की अब क्या नीयत है?"

"वह कुछ पता नहीं चल पाया है। हमारी फर्म पहले ही इस कार्य पर चार हजार रुपया से अधिक व्यय कर चुकी है।"

"यह तो बहुत कुछ विश्वविद्यालय के अधिकारियों पर निर्भर करता है। यदि उन्होंने सरकार की सहायता की तो आपको इस काम पर व्यय किये गए धन पर सन्तोष करना पड़ेगा।"

"अविनाश तो इस कार्य से निराश हो गया है। इस कारण वह इस पर अधिक व्यय करने के लिए तैयार नहीं है।"

"सोम को आ जाने दो तब इस विषय पर विचार किया जाएगा। तभी कुछ अनुमान लग पाएगा कि इन तिलों में कुछ तेल भी है अथवा नहीं।"

परमानन्द चुप रहा। यद्यपि बैठा तो बाबा भी उनके पास ही था किन्तु उसने आज इस विषय पर कोई बात नहीं की। वह चुपचाप अल्पाहार करता रहा।

अल्पाहार समाप्त होने पर बाबा ने अपने पुत्र मंगलानन्द से पूछा, "सोम आदि कब तक वापस लौटने वाले हैं ?"

"अभी तो कम-से-कम बारह दिन तो हैं ही, हो सकता है एक-दो दिन अधिक भी लग जाएँ ।"

बाबा बोला, "यह जो कुछ भी हो रहा है उससे मुझे प्रसन्नता नहीं है । पहले तो अमेरिका की सरकार जल्दी मचा रही थी । और अब इस प्रकार मौन हो गई है कि मानो उसकी इस विषय में रुचि ही नहीं है ।"

मंगलानन्द बोला, "सरकार का मौन हो जाना और भी अधिक भयंकर है । इन गोरी कौमों पर मुझे किंचित् भी विश्वास नहीं है । ये बाहर से जितने गोरे हैं, भीतर से उतने ही काले हैं ।"

"किसी के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता ।"

सोम आदि को गए हुए चौदह दिन हुए थे । निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार उस दिन उनको श्रीनगर में होना चाहिए था । मंगलानन्द को आशा थी कि उस दिन श्रीनगर से उनका फोन आना चाहिए कि अमुक दिन और अमुक समय पर वे दिल्ली वापस लौट रहे हैं । सारा दिन इसी प्रतीक्षा में बीत गया किन्तु कहीं से कोई फोन नहीं आया । बाबा को तो चिन्ता थी ही, मंगलानन्द और परमानन्द भी अब चिन्तित होने लगे थे ।

रात के दस बजे गार्गी ने फोन किया और उसने बताया कि मध्याह्न के समय सोम और उसकी सास हवाई पत्तन पर दिल्ली के लिए स्थान सुरक्षित कराने के लिए गए थे किन्तु अभी तक वापस नहीं लौटे हैं । मैं चार बजे के लगभग वहाँ उनका पता करने के लिए गई थी । वहाँ उनका कुछ पता नहीं चल पाया । मैंने पुलिस में रिपोर्ट कर दी है, उसकी रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर रही हूँ । सरस्वती मेरे साथ है ।

मंगलानन्द ने उसको कहा कि वह वहीं होटल में रहे । उसने अपना निश्चय बताते हुए कहा, "मैं पहली फ्लाइट से श्रीनगर आ रहा हूँ, तुम मेरी प्रतीक्षा करना ।"

अपनी पत्नी से बात कर मंगलानन्द ने तुरन्त भारत सरकार के गृहमन्त्री को फोन करके इस दुर्घटना की सूचना दे दी । मंगलानन्द ने अपना सन्देह व्यक्त करते हुए यह भी बताया कि उसको इसमें अमेरिका सरकार का हाथ दिखाई देता है ।

गृहमन्त्री ने मंगलानन्द को आश्वासन दिया कि वह इसके किए यत्न करेगा और यथासमय अपने कार्य के परिणाम से उसको सूचित करेगा ।

मंगलानन्द ने इसकी सूचना परमानन्द को दी तो उसने भी अपना सन्देह व्यक्त करते हुए कहा कि यह सब अमेरिका सरकार की कारस्तानी है । उसने उसी समय अपने वाशिंगटन स्थित प्रतिनिधि को फोन करके इस दुर्घटना की सूचना दे दी ।

मंगलानन्द को अगले दिन प्रातःकाल दस बजे श्रीनगर के लिए हवाई जहाज

मिला। वह उसमें बैठ गया। वहाँ पहुँच वह अपनी पत्नी और पुत्रवधू को लेकर अगले दिन दिल्ली वापस आ गया।

श्रीनगर पहुँचने पर मंगलानन्द ने जब इधर-उधर छानबीन की तो उसको पता चला कि जिस दिन सोमदेव और श्रीमती रीगन लापता हुई हैं उस दिन मध्याह्न के दो बजे के लगभग एक अमेरिकी हवाई जहाज वहाँ से चला था। उसमें कौन-कौन गए हैं, इसकी सूचना किसी को नहीं है। क्योंकि विदेशी हवाई जहाज में यात्रा करने वालों का विवरण उनके पास नहीं होता है।

दिल्ली पहुँचने पर सरस्वती ने पहला कार्य किया कि उसने अमेरिकन दूतावास को फोन किया। उसने यह पता करना चाहा कि उस दिन श्रीनगर से जो हवाई जहाज गया है उसमें कौन-कौन सवार था और वे लोग कहाँ-कहाँ जाने वाले थे? उसने यह भी बताया कि उसको सन्देह है कि डॉक्टर सोमदेव का अपहरण कर उस हवाई जहाज में उसको अमेरिका ले जाया गया है।

राजदूत किसिंजर स्वयं उपस्थित नहीं था। वह अमेरिका गया हुआ था। उसके सहायक ने बताया कि उस दिन श्रीनगर से कोई भी अमेरिकी हवाई जहाज अमेरिका नहीं गया है। न केवल इतना, उसने तो यह भी कहा कि पिछले दस दिन से भारत से कोई भी हवाई जहाज अमेरिका नहीं गया है।

इस सूचना पर सोम के रहस्यमय रूप से लापता होने का मामला और भी गम्भीर हो गया।

वाशिंगटन स्थित परमानन्द के सिण्डीकेट के प्रतिनिधि का भी फोन आ गया। उसका कहना था कि सोमदेव न तो वाशिंगटन पहुँचा है और न ही केलिफोर्निया। वहाँ के सरकारी क्षेत्र में इस विषय में किसी प्रकार की हलचल नहीं है।

इस प्रकार दिन-पर-दिन बीतते गए किन्तु सोमदेव का पता नहीं चल सका। इस प्रकार यह घटना पुरानी पड़ती चली गई।

जब सरस्वती को अमेरिकन दूतावास से निराशाजनक समाचार मिला तो सरस्वती उदास हो गई। वह भग्न हृदय से अपने कमरे में बैठी विचार कर रही थी। उस दिन के बाद वह अपने कमरे से कम ही बाहर निकलती थी। केवल भोजन के लिए वह जाया करती थी। घर के सब प्राणी उसकी सुख-सुविधा का ध्यान रखते थे।

परमानन्द के वाशिंगटन स्थित प्रतिनिधि का जब से समाचार मिला था कि अमेरिका में सोम के विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं हो सका है, तबसे उसकी निराशा और भी बढ़ गई थी। वह ऐसी हो गई थी, मानो कोई निर्जीव शरीर हो।

सरस्वती को काश्मीर से लौटे पन्द्रह दिन हो गए थे। एक दिन प्रातःकाल सरस्वती ने अपनी ननद अम्बा को फोन किया। फोन पर क्या बात हुई यह तो उस समय किसी को मालूम नहीं पड़ा। केवल गार्गी ने सरस्वती को यह कहते सुना था

कि महेन्द्र को भी साथ ले आना।

सरस्वती ने जब फोन रख दिया तो गार्गी ने उससे पूछा, "अम्बा आ रही है ?"

"मैंने उसको बुलाया है।"

"कब तक आने वाली है ?"

"आज उसका संगीत अकादमी जाने का दिन है। जब मैंने उससे पूछा कि वह अकादमी जा रही है अथवा नहीं तो उसका कहना था कि पिछले चार सप्ताह से वह जा नहीं पाई है, अभी भी वहाँ जाने को उसका मन नहीं कर रहा है। मैंने उससे कहा था मेरा मन वहाँ जाने को कर रहा है यदि वह जाने वाली हो तो मैं भी चलूँगी। वह मान गई है, तब मैंने उसको कहा है कि वह महेन्द्र को भी साथ लेती आए। उसको स्कूल से छुट्टी दिलवाकर ले आएगी।

गार्गी ने उस परिवर्तन का कारण सरस्वती से नहीं पूछा। अपितु बोली, "अल्पाहार अभी करोगी या कि ठहरकर ?"

"जब आप सब लोग करेंगे तभी मैं भी करूँगी।"

गार्गी समझ गई कि कुछ नवीन बात होने वाली है। कदाचित् वह अमेरिका जाना चाह रही हो उसकी सूचना सबको देना चाहती हो। यह विचार मन में आते ही गार्गी ने कहा, "तो फिर डाइनिंग हाल में जाओ। वकील साहब भी वहीं हैं और बाबा से कुछ परामर्श कर रहे हैं।"

"वह कोई गुप्त परामर्श है ?"

"नहीं, बाबा की कोई योजना है। उस विषय पर ही विचार-विमर्श किया जा रहा है।"

इस प्रकार गार्गी और सरस्वती दोनों ही डाइनिंग हॉल में पहुँच गईं। परमानन्द और सावित्री भी वहाँ पहुँच गए थे। सोम के पिता ने लगभग पन्द्रह दिन बाद सरस्वती को सबके साथ बैठकर अल्पाहार करने के लिए आती देखा तो अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसने कहा, "सरस्वती बेटा ! स्वास्थ्य कैसा है ?"

"पिताजी ! प्रत्यक्ष में तो सब ठीक ही प्रतीत होता है। इन दिनों मैं बहुत गम्भीरता से विचार कर रही हूँ। मेरा एक विचार बन रहा है। वह आप सबको बताने के लिए मैं इस समय अल्पाहार के लिए यहाँ आई हूँ।"

सब उत्सुकता से उसका मुख देखने लगे।

विगत पन्द्रह दिनों में यह होता था कि जब सब अल्पाहार कर चुकते तब गार्गी सरस्वती को लेकर अल्पाहार करने के लिए आया करती थी। आज जब वह दोनों सबके साथ ही बैठीं तो बेयरा ने उनके लिए भी कप-प्लेट रख दीं।

इस बीच सरस्वती ने कहा, "मैंने संकल्प किया है कि चाहे कुछ भी हो जाए, मैं उनकी प्रतीक्षा यहाँ दिल्ली में रहकर ही करूँगी।"

यह सुनकर सबको प्रसन्नता हुई । मंगलानन्द के मुख से निकल गया, "बहुत-बहुत धन्यवाद । तुम्हारे आने से पूर्व हम इसी विषय पर विचार कर रहे थे । मैंने कल दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति से तुम्हारे लिए किसी स्थान के विषय में बात की थी । उसने मुझे आश्वासन दिया है कि वह सिनेट में चर्चा करने के उपरान्त इस विषय पर मुझको बताएगा ।"

"परन्तु पिताजी ! मेरी योजना इससे भिन्न है । मैंने एक कार्य आरम्भ कर दिया है । मैं उस पर ही अपना पूर्ण समय व्यतीत करना चाहती हूँ ।"

"क्या कार्य आरम्भ किया है ?" बाबा ने पूछा ।

"इस विषय में मैंने बहिन अम्बा को बताने का निश्चय किया है । उसके द्वारा ही आप उस विषय में जान पाएँगे ।"

"अम्बा आ रही है ?" मंगलानन्द ने पूछ लिया ।

"हाँ, अभी मैंने फोन पर उससे बात की है, वह आ रही है ।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि मुझे इसका ज्ञान सायंकाल की चाय के समय ही होगा । खैर, कोई बात नहीं । सरस्वती बेटा ! मेरी यह उत्कट इच्छा है कि तुम दिल्ली ही रहो । यहाँ रहते हुए तुम क्या करो, यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर करता है ।"

"पिताजी ! इतना तो मैंने बताया ही है कि मेरा विचार दिल्ली में ही रहकर उनकी प्रतीक्षा करने का है । अपने विश्वविद्यालय को भेजा जाने वाला मेरा त्याग-पत्र मैंने लिखकर तैयार कर लिया है, उसे आज ही डाक से भेज दूँगी ।"

सहसा बाबा बोल पड़े, "इससे तो मेरी योजना और भी अच्छी प्रकार चल जाएगी ।"

सरस्वती ने इस ओर ध्यान ही नहीं दिया । उसने अपनी ही बात आगे करते हुए कहा, "मैंने अपने बैंक को भी लिख दिया है कि मेरा जो कुछ वहाँ जमा है उसका एक बैंक ड्राफ्ट बनाकर वह यहाँ के किसी बैंक के नाम भेज दे ।"

परमानन्द मुस्करा दिया । उसने पूछा, "वह लगभग कितना होगा ?"

"यह मेरा रहस्य है । केवल माताजी को ही बताऊँगी । वैसे उनका भी पर्याप्त धन वहाँ है परन्तु उस विषय में तो अभी कुछ किया नहीं जा सकता । हाँ, इस विषय में मैंने अपने विश्वविद्यालय के चांसलर से पूछा है ।"

अल्पाहार समाप्त हुआ तो सरस्वती उठी और अपने कमरे से दो पत्र लेकर बाहर आकर टैक्सी बुलाने लगी । उसको इस प्रकार देख परमानन्द ने पूछा, "डाकखाने जाने का विचार है ?"

"जी हाँ । उसी के लिए टैक्सी बुलवा रही हूँ ।"

"मैं उस ओर ही जा रहा हूँ, आपको डाकखाने छोड़ दूँगा ।"

"ठीक है, चलिए । आते समय टैक्सी कर लूँगी ।"

"इसकी भी आवश्यकता नहीं। वहाँ से आप हमारे कार्यालय चली चलिए। वहाँ से कोई-न-कोई गाड़ी यहाँ आने के लिए मिल ही जाएगी।"

इस प्रकार सरस्वती परमानन्द के साथ डाकखाने चली गई। मार्ग में जाते हुए परमानन्द ने बताया कि उसका अन्तरात्मा कहता है कि सोम इस समय मास्को में है।

सरस्वती को यह सुनकर विस्मय हुआ। परमानन्द कह रहा था, "बाबा कह रहे थे कि सोम के लापता होने में अमेरिका का हाथ नहीं है। हमारी सूचना के अनुसार और बाबा की इस प्रकार की बातों के प्रकाश में हम सब इस बात पर सहमत हैं कि सोम इस समय मास्को में है। हम इस विषय में गम्भीरता से विचार कर रहे हैं कि वहाँ उससे किस प्रकार सम्पर्क स्थापित किया जाए।"

यह सुनकर सरस्वती विचार करने लगी कि रात से कुछ-कुछ इसी प्रकार का सन्देह उसे भी होने लगा था। वह इसे संयोग ही समझती थी, उसे और उसके पति के बाबा को एक साथ ही यह विचार किस प्रकार आया है। उसने परमानन्द से पूछा, "आपकी कम्पनी इस प्रकार का फारवर्डिंग व्यापार नहीं करती ?"

"करती तो है। किन्तु सोम का बीमा कौन करेगा ?"

"मैं करूँगी।"

"ठीक है। मैं इस विषय में सायंकाल प्रपोजल लेकर आऊँगा। तब तक उस बीमा को प्राप्त करने के लिए हमारे यूरोप स्थित प्रतिनिधि कार्य करेंगे।"

"ठीक है। आप प्रपोजल लाइए। यदि पिताजी ने आपका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तो मैं उस पर हस्ताक्षर कर दूँगी।"

सरस्वती यह भली-भाँति जानती थी कि इस प्रकार की कई कम्पनियाँ अमेरिका में भी कार्यरत हैं। यहाँ तक कि वे मृत्यु-दण्ड के अधिकारी अभियुक्त का बीमा करते हैं और फिर उनकी ओर से मुकदमा लड़ते हैं। इसलिए वह भी इस जुए में दाँव लगाने के लिए तैयार हो गई।

तीन बजे के लगभग अम्बा अपने पिता की कोठी पर आई। नित्य के विपरीत आज सरस्वती ड्राइंगरूम में बैठकर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। अम्बा आई तो उसको लेकर सरस्वती अपने कमरे में चली गई। वे दोनों केवल पन्द्रह मिनट ही उस कमरे में रही होंगी। जब वे बाहर आईं तो ड्राइंगरूम में गार्गी अपने नाती महेन्द्र से उसकी पढ़ाई आदि के विषय में पूछ रही थी। महेन्द्र ने बताया था कि उसका विचार उसकी छठी श्रेणी तब ही स्कूल में पढ़ाने का है उसके बाद वह उसको बाबा के स्कूल में प्रविष्ट करा देंगे।

"यह क्यों ?" गार्गी को यह सुनकर आश्चर्य हुआ था।

"यह तो आप मेरी माताजी से पूछिएगा। मुझको उन्होंने बताया नहीं। पिताजी कहते थे कि इसका कारण यह है कि मुझमें अभी वह सब समझने की

योग्यता नहीं है। जब मैंने बहुत आग्रह किया तो उन्होंने मुझसे कह दिया कि क्या इस स्कूल में भी मुझको मुझसे पूछकर बैठाया था ?

"मैंने कहा था कि सब लड़के स्कूल में प्रवेश लेते हैं, इसलिए आपने भी मुझे वहाँ प्रविष्ट करा दिया।

"पिताजी कहने लगे कि इसका मतलब तो यह हुआ कि मैं भेड़-बकरी हूँ। उनका कहना था कि इस प्रकार तो भेड़-बकरियाँ ही भर्ती कराई जा सकती हैं...।"

उनकी बात समाप्त नहीं हुई थी कि अम्बा और सरस्वती कमरे से बाहर निकल आईं। अम्बा ने आते ही कहा, "माताजी! आप आज से नौ मास उपरान्त दादी बनने वाली हैं।"

"सत्य ?" प्रफुल्लित मन गार्गी ने प्रश्न किया।

"हाँ, अभी सरस्वती ने बताया है कि उसे रजस्वला होने में कभी देर नहीं हुई। इस बार दस दिन से अधिक हो गए हैं। उसके साथ ही यह स्वयं भी कुछ इसी प्रकार अनुभव कर रही है।

"अन्य लक्षण तो अभी प्रकट नहीं हुए हैं तदपि इसको विश्वास हो गया है, और अब यह अमेरिका जाना नहीं चाहती।"

"बेटी सरस्वती! भगवान् करे तुम्हारा अनुमान ठीक ही हो। इस कोठी में हम कुछ अभाव अनुभव कर रहे थे। परमानन्द की पत्नी तो बाँझ ही प्रतीत होती है। उसका विवाह हुए छः वर्ष हो चुके हैं।"

अम्बा ने बात बदलकर कहा, "मैं आज संगीत अकादमी जा रही हूँ। महेन्द्र यहीं रहेगा। इसके पिता चाय के समय यहाँ आएंगे और फिर हम उनके साथ वापस चले जाएँगे। सरस्वती भी हमारे साथ ही जा रही है। हम दोनों संगीत अकादमी से यहाँ आ जाएँगे।"

संगीत अकादमी जाने का समय हो गया था। इसलिए फोन करके टैक्सी मँगवाई गई और उस पर सवार होकर दोनों वहाँ के लिए चल दीं।

ठीक पाँच बजे मोहनलाल वहाँ आया। मंगलानन्द और परमानन्द भी पहले से ही आकर बैठ गए थे। परमानन्द अपनी योजना अपने पिता को बताते हुए कह रहा था, "मैंने अपने भागीदार अविनाश से राय की है। हम सोम का पता करने और उसको छुड़ाने के लिए बीमा करने को तैयार हैं। केवल पता करने के लिए पन्द्रह हजार रुपया अग्रिम और दो सौ रुपया मासिक। पता चल जाने पर पन्द्रह हजार की अन्तिम किश्त।

"और उसको छुड़ाकर भारत लाने के लिए एक लाख अग्रिम, पाँच सौ रुपया मासिक और भारत में आ जाने पर अन्तिम किश्त का एक लाख रुपया।

"सरस्वती ने इस प्रकार के प्रयास में रुचि प्रकट की है। केवल वह आपसे परामर्श करना चाहती है।"

मंगलानन्द ने मुस्कराते हुए कहा, "यह राशि तो बहुत अधिक है ?"

"नहीं पिताजी ! हमारा अनुमान है कि सोम रूस में कहीं बन्दी है। वहाँ उसका पता करना और फिर उसको यहाँ लाना यह कोई सुगम कार्य नहीं है। पानी की भाँति धन बहाना पड़ेगा। तो भी हम यह सब करने के लिए तैयार हैं।"

"ठीक है, बाबा से राय करेंगे। उनका भी यही अनुमान है कि सोम रूस में है।"

"तो उनको बुला लीजिए।"

"अभी चाय पीने के लिए वे आने ही वाले हैं।" मंगलानन्द ने फिर मोहनलाल को सम्बोधित करते हुए पूछा, "क्यों मोहनलाल जी ! आप क्या कहते हैं ? पिता-पुत्र में परस्पर यह सौदा उचित है क्या ? मैं इस कार्य के लिए सरस्वती को धन व्यय करने के लिए नहीं कहूँगा।"

"पिताजी ! धन तो कुछ अधिक नहीं है। परन्तु मासिक किश्तें लेने के लिए इनको प्रतिमास अपने कार्य की गतिविधि और उसका ब्यौरा आपको देना होगा। अन्यथा मासिक किश्त बन्द करनी होगी।"

चाय का समय होता जान बाबा भी इस समय वहाँ आ गए। उसके बाद बात आगे बढ़ी। परमानन्द ने कहा, "हम अपने कार्य की रिपोर्ट देने के लिए तैयार हैं। किन्तु उन रिपोर्टों को गुप्त रखने का आश्वासन हमें मिलना चाहिए।"

मंगलानन्द बोला, "मैं इस कार्य के लिए मोहनलाल जी को नियुक्त कर दूँगा।"

परमानन्द बोला, "पिताजी ! यह सारे कार्य जीवन को संकट में डालने वाले हैं। हमारे लिए भी और सोम के लिए भी। इसलिए सारा कार्य और व्यवहार गोपनीय रखना अत्यन्त आवश्यक है।"

जब बाबा को बात समझाई गई तो उन्होंने कहा, "यदि परमानन्द की कम्पनी यह बीमा करती है तो ठीक ही है, मैं भी इसमें अपनी सहायता दे दूँगा।"

"बाबा ! आप क्या सहायता कर सकते हैं ?"

"मुझे विश्वास है कि सोम इस समय मास्को में है। अपना रहस्य बताने के लिए उसे प्रलोभन दिए जा रहे हैं। साथ ही मैं इन दानवों की और बात को भी जानता हूँ। वह यह कि नितान्त भीरु प्रकृति हैं, इनको डराने का एक उपाय है। वह उपाय प्रजातान्त्रिक विचार के लोग नहीं कर सकते। किन्तु दो-चार जांबाज उसको सहज ही कर सकते हैं।

"प्रजातान्त्रिक राज्य विवश होकर भले ही कुछ कर दिखाए, किन्तु कोई भी मन से भय मोल लेने को तैयार नहीं है। इस कारण मैं समझता हूँ कि इनकी प्राइवेट कम्पनी अथवा कोई भी एक अथवा दो व्यक्ति अमेरिकन शासन से कहीं अधिक कर सकता है।

"असुरों को भयभीत करने का एक उपाय है। यदि परमानन्द ने वह कर दिखाया तो इसमें कोई सन्देह नहीं सोम भारत के स्वतन्त्र वायुमण्डल का आनन्द भोगने के लिए आ जाएगा।"

बाबा की बात सुनकर परमानन्द को प्रसन्नता हुई। उसने कहा, "बाबा! आपसे परामर्श करते हुए हमें अतीव प्रसन्नता होगी।"

इस प्रकार चाय पीते हुए वार्तालाप चल रहा था कि तभी सरस्वती और अम्बा भी आ गईं। मंगलानन्द ने जब सरस्वती को परमानन्द की योजना बताई तो उसने कहा, "पिताजी! यह सुझाव तो भाई साहब को मैंने ही दिया था। मैं यह बीमा करने के लिए तैयार हूँ।"

"तब तो ठीक ही है। किन्तु अब तुम्हें इसकी चिन्ता नहीं करनी होगी। लेन-देन की बात मैं इनसे कर लूँगा।"

"मैंने अपने सान फ्रांसिसको के बैंक को लिख दिया है और मैं आशा करती हूँ कि मेरा रुपया शीघ्र ही आ जाएगा और मैं अग्रिम धन दे दूँगी।"

"नहीं, तुम्हारे धन आने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। मैं वह राशि परमानन्द को दे दूँगा।"

सरस्वती बोली, "पिताजी! यह तो अन-अमेरिकन होगा?"

"हाँ, किन्तु मैं तो अमेरिकन नहीं हूँ। और अब तो तुम भी अमेरिकन नहीं रही हो।"

इस प्रकार बात हँसी में बदल गई। अम्बा ने एक अन्य रहस्योद्घाटन करते हुए कहा, "पिताजी! सरस्वती अपना नाम संगीत अकादमी में लिखा आई है। इन्होंने उनको एक मास की फीस का दो सौ रुपया और एक सुन्दर वीणा खरीदने के लिए एक सहस्र रुपया अग्रिम भी दे दिया है।"

इस सूचना से भी सब लोगों को प्रसन्नता हुई। इस प्रकार हँसी-खुशी के वातावरण में उस शाम की चाय समाप्त हुई।

: २ :

सोम के दिल्ली वापस आने के सम्बन्ध में परमानन्द की कम्पनी से किए गए बीमा को एक सप्ताह ही हुआ था कि भारत के समाचार-पत्रों में एक समाचार प्रकाशित हुआ। उस समाचार में लिखा था कि भारत सरकार ने राष्ट्रसंघ की सुरक्षा परिषद् में एक आवेदन किया है कि मास्को स्थित उनके दूतावास को विदित हुआ है कि भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक सोमदेव को मास्को में बन्दी बनाया हुआ है अतः सुरक्षा परिषद् का यह कर्तव्य है कि वह रूस सरकार को उसे मुक्त करने के लिए विवश करे तथा हमारे मास्को स्थित राजदूत को उनसे मिलने की अनुमति दी जाय जिससे वे यह जान सकें कि उनको कब तक भारत भेजा जाने वाला है।

इस समाचार से तो यूरोप और अमेरिका में क्रोध की लहर दौड़ गई। इंग्लैण्ड,

फ्रांस, स्पेन, इटली, जर्मनी और अमेरिका के समाचार-पत्रों ने बड़े रोषपूर्ण लेख प्रकाशित किए।

सुरक्षा परिषद् द्वारा इस पर प्रारम्भिक कार्यवाही करने में पन्द्रह दिन लग गए। रूस सरकार ने सोम के विषय में किसी प्रकार की जानकारी से इन्कार कर दिया।

इस समाचार के मिलते ही लन्दन टाइम्स, न्यूयार्क हेरल्ड तथा भारत के अनेक पत्रों में सोमदेव का वह फोटो छप गया जिसमें वह रूस के राष्ट्रपति से बातें करता दिखाई दिया था। यह समाचार और चित्र प्रकाशित होने से समस्त संसार में खलबली मच गई। भारत के आग्रह पर फ्रांस और इंग्लैण्ड ने सुरक्षा परिषद् में यह प्रस्ताव रख दिया कि डॉक्टर सोमदेव को तुरन्त मास्को स्थित भारतीय दूतावास में पहुँचाया जाय।

रूस ने इस प्रस्ताव को 'वीटो' कर दिया। तब भारत के नेतृत्व में गुटनिरपेक्ष राज्यों की कौंसिल ने यू० एन० ओ० में प्रस्ताव भेज दिया कि अपने विषय में जाँच के प्रस्ताव को 'वीटो' कर सुरक्षा परिषद् का और उसके द्वारा राष्ट्रसंघ का घोर अपमान किया गया है। इसलिए इस पर विचार करने के लिए यू० एन० ओ० की जनरल कौंसिल की बैठक तुरन्त बुलाई जाय और एक सप्ताह के भीतर रूस को अपना वीटो वापस लेने के लिए विवश किया जाय। यदि राष्ट्रसंघ यह सब कर पाने में असमर्थ है तो उसको ही भंग कर दिया जाय।

यह प्रस्ताव साठ तटस्थ देशों की ओर से प्रस्तुत किया गया था। इस प्रस्ताव के पहुँचते ही जनरल कौंसिल की बैठक बुलाई गई। उसमें अमेरिका ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

संसार के समस्त सभ्य देशों में इस विषय पर चर्चा चल पड़ी। तब ऐसा लगने लगा था कि संसार इस समय तीसरे विश्व-युद्ध के कगार पर खड़ा है। भारत और अमेरिका कहने लगे थे कि यदि डॉक्टर सोमदेव और श्रीमती रीगन को कुछ भी कष्ट दिया गया तो संसार के मानचित्र पर से रूस का चिह्न मिटा दिया जाएगा।

इस प्रकार सोम को लापता हुए चार मास बीत गए थे और इस विषय को विश्व-भर के समाचार-पत्रों ने जनमत का पारा इतना ऊँचा चढ़ा दिया था कि सुरक्षा परिषद् के तेरह सदस्यों में से दस ने उस प्रस्ताव का समर्थन कर दिया।

जर्मनी और स्पेन ने पेरिस में नाटो सन्धि देशों की एक आपात् सभा का आयोजन कर दिया। इसकी प्रतिक्रिया में रूस ने भी वारसा सन्धि देशों की एक आपात् सभा का आयोजन कर दिया। इसका यही अर्थ लगाया जाने लगा कि अब राष्ट्रसंघ भंग हो जाएगा और तृतीय विश्व युद्ध आरम्भ हो जाएगा। यह तो निश्चित था कि यदि विश्वयुद्ध हुआ तो उसमें परमाणु अस्त्रों का खुलकर प्रयोग किया

जाएगा तब इस संसार की नब्बे प्रतिशत जनता मृत्यु के घाट उतार दी जाएगी ।

सोम को लापता हुए चौथे मास का अन्तिम प्रहर बीत रहा था कि राष्ट्रसंघ की जनरल कौंसिल की मीटिंग बुला ली गई । इस पर न्यूयार्क हेरल्ड के पोलैण्ड स्थित संवाददाता ने समाचार भेजा कि डॉक्टर सोम को साइबेरिया के किसी अज्ञात कैम्प में भेज दिया गया है । और यदि विश्व युद्ध हुआ तो पोलैण्ड और पूर्वी जर्मनी उस युद्ध में निष्पक्ष रहेंगे ।

किन्तु उधर मास्को के सभी समाचार-पत्र यही लिखते थे कि डॉक्टर सोम के विषय में जो कुछ भी संसार के पत्रों में प्रकाशित हो रहा है वह सब मनघड़न्त है, इस कारण सर्वथा मिथ्या है ।

राष्ट्रसंघ का समाचार था कि जनरल कौंसिल की बैठक बन्द कमरे में की जा रही है । सोमदेव के परिवार वाले जब इस प्रकार के समाचारों को पढ़ते तो उनकी चिन्ता कम होने की अपेक्षा अधिक बढ़ती जाती थी ।

इस बार जनरल कौंसिल में रूस का प्रतिनिधि भी उपस्थित था । इस प्रकार के समाचारों से मंगलानन्द अत्यन्त चिन्तित था । परन्तु इसके विपरीत बाबा विश्वेश्वरानन्द इस सबके उचित परिणाम की आशा कर रहे थे ।

एक दिन प्रातःकाल का अल्पाहार किया जा रहा था कि तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठी । मंगलानन्द ने उठकर फोन का रिसीवर उठाया । दूसरी ओर से जो कुछ कहा गया उसे वहाँ बैठे व्यक्ति सुन नहीं सकते थे । किन्तु मंगलानन्द की बात वे सुन रहे थे । मंगलानन्द ने पूछा, "आप कौन बोल रहे हैं ?"

इसका उत्तर मंगलानन्द को नहीं मिला, फोन डिस्कनेक्ट हो गया था ।

इससे मंगलानन्द के चेहरे पर चिन्ता की रेखाएँ और भी अधिक गहरी हो गईं । वह वापस आया तो गार्गी ने पूछा, "क्या बात है ? किसका फोन था ?"

"मैंने यही तो जानने का यत्न किया था किन्तु उधर से फोन रख दिया गया ।"

बाबा ने पूछा, "वह क्या कह रहा था ?"

"उसने केवल इतना ही कहा, 'तुरन्त हवाई पत्तन पहुँच जाइए' ।"

यह सुन बाबा तुरन्त उठ खड़े हुए और बोले, "मंगल ! हमें तुरन्त चल देना चाहिए । मैं समझता हूँ कि सोम वहीं है ।"

"मुझे आशंका हो रही है कि कहीं उसका शव ही हमें देखने को न मिले ।" परमानन्द ने आशंका व्यक्त की ।

"यह भी सम्भव है, यद्यपि मैं इसके विपरीत की आशा कर रहा हूँ ।"

मंगलानन्द गैराज से गाड़ी निकालने के लिए भागा तो उसके पीछे-पीछे सरस्वती और गार्गी भी चल पड़ीं । बाबा उनके पीछे-पीछे आ रहे थे ।

आधे घण्टे के बाद जब वे हवाई पत्तन पहुँचे तो वहाँ का दृश्य देखकर चकित

रह गए। वहाँ बहुत कड़ा सुरक्षा का प्रबन्ध किया गया था। बहुत-सी गाड़ियों में बहुत से लोग आ रहे थे। पुलिस आने-जाने वालों के नाम-पते पूछकर ही भीतर जाने की अनुमति दे रही थी।

मंगलानन्द ने पार्किंग प्लेस पर अपनी गाड़ी खड़ी कर उसको ताला लगाया और वह द्वार पर पहुँचा तो उसने पुलिस अधिकारी से पूछा, "यह सब क्या है?"

पुलिस अधिकारी ने उनसे ही पूछा, "आप किधर जा रहे हैं?"

"मैं तो कहीं नहीं जा रहा हूँ। मुझे तो यहाँ बुलाया गया है।"

"आपका शुभ नाम?"

"मंगलानन्द।"

"ठीक है, आप जा सकते हैं। हमारे विभाग ने ही आपको फोन किया था।"

"बात क्या है?"

तब तक पुलिस अधिकारी एक अन्य व्यक्ति की ओर देखने लग गया था। गार्गी ने भी इन आने वालों की ओर देखा। यह अविनाशचन्द्र था।

गार्गी ने अपने पति से कहा, "ओह, अविनाश जी हैं।"

मंगलानन्द ने पुलिस अधिकारी को कहा, "यह भी हमारे साथ ही हैं।"

पुलिस अधिकारी ने उसको भी भीतर जाने दिया। अविनाश ने कहा, "मुझे अभी अंकारा से केवल ग्राम मिला है कि सोम वहाँ से आने वाले जहाज पर भारत पहुँच रहा है। मैंने तुरन्त आपको फोन किया तो पता चला कि आप यहाँ आए हुए हैं। मैं फिर सीधा ही इधर चला आया।"

तब तक ये सभी भीतर पहुँच गए थे। वहाँ तैनात पुलिस अधिकारी ने मंगलानन्द से पूछा, "आप कौन हैं?"

मंगलानन्द ने जब अपना नाम बताया तो उसको एक अलग कमरे में ले जाकर खड़ा कर दिया गया।

सोम ने अपने माता-पिता को देखा तो उसने उनके चरण स्पर्श किए। पिता ने उसको उठाकर गले लगाया, माता उसकी पीठ थपथपाने लगी। सरस्वती ने सोम को देखा तो वह लपक, उससे गले मिलने गई। यह देख मंगलानन्द बोला, "बट दिस इज अनइंडियन।"

"ओह, क्षमा कीजिए।" यह कह सरस्वती पीछे हट गई।

सोम बोला, "परन्तु तुम तो···।"

सरस्वती समझ तो गई थी कि सोम कहना चाहता है कि वह अमेरिकन है, इंडियन नहीं। किन्तु तब तक वह दूर जा चुकी थी और लज्जा से उसका मुख लाल हो गया था। वह एकटक अपने पति को देख रही थी।

मंगलानन्द ने पूछा, "यहाँ किसलिए बैठाया गया है?"

"मुझे यहाँ रोका गया है। मेरे पास न तो पासपोर्ट है और न विजा ही। कल

मुझे अंकारा में इस हवाई जहाज पर चढ़ाकर यहाँ भेज दिया था। यहाँ पहुँचे मुझ एक घण्टा हो गया है। हवाई पत्तन के अधिकारी मेरा इतिहास तो जानते हैं किन्तु इनको यह पता नहीं है कि मेरे साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाय। गृह-सचिव से बात कर उसके आदेश की प्रतीक्षा की जा रही है। उनकी आज्ञा से ही बाहर सुरक्षा का प्रबन्ध किया गया है। सुना है प्रधानमन्त्री आने वाले हैं।"

सहसा सरस्वती ने पूछा, "मेरी माँ कहाँ है ?"

"वे रुग्ण हैं। डॉक्टर इस समय उनकी परीक्षा कर रहा है। अधिकारियों का विचार है कि उनको हैजा हो गया है। परन्तु मैं जानता हूँ कि ऐसी कोई बात नहीं है। यह दस्तों की बीमारी तो उनको उस दिन से है जिस दिन उनको बन्दी बनाया गया था।"

मंगलानन्द हँस पड़ा। उसके मुख से निकल गया, "तो बहिन रीगन मृत्यु से डर रही हैं। परन्तु अब तो भय का निवारण हो जाना चाहिए था।"

तब तक डॉक्टर और श्रीमती रीगन भीतर के कमरे से बाहर आ गए। डॉक्टर का कहना था कि यह 'कोलरा' नहीं अपितु 'क्रोनिक डिसेण्टरी' है।

इसका अभिप्राय यह था कि श्रीमती रीगन स्वतन्त्र थी।

इस समय प्रधानमन्त्री के पहुँचने की सूचना आई। सोमदेव को तुरन्त ही उनके सम्मुख ले जाया गया। दोनों की पृथक् कमरे में भेंट हुई। यह भेंट दस मिनट तक हुई। जब वे बाहर आए तो सोम और श्रीमती रीगन को स्वतन्त्र कर दिया गया। पहले प्रधानमन्त्री गए और उसके बाद सोम तथा उसके परिवार के व्यक्ति गए।

हवाई पत्तन के भवन से बाहर निकले ही थे कि सोम को प्रेस प्रतिनिधियों ने घेर लिया। इस समय भी मिस्टर चटर्जी, जो उस दिन सोम के घर पर उससे बात करने आया था, उनका अगुआ था। उसे देख सोम ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा, "मैं पिताजी की कोठी पर जा रहा हूँ, उचित यही होगा कि आप लोग वहीं पहुँच जाइए।"

"ठीक है, हम वहीं आ रहे हैं।"

इस प्रकार एक ओर सोम का परिवार अपने-अपने वाहनों में घर की ओर चल पड़ा और दूसरी ओर प्रेस प्रतिनिधि अपने-अपने वाहनों में उस ओर को चल दिए।

मंगलानन्द का सारा परिवार वहाँ एकत्रित हो गया था। अब तक सबको आकाशवाणी द्वारा प्रसारित समाचार बुलेटिन से सोम के आने की सूचना मिल गई थी।

सोम की माताजी ने सबके लिए कॉफी आदि का प्रबन्ध करने का आदेश दे दिया।

सामान्य कुशल-क्षेम के उपरान्त सोम से वक्तव्य देने का आग्रह किया गया।

सोम ने कहा, "मैं काश्मीर टूअर से लौट रहा था। मैं जब श्रीनगर में अपने

तथा अपने परिजनों के लिए दिल्ली की सीट सुरक्षित कराने के लिए हवाई पत्तन जाने लगा तो मेरी सास श्रीमती रीगन मुझसे कहने लगीं कि उनकी किसी सहेली का रायल होटल से फोन आया है, इसलिए वे भी मेरे साथ ही उस ओर चल रही हैं। मैंने उनको अपने साथ ले लिया और जब हम रायल होटल के द्वार पर पहुँचे तो एक व्यक्ति, जो देखने में तो अमेरिकन ही लगता था, ने हमारी टैक्सी रोककर कहा, कि मिसेज रीगन की सहेली को सहसा राज्याध्यक्ष का निमन्त्रण आ गया है इसलिए उन्होंने कहा है कि वे उस गाड़ी में बैठकर उनके पास वहीं आ जाए जो उन्होंने भेजी है।

''यह सुनकर हमने अपनी टैक्सी छोड़ दी और हम उस गाड़ी में बैठ गए जो वह व्यक्ति लाया हुआ था। हम ज्यों ही गाड़ी में बैठे कि अचेत हो गए। मेरी चेतना जब लौटी तो मुझे लगा कि उस समय हम किसी ऐयरोड्रॉम पर हैं। श्रीमती रीगन यद्यपि मुझसे पूर्व ही सचेत हो गई थीं किन्तु वे स्वयं को रुग्ण अनुभव कर रही थीं। इसलिए उनको तो वहीं उतार लिया गया किन्तु मुझे आगे ले गए। अगले ऐयरोड्रॉम पर पहुँचकर मुझे बताया गया कि वहाँ से हमें किसी अन्य हवाई जहाज पर चढ़ना है। तब मुझको एक बहुत बड़े हवाई जहाज पर बैठा दिया गया। मुझे खाना दिया गया। उस समय मुझे आभास हुआ कि मैं सोवियत सरकार का बन्दी हूँ। उसी समय मुझे यह भी पता चला कि मुझे मास्को ले जाया जा रहा है। जो लोग मुझे ले जा रहे थे वे यह नहीं बता सके कि मुझे किस कारण बन्दी बनाया गया है और मास्को क्यों ले जाया जा रहा है। वे यह भी नहीं जानते थे कि मास्को पहुँचने पर मेरे साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा।

''दूसरे दिन प्रातः के आठ बजे हम मास्को पहुँच गए थे। कुछ सैनिक मेरे स्वागत के लिए वहाँ उपस्थित थे। एक तो उनमें सामान्य नागरिक की वेशभूषा में था। उसने मुझसे हाथ मिलाया और कहा कि मैं उसका अतिथि हूँ।

''उसने अपना नाम प्रोफेसर सिमि नोकोव बताया। वह मास्को विश्वविद्यालय में फिजिक्स का प्राध्यापक था। तब से लेकर कल तक मैं उसका ही अतिथि रहा हूँ। इस सारी अवधि में मैं उसकी कोठी पर ही था। इस अवधि में अनेक अधिकारियों ने मेरे अनुसन्धान के विषय में खोजबीन की है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के सम्मुख मेरे अपने विषय पर मेरे सात व्याख्यान भी कराए गए।

''कल प्रातःकाल कुछ सैनिक अधिकारी मुझसे मिलने के लिए आए और मुझसे चलने के लिए कहने लगे। हवाई जहाज द्वारा कल सायंकाल हमको एक स्थान पर ले जाया गया। वहाँ उस जहाज से उतारकर हमें टर्की के हवाई जहाज में बैठा दिया गया। मुझे वहाँ लाने वाले जब मुझे दूसरे जहाज में बैठाकर चले गए तो मैंने वहाँ के लोगों से पूछा कि मैं कहाँ हूँ तो उन्होंने बताया कि उस समय मैं अंकारा हवाई पत्तन पर हूँ। मैंने पूछा, 'मुझे कहाँ ले जाया जा रहा है?'

" 'दिल्ली।'

"बस इस प्रकार आज मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। मैं जब बाहर निकलने लगा तो मेरा पासपोर्ट माँगा गया। मैंने बता दिया कि मेरे पास नहीं है। तब मुझे वहीं रोक लिया गया। जब हमको पुनः रोक लिया गया तो श्रीमती रीगन फिर भयभीत हो उठीं और इस प्रकार फिर उनको दस्त आरम्भ हो गए। तब वहाँ के अधिकारियों को सन्देह हुआ कि ये कहीं कालरा के रोगी न हों। यह विचार आते ही उनको पृथक् कमरे में ले जाया गया और डॉक्टर बुलाकर उनका परीक्षण किया गया।

"अब मैं आपके मध्य हूँ।

"अपने मास्को निवास का पूरा विवरण मैं बाद में लिखकर दूँगा।"

प्रेस प्रतिनिधि तो खा-पीकर विदा हो गए। तब घर के लोग सोम को घेरकर बैठ गए। मंगलानन्द ने कचहरी जाना स्थगित कर दिया। किन्तु मोहनलाल का जाना आवश्यक था, इसलिए वह सोम से विदा लेकर चला गया। अम्बा वहीं रह गई।

सारा परिवार पुनः चाय-पान के लिए बैठ गया। सोम इस अवधि में रूस से बाहर के समाचार पूछता रहा। परमानन्द ने ही सब बात बताईं। उसने सोम को छुड़ाने के लिए क्या प्रयत्न किया और किस प्रकार उसने उसका बीमा करके कार्यवाही आरम्भ की, यह सब बताया।

सोम ने पूछा, "आपका यत्न गोपनीय है अथवा कि सबको बताने का?"

"था तो गोपनीय ही किन्तु अब उसकी आवश्यकता नहीं रही। ज्यों ही हमें बीमे की अग्रिम राशि मिली तब हमने सबसे पहले भारत सरकार को इस प्रयत्न के लिए तैयार किया। इस कार्य में पूरा एक सप्ताह लग गया। तब कहीं जाकर भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में प्रस्ताव रखा कि उसे विश्वस्त सूत्रों से विदित हुआ है कि आप लोग सोवियत संघ के किसी क्षेत्र में बन्दी हैं। परिषद् से रूस सरकार पर दबाव डालने का आग्रह किया गया। और जब सुरक्षा परिषद् ने रूस सरकार से इस विषय में पूछा तो उसने नितान्त अनभिज्ञता प्रकट कर दी।

"तब हमने आपका वह चित्र जिसमें आप सोवियत संघ के राष्ट्रपति से बात करते दिखाई दिए, संसार-भर के समाचार-पत्रों में प्रकाशित करवा दिया। उसका परिणाम यह हुआ कि सभी प्रजातान्त्रिक देश क्रोध से भर गए। हमने धन दे-देकर सब प्रजातान्त्रिक देशों के समाचार-पत्रों में इस सम्बन्ध में लेख प्रकाशित करवाए। पुनः सुरक्षा परिषद् में प्रस्ताव रखवाया कि रूस सरकार से पूछा जाए कि वह चित्र वास्तविक है अथवा कि काल्पनिक।

"जब इसका भी कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकला तो फिर हमने साठ से भी अधिक गुटनिरपेक्ष देशों की ओर से यह प्रस्ताव प्रस्तुत करवाया कि डॉक्टर सोमदेव को न्यूयार्क में उपस्थित किया जाए। उस प्रस्ताव को सोवियत सरकार ने

वीटो कर दिया। उसका परिणाम उत्साहजनक रहा। समस्त संसार में इससे खलबली मच गई। फिर तटस्थ देशों के प्रस्ताव पर सुरक्षा परिषद् की जनरल कौंसिल में विचार-विनिमय आरम्भ हुआ। तटस्थ देशों का कथन था कि या तो डॉक्टर सोमदेव को उपस्थित किया जाए और यदि परिषद् इस प्रकार के कार्य करने में असमर्थ है तो उसको भंग कर दिया जाए, इसकी कोई उपयोगिता नहीं है।

"यह प्रसन्नता की बात थी कि अमेरिका सरकार इस प्रस्ताव के पक्ष में हो गई। इसका परिणाम यह हुआ कि तेरह में से सुरक्षा परिषद् के दस सदस्य इस प्रस्ताव के पक्ष में हो गए। इसका स्पष्ट परिणाम यह होने वाला था कि यदि अब भी रूस ने अपने वीटो के अधिकार का प्रयोग किया तो राष्ट्रसंघ भंग हो जाएगा। उसका स्वाभाविक परिणाम तृतीय विश्वयुद्ध होगा।

"उन्हीं दिनों हमने पेरिस से एक समाचार प्रकाशित करवा दिया कि नाटो सन्धि देशों की गुप्त बैठक हो रही है। उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप रूस ने वारसा देशों की बैठक बुलवा ली। उसमें पोलैण्ड, पूर्वी जर्मनी और युगोस्लाविया ने इस युद्ध में भागीदार बनना अस्वीकार कर दिया।

"इसका परिणाम उचित फलप्रद हुआ। कल रात से राष्ट्रसंघ की गुप्त बैठक चल रही है। उसका ही परिणाम है कि रूस ने सोम को छोड़ दिया है।"

यह सुनकर बाबा विश्वेश्वरानन्द ने कहा,"मैं भी तो यही कहता था कि असुरों को सन्मार्ग समझाने के लिए लोकतान्त्रिक प्रणाली सफल सिद्ध नहीं होती। इसके लिए तो कोई दो-चार मनचले व्यक्ति ही प्रयत्न कर सकते हैं।"

परमानन्द के पिताजी ने पूछा, "तुम्हारा कितना रुपया इस पर व्यय हो गया है ?"

"पिताजी ! एक लाख की सीमा तो कभी की पार हो चुकी है। ठीक-ठीक राशि का ज्ञान तो हिसाब करने पर ही हो पाएगा। मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि हम लगभग दो लाख रुपया व्यय कर चुके हैं।"

"इससे तो तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ ?"

"आर्थिक लाभ न हुआ हो। तदपि हम लाभ में ही रहे हैं। अब हमें आशा है कि सोम भैया अपने अनुसंधान-कार्य का बीमा हमसे ही करायेंगे। यह वर्तमान की हानि उस अनुबन्ध से पूरी हो जाएगी। उस डील से तो हम आजीवन आनन्द का जीवन व्यतीत करेंगे।"

"पर वह तो मैं अपने साथियों की राय के बिना कर ही नहीं सकता।" सोम ने बताया।

"ठीक है। किन्तु तुम तो हमारे पक्ष में ही हो न ?"

"हाँ, क्यों नहीं। आपने मेरी मुक्ति के लिए इतना प्रयत्न किया है, यह मेरा नैतिक कर्तव्य भी हो जाता है कि मैं आपका पक्ष ही लूँ।"

: ३ :

दूसरे दिन प्रातःकाल जब सोम सोकर उठा तो उसे बराबर के कमरे में वीणा का स्वर सुनाई दिया। कुछ क्षणों तक तो वह इस विषय पर विचार ही करता रहा। फिर उसे स्मरण आया कि काश्मीर जाने से पूर्व सरस्वती वीणा सीखने की बात कर रही थी। इतना स्मरण आते ही वह समझ गया कि सरस्वती ने वीणा बजाना आरम्भ कर दिया है।

उस रात जब वह सोने लगा था तो सरस्वती ने उसके साथ सोने से इन्कार कर दिया था। तब सोम ने पूछा, "क्यों, नाराज हो क्या ?"

"जी नहीं, मैं आपसे नाराज कैसे हो सकती हूँ। किन्तु इससे किसी और के नाराज हो जाने की सम्भावना है।"

"किसके ?"

"क्यों आपको पता नहीं ? जाने से पूर्व आप मुझे अपनी एक धरोहर सौंप गए थे। मैं उसी के विषय में कह रही हूँ।"

"मैं वचन देता हूँ कि मैं संयम से रहूँगा।" सोम ने कहा।

"आप पर तो मुझे पूरा भरोसा है किन्तु स्वयं पर नहीं है। काश्मीर जाने से पूर्व बहिन अम्बा के घर पर के संयोग की स्मृति मस्तिष्क में चक्कर काट रही है। वह स्मृति इतनी मधुर और रसमय थी कि आजीवन उसको भुला पाना कठिन है। बस आपको देखते ही वह स्मृति मानसपटल पर उभर आई है।"

इतना कहकर सरस्वती उठी और बराबर के कमरे में चली गई। उसने भीतर से द्वार बन्द किया और कुण्डी भी चढ़ा दी।

इस समय सोम को यह सब स्मरण हो आया और वह बराबर के कमरे में वीणा वादिका का दर्शन करने के लिए चल दिया। वहाँ जाकर उसने देखा कि जिस प्रकार अम्बा के पूजागृह में सरस्वती की प्रतिमा थी उसी प्रकार सरस्वती ने अपने घर में वीणावादिनी सरस्वती की स्फटिक की प्रतिमा को एक चौकी पर सजाया हुआ है। सरस्वती उसके सामने फर्श पर बैठकर वीणा का अभ्यास कर रही थी।

सोम को संगीत का ज्ञान नहीं था, इस कारण वह जान नहीं पाया कि सरस्वती उस समय कौन-सा राग बजा रही है। हाँ, इतना वह अवश्य अनुभव करता था कि जो कुछ भी वह बजा रही है, बड़ा ही रसमय है।

सरस्वती ने उसको वहाँ उपस्थित देखा तो उसने वीणा को फर्श पर आराम से रखा और उठकर अपने पति के चरण-स्पर्श करने लगी। यह देख सोमदेव मुस्करा दिया, वह बोला, "यह माताजी की शिक्षा का परिणाम है क्या ?"

"हाँ, कुछ-कुछ। उन्होंने तो केवल यही कहा था कि संगीत का अभ्यास करने से पूर्व और अभ्यास समाप्त करने पर अपने मन के देवता की चरण-वन्दना करनी चाहिए। मेरे मन में तो आपकी ही प्रतिमा स्थापित है। अतः आपको आते देख

स्वयमेव अन्तःप्रेरणा से यह कृत्य हुआ है।"

"तुम्हारा बजाना कुछ रसमय तो लगा है यद्यपि संगीत विद्या मेरे लिए अरबी-फारसी के समान है। कुछ रस आने लगा तो मैं उठकर यहाँ चला आया।"

उस दिन जब सोम के परिवार के सदस्य प्रातःकाल अल्पाहार कर रहे थे तो उस समय अमेरिकी दूतावास से फोन आया। फोन मंगलानन्द ने सुना था। उसने स्पीकर द्वारा डाईनिंग हॉल में यह समाचार भिजवा दिया कि अमेरिकी दूतावास से फोन आया है और राजदूत महोदय का आग्रह है कि उस दिन मध्याह्न का भोजन डॉक्टर सोमदेव उनके साथ करें। सोम ने कहलवा दिया कि मध्याह्न भोजन के समय तो वह प्रधानमन्त्री के पास जा रहा है; यदि राजदूत महोदय उपयुक्त समझें तो वह सायंकाल की चाय उनके साथ पीने के लिए उद्यत है।

बाबा ने यह सुन पूछा, "तुम प्रधानमन्त्री के पास जा रहे हो?"

"हाँ, बाबा! कल ही उनके निजी सचिव द्वारा निश्चय कर लिया गया था।"

"मैं जो बात तुमको समझाने का यत्न कर रहा हूँ, वह यह है कि अब ये राजनीतिक संस्थान अपनी-अपनी शेखी बघारेंगे। वस्तु-स्थिति यह है कि प्रारम्भ में इनमें से कोई भी आगे बढ़कर इतने बड़े विद्वान् और सभ्य नागरिक की सुरक्षा के लिए तैयार नहीं हुआ था। इन प्रजातान्त्रिक संस्थाओं के विषय में मेरे मन में घृणा है। यदि इन पर कभी कोई संकट आ जाए तो ये सिर की बाजी लगाने को तत्पर रहते हैं, उस समय इन सबको अपनी सुरक्षा का विचार होता है। दया-धर्म के नाम पर तो ये किसी प्रकार का भी भय मोल लेने के लिए तत्पर नहीं रहते।

"ये प्रधानमन्त्री और राष्ट्रपति अपने आसन पर जब तक स्वयं को सुरक्षित देखते हैं तब तक तो इनके कान पर जूँ भी नहीं रेंगती। आज जो तुम हम सबके साथ यहाँ बैठे सुख की साँस ले रहे हो, हमारी चिन्ता का जो अन्त हुआ है उस सबके लिए मैं परमानन्द की कम्पनी को ही श्रेय देता हूँ। न भारत सरकार को, न अमेरिकी सरकार को और न सुरक्षा परिषद् को ही। ये सब तो इनकी कम्पनी के हाथ में खिलौने थे।

"दो दिन पूर्व ही अविनाशचन्द्र से मेरी बात हुई थी। उसने बताया था कि रूस में तुम्हारे होने के समाचार के प्रसारण में उनको कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा है। वारसा सन्धि के देशों में फूट डलवाना भी कोई सरल कार्य नहीं था। यदि इनकी कम्पनी यह सब न करती तो तुम आज भी मास्को की ठंडी हवा का सेवन कर रहे होते।"

"बाबा! मैं यह सब समझ गया हूँ और इसीलिए तो इनकी कम्पनी के अहसान का कुछ तो प्रतिकार मैं करने का यत्न करने की सोच रहा हूँ। जहाँ तक मेरे कार्य का सम्बन्ध है यदि वह मेरी आशाओं के अनुरूप सफल हुआ तो, उस पर इनमें से किसी भी एक राज्य अथवा राज्यसमूह का 'एकाधिकार' नहीं होगा। इस पर जन-

जन का ही अधिकार होगा।"

"यह तुम जानो। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि ज्ञान को धन का दास नहीं होना चाहिए। यह विद्वानों की सम्पत्ति है।"

उस दिन सायंकाल पाँच बजे अमेरिकन राजदूत के घर चाय का समय निर्धारित हो गया था। मध्याह्न के समय प्रधानमन्त्री दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति के साथ सोमदेव की प्रतीक्षा में बैठा था। भोजन करते हुए सोमदेव के भावी अनुसंधान और सेवा-कार्य के विषय में वार्तालाप हुआ। तब केवल इतना ही निश्चय हो पाया कि दो-तीन व्याख्यान अपने कार्य के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय में देगा। यह भाषण-माला विज्ञान सभा के अन्तर्गत होगी। इसकी तिथि का निश्चय बाद में करना तय हुआ।

शाम को अमेरिकी दूतावास में चाय-पान के लिए जाने से पूर्व सोमदेव को आदेश मिला था कि वह केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में उपस्थिति से सूचित करे।

चाय-पान के लिए बैठते ही सोमदेव ने कहा कि उसको केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के चान्सलर का आदेश हुआ है कि वह शीघ्र विश्वविद्यालय में अपनी उपस्थिति की सूचना दे।

यह सुनकर किसिंजर ने कहा, "मुझे इसका ज्ञान है। आप कब प्रस्थान करने वाले हैं?"

"अभी तो मैंने यही केवल किया है कि दो-तीन दिन में अपने वहाँ पहुँचने की तिथि की सूचना दूँगा।"

इस अवधि में किसिंजर तो सोमदेव के साथ रूस में हुए व्यवहार के विषय में ही जानकारी प्राप्त करने का यत्न करता रहा था। सोमदेव ने यह भी बता दिया कि उसे किस प्रकार एक मित्र के घर पर बन्दी के रूप में रखा गया था। सोमदेव ने यह भी बताया कि उस मित्र के अनुसार वहाँ के सभी नागरिक लगभग इसी प्रकार अपने-अपने घरों में बन्दी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

सोमदेव ने यह भी बताया कि वह अपने रूस प्रवास के समय के नोट्स तैयार कर रहा था। किन्तु उन नोट्स को वह ला नहीं पाया।

श्री सिमि नोकोव, जिनके घर में वह बन्दी था, ने आश्वासन दिया है कि सरकारी देखरेख के उपरान्त उनके नोट्स कदाचित् उसके पास भेज दिए जाएँगे। यदि वे आ गए तो उनके आधार पर मैं एक विस्तृत वक्तव्य तैयार कर उसको प्रकाशित कराने का यत्न करूँगा। और यदि नहीं आए तो अपनी स्मृति के आधार पर वहाँ के निवास का अपना विवरण तैयार करूँगा और फिर उसके आधार पर वक्तव्य प्रकाशित कराऊँगा।

किसिंजर ने आग्रह किया कि सोमदेव यथाशीघ्र अपने विश्वविद्यालय में पहुँच जाए, वहाँ उसकी उत्सुकता से प्रतीक्षा की जा रही है।

कुछ दिन बाद सोम सान फ्रांसिसको चला गया। उसके साथ उसकी सास भी गई। किन्तु उसकी पत्नी सरस्वती लौटकर अमेरिका नहीं गई। उसका कहना था कि कम-से-कम प्रसव तक तो वह भारत में ही रहेगी।

जाने से पूर्व एक दिन हँसी-खुशी के वातावरण में गार्गी ने बताया कि सावित्री भी अब गर्भवती है। उसका कहना है कि उसको यह छूत की बीमारी सरस्वती से लगी है।

सोम को इस बात का ज्ञान था। सरस्वती ने उसको इसकी सूचना दे दी थी।

उधर सोम मुक्त होकर जब भारत वापस आ गया तो सुरक्षा परिषद् की जनरल काउंसिल की बैठक अनिश्चित काल के लिए स्थगित हो गई थी। इससे संभावित विश्वयुद्ध को टलते देख संसार ने सुख का साँस लिया था। रूस सरकार और उस देश के समाचार-पत्र इस विषय पर सर्वथा मौन ही रहे।

सोम के अमेरिका पहुँचने की सूचना मिलने पर उसके साथी वैज्ञानिक उसको मिलने के लिए सान फ्रांसिसको हवाई पत्तन पर गए। मेकार्थर की कार द्वारा वे सभी विश्वविद्यालय के लिए चले तो मार्ग में सोम को बताया गया कि उनका सारा ऐप-रेटस अमेरिका सरकार ने जब्त कर लिया है और उसे वाशिंगटन ले जाकर सील-बन्द कर दिया है। वह वहाँ के सैनिक विभाग के अधीन है।

सोमदेव ने पूछा, "हमारे एण्टीना ?"

"उनको भी सब सैनिक उठाकर ले गए थे।"

"इस विषय में चांसलर का क्या कहना है ?"

"आपके सुरक्षित दिल्ली पहुँचने का समाचार मिलते ही हम चांसलर से मिले थे और हमारे आग्रह पर ही चांसलर साहब ने आपको यहाँ आने का आग्रह किया है।"

"और आप लोग क्या कहते हैं ?"

मेकार्थर बोला, "हम सब तो अविलम्ब अपना कार्य आरम्भ कर देना चाहते हैं। वैसे एक बात है। हम लोगों को पृथक्-पृथक् बुलाकर सैनिक अधिकारी हमसे प्रश्न करते रहते हैं। हम सबका लगभग एक ही उत्तर था कि हम सब आपके निर्देशन में ही कार्य करेंगे। आपके निर्देशन के बिना कार्य चल ही नहीं सकता।"

सोमदेव मेकार्थर के घर पर ही ले जाया गया। वहाँ पहुँचते ही उसने चांसलर को अपने पहुँचने की सूचना दी तो चांसलर ने उससे तुरन्त मिलने के लिए कहा। सोमदेव वहाँ गया तो चांसलर का कहना था, "यहाँ यह चर्चा जोरों पर है कि आपका दुबारा भी अपहरण किया जा सकता है। तब इस बार आपको अधिकाधिक कष्ट देकर आपके एण्टीना के रहस्य जानने का यथाशक्ति यत्न किया जाएगा।"

"आप इस सम्बन्ध में क्या सुझाव देते हैं ?"

"मेरा तो यही कहना है कि आप तुरन्त संयुक्त राज्य अमेरिका से संरक्षण

प्राप्त कर लें।''

"यह मेरे लिए सम्भव नहीं है।'' सोमदेव ने स्पष्ट कह दिया। उसने कहा, ''मैं अपना अनुसन्धान जारी रखूँगा अथवा नहीं, इस विषय में अभी कुछ नहीं कहता। किन्तु इतना निश्चित है कि किसी का बन्दी बनकर मैं यह अनुसन्धान नहीं करना चाहता। यदि कोई राज्य एक सामान्य नागरिक की सुरक्षा का प्रबन्ध नहीं कर सकता तो फिर उस राज्य में अथवा इस पृथ्वी पर ही रहने का क्या लाभ? यह स्थान रहने योग्य है ही नहीं। उस स्थिति में यह शरीर छोड़कर मैं यहाँ से चला जाना चाहूँगा।''

"और अब तक की तुम्हारी जो उपलब्धि है उसे क्या यों ही नष्ट कर दोगे? डॉक्टर! कुछ तो विचार करो। यदि तुम्हारी नीति को स्वीकार कर लिया जाए तो इससे तो शीघ्र ही इस संसार में गुण्डों का राज्य स्थापित हो जाएगा।''

"जी हाँ। सम्भावना तो यही है। परन्तु मैं समझता हूँ कि भीरुओं के राज्य की अपेक्षा गुण्डों का राज्य कहीं श्रेष्ठ होगा।''

"ओह!'' चांसलर आश्चर्य कर रहा था। उसने पूछा, ''किन्तु यह किस प्रकार?''

"तब भले लोग गुण्डों को नियन्त्रण में रखने का यत्न करेंगे। यही जीवन के लक्षण हैं। बन्दीगृह के अधीक्षक कितने ही भले क्यों न हों किन्तु उनको कोई भी सहन नहीं कर सकता।''

"ये केवल मनोद्‌गार हैं। मैं समझता हूँ कि एक बार फिर शान्तिपूर्वक अपने व्यवहार पर विचार कर अपने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करो। मैं यह भी चाहता हूँ कि तुरन्त ही अपने वाशिंगटन पहुँचने की सूचना वहाँ के अधिकारियों को भेज दो।''

"मैं इतना ही कर सकता हूँ कि अपने विश्वविद्यालय में पहुँचने की सूचना वहाँ भेज दूं। उसके बाद मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि मुझे बताइए कि मैं इस समय विश्वविद्यालय के प्राध्यापक पद पर हूँ अथवा कि नहीं?''

"तुम्हारे स्थान पर तो नया व्यक्ति नियुक्त कर दिया गया है। हाँ, यदि आप विश्वविद्यालय में कार्य करने को इच्छुक हों तो बताइए। मैं उचित अधिकारियों से बात कर एक-दो दिन में आपको बता दूँगा।''

"मेरा निवासस्थान? मेरा तो वहाँ बहुत-सा सामान था।''

"वह अभी बन्द पड़ा है। अभी आप वहाँ जाकर रह सकते हैं। विश्वविद्यालय ने केवल सुरक्षा की दृष्टि से अपने ताले लगाए थे। कार्यालय में जाकर आप चाबी ले सकते हैं।''

"ठीक है। आप कृपया कार्यालय को मेरे आने की सूचना भिजवाकर मेरा क्वार्टर खोलने की आज्ञा दे दीजिए। उसके बाद मैं अपने साथियों से विचार-विमर्श

कर अपने यहाँ पहुँचने की सूचना वाशिंगटन भेज दूँगा।"

"तुम्हारे साथी तो 'मूर्ख' हैं। वे कोई भी बात समझते ही नहीं।"

"आप उनके विषय में कुछ भी सोचिए तदपि वे मेरे कार्य के साथी रहे हैं। मेरे अनुसन्धान में उनका पर्याप्त योगदान है। अतः उनसे परामर्श करना परमावश्यक है।"

"ठीक है, तुम्हारा क्वार्टर खुल जाएगा। किन्तु मैं चाहूँगा कि तुम अपने पहुँचने का समाचार तुरन्त वाशिंगटन भेज दो।"

सोम वापस अपने साथी के क्वार्टर पर पहुँच गया। वहाँ उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा हो रही थी। जब सोमदेव ने चांसलर के साथ हुआ अपना पूर्ण वार्तालाप उनको सुना दिया तो मेकार्थर बोला, "तो आप सैनिक कार्यालय के संरक्षण में कार्य नहीं करोगे?"

"नहीं। उसका कारण यह है कि मैं यह अनुसन्धान जनसाधारण के लाभ के लिए कर रहा हूँ। जब मेरे कार्य की पहुँच जनसाधारण तक हो जाएगी उसके बाद यदि कोई राज्य उससे लाभ उठाना चाहे तो उठा सकता है।"

"आप राज्य और व्यक्ति में अन्तर नहीं समझते?"

"समझता हूँ। तदपि मेरी दृष्टि में व्यक्ति मुख्य है। उसके व्यक्तित्व की सुरक्षा के लिए ही राज्य है। जब तक किसी दूसरे को हानि पहुँचाए बिना व्यक्ति अपना जीवन चलाता है तबतक राज्य को उसके जीवन की सुरक्षा के लिए कृत-संकल्प होना चाहिए।"

"परन्तु किसी स्वतन्त्र देश का नागरिक अपने राज्य और देश से द्रोह भी तो कर सकता है?"

"कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति अथवा देश के साथ द्रोह न कर पाए, यह देखना राज्य का कार्य है। उस प्रबन्ध के लिए राज्य को पूर्ण सहयोग देने के लिए तत्पर हूँ।"

"परन्तु डॉक्टर! यदि सरकार इस ज्ञान को भले लोगों के लिए सुरक्षित रखे तो क्या आप उन्हें उनकी सुरक्षा का ही एक कार्य नहीं समझते?"

"लोगों को सुरक्षित रखने के लिए ज्ञान को सन्दूक में बन्द रखना न तो किसी प्रकार का उचित उपाय है और न ही यह सम्भव है। संयुक्त राज्य जैसी प्रबल सरकार 'अणु बम' जैसी भयंकर वस्तु का ज्ञान तो सुरक्षित नहीं रख सकी, फिर भला वह किसी उपकारी कार्य को सुरक्षित रख पाएगी इसमें सन्देह है।"

सोम के साथी जानते थे कि वह जितना ही प्रखर वैज्ञानिक है उतना प्रखर वह तार्किक भी है। उसके तर्क के सम्मुख वे निरुत्तर हो गए।

चांसलर के आदेश पर सोम का क्वार्टर खोल दिया गया। उसी दिन सोम ने अपने पहुँचने की सूचना भी वाशिंगटन भेज दी।

विश्वविद्यालय के अधिकारी चाहते थे कि पहले सरकार के साथ सोम की बातचीत हो जाय उसके बाद ही वे उसके विषय में किसी प्रकार का निर्णय करना चाहते थे। उससे पूर्व वे किसी प्रकार का निर्णय करने की स्थिति में नहीं थे।

वाशिंगटन सूचना पहुँचने पर सोम को वहाँ बुलाया गया। सोम तीन दिन तक वहाँ रहा और फिर वापस आ गया।

सोम के वापस आते ही उसके सारे साथी उसके क्वार्टर पर एकत्रित हो गए। वे वहाँ हुए वार्तालाप का परिणाम जानना चाहते थे। सोम ने कह दिया, "मैं सैनिक संगठन के अधीन कार्य करना अस्वीकार कर आया हूँ।

"मेरी बात सुनकर वहाँ के अधिकारी दो वर्ग में विभक्त हो गए। एक वर्ग चाहता था कि आप सब अथवा आपमें से कुछ सैनिक विभाग में जाकर इसी विषय पर आगे खोज करें। दूसरे विचार के लोग चाहते थे कि सैनिक विभाग के एक-दो वैज्ञानिक हमारी टीम के साथ मिलकर कार्य करें।

"मैंने उन्हें बता दिया है कि मुझे इन दोनों में से किसी भी योजना पर कोई आपत्ति नहीं है। मेरा सैनिक विभाग में कार्य न करने का मेरा संकल्प केवल मेरे अपने विषय में है।"

मेकार्थर ने तो स्पष्ट कह दिया कि वह सैनिक विभाग के अन्तर्गत किसी प्रकार का कार्य नहीं करेगा। उसके अन्य साथी अभी इस विषय पर अनिश्चित थे। वे किसी निर्णय पर नहीं पहुँच पाए थे।

सोम ने कहा, "यदि किसी विषय पर दो स्थान पर अथवा उससे भी अधिक स्थानों पर कार्य हो तो मुझे किसी प्रकार की आपत्ति नहीं। मैं तो केवल स्वयं को इस सबसे स्वतन्त्र रखना चाहता हूँ।

"मास्को में भी एक उच्चाधिकारी ने मुझसे पूछा था कि यदि सोवियत संघ इस विषय पर खोज का कार्य करे तो मुझे कैसा अनुभव होगा ?

"तब मैंने कह दिया कि मुझे इस पर क्या आपत्ति हो सकती है और मैं किसी को किस प्रकार रोक सकता हूँ ?

"तब मुझसे पूछा गया कि उनके इस कार्य में मैं उनकी सहायता करूँगा अथवा नहीं। मैंने कहा कि यदि रूस से बाहर रहकर स्वतन्त्र नागरिक के रूप में मुझसे किसी ने परामर्श किया तो मैं सहर्ष अपने ज्ञान का लाभ उसको दूँगा। परन्तु किसी के अधीन रहकर न तो कोई कार्य करूँगा और न किसी प्रकार का परामर्श ही दूँगा; मेरा कार्य सबके लिए खुला होगा।

"यह सारी बात मैंने वाशिंगटन के अधिकारियों को भी बता दी है।

"अधिकारियों ने मुझसे कहा है कि इस विषय में सरकार जो भी निश्चय करेगी उससे वे मुझको अवगत करा देंगे।"

"तो अब ?" मेकार्थर ने पूछा।

"अब तो यही है कि यदि विश्वविद्यालय ने पूर्ववत् यहाँ अनुसन्धान की अनुमति दे दी तो उस पर कार्य आरम्भ कर दूँगा।"

"और यदि किसी प्रकार का नियन्त्रण लगाया तो?"

"तब मैं भारत लौट जाऊँगा और अपना कार्य वहाँ करने का यत्न करूँगा?"

"यदि यहाँ अध्यापन-कार्य मिल गया तो?"

"वह तो कहीं भी मिल सकता है। अध्यापन ही यदि करना होगा तो फिर मैं भारत में ही जाकर करूँगा।"

सोमदेव के साथी इस स्थिति में अनिश्चित मन थे। वे चाहते थे कि सोम के साथ कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में कार्य करें। परन्तु उसके अमेरिका से बाहर जाकर काम करने की स्थिति में उसके साथ काम करने अथवा न करने के लिए वे एकमत नहीं थे। वे यह आशा नहीं करते थे कि अमेरिका जैसा वेतन उनको कहीं अन्यत्र भी मिल सकता है।

सोम के चार साथियों में मेकार्थर ही एक ऐसा था जो घर का धनी था। वह विचार करता था कि यह अनुसन्धान का कार्य इतना आवश्यक है कि जिसके लिए वह अमेरिका छोड़कर, इस संदिग्ध सफलता के लिए किसी अन्य देश में चला जाए।

दिन पर दिन व्यतीत होते गए। सोम को यह बताया जा रहा था कि उसके विषय में विश्वविद्यालय और अमेरिका सरकार में परस्पर पत्र-व्यवहार चल रहा है। विचारणीय विषय यही था कि सोम को इस प्रकार स्वतन्त्र कार्य करने की अनुमति दी जाए अथवा कि नहीं।

इन्हीं दिनों एक दिन संयुक्त राज्य के सैनिक विभाग की एक टुकड़ी सोम से वार्तालाप करने के लिए उसके पास आई। इनसे सोम के क्वार्टर में ही वार्तालाप हुआ। यह एक प्रकार का 'आयोग' था। बातचीत बन्द कमरे में हुई। औपचारिक बात के उपरान्त आयोग के अध्यक्ष ने सोम से कहा, "जो एण्टीना आपने तैयार किए थे उनके 'सरकट' का आप डायग्राम बना दीजिए।"

सोम ने कहा, "उसका डायग्राम और उसका वर्णन एण्टीना के साथ ही रखा हुआ था। यदि वह सब मेरे सम्मुख रख दिया जाय तो मैं उसको देखकर समझा दूँगा।"

"वह तो अब रहा नहीं।" एक सदस्य के मुख से निकल गया।

"क्यों, क्या हुआ उसको?"

यह प्रश्न सुनकर आयोग के सदस्य एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

आखिर अध्यक्ष ने ही कहा, "यहाँ से जो वस्तुएँ अधिकार में करके ले जाई गई थीं, उसकी सूची में एण्टीना और उसका डायग्राम अंकित तो है परन्तु अब आपके आने पर हम सामान की इन्वेण्टरी बनाने लगे तो हमें वे दोनों वस्तुएँ मिलीं नहीं।"

"मौखिक रूप में तो वह विवरण मुझे स्मरण नहीं है। किन्तु मुझे आश्चर्य है कि जब आपके विभाग में इस प्रकार सुरक्षित रखी वस्तु की भी चोरी हो सकती है तो आप किस आधार पर मुझे अपने संरक्षण में अनुसन्धान करने के लिए कह रहे हैं ?"

"आप ठीक कहते हैं। परन्तु यह तो मानव दुर्बलता है। इस विषय में कोई क्या कर सकता है ?"

"ठीक है। मेरा कोई अधिकार नहीं कि संयुक्त राज्य अमेरिका के कार्य का विश्लेषण अथवा छिद्रान्वेषण करूँ। किन्तु मेरा तो यही कहना है कि आपने मेरे तीन वर्ष के परिश्रम को अपनी असावधानी के कारण विनष्ट कर दिया है। मुझे पुनः इसके लिए प्रारम्भ से ही यत्न करना पड़ेगा। यह तो ठीक है कि इस बार उतना समय नहीं लगेगा परन्तु करना तो उसको प्रारम्भ से ही पड़ेगा।"

"तो आप इस समय स्मरण कर कुछ नहीं बता सकते ?"

"जी नहीं, यह सम्भव नहीं है।"

"अच्छा एक बात बताइए। आपके चेम्बर के भीतर तो आपके एण्टीना के कारण भू-आकर्षण समाप्त हो गया था। परन्तु उस चेम्बर के बाहर के स्थान पर तो भू-आकर्षण का तनाव विद्यमान था। तब वह चेम्बर किस प्रकार ऊपर उठ गया था ?"

"इस पर हमने विचार तो किया था। आप देखिए किसी जल से भरे जग में हवा का बुलबुला क्यों ऊपर उठता है ? उस बुलबुले के बाहर तो गुरुत्वाकर्षण रहता है ?"

आयोग का अध्यक्ष यह सुनकर हँस दिया। बोला, "डॉक्टर ! यह क्या आप बच्चों की-सी बातें करते हैं ? बुलबुले की हवा जल से हल्की होती है, इस कारण बुलबुला उठ जाता है।"

सोम ने पूछा, "उस बुलबुले की दीवार किस वस्तु की बनी होती है ?"

"वह तो जग के जल की ही बनी होती है।"

"और वह जल तो सामान्य जल की ही भाँति भारी होता है।"

"तो ?"

"यही बात चेम्बर की भी थी। चेम्बर तो बुलबुले की दीवार की भाँति भार-युक्त था। परन्तु मैंने अपने एण्टीना के प्रभाव से जो कुछ भी चेम्बर के भीतर था उसको भाररहित बना दिया था। बुलबुले की हवा को तो प्रकृति ने ही हल्का बनाया था। परन्तु चेम्बर में रखा दस किलोग्राम का पत्थर मैंने अपने यन्त्र से भार-रहित कर दिया था। वह बाहर की हवा से भी कम भार का हो गया था। इस कारण वह पत्थर चेम्बर को लेकर जल में बुलबुले की भाँति ऊपर उठ गया था।"

यह स्पष्टीकरण सुनकर आयोग के सभी सदस्य एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

एक सदस्य बोला, "डॉक्टर साहब ! आपकी बात समझ में नहीं आ रही है।"

"यह इस कारण कि आप सामान्य-जन की भाँति वस्तु के किसी गुण के कारण उसका भार मानते हैं। भार वस्तु का गुण नहीं है। वास्तव में यह पृथ्वी का आकर्षण है। उसे ही निश्शेष करने का उपाय मैंने ढूँढ़ा था। किन्तु अपनी असावधानी के कारण आपके विभाग ने उस सारे कार्य पर पानी फेर दिया है।

"मैं समझता हूँ कि वह पानी बहता हुआ मास्को जा पहुँचा होगा। उसके वहाँ पहुँचते ही मुझे व्यर्थ व्यक्ति समझकर मुक्त कर दिया गया है।"

यह लांछन सुनकर तो आयोग के सभी सदस्य गम्भीर मुद्रा में सोम का मुख देखने लगे। सहसा आयोग का अध्यक्ष उठा और सोम से हाथ मिलाता हुआ बोला, "अब हम आज्ञा चाहते हैं। हमें आशा है आप अपनी स्मरण-शक्ति का प्रयोग कर एण्टीना का डायग्राम बनाने का यत्न करेंगे। हम एक-दो दिन में आपसे पुनः भेंट करेंगे।"

सोम ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। उसने हाथ मिलाकर उन सबको विदा किया। उसके जाने के बाद वह वहीं अपनी कुर्सी पर बैठकर विचार करने लगा। वह सोचता था कि अब ये सैनिक अधिकारी क्या करेंगे? वह आशा कर रहा था कि अब तो विश्वविद्यालय में उसकी नियुक्ति के सम्बन्ध में कोई-न-कोई निश्चय हो जाना चाहिए। वह समझता था कि इन सैनिक अधिकारियों ने ही उस नियुक्ति पर बाधा उत्पन्न की हुई थी। उसने अपने मन में कुछ निश्चय किया और उसी समय एक कागज लिया और विश्वविद्यालय के चांसलर को पत्र लिख दिया—

"माननीय महोदय,

निवेदन है कि मेरी पत्नी इस समय भारतवर्ष में ही रह रही है। वह गर्भावस्था में है। कई दिन से उसका कोई समाचार मुझे नहीं मिला है। मैंने कल उसको एक केबलग्राम भी भेजा था किन्तु अभी तक भी वहाँ से कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ है। मुझे उसके विषय में अत्यधिक चिन्ता होने लगी है। अतः मैं आज सायंकाल के हवाई जहाज से भारत के लिए प्रस्थान कर रहा हूँ। यदि आपको यहाँ पर मेरी आवश्यकता हुई तो कृपया मेरे भारत के पते पर सूचित कर दीजिएगा, सम्भव हुआ तो मैं अवश्य पहुँच जाऊँगा।

भवदीय
सोमदेव"

पत्र लिखकर सोमदेव ने अपने मित्र मेकार्थर को बुलाया और अपने क्वार्टर का सारा सामान उसको सौंपकर भारत जाने की तैयारी करने लगा।

इस प्रकार प्रबन्ध कर वह मेकार्थर की कार में बैठकर एयरोड्राम की ओर जा ही रहा था कि तभी एक पुलिस अधिकारी उसको एक आज्ञा-पत्र दे गया। उस

आज्ञा-पत्र के द्वारा सोम के वहाँ की सीमा पार करने पर रोक लगा दी थी।

सोम ने आज्ञा-पत्र लेकर मेकार्थर को दिया और उससे कहा इसका कुछ प्रबन्ध करो। उसने उसको बता दिया कि यदि किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न हो तो 'फारवर्डिंग बिजनिस सिण्डीकेट' कनॉट सरकस, नयी दिल्ली को इस विषय में सूचित कर दो। वे इसका प्रबन्ध कर लेंगे।

पुलिस की आज्ञा से उसको अपने ही मकान में बन्दी बना दिया गया था। उसके मकान के बाहर पुलिस पहरा देने लगी।

ऐसी स्थिति में पुनः उसका सामान उसके क्वार्टर पर ले जाया गया। उसके बाद मेकार्थर अपने एक वकील मित्र से परामर्श करने के लिए चला गया।

: ४ :

उसी दिन सायंकाल विश्वविद्यालय का चांसलर सोम से मिलने आया तो उसके क्वार्टर के बाहर पुलिस को पहरा देते देख उसने पूछा, "यहाँ किसलिए बैठे हो?"

"डॉक्टर सोमदेव को अपने घर में बन्दी बना दिया गया है।"

चांसलर भीतर गया और वहाँ से उसने स्थानीय पुलिस कमिश्नर को फोन करके पूछा कि सोम को किस अपराध में नजरबन्द किया गया है? पुलिस कमिश्नर ने बताया कि यह तो फैडरल सरकार ही बता सकती है। हमें तो केवल आज्ञा हुई थी, और हमने उसका पालन किया है।

सोम तो अब तक यही समझ रहा था कि उसको चांसलर की आज्ञा से बन्दी बनाया गया है। किन्तु स्वयं उसको पुलिस कमिश्नर से पूछताछ करते देख उसके मन का संशय मिट गया।

सोम को मिलकर चांसलर ने कहा, "मैं मजिस्ट्रेट को कह रहा हूँ कि वह यहाँ से तुरन्त पुलिस हटा ले। अन्यथा यहाँ के विद्यार्थी यदि दंगा करने पर उतारू हो गए तो पुलिस वालों के जान के लाले पड़ जाएँगे।"

"सर! आप इस झमेले में क्यों पड़ते हैं। मैं कल प्रातःकाल यहाँ के न्यायालय में याचिका देने वाला हूँ।"

"आपको जो करना हो वह कीजिए। किन्तु मेरा यह अपमान है। मेरे क्षेत्र में न केवल मेरी आज्ञा के बिना अपितु मेरी जानकारी के बिना हस्तक्षेप कर मेरा अपमान किया गया है।"

इन दोनों की कार्यवाही से पूर्व ही मेकार्थर ने स्थानीय दैनिक समाचार-पत्रों के प्रतिनिधियों को यह समाचार दे दिया। परिणामस्वरूप सोम से मिलने के लिए एक स्थानीय संवाददाता आया। उसने सोम का वक्तव्य लिया और उसने अपने समाचार-पत्र के साथ रेडियो ब्राडकास्टिंग स्टेशन को भी वह वक्तव्य प्रसारण के लिए भेज दिया।

जिस समय सायंकाल मेकार्थर सोम को बताने के लिए आया कि वह क्या कर रहा है और क्या कर आया है, उस समय रेडियो पर वही समाचार प्रसारित हो रहा था। उसका शीर्षक था 'ग्रेवटी एक्सपर्ट डॉक्टर सोमदेव को फैडरल सरकार की आज्ञा से हाउस अरेस्ट किया गया है।''

मैकार्थर ने बताया कि वह उसके वारण्ट अपने वकील को दे आया है और वह कल वाशिंगटन जाकर सुप्रीम कोर्ट में याचिका देने वाला है।

सोम के बन्दी बनाए जाने का समाचार भारत भी पहुँच गया।

विश्वविद्यालय के चांसलर का प्रयत्न तो निष्फल सिद्ध हुआ। किन्तु सायंकाल से पूर्व ही वाशिंगटन की फैडरल कोर्ट ने आज्ञा प्रसारित कर दी कि डॉक्टर सोम को तुरन्त न्यायालय में उपस्थित किया जाए और न्यायालय को बताया जाए कि उनको क्यों न स्वतन्त्र कर दिया जाए?

अगले दिन मध्याह्न के समय पुलिस आकर सोम को वाशिंगटन ले गई। इस प्रकार बन्दी बनाए जाने के तीसरे दिन उसको फैडरल कोर्ट के सम्मुख प्रस्तुत कर दिया गया। इस अभियोग में संयुक्त राज्य संघ का एडवोकेट जनरल भी न्यायालय में उपस्थित था। मुख्य न्यायाधीश ने प्रश्न किया, ''डॉक्टर सोमदेव को किस कारण पकड़ा गया है?''

''इनके पास एक सरकारी रहस्य है और सरकार को भय है कि यह रहस्य ये किसी बाहरी व्यक्ति पर प्रकट करने वाले हैं।''

''आपको यह किस प्रकार विदित हुआ कि यह आपके किसी रहस्य को जानते हैं और उस रहस्य को ये किसी बाहरी व्यक्ति को बताने वाले हैं?''

''यह मैं नहीं बता सकता।''

''बन्द कमरे में भी नहीं?''

''जी नहीं। क्योंकि स्वयं मुझे ही इस विषय में कोई ज्ञान नहीं है।''

''वेल डॉक्टर! क्या आप इस पर किसी प्रकार का प्रकाश डाल सकते हैं?''

तब सोम ने संक्षेप में सारी बात बताकर अन्त में कहा, ''श्रीमान्! मेरा रहस्य सरकारी अधिकारियों ने, उस समय विश्वविद्यालय से निकाल लिया जिस समय मैं अनुचित रीति से मास्को में रोका हुआ था। मुझे तो यही भय है कि वह शत्रु के हाथ में चला गया है। अपना दोष मुझपर लगाने के लिए यह अभियोग बनाया है।''

चीफ जस्टिस ने एडवोकेट जनरल से पूछा, ''सेना ने कुछ कागजात और सामान विश्वविद्यालय से निकाला था?''

''जी हाँ, निकाला था।''

''उस समय डॉक्टर सोम कहाँ थे?''

''इनका पता नहीं था कि ये उस समय कहाँ हैं। सुना गया है कि ये उस समय

मास्को में बन्दी थे।"

"वह सामान किसके अधिकार में दिया गया और उस सामान की कोई सूची बनाई गई थी ?"

"सूची बनाई गई थी।"

"वह सूची किसके पास थी ?"

"एक सैनिक अधिकारी के पास थी, जिसका नाम बताने की अनुमति नहीं है।"

"तो डॉक्टर सोम को क्यों पकड़ा गया है ?"

"डॉक्टर सोम को वह सब स्मरण होना चाहिए किन्तु इनका कहना है कि इनको सब स्मरण नहीं है।"

"क्या यही कारण है इनको पकड़ने का ?"

"इनको इस कारण पकड़ा गया है कि जिससे ये वह रहस्य किसी अन्य को न बता दें।"

"श्रीमन् ! उन यन्त्रों के साथ उनकी इतनी लम्बी व्याख्या थी कि जिसे पचास से भी अधिक कागजों पर टाइप करके रखा गया था। उसमें अनेक तो गणित के गुर थे। गणित के लम्बे-लम्बे समीकरण भी उसके साथ रखे गए थे। यह सब लिखकर इसी कारण रखा गया था क्योंकि यह सब स्मरण रखना सम्भव नहीं था।"

यह सब सुनकर न्यायाधीश ने अपनी आज्ञा में लिखा, "मैं आज्ञा देता हूँ कि डॉक्टर सोमदेव को तुरन्त मुक्त कर दिया जाए। डॉक्टर सोम इस अनधिकृत बन्दीकरण से हुए अपने अपमान का हरजाना सरकार से माँग सकते हैं।"

सोमदेव सुप्रीम कोर्ट से बाहर निकल ही रहा था कि उसको बाहर से अविनाशचन्द्र भीतर आता दिखाई दिया। वह वाशिंगटन हवाई पत्तन से सीधा कोर्ट में आया था। सोम ने उसको देखा तो अपनी गाड़ी रुकवाई और वहीं खड़े-खड़े उसको सारी घटना संक्षेप में बता दी। सोम ने सन्तोष व्यक्त करते हुए कहा, "रूस की अपेक्षा यहाँ मुक्ति जल्दी मिल गई है।"

"अब किधर जा रहे हो ?"

"अपने वकील के साथ सान फ्रांसिसको।"

"मैं भी चलता हूँ।"

इस प्रकार तीनों हवाई पत्तन पर जा पहुँचे। अपना पूर्ण विवरण सोम ने हवाई जहाज पर बैठने के बाद बताया। उसने भारत से आने से लेकर उस समय तक का पूर्ण विवरण अविनाश को सुना दिया। वह सब सुनकर अविनाश ने पूछा, "भैया ! अब क्या करने का विचार है ?"

सोम बोला, "यह सब-कुछ होने पर भी अमेरिका की अपेक्षा रूस को ही हीन देश मानता हूँ। इतनी जल्दी तो मैं भारत में भी नहीं छूट सकता था। इससे तो मैं

समझने लगा हूँ कि जो कुछ भी अनुसन्धान कर रहा था वह वास्तव में देवों के ही समझने की बात थी, दानवों के नहीं। वह तो इस समय इस भूतल पर निर्माण करने की नहीं है। इस कारण उस ज्ञान के रहस्य को न तो प्रकट करने का समय है और न ही यह पृथिवी उस रहस्योद्‌घाटन के लिए उचित स्थान है।"

"सोम !" अविनाश ने कहा, "इस ज्ञान-विज्ञान के पचड़े को छोड़ो और मेरे साथ भारत लौट चलो। वहाँ वकालत पढ़कर पहले इस पृथिवी पर देवलोक की सृष्टि कर लो तब फिर विज्ञान के साथ मगजपच्ची करना।"

"वकील बनने से संसार देवता बन जाएगा?"

"हाँ, यही तो रूस और अमेरिका में अन्तर है।"

"नहीं, यह अन्तर नहीं है। अन्तर है राजनीति के बदलते आधार। इस बदलती हुई राजनीति से देवताओं के स्थान पर दानवों की सृष्टि हो रही है।"

दोनों हिन्दी में बात कर रहे थे इस कारण समीप बैठा उनका वकील यह बात समझ नहीं रहा था। तदपि वह रूस और अमेरिका के नामों का उल्लेख बार-बार सुनता था। उसने जिज्ञासा प्रकट करते हुए पूछा, "डॉक्टर ! रूस और अमेरिका को गालियाँ दे रहे हो?"

यह सुन दोनों हँस पड़े। सोमदेव बोला, "वकील साहब ! अमेरिका को गालियाँ नहीं दे रहा अपितु प्रशंसा कर रहा हूँ। या यों कहिए कि रूस से उसकी तुलना में कह रहा हूँ कि अमेरिका श्रेष्ठ है। रूस में बन्दी बनाए जाने पर जहाँ छूटने में चार मास लगे वहाँ अमेरिका की फैडरल कोर्ट के कारण तीन दिन में ही छूट गया हूँ।"

"हाँ, हमारा लीगल सिस्टम संसार के समस्त देशों से श्रेष्ठ है।"

अविनाश कहने लगा, "वकील साहब ! हम लीगल सिस्टम की बात नहीं कर रहे। हम राजनीतिक प्रपंच की बात कर रहे थे। डॉक्टर सोमदेव का कहना था कि वर्तमान राजनीति में दोष है जिसके कारण निर्दोष व्यक्ति दण्ड भुगतता है।"

वकील साहब बोले, "परन्तु, न्याय-पद्धति में तो दोष नहीं है, राजनीति में है। न्याय-पद्धति निर्दोष होने के कारण ही तो डॉक्टर साहब को तुरन्त बरी कर दिया गया है।"

सोम बोला, "वकील साहब ! यह तो आप अमेरिका की न्याय प्रणाली की बात कर रहे हैं। किन्तु राजनीति तो दोनों स्थानों पर अपनी बुद्धिविहीनता प्रकट करती दिखाई दे रही है।"

वकील साहब को सन्तोष हो गया कि अमेरिका की न्याय प्रणाली की प्रशंसा ही हो रही है।

विश्वविद्यालय में पहुँचने पर वहाँ विद्यार्थियों को सोम के मुक्त होकर आने का समाचार मिला तो छात्र-छात्राओं का ताँता सोमदेव को देखने के लिए आरम्भ

हो गया। स्थानीय समाचार-पत्रों और रेडियो को इसका श्रेय था। समाचार एजेन्सियों ने मुकदमे का पूर्ण समाचार प्रसारित किया था।

सोम के अनुसन्धाता साथी भी आए। उन्होंने उसके भविष्य के कार्यक्रम के विषय में पूछा तो सोम ने दो टूक उत्तर देते हुए कह दिया कि वह भारत वापस लौट रहा है।

सोम के साथियों को इससे अत्यन्त निराशा हुई। मेकार्थर को उसकी योजना उचित लगी। उसने कहा, "मैं आपके इस विचार से प्रसन्न हूँ। किन्तु मेरा एक निवेदन है। वह यह कि यदि वहाँ अथवा कहीं अन्यत्र भी अपने अनुसन्धान के कार्य को चालू करो तो मुझे अपने साथ अवश्य नियुक्त करना।"

सोम हँसा और फिर अविनाश की ओर संकेत कर कहने लगा, "मेरे ये भाई कह रहे हैं कि मैं इस विज्ञान के कार्य को छोड़कर पहले कुछ ऐसा करूँ कि जिससे यह पृथिवी वैज्ञानिकों के रहने योग्य हो जाए। अन्यथा यह बन्दर को अदरक का अचार देने जैसा हो जाएगा।"

"किन्तु आप क्या समझते हैं?"

"मुझे इस युक्ति में सार तो प्रतीत होता है। वैज्ञानिकों ने जिस विषय पर भी खोज की है राजनीतिज्ञों ने उसके प्रयोग का हल ढूँढ़ लिया है। ऐसी अवस्था में वैज्ञानिकों का प्रयास जन-जन के हित में होने की अपेक्षा कुछ अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों के ही उपयोग में आने लगा है। साथ ही यदि कोई वैज्ञानिक अपने कार्य के फल को 'सर्व हिताय' की घोषणा करता है तो राज्य उसको बन्दी बना लेता है।"

"तो आप क्या करने का विचार कर रहे हैं?"

"यह भारत जाकर अपनी पत्नी तथा अन्य परिजनों से परामर्श करने के बाद ही निश्चय करूँगा। आपको स्मरण है 'लिसा' ने मुझसे विवाह करना कब और क्यों स्वीकार किया था?"

"स्मरण नहीं। क्यों किया था?"

"यहाँ विश्वविद्यालय की विज्ञान-सभा में मेरा व्याख्यान सुनते हुए मुझसे विवाह का निश्चय कर लिया था। मैं उसे नाराज करना नहीं चाहता और न ही उसको तलाक देने के लिए विवश करना चाहता हूँ।"

अविनाश समीप बैठा यह वार्तालाप सुन रहा था। उसने कहा, "हाँ, यह ठीक है। मुझे विश्वास है कि भाभी तुमको परमात्मा के इस विधि-विधान के विरुद्ध कुछ भी करने की अनुमति नहीं देगी।"

"तब तो मैं भी सब-कुछ छोड़-छाड़कर उसकी भाँति वीणा बजाया करूँगा।"

यह सुन अविनाश को हँसी आ गई। मेकार्थर इसका अर्थ न समझ परेशान-सा दिखाई दिया। अविनाश ने उसको समझाते हुए कहा, "डॉक्टर साहब की पत्नी ने

विज्ञान का पल्ला छोड़ दिया है और अब वह वीणा-वादन सीख रही हैं।"

"वीणा-वादन क्या होता है?"

"वीणा एक भारतीय वाद्ययन्त्र का नाम है।"

"तो डॉक्टर साहब, आप भी वही बजाने की बात कर रहे हैं?"

"हाँ, जब उसकी राय से कार्य करूँगा तो यह भी करना पड़ सकता है।"

दूसरे दिन सोमदेव ने बैंक से अपनी सारी जमापूँजी का ड्राफ्ट बनवाया और उसको लेकर अविनाश के साथ दिल्ली आ पहुँचा।

सोम के सब सम्बन्धी उसके स्वागत के लिए हवाई पत्तन पर उपस्थित थे। भारत में उसके विषय में समाचार प्रकाशित हुए थे। तब से ही उनके मन में उत्सुकता थी। यह अनुमान लगाया जा रहा था कि जो कुछ समाचार-पत्रों में प्रकाशित हो रहा है उससे कहीं अधिक वहाँ हो रहा होगा। सब उसको जानने के लिए उत्सुक थे।

सोम ने हवाई जहाज से उतरकर परिजनों के मिलने पर माता-पिता के चरण स्पर्श किए। इस बार गार्गी ने कह दिया, "सोम! अब मुझसे बार-बार इस हवाई पत्तन के चक्कर नहीं लगाए जाते और न ही यह सब मुझे पसन्द है। यदि तुम्हें माँ का थोड़ा भी मोह है तो यह चक्करबाजी छोड़कर कुछ अपने जीवन को सफल करने का यत्न करो।"

बाबा विश्वेश्वरानन्द भी उपस्थित था। उसने जब सुना तो बोला, "हाँ सोम! तुम्हारी माँ ठीक कहती है। परमात्मा ने मानव जीवन अपना कल्याण करने के लिए दिया है। लोककल्याण के मूल में भी अपने ही कल्याण की भावना है। हाँ, इतना अवश्य ध्यान रखने की बात है कि आत्मकल्याण करते-करते हम किसी का अहित न कर बैठें। परन्तु किसी का अहित न करना और स्वयं को भी नरक-कुण्ड में धकेलकर दूसरे का हित करना तो कहीं भी नहीं कहा गया है।"

लोग मोटर गाड़ियों में बैठकर घर की ओर जा रहे थे। बाबा, सोम और सावित्री परमानन्द के साथ उसकी गाड़ी में थे। बाबा ने अपनी बात जारी रखी। कहा, "आज संसार के लगभग सभी देशों में दानवों का ही बोलबाला है। भले लोग तो आटे में नमक के समान भी नहीं हैं। इससे लोककल्याण का अर्थ हो रहा है दानवों का उपकार करना। इस कारण मेरा विचार है कि कुछ अपने कल्याण पर दृष्टि रखकर जीवन-यात्रा पर चलना ठीक होगा।"

"बाबा! कुछ ऐसा ही विचार लेकर भारत लौटा हूँ।"

परमानन्द कहने लगा, "सोम! यदि तुम हमारे कार्य में सहायक बन जाओ तो कुछ ही वर्षों में दिल्ली में चोटी के धनवान बन जाओगे।"

यह सुन बाबा को हँसी आ गई। फिर उसने सोम से पूछा, "सोम! जानते हो परमानन्द का सबसे अधिक लाभ वाला कार्य क्या है?"

"नहीं बाबा।"

"इसका लाभकारी कार्य है अविवाहितों को विवाहित बनाने का बीमा करना। किसी भले घर के प्राणी के लिए कोई योग्य साथी ढूँढ़ने का शुल्क ये एक सहस्र रुपया लेते हैं। और जहाँ तक मेरी सूचना है, एक मास में ये लगभग दो-तीन सौ ऐसे विवाह करा ही देते हैं।"

"पर बाबा! इन्होंने ही तो मेरे छुड़ाने का भी बीमा किया था?"

"ऐसे कार्य तो ये अपवाद के रूप में करते हैं।"

रात जब सरस्वती के साथ बैठकर विचार-विमर्श हुआ तो एक प्रकार से निश्चय ही कर लिया गया। सरस्वती ने जब अविनाश की बात सुनी तो उसने कह दिया, "मैं समझती हूँ कि अविनाश भैया ने ठीक ही कहा है कि मैं अब आपको किसी विदेश में जाने की बात नहीं कहूँगी। मैं स्वयं अनुभव करती हूँ कि मैं इस देश से बँध गई हूँ। वह बन्धन मुख्य रूप में तो आपकी माताजी ही हैं। उसके बाद बहिन अम्बा का नाम आता है। मेरा मन अब इन लोगों की संगति में ही रहने को करता है। मेरी यह भी सम्मति है कि अब आप मुझको भी छोड़कर न जाएँ। आपके बिना मैं कुछ अभाव का अनुभव करती हूँ।"

"मेरे साथ रहे तो तुम्हें पाँच मास से भी अधिक हो गए हैं। बताओ तुमने किस बात का अभाव अनुभव किया है?"

"जिसे आप संगति समझ रहे हैं वह तो उन्माद है। वह मेरे लिए एकमात्र जीवन नहीं है। जीवन तो हमारी वह घड़ियाँ रही हैं जब हम परस्पर बैठकर अपने भावी जीवन के विषय में प्यार से विचार-विमर्श करते रहे हैं। जिस संगति की बात आप कर रहे हैं वह जीवन का बहुत ही न्यून भाग है। शरीर और जीवन तो उससे बहुत बड़ा है।"

"ठीक है। मैं अपना सब-कुछ वहाँ के बैंक से निकालकर वहाँ के जीवन से नाता तोड़ आया हूँ। भविष्य के विषय में विचार करते समय हम परस्पर वार्तालाप कर लेंगे।"

यह सुनकर सरस्वती को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने पूछा, "मेरी माँ से भी कुछ बात हुई है?"

सोम को हँसी आ गई। बोला, "हवाई पत्तन पर पहुँचने पर बाहर निकलते ही उन्होंने दूसरी टैक्सी की और अपने क्वार्टर की ओर चल दीं। मैं बीस दिन के लगभग वहाँ रहा हूँ, एक बार भी वह मुझसे मिलने के लिए नहीं आईं। एक दिन सायंकाल की चाय के समय उनसे मिलने के लिए गया था। तब उनका कुशल समाचार जानकर आ गया था। उन्होंने तो चाय के लिए भी नहीं पूछा।

"उस दिन के बाद मैं उनसे मिलने नहीं जा पाया और उन्होंने भी मिलने का कष्ट नहीं किया। हाँ, इतना मुझे ज्ञात है कि उनको पुनः विश्वविद्यालय में नियुक्ति

मिल गई है।"

अपनी माँ के इस समाचार से सरस्वती को विस्मय तो हुआ किन्तु उसने इस विचार को तुरन्त मन से निकालकर दूसरी बात आरम्भ करते हुए कहा, "परन्तु जीवन बेकार भी तो नहीं चल सकेगा, इसलिए कुछ तो करना ही होगा।"

"अविनाश भैया का ही कहना था कि मुझे वकालत पढ़कर मानव समाज की दशा को सुधारने का यत्न करना चाहिए।"

"परन्तु वे स्वयं तो वकालत पढ़े नहीं हैं। जहाँ तक मेरा ज्ञान है वे तो अर्थ-शास्त्री हैं।"

"हाँ, मैं भी जानता हूँ और उसके बल ही वे लाखों कमा रहे हैं।"

"परन्तु आपको वकालत पढ़ने के लिए उन्होंने क्यों कहा ?"

"यह तो उनसे पूछने पर ही पता चल सकता है।"

"तो पता कीजिए।"

अगले दिन बाबा से बात हुई। उस दिन बाबा जब प्रातःकाल के अल्पाहार के लिए आए तो उन्होंने स्वयं ही पूछा, "सोम ! अब तो तुम अमेरिका से नाता तोड़ आए हो। अब तुम्हारा क्या करने का विचार हो रहा है ?"

"बाबा, अभी तो यही विचार किया है कि अब मैं विदेश नहीं जाऊँगा। यहाँ रहते हुए क्या करूँगा, यह अभी विचाराधीन ही है।"

"अपने पिता से भी राय कर लो तो ठीक रहेगा।"

"हाँ बाबा ! उनसे भी करूँगा। सरस्वती का विचार था कि पहले आप से राय कर लेनी चाहिए।"

"मैं इस विषय पर रात-भर विचार करता रहा हूँ। मेरा तो विचार है कि तुम 'होम यूनिवर्सिटी' चालू कर दो।"

"बाबा ! यह कैसे सम्भव होगा ?"

"मोहनलाल एक दिन कह रहा था कि वह अपने पुत्र को मेरे पास पढ़ने के लिए भेजने का विचार कर रहा है। मैं यह भी सुन रहा हूँ कि घर में दो प्राणी और आने वाले हैं। मेरा कहना है कि तुम इन बच्चों को पढ़ाने का कार्य आरम्भ कर दो। और फिर विश्वविद्यालय में तो प्रौढ़ावस्था के लोग भी पढ़ने के लिए जा सकते हैं। इसलिए मेरा विचार है कि शीघ्र ही तुम्हारी बहिन, पत्नी और कदाचित् मोहनलाल भी तुम्हारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हो जाएँगे।"

बाबा की इस विचार-शक्ति की दौड़ का वृत्तान्त सुनकर सोम हँस पड़ा। बाबा ने ही आगे कहा, "तुम ब्राह्मण सन्तान हो और पढ़ना-पढ़ाना ब्राह्मण का स्वाभाविक कर्म है। इस कारण मेरी दृष्टि उधर ही गई है। थोड़े से कार्य आरम्भ करेंगे तो मैं समझता हूँ कि तुम्हारे अन्तिम समय तक यह यथार्थ में विश्वविद्यालय भी बन सकता है।"

"ठीक है बाबा ! आप इस विश्वविद्यालय के कुलपति बनना स्वीकार करें तो मैं इसका प्राध्यापक बनने के लिए तैयार हूँ।"

"तो हाथ निकालो।" बाबा ने कहा।

सोम ने अपना दायाँ हाथ आगे कर दिया। बाबा ने उसे पकड़ते हुए कहा, "देखो, अब तुमने वचन दे दिया है, इसका उल्लंघन नहीं करना।"

मंगलानन्द ने बाबा-पोते को परस्पर हाथ मिलाते देखा तो पूछा, "बाबा-पोता परस्पर क्या संकल्प कर रहे हैं ?"

बाबा बोले, "सोम के भावी जीवन की बात हो रही है। इसने वचन दिया है कि यह यहाँ 'होम यूनिवर्सिटी' चलाएगा।"

"पिताजी, होम का अर्थ घर तो होता ही है। किन्तु विस्तृत रूप से उसका अर्थ देश भी होता है, आपका क्या अभिप्राय है ?"

"मंगल ! सारे कार्य अपने आपसे ही आरम्भ किए जाते हैं। इसलिए मेरा भी इस समय 'होम' से अभिप्राय अपना घर ही है। अतः सोम का विश्वविद्यालय सोम से ही आरम्भ होगा। फिर इसका विस्तार तो भगवान् के अधीन है। यदि भगवान् ने डॉक्टर सोम को उत्साहित किया तो कालान्तर में नालन्दा अथवा तक्षशिला की भाँति का विश्वविद्यालय भी हो सकता है।

"हमारे देश में ऋषियों के आश्रम ऋषि के अपने ही घर से आरम्भ हुआ करते थे। शिष्य-प्रशिष्य तो शहद पर मक्खियों की भाँति स्वतः ही आ जाया करते थे। मुख्य बात तो शहद की होती है।"

सोम और उसके बाबा की बातों में जब मंगलानन्द ने भाग लिया तो वहाँ बैठे अन्य व्यक्तियों का ध्यान भी उस ओर चला गया। उन्होंने अपनी बातें बन्द कर दीं और इनकी बातें सुनने लगे।

बाबा की बात पूरी होते ही सरस्वती बोली, "बाबा ! इनके विद्यालय में एक छात्रा तो पहले से ही पढ़ती है। सुना है ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी पहले तो उनकी शिष्या ही थी, पत्नी बाद में बनी थी किन्तु मैं पहले इनकी पत्नी बनी हूँ और शिष्या बाद में।"

गार्गी ने पूछा, "यदि बाबाजी इस विश्वविद्यालय के कुलपति बने तो उनके सभी शिष्य इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थी बन जाएँगे। इस प्रकार आरम्भ से ही इस विश्वविद्यालय में भीड़ एकत्रित हो जाएगी।"

यह सुनकर सब हँस पड़े किन्तु बाबा गम्भीर ही रहे। सहसा उन्होंने कहा, "मैं समझता हूँ कि इस विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए अभी से कार्य आरम्भ कर दिया जाए। आज के इस युग में और दिल्ली जैसे नगर में धन के बिना तो साधारण घास-फूस की झोंपड़ी भी नहीं बन सकती। इसलिए मेरा कहना है कि इस विद्यालय के निर्माण के लिए दान-दक्षिणा का कोष अभी से खोल दिया जाए!

क्यों मंगल ! क्या विचार है ?"

"पिताजी ! विचार तो ठीक है। और मैं समझता हूँ कि यदि घर के पुरखा ही यह शुभ कार्य आरम्भ करें तो उपयुक्त होगा।"

इससे पूर्व सरस्वती कुछ कहने का विचार कर रही थी। किन्तु अब अपने श्वसुर की बात सुनकर वह चुप रही।

अपने पुत्र की बात सुनकर बाबा को प्रसन्नता हुई। बोले, "तुमने यह मेरे ही मन की बात कह दी है। मैंने तो इस विषय पर रात ही विचार कर लिया था। इसकी रूपरेखा बनाकर मैंने अपनी जेब में रखी है।" यह कहते हुए उन्होंने अपनी जेब से एक लिफाफा निकालकर सोम के सम्मुख रख दिया।

सोम ने कहा, "बाबा ! कुलपति तो आप हैं। आप ही यदि इसकी घोषणा करें तो उपयुक्त होगा।"

"नहीं, आचार्य महोदय ! यह क्लर्क का कार्य अभी आप ही करें तो उचित है।"

तब सरस्वती ने लिफाफा उठाते हुए कह दिया, "क्लर्क तो अभी मैं ही बन जाती हूँ।"

इतना कहकर सरस्वती ने बाबा का दिया हुआ लिफाफा खोला और उसमें से कागज निकालकर पढ़ने लगी। उस पर लिखा था—"सैण्ट्रल बैंक और टाटा शेयर में मेरा जो कुछ भी जमा है तथा उसका अब तक जो भी व्याज बनता है वह सब मैं सोमदेव के विद्यालय को दान करता हूँ—विश्वेश्वरानन्द।"

यह सुनकर मंगलानन्द ने प्रसन्नता में ताली बजाई। बोला, "आरम्भ बहुत अच्छा है। मैं अपने भारत स्टील कार्पोरेशन के पाँच लाख के शेयर आज ही इस संस्था के नाम करवा दूंगा।"

इससे उत्साहित होकर गार्गी ने कहा, "मैं अपनी माँ के घर से लाए हुए सारे आभूषण सोम के विश्वविद्यालय को दान करती हूं।"

अब सरस्वती ने कहा, "मैं बैंक में जमा अपनी पूंजी का, जो इस समय लगभग साढ़े चार लाख रुपया है, दो-तिहाई इस संस्था को दान करती हूँ।"

बाबा ने पूछा, "परमानन्द तुम ?"

"अपने पिछले वर्ष की पूर्ण आय मैं इस विद्यालय को दान करता हूँ। वह लगभग इक्कीस हजार नौ सौ बीस रुपया है।"

वहाँ बैठे लोगों में केवल सावित्री ही एक ऐसी थी जिसने अभी तक मुख नहीं खोला था। सब उसकी ओर देखने लगे। इसका अभिप्राय समझकर सावित्री ने कहा, "मैं तो अपने प्रसव के उपरान्त ही कुछ देने का विचार करूँगी। मुझे अपनी माताजी से कुछ आभूषण मिले थे। यदि मेरी कन्या उत्पन्न हुई तब तो वे आभूषण मैं उसके लिए सुरक्षित रखूँगी और यदि पुत्र हुआ तो माताजी की ही भाँति मैं भी

उन आभूषणों को इस विद्यालय को दान कर दूंगी।"

गार्गी को हँसी आ गई। उसने कहा, "यदि इस बार लड़का हुआ और दूसरी बार लड़की भी हो गई तो फिर क्या करोगी ?"

"बस, एक ही बच्चा होगा। यह भी सरस्वती बहिन की छूत लग गई है।"

सरस्वती बोली, "बहिनजी ! अभी तो मैं इसी घर में रह रही हूँ। यदि यह छूत फिर लग गई तो ?"

"इस प्रसव से मुक्ति मिल जाए, तब बचने का यत्न करूँगी। मुझे यह पीड़ा सह्य नहीं है।"

बाबा ने बीच में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "सावित्री समझदारी की ही बात कर रही है। मैं समझता हूँ कि हमको इसके प्रसव तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

तब सरस्वती बोली, "मैं समझती हूँ कि यह सब दान की राशि एक-दो दिन में विश्वविद्यालय की कोषाध्यक्ष श्रीमती सरस्वती देवी के पास जमा हो जानी चाहिए।"

मंगलानन्द ने कहा, "तो क्या सूची बन्द हो गई है ?"

"सूची बन्द किस प्रकार हो सकती है। यह तो सदा ही खुली रहेगी।"

सोमदेव बोला, "मैंने तो अभी इसमें कुछ लिखाया ही नहीं है। वह मैं कल तक बता पाऊँगा, क्योंकि अभी मुझे यही ज्ञान नहीं है कि मेरे पास है क्या ?"

इस प्रकार यह बात समाप्त हो गई और अल्पाहार भी कर लिया गया था। सरस्वती ने बाबा का दिया हुआ लिफाफा उठाया और अपने कमरे में चली गई।

रात के भोजन के समय सरस्वती ने घोषणा करते हुए कहा, "प्रातः अल्पाहार के समय बनी सूची के उपरान्त बाद में कुछ अन्य लोगों ने भी दान किया है। बहिन अम्बा का पत्र आया है। उन्हें विश्वविद्यालय की स्थापना का सारा विवरण सावित्री बहिन से प्राप्त हुआ है। यहाँ के दान-दाताओं के विषय में भी उनको तभी ज्ञात हुआ है। उनका कहना है कि वे दोनों पति-पत्नी भी इस शुभ कार्य में अपनी आहुति डालने को उत्सुक हैं। अम्बा बहिन ने अपने वे सब आभूषण इस विश्वविद्यालय को दान कर दिए हैं जो उनको अपने विवाह के समय माताजी की ओर से प्राप्त हुए थे। उनके पति क्या देंगे, यह बाद में उनके कोर्ट से आने पर निश्चय होगा। उसकी सूचना बाद में दे दी जाएगी।"

मंगलानन्द ने कहा, "मैंने विचार किया है कि इस विश्वविद्यालय के लिए मैं अपनी वह भूमि पाँच रुपया वार्षिक किराए पर एक सौ वर्ष की लीज पर दे दूँ जो ओखला से दस किलोमीटर के अन्तर पर है। वह लगभग दस एकड़ है। मैंने वहाँ के पटवारी को बुलाया है और एक-दो दिन में यह पट्टा हो जाएगा।"

बाबा का प्रश्न था, "तो क्या इस विद्यालय को भी रजिस्टर्ड कराना पड़ेगा ?"

"पिताजी ! यह ठीक ही रहेगा। विद्यालय को रजिस्टर्ड करा लिया जाए

और पूंजी का ट्रस्ट बना दिया जाए। धर्मार्थ संस्था इसका संचालन करे और ट्रस्ट इसके लिए धन का प्रबन्ध करे। अविनाश की भी यही सम्मति थी।"

: ५ :

जब अविनाश के पास इसका विवरण गया तो उसने इसको वैधानिक रूप दे दिया। तीन व्यक्तियों की एक शिक्षा समिति बनी। विश्वेश्वरानन्द, मोहनलाल और सरस्वती इस समिति के सदस्य बनाए गए। समिति को अधिकार दिया गया कि यह अपने साथ सात अन्य सदस्यों को सहयोजित कर सकती है। धर्मार्थ न्यास में भी तीन व्यक्ति रखे गए। वे थे मंगलानन्द, मोहनलाल और अविनाशचन्द्र। शिक्षा समिति के साथ कार्य करने के लिए एक प्रबन्ध समिति बनाई गई। उसमें भी अभी तीन ही व्यक्ति रखे गए। परमानन्द, गार्गी और सोमदेव। इस समिति को दो अन्य सदस्यों को सहयोजित करने का अधिकार दे दिया गया।

शिक्षा समिति ने पाठ्यक्रम बनाया। उसने तीन प्रकार की श्रेणियाँ निर्धारित कीं। एक श्रेणी तो पन्द्रह वर्ष से कम आयु के विद्यार्थियों की थी। दूसरी श्रेणी प्रौढ़ व्यक्तियों की बनाई गई। बुद्धि और ज्ञान की परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ही उनको प्रवेश देने का प्रावधान बनाया गया। तीसरी श्रेणी उन विद्यार्थियों की रखी गई जो परीक्षा दिए बिना ही प्रविष्ट होना चाहते हों।"

वैधानिक कार्यवाही पूर्ण होने के उपरान्त भूमि को ठीक कराकर उस पर भवन बनाना आरम्भ करवा दिया गया। विश्वविद्यालय का नाम रखा गया—'वेद ज्ञान-विज्ञान शिक्षा केन्द्र।'

प्रारम्भिक कार्यवाही चल रही थी कि एक दिन दिल्ली विश्वविद्यालय के उप-कुलपति इस केन्द्र के कुलपति से भेंट करने आए। सब लिखा-पढ़ी कुलपति के नाम पर ही हो रही थी। जब दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति को यह समाचार मिला कि सोमदेव की योजना पर एक विश्वविद्यालय की स्थापना हो रही है तो उसने कुलपति विश्वेश्वरानन्द से समय-निर्धारण के लिए पत्र लिखा। समय निर्धारित होने पर वह उनसे भेंट करने के लिए आया। यह भेंटवार्त्ता उनके ड्राइंगरूम में ही हुई। कॉफी पीते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने कहा, "आप लोगों ने इस नवीन संस्था का कार्यभार सँभाल कर स्वयं पर बहुत बड़ा उत्तरदायित्व लाद लिया है।"

"हाँ, आप ठीक कहते हैं। हमारा यत्न होगा कि हम अपना उत्तरदायित्व लगन और निष्ठा से पूर्ण करें।"

"परन्तु इस प्रकार के आयोजन के लिए दो-तीन करोड़ रुपया वार्षिक व्यय की व्यवस्था होना नितान्त आवश्यक है।"

"वह भी हो जाएगा। अभी तक तो किसी प्रकार की कोई कठिनाई उपस्थित हुई नहीं।"

"कितने विद्यार्थी इस समय हैं ?"

"अभी तो तीन श्रेणियों में पाँच विद्यार्थी हैं।"

"श्रेणी विभाजन किस प्रकार किया गया है और उनमें क्या-क्या पढ़ाने का विचार है ?"

बाबा ने उपकुलपति को श्रेणी विभाजन की सारी रूपरेखा समझा दी। इसके साथ ही किस श्रेणी के कौन छात्र हैं, यह भी बताया। उन्होंने बताया कि ओखला ग्राम के निकट विद्यालय का भवन बन रहा है। विश्वविद्यालय का वर्ष वसन्त पंचमी से प्रारम्भ करने का निश्चय था। बाबा ने बताया कि एक वर्ष तक भवन बनकर तैयार हो जाएगा। तब सब अध्यापक और शिष्य वहाँ चले जाएँगे।

"अभी कहाँ होती है पढ़ाई ?"

"अभी तो इसी मकान में हो रही है।"

यह सब सुनकर उपकुलपति महोदय बड़े विचार में खो गए।

उसे इस प्रकार विचारलीन देख बाबा ने पूछा, "क्यों, क्या विचार कर रहे हैं ?"

"मैं समझता हूँ कि यह जनता के धन का अपव्यय हो रहा है।"

"आपको उससे क्या हानि है ?"

"मुझे देश के प्रधानमन्त्री ने भेजा है। वे हमारे विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। और वे जनता के प्रतिनिधि भी हैं।"

यह सुनकर बाबा ने कहा, "तो आप ऐसा करिए कि किसी दान-दाता से कोर्ट में याचिका करवा दीजिए कि यहाँ जनता के धन का अपव्यय हो रहा है।"

"आप मुझे मुख्य-मुख्य दानियों की सूची दे दीजिए। तभी इस प्रकार की कार्य-वाही की जा सकती है।"

"इसके लिए आप इस विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष को पत्र लिख दीजिए, यदि वह उचित समझेगा तो आपको सूची दे देगा।"

"कौन है कोषाध्यक्ष ?"

"डॉक्टर सोमदेव की पत्नी श्रीमती सरस्वती। वह यहीं है, यदि आज्ञा हो तो बुलवा दूँ।"

"बड़ी कृपा होगी यदि आप बुलवा दें अन्यथा व्यर्थ की लिखा-पढ़ी में समय नष्ट होगा।"

बाबा ने सरस्वती को बुलवा लिया। दो मिनट में वह उपस्थित हो गई।

इस समय सरस्वती जब आई तो उसको नौ मास का गर्भ था। उसे देख सरदार जी बोले, "क्षमा कीजिए, मुझे विदित नहीं था कि आप इस अवस्था में हैं, अन्यथा मैं आपको बुलवाने का आग्रह नहीं करता।"

"कोई बात नहीं, कहिए, क्या आज्ञा है ?"

"मैं चाहता था कि इस छलनामय विश्वविद्यालय के दान-दाताओं की सूची मुझे मिल जाए। इसके लिए बाबाजी ने आपका नाम बता दिया।"

"ठीक है, इसके लिए पुनः कष्ट करने की आवश्यकता नहीं। मैं आपको सबके नाम गिनाए देती हूँ।"

इस प्रकार सरस्वती ने उन सब दान-दाताओं के नाम और उनके द्वारा प्रदत्त राशि का विवरण सुना दिया।

यह सुनकर सरदारजी बोले, "तो यह सब पारिवारिक ही है?"

"जी, अभी तक तो यही है। हाँ, आज ही एक पत्र अमेरिका से एक मित्र का आया है। उनका कहना है कि वे स्वयं भारत आ रहे हैं और इस योजना में पचास हजार डालर की आहुति डालना चाहते हैं।"

"क्या नाम है उनका?"

"जे० डब्ल्यू० मेकार्थर।"

"मैं तो यही कहने आया था कि डॉक्टर सोमदेव को यह राय दूँ कि वे अपनी सेवाएँ दिल्ली विश्वविद्यालय को समर्पित कर दें तो उपयुक्त होगा। अन्यथा इस जलमन्थन से कुछ निकलने वाला नहीं है।

"आपसे भी मेरी यह प्रार्थना है कि यदि आप इस धन को दिल्ली विश्वविद्यालय के नाम कर दें तो इसका वहाँ सदुपयोग हो जाएगा।"

"कम-से-कम मैं तो करूँगी नहीं। दूसरों से आप स्वयं पूछ सकते हैं।"

"क्या मैं इनका कारण जान सकता हूँ?"

"मेरी सम्मति में शिक्षा राज्य का विषय नहीं है। राज्य इस पर व्यर्थ का अधिकार जमाए हुए है।"

"तो दिल्ली विश्वविद्यालय, जिसमें इस समय दस सहस्र विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं, उसको किसके हवाले कर देना चाहिए?"

"जो भी प्राइवेट व्यक्ति इसके योग्य हो और यह उत्तरदायित्व स्वीकार करे।"

"इसका दो करोड़ रुपया सालाना का जो बजट है, वह कहाँ से आएगा?"

"जहाँ से अब आता है।"

"हमें तो सरकार देती है।"

"सरकार तो स्वयं विश्वविद्यालय की स्वामी है। उसके पास रुपया कहाँ से आता है? क्या वह जन-जन के परिश्रम की उपज नहीं है? यह भी क्या इसी प्रकार नहीं है जैसा हमारे इस विश्वविद्यालय में हो रहा है?"

"सरकार को देने वाले स्वेच्छा से धन देते हैं।"

"हमने धन एकत्रित करने के लिए सेना का उपयोग तो नहीं किया है?"

उपकुलपति समझ गया कि वह व्यर्थ के विवाद में फँस गया है। तब उसने बात बदलकर पूछा, "आपके विश्वविद्यालय का नाम वेद ज्ञान-विज्ञान विश्वविद्या-

लय है। क्या आप ज्ञान-विज्ञान का कोई ऐसा नया कारखाना लगाने वाले हैं जो पहले कहीं लगा हुआ न हो ?"

"श्रीमान्‌जी ! हमने इस विषय पर बहुत विचार किया है और हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि आप सदृश तथाकथित शिक्षाविद् इस बात को समझ नहीं सकते। हम तो इतना तक मानते हैं कि आपमें वह समझने की न सामर्थ्य है और न वैसी प्रखर एवं विशुद्ध बुद्धि ही है। इसी कारण यह आयोजन किया जा रहा है।"

"आपमें और मुझमें क्या अन्तर है ? आपने यदि केलिफोर्निया से स्नातक की उपाधि ग्रहण की है तो मैंने भी फिलाडेल्फिया से ली है। आपमें और हममें अन्तर क्या है ?"

"स्नातक कोई कहीं का हो। तदपि आपके और हमारे ज्ञान में स्पष्ट और बहुत अधिक अन्तर है। मैं वहाँ से स्नातकत्व करने के उपरान्त पिछले छः वर्ष से एक अन्य विद्यालय में शिक्षा ग्रहण कर रही हूँ। किन्तु आपकी शिक्षा तो फिलाडेल्फिया के बाद समाप्त हो गई है। मैंने बाबा विश्वेश्वरानन्द जी के विद्यालय के एक प्राध्यापक से शिक्षा प्राप्त की है। वह शिक्षा उस शिक्षा से सर्वथा भिन्न है, जिसका आप उल्लेख कर रहे हैं। अब तक के प्रचलित विश्वविद्यालय पूर्ण शिक्षा केन्द्र नहीं हैं, इसीलिए हमारा यह प्रयास है।"

"मेरी समझ में आपकी बात आई नहीं।"

"इसका कारण यह है कि अभी तक आपने वास्तविक ज्ञान की 'वर्णमाला' को देखा तक नहीं है, उसका ज्ञान होना तो दूर की बात है।"

उपकुलपति समझ गया कि वह पत्थर की दीवार से अपना माथा फोड़ रहा है। वह उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "देखिए, आपका यह प्रयास सफल नहीं हो सकता। इस कारण मैं समय पर ही आपको सचेत कर रहा हूँ। आज किसी भी देश की सरकार यह नहीं चाहती कि शिक्षा जैसा विषय किसी अधकचरे-अनभिज्ञ व्यक्ति के हाथ में रहे। इस कारण मैं आपको यह अवसर देने के लिए आया था कि आप लोग समय रहते सँभल जाएँ। अपना परिश्रम और धन व्यर्थ में यों ही नाली में न बहा दें।"

बाबा और सरस्वती भी उसको विदा करने के लिए उठ खड़े हुए। सहसा उपकुलपति को सोमदेव का स्मरण हो आया। उसने पूछा, "डॉक्टर सोमदेव कहाँ हैं ?"

"वे इस निर्माणाधीन विश्वविद्यालय भवन का निरीक्षण करने के लिए गए हुए हैं।"

"उनको मेरा नमस्कार कहिए और कहिएगा कि किसी दिन यदि मुझे दर्शन दे सकें तो स्वयं को धन्य समझूँगा। साथ ही उन्होंने एक बार वचन दिया था कि

वे हमारे विश्वविद्यालय में एक भाषणमाला का आरम्भ करेंगे। इस विषय पर भी मुझे उनसे बात करनी है।"

उसके जाने पर बाबा को हँसी आ गई। कहने लगे, "यह भी कूप-मण्डूक ही रहा।"

"यह तो ठीक है, किन्तु बाबा ! क्या हमारा ज्ञान पूर्ण है ?"

"नहीं बेटा ! हमारा ज्ञान भी तो मनुष्य के लिए है और मनुष्य किसी निर्धारित सीमा तक ही जान सकता है। पूर्ण तो परमात्मा ही है। हम उसके ज्ञान की सीमाओं तक नहीं पहुँच सकते।"

"हमको किसने ऐसा बनाया है। यदि परमात्मा ने बनाया है तो उसने हमें पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने का सामर्थ्य क्यों नहीं दिया ?"

"वह इस कारण कि उसने हमें नहीं बनाया है। जीवात्मा परमात्मा का बनाया हुआ नहीं है। हम उसकी जाति के तो हैं परन्तु वह नहीं हैं। हमारे एक उपनिषद् में लिखा है कि इस संसार में तीन अजन्मा तत्त्व हैं। वे अनादि काल से हैं। उनमें से एक तत्त्व तो अपार ज्ञान और शक्ति का स्वामी है। और दूसरा अल्प ज्ञान और शक्ति वाला है तथा तीसरा तत्त्व उस अल्पज्ञ के लिए भोग-सामग्री प्रस्तुत करता है।"

"पर ऐसा क्यों ? मैं एक ग्रन्थ में पढ़ रही थी कि एक ब्रह्म ही है। यदि ऐसा मान लें तो यह विचार करने का कि हम क्या हैं, झंझट ही मिट जाता।"

"तुम ठीक कहती हो। 'एको ब्रह्मेव नापरः' को यदि मान लिया जाए तो फिर सब झंझट छूट जाया करता है। हमारे देश के मध्यकालीन विद्वानों ने झंझट से छूटने का उपाय ढूँढ़ लिया था। किन्तु वे झंझट से ऐसे छूटे कि दो सहस्र वर्ष का महान् ज्ञान का भण्डार रखने वाली जाति दासता के पंजे में फँस गई। जो नहीं है उसको मान लेने से और जो है उसको झंझट समझ स्वीकार न करने से भला किस प्रकार छुटकारा मिल सकता है ?"

"बाबा ! फिर यह झंझट कैसे छूटेगा ?"

"सत्य ज्ञान की प्राप्ति से ही यह झंझट मिट सकता है।"

"परन्तु बाबा ! प्रश्न तो यही है कि सत्य क्या है।"

"यह जगत् सत्य है। उसे हम नित्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों से अनुभव करते हैं। बस इसके वास्तविक ज्ञान से ही झंझट से छूटा जा सकता है।"

यह सुन सरस्वती चुप रही। वह गम्भीर विचार करने लगी थी। उसके मन की सामयिक समस्या यह थी कि वह बच्चे उत्पन्न करने के झंझट में किसलिए लगी है ?

मध्याह्न भोजन के समय सोमदेव घर आया तो बाबा ने दिल्ली विश्वविद्यालय के उपकुलपति के आगमन की बात बता दी।

सारा विवरण सुनकर सोमदेव बोला, "यह तो बाबा ! ठीक उसी प्रकार हुआ जिस प्रकार किसी टटपूँजिए दुकानदार को सदा यही भय सताता रहता है कि उसके बराबर में कोई बढ़िया माल की दुकान न खुल जाय। वर्तमानयुगीन शिक्षाविदों की भी यही स्थिति है। अपने कार्य के लिए हमने इनसे एक पैसा भी तो नहीं माँगा है। न ही हमने इनसे यह माँग की है कि हमारे विश्वविद्यालय के स्नातकों को वे सरकारी सेवा में स्वीकार करें। तदपि इनको चिन्ता सताने लगी है। एक बात तो स्पष्ट है कि हमारे इस शिक्षा केन्द्र से पढ़ने के लिए आने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत कम होगी। तो भी ये लोग चिन्तित हैं।"

भोजनोपरान्त सोम ने विश्वविद्यालय के उपकुलपति को फोन किया। मिलने पर उपकुलपति बोला, "मैं तो आपसे मिलने के लिए आपके घर उपस्थित हुआ था। परन्तु आपके दर्शन हुए नहीं। यदि आप आज सायंकाल मेरे साथ चाय-पान करें तो उस समय विस्तार से बात हो जाएगी।"

"मैं उपस्थित हो जाऊँगा।"

सोमदेव के बात करने के ढंग से उपकुलपति को सन्तोष ही हुआ था। वह समझता था कि सोम सर्विस के आनन्द का उपभोग कर चुका है, इसलिए वह बाबा की अपेक्षा सर्विस के गुणों को अधिक जानता है। अतः वह उसकी बात को सरलता से समझ जाएगा।

परन्तु जब सोम से उसकी भेंट हुई और उस समय जो बातें हुईं वह तो उसके पल्ले बिल्कुल भी नहीं पड़ीं। उपकुलपति ने विश्वविद्यालय की नौकरी का उल्लेख किया तो उसकी बात सुनकर सोमदेव हँस पड़ा था। उसने पूछा, "आपको आपात्-स्थिति में कितना व्यय करने की अनुमति है?"

"वास्तव में तो कुछ भी नहीं। यदि किसी समय बिना पूछे कुछ व्यय कर भी दूँ तो बाद में उसकी स्वीकृति लेनी ही पड़ती है। उस व्यय पर आपत्ति भी हो सकती है। कभी-कभी तो ऐसा भी हुआ कि मेरे व्यय किए पर आपत्ति हुई है और अन्त में वह व्यय मुझे ही भरना पड़ा है।"

"और इसी संकट में आप मुझको भी डालना चाहते हैं?"

"तो क्या आप बेलगाम घोड़े की भाँति विचरना चाहते हैं?"

"जी नहीं। लगाम तो मेरे मुख में भी है। परन्तु वह अल्पज्ञ मनुष्यों की भाँति नहीं है। वह सर्वज्ञ परमात्मा की है। वे ही मेरे मुख पर लगाम लगाए हुए हैं।"

"डॉक्टर सोम ! यह सब कल्पना-क्षेत्र की बातें हैं। संसार का कार्य इस प्रकार नहीं चल सकता।"

"ठीक है, जिस प्रकार काम चलता है आप चलाइए। इस संसार में आपका काम चलाने के लिए गधे-घोड़ों की कमी नहीं है। उन्हें आपकी लगाम पहनने में कोई आपत्ति नहीं होगी।"

चाय समाप्त हो चुकी थी। सोम ने जब उपकुलपति का प्रस्ताव स्वीकार नहीं किया तो उसने कह दिया, "यदि आप हमारी विज्ञान सोसायटी में अपने विषय पर दो-चार व्याख्यान दे दें तो बड़ा उपकार होगा।"

"इसे मैंने कब अस्वीकार किया है ? आपने ही इसके लिए समय का निश्चय नहीं किया।"

"ठीक है। अब समय निश्चय कर लेते हैं। शनिवार प्रथम अक्टूबर से प्रति सप्ताह यह व्याख्यान हो। व्याख्यान विश्वविद्यालय के मुख्य सभागार में होगा।"

सोम बोला, "इसी प्रकार मैंने मास्को विश्वविद्यालय में सात व्याख्यान दिए थे। मुझे उस समय अतीव प्रसन्नता हुई थी। अब मुझे सूचना मिली है 'ग्रेविटी' पर अनुसन्धान करने के लिए वहाँ अब पृथक् विभाग की स्थापना हो गई है।"

"तो क्या आपको आशा है कि यहाँ भी कुछ इसी प्रकार होगा ?"

"वह इच्छा तो आपने मेरा व्याख्यान सुनने से पूर्व ही प्रकट कर दी है। मैंने उसे इस कारण स्वीकार नहीं किया, क्योंकि मैं स्वयं दिल्ली में उससे सम्बन्धित विषयों पर अपना विद्यालय चालू करने की योजना बना रहा हूँ।"

"आपके विश्वविद्यालय में तो विद्यार्थी ही पाँच हैं। उनमें से एक तो अभी बालक ही है और एक दूसरा औरतों का दलाल है। वह एक हजार रुपये में पत्नी दिलवा देता है।"

अपने विद्यालय के विद्यार्थियों की मीमांसा सुनकर सोमदेव को हँसी आ गई।

सोमदेव ने कहा, "यह तो आपने विद्यालय की पढ़ाई से पहले का चित्र खींचा है। पढ़ाई के उपरान्त का चित्र मैं आपको बताऊँगा किन्तु तब तक आप इस स्थान पर नहीं होंगे। आप लोगों के लिए तो आचार्य और कुलपति का स्थान भी वेतन भोगी और अस्थायी है। यह आपकी नौकरी है। आपके लिए यह 'मिशन' नहीं है।

"मेरा इस प्रकार के कार्य का चित्र बिल्कुल भिन्न है। मैं इसे जीवन और उसे भी पार करता हुआ कार्य मानता हूँ।"

"वह किसने देखा है ?"

"जिसने देखा है वही यह कह रहा है।"

इस प्रकार अध्यात्म से बात आरम्भ होकर अध्यात्म पर ही समाप्त हो गई।

रात के भोजन के समय जब सोम ने उपकुलपति के साथ हुए वार्तालाप का सारांश सुनाया तो सब हँसने लगे। बाबा का कहना था, "यह वर्तमान काल की विडम्बना है कि ज्ञान-विज्ञान को भी इन व्यवसायियों ने अपने अधिकार में कर लिया है।"

मंगलानन्द बोला, "मैं जब पढ़ा करता था तो तब भी विचार किया करता था कि ये वेतनभोगी कर्मचारी, यूनियनों के सदस्य, विद्या जैसी बात को हरजाई की

भाँति नगर के कटरे में बैठाए हुए हैं। कठिनाई तो यह है कि सभी विद्यालय इन भाड़े के टट्टुओं की बपौती बने हुए हैं।"

बाबा का कहना था—

"कोई चले न चले बावरे,
तुमको तो चलना होगा।
कोई सुने न सुने कहे को,
तुमको तो कहना होगा।

"और यह चलना और कहना इसलिए कि इस यज्ञ से तुम्हारा कल्याण होने वाला है। ज्ञान यज्ञ को इस जीवन के सब यज्ञों से श्रेष्ठ यज्ञ माना गया है।"

: ६ :

अक्टूबर की पहली तारीख से पूर्व ही सोम के घर लड़का उत्पन्न हुआ। बालक की आँखें तो माँ की आँखों की भाँति नीली थीं और मस्तिष्क पिता के मस्तिष्क की भाँति उन्नत और विशाल था। इस नये शिशु के जन्म से घर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई।

सोम के पुत्र को जन्मे अभी तेरह दिन भी नहीं हुए थे कि मंगलानन्द की कोठी पर दो अतिथि आ विराजे। उनमें से एक तो रूस से आया था और एक अमेरिका से। रूस से आने वाला तो मास्को विश्वविद्यालय में फिजिक्स का प्राध्यापक सिमि नाकोव था, अमेरिका से आने वाला व्यक्ति था जे० डब्ल्यू० मेकार्थर।

यद्यपि दोनों का आने का उद्देश्य एक समान होने पर भी लक्ष्य विभिन्न थे। दोनों एक-दूसरे से अपरिचित, एक ही हवाई जहाज में दिल्ली के लिए चले थे। कस्टम अधिकारियों से मुक्ति मिलने पर जब दोनों टैक्सी स्टैण्ड पर आए और टैक्सी वाले को एक ही स्थान का नाम बताते सुन आश्चर्यचकित थे। वे परस्पर एक-दूसरे का मुख देखने लगे।

प्रोफेसर नाकोव भी अंग्रेजी में बात कर रहा था। इसलिए मेकार्थर ने उससे पूछा, "उस स्थान पर आप किससे मिलने जा रहे हैं?"

"ठीक यही बात मैं आपसे पूछने वाला था। आप वहाँ किससे मिलने जा रहे हैं?"

नाकोव ने अपना परिचय देने से बचने के लिए यह प्रश्न कर दिया था। सरल-चित्त मेकार्थर ने अपनी बात बताई, "अभी तो मैं इटली से आया हूँ। रहने वाला मैं अमेरिका का हूँ और यहाँ अपने मित्र डॉक्टर सोमदेव से मिलने के लिए आया हूँ।"

"ओह! आश्चर्य! तब हम यदि एक ही टैक्सी कर लें तो उपयुक्त होगा। टैक्सी में ही हमारा परस्पर परिचय भी हो जाएगा।"

अब नाकोव समझ गया था कि वह मेकार्थर से स्वयं को छिपाकर नहीं रख सकता, इसलिए उसने यह प्रस्ताव रखा।

इस प्रकार जब दोनों एक ही टैक्सी में सवार मंगलानन्द के घर पहुँचे तो तब तक दोनों परस्पर मित्र बन चुके थे। केवल दोनों ने अपने आने का उद्देश्य एक-दूसरे को नहीं बताया था।

मेकार्थर भी उस रूसी प्राध्यापक के विषय में अधिक पूछताछ नहीं करना चाहता था। सोम ने जब दोनों को एक ही टैक्सी से उतरते देखा तो उसको हँसी आ गई।

सोमदेव ने दोनों से हाथ मिलाया और फिर पूछने लगा, "यह उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों का मिलन किस प्रकार सम्भव हो पाया है ?"

मेकार्थर बोला, "हवाई पत्तन पर एक ही स्थान के लिए टैक्सी की खोज होने पर।"

"ओह ! तो अभी केवल परिचय है, मैत्री नहीं।"

दोनों को सोमदेव भीतर ले गया। उनको जलपान कराया गया।

सोमदेव विचार कर रहा था कि मास्को का प्राध्यापक किस कारण आया होगा। इससे भी अधिक आश्चर्य उसको इस बात पर था कि वह अपने दूतावास में न ठहरकर उसके पास ठहरने के लिए किस प्रकार आ गया है।

उसने उन दोनों को कोठी के अतिथि निवास में ठहराया। फिर उसने उनके विषय में अपने बाबा से बात की। मेकार्थर को तो घर के सब प्राणी जानते थे। उस रूसी प्रोफेसर के विषय में सोम ने अपने रूस से मुक्त होकर आने पर बताया था। किन्तु वह था उनके लिए समस्या का ही विषय।

सारी बात सुनकर बाबा ने कहा, "घर में आए अतिथि का अनादर तो करना ही नहीं चाहिए। जब तक वह किसी प्रकार का कोई विरोधी कार्य न करे तब तक उसकी निष्ठा पर भी सन्देह नहीं करना चाहिए।

"रही बात तुम्हारे रहस्य को जानकर तुम्हारे उद्देश्य के विपरीत प्रयोग करने की बात तो इस विषय में तुम कर ही क्या सकते हो ? तुम्हारे रहस्य को जानकर जनता को बताने पर भी तो वही कुछ किया जा सकता है जो वह अब करना चाहता है। इसलिए मेरी तो यही सम्मति है कि तुम अपने मार्ग पर चलते रहो। अपने ज्ञान-विज्ञान को तुम लोकसेवा के योग्य बनाते रहो। यदि कोई अन्य इसका दुरुपयोग करता है तो यह उसके और जनता के बीच का झगड़ा है। जनता अपने हिताहित को स्वयं देख लेगी। तुम्हारा काम है लोककल्याण के लिए सुख-सुविधा प्रस्तुत करना। यह जनता का कार्य है कि जो उनके अधिकारों का उल्लंघन अथवा हनन करना चाहता है वह उससे निपट ले।"

सोम के मन में बात स्पष्ट हो गई।

मध्याह्नोत्तर की चाय से पूर्व ही प्रोफेसर नाकोव को सोम से पृथक् में मिलने का अवसर प्राप्त हो गया। सोम ने उससे पूछा, "आप भारत में सरकारी कार्य से आए हैं अथवा किसी निजी कार्य से?"

"दोनों ही। आपके अनुसन्धान के विषय में विस्तार से जानने की मेरी लालसा थी। मास्को में वह इच्छा प्रकट नहीं कर सका। क्योंकि मैं समझता था कि उस समय जो कुछ भी मैं आपसे पूछता, वह सरकार की ओर से पूछा गया ही समझा जाता। इस कारण मैंने अपने व्यक्तिगत भावों को आप पर कभी प्रकट करने का यत्न ही नहीं किया। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए मैंने एक योजना बनाई और योरोप, अमेरिका और भारत भ्रमण के उद्देश्य से अवकाश के लिए आवेदन किया। अवकाश तो मिल गया किन्तु साथ ही सरकारी काम भी दे दिया गया है। वह कार्य है आपके एण्टीना की बनावट और उसके गणित का ज्ञान प्राप्त करना। मैं अपने अधिकारी को इन्कार नहीं कर सका।

"यह तो आप पर निर्भर करता है कि आप क्या बताएंगे और क्या नहीं बताएँगे।"

नाकोव के मुख से स्पष्ट बात सुनकर सोम को प्रसन्नता हुई। किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं था कि इस प्रसन्नता में वह अपने उद्देश्य से ही विचलित हो जाय। उसने कहा, "यदि वे सब कागजात और बने हुए एण्टीना में से एक-दो भी मिल जाते तो उनके आधार पर बहुत-कुछ बताया जा सकता था। किन्तु वे तो अमेरिका सरकार के सैनिक विभाग से चुरा लिये गए हैं। मैं उस सब कार्य के आधार को पुनः स्मरण करने का यत्न कर रहा हूँ। उसके लिए ही मैं यहाँ पर अपनी निजी प्रयोग-शाला के निर्माण में लगा हुआ हूँ। यदि आप चाहें तो मेरे उस कार्य में सहायक बन सकते हैं। इससे दो बातें होंगी, एक तो आपको वह सब ज्ञान प्राप्त हो जाएगा और दूसरे मेरी सहायता भी हो जाएगी।"

"कितने समय के लिए मुझे यहाँ रहना पड़ेगा?"

"पूर्ण अनुसन्धान-कार्य आरम्भ से ही किया जा रहा है। इसमें तो सन्देह नहीं कि इस बार उतना समय नहीं लगेगा जितना कि प्रथम बार में लगा था। तदपि समय तो लगेगा ही। मैं मौखिक रूप से कुछ भी नहीं बता सकता। यह तो व्यावहारिक ज्ञान का विषय है।"

सोम की बात सुनकर नाकोव गम्भीर विचार में लीन हो गया। सोम उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। बहुत सोच-विचार के उपरान्त नाकोव ने कहा, "देखिए, मैं आपकी प्रयोगशाला में कार्य करना चाहूँगा। इसके लिए मुझे मास्को से अवकाश लेना होगा। या फिर मुझे सोवियत रूस की नागरिकता का ही परित्याग करना पड़ेगा। तब किसी अन्य देश की नागरिकता ग्रहण करनी होगी और फिर उस देश की अनुमति से ही मैं यहाँ आपके साथ प्रयोग कर पाऊँगा।"

"अर्थात् आप रूसी नागरिक रहते हुए किसी अन्य देश में शिक्षा भी ग्रहण नहीं कर सकते ?"

"नहीं, रूस की नागरिकता का अभिप्राय है अपना व्यक्तित्व शून्य समान रखना। और रूस में रहते हुए गोली मारकर भी सब-कुछ शून्य समान किया जा सकता है।"

"तो फिर यह किस प्रकार सम्भव होगा ? मेरा अनुमान है कि अपनी प्रयोग-शाला तो आगामी जनवरी से पूर्व तैयार भी नहीं हो पाएगी। उसके बाद ही वहाँ कार्य आरम्भ हो पाएगा। आपके साथ यह अमेरिका का जो प्रोफेसर आया है, यह भी वहाँ चलकर मेरी सहायता करेगा। यह तो केवल अपनी सरकार से पासपोर्ट और भारत सरकार से वीसा लेकर यहाँ आ गया है। यह भी उसी उद्देश्य से आया है जिस उद्देश्य से आप आए हैं। आते हुए उसने अपनी सरकार को अपने यहाँ आने का कारण भी नहीं बताया है। वीसा प्राप्त करते समय भी केवल इसको इतना ही बताना पड़ा है कि यह भारत में रहकर मेरे विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करना चाहता है। इस कार्य में अनेक वर्ष लगने की सम्भावना है।"

यह सब-कुछ प्रोफेसर नाकोव को विचित्र-सा लग रहा था। उसने अपने विषय में बताते हुए कहा, "मैं आया तो आपके इस यन्त्र के विषय में जानकारी प्राप्त करने ही के लिए हूँ। वस्तुस्थिति यह है कि अमेरिकी सैनिक विभाग से वे एण्टीना और वे सब कागजात हमारी सरकार ने ही चुराए थे। परन्तु जब हम आपके गणित के गुरों और समीकरणों को नहीं समझ पाए तथा आपके बनाए गए डायग्राम भी नहीं समझ पाए तो हमने उन एण्टीना को खोल-खोलकर देखना आरम्भ कर दिया। उससे भी जब कुछ समझ में नहीं आया तो पुनः आपको स्मगल कर वहाँ ले जाने का विचार बना। तब मैंने वहाँ के अधिकारियों के मन पर यह अंकित करने का यथाशक्ति प्रयत्न किया था कि यदि आप पर बल-प्रयोग किया तो आप कुछ भी नहीं बताएँगे। मैंने उनको बताया कि आप मृत्यु से बिलकुल नहीं डरते इसलिए आपको विवश करके कुछ भी हल नहीं निकाला जा सकता।

"अधिकारियों के मस्तिष्क में जब यह बात समा गई तभी उन्होंने मुझे यहाँ आने की स्वीकृति दी है।"

सोमदेव ने कहा, "आपने मेरी मनोवृत्ति का ठीक ही अनुमान लगाया है। मेरा तो आपको यही कहना है कि आप हमारे विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लीजिए। मेरे साथ काम कीजिए। आपसे कोई भी रहस्य की बात नहीं रखी जाएगी। जो कुछ भी आप सीख और समझ जाएँगे, उसके आप स्वामी होंगे। उसका आप जिस प्रकार जो प्रयोग करना चाहें उसके लिए आप स्वतन्त्र होंगे।"

नाकोव को सोम की यह उदारता मूर्खता के समान ही लगी। तदपि बिना अपनी सरकार से पूछे वह इस उदारता का उपयोग नहीं कर सकता था। उसने

कहा, "आपके विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने के विषय में मैं अपने राज्याधिकारियों की अनुमति प्राप्त होने पर ही उसमें प्रविष्ट हो सकता हूँ।"

"ठीक है, आप अनुमति प्राप्त करने का यत्न कीजिए।"

इस प्रकार यह बात समाप्त हो गई।

चाय के उपरान्त सोम की भेंट मेकार्थर से हुई। सोम ने मेकार्थर को नाकोव के साथ हुए वार्तालाप का विवरण सुनाकर कहा, "इस विषय में तुम्हारी क्या धारणा है?"

"तो आप उसे अपनी सरकार का जासूस जानकर भी अपने विश्वविद्यालय में प्रविष्ट होने देंगे?"

"हमारे कुलपति महोदय की यही सम्मति है। उनका कहना है कि यह सारा ज्ञान हमारे पास परमात्मा की धरोहर है। हम तो केवल उसके कस्टोडियन मात्र हैं। जब परमात्मा ने अपने जगत् को किसी से छिपाकर नहीं रखा तो हम कौन होते हैं जो उसके ज्ञान को रहस्य बनाकर अपने पास रखें?"

"परन्तु जिसके विषय में हम निश्चितरूपेण जानते हैं कि वे इसका दुरुपयोग करेंगे तो क्या उनको अपने से दूर ही नहीं रखना चाहिए?"

"और हम किसके विषय में यह निश्चय से जानते हैं कि वे किसी रहस्य का दुरुपयोग नहीं करेंगे? क्या अमेरिका के सैनिक विभाग के सभी अधिकारी विश्वास के योग्य सिद्ध हुए हैं?"

मेकार्थर को वहाँ की घटना का ज्ञान था। वह मुस्करा दिया। उसने कहा, "क्या हम अपना भी विश्वास नहीं कर सकते?"

"तब तो मैं आपको भी अपना साथी बनाने में कोई कारण नहीं देखूँगा।"

यह सुनकर मेकार्थर गम्भीर हो गया। उसने पूछा, "सुरक्षा शब्द के आप क्या अर्थ लगाते हैं?"

"मैं इस शब्द के अर्थ को भी समझता हूँ तदपि इसके प्रयोग की भी आवश्यकता को समझता हूँ। केवल मेरा सुरक्षा के ढंग पर नाकोव से मतभेद है।"

"तो आपका सुरक्षा का क्या उपाय है?"

"कुछ दिन हमारे साथ रहो, स्वयं ही समझ जाओगे।"

सोम के विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए सिमि नाकोव को अपनी सरकार से अनुमति लेने के साथ-साथ भारत सरकार से भी लम्बी अवधि के लिए भारत में रहने का अनुमति-पत्र लेना पड़ा। नाकोव को स्वीकृति मिलने से पूर्व ही दिल्ली विश्वविद्यालय में सोम के व्याख्यान आरम्भ हो गए थे। अक्टूबर, नवम्बर और दिसम्बर के तीन प्रथम शनिवारों को उसके तीन व्याख्यान हुए। यह व्याख्यान सात बजे आरम्भ होता था और रात्रि के नौ बजे तक चलता था। इन दो घण्टों की अवधि में एक घण्टा तो सोम का व्याख्यान होता था और एक घण्टा वह प्रश्नोत्तर

के लिए देता था।

अपने व्याख्यानों में सोम ने समझाया कि वस्तु का भार वस्तु में नहीं होता। यह भार वस्तु के चारों ओर विद्यमान तनाव के कारण होता है। उदाहरणार्थ चुम्बक लोहे के टुकड़े को अपनी ओर खींचता है, यह आकर्षण इस कारण है कि चुम्बक के मौलिक्यूल्ज में किसी प्रकार की शक्ति होने के कारण चुम्बक के चारों ओर के माध्यम में एक विशेष प्रकार का तनाव उत्पन्न हो जाता है।

इस तनाव को दूर करने के लिए वैज्ञानिक मेगनेट के प्रभाव को निश्शेष करने का यत्न करते हैं। मैंने यह यत्न किया है कि उस तनाव को दूर करने का उपाय चुम्बक की शक्ति में हस्तक्षेप किए बिना किया है।

यह किस प्रकार किया गया है यह अगले व्याख्यान में बताया जाएगा।

जब यह व्याख्यान समाप्त हुआ तो उस पर बहुत ही रोचक वाद-विवाद आरम्भ हो गया।

एक ने पूछा, "माध्यम से आपका अभिप्राय क्या वायु से है?"

"नहीं, यह इस कारण कि यदि चुम्बक के चारों ओर से हवा निकाल दी जाए तब भी मेगनेटिक रेज देखी जा सकती हैं। हम भारतीय विज्ञान वाले एक माध्यम मानते हैं, जिसे आकाश कहते हैं।"

"यह जो नीला-नीला-सा ऊपर दिखाई देता है?"

"नहीं, न तो यह नीला और न यह आकाश ही है। वह इनके अतिरिक्त है।"

"ऐसा कुछ दिखाई तो देता नहीं।"

"आप तो एटम भी नहीं देख सकते।"

"परन्तु अन्य साधनों से उसकी सिद्धि तो है।"

"इसी प्रकार आकाश की भी सिद्धि है।"

"कैसे?"

"वायु से रिक्त स्थान पर भी चुम्बक की रेखाएँ देखे जाने से।"

"आपने कहा है कि परमात्मा की शक्ति अग्नि परमाणु पर सवार हो जाती है? न परमात्मा है न उसकी अग्नि?"

"तो फिर सूर्य में यह अग्नि कहाँ से आई?"

"वह उसके भीतर से निकल रही है। उसमें स्थित मैटर के विघटित होने से।"

"मैटर में स्वयमेव किसी प्रकार भी गति उत्पन्न नहीं हो सकती।"

"कौन कहता है?"

"न्यूटन कहता है। हमारे विज्ञान के ग्रन्थ में भी इसका उल्लेख है। वहाँ कहा गया है कि प्रकृति स्वयमेव कुछ नहीं कर सकती।"

"शास्त्र ने किस प्रकार देखा?"

"योगाभ्यास से।"

यह सुन सब हंस पड़े ।

सोम ने कहा, "जहाँ से न्यूटन ने देखा वहीं से शास्त्रकार ने देखा होगा।"

"तो क्या उसने भी पेड़ पर से सेब को गिरते देखा होगा ?"

"अवश्य देखा होगा। परन्तु श्रीमान्, मैं तो यह सब नित्य ही अपने अध्ययन-कक्ष में बैठे-बैठे ही देखता रहता हूँ।"

"कैसे ?"

"रात को लिखना बन्द करने पर जहाँ अपना पेन रख जाता हूँ वह प्रातःकाल मुझे उसी स्थान पर रखा मिलता है। वह कभी भी अपने स्थान से एक मिलीमीटर भी इधर-उधर नहीं होता।"

इस प्रकार एक घण्टा-भर प्रश्नोत्तर होते रहे। अन्त में व्याख्यान समाप्त होने पर सरस्वती ने अपने पति को उसके सतर्क उत्तरों के लिए बधाई दी। सरस्वती नित्य ही उसका व्याख्यान सुनने उसके साथ आया करती थी।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति ने कहा, "डॉक्टर ! मान गया हूँ कि आप बहुत वाचाल हैं।"

"मैं अपनी कार्य-कुशलता भी दिखाऊँगा।"

"कब ?"

"मेरी प्रयोगशाला पूर्ण होने दीजिए। मेरा अनुमान है कि दो वर्ष में ही मैं आपको अपने बैलून में दिल्ली की आकाशीय उड़ान पर ले जाऊँगा।"

"उस पर चढ़ने से पूर्व मैं एक सौ एक बार विचार करूँगा। मेरा जीवन इतना मूल्यहीन नहीं कि उसको निराधार आकाश में उड़ने दूँ।"

सोम उसकी मूर्खता पर हँस पड़ा। उसने कहा, "उड़ने से पूर्व आप फारवर्डिंग बिजनिस सिण्डीकेट में अपना बीमा करवा सकते हैं।"

"तो वह जीवन का भी बीमा करते हैं ?"

"उनकी कम्पनी ने मुझे रूस से छुड़ाने का बीमा किया था और उसमें वे सफल हो गए।"

"कैसे छुड़ाया था ?"

"यह अपने विश्वविद्यालय के कुलपति से पता करिएगा। यदि वे 'मूड' में हुए तो बता देंगे।"

उपकुलपति मुख देखता रह गया। इस समय तक वे हाल से निकल बाहर मोटर के समीप पहुंच गए थे।

सोम ने उपकुलपति से विदा ली और वहाँ से चल दिया।

तीसरे व्याख्यान के उपरान्त मुख्य अतिथियों के रात के भोजन का प्रबन्ध भी वहीं था। उस दिन प्रधानमन्त्री भी व्याख्यान सुनने के लिए उपस्थित थे।

प्रधानमन्त्री कर्नाटक के विख्यात राजनीतिक नेता थे। वे भी फिलाडेल्फिया

विश्वविद्यालय के ही स्नातक थे। व्याख्यान में तो ऐसा बहुत कुछ था जो प्रधानमंत्री की समझ में नहीं आया था। परन्तु उसने उसके विषय में न पूछकर सरस्वती के विषय में ही अधिक पूछा।

प्रधानमन्त्री को सरस्वती के धारा प्रवाह हिन्दी बोलने पर आश्चर्य होता था। उसने कहा, "आश्चर्य की बात है कि आप हमसे अधिक भली प्रकार हमारी भाषा बोल लेती हैं?"

"हाँ, है तो यह विस्मय की ही बात। आप यहाँ के प्रधानमन्त्री होते हुए भी अंग्रेजी में बोलने में सुगमता का अनुभव करते हैं।"

"जी हाँ, मुझे हिन्दी में बोलने का अभ्यास नहीं रहा।"

"जी, यही तो मैं विस्मय कर रही हूँ। मैं तो आपसे आपकी भाषा में बात कर रही हूँ और आप हैं कि मुझसे अंग्रेजी में बात कर रहे हैं।"

"परन्तु मेरी मातृभाषा तो कन्नड़ है।"

"और मेरे पिता की भाषा यूनानी थी, माता की भाषा फ्रेंच थी, मेरे जन्म देश की भाषा अंग्रेजी है। मैं तीनों भाषाओं में सुगमता से बात कर सकती हूँ। जब मुझ हिन्दी-भाषी पति मिला तो मैंने हिन्दी बोलना-लिखना भी उसी प्रकार सीख लिया जिस प्रकार अन्य तीन भाषाएँ।"

"यही तो विस्मय की बात है।"

"हाँ, विस्मय की बात तो है। परन्तु विस्मय का कारण यह नहीं है कि मैं हिन्दी लिख और बोल सकती हूँ। विस्मय तो इस बात का है कि आप यहाँ के समाज में रहते हुए अपनी राष्ट्रीय भाषा की श्रेष्ठता और उसके महत्त्व को नहीं समझ पा रहे हैं।"

"आपने इसमें क्या श्रेष्ठता देखी है?"

"क्यों, आपको नहीं मालूम? सुनिए, इसकी लिपि संसार की अन्य सब भाषाओं की अपेक्षा अधिक वैज्ञानिक है। इसकी बोली संसार की सबसे प्राचीन और श्रेष्ठतम भाषा अर्थात् संस्कृत से सम्बन्धित है।"

"आप संस्कृत जानती हैं?"

"मैं तो उससे भी एक पग और आगे बढ़ गई हूँ। अर्थात् मैं वेद की भाषा भी समझने लग गई हूँ।"

"तब तो आप अमेरिकन लड़कियों में चमत्कार ही हैं।"

सरस्वती यह सुनकर मुस्करा दी।

भोजन के समय सोम उपकुलपति के समीप बैठा था। उसने उसको बताया कि उसके विश्वविद्यालय में एक अमेरिकन विद्यार्थी आया है। एक रूसी विद्यार्थी भी आने का प्रार्थी है।

"रूसी विद्यार्थी के विषय में हमें विदित है। सरकार ने हमसे पूछा था कि हम

उसके विषय पर शोध-कार्य करा सकते हैं अथवा नहीं। हमने अपने उत्तर में कहा था कि हम इस विषय पर खोज करने की सहायता दे सकते हैं। परन्तु रूसी सरकार ने उसे आपके विद्यालय में प्रविष्ट होकर विद्या प्राप्त करने की स्वीकृति माँगी है।"

"तो फिर क्या निश्चय हुआ है?"

"हमने अपनी ओर से तो स्वीकृति दे दी है। शेष राजनीतिक बात है जिसका हमें ज्ञान नहीं है।"

"ठीक है, यदि वह हमारे पास आया तो हम उसे प्रविष्ट कर लेंगे।"

"इस विषय पर प्रधानमन्त्रीजी प्रकाश डाल सकते हैं।"

"मुझे कोई उत्सुकता नहीं है।"

"यह जानने में भी आपको रुचि नहीं कि उसको आपके विद्यालय में ही प्रवेश प्राप्त करने की उत्सुकता क्यों है?"

"जहाँ तक मैं समझता हूँ कि वह मेरे अनुसन्धान-कार्य में सहायक होना चाहता है।"

"सहायक होना अथवा चोरी करना?"

"चोरी के लिए वहाँ है ही क्या? सबकुछ दिन के प्रकाश की भाँति खुला और स्पष्ट है।"

"हम चाहते थे कि आप हमारे विद्यालय में अपना अनुसंधान-कार्य करते तो अच्छा था।"

"मैं किसी की सेवा में रहते हुए शिक्षा का कार्य नहीं कर सकता।"

"परन्तु अमेरिका में तो आप करते थे?"

"हाँ करता था। परन्तु मेरी यह अभिलाषा भी वहाँ जेल जाकर समाप्त हो गई थी।"

इस प्रकार भोजन समाप्त हुआ और सब अपने-अपने घर को चल दिए।

लौटते हुए सरस्वती ने प्रधानमन्त्री के साथ हुए अपने वार्तालाप को सुनाया तो सोम को हँसी आ गई। उसने कहा, "ये लोग राजनीति को अपना मजहब मानते हैं। कोई शिव का उपासक है तो कोई महावीर हनुमान का। किसी को हजरत मौहम्मद पर विश्वास है तो किसी को हजरत ईसा पर। किन्तु इनको अपने देश की मिट्टी, नदियाँ और पर्वतों से कोई लगाव नहीं है। बात एक ही है। किसी जड़ वस्तु को अपना आराध्य मानने में ही ये अपना कल्याण मानते हैं। भलाई और सच्चाई पर भी किसी को विश्वास नहीं है। जनकल्याण लोगों के लिए कपड़ा, मकान और रोटी माना जाता है। मनुष्य के लिए श्रेष्ठ मन और बुद्धि की किसी को चिन्ता नहीं है।

"ये महापुरुष इतना भी नहीं जानते कि अधिकांश चोर और ठग फैशनेबल कपड़े ही पहनते हैं। यह बाहरी सजधज किसी श्रेष्ठता का लक्षण नहीं है।

"मेरा अभिप्राय यह है कि भौतिक उन्नति किसी प्रकार भी मानसिक अथवा बौद्धिक उन्नति की सूचक नहीं हो सकती। वास्तविक उन्नति तो मन, बुद्धि और आत्मा की उन्नति से अभिव्यक्त होती है। भौतिक उन्नति से उसका किसी प्रकार भी सम्बन्ध नहीं है।"

इस प्रकार अन्तिम व्याख्यान देकर सोमदेव अपनी पत्नी के साथ जब घर पहुँचा तो सोम की माताजी ने कहा, "अकबर होटल से किसी का फोन आया था। वह पूछ रहा था कि डॉक्टर सोम के मकान पहुँचने के लिए किस पते पर पहुँचना चाहिए। मैंने उसको कह दिया कि वह टैक्सी वाले को यहाँ का पता बता दे तो टैक्सी वाला उसको ले आएगा। तब उसने कहा कि उसके पास अपनी गाड़ी है, जिसे वह स्वयं ही चलाता है।

"तब मैंने फोन करने वाले से कह दिया कि तब उसको चाहिए कि वह जिस होटल में ठहरा हुआ है, वहाँ से पथ-प्रदर्शक को साथ ले आए।"

यह सुनकर सोम और सरस्वती को हँसी आ गई। सोम बोला, "इससे तो यह पता लगता है कि पूछने वाला सर्वथा अनभिज्ञ व्यक्ति है।"

गार्गी बोली, "होटल वाला, जो उस आगन्तुक की ओर से फोन कर रहा था, कहने लगा कि उसने उस व्यक्ति को यह सब बता दिया है किन्तु उसका कहना है कि भारत के गाइड चोर और उचक्के होते हैं, वे व्यर्थ में उसके सैकड़ों रुपए व्यय करा देंगे।

"तब मैंने उस होटल वाले से कहा कि उससे पूछे कि क्या फ्रांस की अपेक्षा यहाँ अधिक ठगी होती है?

"मेरे इतना कहने पर उसने फोन ही बन्द कर दिया।"

सोम ने पूछा, "इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि उसने यह नहीं बताया कि वह कब आने वाला है?"

"नहीं।"

सरस्वती बोली, "तो आ जाएगा। हमें क्या चिन्ता।"

बात समाप्त हो गई और तीनों अपने-अपने कमरे में चले गए।

: ७ :

अगले दिन प्रातःकाल पूजा के उपरान्त सरस्वती वीणा का अभ्यास करने बैठी ही थी कि किसी ने उसके कमरे की घण्टी बजा दी। सोमदेव ने स्पीकर की ओर मुख करके पूछा, "कौन है?"

"रात जिस व्यक्ति ने फोन किया था, वह आ गया है।"

"उनको बैठाओ, कॉफी आदि पिलाओ। मैं आधे घण्टे तक आऊँगा।"

आने वाला व्यक्ति पेरिस के विश्वविद्यालय का प्राध्यापक था। वह धनवान का पुत्र था। जब उसको भारत आकर सोमदेव से मिलने की इच्छा हुई तो उसने

अपनी कार निकाली और इटली, युगोस्लाविया, यूनान, टर्की, फिलिस्तीन, इराक, ईरान आदि-आदि स्थानों से होता हुआ भारत पहुँच गया। भारत की राजधानी में पहुँचे उसको तीन दिन हो चुके थे और गाइडों के द्वारा सोमदेव तक पहुँचने में असफल हो उसने होटल क्लर्क से फोन द्वारा पता करने के लिए कहा था।

आधे घण्टे जब सरस्वती वीणा का अभ्यास कर चुकी तो सोमदेव उसको लेकर ड्राइंग-रूम में आया। उसका विचार था कि आने वाला व्यक्ति कदाचित् अंग्रेजी न जानता हो और यदि उससे फ्रांसीसी में बात करनी पड़ी तो सरस्वती उसमें सहायक हो सकती है। इसीलिए उसने आधे घण्टे बाद का समय दिया था।

पति-पत्नी दोनों जब ड्राइंग-रूम में आए तो उनको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आगन्तुक भी युवक और युवती ही हैं।

सोमदेव ने उनसे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे कर दिया और बोला, "हमें तो बताया गया कि कोई एक सज्जन पधारे हैं।"

"नहीं, दो फ्रैंड्स हैं, जो आपकी ख्याति सुनकर सात हजार मील लम्बी सड़कों की धूल फाँकते हुए यहाँ आ पहुँचे हैं।"

युवक ने फ्रांसीसी में बात की थी। सोम ने कहा, "हम अपने देश में आपका स्वागत करते हैं।"

इस प्रकार सोम और सरस्वती भी वहीं समीप रखे सोफे पर बैठ गए।

सरस्वती ने अपना परिचय देते हुए कहा, "मैं डॉक्टर सोमदेव की पत्नी हूँ। आप लोग क्या हनीमून ट्रिप पर निकले हैं?"

यह सुनकर दोनों अभ्यागतों को हँसी आ गई। युवक ने कहा, "मेरा नाम आर० ए० फिशर है। मैं पेरिस विश्वविद्यालय में फिजिक्स का प्राध्यापक हूँ। इनका नाम है मिस एमिली रामिणी, ये मेरी छात्रा हैं।"

"क्षमा करिएगा। क्योंकि यहाँ अविवाहित लड़कियाँ युवकों के साथ नहीं घूमतीं, इस कारण मुझे सन्देह हुआ था, मेरा कोई और अभिप्राय नहीं था।" सरस्वती ने अपनी बात की सफाई देते हुई कहा।

"कोई बात नहीं।" युवक ने उसे सान्त्वना दी।

"आप किस उद्देश्य से भारत आए हैं?"

"हमने बताया तो है कि हम डॉक्टर सोम की ख्याति सुनकर उनसे मिलने के लिए आए हैं।"

"क्या ख्याति सुनी है?"

"यही कि इन्होंने 'मेस्सी' वस्तुओं को भारहीन कर दिया है।"

"परन्तु इससे डॉक्टर दर्शनीय किस प्रकार हो गए? हाँ, उनका आविष्कार भले ही जानने योग्य हो सकता है।"

"आविष्कारक भी दर्शनीय ही होते हैं।"

"तो दर्शन हो गए ?"

"जी हाँ, दर्शन तो हो गए हैं, परन्तु हम तो उनसे इस विषय में कुछ जानने और समझने के लिए भी आए हैं।"

"वह कार्य इतना सरल तो नहीं। उसके लिए तो आपको यहाँ पर्याप्त समय रुकना पड़ जाएगा।"

वह युवती बोली, "हम इसीलिए आए हैं। प्रोफेसर साहब तो विश्वविद्यालय से एक वर्ष का अवकाश लेकर आए हैं और मैं तो हूँ ही छात्रा, यहाँ भी मैं उसी प्रकार छात्रा ही रहूँगी।"

यह सुनकर सरस्वती ने अपने विश्वविद्यालय की योजना उसको समझा दी। यह सुनकर यह युवती बोली, "तो क्या उस विश्वविद्यालय में हमको प्रवेश मिल जाएगा ?"

इस प्रश्न का उतर सरस्वती ने अपने पति से जानना चाहा। उसने फ्रांसीसी में उसके साथ जो बात हुई थी उसका सारांश समझा दिया। उसके बाद पूछा, "इनके प्रवेश के सम्बन्ध में आपकी क्या सम्मति है ?"

सोम कहने लगा, "मुझे इनके लक्षण कुछ अच्छे नहीं प्रतीत होते। तदपि अपने अनुमान के आधार पर मैं किसी के लिए ज्ञान का द्वार बन्द नहीं कर सकता। इस कारण इनको बता देना चाहिए कि इस मास की अन्तिम तिथियों तक प्रयोगशाला बनकर तैयार हो जाएगी। हमारा विचार है कि हम २६ तारीख को अपने विद्यालय का समारम्भ करें। तब तक ये लोग कुछ हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लें तो इससे इनको पढ़ने और प्रयोगशाला में कार्य करने में सुविधा हो जाएगी। अपने रहने का प्रबन्ध भी ये कहीं समीप ही कर लें तो अच्छा रहेगा।"

सरस्वती ने जब यह बात उनको समझाई तो प्रोफ़ेसर फिशर ने पूछा, "पढ़ाई क्या हिन्दी भाषा में होगी ?"

"हाँ, यहाँ एक अमेरिकन प्रोफेसर भी आए हुए हैं। वे दो मास से हिन्दी का अभ्यास कर रहे हैं।

"साधारण ज्ञान अर्जन के लिए दो मास हिन्दी का अभ्यास तो आवश्यक ही है।"

यह सुनकर तो दोनों फ्रांसीसी एक-दूसरे का मुख देखने लगे। सरस्वती ने उनको समझाते हुए कहा, "प्रयोगशाला में बहुत सारा कार्य तो व्यावहारिक है। उसके लिए कुछ टेक्नीकल शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। शेष तो लिखने-पढ़ने से भी हो जाएगा। तो भी आप स्वयं देख लीजिए कि इस स्थिति में आप यहाँ रह पाएँगे अथवा नहीं। आपकी बहुत-सी छुट्टियाँ तो आपकी यात्रा में ही समाप्त हो गई होंगी। अब आपका कितना अवकाश बचा हुआ है ?"

फिशर बोला, "जहाँ तक इस रामिणी का सम्बन्ध है, यह तो अनिश्चित काल

के लिए भी रह सकती है। असल बात मेरी है। मेरे एक वर्ष के अवकाश के तीन मास तो व्यतीत हो चुके हैं। मैं सोच रहा हूँ कि यदि कुछ सीखने योग्य हुआ तो अपना अवकाश बढ़वा लूँगा, इतना ही नहीं, यदि आवश्यक हुआ तो मैं अपने कार्य से त्यागपत्र भी दे सकता हूँ।''

सरस्वती बोली, ''तब तो केवल रहने के स्थान की समस्या है। हमारे विश्व-विद्यालय में तो अभी रहने के लिए केवल दो कमरे ही बने हैं और वे दोनों ही पहले से सुरक्षित हो चुके हैं। एक को तो एक अमेरिकी प्रोफेसर ने बुक कर लिया है और दूसरा कमरा एक रूसी प्रोफेसर ने बुक करा लिया है।''

''हम तो इस नगर क्या, देश से ही अनभिज्ञ हैं, आप हमें कोई कमरा किराए पर दिलवा दीजिए।''

''अभी आप होटल में ठहरिए। इस बीच हम पता लगा लेंगे। किन्तु आपको तो दो कमरे चाहिए होंगे?''

''हाँ, यदि दो सम्भव न हों तो हम एक में भी निर्वाह कर सकते हैं। अभी तक हम एक ही कमरे में निर्वाह करते आए हैं।''

इस प्रकार बात समाप्त हो गई। सरस्वती ने पूछा, ''यदि आपको भारतीय भोजन रुचिकर हो तो प्रातःकाल का अल्पाहार करके जाइए।''

इसका उत्तर तुरन्त उस लड़की ने दिया। बोली, ''हमें पसन्द है। बशर्ते कि वह पीड़ादायक न हो और गले से नीचे सरलता से उतर जाए।''

''यदि आपने मात्रा से अधिक नहीं खाया तो वह किसी प्रकार की पेट-पीड़ा नहीं करेगा।''

फिशर पूछने लगा, ''तो क्या आवश्यकता से अधिक खाने की भी सम्भावना हो सकती है?''

''केवल सम्भावना नहीं, अपितु इसकी सर्वाधिक सम्भावना है।''

तीनों हँस पड़े। सोम उनका मुख देख रहा था। सरस्वती ने उसको अपने हँसने का कारण बता दिया।

जब उनके वहीं अल्पाहार करने का निश्चय हुआ तो सोम ने इसकी सूचना फोन द्वारा भोजनालय में पहुँचा दी।

आज के अल्पाहार के समय अविनाश भी वहाँ उपस्थित था। उसको किसी आवश्यक विषय पर परमानन्द से विचार-विमर्श करना था। अविनाश को जब विदित हुआ कि ये दोनों युवक-युवती दम्पती नहीं अपितु सोम के विश्वविद्यालय में प्रवेशार्थी हैं तो उसने रामिणी से बात करना आरम्भ कर दिया।

अविनाश ने उस युवती के माता-पिता का परिचय प्राप्त किया। उधर मंगलानन्द ने फिशर से बात करनी आरम्भ की थी। वह उसके विषय में जानकारी प्राप्त कर रहा था। मंगलानन्द को विदित हुआ कि फिशर फ्रांस के विख्यात

एडवोकेट का पुत्र है। फिशर की आयु इस समय ३५ वर्ष की थी। अपने विश्व-विद्यालय में वह दस वर्ष से कार्य कर रहा था। यह सारा वार्तालाप फ्रेंच भाषा में ही हो रहा था। मंगलानन्द थोड़ी-बहुत फ्रेंच जानता था।

फिशर ने जब अपने पिता का नाम बताया तो मंगलानन्द बोला, "मैंने इण्टर-नेशनल लॉ पर आपके पिता की पुस्तक पढ़ी है। मुझे वह बहुत अच्छी लगी। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों से मैं पूर्णतया सहमत हूँ।"

फिशर को स्वयं कानून में किसी प्रकार की भी रुचि नहीं थी। इसलिए उसने कानून पर बात करने की अपेक्षा सोम के आविष्कार के सम्बन्ध में बात करनी आरम्भ कर दी।

मंगलानन्द बोला, "मुझे भार-रहित होकर इस पृथिवी पर से उड़कर किसी अन्य नक्षत्र पर जाने की अभिलाषा नहीं है। रुचि भी नहीं है। तदपि अपने पुत्र के विश्वविद्यालय में विषय के सामान्य विवेचन में रुचि लेता हूँ, इस कारण मैं भी एक विद्यार्थी के रूप में प्रविष्ट हो गया हूँ।"

"तो इस विषय का कुछ सामान्य विवेचन भी है, जिसको जानने की इच्छा अथवा आवश्यकता होती है?"

"मुझे बताया गया है कि इसकी अत्यधिक आवश्यकता है। क्योंकि बिना उसके वर्तमान विज्ञान से विभेद जाने ठीक प्रकार से बात समझ में नहीं आ सकेगी।"

"तो क्या यह वर्तमान से कुछ भिन्न भी है?"

"मैं तो यही समझ पाया हूँ। तदपि जब पढ़ाई आरम्भ होगी तब इस पर विस्तार से बात हो जाएगी।"

"मेरे लिए यह कठिन हो रहा है कि अपने पिछले लिखे को किस प्रकार धो-पोंछ कर साफ कर दूँ।"

"कदाचित् धोने की आवश्यकता न पड़े केवल रंग चढ़ाने से भी कदाचित् कार्य बन सकता है।"

उधर अविनाश रामिणी पर अपना प्रभाव स्थापित कर रहा था। उसका परिणाम यह हुआ कि अल्पाहार समाप्त होने तक रामिणी का मुख बहुत गम्भीर हो गया था। अल्पाहार की मेज पर बैठे सभी लोगों ने इस परिवर्तन को अनुभव किया था। तदपि सभ्यता के विचार से किसी ने उससे कुछ पूछा नहीं।

अल्पाहार करके जब रामिणी और फिशर अपने होटल को वापस आ रहे थे तो रास्ते में फिशर ने उससे पूछा, "तुम्हारे साथ बैठा व्यक्ति तुमसे क्या बात कर रहा था जो तुम एकदम गम्भीर हो गई थीं?"

"मेरे विवाह के विषय में बातचीत होती रही थी।"

"तो क्या उसने तुम्हारे साथ विवाह का प्रस्ताव किया था?"

रामिणी हँस पड़ी। वह कहने लगी, "नहीं, वह तो विवाहित है और उसके

दो लड़के तथा एक लड़की, इस प्रकार तीन सन्तान भी हैं। उसका विवाहित जीवन बहुत सुखी है।''

''तो उसकी पत्नी उसको कष्ट नहीं देती ?''

''मैंने भी उससे कुछ इसी प्रकार पूछा था। तब उसने बताया था कि कोई अविवाहित महिला उस रस का अनुमान भी नहीं लगा सकती जो कि विवाहित जीवन में उपलब्ध होता है।

''उस आनन्द की व्याख्या करते हुए उसने बताया था कि कोई ऐसा व्यक्ति जिसने जीवन में कभी मीठा न खाया हो उसको शहद का स्वाद बताने के लिए शहद चटाना ही पड़ेगा, इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं है। उसी प्रकार उसका कहना था कि विवाहित जीवन का आनन्द तो विवाहित जीवन बिताकर ही प्राप्त किया जा सकता है।''

''और तुम मेरे साथ जो जीवन व्यतीत कर रही हो उसे विवाहित समझती हो अथवा अविवाहित ?''

''मैंने उसको भी यही बताया था कि हमारा जीवन उतना ही आनन्दमय है जितना कि किसी विवाहित युगल का होता है। उसका प्रश्न था कि गर्भस्थिति से बचने के लिए किसी प्रकार औषध अथवा निरोधात्मक उपकरणों का प्रयोग किया जाता है अथवा नहीं। जब मैंने बताया कि किया जाता है तो उसका कहना था कि यही तो विवाहित जीवन के आनन्द को क्षीण करने का प्रथम प्रयास है। किसी दिन इस सबके बिना सहवास करके देखें तो विदित होगा कि वास्तविक विवाहित जीवन में कितना आनन्द और रस है।''

फिशर बोला, ''यदि सन्तान हो गई तो ?''

''मैंने भी यही पूछा था। उसका कहना था कि सन्तान इस जीवन का ही अन्य फल है। और वह विवाहित जीवन के प्रथम मिलन से भी अधिक रसमय है।''

''यह सब बकवास है।'' फिशर बोला।

''है तो सही। किन्तु यदि इस बकवास का भी आनन्द ले लें तो कैसा रहे ?''

''आनन्द तो ले लो, किन्तु यदि सन्तान होनी आरम्भ हो गई तो फिर हमारा जीवन एक कबाड़खाना ही बन जाएगा।''

रामिणी चुप रही। तदपि उसके मुख पर छाई गम्भीरता दूर नहीं हुई।

'ज्ञान-विज्ञान केन्द्र' के आरम्भिक उत्सव तक सोम और सरस्वती बहुत ही व्यस्त रहे। मंगलानन्द और उसके पिता विश्वेश्वरानन्द का विचार था कि विद्यालय का समारोह बड़ी धूम-धाम से किया जाना चाहिए। देश के प्रधानमन्त्री को भी बुलाने का उनका विचार था और निकट विश्वविद्यालयों के उपकुलपति एवं विज्ञान के प्राध्यापक भी उस समय आमन्त्रित किये जाएँ। प्रेस-प्रतिनिधियों का भी प्रबन्ध हो।

सब उसी प्रकार किया गया और उसका परिणाम यह हुआ कि इस समारोह का समाचार न केवल देश के समाचार-पत्रों में अपितु विदेशी समाचार-पत्रों में भी इसकी काफी चर्चा रही।

समारोह सम्पन्न होने के बाद विश्वविद्यालय का कार्य बड़े ही शान्त वातावरण में आरम्भ हो गया। सामान्य ज्ञान सम्बन्धी अध्ययन-अध्यापन तो मंगलानन्द की कोठी पर ही होता था। उस कक्षा में सभी विद्यार्थी उपस्थित रहते थे। बाबा विश्वेश्वरानन्द नित्य डेढ़ घण्टा इस कक्षा को पढ़ाया करते थे। पौन घण्टा तो वे वेद भाषा की शिक्षा दिया करते थे और अवशिष्ट पौन घण्टा वे वैदिक देवताओं का ज्ञान कराया करते थे।

विज्ञान के विषय पर जब पहले ही बात होनी आरम्भ हुई तो विवाद उत्पन्न हो गया। प्रश्नकर्त्ता प्रोफेसर फिशर था। उसने प्रश्न किया, "अनादि अग्नि जब उत्पन्न हुई तो यह किस माध्यम से फैली ? क्योंकि, बिना माध्यम के तो शक्ति फैल ही नहीं सकती ?"

सरस्वती ने इस प्रश्न का पहले तो सामान्य अंग्रेजी भाषा में अनुवाद किया और फिर स्वयं ही उसका उत्तर भी देने लगी। उसने उत्तर देते हुए बताया, "प्रसार का माध्यम तो था। परन्तु वह माध्यम क्वाण्टम के रूप में नहीं था। क्वाण्टम तो धाराओं में पीठ पर शक्ति को उठाए हुए स्वयं जाता है, परन्तु आदि शक्ति उस माध्यम को चीरती हुई अपना मार्ग बनाती है।"

"मेरी समझ में नहीं आया।"

"आपको विदित है कि 'गामा रे' किस माध्यम से चलती है ?"

"मुझे विदित नहीं।"

"आपको इसलिए विदित नहीं क्योंकि वर्तमान विज्ञान एक सर्वव्यापक पदार्थ के अस्तित्व को मानता ही नहीं। या यों कहिए कि मानने की आवश्यकता ही अनुभव नहीं करता।

"एक तो ईश्वर है जो सर्वव्यापक है। और दूसरी प्रकृति है जो सर्वव्यापक है। उसी को आकाश कहते हैं। यह भाररहित दानेदार पदार्थ है। इसका दाना इतना छोटा होता है कि उससे छोटा वह हो ही नहीं सकता।"

"होगा। किन्तु इसको मानने की आवश्यकता ही क्या है ?"

"आदि शक्ति अग्नि है। यह सब हिलती-डुलती है तो रचना-कार्य आरम्भ होता है। बिना हिले-डुले रचना हो ही नहीं सकती। तथा हिलने-डोलने के लिए माध्यम का होना आवश्यक है। इस युक्ति से हम एक माध्यम मानते हैं। इस माध्यम को आकाश कहते हैं। इस माध्यम से ही आदि अग्नि चलकर रचना-कार्य करती है।"

बाबा की डेढ़ घण्टे की पढ़ाई के उपरान्त सब विद्यार्थी जो उच्च शिक्षा के लिए

आए हुए थे ओखला गाँव के पार अपने विश्वविद्यालय भवन में चले जाया करते थे।

इस समय तक सोम सहित उसमें सात व्यक्ति कार्यरत थे। मेकार्थर, सिमी नाकोव, फिशर और रामिणी, के अतिरिक्त दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त रमेशचन्द्र और स्वामीनाथन थे।

आधा घण्टा सोम द्वारा मार्गदर्शन दिये जाने के उपरान्त ये सभी प्रयोगशाला में चले जाया करते थे। मध्याह्न एक बजे सब एक साथ बैठकर भोजन करते थे और फिर पाँच बजे कार्यशाला बन्द कर अपने-अपने निवास को चल देते थे।

विश्वविद्यालय में निवास के लिए केवल दो ही कमरे थे जिनमें मेकार्थर और नाकोव रहते थे। शेष कमरे अभी बन रहे थे।

प्रोफेसर फिशर तो विद्यालय से एक किलोमीटर की दूरी पर किसी के मकान में किराए पर रहते थे। वे वहाँ पति-पत्नी के रूप में विख्यात थे। तदपि उन्होंने वहाँ दो कमरे लिये हुए थे।

रामिणी जब कार्य करने लगी तो सोम को विदित हुआ कि उसका गणित का उच्चकोटि का ज्ञान है। यह जान लेने पर सोम अपने कार्य में होने वाले गणित के कार्य को उससे ही करवाता था। इसका परिणाम यह हुआ कि दोनों में सामीप्य बढ़ने लगा। रामिणी का फिशर से तो लगाव था ही।

एक दिन इस विषय पर दोनों में बात हो गई। दोनों अपने निवास-स्थान पर बैठे चाय पी रहे थे। साधारण वार्तालाप हो रहा था। तभी फिशर ने पूछा, "आज-कल तो डॉक्टर सोम से घनी छन रही है।"

"हाँ, वह इस कारण कि उसको ज्ञान हो गया है कि मैं गणित में प्रवीण हूँ। अपने गणित का सारा कार्य वह मुझसे ही कराता है। घण्टों ही वह मुझसे लम्बे-लम्बे समीकरण बनवाता है और फिर उन पर विचार-विमर्श में भी उतना समय लगाता है।"

"मैं तो कुछ और ही समझा था।"

"क्या समझे थे?"

"यही कि जो किसी पुरुष-स्त्री के निकट रहने पर होता है। मुझे यह सन्देह होने लगा था कि किसी दिन तुम सहसा इन कमरों को छोड़कर फ्रेंड्स कालोनी जाकर रहने लग जाओगी।"

"परन्तु वहाँ तो उसकी अपनी पत्नी रहती है। वह मुझसे अधिक पढ़ी-लिखी, सुन्दर और बुद्धिमान है। उसका एक पुत्र भी वहाँ है।

"आपका सन्देह व्यर्थ है। उसका मेरे साथ अपनी बहिन जैसा व्यवहार होता है। और मैं तो अब आपकी पत्नी के रूप में विख्यात हो ही गई हूँ। यहाँ सब लोग यही समझते हैं तथा मैंने भी आपके साथ पति का-सा व्यवहार किया है। मैंने आपको

इसी रूप में मान लिया है।''

''कैसे मान लिया है ?''

''लगभग एक मास से न तो मैंने किसी प्रकार की ओषधि का प्रयोग किया है और न कोई निरोधक उपकरण ही उपयोग में लाई हूँ।''

यह सुनकर फिशर परेशानी अनुभव करने लगा था। वह विस्मित-सा रामिणी के मुख पर देखता रहा। रामिणी भी उसको देख-देखकर मुस्करा रही थी।

फिशर ने कहा, ''यदि कोई बच्चा हो गया तो ?''

''यही तो मैं चाहती हूँ। फिर भी अभी तक इस प्रकार का कोई लक्षण दिखाई नहीं दिया है।''

''तब तो ठीक है। परन्तु आज से हम पृथक्-पृथक् सोया करेंगे। मैं इस बैठक में सो जाया करूँगा और तुम कमरे में सोना।''

''मैंने कभी आपको पृथक् सोने से मना तो नहीं किया। आपको स्मरण होगा कि साथ सोने के लिए आपने ही आग्रह किया था और इस प्रकार के व्यवहार के लिए मुझे एक प्रकार से बाध्य-सा किया था।''

''हाँ, किया तो था। किन्तु यह बात रोम की है। वहीं हम पहली बार एक ही कमरे में सोए थे। तब मैंने ही कहा था कि हम व्यर्थ में ही दो कमरों का भाड़ा देते चले आए हैं।

''परन्तु तब मैंने यह भी तो कहा था कि उपकरणों का उपयोग कर लिया करो ?''

''हाँ, मुझे वह सब स्मरण है। मैं भी उन उपकरणों को स्वेच्छा से उपयोग में लाती थी। और अब स्वेच्छा से ही उनको छोड़ भी दिया है।''

''परन्तु डियर ! यदि सन्तान का बीजारोपण हो गया तो ?''

''तब मुझे बहुत ही प्रसन्नता होगी और यदि बच्चा वैसा ही सुन्दर हुआ जैसा कि डॉक्टर सोम का है तो मुझे और भी अधिक प्रसन्नता होगी।''

''तुम कहती हो, अभी तक तो उसके कोई लक्षण हैं नहीं ?''

''हाँ हुए तो नहीं। इससे यही सिद्ध होता है कि आप में बच्चे का बीजारोपण करने की सामर्थ्य नहीं है।''

''मैं तो चाहता भी यही हूँ कि ऐसा न हो।''

''किन्तु मेरी इच्छा इसके सर्वथा विपरीत है। मेरी बच्चे की उत्कट अभिलाषा है।''

फिशर ने मन-ही-मन निश्चय किया कि वह इस भयंकर स्त्री से पृथक् ही सोया करेगा। तदपि उसका यह विचार विचार तक ही सीमित रहा। व्यवहार में यह शिथिल सिद्ध हुआ। यद्यपि वे सोते भी पृथक् थे किन्तु फिर भी समागम से पृथक् रह नहीं पाए। यह फिशर की ही दुर्बलता थी।

इसी प्रकार तीन महीने और भी बीत गए। तब तक विद्यालय की भूमि पर तीन कमरे और बन गए थे। फिशर और रामिणी उन कमरों में जाना चाहते थे किन्तु सोम इस बात को टालता जा रहा था। वह नहीं चाहता था कि यह अविवाहित युगल वहाँ पति-पत्नी के रूप में रहे।

उन्हीं दिनों की बात है कि एक दिन सायंकाल की चाय के समय रामिणी का जी मिचलाने लगा और वह वमन करने के लिए बाथरूम में चली गई। जब वह बाथरूम से वापस आई तो फिशर ने पूछा, "क्यों, क्या हुआ है?"

"वही, जिसकी मैं इच्छा और आशा करती थी। बिना रजस्वला के मेरा यह दूसरा मास चल रहा है।"

"तो फिर कल अस्पताल चली जाओ।"

"वहाँ किसलिए?"

"गर्भपात के लिए।"

"गर्भपात तो मैं नहीं कराऊँगी।"

"तो फिर?"

"फिर यही कि बच्चा होगा तब मुझे विवाहित जीवन का दूसरा आनन्द भी उपलब्ध हो जाएगा।"

"परन्तु इस पर तो बहुत व्यय हो जाएगा। पहले तो बच्चा होने तक तुम्हें मुफ्त में खिलाना-पिलाना पड़ेगा। फिर बच्चे के जन्म पर व्यय होगा, उसके बाद उसके लालन-पालन में भी व्यय होगा। सबसे अधिक यह कि मेरा यहाँ आने का उद्देश्य ही मिट्टी में मिल जाएगा।"

"क्यों मिट्टी में मिल जाएगा? क्या डॉक्टर सोम ने कहा है कि वे आपको पढ़ाना बन्द कर देंगे?"

"मैंने उनसे पूछा नहीं है। पूछता भी कैसे, जब मुझे स्वयं ही विदित नहीं था।"

"तो अब पूछ लीजिए। मेरा विचार है कि वे आपको पढ़ाना अस्वीकार नहीं करेंगे। मैंने उनकी पत्नी से इस विषय में चर्चा की थी। उनका कहना था कि यह हमारा व्यक्तिगत मामला है, इसका विद्यालय से कोई सम्बन्ध नहीं।"

"वे हमको बिना किसी फीस के पढ़ाते हैं। मध्याह्न को भोजन भी बिना कुछ हमारे लिये वे विद्यालय की ओर से ही दिया करते हैं। अब एक अन्य जीव को भी उन्हें खिलाना पड़ जाएगा।"

"उस आने वाले जीव की और मेरी तो आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए। बहिन सरस्वती ने कहा है कि बच्चे के जन्म तक तो जो हमारा व्यय करता है वही करेगा अर्थात् आप और विद्यालय। उसके बाद की बात पर उस समय ही विचार कर लिया जाएगा जिस समय यह समस्या उत्पन्न होगी।"

"किन्तु मैं अब तुम्हारा व्यय वहन नहीं करूँगा।"

"क्यों ?"

"क्योंकि तुमने मेरा कहना मानना छोड़ दिया है।"

"आपकी सारी बात तो मैं मानती आई हूँ, केवल एक बच्चे के सम्बन्ध में ही तो मैंने अपने मन की बात कही है।"

"पहले भी कहाँ मानी है। पहले तो तुमने ओषधि नहीं खाई। और अब जब गर्भ रह गया है तो तुम गर्भपात नहीं करा रही हो।"

"इस विषय में तो मैंने तीन मास पूर्व ही आपसे कह दिया था कि मुझे बच्चे की अभिलाषा है। तो भी आपने मेरे साथ रहना नहीं छोड़ा।"

फिशर निरुत्तर हो झुँझलाहट में कोठी से बाहर जाने की तैयारी करने लगा। यह देख रामिणी भी उठी और उसके साथ ही कोठी से बाहर निकल आई। फिशर कमरे से निकलकर अपनी गाड़ी में जा बैठा। गाड़ी अभी गैराज के बाहर ही खड़ी थी।

रामिणी भी उसके पीछे-पीछे उसकी गाड़ी में जाकर बैठ गई। फिशर ने गाड़ी चलाते हुए कहा, "किधर जाने का विचार है ?"

"जिधर आप जा रहे हैं।"

"तुमने मेरा जीवन किरकिरा कर दिया है।"

"अपने विचार से तो मैंने हम दोनों के जीवन में रंग भरने का ही आयोजन किया है।"

"तुम महामूर्ख हो।"

"कब से ?"

"जब से गर्भ की इच्छा करने लगी हो।"

"हम दोनों के दृष्टिकोण में अन्तर होने लगा है।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ।"

"किन्तु इस अन्तर के रहते भी हमको रहना तो साथ-साथ ही होगा। अब तो आपको भी अन्य अनेक जनों की भाँति पिता बनकर रहना होगा।"

"ओह···नो। मैं एकान्त में बैठकर विचार करना चाहता हूँ कि इस झंझट से किस प्रकार मुक्त हो सकता हूँ।"

"मैं आपके विचार में सम्मिलित हो सकती हूँ अथवा नहीं ?"

"इसी से तो पूछ रहा था कि तुम कहाँ जा रही हो ?"

"मैं तो आपके साथ ही जा रही थी। आज तक मैं आपसे पृथक् गई कहाँ हूँ ?"

"नहीं, मैं एकान्त चाहता हूँ।"

"तो मुझे यहाँ उतार दीजिए। यहाँ से मैं पैदल ही सरस्वती बहिन की कोठी चली जाऊँगी।"

फिशर ने गाड़ी रोकी। रोमिणी नीचे उतरी तो फिशर ने गाड़ी भगा दी। वह कनॉट प्लेस की ओर चला गया।

: ८ :

फिशर की गाड़ी से उतरकर रामिणी सरस्वती के घर की ओर जाने लगी। वह उसकी कोठी की ओर मुड़ी ही थी कि पीछे से एक अन्य कार आकर उसके समीप रुक गई। रामिणी ने समझा कि कदाचित् फिशर को अपनी करनी पर पश्चात्ताप हुआ होगा इसलिए वह पुनः उसके पास चला आया होगा। इसलिए वह वहीं खड़ी हो गई। उसने मोटर की ओर देखा तो पता चला कि न वह फिशर की कार है और न उसमें फिशर ही बैठा है। वह अविनाश था। उसने पूछा, "मिसेज फिशर ! सरस्वती बहिन की ओर जा रही हैं?"

"जी हाँ।"

"आइए, बैठिए। मैं भी उधर ही जा रहा हूँ।"

रामिणी बैठी तो अविनाश ने कहा, "मिस्टर फिशर तो कनॉट प्लेस की ओर जाते दिखाई दिए।"

"जी हाँ। मुझे सरस्वती बहिन से कुछ काम था, इसलिए इधर चली आई।"

"पर तुमने तो रोनी सूरत बनाई हुई है।"

"नहीं तो।" रामिणी के मुख से यह निकल तो क्या किन्तु उसकी आँखों में आँसू छलक आए थे।

अविनाश से वे आँसू छिप नहीं सके। उसने पूछा, "क्यों, फिशर से लड़ाई हुई थी?"

"वे बड़े खराब हैं।" कहती हुई वह अपने आँसू पोंछने लगी।

अविनाश बोला, "तुम ठीक स्थान पर जा रही हो। वहाँ तुम्हारा मार्गदर्शन ठीक ही दिशा की ओर होगा।"

रामिणी कुछ बोली नहीं, चुपचाप बैठी रही। अविनाश भी फिर कुछ नहीं बोला। वह केवल रामिणी के रोने के विषय में सोचता जा रहा था।

जिस समय रामिणी और अविनाश कोठी पर पहुँचे सब लोग सायंकाल की चाय के लिए ड्राइंग-रूम में एकत्रित हो गए थे। आज वहाँ काफी जमघट था। इसलिए रामिणी और अविनाश के लिए विशेषतया स्थान बनाना पड़ा था। रामिणी को अकेली देख सरस्वती ने पूछा, "मिस्टर फिशर नहीं आए?"

रामिणी के बोलने से पहले ही अविनाश बोला, "उनको अपने किसी मित्र के पास जाना था, जहाँ वे मिसेज फिशर को ले जाना नहीं चाहते थे।"

इस व्यंग्य की ओर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। सब चाय पी रहे थे। ये दोनों भी उसमें सम्मिलित हो गए। मोहनलाल का परिवार भी आया हुआ था तथा श्रीमती और श्रीमान् मेकार्थर भी चाय पर विराजमान थे। श्रीमती मेकार्थर आज

ही दिल्ली आई थीं। प्रोफेसर नाकोव भी उपस्थित था।

अविनाश जब सोम के फेडरल कोर्ट के मुकदमे के समय अमेरिका गया था तो उसकी भेंट श्रीमती मेकार्थर से भी हुई थी। उसे उपस्थित देख वह उसको पहचान गया था। उसने श्रीमती मेकार्थर को नमस्कार कर पूछा, "कहिए मुझ पहचाना ?"

"बहुत अच्छी तरह। तो आप भी मिस्टर सोम के परिवार से सम्बन्धित हैं ?"

"सम्बन्धित न होता तो इनका मुकदमा देखने इतनी दूर कैसे जाता ?"

"डॉक्टर सोम तो न जाने कैसा डेविल है, इन्होंने मेरे पति पर जादू कर दिया है।"

अन्य सभी को तो यह सुनकर हँसी आ गई किन्तु मेकार्थर उनकी हँसी में सम्मिलित नहीं हो सका। अविनाश की दृष्टि से यह भी छिपा नहीं रह सका। इस कारण उसने हँसते हुए कहा, "तो आप मिस्टर मेकार्थर को उस डेविल के पंजे से छुड़ाने के लिए आई हैं ?"

"आई तो हूँ, किन्तु उसने तो मुझे यहीं रोके रखने के लिग जाल तान दिया है।"

"ओह ! सोमजी ! यह तो ठीक नहीं है। अपने मित्र की पत्नी के साथ इस प्रकार का व्यवहार अनुचित है।"

"भाई साहब ! बात इस प्रकार नहीं है। इनका मेरा परिचय तो अमेरिका का ही है। वहाँ मेरे प्रति इनका जो आकर्षण था उसके कारण ही ये यहाँ खिंची चली आई हैं। हाँ, अब इनके आने पर मेकार्थर को सुख प्राप्त हो जाए, मैं इसके लिए ही यत्न कर रहा हूँ।"

श्रीमती मेकार्थर बोली, "परन्तु मिचल तो वहाँ है ?"

मिचल उसके लड़के का नाम था।

मेकार्थर बोला, "तुम यदि यहाँ रहने का विचार कर लो तो मिचल को भी यहीं बुला लेंगे।"

मिली बोली, "यही तो मैं कह रही हूँ कि डॉक्टर सोम मुझे यहाँ रखने के लिए जाल बिछा रहे हैं।"

इन बातों में चाय भी समाप्त हो गई। मंगलानन्द उठकर अपने कार्यालय की ओर गया तो मोहनलाल भी उसके साथ ही चल दिया। अम्बा जब उठकर सरस्वती के साथ उसके कमरे की ओर जाने लगी तो रामिणी उठी और उसने कहा, "मैं आपसे मिलने के लिए आई हूँ।"

"एकान्त में अथवा बहिन अम्बा के सामने भी बात हो सकती है ?"

"बहिन अम्बा के सामने बात करने में भी मुझे कोई आपत्ति नहीं है।"

इस प्रकार रामिणी भी उनके साथ ही उनके कमरे में चली गई। वहाँ पहुँचकर रामिणी ने अपनी शारीरिक और मानसिक दशा का वर्णन कर दिया। फिशर

के साथ हुए वार्तालाप को भी उसने दोहरा दिया।

"अब मुझे क्या करना चाहिए ?" उसका प्रश्न था।

"ऐसे व्यक्ति के साथ तो तुमको एक क्षण भी नहीं रहना चाहिए। जो अपने कर्म का फल भोगने के लिए तैयार न हो उसे मनुष्य नहीं शैतान माना जाता है। तुम उसका विश्वास कर अभी तक उसके साथ रह रही थीं, यही तुम्हारी बहुत बड़ी भूल थी।"

"पेरिस में तो मैं अपने निर्वाह के लिए एक फर्म में क्लर्क का कार्य करती थी। वहाँ मैं विश्वविद्यालय में सान्ध्यकालीन कक्षाओं में पढ़ती थी। प्रोफेसर जब भारत आने लगे तो इन्होंने मुझे साथ चलने के लिए कहा। इन्होंने वचन दिया था कि ये भरण-पोषण का व्यय वहन करेंगे। किन्तु अब वे उसे अस्वीकार करते हैं।"

"क्यों ?"

"वह मेरे साथ सहवास करना तो चाहता है किन्तु सन्तान नहीं चाहता। मैं पहले निरोधक ओषधि का सेवन किया करती थी। एक दिन अविनाश ने कहा कि वह यदि इस कर्म का स्वाद जानता होता तो मुझे पिल का सेवन करने के लिए नहीं कहता।

"उस स्वाद के विषय में जब मैंने पूछा तो मुझे बताया गया कि जिस प्रकार मिठाई के स्वाद को चखकर ही जाना जा सकता है, सुनकर नहीं तो मुझे इसका ज्ञान हुआ और मैंने जब बिना ओषधि लिये सहवास किया तो दोनों में अन्तर को पहचाना। मिस्टर फिशर भी उसका आनन्द अनुभव करते थे। अतः मैंने उस दिन से गोली खानी बन्द कर दी। उसका परिणाम जब प्रकट हुआ तो मैंने उनको उसकी सूचना दे दी। वह चाहते हैं कि मैं गर्भपात करा लूँ, अन्यथा वे मेरा और मेरे बच्चे का पालन-पोषण करने में असमर्थ हैं।

"मैं इससे बहुत परेशान हो गई हूँ। मैं उनको कनॉट प्लेस जाने के लिए बीच में छोड़ इधर ही आ रही थी कि मार्ग में अविनाश मिल गए। उनका कहना था कि आप मुझे मार्ग सुझा देंगी।"

"आपको किस प्रकार की सहायता चाहिए ?"

"मैं आप लोगों की योजना को समझने लगी हूँ। यदि मैं यह कहूँ कि डॉक्टर फिशर की अपेक्षा मैं अधिक समझती हूँ, तो यह अतिशयोक्ति न होगी। मेरा गणित का ज्ञान फिशर से अधिक है, अतः मैं गणित के समीकरण सरलता से और शीघ्रता से समझ तथा कर लेती हूँ। इस कारण मैं अभी यहीं रहना चाहती हूँ और दूसरे अभी मेरे पास पेरिस जाने के साधन भी नहीं हैं। न ही इस अवस्था में मैं वहाँ कुछ अधिक काल तक कोई सेवाकार्य ही कर पाऊँगी।"

सरस्वती ने सुझाव दिया, "तो यहाँ विवाह कर लो।"

"किससे ?"

"किसी भले पुरुष से।"

"कहाँ मिलेगा, ऐसा भला पुरुष ?"

"यदि तुम अपने विवाह के लिए अपना बीमा कराना चाहो तो मैं तुम्हारी सिफारिश कर सकती हूँ। अविनाश भैया यही कार्य करते हैं।"

"परन्तु मैं अपनी पसन्द का पुरुष चाहूँगी।"

"वह तो हो जाएगा। अपनी पसन्द को शब्दों में व्यक्त कर बीमे की शर्तों में लिखकर देना होगा, उसके साथ ही कोई साक्षी भी प्रस्तुत करना होगा।"

"ये दोनों ही बातें तो मेरे लिए अति कठिन हैं।"

"यदि अपने मन को उदार रखोगी तो कुछ भी कठिन नहीं है।"

"ठीक है, मेरा उद्धार किस प्रकार हो सकता है उसके लिए उनकी क्या शर्तें हैं तनिक पता कर दीजिए।"

"वह तो पता कर दूँगी। यदि कहो तो अभी बुलाकर पता करवा देती हूँ किन्तु सब-कुछ सत्य-सत्य बताना होगा ?"

"करिए, पता करके मुझ पर कृपा कीजिए।"

सरस्वती ने घण्टी का बटन दबाया और स्पीकर में बोली, "यदि अविनाश बाबू हों तो उनको मेरे कमरे में भेज दो।"

दो मिनट में ही अविनाश उपस्थित हो गया। बोला, "सरस्वती बहिन ने बुलाया है ?"

"हाँ भैया ! मिस रामिणी आपके यहाँ बीमा कराना चाहती हैं।"

"हाँ, मैंने सुना है कि इनका मिस्टर फिशर से झगड़ा हो गया है। ये कदाचित् यहीं स्थायी रूप से रहना चाहती हैं।" फिर उसी ने आगे कहा, "मुझे इन्होंने कुछ बताया तो नहीं था किन्तु फिर भी जो कुछ मैं समझ पाया हूँ उसमें दो कठिनाइयाँ होंगी। एक तो यह कि हमारी कम्पनी में इनकी जमानत कौन देगा और दूसरा यह कि अपने भावी पति के प्रति इनके व्यवहार का विश्वास कौन दिलाएगा ?"

"जहाँ तक आपकी कम्पनी के सम्मुख जमानत का प्रश्न है, वह तो मैं दे दूँगी। शेष तो जब इसका बच्चा होगा उससे इसके पतिदेव का जैसा व्यवहार होगा वही इसका जामन हो सकेगा।"

"ठीक है, मैं इनका बीमा का प्रस्ताव फार्म दे दूँगा। ये उसको भली प्रकार पढ़ लें और फिर आपसे परामर्श कर बीमा करा दें तो हम विवाह तक इनका व्यय और विवाह का भी सारा व्यय करेंगे। वह सब हमें बाद में मिल जाएगा। इसकी जमानत आपको देनी होगी। शेष यह अपने पति से स्वयं निपट लें।"

"ठीक है, कल प्रातःकाल जब आप बाबा की कक्षा में आएँ उस समय फार्म लेते आइए। मैं यत्न करूँगी कि उसी समय भरकर आपको दे दिया जाए।"

अविनाशचन्द्र गया तो सरस्वती ने कहा, "यदि ईमानदारी का व्यवहार

करोगी तो भविष्य में सुख पाओगी।''

रामिणी सरस्वती से बातें करके अपने स्थान पर चली गई। फिशर तब तक नहीं पहुँचा था। कोठी की मालकिन ने आज इस नये व्यवहार को अनुभव किया था। छः मास की अवधि में आज उसने पहली बार इन दोनों को पृथक् आते देखा था। साथ ही नारी सुलभ स्वभाव के कारण वह इस गृहिणी से परिचय भी प्राप्त करना चाहती थी, जिसका कि उसको अब तक अवसर मिला ही नहीं था। अब उसको अकेले लौटते देखा तो वह भी अपने कमरे से बाहर निकलकर आई और रामिणी के कमरे के बाहर जाकर बोली, ''बहिनजी ! मैं आ सकती हूँ ?''

रामिणी को भारत में रहते हुए काफी दिन हो गए थे। वह अब इतनी हिन्दी जानती थी। इसलिए उसने उसकी बात समझकर उत्तर दिया, ''हाँ, आइए।''

''मैं तो बहुत दिनों से आपसे परिचय बढ़ाने की बात सोच रही थी। परन्तु कभी अकेले मिलना नहीं हुआ। आपके पति सदा आपके साथ ही रहते थे।''

रामिणी बोली, ''मैं हिन्दी कम ही समझती हूँ।''

''और अंग्रेजी ?''

''बिल्कुल भी नहीं।''

''तब तो आप नित्य एक घण्टा मेरे साथ बैठकर हिन्दी में बात किया करिए, इस प्रकार आप जल्दी हिन्दी सीख जाएँगी।''

रामिणी ने उसकी बात को समझकर कहा, ''धन्यवाद ! मैं फ्रांस की रहने वाली हूँ।''

''कोई कष्ट ?'' श्रीमती सेठी ने भी छोटे-छोटे वाक्य बोलने आरम्भ किए।

''बहुत।'' अकस्मात् रामिणी के मुख से निकल गया।

कहने के उपरान्त रामिणी अनुभव करने लगी थी कि उसने आवश्यकता से अधिक कह दिया है। इस कारण उसने बात बदलने की दृष्टि से कहा, ''ऋतु···।''

''हाँ, यहाँ भारत में ऋतु तेज होती है। बहुत गरम भी और बहुत ठण्डी भी। दिल्ली का वातावरण ऐसा ही होता है।''

रामिणी श्रीमती सेठी की बात समझ रही थी। उसे अब यह भी आभास हो गया था कि किसी अपरिचित के साथ स्पष्ट वार्तालाप नहीं करना चाहिए।

''आपके पति ?''

''काम से गए हैं।''

''आपने भोजन कर लिया है ?''

''अपनी एक मित्र के घर कर आई हूँ।''

''मेरे पति आप लोगों से मिलकर बहुत प्रसन्न होंगे।''

''हम तो यहाँ पढ़ाई के लिए आए हैं। काम बहुत। फिर भी कहूँगी।''

"रविवार को आप हमारे यहाँ भोजन कीजिए।"

"पति···।" इतना कहकर वह रुक गई और श्रीमती सेठी की ओर देखने लगी।

श्रीमती सेठी इस झिझक का अभिप्राय नहीं समझ पाई। वह रामिणी का मुख देखने लगी। कुछ विचारकर उसने कहा, "मैं अपने पति को कहूँगी कि वे स्वयं आपके पति को निमन्त्रण दें।"

"धन्यवाद।"

उस दिन फिशर बहुत विलम्ब से लौटकर आया। तब तक रामिणी बिस्तर पर लेट गई थी। उस सायंकाल जब श्रीमती सेठी चली गई तो रामिणी बिस्तर पर लेटे ही विचार करने लगी थी कि क्या यह ठीक नहीं होगा कि इस महिला को अपनी सहायिका बना लिया जाए। फिर उसने सोचा कि पहले अविनाश के प्रस्ताव को देख लिया जाए उसके बाद ही आगे की बात पर विचार किया जा सकता है। ऐसा विचार कर वह सो गई।

फिशर के पास कमरे की चाबी थी। उसने ताला खोला और भीतर आ गया। रामिणी को तो तब पता चला जब वह शयन-कक्ष में आ गया। उसने फिशर को देख कह दिया, "मैं बहुत थकी हुई हूँ, कृपया मुझे सोने दीजिएगा।"

"क्या करती रही हो जो इतनी थकान चढ़ गई है?"

"बहुत पैदल चलना पड़ा है। मैं वहाँ से यहाँ पैदल ही आई थी।"

"क्यों उन्होंने किसी सवारी का प्रबन्ध नहीं कर दिया?"

"आज वहाँ बहुत अतिथि थे। घर की तीनों गाड़ियाँ व्यस्त थीं।"

"कौन-कौन थे?"

"मिस्टर मेकार्थर की पत्नी आई है। वह डॉक्टर की भी फ्रेण्ड है, दोनों अमेरिका से ही परिचित हैं। डॉक्टर की बहिन और बहनोई थे। एक और सज्जन भी थे जिनको मैं जानती नहीं। प्रोफेसर नाकोव भी थे।

"सरस्वती बहिन ने कहा भी था कि यदि मैं प्रतीक्षा करूँ तो वे गाड़ी आने पर उसमें मुझे भेज देंगी। किन्तु मैंने पैदल आना ही उचित समझा।"

"तो?"

"तो कुछ नहीं। अब आप सो जाइए।"

फिशर उससे किसी प्रकार का समझौता करने का विचार कर रहा था। किन्तु इस समय बात हो नहीं पाई। फिशर ने भी यही उचित समझा कि अब अगले दिन ही इस विषय पर बात होगी। यह सोचकर वह भी अपने बिस्तर में घुसकर सो गया।

अगले दिन बाबा की कक्षा के उपरान्त अविनाश ने एक लिफाफा रामिणी को दिया। फिशर ने जब देखा तो उसने रामिणी से पूछा, "यह क्या है?"

"एक प्रस्ताव है।"

"विवाह का?"

"हाँ।" रामिणी ने इतना कहा और उस कमरे से बाहर हो गई।

रामिणी के जाने पर फिशर ने अविनाश से ही पूछा, "मिस्टर अविनाश ! वह क्या था?"

"कुछ व्यावसायिक है। व्यक्तिगत है।"

फिशर इतना तो जानता था कि अविनाश की कम्पनी विवाह का प्रबन्ध करती है। इससे उसने यही अनुमान लगाया कि रामिणी के लिए कोई विवाह का ही प्रस्ताव होगा। इतना विचार आते ही वह मौन हो गया। वह भी उस कमरे से बाहर निकल गया।

फिशर के बाहर निकलने तक रामिणी सरस्वती के साथ उसके कमरे में पहुँच चुकी थी। रामिणी को वहाँ न देख और उसकी प्रतीक्षा करना उचित न समझ फिशर अपनी कार में बैठा और वहाँ से चल दिया।

रामिणी ने बीमे का आवेदन-पत्र पढ़ा और उसके नियम तथा शर्तों को समझा और वर्तमान परिस्थिति में उसको सबसे उपयुक्त प्रस्ताव मान उसने उसकी खाना-पूर्ति की, यथास्थान हस्ताक्षर किए और सरस्वती के भी हस्ताक्षर कराकर वह फार्म उसने सरस्वती को ही दे दिया।

बाहर आने पर उसको पता चला कि फिशर वहाँ से जा चुका है। उसको भी कुछ ऐसी ही आशा थी। रामिणी सरस्वती की गाड़ी में ही विद्यालय गई। वहाँ पहुँचते ही डॉक्टर सोमदेव ने उसको कुछ काम सौंपा और वह उसमें लीन हो गई।

सोम ने रामिणी को कार्य सौंपा और स्वयं वह मेकार्थर के पास चला गया। वहाँ वे दोनों पति-पत्नी उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। सोम ने मेकार्थर को कहा, "मित्र ! अब हम उस स्थिति में पहुँच गए हैं जिस स्थिति में सरकारी हस्तक्षेप से पहले तक थे। इसके नोट्स तुम्हारे पास हैं और तुम सारी बात को समझ भी गए हो, इसलिए अब तुम जा सकते हो। मैंने कल डॉक्टर नाकोव से भी कहा है कि जिस बात को जानने के लिए उसकी सरकार एक गम्भीर अपराध करने को तैयार हो गई थी, वह अब उसको विदित हो गया है। वह स्वयं भी पूर्वापेक्षा इस विषय को अधिक समझ गया है, यदि वह चाहे तो वह भी जा सकता है।

"मेरी बात सुनकर वह अपनी सरकार से बातचीत करने के लिए गया हुआ है। मैं आपको भी यही परामर्श दूँगा कि यदि आप चाहें तो अमेरिका लौट सकते हैं। वहाँ जाकर अपनी सरकार की सहायता से इस अनुसन्धान-कार्य को आगे चला सकते हैं।

"इसके अतिरिक्त अब आप उन सिद्धान्तों को भी समझ गए हैं, जिनके आधार पर मैं यहाँ तक पहुँच पाया था। बाबा के अध्यापन से वह सब आप सीख गए हैं।"

श्रीमती मेकार्थर ने पूछा, "आप क्या यह सब तमाशा अब बन्द करने वाले हैं ?"

"नहीं, यह तो मेरे जीवन का कार्य है। मेरी उत्कट इच्छा है कि एक दिन अपना एण्टीना वाला कोट पहनकर पाँच हजार फीट की ऊँचाई पर उड़ता हुआ आधे घण्टे में पेरिस पहुँच जाऊँ। मेरी बुद्धि कहती है कि यह सम्भव है। यह पहले भी सम्भव हो चुका है। मेरा मन कहता है कि इसी प्रकार के वस्त्र पहनकर नारद जी संसार में भ्रमण करते हुए देवताओं का कार्य करते रहे होंगे।"

"तो क्या आप इस आनन्द और सुविधा के कार्य में किसी अन्य को साझीदार बनाना नहीं चाहते ?" श्रीमती मेकार्थर ने ही प्रश्न किया।

"नहीं, ऐसी बात नहीं है। विज्ञान के सम्बन्ध में तो मैं पूरा डैमोक्रेट हूँ। मैं तो किसी श्रमिक को भी इसी प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराने में स्वयं को धन्य समझूँगा।"

"तो फिर अपने मित्र और पुराने साथी को इससे पृथक् क्यों कर रहे हैं ?"

"मित्र की पत्नी को विरह-वेदना से बचाने के लिए।"

"परन्तु मैंने तो निर्णय कर लिया है कि मैं भी अब भारत आकर ही रहूँगी। मेकार्थर का कहना है कि ये मिचल को भी यहीं बुला रहे हैं और उसको भी इसी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट करा देंगे। इन्होंने बताया है कि उसकी आयु के दो विद्यार्थी यहाँ पहले ही अध्ययन कर रहे हैं।"

"हाँ, मेरा भानजा महेन्द्र और अविनाश का पुत्र रवीन्द्र यहाँ पढ़ रहे हैं। दोनों की प्रगति सन्तोषजनक है।"

"यही सोचकर मैंने कल यहाँ से जाने का निश्चय कर लिया है और एक मास तक मैं मिचल को लेकर भारत लौट जाऊँगी।"

"मुझे इससे बहुत प्रसन्नता होगी।"

इस प्रकार मेकार्थर के विषय में निश्चय हो गया।

प्रोफेसर नाकोव की बात कुछ और ही थी। वह अपनी बात का निश्चय करने के लिए रूसी दूतावास गया हुआ था। वह प्रातः का पाठ समाप्त कर दूतावास गया था, वहाँ से वह मध्याह्नोत्तर तीन बजे लौटा। वह सीधा प्रयोगशाला में चला गया। प्रयोगशाला में सोम के साथ अन्य विद्यार्थी भी कार्य कर रहे थे।

तब सोमदेव अपने साथियों को समझा रहा था। उसने कहा, "अब हमारे सम्मुख दो समस्याएँ हैं। एक तो यह कि वर्तमान एण्टीना अपने चारों ओर दस घन सेण्टीमीटर स्थान पर अपना प्रभाव रखता है। हमें ऐसा एण्टीना बनाना है जो कम-से-कम चार घन मीटर के स्थान को प्रभावित कर सके। तब एक व्यक्ति के उड़ने के लिए तनाव रहित पर्याप्त स्थान निर्मित किया जा सकेगा।"

तभी नाकोव वहाँ पहुँच गया। उसे देख अपना वक्तव्य समाप्त करते हुए

सोमदेव ने कहा, "आप लोग अपने ज्ञान के आधार पर विचार कीजिए कि हम अपने इस यन्त्र में किस प्रकार सुधार कर सकते हैं।"

सोम प्रोफेसर नाकोव को लेकर अपने स्टडी-रूम में चला गया। वहाँ बैठते ही सोम ने कहा, "बताइए, आपके जाने का क्या निश्चय हुआ ?"

"यहाँ की सारी स्थिति के बारे में समझा देने पर राजदूत ने फोन द्वारा मास्को से सम्पर्क स्थापित किया। यहाँ की पूर्ण परिस्थिति बताई तो वहाँ से कहा गया कि मैं अपने सब कागजात तैयार करके पहले मास्को भेज दूँ। उनको देखने के बाद ही मास्को वाले अन्तिम निर्णय से अवगत कराएँगे।"

"ठीक ही तो है।"

"क्या ठीक है ?" नाकोव विस्मय कर रहा था।

"यही कि यदि वहाँ के वैज्ञानिकों की समझ में कुछ नहीं भी आया तो वे आपके द्वारा पुनः उसका समाधान करवा लेंगे। यह आपके यहाँ रहते ही सम्भव हो सकता है।"

"आप क्या इसे ठीक समझते हैं ?"

"इसमें गलत है ही क्या ?"

"मैंने तो यह कहा था कि मुझे यहीं रहने दिया जाए। जब तक आपकी खोज का अन्तिम चरण नहीं आ जाता तब तक मुझे आपकी सहायता करते रहना चाहिए। परन्तु उसे स्वीकार नहीं किया गया। मास्को से आज्ञा है कि मुझे रूस लौटने के लिए तैयार रहना चाहिए।"

"किन्तु आप यहाँ किसलिए रहना चाहते हैं ?"

"एक तो आपके विषय में मेरी रुचि है। परन्तु उससे भी अधिक मुझे बाबा के सैद्धान्तिक विवेचन ने बाँधकर रखा हुआ है।

"डॉक्टर साहब ! उस दिन बाबा भाषा के आविष्कार की बात बता रहे थे। उन्होंने बहुत ही सरल प्रक्रिया इस आविष्कार के विषय में बताई थी। किन्तु आज का विद्वान् तो यह भी नहीं समझ सका कि इस संसार में कुछ नहीं में से यह सब कुछ कैसे बन गया है। कुछ हो तो उसमें से ही नवीन बन सकता है। जब बाबा ने यह कहा तो मैंने यूरोपियन मीमांसकों की बात बता दी कि यह 'प्रकृति' है। उस समय बाबा ने कहा था उनकी 'प्रकृति' और मेरा परमेश्वर पर्यायवाची हो गए।

"बाबा आगे बोले कि विवाद तो इस बात का ही रह गया कि प्रकृति और परमेश्वर के क्या गुण हैं।"

सोम समझता था कि वैदिक मीमांसा अकाट्य युक्ति पर आधारित है। इसे रद्द नहीं किया जा सकता। तो भी वह नाकोव को अपना देश छोड़ने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहता था। वह कह नहीं सका कि उसके रूस जाना अस्वीकार कर देने पर भी क्या राजनीतिक विषमताएँ उत्पन्न न हो जाएँगी। वह अपने

इस छोटे से, जो अभी शिशु मात्र विद्यालय को राजनीति की लपेट में नहीं आने देना चाहता था। इस कारण उसने कहा, "प्रोफेसर साहब ! इस सामान्य-सी बात के लिए आप अपने देश और बाल-बच्चों को छोड़कर किसका कल्याण करेंगे ?"

"मैं तो किसी को भी नहीं छोड़ रहा हूँ। यह तो देश, जिसे मैं अपना समझता था वह मुझे छोड़ रहा है।

"इन सब बातों को छोड़ भी दिया जाए तो भी मैं कोई भेड़-बकरी नहीं कि जो चाहे मुझे कान से पकड़कर जिधर चाहे उधर ले जाए।"

"परन्तु आपको कहीं और ठिकाना भी तो बनाना पड़ेगा ? क्या वहाँ प्रतिबन्ध नहीं होंगे ?"

"तो क्या भारत मुझे नागरिकता प्रदान नहीं करेगा ?"

"मैं इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता। मेरी सम्मति तो यही है कि कोई निर्णयात्मक पग उठाने से पूर्व अविनाश भैया से परामर्श कर लो। वे इन विषयों को भली-भाँति जानते हैं। वे अर्थशास्त्री भी हैं। देश त्यागने पर खाने-पीने की बात का समाधान भी वही सुझा पाएँगे।"

"ठीक है, मैं अभी उनको फोन करता हूँ। समय निश्चित करके फिर उनको मौखिकरूपेण अपनी बात बताऊँगा।"

सोमदेव समझ रहा था कि यह भी कैसा प्रजातन्त्र है। इससे तो राजाओं का राजतन्त्र कहीं अच्छा था।

: ९ :

उस दिन जब सोमदेव विद्यालय से लौटा तो उसकी पत्नी ने उससे पूछा, "प्रो० फिशर और रामिणी ने भी आपके ज्ञान-विज्ञान का कुछ सीखा कि नहीं।"

"रामिणी तो हमारी टीम में सबसे अधिक गणित की ज्ञाता है। उसे इस कार्य में इतना आनन्द आता है जितना मछली को जल में।"

"मेरे विचार में आपके इस शिशु विद्यालय में विस्फोट होने वाला है।"

"क्यों, क्या हुआ है ?"

"रामिणी और फिशर में अनबन हो गई है। आपने ध्यान नहीं दिया कि आज रामिणी मेरी गाड़ी में विद्यालय गई थी।"

"हाँ, देखा तो था किन्तु इसका कोई विपरीत अर्थ भी हो सकता है, इस ओर मेरा ध्यान नहीं गया था।"

"उसने आज अविनाशजी की कम्पनी में अपना पति ढूँढ़ने के लिए अपना बीमा करवा लिया है।"

"यह तो होना ही था। बिना बुद्धि और आत्मा के सहयोग के स्त्री-पुरुष सम्बन्ध कभी स्थायी हो ही नहीं सकते। केवल यौन आनन्द दाम्पत्य जीवन को स्थायी आधार नहीं दे सकता।"

सरस्वती मुस्करा दी। उसने पूछा, "जब मैंने आपके व्याख्यान के उपरान्त आपको विवाह के लिए आमन्त्रित किया था तब आपके मन में क्या था ?"

"जो था वह मैंने उसी समय बता दिया था। तुम्हें स्मरण हो अथवा नहीं, किन्तु मुझे सारी घटना पूर्णतया स्मरण है।"

सरस्वती ने बात बदलकर कहा, "आपके विद्यालय के विस्फोट का क्या होगा ? फिशर और रामिणी के मकान मालिक रामनाथ सेठी की कोठी में यदि यह बात विख्यात हो गई तो सेठी जैसा व्यक्ति आपके इन विदेशी विद्यार्थियों के विरुद्ध बवण्डर खड़ा कर देगा।"

"तो फिर इन दोनों में सन्धि करवा दो।"

"यह अब सम्भव नहीं दीखती।"

"अच्छा मैं कल इनसे बात करूँगा।"

उसके बाद सोमदेव मेकार्थर के साथ हवाई पत्तन पर चला गया।

सायंकाल की चाय के समय अविनाश आया तो उसने पूछा, "रामिणी इस समय कहाँ मिलेगी ?"

"अपनी कोठी पर ही होनी चाहिए। हाँ, यदि दोनों में सुलह हो गई तो सम्भवतया किसी रेस्टोराँ में चाय पी रहे होंगे।"

"मैंने साढ़े पाँच बजे एक व्यक्ति को बुलाया है। वह आ जाय तो बात आज ही तय हो जाएगी।"

"भाई साहब ! आपने तो तुरन्त कल्याण कर दिया है।"

"हाँ भाभी ! हमारे पास दोनों पक्षों की सूचियाँ तथा उनका वृत्तान्त तैयार रहता है। जब भी कोई नया प्रस्ताव आता है तो हम प्रत्याशियों के गुणों का मिलान करते और फिर अनुकूल गुण वाले प्रत्याशियों को मिलने का अवसर देते हैं। अधिकांश संयोग तो सफल ही सिद्ध हुए हैं।

"रामिणी के लिए हमारी सूची में दो व्यक्ति उपयुक्त थे। उनमें से एक के साथ मैंने आज चाय का प्रबन्ध किया है। मैं समझता था कि वह यहाँ होगी, इसीलिए यहाँ आया था।"

"नहीं, आज वह मेरे साथ नहीं आई।"

"तो मैं उसके निवास-स्थान पर जाता हूँ।"

अविनाश उठकर बाहर ड्राइंग-रूम की तरफ जाने लगा कि उधर से रामिणी ने प्रवेश किया।

उसे देख, प्रसन्न होता हुआ अविनाश बोला, "बहुत लम्बी आयु पाई है तुमने। मैं तुम्हारे निवास पर ही जा रहा था।"

"क्यों कुछ काम बना ?"

"अभी तो दिल्ली के एक होटल में चाय का निमन्त्रण है, शेष तो तुम पर ही

निर्भर करेगा।"

"परन्तु मैं स्वयं को इस 'भेंट' के लिए तैयार नहीं समझती। आखिर कुछ तो मैकअप करना ही पड़ेगा।"

"मैं समझता हूँ कि ईश्वर ने वह पहले ही पर्याप्त कर दिया है। अब परमात्मा की कारीगरी में गड़बड़ मत करो।"

सरस्वती हँस पड़ी और रामिणी की पीठ ठोककर बोली, "सब ठीक है। वहाँ से यहीं आना, मैं प्रतीक्षा करूँगी।"

इस प्रकार रामिणी अविनाश के साथ चली गई।

चाय का समय हो गया था। सब ड्राइंग-रूम में एकत्रित होने लगे। बाबा ने आते ही पूछा, "सोम नहीं आया?"

सरस्वती बोली, "आए तो थे किन्तु वे मेकार्थर दम्पती के साथ गए हैं।"

"यों ही अपना अमूल्य समय गँवा रहा है। विद्वान् ब्राह्मण को तो अपने ज्ञान-विज्ञान के कार्य के अतिरिक्त किसी अन्य बात से सम्बन्ध ही नहीं रखना चाहिए।"

बाबा और नाकोव सोफे पर बैठ गए। तब सरस्वती ने पूछा, "बाबा! किसी विद्वान् ब्राह्मण को अपनी पत्नी से भी सम्बन्ध रखना चाहिए अथवा नहीं?"

बाबा हँस पड़ा। बोला, "पत्नी से सम्बन्ध तो अध्यात्म का विषय है।"

सबको हँसी आ गई।

प्रोफेसर नाकोव ने एक बात और कह दी। वह बोला, "सरस्वती बहिन! मैं तो अविनाश भाई की कम्पनी के लिए एक ग्राहक लाया था।"

"आप चाय पीजिए। फिर प्रतीक्षा कीजिए। दो घण्टे बाद वे आने वाले हैं।"

मंगलानन्द भी अपने कार्यालय से आ गया और चाय आरम्भ हो गई। पत्नी का सम्बन्ध आध्यात्मिक है, यह बात मंगलानन्द की समझ में नहीं आई थी। इस समय अवसर पाकर उसने बाबा से पूछा, "पिताजी! यदि पत्नी अध्यात्म का विषय है तो संसार में सांसारिक तो कुछ रहा ही नहीं?"

"हाँ।" बाबा ने अपनी बात स्पष्ट करते हुए कहा, "किन्तु मैंने यह नहीं कहा था कि पत्नी अध्यात्म का विषय है। मेरा तो यह कहना था कि पत्नी से सम्बन्ध तो अध्यात्म का सम्बन्ध है। पत्नी एक हिरण्यमय पात्र है जिसमें परब्रह्म छिपा हुआ है। यों तो उपनिषद् का कथन है कि यह सब संसार ही स्वर्णमय पात्र है और उसके पीछे ब्रह्म छिपा हुआ है। पत्नी तो संसार की प्रतिनिधि मात्र है।"

मंगलानन्द ने विषय ही बदल दिया। उसने पूछा, "सरस्वती! रामिणी नहीं आई?"

"पिताजी! आई थी। प्रातःकाल बाबाजी की कक्षा में भी आई थी। इस समय भी आई थी। अभी थोड़ी देर पहले ही वह अविनाश भैया के साथ कहीं गई है।"

"फिशर भी यही कहने मेरे पास आया था।"

"क्या कह रहा था ?"

"यही कि अविनाश रामिणी को बरगला रहा है।"

"हाँ, वह उसे प्रेरणा तो दे रहा। किन्तु उसे बरगलाना नहीं कहा जा सकता। बरगलाना तो पथभ्रष्ट करना है।"

"यह अपना-अपना दृष्टिकोण है। कौन-सा सन्मार्ग है और कौन-सा कुमार्ग, यह तो मनुष्य के अपने खड़े होने पर निर्भर करता है। जिसको वह ठीक दिशा मानता है उसके विपरीत जाने को ही वह अविनाश द्वारा रामिणी को बरगलाए जाने की बात कह रहा था।"

"हाँ, यह तो है। रामिणी आज उस दिशा के विपरीत चल पड़ी है, जिस दिशा को फिशर उसको ले जाना चाह रहा था। परन्तु यह अविनाश भैया की करनी का फल नहीं है। इसमें कारण कोई अन्य ही है। आज उसने विवाह का बीमा करवा लिया है।"

"फिशर भी यही कह रहा था। वह मुझसे पूछना चाह रहा था कि इस स्थिति में वह अपने अधिकारों की रक्षा किस प्रकार कर सकता है ?"

"क्या हैं उसके अधिकार ?"

"उसका कहना था कि पिछले नौ मास में वह रामिणी पर दो हजार फ्रैंक व्यय कर चुका है।"

"आपने उसको क्या सम्मति दी है ?"

"मैंने जो सम्मति उसको दी है उससे उसको तृप्ति नहीं हुई। मैंने उसको कहा है कि पिछले नौ मास में उसने ढाई सौ से भी अधिक रातें रामिणी के साथ बिताई हैं। मैंने उससे कहा कि इस दृष्टि से तो दो हजार फ्रैंक एक रात के चार फ्रैंक से भी कम ही बैठते हैं। इतनी सुन्दर रमणी के लिए यह उजरत तो कम ही है।"

सहसा नाकोव के मुख से निकल गया, "बहुत ही दुष्ट है वह !"

तभी गार्गी बोली, "बाबा, ऐसे व्यक्ति को तो अपने विद्यालय से निकाल देने की आज्ञा कर दीजिए।"

"अभी तक तो किसी ने मेरे पास उसकी शिकायत की नहीं है। यदि किसी ने की तो मैं उसको उचित उत्तर दे दूँगा। परन्तु सरस्वती बेटी ! क्या रामिणी विवाह करना चाहती है ?"

"हाँ बाबा ! इसी भाग-दौड़ में अविनाश भैया उसकी सहायता कर रहे हैं।"

"तब तो अविनाश बहुत कल्याण का कार्य कर रहा है। मैंने इस दृष्टि से कभी उसके विषय में विचार ही नहीं किया था।"

चाय समाप्त हुई तो मंगलानन्द यह कहकर उठ गया कि कार्यालय में कोई उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। गार्गी भी उठ गई। सरस्वती उठकर अपने बच्चे को देखने चल दी। नाकोव बाबा के साथ उनके कमरे में चला गया।

अविनाश और रामिणी रात आठ बजे के लगभग लौटकर आए। रामिणी सीधी सरस्वती के कमरे में चली गई।

बाबा ने चपरासी को बताया हुआ था कि अविनाश आने वाला है और जब वह आए तो उसको सूचित कर दे।

चपरासी ने बाबा को सूचित कर दिया तो बाबा ड्राइंग-रूम में आ गए। नाकोव उनके साथ था। तीनों के बैठ जाने पर नाकोव ने अपनी समस्या अविनाश को बता दी। उसके बाद उसने अविनाश से पूछा, "आप इसमें मेरी क्या सहायता कर सकते हैं ?"

"प्रोफेसर ! यदि कोई अन्य देश होता तो उससे तो लिखा-पढ़ी में ही कई वर्ष लगाए जा सकते थे। परन्तु रूस के विषय में तो कुछ भी नहीं किया जा सकता।"

"इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि मैं भेड़ की भाँति हाँककर रूस ले जाये जाने के लिए तैयार रहूँ ?"

"नहीं, मेरा यह अभिप्राय नहीं है। मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि क्या आप अपने देश की नागरिकता छोड़ने के लिए तैयार हैं ?"

"नागरिकता को तो छोड़ सकता हूँ किन्तु वहाँ मेरी पत्नी और एक पुत्र है।"

"उनकी बात बाद में देखी जाएगी। पहले आप यह बताइए कि आप अमेरिका की नागरिकता स्वीकार कर लेंगे ?"

"वे तो भैंस बुद्धि के हैं, उनमें सम्मिलित होने को तो मन नहीं करता।"

"तो भारत में तो इतना साहस नहीं है कि वह रूस की इच्छा के विरुद्ध कुछ कर सके। अमेरिका को भी आप भैंसा तो नहीं, हाँ बैल कह सकते हैं। इस कारण मेरी तो यही सम्मति है कि इस बैल की सवारी कर लेनी चाहिए। हमारे एक देवता तो बैल की ही सवारी किया करते थे। बैल बलशाली होने के साथ-साथ थोड़ा-थोड़ा बुद्धिशील भी है।"

"ठीक है, आप कुछ करिए। मैं तो अब रूस नहीं जाना चाहता।"

"अपनी पत्नी से परामर्श कर लिया है ? हमारे देश के एक विख्यात कम्युनिस्ट नेता हो चुके हैं। उनका नाम था एम० एन० राय। उन्होंने एक रूसी कन्या से विवाह कर लिया था। बाद में उनकी रूस सरकार से किसी प्रकार कुछ अनबन हुई तो उनको रूस छोड़कर भागना पड़ा। भारत आ गए। वे भारत के नागरिक ही थे। इस कारण यहाँ आने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं हुई। परन्तु उनकी पत्नी ने उनके साथ आना स्वीकार नहीं किया। तब फिर उन्हें यहाँ पुनः विवाह करना पड़ा।"

"ठीक है, मेरे साथ जब ऐसी स्थिति आएगी तब देख लिया जाएगा। मेरी आयु अभी विवाह करने की है।"

"तब ठीक है। मैं यत्न करूँगा। परन्तु इस बात को आप रहस्य ही रखिए

अन्यथा न आपकी खैर है और न हमारी। यह समझ लीजिए।''

''ठीक है, मैं इस विषय में अब मौन रहूँगा।''

''इस पर भी मैं आपको सम्मति दूँगा कि आप अपने राजदूत को यही झाँसा देते रहिए कि आप अपनी पत्नी से मिलने के लिए उतावले हो रहे हैं। परन्तु आप यहाँ का काम छोड़कर जा नहीं सकते क्योंकि कार्य किसी बिन्दु विशेष पर आकर रुक गया है। उसको सुलझाने के लिए डॉक्टर सोमदेव दिन-रात एक कर रहे हैं। इस कारण आप कार्य को छोड़कर जाने में सर्वथा असमर्थ हैं।''

इस समय रामिणी को लिये हुए सरस्वती बाहर ड्राइंग-रूम में आ गई।

उनको आया देख नाकोव जाने लगा। अविनाश बोला, ''प्रोफेसर ! एक शुभ समाचार भी सुनते जाओ।''

''क्या ?'' उत्सुकता से उसने पूछा।

सरस्वती मुस्करा रही थी और उसके साथ खड़ी रामिणी प्रसन्न थी।

अविनाश ने कहा, ''मिस रामिणी का शीघ्र ही यहाँ फाइनेंसर के साथ विवाह होने वाला है।''

''क्यों फिशर को क्या हुआ है ?'' उसने सरस्वती से पूछा।

उत्तर में रामिणी ने कहा, ''वह विवाह करना ही नहीं चाहता।''

''तो तुमको विवाह की बहुत आवश्यकता है ?''

''हाँ, मुझमें सन्तान की लालसा जाग पड़ी है। और बिना विवाह के वह सम्भव नहीं है।''

''हाँ, यह बात तो समझ में आ रही है। पुरुष तो सन्तान कम ही चाहता है। और नारी तीव्र प्रसव-वेदना सहन करने पर भी इसकी इच्छा करती है। मेरी पत्नी भी यही कहा करती थी। परन्तु बेचारी के एक लड़का होने के बाद फिर कुछ हुआ ही नहीं।''

रामिणी मुस्कराती हुई बोली, ''प्रोफेसर, उसको भारत ले आओ। निश्चित ही एक-दो सन्तान और हो जाएँगी। यहाँ उत्पादन क्षमता अपरिमित है।''

: १० :

रामिणी ने सरस्वती को बताया कि उसके साथ विवाह करने वाला, उसकी कोठी की मालकिन श्रीमती सेठी का भाई है।

बाबा ने जब यह सुना तो उन्होंने रामिणी से कहा, ''श्रीमती सेठी तो अपने भाई को बताएगी कि तुम और फिशर वहाँ पति-पत्नी की भाँति रहते हो ?''

''बाबा ! वह तो मैंने पहले ही बता दिया है। मैंने यह भी बताया है कि सम्भवतया मेरे बच्चा होने वाला है, जो निश्चित ही फिशर का होगा।''

''यह जान लेने पर भी उसने तुमसे विवाह करना स्वीकार कर लिया है ?''

''हाँ, बाबा ! बहुत भला व्यक्ति प्रतीत होता है। मैंने उसको बताया कि

फिशर चाहता था कि मैं गर्भपात करा लूँ। किन्तु मुझे यह स्वीकार नहीं था। यह सुनकर उसने कहा कि यदि वह गर्भपात कराने के लिए कहे तो? मैंने कह दिया, यह लगभग असम्भव-सा है।

"क्यों, असम्भव क्यों है? उनका प्रश्न था। उनकी बात सुनकर मेरे मुख से निकल गया कि फिर तो मुझे फिशर के छोड़ने के विषय पर पुनः विचार करना पड़ेगा। उन्होंने सहसा कह दिया कि उनका यह अभिप्राय नहीं था। उनके दो बच्चे पहले भी हैं। उनको बच्चे प्यारे लगते हैं। उनका कहना था कि मेरा व्यवहार उन बच्चों के प्रति माँ का-सा रहेगा तो उन्हें प्रसन्नता होगी।"

"तो तुम अब सेठी की कोठी में जा रही हो?"

"कपूर साहब अर्थात् मेरे होने वाले पति अपनी बहिन श्रीमती सेठी से मिलने गए हैं। उनका कहना है कि मैं अभी रहूँ तो उसी कोठी में किन्तु फिशर से पृथक् रहूँ। इसके लिए वे अपनी बहिन से बात करने के लिए गए हैं। उनका कहना है कि वे मुझे लेने यहाँ आएँगे। विवाह होने के बाद वे मुझे अपनी सिविल लाइन्स वाली कोठी में ले चलेंगे। कल हम न्यायालय में जाकर अपनी विवाह करने की इच्छा व्यक्त करेंगे, उसके बाद नियमानुसार पन्द्रह दिन की प्रतीक्षा के उपरान्त हमारा विवाह होगा।"

रात्रि भोजन का समय हो गया था। मंगलानन्द भी अपने कार्यालय से उठकर वहाँ आ गया था। उन्होंने जब सुना कि रामलाल कपूर के साथ रामिणी का विवाह होने वाला है तो उसने भी बता दिया कि वह उससे परिचित है तथा उसके विषय में मंगलानन्द की धारणा अच्छी है। उसका विश्वास है कि रामिणी उससे विवाह कर सुखी रहेगी।

रामलाल कपूर अपनी बहिन और बहनोई के साथ जब आया तो उस समय तक रात्रि का भोजन समाप्त हो चुका था।

मंगलानन्द ने उनको आते देखा तो उठकर स्वागत करता हुआ बोला, "आइए कपूर साहब! पधारिए। हम लोग आपकी ही प्रतीक्षा में बैठ हैं।"

"हाँ, मैंने कहा तो था कि मैं भोजन के पूर्व आ जाऊँगा और मैं चाहता था कि मिस रामिणी मेरी बहिन के घर ही भोजन करेंगी, किन्तु वहाँ मिस्टर फिशर से झगड़ा हो गया। बहिन की सम्मति थी कि फिशर को कोठी से निकालकर ही मिस रामिणी को लाया जाय।

"उसका परिणाम यह हुआ कि मैंने फिशर को बुलाकर उसे सब बात बता दी। वह सब सुनकर तो उसने मिस रामिणी को गालियाँ देनी आरम्भ कर दीं। वह समझता होगा कि मैं फ्रैंच नहीं जानता। किन्तु मुझे फ्रैंच भाषा का अच्छा ज्ञान है, मैंने उसको उसकी ही भाषा में खूब लताड़ा। अन्त में मैंने इम्पीरियल होटल में उसका प्रवन्ध कर दिया और उसको वहाँ भेजकर ही हम यहाँ आ पाए हैं।"

"इसका अभिप्राय तो यही हुआ कि अभी आप लोगों ने भोजन नहीं किया ?"

"हाँ, वह हम अब घर जाकर करेंगे।"

"यहीं कर लीजिए।"

"जी नहीं, बच्चे वहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं। मेरे बच्चे भी वहीं आए हुए हैं।"

"हाँ, फिर तो आपको जाना ही चाहिए।" मंगलानन्द ने कहा।

रामिणी के इस संयोग पर सब प्रसन्न थे। आज तो बाबा ने भी स्वीकार कर लिया कि परमानन्द की कम्पनी की भी इस संसार में आवश्यकता है।

परन्तु बात यहीं समाप्त नहीं हो गई। अगले दिन प्रातःकाल रामलाल कपूर विवाह सम्बन्धी कागजात तैयार कराने के लिए वकील के पास जाने लगा। वह अपनी कार निकालकर ज्यों ही आगे बढ़ा कि पीछे से उस पर धड़ाधड़ गोलियाँ चल पड़ीं।

कोठी का चौकीदार, जो कुछ दूर पर खड़ा था, उसने फिशर को अपनी जेब से रिवॉल्वर निकालते देख लिया था। वह तुरन्त वहाँ से दौड़ा और उसने पीछे से फिशर को वहीं पकड़ दबोच लिया। उसका परिणाम यह हुआ कि फिशर का कोई भी निशाना ठीक नहीं बैठा। तो भी कार के दोनों टायर फट गए और उसका विण्ड स्क्रीन भी चूर-चूर हो गया।

गोलियों की आवाज सुनकर कोठी के लोग बाहर निकल आए। उन्होंने जब फिशर को चौकीदार की बाँहों में छटपटाता देखा तो सब उसकी ओर लपके। फिशर का रिवॉल्वर छीन लिया गया और उसके हाथ-पाँव बाँधकर रख दिए। थाने में फोन करके रपट लिखा दी गई। टेलीफोन सुनते ही पुलिस आ गई। वहाँ सारी स्थिति देख-समझकर उन्होंने फिशर को बन्दी बना लिया और कपूर की कार के साथ ही उसको भी थाने में ले गए।

फिशर ने जब अपने वक्तव्य में कहा कि वह सोम के विद्यालय का विद्यार्थी है तो सोम को थाने बुलवाया गया। सोम ने फिशर और कपूर का समझौता करवा दिया। उसीने फिशर की जमानत दी और उसको छुड़वा लिया।

बाद में यह पता चला कि फिशर ने पुलिस को बहुत रुपया घूस में दिया था जिसके कारण उसको मुक्ति मिली थी।

सोम उसकी जमानत देकर उसको अपने विद्यालय ले गया। वहाँ ले जाकर उसने उसको बहुत समझाया। उसने विद्यालय में ही नये बने कमरों में से एक कमरा दे दिया। इस प्रकार सारी बात शान्ति से निपट गई।

कपूर और रामिणी का विवाह भी सुख-शान्ति से सम्पन्न हो गया। इस अवसर पर कपूर ने होटल इण्टरनेशनल में बहुत बड़ी दावत का प्रबन्ध किया था।

प्रत्यक्ष में तो यह अनुमान लगाया जा सकता था कि फिशर ने परिस्थिति से समझौता कर लिया है। उस दिन एक विशेष बात यह हुई कि प्रोफेसर नाकोव को

भारत सरकार ने यहाँ की नागरिकता प्रदान कर दी ।

सिमी नाकोव की नागरिकता स्वीकार करते हुए भारत सरकार ने रूस की सरकार को सूचित कर दिया । तब रूसी दूतावास से माँग की गई कि उनका वकील प्रोफेसर नाकोव से बात करना चाहता है । निकट के पुलिस थाने में इस भेंट की अनुमति दे दी गई ।

थाने में जब रूसी दूतावास का वकील आया तो प्रोफेसर ने पूछा, "कहिए वकील साहब ! आप मुझसे किस निमित्त भेंट कर रहे हैं ?"

"एक तो मुझे डॉक्टर सोमदेव के आज तक के कार्य की रिपोर्ट चाहिए।"

"वह तो मैंने पहले ही बनाकर दूतावास भेज दी है । वह आपको वहाँ से मिल जाएगी ।"

"किसके हाथ भेजी है ?"

"डॉक्टर सोम के चपरासी के हाथ । डॉक्टर सोम को भी इसकी जानकारी है ।"

"डॉक्टर ने रोका नहीं ?"

"नहीं, रोकते क्यों ? वहाँ कुछ भी तो गुप्त नहीं है । जितना कुछ मुझे ज्ञात है उतना ही डॉक्टर सोम को तथा अन्यान्य व्यक्तियों को ज्ञात है ।"

"तो फिर आप रूसी नागरिकता क्यों छोड़ रहे हैं ?"

"बस, इसीलिए कि यहाँ तो सब कुछ खुला है, किसी प्रकार का रहस्य नहीं, किन्तु आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं होता ।"

"विश्वास तो तभी होगा जब पूर्ण रहस्य प्रकट हो जाएगा । अर्थात् जब हम स्वयं अपना भाररहित चैम्बर बनाकर आकाश में उड़ान भरने लगेंगे ।"

"ठीक है आप तभी विश्वास करिएगा । मुझे तो आप लोगों द्वारा सदा मुझपर सन्देह की दृष्टि से देखने ने आपकी संरक्षकता छोड़ने की प्रेरणा दी है ।"

"इससे तो हमारे लिए कठिनाई उत्पन्न हो गई है । पहले तो हम समझते थे कि हमारा एक व्यक्ति प्रोजेक्ट में है ।"

"वह तो आप अब भी समझ सकते हैं । यदि आप चाहेंगे तो मैं आपको सारी रिपोर्ट दे दिया करूँगा ।"

"परन्तु वह रिपोर्ट क्या सत्य होगी ?"

"क्या अभी तक की किसी रिपोर्ट को आपने असत्य पाया है ?"

"अभी तक तो उनके आधार पर कोई कुछ समझ ही नहीं पा रहा है ।"

"उसमें रिपोर्ट की ग़लती नहीं । वास्तविकता तो यह है कि आपके यहाँ उन सिद्धान्तों को समझने वाला ही कोई नहीं है । जब इस प्रोजेक्ट का अन्तिम चरण आएगा तब वे सबको समझा दिए जाएँगे ।"

"यही तो हम समझ नहीं पा रहे हैं कि यदि बाद में सब कुछ ही रहस्य प्रकट

किया जाने वाला है तो फिर तुम अपने देश की नागरिकता क्यों छोड़ रहे हो ?"

"मेरे नागरिकता छोड़ने का कारण इस वैज्ञानिक अनुसंधान से किंचिन्मात्र भी सम्बन्ध नहीं है। इसका सम्बन्ध तो रूस के समाज के मिथ्या आधार से है। वह मिथ्या आधार ही एक ऐसा कारण है कि जिससे आप किसी भी व्यक्ति पर विश्वास नहीं कर सकते।

"मास्को में रहते हुए मुझे बाहर के संसार विशेष रूप में भारत के समाज के आधार का ज्ञान नहीं था। उसका ज्ञान होते ही मैं इस समाज में सम्मिलित होने की लालसा करने लगा हूँ। मैंने यत्न किया तो मुझे उसमें सफलता मिल रही है।

"आपके राज्य की अभिलाषा से मेरा कोई विरोध नहीं है। परन्तु मैं उस समाज में नहीं रह सकता जिसने वहाँ के राज्य को समाज पर अनधिकृत रूप से प्रभावित किया हुआ है।

"वहाँ समाज को दास बनाकर रखा हुआ है। मैं वहाँ के दास समाज का सदस्य बनकर नहीं रहना चाहता।"

"परन्तु हमारे यहाँ तो राज्य और समाज एक ही हैं।" वकील साहब ने अपना तर्क प्रस्तुत किया।

"वह तो मैं जानता हूँ। परन्तु मैं समाज को राज्य से पृथक् सत्ता मानता हूँ। मैं चाहता हूँ कि समाज अपने स्वत्व को समझे। वह राज्य से पृथक् अपनी सत्ता स्थापित करे। रूस का समाज यह करने के लिए उद्यत नहीं है। यही कारण है कि मैं स्वयं को उस समाज से पृथक् कर रहा हूँ।"

"यहाँ क्या आप राज्य से सर्वथा स्वतन्त्र हैं ?"

"सर्वथा तो नहीं। परन्तु मेरा ज्ञान-विज्ञान और उसकी साधना राज्य से सर्वथा पृथक् है। यहाँ सरकार ने भी डॉक्टर सोमदेव को अपनी सरकार के अधीन रहते हुए अपनी खोज का कार्य करने को कहा था। परन्तु डॉक्टर सोमदेव ने वह स्वीकार नहीं किया। यही कारण है कि उसने अपना पृथक् संस्थान चलाया है। भारत सरकार के सैनिक विभाग के दो वैज्ञानिक इस समय उसके पास कार्य कर रहे हैं। उनसे भी यह वचन लिया गया है कि जो कुछ वे जान जाएँगे उतना सब कुछ अपने साथियों को बताएँगे। यही शर्त मेरे साथ भी है।"

"तब तो आपसे किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है।"

"देखिए, वकील साहब ! आप मुझसे अब भी उतनी ही आशा कर सकते हैं जितनी कि मेरे रूसी नागरिक रहते हुए करते थे।"

"हाँ, पहले तो विश्वास था, अब केवल मात्र आशा रह गई है। विश्वास और आशा में बहुत बड़ा अन्तर है।" यों कहते हुए वकील की मुखमुद्रा कठोर हो गई थी।

"परन्तु मैं तो जितना ईमानदार पहले था, अब भी उतना ही हूँ।"

वकील उठ पड़ा। उसने कहा, "मेरी सरकार तुम्हारे इस वक्तव्य पर विश्वास नहीं कर सकती। मैं तुम्हें यह बताने आया हूँ कि रूस की नागरिकता छोड़ देने पर तुम्हारा विवाह भी अब नहीं रहा। अन्ना मारकोव अब तुम्हारी पत्नी नहीं रही। हमारे देश में विवाह सरकारी कानून के माध्यम से होने के कारण उनका सम्बन्ध नागरिकता से जुड़ा हुआ होता है।"

नाकोव ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। इस प्रकार दोनों कमरे से बाहर निकल आए। पुलिस वाले सतर्क खड़े थे।

सिमी नाकोव ने टैक्सी मँगवाई और अपने विद्यालय को चला गया।

वकील अपने दूतावास की गाड़ी में सवार होकर दूतावास के लिए चल दिया। इस प्रकार नाकोव भी मुक्त हो गया।

तृतीय परिच्छेद

मिसेज मेकार्थर की इच्छा अपने पति के साथ रहने की थी। इस कारण वे अपने पुत्र को लाने के लिए अमेरिका गई हुई थीं। उसका पुत्र नाना के पास न्यूयार्क में रह रहा था। मिचल का नाना न्यूयार्क का बहुत बड़ा व्यापारी था। इस कारण जब उसकी पुत्री मिली ने अपने लड़के को लेकर भारत जाने की बात कही तो उसके पिता ने कहा, "तुम तो अपने पति को भारत से वापस लाने के लिए वहाँ गई थीं किन्तु अब तो इसके विपरीत अपने पुत्र को भी वहीं ले जाने की बात कर रही हो?"

"हाँ, पापा! मिचल के पिता वहाँ एक बहुत बड़े आकर्षण से खिंच गए हैं। वह असहनीय सिद्ध हो रहा है।"

"ऐसा क्या है कि जिसका विरोध नहीं किया जा सकता?"

"यह उनके अनुसन्धान का विषय है अन्य कुछ नहीं। वह अन्वेषण अब इस स्थिति पर पहुँच गया है कि उसमें लगे कोई भी अनुसंधाता अब उसको छोड़कर कहीं अन्यत्र जाने की स्थिति में हैं ही नहीं। यहाँ तक कि वहाँ कार्यरत एक रूसी प्रोफेसर ने अपने देश की नागरिकता का ही परित्याग कर दिया। उसकी सरकार ने उसे वापस बुलाना चाहा किन्तु उसने वहाँ जाने की अपेक्षा अपने देश की नागरिकता को ही त्याग दिया है।"

"तुम रूस और अमेरिका में अन्तर नहीं समझतीं क्या?"

"नहीं पापा! जहाँ तक उनके विज्ञान का सम्बन्ध है इन दोनों में किसी प्रकार का अन्तर नहीं है। रूसी सरकार भी तो वही चाहती है जो अमेरिका सरकार चाहती थी। यदि रूसी सरकार ने मुख्य वैज्ञानिक को ही स्मगल किया था तो यहाँ की सरकार ने वैज्ञानिक की प्रयोगशाला को स्मगल कर दिया। न तो रूसी सरकार वैज्ञानिक को रख सकी, और न ही हमारी सरकार उस प्रयोगशाला को सुरक्षित रख सकी। दोनों को पराजित करने वाला वैज्ञानिक डॉक्टर सोमदेव है। उसने भारत में शून्य से पुनः वहाँ विशाल रचना कर ली है। वहाँ अब वैज्ञानिक उस स्थान से बहुत आगे पहुँच गए हैं जहाँ वे अमेरिका में पहुँचे थे।"

मिली का पिता लड़की का मुख देखता रह गया। आखिर उसने लड़के के विषय में पूछ लिया, "परंतु मिचल ने इस वैज्ञानिक खोज में क्या करना है? इसकी पढ़ाई में विघ्न डालने से क्या लाभ होगा?"

"मैं समझती हूँ कि मिचल की पढ़ाई यहाँ की अपेक्षा वहाँ अच्छी रहेगी। उस

विज्ञानशाला के साथ एक विद्यालय भी है। उसमें तीन-चार विद्यार्थी अभी पढ़ रहे हैं। मैं उनकी पढ़ाई देखकर आई हूँ। इसलिए मेरा विचार है कि मिचल की पढ़ाई भी वहीं अच्छी रहेगी। उसके साथ मैंने यह भी विचार किया है कि जब वह स्कूल की पढ़ाई समाप्त कर लेगा तो उस समय देखूँगी कि यदि उसे वहाँ की यूनिवर्सिटी की शिक्षा देनी होगी तो उसे यहाँ स्कूल फाइनल करवाकर किसी विश्वविद्यालय में भरती करवा दूँगी।"

"मुझे तो यह सब पसन्द नहीं। तदपि तुम सज्ञान हो, अपने तथा अपने बच्चे के भविष्य के विषय में सोचने के लिए स्वतन्त्र हो।"

"पापा! मैंने बहुत विचार किया है। वहाँ की पढ़ाई देखकर ही तो मेरे मन में विचार आ रहा है कि मैं भी वहाँ के विद्यालय में प्रविष्ट होकर कुछ और पढ़ाई कर लूँ।"

उसका पिता यह बात सुनकर हँस पड़ा। उसने पूछा, "तो अब तुम भी मिचल के साथ ही उस बेंच पर बैठकर पढ़ाई करोगी ?"

"वहाँ तो यह किसी प्रकार भी लज्जा की बात नहीं समझी जाती। यहाँ तक कि उस विद्यालय में तो वहाँ के सुप्रीम कोर्ट के वकील तक पढ़ने के लिए आते हैं।"

"तो ठीक है। तुम जाओ, अगले वर्ष तक मैं भी वहाँ आने का यत्न करूँगा। मैं भी मिचल के साथ बैठकर पढ़ाई करूँगा।"

मिली हँस पड़ी। कहने लगी, "डॉक्टर सोमदेव के पिता जो उस विद्यालय के विद्यार्थी हैं, वे सर्वोच्च न्यायालय के प्रतिष्ठित वकीलों में से हैं।"

मिली का पिता सोच में पड़ गया। वह सोचता था कि यह तो निरा पागलपन है। तो भी उसका विचार था कि अपने काम से कम-से-कम एक मास का अवकाश लेकर वह दिल्ली जाएगा। और कुछ नहीं तो इस पागलपन को देखने का ही अवसर मिल जाएगा।

इस प्रकार मिली अपने पुत्र मिचल को लेकर दिल्ली आ गई। उसको आए एक वर्ष बीत गया था कि उन्हीं दिनों बाबा विश्वेश्वरानन्द ने सोम और सावित्री के लड़कों के नामकरण संस्कार की घोषणा कर दी।

इस समय तक रामिणी का भी पुत्र उत्पन्न हो चुका था। रामिणी रामलाल की पहली पत्नी के बच्चों से अपने बच्चे के समान ही स्नेह करती थी। वह नित्य कोठी में जाकर उनके साथ खेलती थी। कपूर को इससे प्रसन्नता होती थी। रामिणी अभी भी सोमदेव की प्रयोगशाला में अनुसंधान कर रही थी।

उसका साथी प्रोफेसर फिशर एक दिन बहुत प्रातःकाल उठा और अपना सारा सामान समेटा और अपनी कार में रखकर बिना किसी प्रकार की सूचना दिए वहाँ से नौ-दो-ग्यारह हो गया। उस दिन के बाद न किसी ने उसको कहीं देखा और न उसके बारे में कुछ सुना ही गया।

पहले तो यही अनुमान लगाया कि वह पेरिस लौट गया होगा। रामिणी ने अपनी पेरिस की सहेलियों से इस विषय में पूछताछ की तो पता चला कि वह वहाँ पहुँचा ही नहीं। रामिणी के पत्र से जब पेरिस विश्वविद्यालय के अधिकारियों और फिशर के पिता को उसके भारत से चले जाने का समाचार मिला तो इससे वे लोग चिन्ता करने लगे।

जिस समय मंगलानन्द के पोतों के नामकरण की बात चल रही थी उस समय फिशर को दिल्ली से लापता हुए चार मास हो चुके थे। उस समय पेरिस विश्व-विद्यालय का एक अन्य वैज्ञानिक सोमदेव की अनुमति पाकर उस विद्यालय में प्रविष्ट होने के लिए आ गया। सोम का विद्यालय अब अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति का विद्यालय हो चुका था। इस समय उसमें अध्ययन करने के लिए पेरिस, लन्दन और बर्लिन विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिक आए हुए थे।

मंगलानन्द की इच्छा थी कि बच्चों के नामकरण संस्कार धूमधाम से होने चाहिए। उसका कहना था कि परमानन्द का विवाह हुए नौ वर्ष और अम्बा का विवाह हुए सात वर्ष हो गए हैं, तबसे इस घर में ऐसा कोई समारोह नहीं हुआ है। इसलिए इस अवसर पर वह अपने परिचितों, मित्रों, नातेदारों आदि-आदि को खूब खिलाने-पिलाने की इच्छा करता था।

अतः इस समारोह के लिए रविवार का दिन निश्चय किया गया। सोम के विद्यालय के सभी विद्यार्थी और प्राध्यापक, दिल्ली विश्वविद्यालय के विज्ञान विभाग के सभी प्राध्यापक तथा अन्य विभागों के अध्यक्ष, भारत सरकार के उच्चाधिकारी, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश आदि आमन्त्रित थे। इनके अतिरिक्त उनके अपने सम्बन्धी और मित्रों की संख्या भी थी।

कोठी के पिछले भाग के खुले प्रांगण में शामियाने तानकर यह समारोह किया गया। सोमदेव के पुत्र का नाम शिवराज और परमानन्द के पुत्र का नाम जगराज रखा गया।

इस अवसर पर सरस्वती की माँ भी अमेरिका से आई थी। रूस में बन्दी बनाए जाने के बाद वह इतनी भयभीत हो गई थी कि उसको विश्वास ही नहीं रहा था कि भारत सरकार उसकी रक्षा कर भी सकती है। इस कारण वह अमेरिका में ही रह रही थी। अन्यथा पहले उसकी भी इच्छा भारत में ही रहने की थी।

सरस्वती के आग्रह पर वह इस नामकरण के अवसर पर भारत आई थी। परन्तु यहाँ आकर विद्यालय की उन्नति और उसके कार्य के विस्तार को देखकर उसकी इच्छा होने लगी थी कि वह अभी कुछ दिन भारत में ही रह जाए। उसको यह भी विदित था कि यह सारा प्रगति और विस्तार बिना सरकार की किसी प्रकार की सहायता अथवा अनुदान के हुआ था।

बड़ी प्रसन्नता के वातावरण में समारोह हुआ। समारोह जब समाप्त ही होने

वाला था तभी कोठी के ऊपर वाले आकाश में एक बहुत बड़ा-सा बैलून, जो अलिम्यूनियम का बना हुआ-सा लगता था, लगभग दो किलोमीटर की ऊँचाई पर से समारोह की भूमि पर उतरता दिखाई दिया। बैलून सूर्य के प्रकाश में चमक रहा था और धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था। इससे जो आइसक्रीम खा रहे थे अथवा जो कॉफी पी रहे थे उनका ध्यान खाने-पीने से हटकर उस बैलून की ओर चला गया। सब अपने स्थान से उठकर उसकी ओर टकटकी लगाए थे।

सोम तो समझ गया था कि यह क्या है। उसका विचार तो इस बैलून का प्रदर्शन कुछ दिनों बाद करने का था। वह नहीं चाहता था कि उसके पारिवारिक समारोह के अवसर पर इसका प्रदर्शन हो। विद्यालय की प्रबन्ध-समिति का निर्णय भी यही था। अब जब उसने बैलून को उस दिन, उस समय और उस स्थान पर उतरते देखा तो वह समझ गया कि यह किसी की शरारत है।

शरारत का विचार आते ही उसका ध्यान रामिणी की ओर गया। वह सरस्वती की मेज पर बैठी खाना खा रही थी। सोम ने उधर देखा तो उसे वह दिखाई नहीं दी। सोम सरस्वती के पास गया और उससे पूछने लगा, "रामिणी यहाँ थी?"

"हाँ, पहले तो यहीं थी। किन्तु कुछ समय पूर्व मेकार्थर आया था। वह उसको अपनी मेज पर ले गया था।"

सोम ने मेकार्थर के स्थान की ओर देखा तो उसे भी खाली पाया। वह विचार करने लगा कि क्या इस शरारत में वह भी सम्मिलित है।

इस समय तक वह बैलून भूमि से सात-आठ मीटर की ऊँचाई पर आकर स्थिर हो गया। तभी बैलून की एक खिड़की खुली और उसमें से रस्सी की एक सीढ़ी नीचे लटक आई। जब वह सीढ़ी भूमि पर जाकर टिक गई तो ऊपर से श्रीमती मेकार्थर, उसका पुत्र मिचल और उसके पीछे स्वयं मेकार्थर उतरते दिखाई दिए। सबसे पीछे रामिणी उतरती दिखाई दी।

तभी एक अन्य घटना घटित हुई।

बैलून के ऊपर आकाश में तीन सैनिक जहाज आकर मँडराने लगे थे। जब बैलून के यात्री भूमि पर पहुँच गए तो ऊपर के एक हवाई जहाज ने उड़ान भरी और वह तीन हजार फीट की ऊँचाई पर पहुँच गया। वहाँ से उसने एक हवाई छतरीधारी को कोठी पर उतारना आरम्भ कर दिया।

समारोह में उपस्थित अतिथि अब बैलून को छोड़कर उस छतरीधारी को देखने लगे। वह छतरीबाज कोठी की छत पर उतरा। सोम रामिणी को डाँटने ही वाला था कि छतरीबाज उतरता दिखाई दिया। सोम का ध्यान भी उधर चला गया। कोठी का चपरासी छत पर गया और उस छतरीधारी को नीचे ले आया।

चपरासी उसको लेकर मंगलानन्द के पास आ गया।

मंगलानन्द ने उससे पूछा, "आप कहाँ से और क्यों आए हैं ?"

"मैं इस बैलून के कमांडर के नाम सरकारी आज्ञा लेकर आया हूँ ।"

तब तक तो उसके चारों ओर सारे आगन्तुकों की भीड़ एकत्रित हो गई थी। समारोह में प्रधानमन्त्री महोदय भी उपस्थित थे। वे भी जब उस ओर ही आ गए तो भीड़ को उनके लिए मार्ग छोड़ना पड़ा। प्रधानमन्त्री भी मंगलानन्द के पास आकर खड़े हो गए।

मंगलानन्द ने छतरीधारी से कहा, "दिखलाइए, क्या आज्ञा है ?"

छतरीधारी ने अपने कोट की जेब से एक कागज निकालकर मंगलानन्द को दे दिया। उस कागज पर लिखा था, "मैं रघुबीरसिंह लेफ्टिनेण्ट कमांडर स्क्वेड्रन नम्बर तीस, अपने कमाण्डर के आदेश पर इस बैलून को अपने अधिकार में लेता हूँ। क्योंकि यह बैलून बिना पूर्वानुमति के तथा किसी प्रकार का अनुज्ञापत्र प्राप्त किए इस नगर के ऊपर चक्कर लगा रहा था।"

मंगलानन्द ने उसे पढ़ा और फिर बोला, "यह आज्ञा अवैधानिक है, इसलिए आप जा सकते हैं। यदि तुम लोगों ने इस बैलून को तनिक भी हानि पहुँचाई तो इसके निर्माण पर जो दो करोड़ की लागत है उसका हर्जाना तुम्हारे कमांडर को देना होगा।"

"आप यह सब लिख दीजिए, मैं वायरलेस से अपने कमाण्डर को इसकी सूचना देकर उनका आदेश प्राप्त करता हूँ।"

मंगलानन्द ने कागज लिया और उस पर अपना उत्तर लिखकर उसको दे दिया। छतरीधारी ने अपनी जेब से एक टेलीफोन निकाला और उसके द्वारा ऊपर मँडराने वाले जहाज में अपने कमाण्डर से बात की। कमाण्डर रघुबीरसिंह ने उसके उत्तर में कहा, "उनसे कह दो कि बैलून अपने स्थान से हटाया न जाए। कोई इसका जामिन बनकर सैनिक न्यायालय में अपना पक्ष प्रस्तुत करे।"

छतरीधारी ने अपने कमाण्डर की आज्ञा सुनाई तो मंगलानन्द की अपेक्षा प्रधानमन्त्री ने कहा, "लाओ, मैं जमानत देता हूँ।"

यह कहकर प्रधानमन्त्री ने मंगलानन्द के उत्तर के साथ ही नीचे लिख दिया, "बैलून मेरे संरक्षण में है। इस आज्ञा देने वाले को दिल्ली नगर न्यायालय में उपस्थित होकर अपना अभियोग प्रस्तुत करना होना। बैलून न तो सैनिक क्षेत्र पर मँडरा रहा था और न उसने सैनिक कार्य में किसी प्रकार की कोई बाधा उपस्थित की है।"

इतना लिखकर देने के बाद प्रधानमन्त्री ने उस छतरीधारी से कहा, "कॉफी पियो और अपने रास्ते लगो।"

प्रधानमन्त्री की बात सुनकर सब हँस पड़े।

छतरीधारी को एक मेज पर बैठाकर आराम से भोजन कराया गया।

कुछ देर और रुककर प्रधानमन्त्री चले गए। उनको विदा करके जब पिता-पुत्र वापस आए तो सोमदेव ने अपने पिता से पूछा, "पिताजी ! अब क्या होगा ?"

"कुछ नहीं। मेरा विचार है कि सैनिक अधिकारी की यह आज्ञा अवैधानिक थी।"

प्रधानमन्त्री के जाने के बाद वहाँ उपस्थित अन्य मित्र-सम्बन्धी और परिचित भी बधाई दे-देकर जाने लगे।

सोमदेव ने मेकार्थर से कहा, "डॉक्टर ! सेना की बात तो पिताजी देख लेंगे। परन्तु मैं तो अपने विद्यालय के अनुशासन की शिथिलता पर चिन्तित हूँ। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ किसकी आज्ञा से इसको निकालकर और इस पर एण्टीना फिट करके इसको यहाँ लाया गया है ?"

यह सुन मेकार्थर कहने लगा, "यह सब-कुछ मेरे कहने पर हुआ है। मिली के पिता आज न्यूयार्क से हवाई जहाज द्वारा दिल्ली पहुँच रहे हैं। मेरा विचार था कि इस समय परीक्षण उड़ान करके हम इसकी स्थिति से अवगत हो जाएँगे और फिर उनको लेने के लिए हवाई पत्तन पर जाएँगे। परन्तु अब सैनिक विभाग के इस व्यवधान के उपरान्त यह कदाचित् सम्भव न हो। हम आपकी स्वीकृति लेने के लिए ही यहाँ आए थे।"

मिली उत्साहित होकर कहने लगी, "हमें सिटी मजिस्ट्रेट से आदेश प्राप्त कर इसे हवाई पत्तन ले जाना चाहिए। मैं चाहती हूँ कि मेरा पिता इस चमत्कार को स्वयं स्वीकार करे।"

सोमदेव मौन खड़ा था। मिली ने फिर कहा, "प्रोफेसर ! यदि इस कार्य के लिए सरकार ने आपको आर्थिक दण्ड दिया तो आप उसकी चिन्ता मत करिए। मैं वह सब दण्ड भुगतने के लिए तत्पर हूँ।"

सोम जानता था कि मिली का पिता बहुत धनी है। उसने रुपये-पैसे की बात छोड़कर कहा, "अब तो प्रधानमन्त्री इसके जमानती हैं। बिना उनकी अनुमति और बिना किसी प्रकार की वैधानिक सम्मति लिये मैं इस विषय में कुछ भी करने की अनुमति नहीं दूँगा। इस विषय में अब हम विवश हैं।"

"वैधानिक सम्मति तो आपके पिताजी दे सकते हैं। कृपया उनसे पता कीजिए।"

इसी प्रसंग में सोम ने अपने पिता से पूछा था कि अब क्या होगा। मंगलानन्द ने जब कहा कि सैनिक कमाण्डर की आज्ञा अवैधानिक है तो सोम ने फिर पूछा, "प्रधानमन्त्री के इसके जमानती बन जाने के बाद यह बैलून अब यहाँ पर उनके बन्धक के रूप में है अथवा कि स्वतन्त्र है ?"

"मैं इसे बन्धक नहीं मानता। प्रधानमन्त्री की जमानत का अर्थ तो केवल यही है कि यदि बैलून का स्वामी कल मजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित न हो तो उसके

विरुद्ध वारण्ट जारी किए जा सकें। मैं कल तुम्हारे साथ मोहनलाल जी को भेज दूँगा। मैं समझता हूँ कि पाँच मिनट में यह सरकारी आज्ञा निलम्बित हो जाएगी।"

सोम इस स्थिति में आश्वस्त था। वह मेकार्थर के समीप आ गया। गार्गी भी तब तक उनके पास आ गई थी और इसके विषय में जानकारी प्राप्त कर रही थी। मिली अपना स्पष्टीकरण देने में व्यस्त थी। वह तो समझ रही थी कि अपने पिता का स्वागत वह इस बैलून से करेगी, इस कारण उसमें उत्साह भरा हुआ था। वह गार्गी को वह सब सुना रही थी जो योजना उन्होंने अपने पिता के स्वागत के लिए बनाई हुई थी।

सोम और मंगलानन्द वहाँ आ गए। सोम ने मेकार्थर से कहा, "पिताजी की सम्मति है कि बैलून किसी प्रकार भी बन्धक नहीं है। प्रधानमन्त्री की जमानत का केवल यही अभिप्राय है कि बैलून का स्वामी कल न्यायालय में उपस्थित हो जाए। वह मैं कल चला जाऊँगा। यदि अभी भी रामिणी आप लोगों को इसमें ले जाने के लिए तत्पर हो तो आप लोग इसको ले जा सकते हैं।"

तभी गार्गी ने तुरन्त पूछ लिया, "परन्तु इस सम्बन्ध में तुम्हारे सार्वजनिक समारोह का क्या होगा?"

"माताजी, ये उड़ानें तो परीक्षण उड़ानें हैं, वह समारोह अपने स्थान और समय पर अवश्य होगा।"

यह सुनकर मिली को बहुत प्रसन्नता हुई। उसने सोमदेव का हार्दिक धन्यवाद किया। वह सोम का आभार व्यक्त कर रही थी।

सोम ने कहा, "ऐसी कोई बात नहीं। आपके माता-पिता के स्वागत के लिए तो कुछ भी किया जा सकता है।"

मिली कृतकृत्य हो गई। वह आनन्द-विभोर थी।

सोम ने कहा, "रामिणी को तैयार कर लो, उसे इस बैलून के विषय में पूर्ण जानकारी है।"

मिली रामिणी को इधर-उधर खोजने लगी।

: २ :

मध्याह्नोत्तर तीन बजे मेकार्थर, मिली, मिचल और एक चपरासी को लेकर रामिणी बैलून में बैठ पालम हवाई अड्डे जा पहुँची। बैलून का संचालन रामिणी ही कर रही थी।

मिली के माता-पिता अपने साथ केवल एक सूटकेस लाए थे, जिसमें उनके पहनने के वस्त्र थे। इस कारण कस्टम पर अधिक विलम्ब नहीं हुआ। हवाई जहाज से उतरने के बाद पन्द्रह मिनट में ये लोग बैलून के समीप पहुँच गए थे।

निराधार हवा में खड़े बैलून को देखकर मिली के पिता मैक्वायर ने पूछा, "यह क्या है?"

उत्तर मिली ने दिया। बोली, "पापा ! इसी को बनाने के लिए तो मेकार्थर यहाँ रुके हुए थे।"

"हमें इसमें बैठकर जाना है ?"

"हाँ पापा।"

उनको आया देख बैलून में बैठे चपरासी ने खिड़की खोली और उसमें से रस्सी की सीढ़ी नीचे लटका दी।

सीढ़ी के नीचे पहुँचते ही मिचल उत्साह से उसके द्वारा बैलून में पहुँच गया। उसे देख मैक्वायर भी उत्साहित हुआ और वह भी ऊपर चढ़ने लगा। तदुपरान्त मिली की माँ को चढ़ाया गया। मिली चढ़ी, मेकार्थर चढ़ा और अन्त में रामिणी भी चढ़ गई। उनको सबको भीतर आया देख मैक्वायर प्रसन्न हुआ और फिर वह बैलून का निरीक्षण-परीक्षण करने लगा।

बैलून के फर्श पर दरी बिछी थी और बैठने वालों के लिए सोफा और कुर्सी थीं। रामिणी ने सीढ़ी को ऊपर खींचकर खिड़की बन्द की और अपने स्थान पर बैठकर बैलून को ऊपर चढ़ाने लगी।

इसमें दो मिनट लगे। और ऊपर पहुँचने पर उनके अपने निवास-स्थान पर पहुँचने में भी दो मिनट से अधिक समय नहीं लगा। उतरते-उतरते दो-चार मिनट और लग गए।

नीचे लॉन में सोम और सरस्वती उनके स्वागत के लिए खड़े थे। मैक्वायर के भूमि पर पहुँचते ही सोम ने उनसे हाथ मिलाया और फिर सरस्वती का परिचय करा दिया।

मैक्वायर ने सरस्वती से हाथ मिलाते हुए कहा, "आपके रंग-रूप को देख तो लगता है आप अमेरिकन या यूरोपियन होंगी किन्तु आपका पहरावा भारतीय है।"

"भारतीय पहरावा इसलिए है कि यह अधिक सुख और सुविधाजनक है।" सरस्वती ने समझाया।

तब मिली की माँ बोली, "इसमें क्या सुविधा होती है, सिर से पाँव तक तो ढकी हुई हो ?"

सोम ने विषय बदला और पूछने लगा, "यात्रा में किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं हुआ ?"

"ईश्वर की कृपा है कि सब ठीक ही रहा। अन्यथा आए महीने कोई-न-कोई हवाई दुर्घटना का समाचार मिलता ही रहता है।"

मिली बोली, "पापा ! मिचल के पिता कहते हैं कि उनका यह हवाई खटोला अन्य हवाई जहाजों की अपेक्षा सौ गुणा अधिक सुरक्षित होगा।"

"वह कैसे ?"

"यह तो ये अथवा डॉक्टर सोम ही बता सकते हैं।"

"ठीक है, कल इनसे बात करेंगे ।"

सोम उनको लेकर ड्राइंग-रूम में आ गया । चाय का सामान लगाया जाने लगा । सोम के एक ओर श्रीमती मैक्वायर थीं और दूसरी ओर सरस्वती । सरस्वती के साथ ही उसकी माताजी बैठी थीं । सरस्वती ने श्रीमती मैक्वायर से अपनी माँ का परिचय कराया । उसने कहा, "आण्टी ! इधर देखिए, आपके देश का एक अन्य प्राणी भी यहाँ बैठा है । ये हैं मेरी माताजी, श्रीमती मार्टिनी रीगन । दो दिन पूर्व मेरे लड़के का नामकरण संस्कार हुआ है, उसके लिए ही यह वहाँ से आई हैं ।"

"वहाँ क्या करती हैं ?"

"अभी तक तो केलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अध्यापन करती थीं । पिछले मास ही वहाँ से रिटायर हुई हैं ।"

अब श्रीमती रीगन स्वयं कहने लगी, "कल तक तो मैं सोच रही थी कि नामकरण संस्कार हो गया है, अब एक-दो दिन बाद मुझे लौट जाना चाहिए । किन्तु आज अब मेरे विचार बदलने लगे हैं ।"

"क्यों, कोई विशेष घटना हुई है ?"

इस प्रकार उन दोनों महिलाओं में वार्तालाप आरम्भ हुआ तो सरस्वती उन दोनों के लिए चाय बनाने लगी ।

श्रीमती रीगन ने कहा, "मुझे इसका लड़का बड़ा ही प्यारा लगने लगा है । अभी जब तक वह अल्पायु है, उसका भोला-भाला मुख देख चित्त में गुदगुदी होने लगती है । मैं सोचती हूँ कि जब तक वह पाँच वर्ष का होता है तब तक मैं यहीं रह जाऊँ ।"

इसके विपरीत मिली की माँ ने कहा, "यदि उसे भी आप अपने साथ ही अमेरिका ले जाएँ तो कैसा रहे ?"

"जिस सुख के लिए मैं लालायित हूँ तब लिसा उस सुख से वंचित रह जाएगी ।"

"मैं तो मिचल को अपने साथ ले जाने का विचार कर रही हूँ ।"

"हाँ, मिचल है तो बहुत ही प्यारा बच्चा । किन्तु बच्चे को माँ से और माँ को बच्चे से वंचित करना कहाँ तक उचित है, यही विचार करने की बात है ।"

"मैं मिचल को कहूँगी तो मैं समझती हूँ कि वह मान जाएगा ।"

"किन्तु आप उसको मनाएँगी ही क्यों ?"

"मुझे उसकी पढ़ाई की चिन्ता है ।"

"उसकी पढ़ाई तो यहाँ हो रही है ।"

"वही तो मुझे देखना है कि किस प्रकार की पढ़ाई हो रही है ।"

इस प्रकार परस्पर परिचय और वार्तालाप में चाय का समय समाप्त हो गया । तब मेकार्थर अपने सास-ससुर को लेकर होटल इण्टरनेशनल चला गया । उनके

लिए वह स्थान सुरक्षित किया हुआ था।

अगले दिन मैक्वायर तो मेकार्थर के साथ विश्वविद्यालय देखने के लिए चला गया और उसकी श्रीमती मिचल की पढ़ाई देखने अपनी पुत्री के साथ मंगलानन्द की कोठी की ओर चल दी।

बच्चों को पहले दो घण्टे तो सरस्वती पढ़ाया करती थी और शेष समय के लिए एक अन्य अध्यापिका थी। वह वैतनिक थी। उस श्रेणी में तीन बालक थे। मिचल, महेन्द्र और रवीन्द्र।

तीनों को हिन्दी भाषा का अच्छा ज्ञान था और उसी भाषा में उनका अध्ययन होता था। सरस्वती केवल इतिहास पढ़ाती थी। अन्य विषय अन्य अध्यापिका पढ़ाया करती थी।

मिचल की नानी जब अपनी पुत्री के साथ अपने धेवते की शिक्षा का प्रबन्ध देखने के लिए आई तो उन दोनों के बैठने के लिए एक स्थान नियत कर दिया गया जिससे कि वह भली प्रकार निरीक्षण कर सके।

सरस्वती ने प्रश्न किया, "हम इस समय कहाँ बैठे हैं?"

महेन्द्र ने उत्तर देते हुए बताया, "भारत की राजधानी दिल्ली में।"

"भारत कितना बड़ा देश है?"

"लगभग तीन हजार किलोमीटर लम्बा और उससे कुछ ही कम चौड़ा है।"

"इसमें कितने लोग रहते हैं?"

"अस्सी करोड़ से कुछ अधिक हैं।"

"यदि ठीक-ठीक उत्तर माँगा जाए तो?"

"अपनी पुस्तक में देखकर बता दूँगा। उसमें पिछली जनगणना की संख्या दी हुई है।"

"तो तुम्हें याद नहीं है?"

"उसे याद रखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे अन्य बातें याद रखनी हैं।"

"वे क्या हैं?"

"एक तो यह कि मैं प्राणी हूँ कोई पशु-पक्षी नहीं।"

"और क्या-क्या?"

"यही कि मनुष्य और पशु में अन्तर है।"

"वह अन्तर क्या है?"

"पशु मानव की भाँति अध्ययन नहीं कर सकता।"

"क्या तुमने कभी किसी पशु को पढ़ाने का यत्न किया था?"

"जी हाँ, एक पिल्ले को पढ़ाने का यत्न किया था।"

"उसको क्या पढ़ाया था?"

"माताजी ने उसको कहा कि जाओ अपने स्वामी से कहो कि वह नंगा है।

किन्तु वह कुछ समझ नहीं सका ।"

"इसका क्या कारण है ?"

तब सहसा मिचल खड़ा होकर पूछने लगा, "बहिनजी ! मैं बताऊँ ?"

"चलो, तुम ही बताओ ।"

"क्योंकि वह पशु था ।"

"यही तो पूछा जा रहा है कि मनुष्य और पशु के बच्चे में क्या अन्तर है ? वह क्यों नहीं समझ पाता ?"

"क्योंकि वह पिल्ला था और हम मनुष्य हैं ।"

"यह तो कोई कारण नहीं है । यह वस्तुस्थिति है, इसका कारण बताओ ।"

बच्चे निरुत्तर हो गए, तब सरस्वती ने कहा, "सुनो, मैं बताती हूँ ।"

यह सुनकर मिचल बैठ गया ।

सरस्वती ने कहा, "मनुष्य के शरीर में कुछ कलाएँ हैं । कला किसे कहते हैं, जानते हो ?"

मिचल ही बोला, "कारीगरी को कला कहते हैं । जो कार्य अति कुशलतापूर्वक किया जाए वह कला होती है ।"

"ठीक है । परमात्मा ने प्राणी के शरीर में बहुत-कुछ कारीगरी की वस्तुएँ बनाई हैं । मनुष्य और पशु में यही अन्तर है कि पशु की अपेक्षा मनुष्य के शरीर में बनाई गई कलाओं की संख्या अधिक है । दो कलाएं तो अत्यन्त विशेष हैं जो मनुष्य में उत्तम प्रकार की हैं । वे दो कलाएँ है मन और बुद्धि । कुत्ते और अन्य इतर जीवों में ये कलाएँ क्षीण हैं ।"

मिचल ने पूछा, "ये कलाएँ क्या करती हैं ?"

"इनमें मन तो स्मरण रखने का यन्त्र है । मनुष्य अपने ज्ञान में घटी बातों को स्मरण रखता है । किन्तु कुत्ता उसको दो मिनट में ही भूल जाता है ।

"दूसरी कला है बुद्धि । इसके सहारे मनुष्य विचार करता है । जैसे डॉक्टर सोम ने कहीं पढ़ा कि भार वस्तु का अपना गुण नहीं है । वह किसी कारण से उसमें उत्पन्न हो गया है । इसलिए उन्होंने उस कारण को दूर करने का विचार किया ।

"यह विचार करना मनुष्य में एक प्रकार के यन्त्र का कार्य है । उस यन्त्र को बुद्धि कहते हैं । ये दोनों यन्त्र कुत्ते में नहीं हैं ।"

महेन्द्र ने जिज्ञासा प्रकट की, "हमको ये कलाएं किसने दी हैं ?"

"यह परमात्मा की देन है ।"

"उसने मनुष्य को क्यों दी हैं ?"

"वह इस कारण कि हमने अपने पिछले जन्म में कुछ लोक-कल्याण के कार्य किए थे । परमात्मा ने उसके प्रतिकार में ये दो अद्वितीय कलाएँ हमको दी हैं । इन दो कलाओं में से ही हम, मेरा अभिप्राय है कि मनुष्य, ने इन पशुओं की अपेक्षा

अधिक उन्नति कर ली है। हमने ऊँचे-ऊँचे मकान बना लिये हैं। स्वादिष्ट व्यंजन बनाने सीख लिये हैं। सुन्दर वस्त्र बनाने लगे हैं।"

मिचल ने फिर पूछा, "ये दोनों यन्त्र कहाँ पर लगाए गए हैं?"

"ये हमारे सिर, मस्तिष्क में हैं।"

श्रीमती मैक्वायर हिन्दी नहीं जानती थीं इस कारण वे कुछ भी नहीं समझ पा रही थीं कि शिक्षक और विद्यार्थियों में क्या प्रश्नोत्तर चल रहा है। इस कारण वे उस कमरे से उठकर बाहर को चल दीं। माँ के उठने पर उनकी पुत्री मिली भी उठकर बाहर आ गई।

बाहर आकर मिली की माँ ने अपनी पुत्री से कहा, "ये लोग क्या बोल रहे हैं मेरी तो कुछ भी समझ में नहीं आया?"

"मम्मी! तुमने कहा था कि तुम मिचल को पढ़ते देखना चाहती हो, इस कारण मैं तुमको उसकी पढ़ाई दिखाने ले आई थी। अब सायंकाल जब मिचल तुम्हें मिले तो तुम पूछना कि उसने आज क्या पढ़ा था। तब वह तुमको तुम्हारी भाषा में भली-भाँति समझा देगा।"

"तो क्या वह भारत की भाषा समझने लगा है?"

"सायंकाल चाय पीते समय तुम उससे पूछ लेना। उस समय मैं भी तुम्हारे साथ ही हूँगी।"

"शाम की चाय तो मैं तुम्हारे पिताजी के साथ जाकर तुम्हारे विद्यालय में तुम्हारे पति के साथ पीने वाली हूँ।"

"ठीक है, उस समय मिचल को भी वहीं बुला लेंगे।"

इस प्रकार माँ-पुत्री का वार्तालाप पूर्ण हुआ।

: ३ :

मैक्वायर जब विद्यालय में पहुँचा तो सोम ने उसको विद्यालय दिखाया। इस विद्यालय को स्थापित हुए ढाई वर्ष हो गया था। मेकार्थर प्रारम्भ से ही विद्यालय के साथ था। विद्यालय भवन में अब विद्यार्थियों आदि के निवास के लिए दस कमरे बन चुके थे। उनमें से पाँच में तो अन्वेषण-कार्य करने वाले रहते थे। शेष अभी खाली पड़े थे।

इन कमरों के अतिरिक्त प्रयोगशाला भी थी जिसमें अनेक प्रकार के यन्त्र लगे थे। दस मेजें लगी हुई थीं किन्तु कार्य पाँच मेजों पर ही होता था। इन मेजों पर अन्वेषणार्थी कार्य करते थे। ये पाँच थे, मेकार्थर, नाकोव, और दो पेरिस विश्व-विद्यालय के वैज्ञानिक तथा दो दिल्ली विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक।

प्रयोगशाला के साथ ही वर्कशाप थी, वहाँ तीन मिस्त्री कार्य करते थे। एक बढ़ई था, एक लोहार और एक बिजली का कार्य करने वाला था।

इसके अतिरिक्त एक कमरा मौखिक शिक्षा के लिए था और दो कमरों में

कार्यालय था। एक कमरा डॉक्टर सोमदेव के विश्राम करने के लिए था। एक साझा कमरा सबके विश्राम करने के लिए था।

एक रसोईघर भी था और उसके साथ ही डाइनिंग हॉल बना हुआ था।

सोम ने यह सब मैक्वायर को दिखा दिया। उसके बाद वह उसको अपने कार्यालय में ले गया और वहाँ बैठाकर उसने कहा, "यह सब कार्य हमारा लगभग ढाई वर्ष के अथक् परिश्रम का परिणाम है। वैज्ञानिक अनुसन्धान तो हम अनेक वर्षों से कर रहे थे, उसका परिणाम तो आप पहले ही देख चुके हैं।"

"डॉक्टर ! मैं तो अपने मन में यह धारणा लिये हुए आया था कि तुमने मेरे दामाद और पुत्री पर जादू कर दिया है। मैं यह निश्चय करके आया था कि इन दोनों को तुम्हारे मोहजाल से मुक्त करने के लिए भरसक प्रयत्न करूँगा और इनको लेकर अमेरिका चला जाऊँगा। परन्तु जो कुछ मैं कल से देख रहा हूँ उससे तो इतना प्रभावित हुआ हूँ कि मैं समझता हूँ कि मैं भी तुम्हारे इस विद्यालय में किसी-न-किसी प्रकार का सहयोग दूं। वर्तमान परिस्थिति में तो वह सहयोग आर्थिक ही हो सकता है।

"मेकार्थर ने बताया है कि धन का अभाव तुम्हारे मार्ग में बाधक है जिसके कारण तुम मुक्तहस्त से और अबाध गति से कार्य नहीं कर सकते। इसलिए मैंने निश्चय किया है कि मिली की माँ से मिलकर मैं भी इस विषय में अपना कुछ योगदान करूँ।"

अपने श्वसुर की बात सुनकर मेकार्थर बोला, "पापा ! मैंने तो इस संस्था के लिए अपना जीवन दान कर दिया है। साठ वर्ष की आयु तक मैं इस विद्यालय में निःशुल्क कार्य करूँगा।"

"ओह ! पर मिली की माँ तो अपनी लड़की को अमेरिका वापस ले जाने के लिए ही विशेष रूप से यहाँ आई है ?"

"इस विषय में मिली स्वतन्त्र है। यदि वह जाना चाहती हो तो जा सकती है, मैं उसमें बाधक नहीं बनूँगा।"

"ठीक है। मैं अपनी योजना पर रात्रि के भोजन के समय पर विचार करूँगा। मैंने मिली की माँ को कहा है कि वह रात के भोजन के लिए डॉक्टर सोम और उनकी पत्नी को अपने होटल में आमन्त्रित करे।"

सोम ने अपने सभी अन्वेषणकर्ता साथियों को भी अपने कार्यालय में बुला लिया था। उन सबसे मैक्वायर का परिचय करा दिया। इसमें नाकोव भी सम्मिलित था।

मैक्वायर को जब विदित हुआ कि नाकोव ने अपने देश की नागरिकता ही छोड़ दी है तो उसने आश्चर्य से उससे पुनः पूछा, "तो आपने रूस की नागरिकता छोड़ दी है ?"

"जी हाँ, इससे कोई सन्देह नहीं रह गया है।"

"आपकी सरकार ने इसको इसी रूप में यों ही मान लिया है ?"

"जी नहीं, मेरी पत्नी को वहाँ बन्दी बना लिया है। मेरा पुत्र है जो समय-समय पर मुझे वहाँ से गालियों भरा पत्र लिखता रहता है।"

"आपकी पत्नी के क्या विचार हैं ? क्या वह यहाँ आपके पास आना चाहती है ?"

"उसने इस विषय में अपनी कोई इच्छा व्यक्त नहीं की है। तो भी उसके पश्चात्ताप के पत्र मिलते हैं, किन्तु मैं इसमें क्या कर सकता हूँ।

"एक बार मैंने उसको लिखा था कि वह अपनी सरकार से यहाँ आने की स्वीकृति माँगे। परन्तु मुझे लगता है वह पत्र ही उस तक नहीं पहुँचा है। इस कारण उसकी ओर से किसी प्रकार का उत्तर न मिलना स्वाभाविक था।"

"तो आप यहाँ पुर्नविवाह कर लीजिए ?"

"मेरा मन नहीं करता।"

"इसका अभिप्राय तो यह हुआ कि आप मन से कम्युनिस्ट नहीं हैं ?"

"मैं मन से वैज्ञानिक हूँ। कम्युनिज्म विज्ञान का अंग नहीं है।"

"परन्तु कम्युनिस्ट तो स्वयं को महान् वैज्ञानिक मानते हैं ?"

"कभी मैं भी यही मानता था। परन्तु बाबा विश्वेश्वरानन्द से ज्ञान-विज्ञान का अध्ययन करने के उपरान्त मेरे मन में विज्ञान के उन अर्थों में अब अन्तर आ गया है। वे लोग कला-कौशल को ज्ञान-विज्ञान समझते हैं। मैं अब यह समझने लग गया हूँ कि यूरोप वालों ने जो कुछ निर्माण किया है वह केवल मात्र शिल्प है अन्य कुछ नहीं। यह तो मैं मानता हूँ कि सांसारिक सुख-सुविधा के लिए यह शिल्प बहुत बड़ी बात है। परन्तु ज्ञान और विज्ञान तो उस शिल्प का निमित्त कारण है, जिसे न यूरोप वाले जानते हैं और न अमेरिका वाले।"

"यदि यह है तो बिना मूल कारण जाने वे इतने बड़े-बड़े आविष्कार किस प्रकार कर रहे हैं ?"

"इस प्रकार सुख-सुविधा के सामान तो कोई भी बढ़ई अथवा लोहार अपनी बुद्धि से नित बनाता रहता है। मेरे विचार में यही वर्तमान वैज्ञानिक भी कर रहे हैं।"

मैक्वायर ने इसे यूरोपियन और अमेरिकन उन्नति के लिए एक प्रकार की चुनौती-सा अनुभव किया। उसने फिर सतर्क होकर नाकोव ने पूछा, "तो जो भारतवासी स्वयं को ज्ञान-विज्ञान के ज्ञाता मानते हैं वे संसार के पिछड़े देशों की गिनती में क्यों आते हैं ?"

नाकोव ने बिना संकोच उत्तर दिया, "ये बात ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार किसी भिखारी की गुदड़ी में लाल छिपा हो और वह उस गुदड़ी को सड़क के किनारे

रखकर आराम से सो जाए। इसमें उस लाल का क्या दोष जो उस गुदड़ी में रखा हुआ है। दोष तो उस अज्ञानी भिखारी का है।''

नाकोव की इस युक्ति को सुनकर मैक्वायर चकित रह गया। तब वह बोला, ''यह सब देख-सुनकर मैं यह तो समझ गया हूँ कि यहाँ के शिक्षकों की तर्कबुद्धि अनुपम है।''

''आप ठीक समझे हैं। यह तर्क ही है जो इस बात को भली प्रकार मस्तिष्क में स्थिर करा देता है। इस तर्क का मैं कायल हूँ और इसी कारण रूस छोड़कर भारत में रहने लगा हूँ।''

इन लोगों में वार्त्तालाप हो रहा था तभी सरस्वती, मिली और उसकी माँ को लेकर आ गई।

लंच का समय हो गया था और विद्यालय के सभी निवासी भोजन के लिए भोजन कक्ष में एकत्रित हो गए थे।

सरस्वती आई तो सोमदेव ने सबको भोजन के लिए चलने का आग्रह किया। चलते हुए सरस्वती ने सोमदेव से पूछा, ''कोर्ट में क्या हुआ?''

तब तक सब लोग हॉल में पहुँच गए थे। सरस्वती का प्रश्न सुनकर सब सोम के चारों ओर एकत्रित हो गए।

सोम ने कहा, ''कुछ नहीं। सैनिक अधिकारियों को भ्रम हो गया था कि कोई विदेशी बैलून किसी प्रकार की टोह लेने के लिए अपने देश में घुस आया है। हमारे वकील ने जब अभियोक्ता सैनिक विभाग के वकील तथा न्यायालय को विश्वास दिला दिया कि इस प्रकार की कोई बात नहीं है और उन्होंने इस बैलून के निर्माण की कथा सुना दी तो सैनिक विभाग ने अपनी आपत्ति वापस ले ली और न्यायालय ने केस को फाइल कर दिया है।

''इस सब कार्यवाही में केवल एक घण्टा लगा था। ग्यारह बजे मुझे वहाँ से अवकाश मिल गया था। तदनन्तर मैं विद्यालय आ गया था।''

''तो अब ?''

''आगामी रविवार को हम इस बैलून का सार्वजनिक प्रदर्शन करेंगे। उस समय इसका संक्षिप्त विवरण छपवाकर वितरित करवाया जाएगा। उस समारोह में भारत के विख्यात राजनेता, विश्वविद्यालयों के विख्यात वैज्ञानिक तथा सभी समाचार एजेन्सी के प्रतिनिधियों को आमन्त्रित किया जाएगा। उस समय मैं अपना अगला कार्यक्रम भी घोषित कर दूंगा।''

''तो अपना सारा रहस्य प्रकट कर दोगे ?''

''रहस्य की तो कोई बात ही नहीं है। सारा रहस्य इसका एण्टीना ही है। इससे उसके चारों ओर चार घन मीटर तक का स्थान भार के तनाव से मुक्त हो जाता है। वह ही एकमात्र वस्तु है जिसका आविष्कार करने में हमें लगभग दस वर्ष का

समय लग गया है। हम अन्वेषण करने वाले प्रतिज्ञाबद्ध हैं कि इसका रहस्य किसी को नहीं बताएँगे। क्योंकि आर्थिक सहायता देने वाली एक कम्पनी से हमारा अनुबन्ध हो चुका है। उसका वचन है कि इस कार्य के लिए सारी आर्थिक सहायता उसकी ओर से प्राप्त होगी।''

''कौन-सी कम्पनी है वह ?'' मैक्वायर ने पूछा। वह समझता था कि कदाचित् अमेरिका की कोई कम्पनी होगी।

''यहीं दिल्ली की ही एक कम्पनी है। उसका नाम है 'सिण्डीकेट ऑफ फार-वर्डिंग बिजनिस'। हमारे इस कार्य में उस कम्पनी ने ही पूँजी लगाई है। इस समय तक लगभग एक करोड़ रुपया व्यय हो चुका है।''

मैक्वायर ने कहा, ''मैं उस कम्पनी के डायरेक्टर से मिलना चाहूँगा।''

''कोई कठिन कार्य नहीं है, आप जब चाहें तब आपको मिला दूँगा।''

''तो कल प्रातःकाल का अल्पाहार आप दोनों व्यक्ति मेरे साथ मेरे होटल में कीजिए।''

''मैं बता दूँगा। यदि उसको कोई अन्य कार्य न हुआ तो वह अवश्य उपस्थित हो जाएगा।''

इस प्रकार बातचीत के साथ-साथ भोजन भी होता रहा। भोजनोपरान्त मिली की माँ ने डॉक्टर सोम और उसकी पत्नी को रात के भोजन के लिए अपने होटल में आमन्त्रित कर लिया।

साथ ही श्रीमती मैक्वायर ने सरस्वती से कहा, ''यदि अपनी माताजी को भी ले आओ तो बड़ी कृपा होगी।''

रात्रि को जब सोम मैक्वायर के होटल में भोजन के लिए गया तो उसने बता दिया कि उसकी कम्पनी का डारेक्टर कल प्रातःकाल अल्पाहार के लिए उनके पास आ रहा है।

मैक्वायर बोला,''मैं चाहता हूँ कि उसके साथ साझेदारी कर मैं भी आपके इस अन्वेषण से कुछ लाभ अर्जित करूँ।''

''यह बात आप उनसे कर लीजिए। वे सारे कागजात आपको दिखा देंगे और इसमें कौन-कौन भागीदार हैं इसका विवरण भी आपको देंगे।''

भोजन करते समय मिली की माँ ने मिचल से पूछा, ''आज प्रातःकाल तुम्हारी अध्यापिका ने तुमको क्या पढ़ाया था ?

''मैं गई तो थी तुम्हारी पढ़ाई देखने के लिए किन्तु वहाँ जाकर मैंने देखा कि तुम लोग उस भाषा में वार्तालाप कर रहे थे, जिसका सिर-पैर ही मेरी समझ में नहीं आ पाया।''

''नानी ! आज मैडम ने बहुत ही विचित्र बात बताई थी।'' यह वार्तालाप वह अंग्रेजी में कर रहा था। उसने सरस्वती की ओर संकेत करके कहा, ''इन्होंने बताया

था कि हमारे मस्तिष्क में एक ऐसा संयन्त्र है जिसके माध्यम से हमें बातें स्मरण रहती हैं। उसको मन कहते हैं। उनका कहना था कि सामान्य जन इसको 'माइण्ड' कहते हैं। परन्तु वह सर्वथा युक्ति-युक्त नहीं। क्योंकि माइण्ड तो बहुत काम करता है किन्तु मन तो विशेष कार्य करने के यन्त्र को ही कहते हैं।

"इन्होंने बताया कि यह यन्त्र पशुओं में नहीं होता। कुछ एक जन्तुओं में यदि होता भी है तो बहुत ही निम्न स्तर का होता है।

"इन्होंने हमारी खोपड़ी में एक अन्य यन्त्र भी बताया है। उसे बुद्धि कहते हैं। उसका कार्य विचार करना है। उसी बुद्धि के आधार पर डॉक्टर सोम ने इस प्रकार का बैलून बना लिया है। उस बुद्धि के आधार पर ही अन्य लोग भाँति-भाँति के भवन, यन्त्र, उपकरण आदि-आदि अनेक प्रकार की वस्तुओं का निर्माण कर लेते हैं।

"पशुओं में बुद्धि नहीं होती। यही कारण है कि आज तक किसी भी पशु ने अपने लिए कपड़ों की आवश्यकता को अनुभव नहीं किया।"

श्रीमती मैक्वायर को यह सब सुनने में आनन्द आ रहा था। मिचल की बात पूरी होने पर उसकी नानी ने पूछा, "तुम हिन्दी भाषा भली-भाँति सीख गए हो?"

"हाँ, बहुत कुछ सीख गया हूँ।"

"तुम कभी पिक्चर देखने के लिए भी जाते हो?"

"वह तो हम सप्ताह में तीन वार कोठी में ही देख लेते हैं।"

"कोठी में कोई हॉल है?"

"नहीं, हॉल नहीं है। वहाँ प्रोजेक्टर रखा हुआ है। हमारी मैडम फिल्म मँगवा लेती हैं और हमें दिखा देती हैं।"

खाना समाप्त हुआ। हँसी-खुशी के वातावरण में जब सारे अभ्यागत विदा हो गए तो श्रीमती मैक्वायर ने कहा, "मुझे मिचल की पढ़ाई से सन्तोष है।"

"मैं भी मेकार्थर के कार्य से पूर्णतया सन्तुष्ट हूँ। मैं तो इनका अन्वेषण खरीद लेने का विचार कर रहा हूँ। इसमें कई मिलियन डालर लग जाएगा।"

अपने दिन-भर के कार्य से सन्तुष्ट दोनों पति-पत्नी प्रातःकाल की प्रतीक्षा में सुख से सोए।

संयोग की बात कि अविनाशचन्द्र प्रातःकाल मैक्वायर से मिलने नहीं आ सका। उसने समय से आधा घण्टा पूर्व फोन किया और बताया कि कहीं किसी प्रकार की दुर्घटना हो जाने के कारण वह उस समय आने में असमर्थ है।

"क्या दुर्घटना हुई है?" मैक्वायर ने पूछा।

"रात डॉक्टर सोम की प्रयोगशाला में बम्ब विस्फोट हुआ है उसके कारण सारी प्रयोगशाला और उसमें रखे सारे यन्त्र भस्मीभूत हो गए हैं।"

"ओह! और वहाँ के निवासी?"

"यह भी संयोग ही है कि एक चौकीदार के अतिरिक्त अन्य सभी निवासी बच गए हैं।"

"हम वहाँ आ रहे हैं।"

"मैं ओखला पुलिस स्टेशन से बात कर रहा हूँ।"

"वह किधर है ?"

"आपको इधर आने की आवश्यकता नहीं। थोड़ी ही देर में हम डॉक्टर सोम के पिता की कोठी पर पहुँच रहे हैं। आप वहीं आ जाइए।"

इस प्रकार मैक्वायर की अविनाश से व्यापार की बात नहीं हो पाई।

: ४ :

मैक्वायर के होटल में रात का भोजन समाप्त कर सोम, उसकी पत्नी सरस्वती और सरस्वती की माता तो सोम के घर पर आ गए। मेकार्थर और उनकी पत्नी अपनी गाड़ी में अपने विद्यालय वाले निवास-स्थान पर चले गए। सबको प्रसन्नता थी कि मिली के माता-पिता पर इस विद्यालय का अच्छा प्रभाव पड़ा है। सोम को आशा थी कि मैक्वायर के साथ व्यापार करके परमानन्द और अविनाश को अत्यधिक आर्थिक लाभ की सम्भावना है।

इस प्रकार सब लोग इस भेंटवार्ता और भोजन से अति प्रसन्न थे। सभी अपने-अपने स्थान पर सुख की नींद सोये थे सहसा चौकीदार ने रात के दो बजे घण्टी बजाकर सोम आदि की नींद में व्यवधान उपस्थित कर दिया। सोम अपने रात्रि परिधान में ही जब अपने ड्राइंग-रूम में आया तो उसका पिता वहाँ पहले से ही विद्यमान था। बाबा विश्वेश्वरानन्द भी आ गए थे। सोम की माताजी फोन पर बात सुन रही थी। अन्य लोग उसकी बात जानने के लिए चिन्तातुर से खड़े थे।

गार्गी ने फोन का चोंगा रखा और बोली, "मेकार्थर का फोन था। वह ओखला थाने से बोल रहा था। उसने बताया है कि एक घण्टा पूर्व विद्यालय के भवन को बम्ब से उड़ा दिया गया है। उसने बताया कि जब धमाका सुनकर वह अपने कमरे से बाहर निकला तो उसने देखा कि प्रयोगशाला धू-धू कर जल रही थी। विद्यालय का कार्यालय भी जल रहा था। यह सब देखकर वह सीधा थाने में गया और पुलिस को रिपोर्ट लिखाकर उसने उसको घटनास्थल के लिए विदा कर दिया है और अब यहाँ फोन किया है।

"मेकार्थर ने फायर ब्रिगेड को भी सूचित कर दिया है। दमकल भी वहाँ पहुँच रही होगी। मेकार्थर ने बताया है कि अब वह पुनः अपने विद्यालय ही जा रहा है।"

यह सब सुनकर मंगलानन्द ने सोम को कहा, "सोम ! जल्दी से कपड़े पहनकर आओ। हम विद्यालय चलते हैं।"

इस प्रकार सोम अपने कमरे को गया और मंगलानन्द अपने कमरे को।

गार्गी ने बाबा से कहा, "बाबा ! आप तो आराम करिए । ये लोग सब सम्हाल लेंगे ।"

तब तक परमानन्द भी आ गया था । गार्गी ने उसको सारी बात बता दी। परमानन्द ने क्षण-भर विचार किया और उसके मुख से निकल गया, "यह सब फिशर की करतूत है । मैंने कल ही उसको कनॉट प्लेस में घूमते हुए देखा था । मैं तो समझता था कि मेरे पहचानने में भूल हो रही है । किन्तु इस दुर्घटना की बात सुनकर अब निश्चय हो गया है कि वह भूल नहीं थी । वह व्यक्ति फिशर ही था ।"

यह कहकर उसने अविनाश को फोन किया । उसने सारी घटना सुनाकर उसको कह दिया कि पुलिस और फायर ब्रिगेड विद्यालय पहुँच गए हैं । वह भी वहीं आ जाए ।

सरस्वती भी जाने के लिए तैयार हो गई थी । इस प्रकार सोम, सरस्वती और मंगलानन्द एक कार में बैठकर विद्यालय पहुँच गए । कुछ मिनट बाद परमानन्द भी अपनी मोटर में पहुँच गया । प्रयोगशाला अभी भी जल रही थी तथा दमकल अपना कार्य कर रही थी । पुलिस ने घटनास्थल पर घेरा डाल दिया था । वह उस ओर किसी को भी जाने नहीं दे रही थी ।

सोम और मंगलानन्द इत्यादि को भी विद्यालय भवन के बाहर ही रोक दिया गया था । भीतर केवल वे ही लोग थे जो घटना के समय से ही भीतर रह रहे थे ।

इस प्रकार आग बुझाने में दिन निकल आया । तब तक पुलिस का घेरा पड़ा ही रहा । जब प्रयोगशाला की अग्नि शान्त हो गई तो पुलिस ने अपनी जाँच का कार्य आरम्भ किया ।

पुलिस को पिछवाड़े की ओर एक व्यक्ति का शव पड़ा दिखाई दिया। विद्यालयवासियों को उस शव को पहचाने के लिए बुलाया गया । वहाँ जाने पर विदित हुआ कि वह शव नहीं अपितु घायल अचेत व्यक्ति पड़ा हुआ था । वह कोई अन्य नहीं अपितु स्वयं फिशर ही था ।

तुरन्त एम्बुलेंस बुलाकर फिशर को पुलिस की देखरेख में अस्पताल भेज दिया गया । अब विद्यालय के अधिकारी इस दुर्घटना में हुई हानि का अनुमान लगाने लगे । पुलिस अधिकारी यह खोज कर रहे थे कि कहीं कोई बम्ब का टुकड़ा यदि मिल जाता तो उसके आधार पर कुछ मिल सकता था । विद्यालय का गोदाम बिल्कुल नष्ट हो गया था । बैलून भी वहीं रखा हुआ था ।

बैलून के टुकड़े-टुकड़े बाहर के मैदान में बिखरे पड़े दिखाई दे रहे थे । प्रयोग-शाला में रासायनिक पदार्थ होने के कारण भी आग ने जल्दी उसको आत्मसात किया था ।

मंगलानन्द और सोम ने थाने जाकर फिशर के सम्बन्ध में बयान दिया ।

इस सब कार्यवाही में सारा समय बीत गया । जब इस कार्य से निवृत्त होकर

अविनाश घर की ओर जाने लगा तो उसे मैक्वायर के साथ अल्पाहार का स्मरण हो आया। उसने थाने से ही उसको फोन पर सूचना दे दी।

विद्यालय की देख-रेख के लिए चौकीदार रखा हुआ था। बम्ब फटने से उसके शरीर की धज्जियाँ उड़ गई थीं। किसी प्रकार पुलिस ने उसके शरीर के अंग-प्रत्यंगों को जोड़कर एकत्रित किया और उसे पोस्टमार्टम के लिए ले गई।

सोम इत्यादि कोठी पर पहुँचकर स्नानादि कर ही रहे थे कि मैक्वायर अपनी पत्नी के साथ वहाँ पहुँच गया। उनको बैठने तथा चाय आदि का प्रबन्ध कर दिया गया और शेष जन अपने स्नानादि में लगे रहे।

सोम जब स्नानादि कर तैयार होकर आया तो श्रीमती मैक्वायर ने उस दुर्घटना के विषय में जानना चाहा। सोम ने सारी घटना उन लोगों को सुना दी।

मैक्वायर ने पूछा, "कुछ बचा भी है अथवा सब-कुछ स्वाहा हो गया है ?"

"पूर्ण प्रयोगशाला जलकर भस्म हो गई है। उस पर हमारा बिजली का फिटिंग था जिस पर कई सहस्र रुपया लगा हुआ था। प्रयोगशाला के भवन और फर्नीचर पर तो एक लाख से भी अधिक लागत आई थी। गोदाम के नीचे जहाँ बम फटा है, वहीं हमारा सर्वस्व अर्थात् हमारा बैलून रखा हुआ था। वह फटकर टुकड़े-टुकड़े हो गया है। विद्यालय की वर्कशाप भी नष्ट हो गई है। विद्यालय का जो भी भाग बचा है, वह किसी प्रकार भी प्रयोग नहीं किया जा सकता, सब हिल गया है। उसे गिराना पड़ेगा। सब-कुछ नया बनाना पड़ेगा।

"हम परमात्मा के कृतज्ञ हैं कि छात्रावास के निवासी सुरक्षित हैं और वह भवन भी सुरक्षित है। जन हानि में हमारा चौकीदार भस्म हो गया है।"

मैक्वायर बोला, "तुम्हारे बैलून के साथ यह तीसरी दुर्घटना है। एक बार तो आप मास्को पहुँच गए थे। दूसरी बार सुनने में आया है कि आपकी खोज के सारे कागजात मास्को पहुँच गए हैं। और अब तो सब-कुछ ही बम्ब की लपेट में आकर स्वाहा हो गया है।"

"जी हाँ।"

"अब पुनः प्रारम्भ से ही आरम्भ करना होगा ?"

"नहीं, इस बार ऐसा नहीं होगा। हमारे कागजों की प्रतिलिपि है। उसे एक सुरक्षित स्थान पर रखवा दिया गया था।"

"वर्तमान स्थिति में अब आप लोग कितने दिन में पहुँच सकते हैं ?"

सोम कुछ विचार करने लगा। फिर सोचकर बोला, "बिना भवन के कुछ नहीं बन सकता। भवन बनने के उपरान्त फिर तो एक मास के भीतर हम वैसा ही बैलून तैयार कर सकते हैं।

"परन्तु···।" वह कहता-कहता रुक गया।

कुछ क्षण मौन रहने के उपरान्त वह फिर बोला, "मैं अब यह विचार कर

रहा हूँ कि इस प्रकार की कृतघ्न जनता और राज्यों की विद्यमानता में यह स्वर्गीय यन्त्र बनाना क्या उचित होगा ?''

''डॉक्टर ! दो-चार दुष्टों से डरकर भले लोग यदि भलाई करना छोड़ दें तो यह संसार नरक बन जाएगा।''

''नहीं पापा ! यह दो-चार व्यक्तियों का कार्य नहीं है। मेरा मन तो यही कहता है कि इस कुकृत्य में अवश्य किसी शक्तिशाली सरकार का हाथ है। यह किसी एक व्यक्ति का हाथ नहीं हो सकता। वैसे तो एक घायल व्यक्ति वहाँ पड़ा मिला है। उसको विद्यालय से किसी प्रकार का काल्पनिक रोष भी हो सकता है। परन्तु मेरा मन यही कहता है कि यह उसके अकेले का कार्य नहीं है।

''मैं यह भलीभाँति जानता हूँ कि आज की शक्ति-सम्पन्न सरकारें ज्ञान-विज्ञान का लाभ जनसाधारण के हित में पहुँचने को पसन्द नहीं करतीं।''

''यह तुम्हारा विचारमात्र है। कोई भी डेमोक्रेटिक सरकार इस प्रकार की उच्छृंखलता नहीं कर सकती।''

सोम मुस्कराता रहा। वह इस भले व्यक्ति का दिल दुखाना नहीं चाहता था। अन्यथा वह यह भली प्रकार जानता था कि जनता के राज्य में उसी प्रकार की धाँधली हो सकती है जिस प्रकार किसी राजा के राज्य में सम्भव है। उसका ज्ञान यही कहता था कि शक्ति की लालसा मनुष्य से किसी भी प्रकार का कुकर्म करा सकती है। इसलिए उसने मैक्वायर को कुछ नहीं कहा।

अपनी बात जारी रखते हुए मैक्वायर ने कहा, ''मेरा विचार अभी भी आपकी बीमा कम्पनी के डायरेक्टर्स से मिलने का है।''

''आपके आने के दो मिनट पूर्व ही वह यहाँ से गया है। रात के दो बजे से वह दुर्घटनास्थल पर रहा है। अब स्नानादि के लिए घर गया है।''

''हम दोनों पति-पत्नी आज सायंकाल यहाँ से बम्बई जा रहे हैं। वहाँ से छः-सात दिन के बाद हम फिर दिल्ली वापस आएँगे। उस समय उनसे भेंट का प्रबन्ध कर दीजिए। मैं समझता हूँ कि मेरी सहायता से आपको इस हानि से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाएगी। आज मध्याह्न का भोजन हमारा हमारे राजदूत के साथ है। उसके बाद तुरन्त ही हमारा जहाज का समय हो जाएगा। अतः आज इसके बाद फिर आपसे भेंट का अवसर नहीं मिल पाएगा।''

इस प्रकार मैक्वायर ने अपनी इच्छा व्यक्त कर दी।

विद्यालय के सभी निवासियों का भोजन आज मंगलानन्द की कोठी पर ही था। उस समय सारी कार्य की गतिविधि तथा कर्मचारियों के भविष्य के विषय में विचार-विमर्श करने की इच्छा थी।

भोजन के लिए जब परमानन्द आया तो उसने कहा, ''हमारे अमरीकी दूता-वास के गुप्तचरों ने हमें सूचना दी है कि इस दुर्घटना पर वहाँ प्रसन्नता व्यक्त की

जा रही है।"

"ऐसा क्यों?" सोम ने पूछा।

"कारण तो पता नहीं चल सका। बताने वाला इतना ही बता पाया है कि उच्च स्तर के अधिकारी यह सुनकर सुख का अनुभव कर रहे हैं।"

"भैया! तब तो इसका कारण भी विदित करने का यत्न करो। हमारे भविष्य के कार्य में यह खोज सहायक सिद्ध होगी।"

"अविनाशजी हमारी सरकार की टोह लेने में लगे हैं। उसकी प्रतिक्रिया सायं-काल के समय तक विदित हो जाएगी।"

"फिशर का क्या हाल है?"

"उसको पीठ पर गोली लगी थी। एक घण्टे तक उसके शरीर से रक्त निकलता रहा, इस कारण वह अचेत हो गया था। उसका रक्तस्रवन बन्द कर दिया गया है और वह सचेत हो गया है। परन्तु अभी तक उसके शरीर से गोली नहीं निकली और दो बोतल रक्त देने के बाद भी अभी वह अपना वक्तव्य देने की स्थिति में नहीं है।

"कल उसकी पीठ की गोली निकालने का यत्न किया जाएगा। पुलिस इसके लिए बहुत उत्सुक है।

"बम्ब के खोल के कुछ टुकड़े मिले हैं, उनकी जाँच करवाई जा रही है।"

सभी कर्मचारी और अनुसन्धाता उपस्थित हो गए थे। पेरिस के वैज्ञानिक इस दुर्घटना से अत्यधिक निराश प्रतीत होते थे। सोम ने भोजन करते हुए बताया, "मैं अपना कार्य जारी रखने का दृढ़ संकल्प करता हूँ। जितना भी ज्ञान हम अभी तक प्राप्त कर सके हैं, इस दुर्घटना से उसकी तनिक भी हानि नहीं हुई है। जो कुछ अमेरिका के सैनिक विभाग से चोरी हो जाने पर वहाँ हुआ था, वैसा यहाँ नहीं हुआ है। तीन-चार दिन पूर्व मैंने अपने सब चार्ट और कागजात आदि एक लिफाफे में बन्द करके बैंक में जमा करा दिए थे।

"अपनी ठेकेदार कम्पनी के डायरेक्टर से परामर्श करके मैंने यह पग उठाया था। बैंक का नाम बताना उचित नहीं। कारण स्पष्ट है। मैं तो इतना ही कहना चाहता हूँ कि आप लोगों के परिश्रम का परिणाम सुरक्षित है। हाँ, उसके प्रस्तुत किए जाने में विलम्ब हो सकता है। वह होगा ही। क्योंकि प्रयोगशाला के अभाव में यह किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है। प्रयोगशाला बनने में समय लगेगा।"

तब एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने पूछा, "लगभग कब तक पुनः कार्य आरम्भ हो सकने की सम्भावना है?"

"अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। क्योंकि अभी तो वह स्थान भी पुलिस के संरक्षण में है। जब पुलिस उस स्थान को मुक्त कर देगी उसके बाद ही इस विषय पर सोचना आरम्भ करेंगे। पुलिस का कार्य हम किसी के भी अधीन नहीं है।

"तदपि यह आशा करनी चाहिए कि दो-तीन दिन में स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।"

मेकार्थर नितान्त मौन था। उसके पास बैठे नाकोव ने अपना सन्देह व्यक्त करते हुए कहा, "मेरा मन कहता है कि इस कुकृत्य में सोवियत सरकार का हाथ है। उनको किसी प्रकार यह विदित हो गया होगा कि फिशर हमसे रुष्ट है। उसको रूसी सरकार ने अपने जाल में फाँसकर यह दुष्कृत्य करवाया होगा।"

मेकार्थर उसकी बात को चुपचाप सुन रहा था। उसने अपनी किसी प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की।

भोजन समाप्त होने पर सोम ने कहा, "मैं समझता हूँ कि जब तक हमारे विद्यालय का साँझा डाइनिंग-रूम नहीं बन जाता तब तक हमारा भोजन यहीं होगा। आप लोगों के यातायात का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।"

: ५ :

मेकार्थर और उसकी पत्नी श्रीमती और श्री मैक्वायर को विदा करने के लिए हवाई पत्तन गए थे। वहाँ से लौटने पर वे सोमदेव से मिलने के लिए उसकी कोठी पर आ गए। परिवार के लोग मध्याह्न की चाय पी रहे थे। उस समय अविनाश भी वहाँ आया हुआ था। वह दिन-भर अधिकारियों से अपने मेल-मुलाकात की बातें बता रहा था।

मेकार्थर के आने पर लोगों ने अविनाश की बातें छोड़, मेकार्थर के सास-श्वसुर के विषय में जानने की उत्सुकता दिखाई।

वास्तविकता यह थी कि अविनाश अमेरिकन दूतावास की बातें ही बता रहा था। और सब जानते थे कि मिली का पिता अमेरिकन दूतावास में दोपहर के भोजन के लिए गया था। इसलिए वे जानना चाहते थे कि क्या इस विषय पर उससे भी कुछ बात हुई है, और उसने कुछ बताया है।

सोम ने ही मेकार्थर से पूछा, "विदा कर आए उन लोगों को?"

सोम के प्रश्न के उत्तर में मेकार्थर ने विचित्र रहस्योद्घाटन किया। उसने कहा, "मिली के पिता ने प्रातः तो यह कहा था कि वे पाँच-सात दिन बाद पुनः दिल्ली लौटकर आएँगे। किन्तु अब उन्होंने कहा है कि कदाचित् वे अब दिल्ली न भी लौटें।"

"वे तो अपनी यात्रा से लौटने पर अविनाश भैया से मिलने की बात पक्की-सी कर गए थे?"

"मुझे इसका ज्ञान था। मैंने उनको इसका स्मरण कराया तो वे उलटे मुझसे ही पूछने लगे कि इस पूर्ण झगड़े में मुझको क्या मिलने वाला है।

"मैंने उनको कहा कि मुझे इसमें किसी प्रकार की आशा-आकांक्षा नहीं है। मैं तो केवल उस गरीब ठेकेदार की बात कर रहा था। तब वे कहने लगे कि वे जानते

हैं कि वह निर्धन नहीं है। उस फर्म का बहुत बड़ा बैंक-बैलेंस वाशिंगटन में भी है।

"मैंने समझा कि दूतावास में कुछ बात हुई है। उसी से उनके विचार बदले हैं। मैं तो फिर चुप ही हो गया। तब मिली ने अपनी माँ से पूछा कि अमेरिका जाने से पूर्व वह उससे मिलने दिल्ली आएगी अथवा नहीं। इसके उत्तर में उन्होंने भी इसको उलटे डाँटते हुए कहा कि इसको अपने माता-पिता से मिलने के लिए अमेरिका आना चाहिए कि नहीं ?

"मैंने तब मिली की सहायता करते हुए कहा कि हमने तो अगले वर्ष देश लौटने का कार्यक्रम बनाया हुआ है। तब इसके पिता बोले कि शीघ्र लौट आओ, वहाँ विश्वविद्यालय में तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।

"मैंने बात समाप्त करने के लिए कह दिया कि मैं विश्वविद्यालय के चांसलर को पत्र लिखकर पूछूँगा कि मेरे लौट आने पर वह मुझे मेरा पहला कार्य दे सकेगा अथवा नहीं।"

सोम ने इस बात को समाप्त करने के लिए कहा, "मैं भी कुछ इसी दिशा में विचार कर रहा हूँ।"

सरस्वती बोली, "आपके साथ मेरा जाना तो सम्भव नहीं होगा। मेरा वीणा-वादन का प्रशिक्षण अभी दो वर्ष चलेगा।"

गार्गी ने एक अन्य सूचना देते हुए कहा, "सम्भव है शिवराज का कोई भाई-बहिन भी आने के लिए उत्सुक है।"

"सत्य ?" मिली ने पूछा।

सरस्वती मुस्करा भर दी।

इसके उपरान्त चाय समाप्त होने तक अन्य विषयों पर चर्चा होती रही। चाय समाप्त होने पर अविनाश और सोम पृथक् कमरे में चले गए। तब परमानन्द ने मेकार्थर से पूछा, "डॉक्टर ! आप क्या सचमुच ही अमेरिका जाने वाले हैं ? पहले तो आप कहते थे कि किसी पहाड़ी स्थान पर कोई सुन्दर-सा बंगला मिल जाए तो ले लेंगे।"

"वह प्रस्ताव तो स्थिर है। आप अपना कार्य कीजिए। बंगला ले लेने पर वर्ष में कुछ समय रहने के लिए तो मैं अवश्य ही आया करूँगा।"

"कुल्लू, मसूरी आदि स्थानों पर दो-तीन बंगले देखे तो हैं।"

"ठीक है, बात आगे बढ़ाइए।"

जब तक सोम और अविनाश बात करके बाहर आए, मेकार्थर और उसकी पत्नी वहाँ से जा चुके थे।

सोम अपने पिता के कार्यालय में गया और उसने बताया, "पिताजी ! पिछली रात की दुर्घटना में अमेरिका का मुख्य हाथ है। यह सूचना अविनाशजी लाए हैं।"

"फिशर के जीवन की रक्षा करनी चाहिए। इस घटना में उसका वक्तव्य बड़ा महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। उससे ही सारा निर्णय हो जाएगा।"

अविनाश बोला, "मैंने पुलिस के उच्चाधिकारियों को और भारत सरकार के गृह विभाग को सतर्क तो कर दिया है।"

"मैं इस विषय पर प्रधानमन्त्री से बात करने का समय निर्धारित कर रहा हूँ।"

फिशर एक सप्ताह उपरान्त अपना वक्तव्य देने योग्य स्वस्थ हो पाया था। फिशर पुलिस के अधिकार में ही था। भारत सरकार ने इस विषय को सी० बी० आई० को सौंप दिया था।

ज्ञान-विज्ञान विद्यालय से जब चार-पाँच दिन बाद पुलिस का पहरा उठा तो फिर उसका मलवा उठाया जाने लगा और नये भवन की योजना बनने लगी। ठीक उस समय सहसा दोनों फ्रांसीसी विद्यार्थी विद्यालय छोड़कर चल दिए।

अविनाश को जब यह सूचना मिली तो उसने सोमदेव को परामर्श दिया कि वह अपने कागजात तैयार कर अपने एण्टीना का पेटेंट करवा ले। उसके विचार में यह कार्य तुरन्त हो जाना चाहिए था।

सोम बोला, "भैया! आप कागजात तैयार कराओ, मैं अपना वक्तव्य तैयार करता हूँ।"

अविनाशचन्द्र को सन्देह था कि अमेरिकी दूतावास को फ्रांसीसी विद्यार्थी सारा रहस्य यथासमय देते रहे हैं। जिस समय अमेरिकन दूतावास ने समझा कि अब उसको सारा रहस्य ज्ञात हो गया है तब उन्होंने सोम की प्रयोगशाला को विनष्ट करने की योजना बनाई। उस योजना को सफल करने के लिए किसी प्रकार उनको फिशर की सहायता प्राप्त हो गई। तदपि दूतावास ने फिशर का विश्वास नहीं किया था। इसीलिए बम फटने के उपरान्त उसका भी अन्त करने का प्रबन्ध किया गया होगा। इन फ्रांसीसियों के भागने में भी निश्चित ही अमेरिकन दूतावास का हाथ होगा। अन्यथा वे इस प्रकार नहीं भागते।"

सोम ने अपना सन्देह व्यक्त करते हुए कहा, "भैया! यह पुलिस विभाग मुकदमा चालू क्यों नहीं कर रहा है?"

"मैंने इस विषय में जानने का यत्न किया है। पहले तो पुलिस का कहना था कि अभी मुकदमा तैयार नहीं है। और अब कहती है कि मुकदमे के कागजात उच्चाधिकारियों के पास भेजे जा चुके हैं। वहाँ से अभी मुकदमा चलाने की स्वीकृति प्राप्त नहीं हुई है।"

"फिर तो इस विषय में पिताजी से राय करनी चाहिए। कदाचित् वे कोई मार्ग सुझा सकें।"

सोमदेव ने अपने पिता को सारी स्थिति समझाई तो मंगलानन्द गृहसचिव से

मिलने चला गया। वहाँ गृहसचिव ने मंगलानन्द के सम्मुख एक प्रस्ताव प्रस्तुत कर दिया। वह यह कि सोमदेव के एण्टीना का रहस्य अमेरिका सरकार को विदित हो गया है। वे उसको पेटेंट कराने के लिए कागजात तैयार करा रहे हैं। उसी निमित्त फ्रांसीसी वैज्ञानिकों को अमेरिका बुलाया गया है।

यह सुनकर सोम ने कहा,"परन्तु मैंने पेटेण्ट के लिए कागजात भेज दिए हैं?"

"कब भेजे हैं?"

"आज पाँच दिन हो गए हैं।"

"कदाचित् उन फ्रांसीसी विद्यार्थियों की ओर से भी या तो इसके लिए कागजात भेज दिए गए हैं या भेजे जाने वाले हैं। उनको यहाँ से गए भी तो पाँच-छः दिन हो गए हैं।"

सोम ने पूछा, "यदि एक ही पेटेण्ट के लिए दो प्रार्थनाएँ आएँगी तो क्या होगा?"

"यह विषय तब इण्टरनेशनल कोर्ट में चला जाएगा।"

"इस पर तो बहुत व्यय होने की सम्भावना है?"

"इसमें कचहरी का व्यय तो कुछ अधिक नहीं होगा। हाँ, वकीलों का शुल्क कुछ अधिक ही होगा।"

"तो आपकी क्या सम्मति है?"

"इसमें दो राय तो हो ही नहीं सकतीं। मुकदमा लड़ना चाहिए। उसे जीतना भी चाहिए और फिर उन विद्यार्थियों को उनका उचित भाग भी दिया जाना चाहिए।"

ऐसा ही हुआ भी। सोम की ओर से पेटेण्ट के कागजात जाने पर उसको सूचना दी गई कि ठीक वैसे ही कागजात एक अन्य पार्टी की ओर से भी दाखिल किए गए हैं। सोम से कहा गया कि क्या ऐसी स्थिति में वह सिद्ध करना चाहता है कि विपक्षी का दावा झूठा है।

मंगलानन्द ने इसका उत्तर देते हुए लिखा कि, "उन विद्यार्थियों का दावा झूठा है। अतः उनकी याचिका को रद्द कर दिया जाय।"

क्योंकि एक समान पेटेण्ट के लिए दो विभिन्न देशों के नागरिकों की ओर से आवेदन किया गया था इसलिए इस विषय को अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के सुपुर्द कर दिया गया। उन दिनों उस न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश हॉलैण्ड का था। इस विषय की जाँच के लिए तीन न्यायमूर्तियों की एक समिति गठित कर दी गई। मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त एक तो रूस का था और दूसरा अंग्रेज था।

जब तक इस मुकदमे की प्रारम्भिक कार्यवाही होती रही तब तक सोम की प्रयोगशाला का नवनिर्माण हो चुका था। उसमें कार्य भी आरम्भ हो गया था। इस अवधि में अमेरिकी सरकार के प्रोत्साहन पर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में भी

उसी प्रकार की प्रयोगशाला का निर्माण कर वैसा ही बैंलून बनाने का यत्न किया गया था। बैंलून बनाने में वे वैज्ञानिक सफल हो गए थे किन्तु प्रथम परीक्षण में ही भूमि पर आ गिरा और टूटकर चकनाचूर हो गया।

अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में जब प्रथम पेशी हुई, उससे पूर्व ही यह घटना घटित हुई थी। यद्यपि इस घटना और दुर्घटना को गुप्त रखा गया था तो भी सोमदेव इस सबका चित्र हैग न्यायालय में प्रस्तुत करने में सफल हो गया था।

मंगलानन्द स्वयं अपने पुत्र का वकील बनकर हैग न्यायालय में गया था। उसके साथ मेकार्थर, नाकोव और सोमदेव भी गए थे। साक्षी के रूप में दो मुख्य व्यक्ति भी बुलाए गए थे। उन दोनों व्यक्तियों को छिपाकर रखा गया था और उनके नाम भी किसी को नहीं बताए गए थे।

मंगलानन्द जब हैग के प्रसिद्ध होटल में ठहरने के लिए गए तो उनको वहाँ जो पहला व्यक्ति मिला वह मिली का पिता मैक्वायर था। ये लोग अपनी कार से उतरे ही थे कि सामने होटल से मैक्वायर को बाहर आते देखा। मेकार्थर ने ही पहले उसको पहचाना। वह लपककर आगे बढ़ा और उससे हाथ मिलाने के लिए अपना हाथ आगे करते हुए बोला, "पापा ! आप यहाँ?"

मैक्वायर को यह आशा नहीं थी कि उसका दामाद उसको इस स्थान पर मिल जाएगा। वह विस्मय से उसका मुख देखता रह गया। यहाँ तक कि उसने अपना हाथ भी आगे नहीं बढ़ाया।

मेकार्थर ने ही कहा, "पापा ! पहचाना नहीं ?"

"नहीं, पहचान तो लिया है। मैं तो विस्मय कर रहा था कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?"

"हमारे देश की सरकार ने चोरों का काम पकड़ लिया है। मैं उसका तमाशा देखने के लिए आया हूँ।"

मैक्वायर समझ नहीं पा रहा था कि वह अपने विषय में मेकार्थर को क्या उत्तर दे कि वह वहाँ क्यों है।

तब तक मंगलानन्द आदि ने भी मैक्वायर को परेशानी में अपने दामाद का मुख देखते हुए देख लिया था। सोम आगे बढ़ा और उसने हाथ जोड़कर मैक्वायर को नमस्कार किया। उसने कहा, "आप भी अमेरिकी सरकार से चलने वाले हमारे मुकदमे को देखने यहाँ आ गए हैं ?"

तब तक मैक्वायर संभल गया था। वह बोला, "नहीं, मेरा उससे क्या सम्बन्ध ?"

"मैं तो यही समझा था कि आप जीतने वाले पक्ष से अनुबन्ध करने की सोचकर यहाँ आए होंगे। किसी चतुर व्यापारी से यह आशा अनुचित तो नहीं ?"

"परन्तु ऐसी कोई बात नहीं है।" मैक्वायर शायद कुछ और कहता तभी अविनाश भी वहाँ पहुँच गया था।

उसके पास पहुँचते ही अविनाश ने कह दिया, "मिस्टर मैक्वायर आपने बहुत बुद्धिमानी का काम किया जो उस दिन आप उस बैलून पर नहीं चढ़े, अन्यथा आज यहाँ आपके दर्शन किस प्रकार होते ?"

"किस बैलून की बात कर रहे हो ?" खीझता-सा मैक्वायर बोला।

अविनाश ने बात बदल दी। वह बोला, "आप किस नम्बर के कमरे में टिके हैं, मैं आपसे मिलना चाहूँगा।"

"रूम नम्बर तीन सौ दो। मैं सायंकाल चाय से पूर्व नहीं मिल पाऊँगा। उस समय आप आइए।"

"चाय आप अपने कमरे में ही पिएँगे ?"

"हाँ, आपके साथ व्यापारिक वार्तालाप करने के लिए।"

"हाँ, धन्यवाद। मैं अवश्य आऊँगा और आपको ऐसे चित्र दिखलाऊँगा कि जिनको देखकर आप बहुत ही प्रसन्न होंगे।"

यह वार्तालाप मध्याह्नपूर्व ग्यारह बजे के लगभग हुआ था।

सोम के दल के लोगों को कमरा नम्बर तीन सौ पचास मिला था।

अपने कमरे में जब भारतीय आगन्तुक स्थिर हो गए तो अविनाश ने बताया, "बैलून के क्षतिग्रस्त होते समय भूमि पर गिरते हुए देखने वालों में एक व्यक्ति की शक्ल-सूरत मैक्वायर से बिल्कुल मिलती है। पहले तो मुझे सन्देह हुआ था किन्तु अब इसको यहाँ देखकर मुझे विश्वास हो गया है कि वह चित्र इसी का है। मैं समझता हूँ कि उस बैलून की उड़ान देखने के लिए ही यह वहाँ गया होगा। मेरा तो यह भी विश्वास है कि इस सारे कार्य में इसका ही धन लगा हुआ है।"

मंगलानन्द तो कमरे में अपना सूटकेस रखते ही वहाँ के स्थानीय वकील से मिलने के लिए चला गया था।

सोम को अवसर मिला तो वह भी अपनी ओर से आए साक्षियों से बात करने के लिए चला गया।

: ६ :

सायं चार बजे अविनाशचन्द्र कमरा नम्बर तीन सौ दो में जा पहुँचा। मैक्वायर ने अन्य कुछ नहीं उससे सीधा प्रश्न किया, "मेकार्थर यहाँ क्या करने के लिए आया है ?"

अविनाश ने उत्तर देने से बचते हुए कहा, "मेकार्थर को तो इस बात पर विस्मय हो रहा है कि उसके श्वसुर ने पहले तो उसको पहचाना ही नहीं और जब पहचान भी लिया है तो फिर चाय पर भी नहीं बुलाया है।"

"मैं तो उससे रुष्ट हूँ।"

"तब तो उसे अवश्य आना चाहिए था। यद्यपि मैंने उसको कहा था कि उसे तो बिना बुलाए भी जाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। यदि आप कहें तो मैं

उसे बुला लेता हूँ। अभी फोन पर उसको कह देता हूँ।"

"नहीं, मैं आपसे कुछ व्यापार की बात करना चाहता हूँ। उसमें मैं किसी अन्य व्यक्ति का सम्मिलित होना उचित नहीं समझता।"

"ठीक है, बोलिए! किस विषय पर बात करना चाहते हैं?"

"यही कि यदि तुम लोग केस जीत गए तो मैं तुमसे बातचीत करने के लिए तैयार हूँ।"

"तो आप यह आशा करते हैं कि आप मुकदमा हारेंगे?"

"मैं नहीं, अमरीकी सरकार। यद्यपि दावा बहुत जबरदस्त है फिर भी कुछ कहा नहीं जा सकता।"

"मैं तो आपको दिखाने के लिए एक फोटो लाया हूँ।"

"कैसा फोटो?"

"कैलिफोर्निया की प्रयोगशाला में बना एक बैलून जब आकाश पर उड़ा तो किसी तकनीकी खराबी के कारण वह तुरन्त ही भूमि पर आ गिरा। आप उस समय उसकी उड़ान का निरीक्षण कर रहे थे।"

"वह मैं नहीं हो सकता। इसमें किसी प्रकार की भूल हो गई है। दिखाओ तो सही, कहाँ है वह चित्र?"

अविनाश ने अपने कोट की भीतरी जेब से एक लिफाफा निकाला और उसमें से एक फोटोग्राफ छाँटकर बाहर किया और मैक्वायर के सामने टेबल पर रख दिया।

मैक्वायर ने फोटो देखा तो उसका चेहरा उतर गया। वह विस्मय में अविनाश को देखने लगा।

अविनाश ने कहा, "इस चित्र की एक प्रति जवाबदावे के साथ लगा दी गई है।"

"कहाँ से मिला आपको यह चित्र?"

"सान फ्रांसिसको की एक समाचार एजेन्सी से।"

"तुम तो एकदम शैतान के अवतार हो। सुनो, मैं तुम्हारे सम्मुख एक प्रस्ताव करता हूँ।"

"किसका प्रस्ताव है?"

"मेरा अपना ही।"

"बोलिए।"

"यदि सोम अपना मुकदमा वापस ले-ले तो जितना अब तक आप लोगों का इस पर व्यय हुआ है वह सब आपको मिल सकता है।"

"मुकदमा मैंने तो नहीं किया है?"

"किन्तु तुम उसके ठेकेदार तो हो?"

"यह ठीक है तदपि मैं और वे दो भिन्न-भिन्न हैं। उसका ही यह आविष्कार है मेरा नहीं।"

"आप उस पर दबाव तो डाल सकते हैं।"

"यदि आप चाहें तो मैं आपकी भेंट उससे करा सकता हूँ। किन्तु मैं उसको किसी प्रकार की प्रेरणा नहीं दूँगा।"

"ठीक है, मुझे मिला दो।"

"मिला दूँगा।"

"नहीं, इस प्रकार नहीं। कल मुकदमा न्यायालय में प्रस्तुत होने वाला है। उसके बाद यदि भेंट हुई तो फिर न्यायालय की स्वीकृति के बिना यह मुकदमा वापस नहीं हो सकेगा।"

"ठीक है, मैं फोन कर देता हूँ। यदि वह कमरे में हुआ तो अभी चला आएगा।"

मैक्वायर ने स्वीकार कर लिया। तब अविनाश ने कमरा नम्बर तीन सौ पचास में फोन किया। उस समय मंगलानन्द अपने स्थानीय वकील से मिलकर आ गया था और वहाँ की बातचीत का विवरण सोम और मेकार्थर को बता रहा था।

तभी अविनाश का फोन आया। अविनाश ने सारी बात सोम को बता दी। उसकी बात सुनकर सोम ने अपने पिता से कहा, "मैक्वायर मुझसे मिलना चाहता है।"

"उससे पूछो कि मैं और मेकार्थर भी आ सकते हैं अथवा नहीं? हमारी भी उनसे मिलने की इच्छा है।"

अविनाश यह सुनकर हँस पड़ा। सोम ने यह सुना। अविनाश ने बिना रिसीवर का मुख बन्द किए मैक्वायर से उसके विषय में पूछा, "मिस्टर मैक्वायर! सोम के पिता और आपके जामाता भी आपके साथ चाय का आनन्द लेने की इच्छा करते हैं।"

सोम ने अविनाश की यह बात सुनी तो इधर वह भी हँस दिया।

उधर से अविनाश ने कहा, "मिस्टर मैक्वायर केवल आपसे मिलना चाहते हैं। यदि आप अकेले आने में कोई हानि न समझें तो आ जाइए।"

"मैं आ रहा हूँ।"

सोम ने चोंगा रखा और अपने पिता को कहा कि "मैक्वायर केवल मुझसे ही मिलना चाहता है।"

"ठीक है, तुम जाओ किन्तु अपने मस्तिष्क में यह रखना कि कल अमरीका का दावा खारिज होने वाला है। मैक्वायर को भी इसकी भनक मिली होगी। इसलिए इस समय किसी प्रकार का वचन न देना।"

सोम मैक्वायर के कमरे में चला गया। उसके पहुँचते ही मैक्वायर बोला, "मैं यहाँ यह प्रस्ताव करने आया हूँ कि परस्पर समझौता कर लिया जाए।"

"परस्पर से आपका क्या अभिप्राय है?"

"मेरा अभिप्राय डॉक्टर सोमदेव और अमरीका सरकार से है।"

"आप अमरीकी सरकार के क्या हैं?"

"मैं तो कुछ नहीं हूँ। किन्तु यदि आप चाहें तो सरकार के प्रतिनिधि को बुलवा देता हूँ। आज मेरी सरकार से बात हुई है।"

"सरकार सीधे मुझसे बात क्यों नहीं करती? आप तो मेरे मित्र के निकट सम्बन्धी हैं। आपके बीच में आने से मुझपर अनुचित दबाव की आशंका है।"

"दबाव तो है किन्तु अनुचित नहीं। मैं समझ रहा हूँ कि तुम्हारा दावा कल खारिज हो रहा है। इस परिपेक्ष में यह समझौता अनुचित नहीं। मेरे लिए मेकार्थर और तुममें कोई अन्तर नहीं है।"

"मिस्टर मैक्वायर! मैंने मुकदमे की पूर्ण फाइल देखी है। उसके आधार पर तो मेरी बुद्धि यही कहती है कि अमरीकी सरकार का दावा असत्य पर आधारित है। इसलिए उसके सफल होने की किंचित् भी सम्भावना नहीं है।"

"डॉक्टर! आप अन्तर्राष्ट्रीय विषयों की बात को नहीं समझते। यहाँ न्याय और अन्याय कुछ नहीं होता। प्रत्येक विषय में देशहित की बात सर्वोपरि समझी जाती है। स्पष्ट बात है कि न तो रूस यह चाहेगा कि इस प्रकार का आविष्कार किसी भारतीय के नाम से सम्बद्ध हो, न इंग्लैण्ड चाहेगा कि इसका श्रेय भारतीय को मिले। विशेष रूप में जब आप यह कहते हैं कि इसका मूल वेद में है। यूरोपियन जाति का कोई भी घटक वेद की महिमा की वृद्धि नहीं चाहेगा।"

"तब तो यह और भी आवश्यक है कि मैं इस मुकदमे को पूर्ण शक्ति से लड़ूँ। इस दृष्टिकोण से तो यह पूर्व और पश्चिम की प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। इस अवस्था में यह विषय सत्य और असत्य के विवाद का हो जाएगा।"

"विचार कर लीजिए। यदि चाहो तो एक मिलियन डॉलर का ड्राफ्ट अभी मिल सकता है।"

सोम ने टालने की दृष्टि से अविनाश की ओर देखकर कहा, "भैया! बोलो क्या कहते हो?"

"अब तो यह ईसाइयत और प्राचीन सभ्यता का विवाद बन गया है। तब तो भैया मैं यह चाय भी हराम समझता हूँ। इससे तो मेरे पेट में अभी मरोड़ होने लगी है।"

उस समय अविनाश चाय की घूँट ले रहा था। उसने प्याला प्लेट पर रखा और उठ खड़ा हुआ।

"गुड बाई मिस्टर मैक्वायर! तुमने हमें बहुत ही सस्ता समझ लिया है जो हम

अपने ज्ञान को स्वयं ही झुठलाने लग जाएँगे।" अविनाश ने क्रोध में कहा।

सोम ने चाय पीनी आरम्भ भी नहीं की थी। अविनाश की प्रतिक्रिया देखकर वह भी उसी अवस्था में उठ खड़ा हुआ।

मैक्वायर ने सोम का हाथ पकड़कर उसे रोकते हुए कहा, "डॉक्टर सोम! बचपना छोड़ो। मुझ जैसे अनुभवी व्यापारी की बात को ध्यान से सुनो। बैठो, तुम्हें एक रहस्य की बात बताता हूँ।"

सोम बैठा तो अविनाश भी बैठ गया। मैक्वायर ने कहा, "मैं तुम्हें विश्व-इतिहास की एक झलक दिखाना चाहता हूँ। अपने विद्यार्थी काल में मैंने इतिहास पढ़ा था। मैंने जैसा भी पढ़ा है उसी आधार पर आपको समझा रहा हूँ।

"बहुत ही प्राचीन काल से संसार के देशों में एक व्यापक संघर्ष चल रहा है। यह संघर्ष भी पूर्व-पश्चिम का ही है। यह झगड़ा काल्पनिक और प्रत्यक्ष परमात्मा में समझना चाहिए। तुम पूर्व के निवासी स्वयं को तो देवता कहते हो और पश्चिम-वासियों को असुर। इसके विपरीत पश्चिम के देश आपको मूर्ख मानते हैं। इसलिए वह आप जैसे मूर्खों को न तो वह बुद्धिमान होने देगा और न विजयी ही।

"यहाँ पर भी यही झगड़ा है। इस संसार का वैभव ही हमारा ध्येय रहा है। हम भले ही परस्पर लड़ते-झगड़ते रहे हों किन्तु जब काल्पनिक परमात्मा के मानने वालों से विवाद उठता है तो हम सब एक हो जाया करते हैं। यहाँ पर भी ऐसा ही हो रहा है।

"समस्त यूरोप, अमेरिका और अफरीका के इस्लामी देश सभी तुम वेद का नाम लेने वालों के विरुद्ध एक हो गए हैं। कल इसका प्रत्यक्षीकरण तुम देख लोगे। तुम्हें कल प्रातः अपने दामाद के साथ होटल में प्रविष्ट होते देख मेरे मन में तुम लोगों के प्रति दया आ गई थी। इसी कारण मैंने बात की और उसके आधार पर यह प्रस्ताव कर रहा हूँ। यदि उस रूप में अमेरिका ने यह मुकदमा न्यायाधीशों को समझाया तो निश्चित ही जीत अमेरिका की होगी। अमेरिका के मन में यदि कुछ संशय है तो वह रूसी न्यायाधीश के सम्बन्ध में है। वह कम्युनिस्ट है। उनके इतिहास की विवेचना यद्यपि आपकी विवेचना से भिन्न है, किन्तु वह हमसे भी एकमत नहीं है। इस कारण सन्देह के लिए पूरा स्थान है। इसी दृष्टि से मैंने चाहा था कि आपकी हानि का प्रबन्ध पहले ही कर दूँ।"

मैक्वायर इतना कहने के बाद चुप हो गया। वह दोनों के मुख पर अपने कथन की प्रतिक्रिया जानना चाहता था। सोम ने उसका उत्तर देते हुए कहा, "इसके लिए तो मुझे आपका धन्यवाद करना चाहिए। आपके इस विवेचन से यह तो मैं भली-भाँति समझ गया हूँ कि परस्पर एक-दूसरे का सिर फोड़ने वाले भी भारत के सम्बन्ध में एकमत हो गए हैं। आप यूरोप की सभ्यता, जिसे आपने असुर सभ्यता कहा है, की ओर से मेरी ओर को कुछ टुकड़े डाल रहे हैं जिससे कि मैं भी आपकी

जय-जयकार करने वाला बन जाऊँ।

"आपकी इस स्पष्टवादिता के लिए तो मैं आपका बहुत आभारी हूँ। परन्तु वर्तमान युग में तो मैं अपनी पराजय का स्वागत ही करूँगा। मैं श्वेत को काला कहने के लिए कदापि तत्पर नहीं हूँ।

"अब हम चलते हैं। कल न्यायालय के निर्णय के उपरान्त मिलने का यत्न करेंगे। मैं आपको तथा अन्यान्य सहयोगियों को, वे चाहे जो भी हों, कल सायंकाल की चाय का निमन्त्रण देता हूँ। वहाँ मेकार्थर, मेरे पिताजी तथा कुछ अन्य सज्जन भी आप लोगों को मिलेंगे।"

"हम तो यही आशा करते हैं कि आप विजयी होंगे। भगवान् ऐसा ही करे। परन्तु यह बहुत ही कठिन है।"

इसके बाद सोम ने कुछ नहीं कहा और न अविनाश ने ही। वे दोनों उठे और उसके कमरे से बाहर हो गए।

: ७ :

इस विवाद का निर्णय तो न्यायाधीश अपने घर से ही लिखकर लाए हुए थे। तदपि औपचारिकता तथा दिखावे के लिए उन्होंने सोमदेव की ओर से एक साक्षी का वक्तव्य सुनना स्वीकार कर लिया। वह साक्षी था केलिफोर्निया विश्वविद्यालय का कुलपति मिस्टर विलियम बून। यह वही व्यक्ति था जिसने केलिफोर्निया में सोम द्वारा निर्मित चेम्बर में दस किलो भार का पत्थर उठता देख सोम को प्रोत्साहित करते हुए कहा था, 'तुमने ईश्वर की मूँछ का बाल तोड़ लिया है।'

बून ज्यों ही न्यायमूर्तियों के सम्मुख उपस्थित हुआ तो मुख्य न्यायाधीश ने पूछा, "आपने अपना लिखित वक्तव्य प्रस्तुत किया है, हमने उसे पढ़ा है। हम उसमें किसी प्रकार का तत्त्व नहीं देखते। यह तो पाँच वर्ष पूर्व की बात है जबकि यह योजना उस समय केवल कल्पनामात्र थी। यदि उससे कुछ अधिक कहना चाहते हैं तो कहिए।"

"मैं यह कहना चाहता हूँ कि उस फ्रांसीसी वैज्ञानिक को, जो आविष्कार का आविष्कारक कहा जाता है मेरे सम्मुख उपस्थित किया जाय। मैं उससे इस विज्ञान के विषय में जानना चाहता हूँ कि वह इस विज्ञान का क-ख-ग भी जानता है अथवा यों ही आविष्कारक कहलाने का श्रेय प्राप्त कर रहा है?"

"यह अब सम्भव नहीं है। उसका वक्तव्य तो हमारे सम्मुख है। हमने उसको ध्यान से पढ़कर उस पर विचार किया है।"

तब स्थानीय वकील ने कहा, "मैं अभियोगकर्ताओं से कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।"

"आपने विज्ञान की कौन-सी परीक्षा उत्तीर्ण की है?"

"मैं विज्ञान के विषय में कोई प्रश्न नहीं करना चाहता। मैं केवल उस बैलून

के विषय में पूछना चाहता हूँ जो कि एक सप्ताह पूर्व सान फ्रांसिसको में दुर्घटनाग्रस्त हुआ था।''

इस पर अंग्रेज न्यायमूर्ति ने कहा, ''वह बैलून तो इस मुकदमे में विवाद का विषय नहीं है। इस न्यायपीठ की नियुक्ति उसके विषय में जाँच करने के लिए नहीं हुई है।''

तब मंगलानन्द ने पूछा, ''तब फिर न्यायालय ने हमें किसलिए बुलाया है?''

''केवल इसलिए कि इस स्थिति में हम कोई बात पूछना अथवा जानना चाहें तो पूछ अथवा जान सकें। वैसे आपका पूर्ण केस तो पहले ही लिखित में आ चुका है।''

मंगलानन्द को स्मरण हो आया कि यूरोप के विद्वान् भारत और पूर्वी देशों के विषय में क्या धारणा लिये हुए हैं। उसने पूछा, ''न्यायालय ने इस विषय पर अपना निर्णय निर्धारित कर लिया है?''

''अन्तिम निर्णय तो हम अभी आप लोगों की बात सुनकर चेम्बर में बैठकर लिखेंगे।''

''हमारी बात यही है कि हमारा एक साक्षी और है, वह है प्रोफेसर फिशर, उसकी बात सुन ली जाय।''

''उस मारपीट करने वाले का वक्तव्य भी हमारे पास आ चुका है। हम उसको विश्वसनीय नहीं मानते।''

यह सब सुनकर स्थानीय वकील ने कहा, ''जब आप हमारा पक्ष ही सुनना नहीं चाहते तो फिर अपना निर्णय सुना दीजिए।''

यह अन्तिम बात थी। इससे प्रोत्साहित हो न्यायपीठ उठकर पिछले कमरे में चला गया। वहाँ से फिर न्यायालय में आने में उनको दस मिनट से अधिक समय नहीं लगा। बाहर आकर मुख्य न्यायाधीश ने एक कागज अपने हाथ में लिया और निर्णय पढ़कर सुनाया—

''जो कुछ हमने ऊपर लिखा है, उसका निष्कर्ष यह है कि केलिफोर्निया विश्वविद्यालय के प्राध्यापक डॉक्टर सोमदेव का दावा सिद्ध नहीं होता। विचाराधीन एण्टीना उसके द्वारा आविष्कृत नहीं है। इसलिए हमारा सर्वसम्मत निर्णय है कि पैरिस विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक मिस्टर मास्की लुईस की याचिका को स्वीकार कर लिया जाय।''

इतना कहने के उपरान्त न्यायाधीश ने लगभग चालीस पृष्ठ में टाइप किया हुआ न्यायपीठ का निर्णय न्यायालय के रजिस्ट्रार को पकड़ा दिया।

मंगलानन्द, अविनाश तथा उनका वकील आदि सभी क्रोध से लाल-पीले होते हुए न्यायालय से बाहर निकल आए। सोमदेव मुस्करा रहा था। विलियम बून उसके साथ बाहर निकला था। वह उससे सहानुभूति व्यक्त कर रहा था।

सोम बोला, "इस सहानुभूति के पात्र तो मेरे पिताजी हैं जिनका इस मुकदमे में करोड़ों रुपया व्यय हुआ है। मुझे तो केवल इतना ही खेद है कि मनुष्य को देव समझने की मेरी धारणा अभी समय से पूर्व ही है। मानव समाज अभी इस योग्य नहीं बन पाया है।"

"मैं भी ऐसा ही समझता हूँ। कदाचित् तुम्हारे आविष्कार के लिए अभी उपयुक्त समय नहीं आया है।"

"मेरे लिए तो आश्चर्य की बात यही है कि सारा रहस्य जान लेने के बाद भी अमेरिका अपने परीक्षण में असफल क्यों रहा ?" सोम का प्रश्न था।

"यह मैं वापस लौटने पर पता करूँगा। मैं समझता हूँ कि यह सब परमात्मा की करनी से हुआ है। उसी ने इस फ्रांसीसी के मस्तिष्क का कोई पेंच ढीला छोड़ दिया है। उसके फलस्वरूप वह कुछ भूल गया जिसे स्मरण करने का अब यत्न कर रहा होगा।"

उसी दिन सायंकाल के हवाई जहाज से दिल्लीवासी वापस लौटने वाले थे। उनके विदा होने से पूर्व मैक्वायर अपने दामाद से मिलने के लिए आया। किन्तु जब मेकार्थर ने उसको कमरे में प्रविष्ट होते देखा तो स्वयं उसकी उपेक्षा कर कमरे से बाहर हो गया। उसे उससे घृणा हो रही थी।

मैक्वायर ने उसको आवाज देते हुए कहा, "मेकार्थर ! मैं तुमसे मिलने के लिए आया हूँ।"

किन्तु मेकार्थर ने उसपर कुछ ध्यान ही नहीं दिया। वह लिफ्ट में चढ़ा और नीचे उतर गया।

दिल्ली से जाने के तीसरे दिन जब दिल्ली की पार्टी वापस पहुँची तब तक मुकदमा हार जाने का समाचार सारे संसार में फैल चुका था। मंगलानन्द आदि के दिल्ली पहुँचने पर उनके शुभचिन्तक उनके साथ सहानुभूति व्यक्त करने के लिए आने लगे।

सरस्वती का विचार था कि उसके पति को इस मुकदमे को हारने का बड़ा दुःख होगा। परिवार के अन्य सदस्यों के साथ वह भी हवाई पत्तन पर उन लोगों का स्वागत करने के लिए गई हुई थी। गार्गी, सावित्री, परमानन्द, मोहनलाल, अम्बा, मिली तथा विद्यालय के विद्यार्थी हवाई पत्तन पर गए थे।

सबको इसका खेद था कि यह साफ सफेद दिखाई देने वाला किस प्रकार काला हो गया है। वहाँ पर किसी ने कोई बात नहीं की।

घर पर पहुँचते ही उनको पत्रकारों ने घेर लिया। इस बार भी मिस्टर चटर्जी ही उनका नेता था। उसने प्रश्न किया, "हेग न्यायालय में सफेद से काला किस प्रकार हो गया है ?"

सोम ने कहा, "यह तो ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार हम लाख बार यह

कहते हैं कि आदि काल से हिन्दू इस देश का वासी है तो भी हमारे बच्चों को यही पढ़ाया जाता है कि हमारे पूर्वजों ने यहाँ के आदिवासियों को पराजित कर बलपूर्वक इस देश पर अधिकार कर लिया है।''

''कुछ समझ में नहीं आया ?''

''मैं भी तो यह बात समझ नहीं सका कि उस बैलून का आविष्कर्ता मैं नहीं हूँ।''

सभी लोग कॉफी पी रहे थे। सोम ने एक घूँट कॉफी की ली और फिर कहने लगा, ''मिस्टर चटर्जी ! जिस प्रकार हम विश्वविद्यालय के इतिहास के अध्यापकों से पूछ रहे हैं कि हमारे भारत में आने का कोई प्रमाण तो दीजिए। वे प्रमाण तो दे नहीं पाते परन्तु बात वही दोहराते हैं जो उनके यूरोपीय स्वामी उनको समझा गए हैं अथवा आज भी समझा रहे हैं।

''इस सम्बन्ध में इसके अतिरिक्त मेरे पास न तो कोई अन्य उत्तर है और न कोई तर्क ही कि इस बैलून का आविष्कर्ता मैं नहीं हूँ।''

इस उत्तर में सारी बात समाहित थी। कुछ इधर-उधर की बातें कर पत्रकार विदा हो गए।

: ८ :

सरस्वती ने रात को सोते समय अपने मन का सन्देह प्रकट करते हुए कहा, ''अब आप इसका क्या करेंगे ?''

''किसका ?''

''बैलून के आविष्कार का ?''

''इसकी वैधानिक स्थिति तो पिताजी से पूछूँगा।''

''हम इस पर सैर कर सकेंगे अथवा नहीं ?''

''कह नहीं सकता कि वैधानिक स्थिति क्या है।''

''तो पता करिए।''

''अभी पिताजी को अपनी आर्थिक हानि का बड़ा दुःख है। कुछ समय बीतने के बाद ही बात करना ठीक होगा।''

सरस्वती निरुत्तर हो गई। उसको भी विदित था कि इसमें अपार धन व्यय हुआ है।

अगले दिन बाबा ने पूछा, ''सोम ! विद्यालय का क्या होगा ?''

''बाबा ! विद्यालय के कुलपति तो आप हैं, आप बताइए कि मुझे क्या करना है ?''

''कल से नियमित रूप से विद्यालय का कार्य आरम्भ कर दो।''

''अन्वेषण-कार्य के विषय में आपकी क्या आज्ञा है ?''

''मैंने मंगलानन्द से इस विषय में पूछा था। उनका कहना है कि आज

सायंकाल तक वह इस विषय में अपनी सम्मति देगा। उसके बाद ही अन्वेषण के विषय में विचार किया जा सकता है। उससे पूर्व नहीं।"

विद्यालय का भवन अब तक दोबारा बन गया था। प्रयोगशाला में भी सब प्रकार के उपकरण लगा दिए गए थे। सोम की योजना तो यही थी कि इस भार-रहित यन्त्र के निर्माण का कार्य जारी रखा जाए और इसे अधिक सस्ता और सुलभ बनाने का यत्न किया जाए।

उस दिन सोम विद्यालय चला गया और वहाँ कर्मचारियों से मिलकर बात-चीत करता रहा।

विद्यालय के निवासियों का मध्याह्न का भोजन अब विद्यालय के भोजनालय के साँझे भोजन-कक्ष में किया जाने लगा था। उस दिन सब लोग भोजन के लिए बैठे थे कि बाबा विश्वेश्वरानन्द को लेकर मंगलानन्द वहाँ उपस्थित हो गया।

मंगलानन्द की उपस्थिति से सबको प्रसन्नता हुई। अब तक सोम से हुए वार्त्तालाप से यह विदित हो चुका था कि मंगलानन्द इसके वैधानिक पक्ष पर शीघ्र ही अपनी सम्मति देने वाले हैं।

मंगलानन्द ने स्थिति को समझकर कह दिया, "वर्तमान से आगे की उन्नति तो आप कर ही सकते हैं, इस कार्य से आपको कोई रोक नहीं सकता।

"आप अपने द्वारा निर्मित बैलून में सवार भी हो सकते हैं। किन्तु इसकी आप बिक्री नहीं कर सकते। यह आपकी आय का साधन नहीं बन सकता।

"तीसरी बात यह है कि आप वर्तमान में जो एण्टीना है उस जैसा एण्टीना बना सकते हैं अथवा नहीं। आप बना तो सकते हैं किन्तु चौदह वर्ष तक उसको बेच नहीं सकते। हाँ, यदि अमेरिका इस प्रकार का एण्टीना बनाने में असफल रहता है तो फिर आप इसके लिए वैधानिक अनुमति लेने के लिए यत्न कर सकते हैं। तब भी वैधानिक स्थिति क्या होगी यह उसी समय बताई जा सकेगी, इसके लिए कुछ वर्ष प्रतीक्षा कर अमेरिका की प्रतिक्रिया जानना आवश्यक है।"

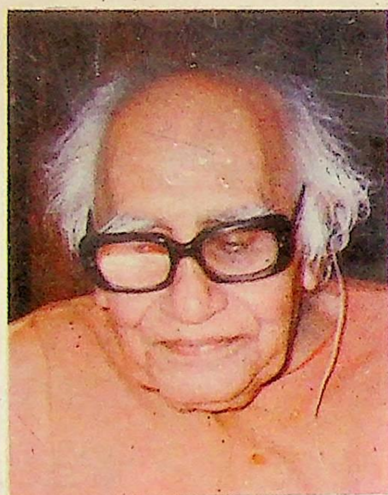
मंगलानन्द की वैधानिक सम्मति सुनकर कुछ लोगों की निराशा तो दूर हो गई किन्तु कुछ ऐसे भी थे जिनको इससे सन्तोष नहीं हुआ।

उसका परिणाम यह हुआ कि दो विदेशी अन्वेषणकर्त्ता तो निराश होकर अपने देश लौट गए। वे प्रतीक्षा में अपने समय का अपव्यय करना नहीं चाहते थे।

मेकार्थर और सिमी नाकोव पर इस घटना का कोई विपरीत प्रभाव नहीं हुआ। उन्होंने सोम के साथ कार्य करने का अपना दृढ़ संकल्प व्यक्त किया।

डॉक्टर सोम तो इसके लिए तत्पर ही था।

□□□



श्री गुरुदत्त

जन्म : 1894 शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर' से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

भारती साहित्य सदन

नई दिल्ली-110 001